

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.



न्नाग पांचमो.

खा नागमां

विचित्र चपदेशनो करनारो एतो.कर्पुरप्रकरनामा यंथ, बालावबांध अने कथा सहित.

नभा

संसारना प्रपंचसंबंधी स्वरूपने दर्शावनारो एवो भुवनभानु केवलीनो रास तथा समकेतनां षट्स्थानकनी चोपाइ अने अर्थसहित दृष्टांतशतक ए चार ग्रंथोनो समावेश करीने,

श्रावक गा० नीमसिंह माणकें श्रीग्रंबापुरीमध्ये

निर्णयसागर नामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो.

संबत् १९४७ मन १८०१

आ पुस्तकने छापवासंबंधी सर्व प्रकारनी हक छपावनार पोताने स्वाधीन राखेली छे.



न्नाग पांचमां.

अस्तावना.

॥ ज्ञानरुचि सम्यक्दिष्टि सद्धनोना उपकारची जैनकचारत्नकोष नामना पुस्तक संबंधी पंदर नाग मांदेलो आ पांचमो नाग ढपाइ तैयार चयो.

सिंदूरप्रकर, कर्पूरप्रकर, केसरप्रकर, कुंकुमप्रकर, अने हिंगुलप्रकर, ए पां च यंथ सुनाषित बतां एकज आचार्यना रचेला हे, ते प्रत्येक प्राणीने ध मेमां दढावनारा होवाथी ए मांहेलो सिंदूरप्रकर तो एज पुस्तकना प हेला नागमां उपाइ गयो. अने बीजो कर्पूरप्रकर आ पांचमा नागनी आ दिमां अर्थ तथा संदेप एकसो सत्तावन कथा सहित ढाप्यो हे. तेमां १३१ काव्यपर्यंतनी अवचूरी महारी पासे हती तेना उपरथी अर्थ कखो, उपरांत काव्यमां पर्वणीना दिवसोमां सत्कर्म करवाना वीश हार है, पण तेनी टीका प्रमुख नथी माटे ते मूलपातेंज ढाप्या है. तेमज ए यंथमां ए काद बे काव्य ञ्यागल पाठल ठपाइ गयेला है, तथा प्रत्यंतरे बे काव्य व धारें दीवामां आच्या, ते सर्वे अनुक्रमणिकामां सुधारी जीधा हे. तथा यं थने हापवानी उतावलथी अग्रुद्ता दीतामां आवशे,ते पंितजनो सुधारी वांचवा कृपा करहो. यद्यपि पंमितो उपर नार मूकीने अग्रुक्ता राखवी ए योग्य कहेवाय नहीं; तथापि अगाउथी रूपेया जरनारा साहेबोनी तरफ थी ताकीद थवानी मने आशंका रहेवाने लीधे, जेम बने तेम तरत ढापी ग्रंथ तेयार करवाना हेतुथी, अथवा प्रमादादि दोषथी, तेमज जूदी जूदी प्रतोमां जूदा जूदा पाठांतर होवाची, तथा महारीपासें अवचूरीनी एकज प्रत होवाथी, ए चुलो थयेली जाणवी. परंतु हवेथी जे कांइ एवा ग्रंथो ए पुस्तकमां दाखल करीश, तेनी उपर वधारे लक्ट आपीने जेम बनशे तेम वधारे शोधन करवामां तत्पर रहीश. ए ग्रंथ अत्यंत रितक तेमज एनो बोध सर्वोपयोगी होवाथी सहुथी प्रथम दाखल करेलो हे.

बीजो यंथ,श्री ख्रवननानु केवली नो रास पंमित श्री चर्यरत्नजी महाराज नो रचेलो के ए यंथ चपिमितनवप्रपंच यंथने श्रनुसरतो होवाथी मिथ्या त्व, श्रविरत्यादिक हेतुयें करी बंधाता, श्रने जीवने संसारमां नमाडनारा, एवा ज्ञानावरणादिक श्रावेकमों मां मुख्य एवं जे मोहनीय नामा कमें के, तेने सर्वोपिर वेरावीने तेने मोहनुपित एवं नामें उलखावीने पढ़ी बीजा सात कमोंने तेना बांधव रूपें स्थापन कह्यां के वली ते श्रावे कमोंनी जे चत्तर प्रकृतियों जूके जूदे नामें के,ते सर्वनै ते श्राव कमेरूप श्रावे जाइना परिवार रूपें निर्धार करी ते प्रत्येक प्रकृतियोना चद्यथी यता जीवना ना ना प्रकारना श्रध्यवसायनुं यथांथे वर्णन ए यंथमां श्रावेनुं के. जेम एक मोहनीय नामें राजा वेराच्यो तो तेमना कुटुंबी क्रोधादिकोनो हाबेहूब स्वरूप जाणे साहात् नाटक नजवी बताव्युं होय,ते श्रीच्रवननानु केवलीयें पोतें जे प्रमाणें श्रनुनव्युं के ते प्रमाणें ए यंथमां स्पष्ट देखाडी श्राप्युं के.

त्रीजो यंथ, जे स्थानके समकेत वेरी शके, तेवा ब स्थानक बे, ते ब स्थान कने न माननारा जे मिथ्यावादीयो बे, तेमना निराकरणपूर्वक षदस्थानकस्व रूपनी चोपाइ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत अर्थसहित दाखल करी बे.ए यंथ नैयायिक पक्तनो होवाथी वांचनारने उत्कृष्ट आनंदकर्जा थशे.

चोथो यंथ,हष्टांतशतक एवं नामें हे. तेमां जूदा जूदा विषयोनो बोध कर नारा एवा सो द्वष्टांतो जघु कथा उसिहत आवेजा हे. ते पण घणा रितक हे. माटे ते यंथना संस्कृत काव्य कर्तानी उपर नजर न राखतां प्राकृत अर्थ वाचवाथी मात्र बाज जीवोने रूडो बोध थशे,एवा जावथी हाप्यो हे.

ए प्रमाणें बधा मली पूर्वोक्त चार यंथोनो समावेश करीने ए पांचमो नाग पूर्ण कखो है. तेमां अग्रुक्ता वगेरे दोष जे महाराथी रहेला होय, तेनुं सिवनय मिथ्याइष्कृतादिक ते सर्व पूर्व नागोमां लखवा प्रमाणें आहीं पण जाणी लेवुं. सुक्षेषु किं बहु विलेखनेन ॥

॥ अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका प्रारज्यते ॥ ॥ तत्र प्रथमं कर्पूरप्रकरग्रंथस्यानुक्रमणिका॥

क्रम	ांक. विषय.	प्रष्ठांक.
١	। प्रथमकाव्यमां मंगलाचरण,बीजा काव्यमां यंथमां कहेवाना ह	ार. १
?	आर्यदेश दारें अईकुमारनी अने परदेशी राजानी कथा	₹
घ	कथमपिद्दारें धरणिंड्, तथा कंबल संबलनी कथा	Ų
₹	मनुष्यनव दारें मेघकुमर तथा प्रसन्नचं इराजर्षिनी कथा	B
8.	शतकुलद्दारें कसाइपुत्र सुलस तथा प्रनावती राणीनी कथा	? 0
Ų	साधुसंगद्दारें तामजीतापस तथा बे पोपटनी कथा	! २
६	बोधदारें श्रेणिकराजा, पुण्यदंघराजा अने चिलातीपुत्रनी कथा.	8 \$
В	सम्प्रक्वद्वारें रोहिणियाचोर तथा सुलसा श्राविकानी कथा.	e \$
ប	देवद्दारें दर्डरदेवता तथा जीरएज्ञेवनी कथां	₹ ₪
Ŋ	गुरुद्दारें श्रीगौतमगुरु, जमाली अने वज्रस्वामीनी कथा	. २१
ζσ	धर्मदारें शय्यंनव तथा शशिराजानी कथा	8 8
? ?	शक्तिहारें अतिमुक्तक्षि तथा मदालसा अने बलदेवजीनी कथा.	e ş
१ २	शमदारें गजसुकुमाल, चंइरुइ अने विशाखचोरनी कथा	भृष्
₹ \$	यतिहारें कुंमरिक पुंमरिक तथा उदायिन मृपमारक इव्यसाधुनीकथ	ा. ३१
8 \$	श्रावकद्दारें ञ्चानंदश्रावक तथा कामदेवश्रावकनी कथा	₽8
१५	प्राणातिपातदारें वजायुध, संगमदेव तथा श्रीनेमीश्वरनी कथा.	३६
१६	मुषावादघारें कालिकाचार्य, ब्रह्मा, विष्णु अने वसुराजानी कथा.	३ ७
e ș	अदत्तादानव्रतहारें दृढप्रहारी तथा श्रेणिकना आम्रचोरनी कथा.	83
? 0	मेथुनव्रतद्वारें जंबूस्वामीनी तथा सुदरीन रोवनी कथा	BB
₹ ₩	परियह्वतद्वारें नंदराजा तथा मन्मण्ज्ञोवनी कथा	8 4
হ ০	दिग्वतद्दारें चारुदत्त तथा श्रीरुखनी कथा	8៤
२ १	नोगोपनोगव्रतहारें वंकचूल, ब्रह्मदत्त अने इंड् अहिल्यानी कथा.	ų !_
घ घ	अनर्थदंमव्रतद्दारं चेटकराजा तथा कोणिकनी कथा	५१ u∵ य. ं.
२ ३	सामायिकव्रतद्वारें चंडावतंसराजा तथा चदायिनराजानी कथा.	,
ध इ	वेशावकाशिकव्रतदारं काकजंघकोकास तथा जोह्रजंघनी कथा.	्र जाय.

१ ५	पौषधव्रतद्वारें मेघरथराजा तथा सागरचंड्नी कथा.		प्र
२ ६	संविनागत्रतद्दारें मूलदेव तथा शालिनइनी कथा		६ २
e ş	सातक्तेत्रदारें संप्रतिराजा तथाकृ लंकि पुत्र दत्तनी कथा.		६ ३
	श्रीजिनबिंबद्वारें विद्युन्मालीदेव तथा अनयकुमारनी कथा.	••••	६ ए
	वैत्यद्वारें अश्वावबोधतीर्थ,बाहुबली अने अष्टापदतीर्थोत्पत्ति क	था.	६ 9
₹ 0	क्रानपुस्तकद्वारें श्री आर्थ रिक्तिजी तथा सय्यंनवजीनी कर	प्रा.	o B
₹ १	श्रीसंघद्दारें वज्रस्वामी तथा यद्दा साध्वीनी कथा	····	व इ
₹ ₹	साधुद्दारें जीवानंदवैद्य तथा बाहुबिनजीनी कथा.	••••	B e
₹₹	साध्वीद्दारें ब्राह्मी,पुष्पचूला,मृगावती,कुबेरदत्ता,याकिनीनीक	था.	9 इ
∌ช	श्रावकद्दारें नरतराजा तथा श्लीनइबाहुजीनी कथा.	••••	ፓ የ
	श्राविकाद्वारें मरुदेवाजी तथा सुन्नइा संतीनी कथा.		៤ ន
३ ६	श्रीजिनपूजाद्दारें श्रेणिकराजा तथा दमयंतीनी कथा.	•••	σĘ
₽Б	नयंदारें श्रीरामचंड्जी तथां ब्रह्मदत्तचक्रीनी कथा		៤ ៤
३ ७	विनयदारें निम विनिम, वृद्धकरयक्त अने विष्णुकुमरनी कष्	ग.	_Մ
∌ણ	सुवैराग्यद्वारें सनत्कुमार तथा चारे प्रत्येकबुद्दनी कथा.	••••	ए इ
a B	दानदारें श्रेयांसराजा तथा चंदनबालानी कथा	• • • •	ए६
88	शीलठारें स्यूलिनइजी तथा वजस्वामीनी कथा		एঢ
ध इ	तपद्दारें शिवकुमर तथा नंदीषेण ब्राह्मणनी कथा.	••••	מ ס ז
ช ₹	नावनाहारें वक्कलमुनि तथा इलापुत्रनी कथा	••••	१० १
в₹	पुष्यविस्मयद्वारें अजितनाय, सगरचक्री, अने मिलनायनी	क	
	थार्च हे. ए बे काव्यमां दानादिक चार प्रकारना धर्मनी ए		•
	अथवा विस्मय दर्शाच्यो है; पण आ यंथमां कहेवाना बा		
	द्वारनी संख्यामां ए द्वार गण्युं नथी जो गणीयें तो त्रेसव थ		
	विषयद्वारें सात्यकी विद्याधर तथा ब्रह्मदत्तनी कथा.		
	शब्दविषयद्वारें त्रिप्टष्ठवासुदेवनाश्य्यापालक तथा कुल्लक कुमार व		
	रूपविषयदारें कुमारनंदी सुवर्णकार तथा सुज्येष्टानी कथा.		? ? ₹
9	रसविषयदारें प्रष्ठ १२२ मां "रुक्पथ्यं" ए काव्यमां मध्		
	मंगु अने ढंढण्मुनिनी कथा तथा एष्ट १२४ मां " किं जेय		
	ं काव्यमां धर्मरुचि तथा वडवानल अने नीलकंतनी कथा	ਰੇ.	

	•	
	ए रस विषयनो अधिकार रूप विषयनी पासेंज आववो जोइयें	
	परंतु मूलथी पाढल ढपायो हे. माटे सुधारी वांचवो. १११	१२३
ង ច	गंधविषयद्वारं सुबंधुमंत्री तथा लोढकनी कथा	
	स्परीविषयद्वारं चंड्प्रद्योतन तथा सुकुमालिकानी कथा	
	सात कुव्यसनदारें प्रष्ठ १२१ मां 'निःसत्वं" ए काव्यमां कुमा	
	रपाल राजा तथा मथुरामंगु अने ढंढणमुनिनी कथा है. तथा	
	ष्ट १२५ मां " सप्तापिव्यसनानि " ए काव्यमां श्री गौतम	
	तथा यूजिनइनी कथा हे. ए पण आगल पाहल हपाया हे. १२१	-१ २५
ų į	द्युत द्वारें पांचपांमव तथा नलराजानी कथा	
	मांसाहार द्वारें हिर नृप तथा चेञ्चणाराणीनी कथा.	
	मदिरापानद्वारें जीवयशा तथा वररुचिनी कथा	
	वेश्याव्यसनदारं कृतपुष्यराजा तथा कुलवालुकनी कथा	
	पापर्धि हिंसाद्दारें शांतनुराजा, खांमववन,जराकुमर, तथा दशं	. (-
` `	रथराजाने श्रवणकावडीयाना मावित्रं आपेला शापनी कथा.	ee s
५ ६	चौरकर्मद्वारें सगरराजाना पुत्रो तथा मूलदेव अने कंदर्पनी कथा.	
	परस्वीद्दारें रावण, दीर्घराजा अने चंड्मानी कथा	
	कपायद्वारें सुनूमचक्रवर्ती अने परग्रुराम तथा चाणाक्यनी कथा.	
	क्रोधद्दारें कूरगडू, मेतार्थ अने करडकुरडनी कथा	
	मानद्वारें नंदीषेण, कार्त्तिक स्वामी अने चमरेंड्नी कथा	
	मायाद्दारें वीरनगवान, कर्णराजा, विष्णुकुमार, आषाढ नूति,	
	मिल्लिनाथ, महेश अने विष्णुनी मिली सात कथार्र है	
	लोनद्वारें नरतचक्री तथा कपिलब्राह्मणनी कथा	
	पर्युषणादि सुकृतनां दिवसोने विषे सत्कर्मो करवानां वीश हा	, (-
•	र संबंधि काव्य तथा अवचूरीकार कृत काव्य. एमां प्रथमना	,
	केटलाएक काव्य अवचूरीकारें आगल पाढल लखेला हे	<i>₹</i> ६ १
*	प्रसाविक दोहा लखीने यंथ समाप्त कच्चो हे	
	प्रंथ कत्तीयें प्रत्येक द्वारमां वे वे काव्य बांध्या हे.परंतु सातव्यस	
	काव्य वधु होवायी प्रदेप जणाय हे. ते खाहीं ख्रर्थसहित लख	
	भाष्य यञ्ज इतिकार्या निर्देश अस्ति । ॥ द्युतं च मांसं च स्नरा च वेश्या, पापर्डिचौर्ये परदारसेवा ॥ र	
,	·· ·· ·· · · · · · · · · · · · · · · ·	

सप्त व्यसनानि लोके, घोरातिघोरं नरकं व्रज्ञन्ति ॥ पागंतरे ॥ पापा धिके पुंसि सदा नवंति ॥ १०५ ॥ इति व्यसननामानि ॥ यूताइाज्यिव नाशनं नलनृषः प्राप्तोऽयवा पांमवा, मयात् कस्मनृपश्च राघविषता पापर्दि तो दूषितः ॥ मांसाह्रेणिकनूपतिश्च नरके चोर्यादिनष्टा न के, वेश्यातः कत पुण्यको गतधनोऽन्यस्त्रीरतो रावणः ॥ १०६ ॥ इतिव्यसनफलम् ॥ व्यर्थः— ज्ववटुं रमवुं, मांसनक्षण करवुं, मिदरापान, वेश्यासेवन, पापर्दि एटले हिंसा करवी, चोरी करवी, पारकी स्त्री सेववी ए सात द्वर्व्यसन जे हे, ते लोकने विषे घोरातिघोर रूपी एवं जे नरक तेने विषे लक्ष जायहे ॥ १०५ ॥ तेमां ज्वटायी नलराजा त्राने पांमवो पण राज्यत्रष्ट यया, मिदरायी कसराजा नी द्वारिकानो दाद थयो, हिंसायी द्वशरय राजाने श्रवणकावडीयाना मा वित्रोये पुत्र वियोगनो शाप दीधो, ए दूपंख पाम्यो, मांसयी श्रेषिकराजा त्राने बीजार्च नरकने विषे गया, चोरीयी घणा जीव नाश पाम्या, वेश्यायी कतपुण्य राजा इःखी ययो, त्राने पांरकी स्त्रीने विषे प्रीति राखवायी राज्यरूपी धन गमावनारा एवा रावणनो नाश थयो. माटे व्यसनोने सेववां नहीं.

बीजो यंथ, श्रीज्ञवननानु केवलीनो रास एष्ठ १६ए थी प्रारंन थयो है. एमां श्रीज्ञवननानुजीने व्यवहारराशिमां आव्या पही पहेलवहेलुं जे वखत अनार्य मनुष्यमां उपजवुं थयुं हे,ते वखत रसगृदिमां लुब्ध थवाथी नरका दिकनां इःख अनंतिवार पाम्यां हतां चमां अनंतिवार को वखत काणो, को वखत क्वीब, कुरूपो आदिक विद् , इःखें करी अनंता एजलपरावर्च अनार्य मनुष्यपणें कह्या है तेमां देव, गुरु तथा धमेनुं नाम पण जाण्युं नथी:

एम मोहराजाना एकेका किंकरथी अनंतअनंतिवार मनुष्यादिक पणुं पा मीने अशातावेदी हे तेतो रही परंतु समकेत पाम्या पही वमीने वलीपण मोहें मुंफायाथी जे डःख पाम्या हे,ते सांजलतां जड्कजीवोना रुंवाटां उनां थाय.

त्रीजो यंथ, समकेतना षट् स्थानकना स्तवननी अनुक्रमणिका. प्रथम जीव हे तेनुं खरूप नास्तिकवादीना खंमन पूर्वक. १०१ बीजुं आत्मानित्य हे तेनुं खरूप बौक्मतना खंमन पूर्वक. १०६ त्रीजुं आत्मा कर्ता अने चोशु आत्मा नोक्ता ए वे स्थानकनुं क्रप वेदांती अने सांख्यमतियोना खंमनपूर्वक कह्युं हे. १०१

अनुक्रमणिका.

प पांचमुं मोक्स्यानकनुं स्वरूप वैशेषिक दर्शननां खंमन पूर्वक. ३०४ ६ ढफुं मोक्होपाय स्वरूप अनिवार्ण अने अनुपाय वादीना खंमन० ३०ए ७ ढ स्थानकनो द्वष्टांत पूर्वक निश्रय करवा माटे चर्चा. ३१५

चोथो यंथ दृष्टांत शतक हे तेनी अनुक्रमणिका एष्ठ ३२१ थी मांमीने सो काव्य मांदेला प्रत्येक काव्यमां एकेकुं दृष्टांत हे ते अनुक्रमांके जाणवा.

मंगला चरणादिनो प्रतिपादन्तुं

१ संसारसुखने मधुबिंडनो दृष्टांत.

२ दायीने जोनारापांच ऋांधला०

३ जेवुं करे तेवा फल पामे दीपण

ध पोते पोताना वखाण करवानुं.

५ नीचना संग उपर कागडानुं ०

६ जे जेवुं करे ते तेवुं फल पामे.

⁹तत्कालबुद्धि चपजवाची ग**१वस्तु**.

ण शीघोत्तर आपवानी द्रष्टांत.

ए नाग्यहीनने पासे आवेलीचीज ०

१० स्वामिइञ्चित काम करवानुं०

११ मूर्व उपर पञ्चरने पणरोप चढे.

१२ मूर्वनुं मूर्वपणुं न मटे तेनो.

३ मूर्खिशिष्य न करवा उपर दृष्टांत.

१ ध दयाञ्ज शत्रु सारो. परंतु निर्दय मित्र पण न सारो.

१ ५ कार्य न घयानी पहेलां लडवानुं.

१६ कोतुकार्थी पासे विद्या निःफल.

१९ जालमां लखेलुं मिण्या न थाय.

१० पूछतां वार उत्तर छापवानुं.

१ए अजाणने स्थानक न देखाडवुं.

२० बजधी चोला जोक वगाय तेनुं०

११ अदाता पासें याचवुं निःफल.

१२ मूर्खसाथें पंिमतें वाद न करवो.

१३ स्त्रीयें पोताना धणीनी **ञ्चाग**ल पोतानुं चलण न करवुं.

२४ जाग्यहीन ज्यां त्यां इःख पामे.

१५ नाम्यविना उद्यम व्यर्थ थाय.

१६ समजएविना न बोलवुं.

१९ संपत्तिमां परोपकार करवो.

२० कपटी ञ्यागल कपटी थवुं.

१ए क्लाजन्मांतरेंपण श्रापवुं पहेते.

३० कुज़टा स्त्रीने उपकार कस्रो व्यर्थ.

३१ जाग्यमां लख्युं होय तेज मले.

३२ पाप कखानो पश्चात्ताप करवो.

३३ कोइने वचन विचारी छापवुं.

३४ उंचनी समानताकरेतेडुःखी थाय.

३५ महोटानी ढाया पण सारी.

३६ सिद्याची सदु चमत्कारपामे.

३९ जारस्त्रीथी कपट पण करवुं.

३० शिष्यने परखी पाट आपवो.

३७ गुणहीन स्त्री घरनी हलकाइ करे.

४० जड्क जीव जड् पणुं पामे.

धर कोइ पदार्थ दीवाषी वैराग्यथाय.

४२ एकला रहेवाथीज सुख हे.

ध इदेखादेखीची जे होय तेपण जाय.

४४ धर्मियेंखोटी चीज सामी नकरवी. ४५ बांमी गघेडीनी हरियाली० ४६ बुद्धियी सससे सिंहने माखो ४^९ कविनी चतुराइनो दृष्टांत. ४० असंतोषीनो द्रष्टांत. ४ए नाववंदननो हृष्टांत. ५० लोकने फोक गमे तेम बोले. ५१ मृपा बोजनार नरकें जाय. ५२ पंमितना इर्ज्यक्तण पण ढंकाय. **५३ स्त्री वश पड्यो ग्रुं ग्रुं न करे. ५४ जेनुं वचन गयुं ते मूवा जेवो**. ५५ नीतिची देवता राजी चाय. **५६ स्त्रीचरित्र केवां होय तेनो ह**प्टांत. ५९ जेवी संगत तेवा गुण होय. ५० नेणवाथी फायदानो हष्टांत. ५ए कुबुद्धिया मत्स्यनो दृष्टांत. ६० धर्ममां मन स्थिर राखवानो ह० ६१ कुलटा सासुना लक्क्णनो ह० ६२ नियम जेवाथी जान थाय. ६३ क्रोध न करवानो दृष्टांत. ६४ धनवानने मान मखे तेनो ह० ६५ जेवुं नाम तेवो गुण न होय. ६६ ग्रणयहण करवानो द्रष्टांत. ६७ समकेतनी हढतानो हष्टांत. ६० परजीवने बचाववानो दृष्टांत. ६ए जीवदया उपर दृष्टांत. ७० हिंसा मूकाववानो हष्टांत. ७१ ज्यां संप त्यां लक्की रहेवानो० ^{७२} इप्टनुं नाम लीधे विन्न याय.

७३ मांसाहारीने उपदेशनो हष्टांत. ७४ अनव्यने उपदेश देवो व्यर्थ. ७५ जे धर्म न करे ते इःख पामे. **७६ मूर्ख वैद्यनो दृष्टांत.** ⁹⁹ वक्र अने जड शिष्यनो हष्टांत. ७० मूर्व पुत्रनो हष्टांत. ७ए पुष्यनुं फल अवस्य याय. जे कार्य न चतुं होय तें न करवुं. ए१ नव्य जीवने उपदेश लागे. **७२ जेवा मनना परि**णाम तेवां फल. **ज्ह मूर्व पोताना अवगुण न देखे. ७४ निरसासायें निरसो यवुं तेनो**० **ए** प चार वस्तु हे अने नथी तेनो • **ज्द कटुक पण परिणामे हितकारक. ७९ स्त्री चरित्र जोवाधी वैराग्यता. ढ** घोडुंपण धर्माचरण करवुं. **७** ९ हंस,काक अने बग जेवा साधुनो. **ए० धर्ममां ञ्चान्नस न करवानो.** ए१ कोइपण नियम अवस्य सेवो. ए२ जो हकायनी हिंसा न मूकाय तो एक त्रसकायनी पण मूकवी. ए३ ग्रुनमां सहु सहाय करे तेनो० एध प्रश्न पण खेवसर जोइ पूछवो. एए धननो गर्व न करवो तेनों ० ए६ सर्व शास्त्रनो सारपरोपकार. ए॰ सामायिकमां समनावनो. एए विद्या जणवानी उपर. **एए सर्व दानमां अनयदान महोटुं.** १०० जे काम करवुं ते विचारीने.

अथ

॥ बालावबोधसहित कर्पूरप्रकर प्रारंजः॥

॥ शार्दूलिकिजीडितं वृत्तम् ॥

कर्पूरप्रकरः रामामृतरसे वक्केंडचंडातपः,शुक्कध्यानतरुप्रसूनि चयः पुण्याब्धिफेनोदयः॥मुक्तिश्रीकरपीडनेच्चसिचयोवाक्कामधे नोः पयो,व्याख्यालद्दयजिनेरापेरालरदज्योतिश्चयः पातु वः॥

अर्थः— (व्याख्यालक्ष्य के०.) व्याख्याननी वेलानेविषे देखातो एवो (जिनेशपेशलरद्ज्योतिश्रयः के०) श्रीजिनप्रज्ञना मनोहर एवा जे दांत तेनी ज्योति जे कांति अर्थात् जिनद्शनद्युति तेनो चय जे समूह ते (वः के०) तमोने (पातु के०) रक्षण करो. ते केवो वे जिनद्शन युतिसमूह ? तो के (शमामृतरसे के०) शांतिरूप जे अमृतजल तेनेविषे (कर्पूरप्रकरः के०) कर्पूरसमूहयुक्त एवो तथा वली (वक्केंडचंडातपः के०) मुखरूप जे चंडमा तेनी ज्योत्स्नारूप एवो, तथा वली (शुक्कथ्यानतस्प्रस् निचयः के०) शुक्कथ्यानरूप जे वक्क तेना पुष्पनो वे समूह जेमां एवो अने (पुष्पाव्धिफेनोद्यः के०) पुष्य समुइना फीणनो वे उदय जेनेविषे एवो तथा (मुक्तिश्रीकरपीडनेऽइतिचयः के०) मुक्तरूप जे श्री तेनीसाथें विवाहनेविषे स्वज्ञ वस्त्ररूप एवो त्रने (वाक्कामधेनोः के०) वाणीरूप काम धेनुना (पयः के०) इग्ध जेवो एवो जिनेशदंतज्योतिःसमूह वे, तेनमारी र क्षा करो. ए आशीर्वादकाव्य कहां. आ शार्दृलविक्रीडित काव्य वे तेम सर्व हवे पढीनां काव्य ते शार्दूलविक्रीडित वगेरे ढंदोमां जाणवां ॥ १ ॥

हवे आ यंथनेविषे कहेवानां घारनां नामो एक काव्यथी कहे हे. नव्यालब्ध्वार्यदेशां कद्यमपि नृज्ञवं सत्कुलं साधुसंगं, बोधं देवादिशक्तीः कुरुत शमयतिश्रावकत्वव्रतानि ॥ सप्तके त्री जिनार्चा नयविनय सुवैराग्य दानादिपृष्टिं, शब्दखूतकु धादेर्जयमपि सुकृताहेषु सत्कर्म सुक्ये॥ १॥

अर्थः- (नव्याः के०) हे नव्यजीवो (कथमि के०) को इएक पुण्यना जदयें करी ' आयदेशं के॰) आर्यदेशने तथा (सत्कुलं के॰) सारा कुलने तथा (नृत्तवं के०) मनुष्य जन्मने तथा (साधुसंगं के०) साधुपुरुषना संगने (लब्ध्वा के०) पामीने (मुक्त्यै के०) मुक्तिने माटे हवे कहे गुं एवां कार्य करो. ते कार्य केवां ? त्यां कहे हे. के (बोधं के०)सम्यक्त्वने (देवादि के०) देव, गुरु, धर्म, तेने विषे (शक्तीः के०) शक्तिने (कुरुत के०) करो. आहिं कुरुत ए क्रियापदनुं सर्वत्र योजन करवुं. तथा वली (शमयतिश्रावकत्वव्रतानि के०) शम, यति, श्रावकपणुं अने श्रावकना व्र तोनुं आराधन करो. तथा (सप्तक्तेत्री के०) सातक्तेत्र, सप्तक्तेत्री पदनुं य हण हे माटे सात क्रेत्रनुं एक द्वार तथा एक श्रीसंघनुं अने सात क्रेत्रनां जुदां नाम जेइने सात द्वार. एवं नव द्वार यहण करवां (जिनाचीनयवि नयसुवैराग्यदानादिपुष्टिं के॰) जिनळ्यचेन, नय, विनय, सुवैराग्य, एवं . चार द्वार तथा वली दान, शील, तपोनावनानी पुष्टिने करो, एम समजवुं. ए पांच द्वार जाणवां. तथा (शब्द के०) शब्दादिक पंचविषयनां पांच द्वार जाणवां तथा (यूत के०) जुगार विगेरे सात व्यसनरूप सात दार अने श्रावमुं साते व्यसननुं एक, एम श्राव द्वार जाएवां तथा (ऋथादेः के॰) क्रोधादिक चार कपायनां चार द्वार अने पांचमुं समुच्चय कपायनुं एक हार. एवं पांच हार जाणवां ए सर्वनो (जयमि के०) जय जे तेने पण करो. तथा (सुकृताहेषु के०) सुकृत दिवसोने विषे (सत्कर्म के०) सारां कार्यने करो. एटले सुकताहेषु एवं पद कह्यं वे तेनां वीश द्वार यहए। कर वां. या श्लोकमां कहेलां कार्य, हे जव्यजीवो ! तमे करो ॥

श्रा काव्यमां लखेलां सर्व मली केटलां द्वार थयां ते कहे हे. र श्रायदेश, १ मनुष्यनव, ३ सत्कुल, ४ साधुजननो संग, ५ सम्यक्ल, ६ देव, ७ ग्रुरु, ७ धर्म, ए कथमिष, १० बोध, ११ शक्ति, १२ शम, १३ यित, १४श्रावकल, १६ बारव्रत, १७ सातदेत्र, १० जिनबिंब, १ए जिनस्रवन, ३० श्रागमपुस्तक, ३१ संघ, ३२ तपोधन, ३३ तपोधना, ३४ श्रावक, ३५ श्राविका, ३६ जिनाची, ३७ नय, ३० विनय, ३ए सुवैराग्य, ४० दान, ४१ शील, ४२ तप, ४३ नावना, ४४ ए चार धर्मनी पुष्टि, ४५ श दद, ४६ रूप, ४७ रस, ४० गंध, ४ए स्पर्श, ५० सात इर्व्यसन, ५१ यूत, पश मांस, पश सुरापान, पश वेश्या, पप पापर्छि, पह चोरी, पश परस्त्रीग मन, पण कपाय, पण क्रोध, ६० मान, ६१ माया, ६२ लोज तथा सुरुत दिवसने विषे सत्कर्मनां वीश द्वार. एम सर्व मली व्यासी द्वार थयां ॥२॥ दवे उपर लखेलां द्वारमां प्रथम सत्कुल द्वार कहे हे.

कोऽपि स्याद्धघुकर्मकः सुकृतधीर्देशेऽप्यनार्यं स्वत, स्तस्या प्यार्चकुमारवजुणचयः किंत्वार्यदेशाश्रयात् ॥ क्ताराव्धो शिशानोऽष्य कोस्तुनमणेः सा श्रीः कृतोयाऽनवत् , गं गाशालिनि शंजुमूर्षि कमलागारे हरेश्रोरसि ॥ ३ ॥

अर्थः—(कोपि के०) कोइ पण (खुषुकर्मकः के०) खुषु कर्मवालो जी व, (अनार्थं के०) अनार्य एवा (हेशेपि के०) हेशनेविषेपण उत्पन्न थ यो वतो (स्वतः के०) पोतानी मेले (सुरुतधीः के०) धर्मबुद्धि वालो जी व, (स्वात् के०) होय, (किंतु के०) तो पण (तस्यापि के०) ते पुरुप ने पण (आर्यहेशाश्रयात् के०) आर्यहेशना आश्रयथकी (आईकुमारव त् के०) आईकुमारवी पेतें (गुणचयः के०) गुणनो संचय याय ते, आ हीं हष्टांत कहे ते. ते केनी पेतें ? तो के (शिशनः के०) चंइमानी (गंगा शालिनि के०) गंगाथी शोनता एवा (शंचुमूर्शि के०) शंचु एटले महाहेव तेना मस्तकने विषे (अथ के०) वली (कौस्तुनमणेः के०) कौस्तुनमणि नी (हरेः के०) वासुहेवना (कमलागारे के०) लक्षीने रहेवाना स्थान करूप एवा (उरित के०) हदयनेविषे (या के०) जे (श्रीः के०) शोना (अ नवंत् के०) होती हवी, (सा के०) ते शोना (च के०) वली (हाराव्धों के०) हारसमुइनेविषे (कुतः के०) क्यांचीज होय ? अर्थात् होयज नही. एटले ते वेडु वस्तुनुं उत्पत्तिस्थानक तो हार समुइज ते परंतु शिव अने विष्णुना आश्रयथी ते वेडु उत्तम गुणसंचयने पाम्यां ॥

हवे अहीं आईकुमारनी कथा कहे हे. पूर्वजवने विषे आईकुमारें दीहा यहण कखा पढ़ी कुलनो मद कखो. जे हुं ब्राह्मण हुं, ते ग्रूइना घरनेविषे जिहा यहण केम करुं! ते वखत अजयकुमारने जीवें वाखो तो पण म दनो त्याग न कखो. तथी आगामि जवनेविषे नीच कुलमां अवतार थयो आदनराजाना घरनेविषे ते आईकुमार उत्पन्न थइ महोटो थयो,त्यारें त्यां आवेला विणकना पुत्रोयें अनयकुमारनुं वर्णन ते आईकुमार पासें कहां. पू वेनवना स्नेहें करी आईकुमारने ते अनयकुमारनुं नृतांत सांनलतांज स्ने ह नृहिंगत थयो. पन्नी ते विणक पुत्रोनी साथें अनयकुमारने नेट मो कली अने अनयकुमारें वीरनगवानना कहेवाथकी पूर्वनव व्यतिकर आईकुमारनो जाए्यो. तेवारें अनयकुमारें पट्टकुलें करी आज्ञादित करी श्रीजन प्रतिमानुं प्रेषण कराव्युं. ते प्रतिमाना द्रीने करीनेज पूर्वनवनुं स्म रण आव्युं अने वेराग जत्पन्न थयो. तेवारें महोटा कष्टें करीने अनार्यदेश थकी आर्यदेशमां आवीने दीकृ यहण करी. वली नोग्यकमे बाकी रहेलां होवाथी गृहस्थाश्रम स्वीकार कह्यो. तिहां चोवीश वर्ष रही पन्नी दिक्श यहण करी मोकृ पाम्या॥ गाहा॥ अप्पा विमोइन ना,वबंधणा दव बंध णा निय ॥ लह जन्न परतिश्विस, सो अद्दरिसी सिवं पन्नो॥ ३॥

हवे बीज़ं आर्यदेशोत्पन्न द्वार कहे हे.

आर्थ देशमवाप्य धर्मरहितोऽप्यन्यस्य धर्मिक्रयां, ध मिस्यानमहांश्च वीक्ष्य सुग्ररोः श्रुत्वा च धर्मे कचित्॥ बोधं याति कुलोज्जनास्तिकमतो चूपः प्रदेशी यया, स त्यं चंदनसंगिनः क्तितिरुहो नान्येऽपि किं चंदनाः॥४॥

अर्थः—(धर्मरहितोपि के०) धर्मरहित एवो पण जीव, (आर्यदेशं के०) उत्तम एवा आर्यदेशने (अवाप्य के०) पामीने (अन्यस्य के०) वीजा अ हालु धर्मिजनोनी (धर्मिक्रयां के०) धर्मिक्रयाने तथा ते जनोना (धर्मिस्थान के०) धर्मस्थानोने विषे (महान के०) महोटाउत्सवोने (वीद्य के०) जो इने (च के०) वली (सुगुरोः के०) सुगुरुना मुखयकी (कचित के०) कोइक वखत (धर्म के०) धर्मने (श्रुला के०) सांजलीने (बोधं के०) बोधने (याति के०) पामे हे. (यथा के०) जेम (प्रदेशीजूपः के०) परदेशी राजा बोधने पा स्यो, ते केवो हे? तोके (कुलोजनास्तिकमतः के०) कुलागत हे नास्तिकमत जेनुं एवो हे. (सत्यं के०) ते साचुं हे. केम के (चंदनसंगिनः के०) चंद न हक्ता संगवाला एवा (अन्येपि के०) बीजा पण (क्तिरुहः के०) हक्तो (किं न चंदनाः के०) ह्यं चंदन नथी थातां? अर्थात् थायज हे. ए टले सारा जनना संगथकी मोक् प्राप्ति थाय हे ॥ ४ ॥

श्रांही परदेशी राजानी कथा कहे हे. श्वेतांबिका नगरीनेविषे नास्तिक मतस्थापक प्रदेशीराजा राज्य करतो हतो. एक दिवस ते नगरीना उद्या नमां श्रीपार्श्वनाथना शिष्य केशीगणधर श्राच्या, त्यां प्रदेशीराजायें श्रावी प्रश्न पूढ्यों के महाराज ! एकदिवस चोरें चोरी करी, तेने में निश्चिड्मंजू षामां पूखो. पढ़ी ते मरण पाम्यो त्यारें तेनो जीव क्यांथी निसरी गयो ? एटले श्रात्मा तो हेज नहीं, एम ते दिवसथी हुं मानुं हुं. ते वात सांजली गुरुयें जवाप श्राप्यों के हिड़ विनानी पेटीमां बेशीने कोइक पुरुप शंखव गांडे हे तो ते शंखनाद बाहेर रहेला जनो सांजले हे के केम ? राजा बोखों के सांजले हे. त्यारें गुरु कहे के मंजूषामां हिड़ तो पड्यां नहीं ने शब्द क्यां यी संजलायों? तेनो उत्तर कांइपण राजायें दीधो नहीं. त्यारें गुरु कहे हे के हे राजन! एम चोरनो जीव पण मंजूषामांथी नीकली गयो माटे श्रा तमा हे एम निश्चें जाणवुं. श्रा हष्टांतें करी प्रदेशी राजा निःसंशय थयो श्रिने नास्तिकमतनो त्याग करी श्रईतमतने स्वीकारी स्वर्गमां गयो ॥॥॥

जन्मिप्यवसिप्णी: क्तिमरुत्तेजोप्स्वसंख्या वने, ऽनंता स्ता विकले गणेयदारदो जात्या विपत्त्या नयेत् ॥ स प्राष्टो तु नवांस्तिरिश्च मनुजे जीवों ऽतरेत्राऽस्य चे, क्मस्तक्रणें ज्वत्स सुगतिं प्राप्नोति तिर्यक्कृपि ॥ ॥॥

अर्थः— (जीवः के०) जीव, संसारनेविषे नमतो वतो (हितिमरुने जोप्सु के०) प्रथ्वी, तेज, तथा वायु अने जलने विषे (असंख्याः के०) असंख्याति (जत्सिप्एयवसिप्णीः के०) जत्सिप्णी तथा अवसिप्णी कालपर्यत जन्ममरणने (नयेत् के०) पामे पठी (वने के०) प्रत्येक व नस्पतिअनंतकायनेविषे (ताः के०) ते (अनंताः के०) अनंतो कालपर्यत रहे. ते पठी (विकले के०) बंडी तेंडी अने च जरिंडीरूप विकलेंडियने विषे (गणेयशरदः के०) संख्यातावर्ष (जात्या के०) जन्में करीने अने (विपत्त्या के०) मरणेकरीने रहे अने (तिरिध मनुजे के०) तिर्यंच अने मनुष्यनेविषे (सप्ताष्टी के०) सात आठ (नवान् के०) नवने काढे. अर्थात् सात आठ नवपर्यंत रहे (तु के०) वली (अत्रांतरे के०) आ ए पूर्वोक्त नवांतनेरोविषे (अस्य के०) आ जीवने जो (धर्मश्चेत् के०) धर्मप्राप्त थाय, (त

त् के॰) तो(तिर्यङ्किष के॰) तिर्यंच पण(धरणेंड्वत् के॰) धरणेंड्नी पेवें (सुगतिंके॰) रूडीगतिने (स के॰) ते (प्राप्नोति के॰) पामे वे. जेम सर्प नो जीव हतो ते धर्मनी प्राप्तियें करीने धरणेंड् थयो हतो ॥ ५ ॥

ते धरणेंड्नी कथा कहे हे. वाराणसी नगरीनेविषे कमहनामनो तप स्वी पंचाग्रिरूप तपने तपे हे. एक दिवसनेविषे गवाह्मां बेठेला श्री पार्थ नाथ नगवाने ते तापसनी पूजा करवा माटे पुरना जनोने गाम बहार जतां दीवां, तेमणें श्रवधिङ्गाने करीने ते तपस्वीनी धूणीना काष्ठमां बल तो एवो छजंग जोयो. पही त्यां जड़ने बलता काष्ठथी सर्पने बहार खेंची लीधो के तुरत ते संपें पार्थनाथस्वामीने नमस्कार कखो ते सर्प नवकार ना प्रनावथी धरणेंड् थयो. पही पार्थनाथ नगवान तपस्वीने कहेवा लाग्या जे हे मूर्ख ! तुं श्रा श्रज्ञान तप करे हे ? दबाधमेने जाणतो नथी ? इत्यादि वाक्योयें करीने ते तपस्वीने जनना समूहनी समहमां फिटकार श्राप्यो.पही . एकदा पार्थनाथ स्वामी, दीक्हा लीधा नंतर कायोत्सर्गें रह्या हता, त्यारे तेमनी उपर ते तापसनो जीव मरीने मेघमाली देवता थयो हे, तेणे मुग्नल धारायें करी वरसादनो उपसर्ग कखो तेने सहन करता एवा श्रने धरणें इना फणामंमलनी नीचें रह्या एवा जगवान श्रीपार्थनाथने केवलज्ञान उ त्यन्न थयुं. त्यारें धरणेंड्ना जयथी बीतो थको मेघमाली देवता जगवानने पगे लागीने मिथ्या इष्कत देतो हवो. पही ते धरणेंड् सस्थानकें गयो ॥५॥

कालप्राणिजवाञ्चनादिनिधनास्तत्सर्वजातो सदा, जी वेन भ्रमता मुहूर्त्तमि हि प्राप्तं न किंचि धितम् ॥ मुक्ता शुक्तिकयेव वारि मणिकृषा कीं किचि देवत, स्तत्प्रा प्याय सकंबलेन शबलेनो हणेव धार्यं श्रिये ॥ ६ ॥

अर्थः— (कालप्राणिजवाः के०) कालधमी युक्त प्राणीने जनमो जे हे, ते (अनादिनिधनाः के०) अनादि अनंत वर्जे हे तेमां (सर्वजातों के०) सर्वजातिनेविषे (सदा के०) निरंतर (ज्ञमता के०) जमता एवा (जी वेन के०) जीव जे तेणे (मुहूर्जमिष के०) मुहूर्जमात्र पण (किंचित् के०) कांइ पण (तत् के०)ते (हितं के०) पुष्यरूप हित (न प्राप्तं के०) नहिं प्राप्त कखुं (अथ कचिदैवतः के०) ते क्यारेंक दैवयोगें करी (तत्प्राप्य के०) ते हितकारी पुष्यने पामीने (श्रिये के०) मोक्लक्क्यीमाटे ते (धार्ये के०) धारण करवुं परंतु ते पुष्यने मूकवुं नही. ते जेम के (वार्कों के०) समु इने विषे (मिणकृत् वारि इव के०) मोतीनुं करनार पाणी जेम (मुक्ता ग्रुक्तिकया के०) मोतीनी वीपें धारण कराय वे. तिहां दृष्टांत कहे वे के जेम (सकंबलेन के०) कंबलनामा वृषनें युक्त एवा (ग्रंबलेन क्ष्यं ॥६॥ इव के०) ग्रंबलनामा वृषनें जेम पुष्यने मोक्ष्य लक्क्यी माटे धारण कख्यं ॥६॥

द्वे ते कंबल अने शंबल रुपननी कथा कहे हे ॥ यथा ॥ महुराए जिएदासो, आनीर विवाहगो ए जववासो ॥ नंमीरिमनवचे, ननेनागोहि आगमणं ॥ १ ॥ वीरवरस्स नगवर्ड, नावारूढस्स कासि जवसग्गं ॥ मिष्ठ द्विष्ठ एकं, कंबल संबल समुत्तारे ॥ ३ ॥ मधुरानगरीनेविषे कोइ जिनदा स नामे शेव वसे हे तेने अत्यंत स्नेह्यकी आनीर्ज़ीकें पोताना विवा हानंतर कंबल अने शंबलनामा अत्यंत सुशोनित वे रुपन नेट कीधा. ते वेहु रुपनो प्राग्चक आहार तथा जलें करी व्रत पालता एवा शेवनी धर्मासिक जोइने जातिस्मरण ज्ञान पाम्या तेथी पोताना पूर्वजन्मनी स्मृत जत्यन्न थइ. तेवारें श्रावकनी पेठें अष्टम्यादिक पुष्य तिथियोना दिवस नेविषे उपवास करवा लाग्या. एक दिवसें ते शेवना कोइक मित्रें नंमीर मित्रनामना यक्ष्मी यात्रा करवामां ते वेहु बेलने खेड्या तथी रुधिरयुक्त थया थका मरण पामी नागकुमार देवो थया. एकदा नावमां बेसीने गं गा उत्तरता एवा श्रीवीरस्वामीने उपसर्ग करता एवा मिथ्यादृष्टि देवने ते बेहु देवोयें उपसर्ग करतो निवाखो ॥ ६ ॥

क्तेत्रे नामलवालुके च लवणाकीर्णे च रोहेद्यया, बीजं किंचिदिहाखिले च फलित क्तात्रे च नानाफ लैः॥ देवे नेरियके तिरिश्च मनुजे श्रेयःप्रसूतिस्तया, तस्मान्मेघकुमारवन्नरज्ञवेऽनंतिश्रये त्वर्यताम्॥ ७॥

अर्थः—(२६ के०) आलोकने विषे (यथा के०) जेम (बीजं के०) बीज, (अमलवालुके के०) निर्मल जेमां रेती हे एवा (केन्ने के०) केन्न मां फले नही (च के०) तथा (लवणाकीर्णं के०) लवणाकीर्ण केन्न नेविषे पण (न रोहेत् के०) उगे नहीं कदाच उगे तो फले नहीं (च के०) वली (श्रिखले के॰) सर्वजातिना क्रेत्रनेविषे जो उगे हे तो (किंचित्फलित के॰) कांइक फले हे. (च के॰) वली (क्रांत्रे के॰) खातरवाला एवा खे त्रने विषे (नानाफलेंः के॰) विविधप्रकारनां फलोयें करी फले हे. (तथा के॰) तेवी रीतें (श्रेयःप्रसूतिः के॰) बोधबीज जे समकेत तेनी उत्पत्ति (देवे नैरियके तिरिश्च मनुजे के॰) देव, निरय, तिर्यंच अने मनुष्योनेविषे पूर्वना क्रेत्रना दृष्टांतोथी अनुक्रमें जाणवी. आहं श्रेयःप्रसूतिरूप बोध बीज जाणवुं. अमल वालुका क्रेत्रसमान देवचव जाणवो. अने लवणाकी एसमान नरकच व जाणवो. अखिल क्रेत्रसमान तिर्यंचनो चव जाणवो अने खात्रना क्रेत्र समान नरचव जाणवो. (तस्मात् के॰) ते माटे हे लोको ! (नरचवे के॰) मनुष्यचव प्राप्त थये हते (मेघकुमारवत् के॰) मेघकुमारनी पेठें (अनंत श्रिये के॰) मोक्र लक्कीनेमाटे (व्यंतां के॰) उतावलयी उत्सुक याड अर्थात् मनुष्य चव जे हे ते सर्व देवादिकना चवधी उत्तम हे माटे तेमां मोक्र पामवानो प्रयास करो. ए उपदेश कह्यो हे ॥ ७ ॥

छांदी मेघकुमारनी कथा कहे हे. राजगृही नगरीनैविषे श्रेणिकराजा पिता अने धारणी माताची मेघकुमारनामा पुत्र उत्पन्न थयो हतो, ते मे घकुमारें आठ कन्यानुं पाणियहण कखुं तेनी क्रि श्रीज्ञातांगजीमां स विस्तर कहेली वे त्यांथी जाणवी. ते मेंघकुमारें वीरनगवाननी वाणी सां नलीने आवे स्वीयोनो त्याग करी दीका यहण करी. पढी रात्रिनेविषे सु तां थकां साधुना पादप्रहारें करी इःख पामवाथी दीक्वा उपर मनोजंग थयो. प्रनातें श्रीवीरनगवानें ते मेघकुमार साधुने देशना देवा मांमी. ते ने म के ॥ गाहा ॥ जललवतरलं जीयं, अथिरा लही विचंगुरो देहो ॥ तुहा य काम नोगा, निबंधणं इस्क लस्काणं ॥ १ ॥ को चक्कवि क्रिं चइउं दासत्तर्णं समहिलसङ् ॥ को वरस्यणाई मुत्तुं, परिगएहइ जवलखंमाई ॥२॥ नेरइञ्चाण वि इस्कं, जिष्नइ कालेण किं पुण नराणं ॥ ताण चिरं तुह होही, इस्कमिणं मासमुच्चियस्सु ॥३॥ ए त्रण गाथा कह्या पढी मेघकुमारना पूर्वन व कह्या. ते जेम के तुं वैताढ्यनेविषे सुमेरुनामा हाथी थयों ते सातसो हायणीनो नायक थयो. त्यां वनामि लागवाथी तरक्यो थयो थको तलावमां पेवो. तेवारें सामा हाथीयें कादवमां नाखी मारी नाख्यो,त्यार पढी विंध्या चलने विषे पांचशो हाथणीनो नायक मेरु प्रजनामा तुं हस्ती थयो. ते जब

मां दवाग्नि थयेलो जोइने तुने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. त्रण स्थंिमल कह्यां. त्यां शरीर खजवालवामाटे पग उंचो कह्यों, एवामां कोइक शशलो ताहरा पग नीचें श्रावी उनो रह्यों. पढ़ी तें त्रणदिवस पर्यंत शशलानी रूपा यें करी पग नीचें मूक्यों नहीं, चोथे दिवसें पग उपाडीने स्थापन करतां ते ह स्ती मरीने तुं मेघकुमार श्रेणिकराजाने त्यां श्रवतह्यों. श्रा प्रकारनां वीरजगवा ननां वचन सांजली करीने फरी वैराग्य उपन्यों, तेवारें श्रखंम संयम पालीने विजय विमाने देव थयों. माटे मनुष्य जब सर्वथी उत्तम है, एम जाणवुं ॥ ॥

वेलाकूले महित नुनवे प्राक्प्रसन्नेंडवत्त, जी वा मूढ॰लघदढिघयः क्रीणते कर्म वस्तु ॥ क्रू रा गुप्तिः कुगतियुग़लीवर्णकः स्वर्डरंत्रो, येनां ते स्याज्ञिवपुरमुरुस्फूर्ति तेषां क्रमेण ॥ ७ ॥

श्रधः—(मूढ के॰) मूढ,तथा (श्लय के॰) शियल तथा (हढिधयः के॰) हढबुि वाला एवा त्रण प्रकारना (जीवाः के॰) जीवो, (तत् के॰) ते (कर्मव स्तु के॰) कर्मरूप वस्तुने (क्रीणते के॰) उपार्जन करे छे. क्यां उपार्जन करे छे? तो के (नृनवे के॰) मनुष्यजन्मनेविषे. ते केवो नृनव छे? तो के (वेलाकू ले के॰) समुइ समान (महित के॰) विस्तीर्ण एवो. केनीपेठें? कर्मवस्तु ने यहण करे छे,तो के (प्राक्प्रसंत्रेंडवत् के॰) पूर्वें थयेला प्रसन्नचंइराजिंष नी पेठें (येन के॰) जे कर्मवस्तुयें करी (तेषां के॰) ते पूर्वोक्त त्रण प्रकार ना जीवोने (क्रमेण के॰) श्रनुक्रमें त्रण गित प्राप्त थाय छे. तेमां (छुग तिग्रुगलीवर्णकः के॰) नरकतिर्यक्रूप जे गितनुं युगल तेनो छे वर्णक जेमां एवी (क्र्राग्रुप्तिः के॰) इःलक्ष्प छे ग्रप्त एटले ग्रह जेनुं एवी गित,मूढबुि वाला प्राणीने थाय छे. तथा शियल बुदिवालाने (श्रंते के॰) श्रंतमां (सर्घ रंतः के॰) स्वर्ग पण इःप्राप्य थाय छे श्रने हढबुिदवालाने (उरुस्फूर्त्ति के॰) श्रत्यंत छे प्रकाश जेनो एवं (शिवपुरं स्थात् के॰) मोक्तपद प्राप्त थाय ॥०॥

आहिं प्रसन्नचंड्राजर्षिनी कथा कहे हे. पोतनपुर नगरना स्वामी प्र सन्नचंड्राजायें पोताना राज्यें हमासना पोताना पुत्रने थापी दीक्ता यह ए करी. एकदा श्रीवीरस्वामी राजग्रही नगरीनेविषे आवी समोसखा. ते मनाथी केटलेक दूर उनो रहीने सूर्यसामी दृष्टि करी तथा उंचा हाथ क री एक पगे उनो रही तप करवा मांमग्नुं. तेवामां एक इर्मुखनामा श्रेणि कना पालायें आवीने ते राजिंषेने कहां जे हे मूढ! तुं हां तप करे हे ? वैरी ताहरा नगरने विंटी राज्य यहण करी हमासना तारा बालकने मारी नाख हो. ते वात सांजलतांज ध्यानजंग थड़ गयो. पोताना मनमां संयाम करवा नो विचार थवा लाग्यो तेवामां श्रेणिक राजायें मनें करी वंदन कहां तो पण तेने धमेलान न दीधो. तदनंतर श्रेणिकराजायें श्रीवीर पासें आवी ने प्रसन्नचंदराजिं आश्रयी पूह्यं, तेवारें वीरनगवानें सप्तमनरक़, मनुष्य जन्म अने सर्वार्थ सिद्धिगमन, आ त्रणे प्रश्नमो प्रसन्न चंदराजिं केवल ज्ञान उत्पन्न थयुं, एम कह्यं ॥ ए ॥

तत्ताहेशाऽजव्यिपतुः सुतोपि, धर्मालसोयः सुलसोऽजवन्न ॥ स किं विषाहेर्विषह्रन्मणि स्त, त्पंकान्न वा श्रीसदनं सरोजम् ॥ ए॥

अर्थः—(यः के०) जे (सुलसः के०) सुलसनामा पुरुष (ताहराऽानव्यिष तुः के०) तेवा अनव्य पितानो (सुतोऽपि के०) पुत्र हे (तत् के०) तो पण (धर्मालसः के०) धर्मनेविषे आलस्यपुक्त (नानवत् के०) न धतो हवो. अर्थात् धर्मोद्यमी धतो हवो. आहिं कांही आश्चर्य जाणवुं निहं कारण के (सः के०) सर्वजनोमां प्रसिद्ध एवो (विषहत् के०) विषवाला सर्पथी जल्पन्न ययो एवो तो पण विषने हरण करनारो (किं के०) द्यं (न के०) नथी धातो ? अर्थात् धायज हे. (वा के०) अथवा (श्रीसदनं के०) लक्कीने रहेवा नं घर, (पंकात् के०) कचराथी जल्पन्न थयेलुं अने (तत् के०) ते सर्वत्र प्रसिद्ध एवं (सरोजं के०) कमल (न के०) नथी ग्रं ? अर्थात् हेज. तेम इष्ट पिताथी जल्पन्न थयेलो एवो सत्पुरुष ते धर्मकृत्य करे हे ॥ ए॥

आंहि सुलसनो दृष्टांत होवायी तेनी कथा कहे है ॥ राजगृहीनगरीने विषे कालकसौकरिकनामा कसाइनो पुत्र सुलस नामें हतो, ते अनयकुमा र नामा मंत्रीनी संगतियी द्याधमेपालक श्रावक थयो. पढ़ी कालक सौक रिकने श्रेणिकराजायें वास्रो, तोपण नित्य पांचशें महिष मारवाना पापथी निवृत्ति न पाम्यो. कालकसौकरिक इर्जेक्यायें मरीने सातमे नरकें गयो. अने तेना पुत्र सुलसने स्वजनोयें आवी कह्यं के आपणें तारा पितानुं पाप सर्वें वेची लेखं त्यारें सुलसें पोताना पगपर क़ुवाडो मारीने सर्वने कह्यं के जेम तमे महारा बापना करेला पापने वेंचो हो तेवीरीतें आ मारी वेदनाने तमो सर्व वेंची लीयो. ते सांचली सर्व मोनव्रत धारण करी बेहा तेणे जीव वध न कह्यो ॥ गाहा ॥ अवइज्ञतिय मरणं, नय परपीडं करंति मणसा वि ॥ जे सुवियसुग्गइ पहा, सोयरिय सुर्व जहां सुलसो ॥ ए ॥

बोधाय सर्ध्नकुलोक्रवाः स्त्रियोऽप्युदायनस्येव पुरा प्रजावती॥ सत्तीर्थता किं जलधेर्न गंगया, सदृत्तता वा दादानोन राकया॥१०॥ इतिसत्कुलद्वारम्॥१॥

अर्थः—(सदमेकुलोझवाः के॰) प्रधानधमेसहित जे कुल तेनेविषे हे उ त्पित्त जेनी एवी (स्त्रियोपि के॰) स्त्रीयो पण (बोधाय के॰) बोधने माटे होय हो. केनी पेते ? तोके (पुरा के॰) पूर्वें (उदायनस्य के॰) उदायन राजा नी (प्रजावतीव के॰) प्रजावती नामनी स्त्री जेम बोध पामी,तेम स्त्रीयो बोध ने पामे हे. तेमां कांइ आश्रयं नथी. केम के (जलधेः के॰) समुइनी (स नीर्थता के॰) सत्तीर्थता ते (किं के॰) छुं (गंगया के॰) गंगायें करी (न के॰) न थाय. अर्थात् यायज हे. जुवो प्रत्यक्तप्रमाण के ज्यां गंगा समुइने मले हे त्यां प्रियमेलकनामा तीर्थ प्रसिद्ध हे. (वा के॰) अथवा (शिशनः के॰) चंइमानी (सप्टृत्तता के॰) गोलाकारपणुं (राकया के॰) पूर्णिमायें करी छुं (न के॰) न थाय अर्थात् थायज हे ॥ १०॥

आहिं प्रचावती नामनी राणीनो दृष्टांत हे. माटे तेनी कथा कहे हे. वी तजय पत्तनमां मिथ्यादृष्टि इदायननामा राजा राज्य करे हे. ते एकदिवस न दीना जलमां कीडा करतो हतो तेवामां एक पेटी जलमां तरती नजरें पडी. ते लक्ष पोताने घेर आणी. तेने तालां घणांज मजबूत दीधां हतां ते कोइ घी पण इघाडी शकाणां नही. तेवामां चेटक महाराजनी दीकरी महासती प्रजावतीयें पोताना धमेनुं श्रवण करावा मांम्युं ने कह्यं जे मारा मनमां सुदेव सुगुरु अने सुधमे जो होय तो आ पेटीनां तालां उघडजो एवं कहे वाथी तुरत तालां उघडी गयां. तेमांथी अतिशयें सहवर्त्तमान विद्युनमाली

देवतानी बनावेली देवाधिदेवनी प्रतिमा नीकली, ते प्रतिमाने राजायें जोड़ ने तेज समयें ते राजा सम्यक्दृष्टि थयो. एकदिवस जिनमूर्त्त सन्मुख नृ त्यकरतुं अने गानकरतुं एवं राणीनुं कबंध जोयुं एटले माथाविनानुं राणीनुं धड जोयुं. ते वात राजायें राणीने कही. राणीयें खराब चिन्ह्यी पोतानुं आयुष्य थोडुं जाणीने दीक्ता यहण करी अनशन लश्ने सौधमे देवलोकें दे वता थइ तिहांथी पूर्वे स्नेहने लीधे राजापासें आवी राजाने प्रतिबोध क खो. तेथी राजायें कुगुरुवासनादि बोड्यां अने सजित पाम्यो माटे सदमें पालनारी स्त्रीयी पण बोध थाय बे ॥ १०॥ इति सत्कुल द्वारं ॥

ख्यय सुग्ररुदारं ॥ जीवादितत्त्वविकलेविंपुलेस्तपोजि, सुं को न तामिलरजातसुसाधुसंगः॥ कः स्वर्णसिष्टिमधिगच्च ति कूटकटपेः, कोवांबुधिं तरित जर्जरयानपात्रेः ॥ ११॥

अर्थः—हवे सत्संग, एटले सजुरु संग तेनुं द्वार कहे हे. (अजातसुसां धुसंगः के०) नथी उत्पन्न थयो सारा साधुनो संग जेने एवो (तामिलः के०) तामिल तापस (जीवादितत्त्विकिलेः के०) जीवादि तत्वोयें रिहत ह तो तेथी (विपुलेः के०) विस्तीर्ण एवां (तपोनिः के०) तपोयें करी पण (न सुकः के०) सुक थयो निहं अर्थात् संसारथकी अथवा कर्मथकी न सुकाणो. ते सत्य हे. जुवो के (कूटकल्पेः के०) खोटीवस्तुथी (कः के०) को णपुरुष, (स्वर्णसिद्धिं के०) सुवर्णसिद्धिने (अधिगञ्चति के०) प्राप्त थाय हे? अर्थात् कोइ पण प्राप्त थातो नथी. (वा के०) अथवा (जर्जरयानपानेः के०) जीर्णवाणेंकरी (अंबुधिं के०) समुइने (कः के०) कोण (तरित के०) तरे हे अर्थात् कोइ तरी शकतुं नथी. बीजुं तो सर्व सुगम हे ॥११॥

हवे आंही तामली तापसनी कथा कहे है. ताम्रलिप्ति पुरीनेविषे ताम लीनामा शेव हतो तेणे तापसी दीक्षा यहण करी. पढी ते मध्यान्हें गा ममां जइ वोहरी लावे ते वहारेला आहारना चार जाग करे,तेमां एक ज लचर जीवोनो, बीजो स्थलचर जीवोनो, त्रीजो खेचर जीवोनो अने चो थो पोतानो, एम कल्पना करी त्रण जाग काढी नाखे अने चोथा जागनां अन्नने एकवीश वखत जलें करी धोइने जोजन करे. ए प्रकारनुं तप साव हजार वर्ष कखुं,पढी ईशान देवलोकमां इंड थयो तेणे अवधिक्वानेंकरी ए वुं जाण्युं जे में पूर्वजन्में जे तप कखुं तेटला तपें तो सात जन मोहें जाय पण महारा तपमां सुसाधुसंगनो अनाव हतो. कहेलुं वे के ॥ यतः ॥ गा हा ॥ तामिलनिणे तवेण, जिणमय सिज्जि सत्त जणाण ॥ सो अन्नाण वसेणा, तामिल ईसाणइंद गर्र ॥ ११ ॥

गिरिपुष्पराकाविवामलोंगी, गुणनाराोदयना ग् जडइसंगात् ॥ जलदांबु विषं सुधा च न स्यात्, कनकाडों च किमिक्तुकानने च ॥ १०॥

अर्थः—(अमलोंगी के॰) निर्मल प्राणी, (जडइसंगात् के॰) जडना अने झानीना संगयी (गुणनाशोदयनाक् के॰) गुणनाश अने गुणोदय तेने नजनारो थाय हे. केनी पेहें (गिरिपुष्पग्रकाविव के॰) गिरि अने पुष्प नामा बे पोपट जेम. जुवो (च के॰) वली (जलदांबु के॰) मेघनुं जल, ते (कनकाड़ो के॰) धंतुराना जाडनेविषे (विषं के॰) विष (च के॰) अने (इकुकानने के॰) शेरडीना वनमां (सुधा के॰) अमृत (च के॰ वली)िकं के॰) ग्रं (नस्यात् के॰) न थाय ? ना थायज ॥ ११॥

हवे गिरि अने पुष्पनामा बे ग्रुकनी कथा कहे हे. चंपानगरीने विषे जितशत्रु राजा राज्य करे हे. ते कोइ दिवस विपरीत शिक्ट्ति अश्वें बेठेलो तेथी अश्वें कुवाटें पमाड्यो पही उयवनमां ते अश्व राजाने लइ गयो एटलामां एक जाडनी उपर पांजरामां रहेलो कोइक चोरोनो पोपट चोरोने त्यां कहेवा लाग्यो के अरे चोरो, तमारे छुंटवा होय तो लक्क्पित माणस जाय हे माटे छुंटो छुंटो. ते सांजलतांज राजा त्यांथी नाशीने एकदम तापसना आश्व ममां पेसी गयो. त्यां तापसनो ग्रुक पांजरामां रहेलो हतो ते राजाने आवतो जोइ तापसो प्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे मुनिवरो! राजा आवे हे अन्युग्धान करो, आसन मांमी आपो, आचमन आपो, आतिष्य करो, आ वां वचन ते पोपटनां सांजली राजा हिष्त थयो. एवं कौतुक जोइ ग्रुकपा सें आवी राजायें ग्रुकने पूह्युं जे एक पोपटें चोरोने कह्युं के आ खाज जाय हे माटे छुंटो अने तुं कहे हे जे आ राजाने सन्मान आपो माटे ते केवी जातनो पोपट अने तुं केवी जातनो पोपट हो? त्यां तापसनो ग्रुक वेश्लोक बोल्यो के हे राजा! सांजल्य ॥ श्लोक ॥ माताप्येका पिताप्येको,

मम तस्य च पिक्णः॥ अहं मुनिजिरानीतः,सच नीतो गवाशनेः॥१॥ गवाश नानां स गिरः शृणोति,अहं च राजन् मुनिपुंगवानाम्॥ प्रत्यक्तमेतद् जवता च दृष्टं, संसर्गजादोषगुणा जवंति॥ १॥ आ बेहु श्लोकनो जावार्थः— हे रा जन्! अमारी बेहुनी माता पण एकज हे पिता पण एकज हे परंतु मने मुनि लोको पकडी लाव्या हे अने तेने चोरो पकडी गया हे माटे ते छ्छजननी वा णी बोले हे हुं मुनिपुंगवोनी वाणी बोल्जं हुं. हे राजन्! ए तें प्रत्यक्त दीहुं जे संसर्गथकी दोषो अने गुणो थाय हे साराना संगथी सारी बुद्धि आवेहे अने नरसाना संगयी नरसी बुद्धि आवे माटे सक्जननो संग करवो॥११॥

> कोप्यन्यएव महिमानतु शुक्दष्टे, यंत् श्रेणिकोह्यवि रतोऽपि जिनोत्र जावी॥पुण्यार्गेलः किमितरोऽपि न सार्वजोमो,रूपच्युतोऽप्यधिग्रणस्त्रजगन्नतश्च ॥१३॥

अर्थः—(ग्रु६ हृष्टेः के०) सम्यक्त वंत एवा जननो (कोपं के०) कोइपण (ननु के०) निश्चें (अन्यः के०) बीजो (मिह्मा एव के०) प्र नावज होय हो. (यत् के०) जे कारण माटे (अविरतोपि के०) अविरत ए वो पण (श्रेणिकः के०) श्रेणिकराजा, (अत्र के०) आ नरतक्त्रेत्रनेविषे पद्म नाजनामा (जिनः के०) तीर्थंकर (जावी के०) याजो (इतरोपि के०) बीजो नीच कुलमां उत्पन्न ययेलो एवो पण (पुण्यार्गालः के०) पुण्याढ्य नामें (सा वैजोमः के०) चक्रवर्त्तिजेवोस्तर्वजूमिनोराजा (किं के०) ग्रुं (न के०) न ययो. अर्थात् ययोज (च के०) वली ते (रूपच्युतोपि के०) रूपथकी चृष्ट्र ययेलो पण (अधिगुणः के०) अधिक ग्रुणवान थयो (त्रिजगन्नतः के०) त्रण जगतें जेने नमन करेल्ल हे एवो थयो ॥

श्राहिं श्रेणिक राजानी कथा कहे हे. श्रेणिकनामा राजा राजगृही न गरीने विषे राज्य करे हे. ते सम्यक्ख पाम्या पही त्रणेकालनेविषे जिन नी श्रची करतो हतो जिननी पासें प्रतिदिवस श्रष्टोत्तर शत सोनाना जव नो खस्तिक पूरतो हतो श्रने पात्रने दान देतो हतो, ते राजाना सम्यक् खनी प्रशंसा इंडे देवतार्जनी पासें करी हती ते देवतायें श्राहिं श्रावीने ते श्रेणिकराजानी सम्यक्खनेविषे परीक्षा करी. परंतु सम्यक्खथकी ते चला यमान थयो नहीं. तोपण ते श्रविरति हे स्वयंनू रमण समुड्ना मत्स्य नक्षणनो नियम पण तेणे लीधो निहं एवो अविरित श्रेणिक राजा पण क्षायिक सम्यक्त्वना लाजयकी आवती चोवीशीमां पद्मनाजनामा प्रथम तीर्थकर थशे बोहोंतेर वर्षनुं आयु तथा खर्णवर्णकाय, शरीरें सात हाथ जंचो, सिंहना लांबन युक्त एवो श्रीवीरजगवाननी समान थशे.

हवे पुण्याद्य राजानी कथा कहे हे. पद्मपुरने विषे तपन राजा राज्य करे है. तेने ते नगरना रहेनारा कोई ज़ेहें एक हस्ती चेट कहारे. ते हाथी राजानो पूर्वनवें मित्र हतो पठी ते हस्तीयें करी राजायें दिग्वजय कहाो. नगरमां प्रवेश करता ते हांथीयें राजाने बोध करवा माटे एक रस्तामां प डेला खडीना कटकायें करी प्रतोली उपर एक श्लोक लख्यो. ते श्लोक॥ श्रविज्ञातत्रयीतत्त्वो,मिष्यासत्त्वोद्धस् द्वजः ॥ हा मूढशत्रुवेषेण,मित्रप्तोषेण हृष्यति ॥ आ श्लोकनो अर्थ सर्वे विद्यानोने पूत्रयो पण कोइयें तेनो अर्थ ंकह्यो नहिं परंतु ञ्चानंदसूरियें ते श्लोकनो खर्च सारी रीतें कह्यो. तेवारें राजायें कहां के या मारो हस्ती जेने राज्य यापे ते राजा. एम मंत्री उने कहीने पोते व्रतव्रहण करतो ह्वो. पढी ते ज्ञानवान् हस्तीयें वनमांथी कोश पांगलाने आए। राज्य आपी दीधुं. परंतु ते राजाने पंगु जाएीने कोइ प ए तेनी आङ्का माने नही. बीजे दिवसे प्रातःकालमां को इ अन्य राजार्ड सायें संयाम यये वते हायीपर बेवेला पांगलाना हायनेविषे रहेलुं तृण ते देवताना प्रनावथकी वज्रतुख्य थयुं. तेवारें ते पंग्र कहेवा लाग्यो जे मारी आज्ञा निह माने तेने शिर आवज पडशे. ते सांनली सर्व राजायें तेनी आक्वानो स्वीकार कस्त्रो. पढ़ी ते पंगुनुं पुएवाढ्य एवं नाम सर्व लो कोयें पाड्युं. ते अनुक्रमें त्रण खंमनो राजा थयो पढ़ी कार्लेकरी ते हस्ती मरण पाम्यो. राजायें तेना स्थानकने विषे मोहोटो प्रांसाद कराव्यो. प्र तिमानी पासें हाथीनुं रूप कराव्युं. एक दिवस राजा ते श्रीजिनप्रतिमाने देखतो ततो करीरूपने जोतां ग्रुनध्यानथकी केवलकान पामीने मोक्हें ग यो परंतु पाढला नवमां पुष्यादयना जीवें मलिन गात्रवाला ऋषिना नेत्र थकी कांटो खेंची लीधो तेथी तेने निष्कंटक राज्य प्राप्त थयुं. अने ते म लिनगात्रवाला कषिने जोइ इगंहा कीधी ते कर्में करी पंग्रल प्राप्त थयुं ॥

त्राप्याटपमप्यमलबोधवचिश्चलाती,पुत्रो यथाघम लिनोऽपि बिनर्त्ति शुिक्म ॥िकं कोटिवेधि रसचंदनर त्नबिंड,स्पर्शेपि हेमशिशिरं च न तप्तलोहम् ॥१४॥

अर्थः— (चिलातीपुत्रः के०) चिलातीपुत्र, (यथा के०) जेम (अ हपमिष के०) अहप एवा पण (अमलबोधवचः के०) निर्मल बोधवचनने (प्राप्य के०) पामीने (अधमलिनोपि के०) पापथकी मलिन ने तोपण (अदिं के०) ग्रुद्धिने (बिनार्त्ति के०) धारण करे ने. तेमां काहिं आश्चर्य नथी. जेम के? (कोटिवेधि के०) कोटिप्रमाण लोहने वेधनारो एवो (रस के०) रस अने (चंदनरत्त्विंड के०) सर्वात्तम चंदनरसनो बिंड तेना (स्प शेषि के०) स्पर्शनिव्निषे पण (हेम के०) सुवर्ण (ह के०) अने (तप्तलोहं के०) तपावेद्धं लोढुं ते (शिशिरं के०) शीतल (किं के०) ग्रुं (न के०) न थाय ना था यज.तेम सुजनना संगधी ग्रुं मूर्ष्व होय, ते ज्ञानी न थाय? ना थायज.

आहिं चिलातीपुत्रनी कथा कहे हे. राजगृही नगरीने विषे एक धन श्रेष्ठी रहेतो हतो तेने पांच पुत्रो हता,तथा सुसीमा नामें एक दीकरी हती. तेने चिलाती नामे एक चाकर हतो ते सुसीमासार्थे कुचेष्टा करवा लाग्यो तेथी शेवें तेने बाहेर काढी मूक्यों ते कर्मना वशें करी पछीपति थयो. चो रनी धाड लक्ष्ने तेज ज्ञेवना घरमां चोरी करवा रातें पेवो, अने धाडवा लाने कह्यं के जे धन मलज्ञों ते तमें खेजो परंतु सुसीमा स्त्री हे ते हुं राखीश चोरोएं ते धनश्रेष्ठीनुं घर चूट्युं. चिलातीपुत्र सुसीमाने लइनें निकल्यो,तेनी पढवाडे ते सुसीमानो बाप आव्यो तेने जोइने चिलाती विचारवा लाग्यों के ह्वे ञ्राने जइने जवाय तेम नथी पढ़ी ते चिलातीपुत्रें सुसीमानुं मस्तक पोता नी पासें तरवार इती तेणे करी काप्युं. ते जोइधनश्रेष्ठी रुदन करीने पोतानी दीकरीनुं कखेवर ज़ पाढ़ो आव्यो. पढ़ी आगल जतां ते चिलातीपुत्रें का योत्सर्गने विषे रहेला कोइ मुनिने नजरें जोयो, तेवारें तेनी समीप जइने चि लातीपुत्र केहेवा लाग्यों के माहाराज! थोडा अक्रमां धर्म कहो,नहिं तो त मारुं माथुं कापी नाखीश. तेने मुनियें " उवसमविवेग संवर, " ए गाथा क हीने आकाशमां गमन कखुं. ते चिलातीपुत्र तेना स्थानमां रहीने ते गा याना अर्थने चिंतवन करतो इतो कायोत्सर्गनेविषे रह्यो, तेना शरीरने मको डा अने वज्र जेवा मुखवाली कीडीयोयें पादादिकथी आरंजीने शिरपर्यंत फो ली खाधुं चारणी जेवुं शरीर कीधुं. ए रीतें साडा त्रण दिवस उपसर्गने स हन करीने सहस्रार देवलोकनेविषे देवता थयो. एम थोडा अक्तरना उप देशथकी चिलातीपुत्र महापापी हतो तोपण देवता थयो, माटे थोडो प ण धर्मोपदेश सुखदायक हे एम जाणवुं ॥ १४॥

> देषेऽपि बोधकवचः श्रवणं विधाय, स्याञौहिणेय इव जंतुरुदारलाजः॥ क्वायोऽप्रियोपि सरुजां सुख दो रविवा, संतापकोपि जगदंगजृतां हिताय॥१८॥

अर्थः—(द्वेषेपि के०) द्वेषनेविषे पण एटले मननी अरुचिमां पण (जंतुः के०) जीव (बोधकवचः के०) बोधकारक वाक्यनुं (अवणं के०) अवणने (विधाय के०) करीने अर्थात् बोधकारक वचन सांजल्युं होय तो हितने माटे थाय. (यथा के०) जेम (काथः के०) काथ (अप्रियोऽिप के०) कडवो हो तो पण (सरुजां के०) सरोगीजनने (सुखदः के०) सुखदायक (स्या त् के०) थाय (वा के०) तथा (रिवः के०) सूर्य (संतापकोपि के०) संतापकारक हो तो पण (जगदंगजृतां के०) जगतनेविषे प्राणीयोना (हि ताय के०) हितने माटे थाय हो. केनी पेहें? तोके (चदारलाजः के०) महो टो थयो हे लाज जेने एवो (रोहिएोय इव के०) रोहिएाया चोरनी पेहें ॥ १ ४॥

श्राहिं रोहिणिया चोरनी कथा कहे हे. राजग्रहीनेविषे विनारगिरि पर्व तमां रूप्यखुरनो पुत्र लोहखुरनामा कोइक चोर रहेतो हतो,ते मरणना स मयंनेविषे पोताना पुत्र रोहिणियानी पासें कहे हे के धूर्च एवा श्रीमहावी रखामीनुं वचन तारे क्यारेपण सांजलवुं निहं ते वचन तेणें कबुल कखुं. तदनंतर लोहखुरो चोर मरण पाम्यो पही रोहिणियो एकदिवस रस्तामां चा व्यो जाय हे तेटलामां वीरखामीनी योजनगामिनी वाणीने सांजली तेमां श्रा गाथा सांजली जेम के:—" श्रणमिसनयणा मणक, क्रसाहणा पुष्फदा म श्रमिलाणा ॥ चग्रंग्रलेण चूिमं, न हिबित सुरा जिणा बिति ॥१॥ श्रा गाथा सांजली तेने घणी वीसार हे तो पण ते विस्मरण थाती नथी. हवे ते चोर श्रेष्ठी थइने राजग्रहने विषे फरे हे श्रने श्रज्यकुमारने प्रणाम कह्या विना जमतो नथी. एकदिवस जिनमंदिरमां वेतेला श्रज्यकुमारनी पासें श्रावक यहने प्रवेश कहाो. वंदन स्थानकनेविषे अजयकुमारने जुहार कहाो. पढ़ी अजय कुमारें रोहिणियाने साधर्मिकना मिषे पोताने घेर तेडी जहने जोजन करवा बेसाड्यो जोजनानंतर दहीमां नाखेला सुरापानें करी तेने अचेतन करी नाख्यो पूर्वे घणुंज सारुं धवल करेलुं घर हतुं तेमां शय्यामां सुवाह्यो, ज्यारें जाग्यो,त्यारे जीवता रहो आनंद रहो एम बोलती एवी अने चामर नाखती एवी देवांगना तुख्य वारांगनार्जनी साथें वार्ता करवा लाग्यो.

तद्दर्शनं किमिप सा सुलसाप येन, प्रादािकनोिप म हिमानममानमस्ये ॥ नेर्मख्यतः राशिकला नवकेत कीत्वं, मालातुलां च हरमूर्धि बनार गंगा ॥ १६॥

अर्थः—(तत् हे॰) ते (किमिष के॰) अपूर्व एवा (दर्शनं के॰) सम्यक्लद्र्शनने (सा के॰) ते (सुलसा के॰) सुलसानामनी श्राविका (आप के॰) पामती हवी. (येन के॰) जे सम्यक्त्वे करीने (अस्ये के॰) ए सुलसाने (जिनोपि के॰) जिननगवान् पण (अमानं के॰) जेनुं प्रमाण नधी एवा (महिमानं के॰) महिमाने (प्रादात् के॰) आपता हवा अर्थात् सुलसा श्राविकाना सम्यक्त्वने महावीर नगवाने वखाण्युं ते सम्यक्त्वनुं फल हे. त्यां दृष्टांत कहे हे. (शशिकला के॰) चंड्मानीकला तथा (गंगा के॰) गंगा ते (नैमेव्यतः के॰) निर्मल पणाधी अनुक्रमें (हरमूर्षि के॰) शंकरना मस्तकनी उपर (नवकेतकीत्वं के॰) नव केत कीपणाने (च के॰) वली (मालानुलां के॰) मालानी नुव्यताने (बचा र के॰) धारण करती हवी. अर्थात् ईश्वरना मस्तकने विषे चंड्कला केत की रूपने ग्रुं नथी धारण करती? तथा गंगा जे हे ते कुसुममालानी नुव्यताने ग्रुं धारण करती नथी? ना करे हे॥

श्राहिं सुलसानी कथा कहे हे. राजगृहीनगरीनेविषे क्वायिक सम्य कल धारणकरनारी शीलालंकारें नूषित एवी सुलसा नामनी श्राविका रहे ती हती एकदिवस श्रंबडनामा परिव्राजकना मुखयी श्रीवीरनगवाने धर्म लान ते सुलसाने कहेवराव्यो श्रंबड नामा पारिव्राजक राजगृहीमां जइने प्रथमना दिवसमां वैक्रिय शिक्तयें करी पूर्व प्रतोलीमां चार मुखेंथी चार वेदनो उज्ञार करतो हंसवाहनपर बेठो श्रने श्रदींगमां सावित्री हे जेने

एवो साक्तात् पोतें ब्रह्मा थइ बेंगे तेने एक सुलसाविना बीजी सर्व प्र जा प्रणाम करवा माटे खावी. तदनंतर बीजे दिवसें दक्षिण प्रतोलीनेविषे गरुडपर बेवेला, लक्कीयें सहवर्त्तमान सुशोनित तथा पीतांबरधारी, स्या मशरीरवाला अने चार हाथनेविषे शंख, चक्र, गदा, पद्म, तेने धारण कर नारा एवा साक्वात वैक्रिय शक्तिथी विष्णु थइ बेठो. तेना दर्शन करवां प ण सुलसा शिवाय सर्वलोक गयां. पढी त्रींजे दिवसें पश्चिम प्रतोलिकानेविषे वृषनना वाहनवाला, तथा पार्वती अर्दीगें होवाथी शोनायमान, नस्में करी उद्भूलित अंगवाला, कंठनेविषे मरेला मनुष्यना तुंबडानी माला पेहे रनारा, जटा जूटची सुशोनित मस्तकवाला त्रिश्चलने धारण करनार, क र्पूर् गौर शरीर वाला, एवा साहात् शंकातुं रूपवैक्रिय शक्तिथी कखुं तेनां दरीन करवा सर्व सुलसा विना गयां. तदनंतर वली चोथा दिवसने विषे उत्तर प्रतोलीने विषे सोनाना, रूपाना, अने रत्नना ए त्रण प्राकारना मध्यनेविषे दिव्यसिंहासनपर बेवेजा, मस्तक उपर त्रणं बत्रने धारण करनार, नामंम ल, धर्मध्वज, अशोकवृक्त, धर्मचक्रादि समृद्धियें करी संशोनित, सुर अस र किन्नर तेनी कोडा कोडीयें सेव्यमान, पचवीशमो हुं तीर्थकर हुं एवो जगत्मां चद्घोप करावतो साक्तात् पोतेंज तीर्थंकर यतो हवो ते दिवसें तेने वांदवा माटे ते गामना सर्व श्रावको खाव्या, परंतु सुलसा श्राविका गइ नही. पढ़ी ते खंबडे सुलसाने घेर जइने नमस्कार कर्यो अने कह्यं के तुने धन्य हे कारण के श्रीवीरनगवान पण तारा धर्मने वखाणे हे. इ त्यादि वीरनगवाने करेली एवी प्रशंसा सर्वजन सांचले. तेम अंबडे कहीने ते पीतें पण दृढ सम्यक्ली थतो ह्वो ॥ १६॥

> दूरेईतोस्तु महनादि नती चयापि, श्रेयः सुरोजनि न सेंडुकर्द्धरः किं॥ कल्पडुमः स्मरणतोपि न किं फलाय, पार्श्वेपि वामृगमदोनिह सोरनाय ॥१९॥

अर्थः— (अर्दतः के०) वीतरागनुं (महनादि के०) पूजनादिक तो (दूरेऽस्तु के०) दूर रहो. परंतु (नती खयापि के०) नमन वां छनायें करी ने पण (श्रेयः के०) कव्याण थाय. तेमां आश्रयं नथी. केम के (सेडुकद ईरोपि के०) सेडुकनामा ब्राह्मणनो जीव, दईर थयो उतो पण नमन वां छ

नायें करी (सुरः के०) देव (किं के०) ग्रुं (न के०) निहंं (अजिन के०) थयो. अर्थात् थयोज? एटले मेंडुकब्राह्मण वातें करी कुष्टी थयो ढ तो जलजल करतो मरण पाम्यो तेणें करीने तेने कोइ वावमां देडकानो अवतार आब्यो. तेने लोकोना कहेवाथकी श्रीवीरनगवाननी स्तुति सांनली ने जातिस्मरण उत्पन्न थयुं तेथी श्रीवीरनगवानने नमस्कार करवा चाल्यो तेटलामां रस्तामां घोडाना पगमां आववाथी ते नमन करवानी इज्ञा सहित मरण पामवाथी प्रधान देवता ग्रुं थयो निह ? अर्थात् थयोज ॥

आहिं दृष्टांत कहे है. (कल्पड्डमः केण) कल्पहृक्त्नुं, (स्मरणतोपि केण) स्मरण करवा चकी पण (फलाय केण) फलने माटे (किं केण) ग्रुं (न केण) न होय अर्थात् होय. वली बीज़ो दृष्टांत कहे हे के (वा केण) वली (पार्थिपि केण) पडखामां रहेली एवी (मृगमदः केण) कस्तूरी तें (किं केण) ग्रुं (सोरनाय केण) सुंगध माटे (निह केण) न होय. ना हो. यज. अर्थात् कस्तूरी पडखे पडी होय तो पण सुगंधने आपे हे. अने क ल्पह्क् पण स्मरण करवाथी वांहित फल आपे हे. तेम नगवानने नम वानी इन्ना पण देवपणाने आपे एमां आश्वर्य नथी॥ १९॥

हवे आहिं दर्डरांग देवनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. एक दिवस श्रीवीरनगवान वैनारगिरिने विषे समोसखा त्यां सर्वजोक वंदन करवाने गया. ए अवसरने विषे प्रतोजीपालक बुच्चित्त एवो सेडुक नामना ब्राह्मणने वडां आपी ते ठेकाणें ते सेडुकने राखीने सर्वजोक प्रचने वांदवा गया. पढ़ी ते सेडुक ब्राह्मण बीजे स्थानकें जवाने असम र्थ होतो हवो. पण तृषा जागवाथी मरण पामीने आगल रहेली वाव्यने विषे देडको थयो. ते वाव्यमां जल नरवा आवेली एवी श्राविकाना मुख्यी श्रीवीरनगवान आव्या एम सांनलीने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं तेवारें वीर नगवानने वांदवाने देडको चाव्यो रस्तामां श्रेणिकराजाना घोडानी खरी थी चंपाइ देडको मरण पाम्यो त्यांथी ते दर्धरांगनामनो देव थयो पढ़ी ते देवें महोटी क्रिक्स सहित श्रीवीरनगवान पासे आवीने वंदन कर्छु ॥१९॥

ध्यातः परोक्तेपि जिनस्त्रिशुध्या, जीर्णानिधश्रेष्ठिवदिष्टसिष्घे ॥ सिंधुप्रवश्चे कुमुदोघलहम्ये, चकोरतुष्ठ्ये विधुरभ्रगोपि॥१७॥ अर्थः—(जिनः के०) नगवान (परोक्टेऽपि के०) अप्रत्यक् होय तो पण (त्रिग्जह्या के०) मन वचन कायानी ग्रुहियें करीने (ध्यातः के०) ध्यान कथा बता (जीणीनिधश्रेष्ठिवत् के०) जीणीनामाश्रेष्ठिनी पेवें (इप्टिसिट्यें के०) वांबितनी सिहिने आपे वे जेम (अच्चगोपि के०) आकाशमां रह्यों एवो पण (विधुः के०) चंड्मा जे ते (सिंधुप्रवृध्यें के०) समुड्नी वृहि ने माटे तथा (कुमुद्रोधलक्ष्म्यें के०) कमलना चंघनी शोनानेमाटे तथा (चकोरतुष्ट्यें के०) चकोरपक्षीनी वृष्टिने माटें ग्रुं न होय? ना होयज.

आंही जीर्णश्रेष्ठीनी कथा कहे है. चंपानगरीनेविषे श्रीवीरनगवान चो मासुं रह्या त्यां जीर्णश्रेष्ठी आवीने वीरनगवानने कहे हे के महाराज! पारणने दिवसे मारे घेर पारणुं करवा आवजो. पही वीरनगवान तो पा रणाने दिवसे मिण्यादृष्टि अनिनंवश्रेष्ठीने घेर पारणुं करवा गया, तेणे आ जैनदृशीनी हे एवी बुिंद्यं कुट्माषें करी पारणुं कराव्युं. तेना घरमां त्रीश कोडी खर्णरत्न अने रूपैयानी देवतां उण् हृष्टि करी पही ते नंगरना राजायें कोइ एक सुनिनी आगल कह्युं के महाराज! अमारुं नगर अन्य हे जेमां श्रीवीरनगवाने पारणुं कह्युं. पारणुं करावनार नाग्यवान अनिन वश्रेष्ठी हे. त्यारें सुनियें कह्युं के हे राजा! ते शेहें तो इव्यपारणुं कराव्युं परंतु नावपारणुं तो जीर्णशेहें कराव्युं हे जेने प्रसादें करी ते देवता थाशे माटे नावज प्रमाण हे. एम जाणवुं नाव विना सर्वे मिण्या जाणवुं॥ १०॥

नव्योग्ररुः सुरतरुर्विहितामितिर्६,र्यत् केवलाय कव लार्थिषु गौतमोऽजूत् ॥ तापातुरेऽमृतरसः किसु दौ त्यमेव, नाप्रार्थितोऽपि वितरत्यजरामरत्वम्॥ १ए॥

अर्थः—(नव्यः के०) नवीन एवा (ग्रुसः के०) ग्रुस्, ते (सुरतसः के० कल्पवृद्ध समान छे. वली केवा छे ? तो के (विहितामितर्द्धिः के०) अण याच्यायका पण प्रमाण विनानी क्रिंद्धना देवावाला छे (यत् के०) जे कारण माटे (गौतमः के०) गौतमक्षि तो (कवलार्थिषु के०) कवलनी याचना करनार, पारणार्थी तापसोने विषे (केवलाय के०) केवलकानने माटे (अजूत् के०) थाता हवा अर्थात् गौतम क्षि कवलनी याचना क रनारने केवल कानना दातार थया (अप्रार्थितोपि के०) नहि प्रार्थना क

रेला एवा पण ग्रह (अजरामरत्वं के०) अजरामरपणाने (नवितरित के०) निह आपे ग्रुं ? अर्थात् आपेज हे. जेम (तापातुरे के०) तापेंकरी आतुर एवा मनुष्यने विषे (अमृतरसः के०) अमृतरस (किमु के०) ग्रुं (शैत्यमेव के०) शीतलपणाने न पामे ग्रुं ? पामेज.

आहिं गोतमलामीनी कथा कहे हे. एकदिवस श्रीवीर मुखयकी गोतमें एवं सांनल्युं के जे खलिंध्यें करीने अष्टापद पर्वतचपर चडीने चोवीश जिनने नमस्कार करे ते तेज नवमां मोक्स्ने प्राप्त थाय हे तेवारें.गोतमला मी गगनमार्गें करी अष्टापद पर्वतनेविषे गया. तेमने गगनमार्गयकी आव ता जोइने पन्नरसोत्रण तापसो चिंतववा लाग्या जे आ पुरूप केवी रीतें आह योजन उंचा पर्वत उपर चडी शक शे तेटलामां तो गोतम गणधर,रवि किरणोतुं अवलंबम करीने गिरिपर चढी गया. त्यां चोविशजिनने नम स्कार कखो. रात्रें रह्या त्यां श्रीवज्जस्वामीना जीवें तिर्यक् जंजकदेव पणे तेने बांध कखो. प्रातःकालमां गिरियकी उत्तरता गोतमलामीयें रस्तामां पंदरसो ने त्रष्य तापसोने प्रतिबोध्या. पही इधना नरेला एकपात्रें करी स वेने पारणुं करात्र्युं अक्शणमहाणसी लिब्धयेंकरी परम अन्ननी वृद्धि थइ. पांचशे साधुने चलुं करतां केवलकान उत्पन्न थयुं अनेपांचसोने समवसरण जोतां केवल कान उत्पन्न थयुं. तथा पांचसोने श्रीवीरचगवाननीवाणी सां जलतां केवल कान उत्पन्न थयुं. कहेलुं हे के॥ कोडिन्नदिन्नसेवा,लनाम एपं च पंचसय कलिए॥ पडिबुद्धे गोयमदं, सणोण पणमामि सिद्धिया॥ १॥१ ए॥

कुबोधमतयोजितः कुगुरवोजमाख्यादिवत्, पुनः क्वन वज्ञ वत्, सुगुरवोऽमलाजन्मतः॥ करीरिपचुमंदवन्नधनसारसञ्चं दना,घनान च खरोष्ट्रवज्जयतुरंगज्ञ इिपाः॥२०॥ गुरुद्वारं २

अर्थः—(जमाव्यादिवत् के०) जमाव्यादिकनी पेठें (कुबोधमतयः के०) कुत्सितक्ञानमां हे मित जेनी एवा (कुगुरवः के०) कुगुरु जे हे ते मलवा तो (अनितः के०) सुलन हे (पुनः के०) वली (जन्म तः के०) जन्मथकी (अमलाः के०) निर्मल, एटले निष्पाप एवा (सुगु रवः के०) सुगुरु जे हे ते तो (वज्जवत् के०) वज्रस्वामीनी पेठें (क चन के०) कोइक हेका ऐक होय. जेम (करीर पिचुमंदवत् के०) केरडा

लींबडा वगेरेना जाड घणा होय हे पण (घनसारसचंदनाः के॰) कर्पूर चंदननां हक्को (घनाः के॰) जाजां (न के॰) नथी होतां (च के॰) व ली (खरोष्ट्रवत् के॰) गर्दन उंटनी पेठें कुग्रुरु घणा होय हे तथा (जय तुरंगनइिषाः के॰) जेणें करी संयाममां जीताय एवा जयजातना अश्वो तथा नइजातीना हाथीयों जे हे ते घणा (न के॰) नथी होता. तेम कु गुरु घणा होय हे अने सुगुरु घणाज थोडा होय हे.

श्रांहिं.जमालीना तथा वज्रखामीनो हष्टांत हे. तेमां प्रथम जमालीनी कथा कहे हे. श्रीमहावीरखामीना जमाइ जमालि नामा राजकुमारें पोता नी स्त्री सहित नगवान पासेंथी दीक्षा लीधी क्रमेंकरी तेने श्राचार्यपद प्राप्त थयुं तेना परिकरमां पांचगें साधु रहेता एक दिवस ते जमाली श्राचार्यने शरीरें ज्वर श्राव्यो स्थारें साधुने कह्युं के मारे माटे संथारो करो, के जेथी हुं सुइ जानं, त्यारें ते साधुयें पथारी करवा मांमी एवामां वली पाछुं जमालीयें कह्युं के संस्तारण कह्युं के नहिं? साधुयें कह्युं हा मा हाराज पधारो. ते सांजली जमाली श्राचार्य त्यां श्राव्या. पथारी कराती हती ते जोइने बोव्या हे साधुने! तमें तो सत्यवक्ता हो ने खोटुं हां कर वा बोव्या जेहा संस्तारक कह्यों हे? ते बोव्या महाराज श्रमे श्रमत्य नथी बोव्या त्यारे सूरि कहे हे के तमें खोटुं बोव्या? कारण करेलुं कार्य होय ते नेज करेलुं हे एम कहेनुं एम ते उत्सूत्रप्ररूपनार निन्हव थया. तेमां ते जमालीनी स्त्री महासती ते श्रीमाहावीरनी पुत्री हती, तेने कोइ एक कुं जकार श्रावके कांबलीना एक प्रदेशना ज्वालनें करी बोध कह्यों तेथी बोध पामी पण जमाली प्रतिबोध पाम्यों नहीं निन्हवज रह्यो.

दवे वज्रस्वामीनी कथा कहे हे. श्लोक ॥ यः पालनस्थः,श्रुतमध्यगीष्ट, पाएमासिकोयश्ररितानिलाषी ॥ त्रिवार्षिकः संघममानयद्यः, श्रीवज्रनेता न कथं नमस्यः ॥१॥ तुंबवनसित्रवेशें धनगिरिनामा श्रेष्ठीनी स्त्री सुनंदा नामें हती तेने वज्र नामे पुत्र थयो ते पारणामां रहेता तेवारें साध्वीचे एकाद शांगी नणती हतीते सांनलतावेंत नणी गया अने त्रणवरसना थया तेवारें तेणे दीहा यहण करी. पही दिन दिन गुणना वधवाथी तेने गुरुयें आचा यपद दीधुं. एक दिवस श्रीवज्राचार्य विहार करता हता कुसुमपुर नामे नगरें गया ते नगरमां नगरशेवने घेर उतरेली एवी साध्वीचेयें श्रीवज्रस्वामीनी ह

पसंपत्ति वखाणी ते शेवनी दीकरी सौनाग्यमंजरीयें सांजली तेथी ते श्री वज्रस्वामीने विषे अनुरागिणी थइ थकी पोतानां माता पितापासें बोली के एक वरदान तमारी पासें मागवा इहुं हुं. त्यारे पितायें कहुं के माग्य. ते वखत कन्या कहे हे के श्रीवज्रस्वामी विना बीजा पुरुष साथे मने वरा ववी नही. आवो आयह पोतानी कन्यानो जोइने ते नगरशे पोतानी कन्याने तथा एक कोटि धनने लइने श्रीवज्रस्वामी पासे जइने कहेवा ला ग्यों के हे प्रनो! आ कन्याने आप वरो अने कोटिधन यहण करो मारी उपर प्रसन्न याउं त्यारे सूरीयें कहुं के हे शेव! ए वाक्य बोल्या ते तमों ने घटे नही. जेणे सर्व स्वधन, कनक, वगेरे त्याग कहुं हे एवा सुनिने विषयो विष समान इःखदायक भाय हे. कहेलुं हे ॥ विसयविसं हालह लं, विसयविसं उक्कडं पियंताणं॥ विसयविसायन्नंपिव, विसयविस विसोह या हुंति॥ १॥ कोडिसहेहिं धणसं, चयस्स ग्रणसुनरियाइ कन्नाए॥ न विलुको वयर रिसी, अलोज्ञया एस साहूणं॥ १॥ ए प्रकारनी वज्रस्वा मीनी वाणी सांजलीने ते कन्या दीक्वाने यहण करती हवी. त्यां श्रीवज्ञ स्वामीना उपदेशयी अनेक जीवोयें दीक्वा यहण करी॥ २०॥

विज्ञाय धन्याजिनधर्ममर्म, रज्यंति श्रय्यं ज्ञववन्न जाड्ये ॥ पी त्वा सिताजावितधेनु इग्धं, कोवाम्लतकार्कपयां सि पश्येत्॥ ११॥

श्रर्थः—(धन्याः के०) सुनाग्य जाएवा. जे (जिनधर्ममर्म के०) जिन धर्मना मर्मने (विज्ञाय के०) जाएविने (जाड्ये के०) जाड्यनेविषे (शय्यं नववत् के०) शय्यं नवस्वामीनीपेतें (न रज्यंति के०) राग करता नथी ते धन्य ते. श्रर्थात् जडनावनेविपे श्रासक्त नथी थता ते धन्य जाएवा, शय्यं नव नष्ट मनकनो पिता दश्वेकाितकनो कर्ना जिनप्रतिमाने जोइने बोध पाम्यो. श्रहो कष्टमहो कष्ट कोइ तत्त्व जाएता नथी! एम साधुनां वचन सां नजीने गुरुने तत्त्व पूठीने मिण्याल यागादिषकी वैराग्य पामीने प्राप्त थइ ते उन्यशिक्षा जेने एवो ततो शय्यं नवनामा श्राचार्य थयो. त्यां दृष्टांत कहेते. (सितानावित के०) शर्करायें मिश्रित एवं (धेनुड्ग्धं के०) गायनुं जे ड्य, तेने (पीला के०) पान करीने (कः के०) कयो पुरुष (श्राम्लतक के०) खाटी त्यासने (वा के०) श्रने (श्रक्रपयां सि

के॰) आकडाना ड्रधने (परयेत् के॰) जोवे? अर्थात् खाटी ग्रास तथा आकडाना दूध सामुं जोवेज निहं, तो जक्षण तो केमज करे.

अहिं शर्यंनव स्वामीनीकथा कहे हे. राजगृही नगरीने विषे मोटी स मृदि वालो शय्यं नवनामा नष्ट वसे हो. ते धर्मार्थी यको लोकोने यक्त क रावे हे. एटलामां पोताने पाट योग्य पात्रने जोता एवा प्रजव स्वामीयें ते ना यज्ञमां वे साधु मोकव्या अने ते साधु बोव्या के अहो कष्ट महोकष्ट तत्त्व कोइ जाणतुं नथी. एवं वचन सांजलीने शय्यंजवें साधुने पूठ्युं. के त त्त्व ते ग्रुं हे ? ते कहो कारण के जैनदर्शनी कल्पांतमां पण असत्य ना षण करता नथी. त्यारें साधुयें कह्युं के अमारा ग्रहपासें आवो ते तत्त्व कहेज़ें ते सांजली तेनी साथे तेमना गुरू आगल गया. अने गुरुने पूर्वं के हे गुरो ! तत्त्व ते ग्रुं हे ? त्यारे युरुयें कह्यं के तमारी याजक कहेज़े ते सांचली पाठा वली तत्काल शय्यंचवें उपाध्यायने पूठ्युं के तत्त्व ते ग्रुं हे ? ते कहो. कारण जैनो कल्पना श्रंतमां पण श्रसत्य बोलता नथी. माटे जो तमे सत्य निह कहो तो शिर बेदमांज तत्त्व बेएम वेदवाक्य बे माटे त मारं शिर बेदी नाखीश. एम कदी दायमां खङ्ग उपाड्युं तेवारें याक्तिको यें तेना यक्तस्तंननी नीचें रहेली शांतिनाथनी प्रतिमा देखाडी तेवारें श य्यंजव स्वामीयें प्रतिबोध पामीने सगर्जा स्त्रीने मुकीने गुरुनी पासे व्रतय हण करी अनुक्रमें आचार्यपद पाम्या. तेमना पुत्र मनकनुं शेष व महीना नुं आयु रह्यं तेवारें पोताना पुत्रने माटे दशवेकालिक रच्युं. व मासनी दिक्ता पालीने ते मनक पण देवलोकें गयो ॥ २१ ॥

> लब्धे जडः कोपि हितेऽपि धर्मे, स्तौत्यक्तसौ ख्यानि रारािव राजा ॥ न पंकजं जेक उपैति पंकं, क्रमेलकोनाम्त्रमुपैति निंबम् ॥ ११ ॥

अर्थः—(कोपि के॰) कोइ पण (जडः के॰) मूर्व प्राणी, (हिते के॰) हित करनार एवा (धर्मेपि लब्धे कें॰) धर्म प्राप्त यये उते पण (शशी के॰) शशी नामा (राजा के॰) राजानी (इव के॰) जेम (अक्सीख्यानि के॰) इंडियोनां सुखने (स्तोति के॰) वखाणे. अर्थात् शशीराजा जिनधर्म पाम्या पठी पण इंडियसुखनें माटे आकांक् थयो तेनी पेठें ते जड पण

थाय है. ख्रांही हष्टांत कहे है के जेम (नेकः के॰) मेडको (पंकजं के॰) कमलने (नचपैति के॰) प्राप्त थातो नथी परंतु (पंकं के॰) गाराने प्राप्त थाय हे तथा (क्रमेलकः के॰) उंट ते (ख्राम्नं के॰) ख्रांबाने (नचपैति के॰) नथी प्राप्त थातो परंतु (निंबं के॰) निंबहक्तने प्राप्त थाय है ॥

आंही शशीराजानी कथा कहे हो. शुक्तिमती पुरीने विषे सूर अने श शी बे नाइ राज्य करता हता एकदिवसें बेहुजण उद्यानने विषे श्रीशील सागर जपाच्यायनी पासें धर्मनी देशना सांजलता हता, तेमां आ श्लोक श्रव ए कह्यों ते जेम के ॥ मानुषं जवमवाप्य दक्षिणा,वर्त्त शंखिमव ये जवांबुधौ ॥ पूरयेत्सुकृतगांगवारिणा, पापवृत्तिसुरया न चोत्तमः ॥ नावार्थः-जे जी व मनुष्य देह पामीने नवांबुधिने विषे दक्षिणावर्त शंखनी पेतें सुकृतरूप गंगाजलने पूरे, ते उत्तमजीव जाएवो. तथा जे जीव नवांबुधिने विषे मनुष्यदे हरूप दक्षिणावर्त शंखने पापगृतिरूप मदिरायें करीने नरे हे ते जीव उ त्तम नहिं॥ ञ्चा गुरुवाक्य सांजलीने सूरराजा बोध पाम्यो ञ्चने ध र्माचरण करवा लाग्यो अने शशी राजा उपदेश समजीने इंड्यिसुखने नो गवे हे, परंतु धर्मनुं आचरण करतो नथी. पही वृद्धनाश्यें घणो समजाव्यो तो पण तेणे विपयासक्ति होडी नहीं. पही तेमरण पामी नरकें गयो. अने स्वरराजा स्वर्गे गयो. त्यां अवधिकानें करी नाइने नरकमां पडेलो जोयो तेवारें ते देव पोतें त्यां नरकमां गयो ते सूर राजानी समृद्धि जोइने शशी राजा पश्चात्ताप करे हे अने जाइने कहे हे के हे जाइ! त्यां जइने मारा देहनुं चेदन करो बेदन करो अने मने स्वर्गसुख मखे, तेम करो. ते सांच लीने तेने महोटो नाइ कहेवा लाग्यों के हे नाइ! जीवरहित जडदेहनी कदर्थना करे ग्रुं थाय ? पूर्वजन्में जीव होय तेवारें कष्ट कखुं होय तोज तेने सुख मखे, हवे शुं मखे ? एम कहीने ते देव पोताना स्थानक प्रत्यें गयो. कह्यं हे के ॥ नरयञ्चो सिसराया, बहु जणइ देह लालणा सुहिर्छ ॥ प डिउमि नए नाउ, श्रंतो मे जाय तं देहं ॥ १ ॥ को तेण जीवरहिए, ए संपयं जाइ एण दुक्क गुणो ॥ जइिस पुरा जायंतो, तो नरए नेव निवडं तो ॥ १॥ जावा उसावसेंसं, जावय थोवोवि अिं विवसाउं ॥ ताव करि क प्पहित्रं, माससिराया वसोहेसि ॥ ११ ॥

कर्पूरप्रकर, अर्थ तथा कथा सहित.

अष्टाब्दोपि तथा विधवततपः स्वाध्यायकृत्यासहो, प्युचैध्यानबलेन कर्मरिपुनिर्मुक्तोतिमुक्तोमुनिः॥ रा क्या गचत तन्न किं हितपथं मुक्वा प्रमादोत्तरं,श्रूयं ते च मदालसा तनुनुवो बाल्येपि योगोज्ज्वलाः॥ १३॥

अर्थः—हे नव्यजीवो! (अष्टाब्दोपि के०) आत वरसनी उमर वालो एवो पण अने (तथाविधव्रततपः स्वाध्यायकत्यासहोपि के०) जे शास्त्रोक्त री तें करवा इःकर एवां अहिंसादिक बारव्रत तथा तपः स्वाध्याय करवामां अ शक्त कारण के अत्यंत नानो हे. एवो पण (अतिमुक्तः के०) अतिमुक्तना मा (मुनिः के०) मुनि ते (उच्चेध्यीनृब्दोन के०) उंचा एवा ध्यानबदें करीने (.कर्मरिपुनिर्मुक्तः के०) कर्मशत्रुथकी मुक्त थयो. (तत् के०) ते कारण माटे (शक्त्या के०) पोतानी शक्तियें करी हे नव्यो! (प्रमादोत्तरं के०) प्रमादथकी उत्तर अर्थात् आतस्य तेने (मुक्ता के०) मूकीने (हित पयं के०) हितमार्गप्रत्यें (किं के०) केम (नगज्ञत के०) जाता नथी? त्यां दृष्टांत कहे हे. जेम के (मदालसातनु सुवः के०) मदालसाना पुत्रो, (बात्येपि के०) बालपणामां पण मातायें बोध कह्या हता दीक्ता लक्ष्ने (यो गोज्ज्वलाः के०) ध्यानमां निर्मल थइ गया. एम (श्रूयंते के०) संजलाय हे॥

आंहिं अतिमुक्तक्तिनी कथा कहे हे. शावस्ती नगरीनेविषे रहादित्य नामा कोइ शेव वसे हे. तेनो पुत्र अतिमुक्त नामा हतो. तेणे ह वर्षनी उमरमां श्रीशीलंधराचार्यनी पासें दीक्ता यहण करी. एक दिवस श्रीग्रुरु नी साथें बहिर्नूमिकायें गयो. ग्रुरु जल लड़ने बीजे ठेकाणे जुदा गया. अने ते कुल्लक हतो ते पोतानी पासें कांचली हती तेने लघु तलावनेविषे फेंकी दीधी अने ते काचली जलमां तरवा लागी त्यारे ते अतिमुक्तनामा कुल्लक कहेवा लाग्यों जे जुवो जाइन आ मारी बेडी तरे हे ए प्रकारें बो लता ते पुत्रने गुरुयें दीवो. पढ़ी ज्यारे पोताने स्थानकें आव्यो त्यारें गुरु यें कहां के, तुने मोहोटुं पाप लाग्युं कारण के तें मृत्तिकानी अने नीरनी विराधना करी. माटें ईर्यापथिकी रूडी रीतें पडिक्कम ते सांजली ते ईर्यापथिकीने अर्थथी प्रतिक्रमतो हतो "दगमदृीमक्कडा" ए पद तथा अर्थनो उज्ञार करतो गुक्कध्याने करी केवल क्वानने प्राप्त थयो. आ कात्र्यमां बीजी मदालसानी कथा है, ते कहे है. कांचनपुरनें विषे क्लुध्वज राजा राज्य करे हे. तेनी मदालसा नामे पहराणी हती. तेणें अनुक्रमें संसारजोगने जोगवतां पुत्र प्रसच्यो राजायें पुत्रजन्म महोत्सव कथो. ते बालक पारणामां पोढ्यो हतो रहन करे हे. त्यारें ते मदालसा तेने हिंचकावती आ श्लोक कहे हे के ॥ मृत्योर्बिजेषि किं बाल, सच नी तं न मुंचित ॥ अजातं नैव गृह्णाति, कुरु यह्णमजन्मिन ॥ जावार्थः—हे बालक ! मृत्युथकी शा माटें जय पामे हे ? ते मृत्यु बीहीता प्राणीने पण मुकतुं नथी. अने जे उत्पन्न थातो नथी तेने काल पण यहण करतो नथी. माटें तहारो फरी संसारमां जन्म न थाय तेवो उपाय कर. एवो अर्थ जाणीने बालक पण वैराग्यने प्राप्त थयो. रहन करतो बंध थयो आव वरसनो थयो त्यांज तेणे योग यहण कथो. एम सात पुत्रो मदालसाना उपदेशें करी बालपणामांज तपस्वी थइ गया ॥ १३ ॥

रािलं तपश्च बलदेवमुनिश्चरित्वा, दानं प्रदाय रघकृत्रितये ऽप्यराक्तः॥ एणोमुदा तदनुमोदनया सुरोऽजूत्, योगािष्ठ सिष्टिमगमञ्चतुरंगितांिहः॥ २४॥ राक्तिदारं संपूर्णम्॥

अर्थः—(त्रितये के॰) शील, तप, जावने विषे (अशकोपि के॰) अ शक्त एवो पण (रथकत् के॰) रथकार सूत्रधार, (दानं के॰) दानने (प्रदाय के॰) दइने (सुरोऽजूत् के॰) देवता थतो ह्वो. अने (बलदेवसुनिः के॰) बलदेव सुनि, (शीलं के॰) शीलने (च के॰) वली (तपः के॰) तपने (चिरत्वा के॰) आचरण करी देवता थयो तथा (एणः के॰) हिरणं ह तो ते (सुदा के॰) हर्ष थकी (तदनुमोदनया के॰) दान शीलना अनु मोदनें करीनेज (सुरोजूत् के॰) देवता थयो. (हि के॰) यश्मात् (चतु रंगितांहिः के॰) चतुरंगी इति प्रसिद्ध (योगात् के॰) सारा जीवना यो गथकी (सिद्धं के॰) सिद्धने (अगमत् के॰) प्राप्त थयो.

आहीं बलदेवमुनिनी कथा कहे है, नवम वासुदेव श्रीरुष्ण लघु नाइ विपन्न थये हते तेमना महोटा नाइ बलदेव वैराग्य पामी व्रत यह ए करी तुंगिका पर्वतनी उपर तप करतो हतो एक दिवसें कोइ नगरने वि षे आहारने अर्थे जातां कूवाना कांता उपर रहेली कोइ स्वीयें ते क्षिने दीवा. ते मुनिनुं रूप जोवाथी आह्मि यइ एवी ते स्त्रीयें घटने बदले पोताना बोकराना गलामां दोरडानो फांसो घाव्यो. क्षियें जोइने कह्यं के अरे आ हां करे बे? एम कही ते बोकराना कंवमांथी दोरडी काढी ली थी. पढी ते क्षियें जाण्युं जे धिक्कार बे मारा रूपने के जेथकी आवां अ कार्य थाय बे, माटे महारे आजथी कोइ दाहाडे पारणुं करवा नगरमां जा वुंज नही. पढी एक दिवसें ते पर्वतनेविषे काष्ठकापवानें माटे मोहोटा सा थने छेइने कोइ रथकार आव्यो तेने जोइ ते मुनिनी साथें रहेलो मृगलो जातिस्मरणङ्गानेकरीने ते बलदेवमुनिने पारणार्थें त्यां सुतार पासें लाव तो ह्वो. ते रथकार मध्यान्हें अतिथिने प्राप्त थयेला जोइने हिषत थयो बतो अन्ननो पूरेलो पोतानो थाल लावी देवाने उत्सुक थतो ह्वो. क्षि यें पात्र धरी वहोसुं ते वखत हिणों ते दाननुं अनुमोदन कछुं तेज अव सरनेविषे अर्द कपाइ गयेली एवी जाडनी शाखा वायुना जोरथी नांगी गइ अने ते त्रणे उपर पडवाथी ते त्रणेय मरण पामीने ब्रह्मदेवलोकने विषे देवता थया कह्यं वे के ॥ अप्पहिय मायरंतो, अणुमोयंतो अ सुह गई लहई ॥ रहकार दाणअणुमो, अगोअ मिगो जहय बलदेवो ॥

शमेन सिश्चंति मतानि कृष्णा, चु जिषवती व्रतपोस्तु वा मा॥ दि नाधिनाधेन कृतेऽव्रपाके, संधुक्तणं कः कुरुतेऽनलस्य ॥ १५॥

श्रधः—(शमेन के॰) समतायें करीने (मतानि कें॰) मनोनिष्ट (रू प्णानुजार्षिवत् के॰) रूष्णानुजक्षिनी पेतें (सिद्धांति के॰) सिद्ध थाय ते मांटे (तीव्रतपः के॰) तीव्रतप, (श्रस्तु के॰) हो (वा के॰) श्रथवा (मा के॰) म हो. तथापि समतायें करी सर्व श्रजीष्टसिद्ध थाय ते. जेम रूष्णनो श्रनुज एटले नानेरो जाइ गजसुकुमाल क्षि तपिवना श्रसुरे क रेला श्रियना कष्टने सहन करतो ततो सिद्धिने पाम्यो तेनी पेते सिद्धिने पामे ते. त्यां दृष्टांत कहे ते. (दिनाधिनाथेन के॰) सूर्यें करी (श्रन्नपाकें कते के॰) श्रन्नपाक करे तते (कः के॰) कयो पुरुष, (श्रनलस्य के॰) श्रिमनुं (संधुक्रणं के॰) सलगावनुं तेने (कुरुतें के॰) करे. ना कोइ न करे.

आंही गज सुकुमालनी कथा कहे हे. हारिका नगरीनेविषे श्रीकृष्णवासु देव राज्य करे हे. तेनो नानो जाइ गजसुकुमाल नामें हतो, ते सर्व दशाई ने घणोज वालो हतो ज्यारें युवान थयो त्यारें श्रीकृष्णे तेने बे कन्या परणावी श्रीनेमीनाथनी पासें धर्म देशना सांजली प्रतिबोध पामी बेहु कन्या नो त्याग करी ते दिवसेंज व्रत यहण करतो हवो. तेणे जगवानने पूर्व के महाराज! मने क्यारे क्यां मोक्त्याप्ति थाशे प्रञ्चयें कहां के,हमणांज स्मशा नमां जो कायोत्सर्ग करे, तो मोक्त थाय. आ वात गजसुकुमाल सांजली ने स्मशानमां जि कायोत्सर्गमां उन्नो रह्यो. ते समयने विषे श्वसुर सोमिल नामा ब्राह्मणें तेने जोयो अने ते केहेवा लाग्यो के हे पापी! मारी प्रत्रीने सुकीने आवो आ पाखंम छं करे हे? एम कहीने ते हरात्मायें खेरना काष्ठना अग्निना अंगारानुं गाडुं तेनी उपर नाख्युं अने त्यांथी चा त्यो गयो. ते गज सुकुमाल समता आणी उपसर्गने सहन करतो हतो बलतां बलतां केवलज्ञान पामीने सिद्धिने प्राप्त थतो हवो कहेन्तुं हे के ॥ सपरिक्रम्मराउल,वा ईएण सीसे पिलवीए नियए॥ गयसुकुमालेण खमा,तहा कया जहा सिवं पत्तो ॥ १॥॥ १५॥

त्रीत्ये द्यामी स्वपरयोरिप चंमरुड, द्याष्योयथात्मिन गुराविप केवल इर्घा ॥ सप्तर्षिसंगतिमवाप्य विद्या खनामा,चोरोऽप्यजू दिलसङ्ज्वलदिव्यद्यक्तिः ॥ १६॥

अर्थः—(शमी के०) उपशम करनारो प्राणी, (स्वपरयोरिप के०) पो ताने तथा परने पण (प्रीत्ये के०) प्रीतिने माटे थाय हे. (यथा के०) जेम (चंमरुइशिष्यः के०) चंमरुइ।चार्यनो शिष्य (केवलुद्धा के०) केवलुहा ननी क्रिट्यें करीने (आत्मिन के०) पोतानेविषे तथा (गुराविष के०) चंम रुइ।चार्यनामा गुरुने विषे प्रीति पात्र थयो. वली लुंटवाने आवेलो (विशाखः नामा के०) विशाख नामा (चौरोपिः के०) चोर पण तीर्थयात्राने माटे आ काश मांथी उतरता एवा (सप्तार्षसंगतिं के०) सात क्षिनी संगतिने (अ वाप्य के०) पामीने (विलसङ्ज्वलिद्यशक्तिः के०) प्रकाशित हे उज्ज्वल दिव्य कीर्त्ते जेनी एवो थयो. वली "काड घोडो संसार थोडो" एम बोलतो अने घोटकना हक्तनी चोतरफ बार वरस फरतां फरतां ते दिव्यशक्तिवालो थयो तेज सात क्षिना उपदेशथी वाल्मीकीकृषि एरीते प्रसिद्ध थयो.

ञ्चामां बे दृष्टांतमां प्रथम चंमरुइना शिष्यनी कथा कहे हे. ताम्रलिप्ति

नगरीनेविषे गंगदत्तनामा ज्ञेवनो सागर नामेंपुत्र हतो तेने पितायें रुडा कुल नी कन्या परणावी. ते पुत्र पोताना सालानी साथे चंमरुइगुरुने उपाश्रयें गयो. त्यारें तेना सालायें मशकरी करी जे हे कुमार! तुं ग्रुं ग्रुरुपासेंची दीक् यहण करीश ? ताहरे तो गुरुनो पडखुं मूकवुं नहिं एम पोताना बनेवीने कहीने पढ़ी ग्रुरु प्रत्यें कहेवा लाग्यो हे महाराज! आने दीक् आपो. ए प्रकारें साजे उपहासयी कहे वते गुरुयें कोपायमान यइ नस्में करी तेना शिरनुं खुंबन कखुं. पढ़ी ते कुलीन पुत्र ग्रुहने कहेवा लाग्यों के, आ नगरने तमे मूकी दीयों, निहं तर मारा खजनो मनें व्रतनो त्यांग करावशे त्यारें गुरु कहे वे मारी पींमीमां चालवानी शक्ति नथी माटे हुं चाली शकुं निहं. तेवारें से शिष्य गुरुने पोताना स्कंधपर बेसाडीने रात्रियें गाम मूकी चाव्यों गयो उंची नीची जंगामां चालतां गु रुने ज्यारे धशको लागे त्यारे ते गुरु शिष्यने दंमधी ताडन करे अने इवे चन कहे. जे हे पापिष्ट! सारा मार्गमां केम चालतो नथी? त्यारे शिष्य कहे के हे महाराज! क्तमायें करी महारो अन्याय सहन करो. हुं अप राधी डुं एम पोताना स्वरूपने निंदतो निंदतोज केवलकान पाम्यो ते वात गुरुने जाणवामां आवी तेवारें गुरु पण ते शिष्यने पगें पड्यो अने मिथ्या इष्कृत देता गुरुने पण केवल ज्ञान उत्पन्न थयुं.

इ वीजी विशाख चोरनी कथा कहे हे. कांपिव्य नगरनेविषे वलन इ नामा श्रेष्ठी वसे हे. तेनो विशाख नामा प्रत्र ते वापने अखंत वालो हतो. तेथी बालपणामांज ते प्रत्रने सर्वकलामां कुशल अने सर्व शास्त्रनो पारगामी कथो तेने यौवनावस्थामां सारी तदनुरूप कन्या परणावी एक दिवस रस्तामां चालतां कोंतुकें करी जुगारना स्थानमां जङ्गने बेहो. त्यां थोडे थोडे तेने यूत रमवानुं व्यसन थयुं. यूत रमतो हतो सर्वस्व हारवा लाग्यो पितायें वाखो तो पण रम्या विना रहे निहं एम करतां बापना घरनी सघली पुंजी हारी गयो. एक दिवस ते पापीयें वनमां फरतां मूर्ति मंत उपशमरूप एवा सप्तक्ति जोया. तेवारें तेनी समीपें आवीने बेहो तेणें धर्मोपदेश कखो ते विशाख, लघुकर्मी होवाथी दीक्ता प्रहण करी तेने अतिचार रहित पालीने सौधर्म देवलोकें देवता थयो. इतिशमप्रकरणं ॥

व्रतमिष बहु चीर्णं सातिचारं कुगत्ये, दिनमिष शुचि मुक्तये पुंमरीकादिवत्तत् ॥ अहह दहित चित्रावारिपूरोऽपिशस्यं, जृशमिष कृशपायः स्वातिजं पाति जंतून् ॥ २७॥

अर्थः—(व्रतमिष के०) व्रत जे वे ते पण (सातिचारं के०) अति चारोयें सिहत (बहु के०) जाजा दिवस सूधी (चीर्ण के०) पाखुं होय, तो (कुगत्ये के०) माठी गितने माटे एटले नरकने माटे थाय वे. (त त् के०) तेज व्रत, (दिनमिष के०) एक दिवस पण (शुचि के०) निर्रत चार पणायें करीने पाल्युं होय तो (पुंमरीकादिवत् के०) पुंमरीक छुंमरी क बे जाइटीनी पेठें थाय वे. जेम छुंमरीकें घणा दिवस पर्यंत व्रत पाल्युं पण सातिचार व्रत पाल्युं तेथी तेन ते नरकने माटे साधनजूत थयुं अने पुंमरीक तेनो जाइ हतो तेणे थोडो काल व्रत अतिचाररिहत पाल्युं तो तेने सुक्तिने माटे साधन थयुं. तेम बीजाने पण जाणवुं त्यां दृष्टांत कहे वे (अहह के०) खेदकारक वे के (जृशमिष के०) अत्यंत एवो पण (चित्रावा रिपूरोष के०) चित्रा नक्त्रमां वरसेला मेघना जलनो समूह वे ते पण (शस्यं के०) धान्यने (दहति के०) बाली नाखे वे. अने (स्वातिजं के०) स्वातिनक्त्रमां वरसेलुं एवं (कुशपाथः के०) थोडुं एवं जल ते (जंतून के०) सर्व प्राणीने (पाति के०) रक्षण करे वे.

दवे आ वेकाणे कुंमरीक तथा पुंमरीकनी कथा कहे हो. पुष्कलावती विज यमां पुंमरिकिणी नामनी नगरीनेविषे पुंमरीक कुंमरीक नामना वे नाइयो राज्य करे हो. एक दिवस ते बेहुयें गुरुनी पासें देशना सांचलीने बेहुजणा व्रत केवाना अर्थी थया. एक कहे हे के हुं दीक्षा यहण करीश. बीजो नाई कहे हे हुं दीक्षा लड़श, पढ़ी कोइ रीतें हुद नाइनी आङ्गा केइने नानो नाइ कुंमरीक दीक्षा यहण करतो हवो. तेणे हजार वरस दीक्षा पालन करी ज्यारें ते कुंमरीक मांदो थयो त्यारें ते क्षिने पुंमरीक राजायें पोताने घेर राखी सेवा करी. ते कुंमरीकें रसलांपट्यथकी दीक्षा मूकी दीधी. अ त्यंत आहारना प्रयोगें करी गूढिविग्लिकानो रोग उत्पन्न थवाथी वैद्योगें कहां के आ रसलोलुप हो माटे एने आषध करवुं अयोग्य हे एम मानी औषध न करवाथ। ते रोइध्यानेंकरी मरण पामी नरकमां गयो. पढ़ी पुंम रीक तो मनः ग्रुद्धियें करी थोडा दिवसज दीक् पालीने सर्वार्थसिद्धिवमानने विषे देव थयो ॥ वास सहस्संपि जइ, काऊणं संजमं सुविद्यलंपि ॥ श्रंते कि लिठनावो, निव सिद्धाइ कंमरीचे व ॥ १॥ श्रप्पेणिव कालेणं, केवि जहा ग हिय सील सामन्ना ॥ साहंति नियय कद्धां, पुंमरीय महारिसि व जहा ॥ १॥

व्रतेन शुचिनापि किं किमय सज्रुरूपासने, रुदायिन्यमा रकश्रमणवत्सपापात्मनः ॥ शिरःस्यविषहन्मणिः फणिगणः किमानंदनः,स चंदनवनस्थितः किमय वा जगत्तापहृत्॥ १०॥

अर्थः—(सपापात्मनः के०) पापयुक्त जेनुं मन ने एवा पुरुषने (ग्रु चिना के०) पवित्र एवा (व्रतेनापि के०) व्रतें करीने पण (किं के०) ग्रुं ? कांहिज निहंं. वली (अय के०) ए यकी अनंतर (सजुरूपासनेः के०) सारा गुरुनी जपासनायें करीने पण (किं के०) ग्रुं ? तो के कांहीज निहंं. केनी पेतें ? तो के (जदायिनुपमारकश्रमणवत् कें०) जदायिनुपने मारनारं श्रमणनी पेतें, जेम ते पापात्मा जदायि राजाने मारवाने माटे श्रमण ययो. हवे त्यां हष्टांत कहे ने (शिरःस्थिवषहन्मणिः के०) शिरने विषे रह्यों ने विषापहारी मणि जेने एवो (फणिगणः के०) सर्पसमूह, मनुष्यने (किं के०) ग्रुं (आनंदनः के०) आनंदनो देनारो याय ने. ना यातो नथी, परंतु प्रध्वंसक थाय ने . (अथवा के०) अथवा (चंदनवनिष्यतः के०) चंद नवननेविषे रह्यो एवो (सः के०) ते सर्पगण (जगत्तापहत् के०) जगता तापने हरण करनारो (किं के०) ग्रुं थाय ने ? ना थातो नथी.

श्रा वेकाणे उदायिनुपमारक इव्यसाधुनो हष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हो. श्रेणिक माहाराजाना प्रत्र कोणिक नृपति तेनो प्रत्र उदायी राजा पाडलीपुरने विषे राज्य करतो हतो. ते राजायें पोताना प्रचंमदोईमना बलें करी सर्व सामंत राजाउने खाङ्गापालक कथा. पही ते सर्व राजा उयें देषनावथी घणुं इव्य श्रापी कोइ एक श्रथम क्त्रियने उदायिनुपने मारवाने माटे पाडलीपुरमां मोकत्यो. ते श्रथम क्त्रियें बीजो उपाय न जडवाथी कपटें करी सूरिपासें व्रत यहण कखुं श्रने ते सूरि, श्रष्टमी, चतु देशी,पूर्णिमा,एटला दिवसने विषे सुधमना उपदेशने माटे राजनवनने विषे रहेता. बारमा वरसनी श्राखेरीमां जंघामां हरी बांधी ते कपटीपण सूरीनी

साथें त्यां गयो पढ़ी अवकाश जोइने लोहनी ढरीथी तेणे उदायि राजाने चीरी नाख्यो. गुरु जाग्या पढ़ी धर्मना उद्गाहनी बीकथी गुरुयें पोतानुं शिर ढुरीथी कापी नाख्युं. कह्यं ढे के ॥ चेइयदब विणासे,रिसिघाए पवयणस्स उद्गाहे ॥ संजइ चड़ह जंगे, मूलग्गीबोहि लाजस्स ॥ १ ॥ २० ॥

साधोरह्नाय सििष्टः सुचरणकरणैः श्रावकस्यापि हि स्या, नमध्येष्टानां जवानां दाद्यिविद्याद्यणानंदनानंदृष्टत्तेः ॥ चेन्नोजिः दाघ्रगाजिर्जलिधजलपयेस्तीरदेदोषु पांयाः, के चिद्यांत्याद्यु नान्ये हयकरजरथेर्जूपयेः किं क्रमेण॥ १ए॥

अर्थः—(साधोः के०) साधुनां (सुचरणकरणैः के०) रूडां एवां चारि त्रनां करणें करीने (अहाय के०) शीघं (सिद्धिः के०) सिद्धि, (स्थात् के०) होय (श्रावकस्यापि के०) श्रावकनी पण (शशिविशदगुणानंद नानंदवृत्तेः के०) चंइमा सरखा निर्मल आनंदश्रावकना वर्त्तनंकरी (हि के०) निश्चं (अष्टानां के०) आव एवा (नवानां के०) नवनी (मध्ये के०) मध्यमां सिद्धि थाय हो. त्यां दृष्टांत कहे हो (पांथाः के०) पथिक जनो (शीघगानिः के०) उतावलयी चालती एवी (नौनिः के०) नौ कायें करीने (जलधिजलपथैः के०) समुइांतजिलमार्गें करीने (तीरदेशेषु के०) समुइना कांवाने विषे (यांतिचेत् के०) जाय हो खरा. परंतु (केचित् के०) कोइ एक (अन्ये के०) बीजा पथिको (हयकरनरथैः के०) घोडा, हाथी अने रथेंकरी (नृपथेः के०) ज्ञावलयी (न यांति के०) नथी जाता ?

श्रा वेकाणे श्रानंदश्रावकनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. श्रानंद नामा कोंटुंबिक श्रीवीरवचनना प्रतिबोधें करी बोध पामेलो हतो श्रमणोनी उपासकतायें करी जगत्मां कीर्त्तिपात्र थयो हतो. तेने घेर चार गायोनां गोकुल हतां. तथा तेनां पांचशें वाहाण चालतां हतां, तथा पांचशें हल खेडाय तेटली जमीन तेने हती. तथा बार करोड इव्य हतुं. एम घणो श्रारंन हतो ते हतां पण तेना ग्रहमनें करी तेनो मोक्स थोडा श्रवतार मां थयो. कहेलुं हे ॥ मनः ग्रहिमि चाणा ये, तपस्यंति मुक्तये ॥ त्यक्तवा नावं ग्रजान्यां ते, तितीर्षति महाण्वम् ॥ १ ॥ तदवश्यं मनः ग्रुहि, मिन्नता पुरुषेण वे ॥ तपःश्रुतयमप्रायेः, किमन्येः कायदंमनेः ॥१ ॥ आ श्लोकनो नावार्थः— मननी ग्रुद्धिने न धारण करता एवा जे पुरुष मुक्तिने माटे तप करे वे ते केवा जाणवा के जेम कोइ मूर्ष्व मनुष्य नावने मूकी समुइने हा यथी तरवाने इवे तेवा जाणवा ॥ माटे अवइयें करी मनःग्रुद्धिने इज्ञनार पुरुषने बीजा तपादिकें करीने ग्रुं? कांहीज नहिं. जो मनःग्रुद्धि होय तो सर्व जान प्राप्त थाय वे मनःग्रुद्धि विना जे करीयें ते सर्व व्यर्थ थाय वे ॥१ए॥

सम्यक्त्वोदारतेजा नवनवफलदा वर्तरूपव्रतालिः, सिर्धां तोक्तेकविंदात्यमलग्रणगितः श्राद्धर्मस्तुरंगः ॥ प्रापय्यांतं नवाद्देनयति दावपुरं कामदेवादिवत्तत् , मिथ्यालाधीदा दांकादिकहयहरतोः यत्नतोरक्तणीयः॥ ३०॥ श्रावकत्वं॥

अर्थः— (सम्यक्वोदारतेजाः के०) सम्यक्तक्षप वे उदार तेज जेने विषे एवो तथा (नवनवफलदावर्तक्षपत्रतालिः के०) नवीन नवीन फंलदा यक चक्रकुंमाली समान द्वाद्यत्रतपंक्ति वे,जेमां एवो तथा (सिद्धांतोक्तेकविंश त्यमलगुणगितः के०) सिद्धांतोयें कहेला एवा एकवीश गुणो ते रूप वे गित जेने एवो (आद्धमेस्तुरंगः के०) आवकना धमेरूप अश्व, ते (कामदे वादिवत् के०) कामदेवादिक आवकोनी पेवें (नवाइः के०) संसार पर्वतना (अंतं के०) अंतने (प्रापय्य के०) पमाडीने (तत् के०) ते (शिवपुरं के०) मोक्तनगर प्रत्यें (नयित के०) पमाडे वे, माटे ते (मिय्यालाधीशशंकादिक व्यव्हरतः के०) मिय्यालक्षप राजाना शंकाकांक्वादिकरूप अश्वचोरो ते थ की (यह्नतः के०) यहें करी (रक्वणीयः के०) रक्वण करवा योग्य वे.

आंहि कामदेवादिकनो हष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. कामदेवनां मा कौटुंबिक ते क्रियें करी पूर्वें कह्यो एवो आनंदश्रावक समान हे. ते हढ सम्यक्त पालनारो होवाथी अष्टम्यादिक पर्वतिथिनेविषे स्मशानमा कार्योत्सर्ग करे हे. एक दिवस इंड्महाराजें हढसम्यक्त्वविषे तेनी प्रशं सा करी. ते सांजली कोइक देवतायें आवी मदोन्मत्त हाथीनुं तथा छुजं गनुं तथा व्याघ्रनुं, सिंहनुं चित्रविचित्ररूप विकुर्वी कायोत्सर्गमां रहेला का मदेवने क्रोज पमाडवा जपाय कथा, परंतु तथी ते लगारमात्र पण कुनित थयो नही. कहेनुं हे के, देवेहिं कामदेवो, गिहिवि निवचालिन तवगुणेहिं॥

मत्तगयंद च्रयंगम, रस्कल घोरष्टदासेहिं॥१॥ धन्नाललाहिणिङ्का० ॥ ३० ॥ ॥ अथ मृषावाद्घारं॥

धर्माणां गुरुरेव जंतुषु दयाधर्मस्ततः संस्थितः, श्रीवजायुधचक्रवर्त्तिसदृशां नो संगमादेईदि ॥ चू लायां कनकाचलस्य रमते कटपडुमोनो मरो, किं चैरावणवारणः कुनृपतेर्द्वारेस्ति यः स्वस्पः तेः॥३१॥

अर्थः-(जंतुषु के०) प्राणीयोनें विषे (दयाधर्मः के०) दयारूप जे धर्म, ते (धर्माणां के) धर्मीनी मध्ये (गुरुरेव के) श्रेष्ठज हे. (ततः के) तेमाटे (श्रीवजायुधचक्रवर्तिसहशां के ०) श्रीवजायुध चक्रवर्त्ति समान पु रुषोना (हृदि के०) हृदयनेविषे (संस्थितः के०) दयारूप धर्म रहेलो हे ते दयाधर्म, (संगमादेः के०) संगमादिक नव अनव्यना हृदयनेविषे (नो के०) नथी रहेतो ते नव अनव्योनां नाम कहे हे ॥ संगमय कालसूरि,क विला श्रंगार पालयाइन्नि ॥ नोजीव ग्रुष्ठ माहिल, उदाइनिव मार्ड चे व ॥ १ ॥ ए नव अनव्य जाएवा. संगमदेव अनव्य हतो तेएो श्रीम हावीरस्वामीने जपसर्ग कस्त्रो. आहिं द्रष्टांत कहे हे. (कल्पडुमः के०) क ब्पवृक्क, (कनकाचलस्य के०) मेरुपर्वतनी (चूलायां के०) चूलिकानी उ पर (रमते के॰) रह्यो हो. परंतु (मरों के॰) मरुस्थितनेविषे (नो के॰) रहे नहिं. तथा वली (यः के॰) जे (ऐरावणवारणः के॰) अहिरावण नामा हस्ती ते (स्वःपतेः के०) इंड्ना (द्वारे के०) द्वारनेविषे (श्रुस्ति के॰) हे (च के॰) वली (कुनृपतेः के॰) इष्टराजाना घरनेविषे (किं के॰) ग्रुं होय? ना होयज निहं. तेम द्याधर्म सकलधर्ममां मोहोटो हे ते वजायुध जेवा महोटा पुरुषोना हृदयमां रह्यो हे एम जाएावुं ॥

श्रहिं हवे वज्ञायुध तथा संगमदेवना दृष्टांत होवाथी वेहुनी कथामां प्रथम वज्ञायुधनी कथा कहे हे. कांचनपुरनेविषे श्रीवज्ञायुध नामा राजा राज्य करे हे. ते महापराक्रमी होवाथी शरणें श्रावेला जीवोनी रङ्का करवा मां कुशल हतो. तेथी तेनुं नाम जगतमां वज्जपंजर करी सहु कहेता हता. एक दिवस सजानेविषे इंइमहाराजें तेनुं द्याधमेसंबंधि पराक्रम वर्णव्युं. ते वातमां श्रश्रदा राखनारा बे देवताचे प्रत्यक्ष पराक्रम जोवाने माटे श्रा

व्या. तेमां एकजणें पारेवातुं रूप धारण कखुं अने एकजणे शीचाणा पद्धी नुं रूप धारण कखुं तेमां पारेवानुं रूप धारणकरनार देवता मारी रक्ताकर मारी रक्ता कर. एवां वचन बोलतो बोलतो वज्रायुधना खोलामां आव्यो. पढ वाडे सींचाण पद्धीना रूपने धरनार एवो देव बोख्यो के ए मारुं जद्दय है ते तुं मने ञ्चाप. एम बोजतो बोजतो ञ्चाच्यो. ञ्चने कहेवा जाग्यो के हे राजन ! तुने क्यां दया है जेमाटे मारुं नह्य जे पारेवुं पह्नी तेतें यहण कखुं. तेने राजाए कहां के तुने जे रुचे ते तुं खावानुं माग्य. त्यारे सींचाणे कहां के मां सविना मने काइ रुचतुं नथी माटे महामांस मने तुं आप. त्यारे राजाये पोताना श्रंगनुंज हेदन करीने श्रर्पण करवा मांमग्रुं. ते पही त्रांजवुं मगा वी, एकत्राजवामां पारेवाने बेसाड्युं अने एक बाबडामां पोतें बेवो. एवं तेनुं साह्स तथा शरणागत रक्षणंत्व जोइने देवता तुष्टमान थया अने प्रत्य . क् यइ कहेवा लाग्या के तारी कीर्त्ति अमे इंडमहाराजपासें सांजली पण ते वात उपर अमोने श्रदान यह तेथी तारी पासें प्रत्यक्त पारखं जोवा आ व्या. परंतु शरणागतना रक्षणमां प्राण खोवामाटे पण तुं उत्कंतित ययो एम कहीने ते देवता देवलोकमां गया. ते राजा वजायुधना जवथकी ख़ब्प जवें ज श्रीशांतिनाथनामा शोलमा तीर्थंकर थया. यतः ॥ जो अन्णोहिएसी,अ नयं जीवाण दिक्क निचंपि॥ जह वक्काउह जम्मे,दिन्नं सिरिसंति नाहेणं॥१॥

हवे बीजी संगमदेवनी कथा कहे हे. एक दिवस सोंधमें हें देवतार्जनी आगल वीरनगवाननुं सत्त्व वखाण्युं. जे त्रण छवनमां पण श्रीवीरनगवानने कों इत्तेन करी शके नही. ते वचन न मानतो एवा संगमदेव, श्रनार्थदे शमां पोलास चेत्यने विषे कायोत्सर्गमां रहेला एवा श्रीवीरनगवाननी समीप श्रावीने तिहां हस्तीनुं रूप विकुर्वीने पोताना ग्रुंमादंमें उपाडी उपाडी ने प्रज्ञने गगनने विषे उलाली नाख्या. तो पण वीरनगवान कोन न पाम्या पही प्रज्ञनी उपर रजनी दृष्टि करी. पही सर्प थइने नगवानने मस्या, एम एकज रात्रिमां वीश उपसर्गों कह्या. तो पण क्लोन न पामता एवा प्रज्ञने जोइने प्रज्ञना मस्तकनी उपर चक्र मूक्युं. तो पण पराचव न पाम्या. एवा माहासत्त्ववाला प्रज्ञने मानीने पगे पड्यो. पही सौधमे देवलोक प्रत्यें जतां इंहें तेने वज्नें करी माह्यों अने स्वर्गथकी ते इप्ट देवने काढी मूक्यों ते हाल मेहनी चूलिका उपर रहेलों हे ए श्रनव्य जीव श्रनंतसंसार पर्यटन करशे॥

एका जीवद्येव नित्यसुखदा तन्नेमिना स्वामिना, कन्या राज्यधनादि फट्य तृणवत् संत्यज्य सेवाहता ॥ सोऽर्ह न्वास्य किसुच्यते निजहिते नान्योऽपि मंदायते, किं कस्या प्यजरामरत्वमथवा नेष्टं सुखं शाश्वतम् ॥३३॥

श्रथः— (एका के०) एक एवी (जीवद्येव के०) जीवद्या जे तेज (नित्यसुखदा के०) निरंतर सुखने देनारी हे, (तत् के०) ते कारए मा हे (नेमिना खामिना के०) नेमनाथ खामीयें (कन्याराज्यधनादि के०) स्त्री राज्य, धनादिक (फल्यु तृएवत् के०) सडेला घांसना तरणानी पेहें (संत्यज्य के०) त्याग करीने (सेव के०) ते जीवद्याज (श्राहता के०) श्रंगीकार करी हे. (वा के०) श्रयवा (सः के०) ते (श्रद्धन् के०) ती थैंकर हे. माटे (श्रद्धय के०) एने (किमुच्यते के०) श्रं कहीयें श्रयीत् ते तीर्थंकर द्याधमें पाले तेमां तो ग्रंज कहेतुं? परंतु (श्रन्योपि के०) को इ बीजो जन पण (निजहिते के०) पोताना हितमां (नमंदायते के०) मंद श्राचरण करतो नथी. (श्रयवा के०) श्रयवा (कस्यापि के०) कोइ जी वने (श्रजरामरत्वं के०) श्रजरामरपण्यं तथा (शाश्रतं के०) शाश्रत एवं (सुखं के०) सुख (किं के०) श्रुं (न इष्टं के०) नथी सार्हं लागतुं ? श्रर्थात् स्वीवायी तेमनी कथा प्रसिद्ध हे ते माटे श्राहीं लखता नथी.

संकटेपि न महान् मृषा वदें, इत्तमातुलककालिकार्यवत् ॥ . चंदनः सुरिनरइमघर्षणे, पीक्कुरब्रुतरसोपि पीलने ॥ ३३ ॥ ं

अर्थः—(महान के॰) माहापुरुष, (संकटेषि के॰) संकटने विषे प ण (न के॰) निह (मृपा के॰) जुतुं (वदेत के॰) बोले. केनी पेतें ? तो के (दत्तमातुलक के॰) दत्तपुरोहितनो मामो (कालिकार्यवत के॰) का लिकसूरि गणधरनी पेतें. अर्थात् जेम कालिकाचार्य संकटमां खोटुं बोलता न हता तेम महान् पुरुष कष्टमां पण जुतुं न बोले. कह्यं ते के ॥ जीयं का कण पणं, तुरमणिदत्तस्स कालि अक्तेण ॥ अविय सरीरं चनं, नयनणिय महम्म संजुनं ॥ १ ॥ हवे आहिं दृष्टांत कहे ते. (चंदनः के॰) चंदन ते (अदमध्षेणेष के॰) पाषाणनी साथें पीलवामां पण (सुरिनः के॰) सु गंधमय थाय हो. तथा (इकुरिप केंग्) शेरडीनो सांहो पण (पीलने केग्) पीलवामां (अड्जतरसः केग्) अड्जतरस रूप थाय हो. अर्थात् अपूर्व स्वाद मय थाय हो ॥ ३३ ॥

श्राहिं कालिकाचार्यनी कथा कहे हे. तुरमिणी नगरीनेविषे दत्तराजानो मातुल कालिकाचार्य श्राच्या,तेमने एकदिवस दत्तराजायें पूछ्युं के महारा ज! यक्त करवानुं ग्रुं फल हे ? त्यारें ग्रुरुयें कह्युं जे एमां हिंसा होवाथी महापाप थाय हे. त्यारें दत्तराजायें कह्युं के महाराज! हुं पूछुं छुं तेथी उल टो जबाब शा माटे श्रापो हो? हुं तो यक्त करवाथी फल ग्रुं थाय? एम पु हुं छुं तेने ग्रुरुयें कह्युं के नरकमां जतुं एज यक्तुं फल हे वली राजायें पु हुं हुं तेने ग्रुरुयें कह्युं के नरकमां जत्रश? ग्रुरुयें कह्युं तेनरकमां जत्रश. ते सांजली कोधायमान थहने राजायें पुह्युं के तमे मरण पामीने क्यां जाशो, तेवारे ग्रुरुयें कह्युं के हुं स्वर्गमां जद्दश. तेवारें राजायें पूह्युं महारुं श्रायु केटलुं हे? तेने ग्रुरुयें कह्युं सातिहवसनुं ताहरुं श्रायुष्य हे, ते सांजली राजा ग्रुरुनी पासें सीपाइन्जनी चोकी राखीने पोताने घेर जद्द बेशी रह्यो. सातमे दिव सें प्रधानोयें दत्तराजाने राज्य उपरयी उहाडी तेलनी कडाहमां नाखी तेनुं श्रीर पचावीने कुतराने नक्षण कराव्युं ते मरीने नरकें गयो. ग्रुरुपासें बेसा हेला सीपाइन्ने नाशि गया. एरीतें कालिकाचार्यने प्राणांत कप्त प्राप्त थयुं तो पण श्रसत्य बोलवुं नही॥

घोरां डर्गतिमेत्यलीकलवमप्यत्र्यार्थितोऽपि ब्रुवन्, वादे नारदपर्वताख्यसुहदोर्यघघसुर्जूपितः॥ चक्रेऽचीविधुरोवि रंचिरनृतात् केतक्यिनष्ठा सृषा, साह्त्यात्किं न हरि र्जवेन महितः,सत्यात्परीह्नाह्मणे॥ मृषावादघारं॥३४॥

श्रधः—बीजा कोइयें (श्रन्यर्थितोपि के॰) श्रन्यर्थित कखो ने तो पण कोइ प्राणी (श्रव्णीकलवमपि के॰) श्रसत्यवाक्यना लवने पण (श्रुवन के॰) बोलतो नतो (घोरां के॰) नयंकर एवी (ड्रगीतं के॰) ड्रगीतने (ए ति के॰) पामे ने (यहत् के॰) जेम (नारदपर्वताख्यसुहदोः के॰) ना रद श्रमें पर्वत नामना बे स्नेहीना (वादे के॰) विवादमां (वसुर्नूप तिः के॰) वसु नामा नूपति जेम घोरगतिने प्राप्त थयो श्रर्थात् उपाध्या यनी पत्नीनी करेली प्रार्थनायें करी कूटसाइनी नरवायी वसुराजा डर्गितने प्राप्त थयो. त्यां लोकिक दृष्टांत कहे हे. (नवेन के॰) ईश्वरें (विरंचिः के॰) ब्रह्माने (अनुतात् के॰) असत्य नाषणयकी (अर्चाविधुरः के॰) पूजारहित ग्रुं (नचके के॰) न कह्या, ना कह्याज, अद्यापि ब्रह्मा हे ते लोकोयें पूजाता नथी. वली शंकरें (मृषासाइयात् के॰) खोटी साइनी नरवायकी (केतकी के॰) केतकीने, (अनिष्ठा के॰) अनिष्ठित (किंन के॰) ग्रुं न करी. अर्थात् करीज. जेमाटे ईश्वरने आजदिन पर्यंत केतकी चडती नथी ए प्रत्यक्त वात हे. तथा इश्वरें (परीक्ताक्रणे के॰) परीक्ता नी वेलाने विषे (सत्यात् के॰) सत्यज्ञाषणयकी (हिरः के॰) विष्णु, (किं के॰) ग्रुं (नमहितः के॰) न पूजाया अर्थात् पूजायाज एटले श्रीकृष्ण अद्यापि जगत्मां पूजाय हे ते सत्यज्ञाषणयकी जाणवुं ॥ ३४ ॥

इहां दृष्टांतमां वसुराजा तथा ब्रह्मादिकनी कथा कहेवी जोइयें. तिहां प्रथम ब्रह्मा विष्णुनी कथा कहे हे एकदा ब्रह्मा अने विष्णुने वाद थयो के शिवना जिंगनों आपणने पार पामवो. तेने महादेवजीयें कह्यं के उपर तथा नीचें महारुं लिंग पारविनानुं हे माटे तेनो कोइ पार पामी शके नहीं तो पण ते बेंद्ध देव पार पामवाने चात्या, तेमां ब्रह्माजी विष्णुना ना निप्रदेशथी निकलीने व मास पर्यंत उपर चाव्या अने विष्णु व मास पर्यं त नीचें चाव्या, तो पण महादेवजीना जिंगनो पार आव्यो नही एवामां शंकरनां मस्तक उपरथी केतकी नीचें उतरी तेने ब्रह्मायें पूर्व्युं के तुजने शि वना मस्तक उपरथी उतरतां केटला दिवस थया? तेवारें केतकीयें कहां के व महीना थया ते सांचली ब्रह्मायें विचाखुं जे मने व महीना थया पण दुं पार पाम्यो नही एम चिंतवी केतकीने कहां के तुं शिवनी पासें एवी सार्ही ञ्चापजे के मुक्तने तमारा मस्तक उपरची ब्रह्मायें ञ्चाणी हे. एटलुं ञ्चसत्य बोलजे. ते वात केतकीयें कबुल करी तेवारें ब्रह्मा त्यांथी पाढा वख्या अने विष्णुने आवी कहेवा लाग्या के हुं ईश्वरना लिंगनो पार पाम्यो तेने टे को ञ्चापवा केतकीयें खोटी शास्त्री पूरी तथा श्रीकृष्ण तो सत्यज बोव्या के हुं तो व महीना पर्यंत ईश्वरनो पार पामवा माटे नीचो गयो पण पा र पाम्यो नही एवी रीतें ब्रह्मायें असत्य नाषण कखुं माटे शिवजीयें ते ब्र

ब्रह्माने ख्रपूज्य कखा. ते ख्रद्यापि जगत्मां को ब्रह्माजीने को पूजतो नथी ख्रने केतकीयें जूठी साद्दी नरी तेथी शिवजीयें तेनो त्याग कखो जेमाटे ख्राजपर्यंत केंतकीनां फूल महादेव उपर चडतां नथी ख्रने विष्णु सत्य बो व्या तो तेने महादेवे जगत्मां पूज्य कखा, ते ख्रद्यापि पूजाय ने माटे गमे तेवुं इःख पडे तो पण सर्वथा ख्रसत्य नापण करवुंज नही ख्रसत्य नापण करनारो पुरुष जे होय ते ब्रह्मा ख्रने केतकीनी पेठें थाय ने.

हवे वसुराजानी कथा कहे हे. शुक्तिमतिपुरीने विषे वसुराजा राज्य करे बे. त्यां इशिकदंब चपाध्याय रहे बे. ते पोताना पुत्रने तथा राजाना पुत्र वसुराजाने तथा नारदने ए त्रणने जणावे हो. एक दिवस उपलीजूमियें चपाध्याय रात्रिनेविषे ध्यान करता हताः तेवामां आकाशमार्गथकी वे मु निनुं एवं वाक्य सांचल्युं जे आं आचार्यनी पासें त्रण जणशास्त्र नणे हे तेमां वे जए नरकगामी थाज्ञे अने एक ज़ए खर्गें जज्ञे. पढी उपाध्या यें त्रणे जणने कुर्कुट वधने माटे मोकव्या तेमां नारद विना वे जणे तो कुर्कुटवध कखो माटे ते बेहु जए नरकगामी थाज्ञे अने नारदें वध न कस्रो माटे ते स्वर्गगामी थाज्ञें. अनुक्रमें जपाध्याय मरण पाम्या, तदनंतर पर्वतें तो " अजैर्यष्टव्यं " ए वाक्यनो आम अर्थ कर्छो जे पशुयें करी य क्त करवो, तेने नारदें कह्यं के हे नाइ! उपाध्यायें तो अज शन्दनो अर्थ त्रण वर्षनी जुनी व्रीहि कहेली हे. एम बेहु जणनो विवाद यतां यतां एक बीजायें एवं पण लीधुं के जेनुं बोलवुं खोटुं वरे, तेनी जिह्वानुं हेदन करवुं. ते ब्रेहुजरो कबुल कखुं. अने वसुराजा जे उपाध्यायनो त्रीजो शिष्य हतो तेणे पर्वतनी माताना उपरोधेंकरी खोटी साझी पूरी ने कह्युं के अज ए टले बकरो जाणवो एम जपाध्यायें कह्यं हतुं आवीरीतें खोदुं बोव्यातांज शासनदेवीयें तेने सिंहासन उपरथी उंधो नाखीने चपेटीयें करी मरण प माड्यो ते मरीने नरकमां गयो, माटे जे कोइ असत्य नाषण करशे तथा असत्य साद्दी नरहो ते वसुराजानी पेतें इःखी थाहो. ए वैराग्यदार पूरुं थयुं.

वैराग्यरास्त्रहतमोहतमोऽमलांत, र्दष्ट्या पटिष्ठपरि दष्ठहिताहितार्थः॥ चौरोपि शुश्चिति शमेन दढ प्रहारी, वापैति वा दवजवोजलदेन किं न॥ ३५॥ अर्थः—(चौरोपि के॰) चोर पण (शमेन के॰) शमतायें करी (ग्रुड्य ति के॰) ग्रुड्य थाय हे. अर्थात् पापथकी मुक्त थाय हे केनी पेहें ? तो के (इडप्रहारीइव के॰) इडप्रहारी चोरनी पेहें शमतायें करीनें ग्रुड्य थाय हे. त्यां दृष्टांत कहे हे. के (दवजवः के॰) दावानजनो वेग ते (जजदेन के॰) मेघें करी (नअपैतिकिं वा के॰) शांतिने न पामे ग्रुं ? अर्थात् शांतिने पामे हेज. हवे ते चोर कहेवो हे ? तो के (वेराग्यशस्त्रहतमोहतमोमजांतर्द एवा के॰) वेराग्यरूप शस्त्रेंकरी हणायुं हे मोहरूप तम जेनुं एटजा मा टेज अंतर्दृष्टियें (पिटष्ट्रपरिदृष्ट्रहिताहितार्थः के॰) मनोइ जेम होय तेम अंतरदृष्टियें करीने जोयो हे हिताहितनो अर्थ जेणे एवो हे. अर्थात् आ देय अनादेय पदार्थ जेणे जाएयो हे एवो हे.

आंहिं दृढप्रहारी चोरनी कथा कहे है. माकंमीपुरीने विषे सुनइ नामा श्रेष्ठी वसे हे. तेनो पुत्र दत्त करीने हतो,तेने बालपणामांज तेना पितायें सर्व शास्त्रो जणाच्यां, वली तेने परणाच्यो. अनुक्रमें ते जुगार रमतो इष्ट मनुष्यना संगें करी चोर थयो. लोकमां दृढप्रहारी एवे नामें विख्यात थयो. एक दिवस कोइ एक ब्राह्मणना घरमां चोरी करवा पेठो, त्यारें ते ब्राह्मण जागतो हतो माटे चोरनी पढवाडे दोड्यो. तेने चोरें खर्जे करी मारी नाख्यो तेवारें ते ब्राह्मणनी स्त्री सगर्ना हती ते राड्यो नाखती चो र पासें आवी, तेने पण चोरें मारी नाखी. पढ़ी चोरीमां अंतराय करना री ते ब्राह्मणनी गाय बाहिर उनी हती ते शृंगें करी चोरने मारवा लागी, तो तेने पण चोरे मारी नाखी,एवामां ब्राह्मणीना पेटमांथी निकलीने पृथ्वी उपर लोटता बालकने जोइने ते चोरना मनमां दया खावी खने खरंयंत वैराग्य उत्पन्न थयो, तेवारें विचाखुं जे ऋरे ! में पापिष्टें ऋा केवुं पापकर्म कख़ुं ? अरे धिक्कार होजो मुक इप्टने ! एम पश्चानाप करतो करेलां पापने वारंवार स्मरणमां लावतो अन्न तथा जल बेहुनो त्याग करीने ते ज पुरना मार्गने विषे कायोत्सर्ग करी उनो रह्यो. ते नगरनां लोकोयें तेने इ ष्ट हत्यारो जाणीने लाकडीना तथा पाषाणाना प्रहारें करी मास्रो,तो पण समताधारण करी रह्यो. ढ मासमां कर्मोनुं उन्मूलन करी केवलकान पा मी सिद्धिने प्राप्त थयो. माटें चोर पण शांतियें करीने सिद्धिने पाम्यो, तो बीजा जन पामे तेमां तो ग्लंज आश्वर्य ? ॥ ३५ ॥

नानाकलाविद्धि लाघवमेति चौर्या, िव्यानतामफ लचौर इव प्रियार्थे॥ दोषो महानिधग्रणेपि हि लांछ नाय, रत्नाकरे कुजलवज्जरावत् सुधांरोो ॥ ३६॥

श्रथः—(नानाकलाविदिष के०) नानाप्रकारनी कलाने जाणनार एवो पुरुष पण (चौर्यात् के०) चोरपणाथी (लाघवं के०) लघुपणाने (ए ति के०) प्राप्त थाय हे. केनी पेहें ? (प्रियार्थें के०) पोतानी स्त्रीने मा टे (विद्यानताम्रफलचौर इव के०) विद्यायें करीने नम्र करेला एवा श्रांबा ना फलना चोरनी पेहें. इहां हष्टांत कहे हे. (हि के०) निश्चें (श्रिधिगुणे पि के०) अधिक ग्रुणवाला एवा पुरुषनेविषे पण (महान दोषः के०) महोटो दोष, (लांहनाय के०) कलंकने माटे थाय हे. जेम (रत्नाकरे के०) समुइने विषे (कुजलवत् के०) क्लार जल जेम लांहनने माटे थयुं . हे, तथा (सुधांशो शशवत् के०) निर्मल चंइमाने विषे, शश एटले मृगनुं चिन्ह जे हे ते जेम लांहनरूप थयो हे. तेम घणा ग्रुणमां एक महोटो दोष ते लांहनने माटे थाय हे ॥ ३६ ॥

चोरनी कथा कहे हे. चेलणाराणीने एकस्तं चुंधवलगृह कराववानी इन्ना थइ. माटे श्रेणिक राजायें देवनुं आराधन करी एकस्थं नवालुं घर बनाव्युं. तेनी पासे एक वाडीमां अत्यंत उंचा आंबाना हक्त हे. तेना फल कोइलइ शके नहीं. ते नगरमां कोइ आकर्षणी विद्याना नणेला चांमालनी स्त्रीने आम्र फल खावानो दोहोलो उपन्यों तेवारें चांमालें आकर्षणीविद्यायें आम्र फल यहण कखां. चांमालना स्पर्शे आम्र सुकाइ गयो. कोइ युक्तिथी अनय कुमारें ते चांमालने पकड्यो तेवारें ते आकर्षणीविद्या श्रेणिकने आपीने हूटो.

> स्युर्वह्मणा नसुरमोक्तसुखानि किंतु, जंबूसुनेः सुन गतानिनवैव काचित्॥ जेजुर्वतं सममनेन सुदा प्रि यास्ता, अन्यारता सह जगाम च केवलश्रीः॥३७॥

अर्थः - (ब्रह्मणा के०) ब्रह्मचर्ये एटले मेथुनपरित्यागरूपवर्ते करीने (नृसुरमोक्तसुखानि के०) मनुष्य, देव, अने मोक्तनां सुखो (स्युः के०) होय, (किंतु के०) केम तो के ब्रह्मचर्ये करीने (जंबूसुनेः के०) जंबूस्वा मीने (काचित् के०) कोइक (अजिनवैव के०) नवीन एवीज (सुनग

ता के०) सुनगता प्राप्त थइ. ते केम तोके (ताः के०) ते पोतानी प्रसिद्ध एवी आव (प्रियाः के०) स्त्रियों ते (सुदा के०) हथें करी (अनेन समं के०) आ जंबूस्वामीनी साथें (व्रतं के०) दीक्दाने (नेजुः के०) नजती हवी. (च के०) वली (केवलश्रीः के०) केवलज्ञान रूप लक्क्षी, ते (अन्यार ता के०) अन्यने विषे आसक्तिरहित एवी थकी. (सह के०) जंबूस्वामीनी साथेंज (जगाम के०) जाती हवी. कारण के, जंबूस्वामी पढी कोइने केवल ज्ञान उपनुं नथी. ए बे वानां जंबूस्वामीने सुनगता दर्शावनारां हो. केम के जेनुं अंत पर्यंत खरुं सौनाग्य होय ते स्त्री, पोताना नर्जारनी सहचरी थाय हो. तेम जंबूस्वामीनी आने स्त्री साथेंज मोक्टें गइ अने केवलज्ञानरूप स्त्री पण जंबूस्वामीनी साथें मोक्ट गइ अन्य जीवोने विषे आसक्त रही नहीं॥

आंहिं जंबूस्वामीनी खेशमात्र कथा कहे हो. कुसुमपुरने विषे धनदत्त नामा शेवना नवदत्त अने नवदेव नामना वे पुत्रो हता. तेमां नवदत्ते दीक् यहण करीने, वली कालांतरें पोताना जाइने बोध देवा माटे त्यां आव्यो. ते वखत जबदेव अधीं शणगारेली पोताने परण नारी कन्याने मू कीने महोटा जाइने वांदवा गयो. महोटा जाइयें वार्ता करावतां गुरुनी पासें पहोंचाड्यो. गुरुयें तेने प्रतिबोधी दीक्दा आपी. ते तेएो नावविना पालवा मांमी. जेवारें महोटो नाइ नवदत्त साधु मरण पाम्यो तेवारें न्हानो नाइ फरी नोगनी अनिलाषा करतो नगरमां आव्यो, ते वात पूर्वे परणवा माटे सक्त थयेजी अर्६ शणगारेजी स्त्रीयें जाएयाथी तेणें तेने बोध कस्त्रो. पढ़ी ते मरण पामीने पुंमरीकिणी नगरीयें पद्मरथ राजानी वनमाला नामें राणीनी कूखें शिवकुमार एवे नामें पुत्रपणें उपन्यो, बापें तेने बत्रीश कन्या उ परणावी. तेणें पूर्वजन्मना नाइ सागरचंड मुनि पासेंथी धर्म श्रवण करी संवेग पामी ब्रह्मचर्यव्रत यहण कखुं. पढ़ी दीव्हा खेवानी इन्ना करी, त्यारें खशक जाए। तेना पितायें वाखायी ते हढधर्मा श्रावक थइने प्राग्नका न्ननो आहार वहोरी एकांतरें उपवास करीने पारएं करे. पढी वली चोवी श वर्षपर्यत यावत् उठ तपें पारणामां आंबेल कखुं ते मरीने विद्युनमाली नामें देव थयो, त्यांथी च्यवीने राजगृहीनेविषे क्यनदास शेवनी धारिणी स्त्रीनी कूखें पुत्रपणें उपन्यो, एनुं नाम जंबू पाड्युं. तेणे इज्ञा विना पण पिताना आग्रहथी आठ कन्या परणीने एकेक स्त्रीने नवी नवी कथा सं

नलावी प्रतिबोध पमाडे है, तेवामां प्रनवनामा चोर ते जंबूकुमारना घर मां पांचरों चोरोनी साथें चोरी करवा आव्यो. तेणें हानो उनो रहीने जं बूकुमारें स्वीउने करेलो बोध सांनली वेराग्य पामी दीक्षा लीधी. ते व्रत पालीने देवता थयो. अने जंबूकुमार तथा तेनी आहे स्वीयो मोक पामी॥३॥॥

> न ब्रह्मतःसकलदार्मकृतश्चलिन्त धीराःसुदर्शन इव व्यसने धनेऽपि॥ दोषोऽब्धिटःइलहरीचलदौलव एगबूजुप्रमोलिरपि विश्वनरं बिनर्ति ॥ ३०॥

अर्थः-(सकलशर्मकतः के०) समस्त सुकतने करवावाला एवा (धी राः के) धेर्यवान पुरुषो (व्यसने के) संकट आव्या ततां अथवा (धनेपि के॰) धन प्राप्त थया बतां पण (सुदरीन इव के॰) सुदरीन शेवनी पेतें (ब्रह्मतः केण) धर्मधी (न चलंति केण) चलायमान थता नथी. त्यां हर्षांत कहे हे. (होषः केण) नागेंड् ते, (श्रव्धितृद्वहरीचलशैलवब्गङ्कस्र मौलिरिप के॰) सागरना मोटा मोजायी चंचल थयेला एवा जे पर्वत तेथी धुजती अने विदारण पामती एवी जे पृथ्वी तेणें करी वक्र थयुं हे मस्तक जेनुं एवो बतो पए (विश्वंनर के०) जगतनो नार तेने (बिनर्ति के०) धारए करे हे. पण मूकतो नथी. तेम मोटा लोको धर्मने क्यारें पण मूकता नथी॥ इहां सुदरीन श्रेष्टिनी कथा कहे है. चंपानगरीमां दिधवाहन राजा तेने अनया नामें राणी हे. ते नगरीमां सुदद्दीन नामें ज्ञेत वसे हे.तेनी देवांगना सरखी मनोरमा नामें स्त्री है. तेना पांच पुत्रो है. एकदा सुदर्शन शेवतुं रूप'जोइने अनया राणी अनुरागणी यह त्यारें होतने तेडवा माटे पोतानी सखीने मोकली. ज्ञेवने बुद्धि चपनी तेथी कह्युं के हुं नपुंसक बुं, माटे ए काम करवाने शक्तिमान नथी. दासीयें पण ते प्रमाणेंज राणीने कहां. वली एकदा ज्ञोना पुत्रोने मार्गे जता जोइने राए। ये विचाखुं के नपुंसकने संतति होय नही, माटे शेवें मने बेतरी बे. तो हवे एनुं फरीयी जपाय करीश.एक दिवसे कोइ कार्यनिमित्तें ज्ञेवने चपाडी लावीने राणीयें प्रार्थना करी ते ज्ञेवें न मानी त्यारें तेणे स्त्री चरित्र करी बुमो पाडी जे शेवें महारी लङ्का लीधी एवो होकार करवाथी राजायें शेवने ग्रूजीयें चडाव्यो. त्यां शीजना प्रजा वधी ग्रुजी ते सिंहासन रूप यइ पठी राजाना सेवकोयें खडूना प्रहार कस्वा

ते मुकुट, कुंमल, दार, बाजुबंधादिक ञ्चानूषण रूप थता द्वा. ए रीतें कष्ट पडतां पण ज्ञोतें ञ्चंगीकार करेलुं ज्ञीलब्रत न मूक्युं॥ ३०॥

विश्वोपकारि धनमल्पमिप त्रश्चारयं, किं नंदवत् फलम मानपरियहेण ॥ त्रीत्ये यथा हिमरुचिर्न तथा हिमो घः, स्यादा यथाऽत्र जलदो जलिधस्तथा न ॥३ए॥

श्रथः—(श्रव्यमिष के०) श्रव्य एवं पण (धनं के०) धन, (विश्वोप कारि के०) सर्वलोकना कार्यने साधवावानुं ढतुं (प्रशस्यं के०) वखाणवा योग्य थाय छे. परंतु (श्रमानपरिश्रहेण के०) संख्याविनाना परिश्रहें करी (नंदवत् के०) नंदराजानी पेठें (किं फलं के०) हां फल होय छे? श्रर्थात् कांहीपण फल ते धननुं न थयुं. श्राहीं हष्टांत कहे छे. (यथा के०) जेम (हमरुचिः के०) चंइमा, (प्रीत्ये के०) लोकने प्रीतिने माटे (स्थात् के०) होय, (तथा के०) तेवीरीतें (हिमोधः के०) हिमनो समूह (न के०) न होय, (वा के०) श्रथवा (यथा के०) जेम (जलदः के०) मेघ ते (श्रत्र के०) श्रा जगत्ने उपकारी थाय छे, (तथा के०) तेम (जलधिः के०) समुइ, ते हारजलें करी निरुपयोगी छे माटे (न के०) थतो नथी.

श्राहीं नंद राजानी कथा कहे हे, पाटली पुरनेविषे उदायिन राजाने कोइक पुरुषें साधुवेप धारण करीने कंकलोहनी हुरीयें मारी नांख्यो! ते राजाने होकरो न होवाथी राज्य रेढुं थयुं, ए अवसरे हजाम पिता अने गणिका मातानो पुत्र नंदनामा हतो तेणें पोताना आंतरडायें वीटायला पाटलीपुरने स्वप्नमां दीढुं. प्रातःकालें स्वप्नपाठकने स्वप्नतुं फल पूह्युं, पाठकें पण पोतानी दीकरी तेने परणावीने पही कह्युं के तमने आ पुरनुं राज्य मलज्ञो. नंदपण ते कन्या परणीने घेर आव्यो. अनुक्रमें पंचिदव्य हाथीयें नंदने अनिषेक किलो, नंद राज्य गादीयें बेहो, परंतु कोइ मंत्री प्रमुख ते नंदनी आज्ञा माने नही. त्यारें नंदें जिंत उपर चित्रेला असवारोनी साम्रं जोयुं. के तरत ते चित्रेला स्वारोयें उतरीने अनेक सामंतोने पाडी नांख्या ते जोइ सर्व सामंत जय पामीने तेनी आज्ञा पाली ते पही ते नंदनी गा दीयें जे बेसे ते नंद कहेवाय,ते सर्वे नंद त्रणे खंमना अधिपति थया. सोना ना पर्वतो कराव्या; पण ते इव्य कोइ सुकार्यमां वपरायुं नहि॥ ३०॥

धन्यः परिग्रहमितेः सुखनाङ्न पापी, प्राङ्मम्मणो व णिगिवेंधहृदीश्वरोऽपि ॥ वंद्यः कृताद्रमहो जगतोमित श्रीः, पञ्चाधिकाऽधिकवसुः दादानृत् कलंकी ॥ ४०॥

अर्थः-जे मतिमान पुरुष, (परियहमितैः के०) परियहना मानें करी वर्चे, ते (धन्यः के०) धन्य जाएवो. तथा (सुखनाक् के०) सुखनोगवनारो जा णवो परंतु (पापी के०) लोनी पुरुष (न के०) सुखनाग् नथी. केनी पेतें? तो के (प्रांक् के॰) पूर्वें (ईश्वरोपि के॰) कोटी धनवालो पण (इंधहत के॰) नदीना पूरथी तणातां लाकडांनो लावनार (मम्मणोविणगिव के०)मम्मण रोवज जेम कहेलुं हे के ॥श्लोक॥ असंतोषवतः सौख्यं, न शकस्य न चिक णः॥ जंतोः संतोषनाजोय,दनयस्यैव जायते ॥ नावार्थः- असंतोपवाला इं इने तथा चक्रीने पण सुख होतुं नथी अने निर्धन होय परंतु संतोषी हो य तो ते सुखी जाणवो. (पश्य के०) जो के (शशजृत के०) चंडमा, (मि तश्रीः के०) योडी लक्कीवालो होय त्यारे (श्रहो के०) श्राश्रर्य ! (रुता दरं के०) कह्यों हो आदर जेने विषे एवो जेम तेम (जगतः के०) जगतने (वंदाः के०) वंदन करवा योग्य होय हो. अने (अधिकाधिकवसुः के०) अधिकवसु वालो चंड्मा, तथा अधिकवसुवालो पुरुप, (कलंकी के०) कलंकवालो होय हे अने कोइने नमन करवा लायक होतो नथी. पुरुष पक्तें वसु एटले इव्य जाणवुं अने चंड्पकें वसु एटले किरण जाणवां. . आहिं मम्मण ज्ञेवनी कथा कहे हे. राजगृही नगरीयें श्रेणिक राजा राज्यं करे हे. एक दिवस चेलणाराणी गवाक्तमां बेवां, तेवामां अर्दरात्रि ने समयें अत्यंतपवने युक्त वरसाद वरसवा मांमघो, तेथी नदियें पूर आ व्युं तेवारें नदीमां तणातां एवा लाकडाउने बाहिर खेंचता एवा कोइ वृद्ध पुरुषने विजलीना उद्योतें करीने, राणीयें दीवो. तेवारें श्रेणिक राजा ने राणीयें कह्यं के महाराज! मेघ राजानी पेवें तमें पण नरतामांज न रो हो ? परंतु जुवो आवा इःखी दरिई। आपणा नगरमां वसे हे. तेना न रण पोषणनी तमे चिंता पण करता नथी वाह !! तमारुं आतो मोहोटुं चातुर्य जासे हे ? तदनंतर श्रेणिक राजायें पण तणातां काष्ठोने खेंचना र हृद्दपुरुषने गोखमांची जोयो, तेची तेने बोलाव्यो अने पूर्वयुं के अरे तुं

कोण हो ? त्यारें ते बोध्यों के हुं विणक हुं, मारुं नाम मम्मण हे. महारे एक बलद सुवर्ण रत्ननों हे अने बीजों बलद मेलववा माटे आ काम करुं हुं तेपहीं ते कोतुक युक्त थइने श्रेणिक राजायें चेलणा राणीनी साथें जइ ते मम्मण जोहना घरमां त्रीजी जूमिने विषे सुवर्ण अने रत्न समूहथी जहें ला एवा शीगडावाला वे तृपजोंने नजरें दीहा. ते जोइने श्रेणिकराजा चे लणा राणीने कहे हे के हे ि शायी समृद्धि मारा जंमारमां पण न थी. वली श्रेणिक राजा ते मम्मण जोहने पूहे हे के एटली समृद्धि हतां त मो नदीमांथी काष्ठने शामाटे खेंचीलीयों हो ? त्यारें मम्मण जोहें कहां के हे राजन ! आकाष्ठोनां रत्न थाजो. त्यारें राजायें कहां के थोडी किम्मतनां काष्ठीयें करी रत्न ते केम थाय ? त्यारें राजायें कहां के थोडी किम्मतनां हाणी किम्मतनां काष्ठों हुं लां हुं ते वात सांजली साश्चर्य थइने राजा तथा राणी वेहु पोताने घेर गयां. ए रीतें जन्मपर्यंत मम्मण जोहें हते धने कोइने कांही पण आप्युं नहिं तेम खाधुं वापहां पण नहीं ॥ ४०॥

सीमस्यिते जलनिधौ निजकालमाने, शीतातपांज सि च जीवति जीवलोकः ॥ दिग्मानमानमपि जंतुहिता य तदत्, स्याचारुदत्तवदिहाप्रयतोति इःखी ॥ ४१॥

श्रथः—(जलिनधों के०) समुड्, (सीमस्थित के०) मर्यादामां रहे उते (जीवलोकः के०) जीवलोक, (जीवित के०) जीवे हे. जो तेनी मर्या दा मूकीने समुड् वर्ते तो केवी रीतें जीवलोकथी जीवाय? (च के०) त्र था (शीतातपांनिस के०) शीतकाल, उष्णकाल श्रने वर्षाकालते (निजका लमाने के०) निजप्रस्ताव वर्त्तमान थये हते जीवलोक, जीवे हे. पण पोता नो जे काल तेनो मान मूकी त्रणे व्यतिक्रम पामे, तो जीवलोक केम जीवे? जीवेज नही. (तहत् के०) तेनी पेठें निज समयप्रमाणें (दिग्मानमानमिष के०) दिशा परिमाणनुं व्रत पण (जंतुहिताय के०) जीवोना कल्याणने माटे (स्यात् के०) होय. तथा (इह के०) आ व्रतने विषे (अप्रयतः के०) अनादर करनार जे पुरुष थाय, ते (अतिङ्खी के०) अल्यंत इः खी थाय हे. केनी पेठें? तो के (चारुदत्तवत् के०) चारुदत्तनी पेठें. जेम चारुदत्तदिग्वतना त्यागें करी इःखी थयो. तेम थाय हे, ए नावार्थ जाणवो.

आंहिं चारुदत्तनी कथा कहे हे. मिथिलापुरीने विषे नीमक शेवनो पुत्र चारुदत्त नामा हतो, तेने परणाव्या पढी तेना पितायें चतुराइने माटे वे क्याने घेर मूक्यो. त्यां तेणे वेक्याना व्यसनें करी पोतानुं घर पण बोडगुं तेना पितायें मरती वखतें ते चारुदत्तने बोलावी कह्यं के हे नाइ! जन्म पर्यंत तें मारुं वाक्य पाव्युं निहं. हवे बीजुं कांहिं कहेतो नथी परंतु एट द्धंज कडुं डुं के कप्टना वखतमां नवकारनुं स्मरण करवुं एम कहीने चा रुदत्तनो पिता मरण पाम्यो. पत्नी तेनुं इच्य बधुं ह्वीण यइ गयुं. तेवारें नि र्धन थको प्रथ्वीमां नमतां नमतां ते चारुदत्तने कोइ योगी मद्यो तेऐं सु वर्णरस लेवा माटे रसकूपिकामां नाख्यो त्यां कूपिकामां मरण पामता एवा कोइ पुरुषने तेणे नवकार संजलाव्यो अने पोतें चंदनघोने पुढडे वलगीने कुवाथी बाहेर नीकली पोताना मांमाने गाम गयो. तिहां मामायं अने पो तें कपास यहण कस्रो,ते कपासने अरस्यमां जइ जता हता,तेवामां दावा मियें करी कपास बलीने राख थइ गयो. पढी मामो कहेवा लाग्यो जे आंपणे एक चामडानी धमणमां प्रवेश करीने रहियें,तो मांसना लोजी जारंम पद्घीयो ञ्चापणने जपाडी जडीने सुवर्णद्वीपमां लइ जाज़े. तिहां सुवर्ण यहण करहां ? एम कही मामायें पोताना लीधेला वे बकराने मारवा मांम्या तेने चारुद त्तें वास्रो तो पण मामायें सांजब्युं नही चारुदत्तें पोताने बेसवा माटे जे मामायें बकरो आप्यो इतो तेने मरती वखतें नवकार संजलाव्यो पढी मामो नाणेज वेंद्र जण ते बकराउनी खालनी धमणमां वेठा तेवारें ना रंमपद्मीयें ते बेदुने मांसनी चांतियी जपाडी लीधा, ते सुवर्णद्वीपें जइ ना ख्यां, त्यां खोलमां थी निकलीने ते चारुदत्त एक मुनिनी पासें गयो. जेवामां ते गुरुनी पासे बेसे वे तेवामां एक देदीप्यमान कांतियें बिराजमान देव ता तिहां आव्यो, तेणे प्रथम चारुदत्तने वांदीने पठी मुनिने वंदन कखुं ते जोइ कोइ बीजा त्यां बेवेला पुरुषें मुनिने पूत्रग्रुं महाराज आ देवतायें प्र थम चारुदत्तने वांदी पढी मुनिने वंदन करवारूप विपरीत वंदन केम कखुं ? गुरुयें कह्यं एएो पूर्वले जवे ज्या देवताना जीवने नवकार संजलाव्यो हतो तेना प्रनावधी ए देवता थयो हे माटे एनो ग्रह होवाधी एऐ। चाहदत्तने वंदन कछुं. पढ़ी चारुदत्तने ते देवे केटलुं एक इव्य आएयुं अने पाढ़ों तेने स्वस्थानकें पोहोंचाड्यो. अर्थात् ए चारुदत्त बहुकर्मी हतो परंतु तेणे पो

ताना पिताना उपदेशथी नमस्कार आपवानो नियम राख्यो तो ते पाढो सुखी थयो अने देवतायें पण पूर्वजन्मनो गुरु मानीने नमस्कार कस्रो.

न गम्यं नागम्यं क्विदकृतिदग्यानिवरतेः, कथं वा स्यािद श्वे सत्ततगतिरेकत्र वसितः ॥ दितीयदीपांतर्गतनरतमाकां तजलिध, नीकें जोपद्यर्थे हिरस्मरकंकापुरमगात् ॥ ४२॥

अर्थः— (अरुतिद्ग्यानिवरतेः के०) नथी करी दिग्गमननी विरति जेणे एवा सदा च्रमण शील जीवनें (नगम्यं के०) नदी जवा लायक त या (नागम्यं के०) नदी आववा लायक एवं स्थानक (किवत् के०) कोइपण कालें नथी कारणके (विश्वे के०) जगतमां (सततगितः के०) निरंतरगित करनारो एवो जे वायु ते (एकत्रवसितः के०) एकस्थलने विषे रहेनारो (कयं के०) केवी रीतें (स्थात् के०) होय ? ना होयज निहं, अहिं दृष्टांत कहे हे. (हिः के०) श्रीह्रण्ण, (इंग्यायें के०) इंग्यदी वा लवाने माटे (आक्रांतजलियः के०) चिजो हीपजे धातकी खंम तेमां रहेला नर तक्त्रमां (अमरकंकापुरं के०) आमरकंकापुर प्रत्यें (किंनआगात् के०) ग्रं न जता हवा ? एम दिशिनुं प्रमाण न करनारा पुरुषने सर्वत्र परवुं प्राप्त थाय हे. तेमाटे दिग्परिमाण व्रत अंगीकार करवुं ॥ ४२॥

आहिं श्रीकसनी कथा कहे हे. घारिकानगरीने विषे श्रीकस राजा रा ज्य करे हे. अने पांच पांमवो हिस्तिनापुरमां राज करे हे एक दिवस होप दी पांमवनी स्त्री, काचमां मोढुं जोतां हतां तेवामां नारदमुनि आव्या तो तेने होपदीयें सन्मान आप्युं नहीं तथी नारदजीयें तेनी उपर कोपायमा नथइने धातकी खंममां अमरकंकापुरीने विषे पद्मोत्तर राजानी पासें हो पदीना खरूपनुं वर्णन कखुं ते सांचली पद्मोत्तर राजायें देवनुं आराधन करी, देवना बलें करी होपदीने पोताना नगरमां मगावी लीधी ते पढ़ी नारदमुनियें आवी श्रीकसने सर्व वात कही ते सर्व वृत्तांत जाणीने श्रीकस, पांमवोये सहवर्त्तमान समुइनुं उल्लंघन करीने धातकी खंममां अमरकंका यें आवीने संशामने विषे पद्मनाचराजानो पराजय कखो नृसिंहरूप धारण करीने ते नगरनो किल्लो तोडी नाख्यो तेवारें स्त्रीनुं रूप धारण करी पद्मो त्तर राजा श्रीकृष्मना पगमां श्रावी पड्यो पढी द्वीपदीने लइने श्रीकृष्म पोताना पुरप्रत्यें श्राव्या. माटे दिग्परिमाणव्रतने धारण करवुं ॥ ४२ ॥

जोगोपजोगनियमोऽपि शिवाय चेन्न, स्यादंकचू लइवदेवपदप्रदस्तु ॥ प्रीणाति चातकमनन्यरितं पयोदश्चृतादानेकरसमन्यजृतं वसंतः ॥ ४३ ॥

श्रर्थः— (नोगोपनोगनियमोपि के०) नौगोपनोगनो नियम पण (प्राक् के०) प्रथम (शिवाय के०) मोक्तने माटे छे जो (नस्यात्चेत् के०) न थाय तो पण (वंकचूल्य के०) वंकचूल्य पेठे (देवपदप्र दस्तु के०) देवदपदने देवावालो तो निश्चें होयज त्यां दृष्टांत कहे छे के (पयोदः के०) मेघ, (श्रमन्यर्रातं के०) नथी बीजा कोइनी उपर प्री ति जेने एवा (चातकं के०) बपयाने (प्रीणाति के०) संतोष पमाडे छे श्रमे (वसंतः के०) वसंतक्तु जे छे ते (श्रम्यनृतं के०) कोकिलने सं तोषयुक्त करे छे ते, कोकिल केवो छे ? तो के (चूताशनैकरसं के०) श्राम्र कलिका नक्षणें करीनेज छे एक रस जेने एवो छे ॥ ४३ ॥

हवे आंहिं वंकचूलनी कथा कहे हे. विंध्यपद्मीने विषे वंकचूल राजा राज्य करे हे. त्यां एक दिवस धर्मघोषसूरि आवीने चोमासुं रह्या परंतु राजाना आ देशें करी कोइने धर्मोपदेश न देता हवा. चोमासुं वीत्या बाद धर्मघोषसूरियें विहार कर्लो तेमने वलावा माटे परिवार सहित केटली एक जूमि सूधी वं कचूल राजा आव्या. पाढा वलतां वंकचूल राजाने धर्मघोपसूरियें चार नियमो आप्या. तेमां प्रथम अजाएया फलनुं नक्त्ण न करवुं. बीजो कोध च डे त्यारे साडात्रण मगला पाढा फरीने पढी प्रहार करवो. त्रीजो राजानी पष्टराणीने मातानी पेठें मानवी. चोथो काकमांस नक्त्ण करवुं निहं ए वा चार नियमयहण करी राजा पाढो वत्यो. एक दिवस वंकचूलें किंपाक फलने अक्षात फल जाणीने न खाधां. अने तेना परिकरें ते फल खाधां तेथी सर्व परिकर यमने घेर पहोतो वली एक दिवस वंकचूल यामांतरथी अर्धरात्रियें पोताने गामें आव्यो तिहां पोतानी स्वीना पडखामां कोइक पु स्वने सुतेलो जोइने तेने साडात्रण मगलां पाढो फरीने प्रहार कखो ते प्रहार ते पुरुषना कपालमां लाग्यो त्यां ते वंकचूलराजानी बेन पुरुषनो वेष

धारण करीने स्नती हती ते जागी गइ. तेणीए आशीर्वाद दीधो तेवारें विं तववा लाग्यों के अहो ! आ मारी बेनने में प्रहार कखो में जाण्युं जे को इ पुरुप मारी स्त्रीनी साथें सुतो हे पण आतो, मारी बेन पुरुषवेष धारण करीने सुती हे एम तेने पश्चात्ताप थयो. तदनंतर एक दिवस ते वंकचूल कोइ एक नगरने विषे राजद्वारमां पेहों, तेने अत्यंत सुकुमार जोइने ते नग रना राजानी पट्टराणीयें कहां के तुं मारो उपजोग कख तेम तेणे प्रार्थ ना करी तो पण तेणे ते काम कखां नहिं अने तेणे काकमांस. जक्कण न कखां तेने अंते जिनदास श्रावकें अनशन आप्युं ते नियमना प्रजावधी ते वंकचूल स्वर्गनेविषे देवता थयो. माटे एक पण नियम पहें, तो तथी क दापि मोक्सुख न महे तो पण, स्वर्गप्राप्ति तो निश्चें ते प्राणीने थाय. तेमां संदेह जाणवो नहिं माटे सर्व जने परिषद्वनुं परिमाण करवुं ॥ ४३ ॥

नोगादिलोलुपतया लघुता न रार्म, श्रीब्रह्मदत्तस खिवित्रकुदुंबवत् स्यात् ॥ पीताधिकेंडरुचिरुज्जिति सीमसिंधुः, राक्रोपि गोतमकलत्ररतश्च राप्तः॥४४॥

श्रथः—(नोगादिलोलुपतया के०) नोगादिकनी घणी लोलुपतायें क रीने जीवने (लघुता के०) लघुपणुं (स्यात् के०) होय वे परंतु (शर्म के०) सुख (न के०) न होय केनी पेठें तो के (श्रीब्रह्मदत्तसखिविप्रकु टुंबवत् के०) श्रीब्रह्मदत्त जे दशमो चक्री तेनो सखि जे ब्राह्मण तेना कु टुंबनी पेठें. जेम चक्रवर्तीनी मीठी रसोइ जमवाथी ब्राह्मणनुं कुटुंब लघु ताने प्राप्त थयुं श्रने सुखने न पाम्युं. तेनी पेठें जाणवुं. त्यां दृष्टांत कहे वे. (पीताधिकेंड्रुक्तिः के०) पान करी वे श्रधिक इंड्रनी कला जेणे एवो (संधुः के०) समुइ ते पोतानी (सीम के०) सीमाने (चन्नति के०) त्याग करे वे. श्रर्थात् चंइ किरणना पानथकी समुइ वृद्धिगत थाय वे एटखे श्रति चंइिकरणना पाननी लोलुपतायें निर्मर्थाद समुइ थाय वे. (च के०) श्रने (शक्तोप के०) इंइ पण (गौतमकलत्ररतः के०) गौतमक्तिनी स्त्रीमां श्रा सक्त थयो तेने (शप्तः के०) गौतम क्रियें शाप श्राप्यो लघुता पाम्यो.

आहिं ब्रह्मदत्तना सखा विप्रनो तथा इंइनो एम वे दृष्टांत वे तेमां प्र थम ब्रह्मदत्तचकीना सखा ब्राह्मणनी कथा कहे वे. कांपिव्यपुरने विषे ब्र ह्मदत्तचक्री राज्य करे हे तेनो मित्र एक ब्राह्मण हे एक दिवस संतुष्ट यइ ने चक्रवर्तीयें जोजन करवा माटे ब्राह्मणने कह्यं तेने ब्राह्मणे कह्यं महारा आखा कुटुंबनें जोजन करावों तो हुं जोजन करुं तेवारें चक्रवर्तियें कह्यं म हारा घरनुं जोजन कोइ सहन करी शके नहीं तेवुं हे एम घणो वाखों तो पण ते रस लोजुपतायें ब्राह्मण जोजन करवा आव्यो तिहां जोजन कर वाथी ब्राह्मणनुं कुटुंब सघलुं यथिल पशुप्राय थइगयुं तेथी ब्राह्मणने रोप चड्यो तेवारें धनुगों निकाना प्रयोगथी राजानां वे चकु काहाढी नाख्यां.

हवे बीजी इंड्नी कथा कहे वे एक दिवस इंड् अत्यंत कामानुर होवा थी गोतमक्ति जार्या अहत्या तापसणीने जोगववा लाग्यो एवामां गो तमक्तियें आवी दीतुं तेणे इंड्ने शाप आप्यो के हे इप्ट! तें ब्राह्मणनी स्त्री साथे व्यज्ञिचार कथा, माटे तुं संहस्त्र योनियुक्त शरीरवालो था. पठी देव ताउंयें क्तिनी प्रार्थना करी के महाराज! एम करवाथी अमारो राजा क दक्ष्पो लागे माटे कांड्क अनुयह करो त्यारे क्तियें अनुयह करीने इंड्ने सहस्त्र नयन कथां. आ वात लोकिकशास्त्रनी वे पण आहीं केहेवानुं का रण ए जे इंड्य लोलुपता राखवी नही राखेथी पूर्वोक्त फलनी प्राप्ति थाय वे.

> नाऽनर्थदं मघदं द्धते महांत, एकेषुमात्रविजयीव सचेटनूपः ॥ लोकस्य जाड्यहतये तरणे: प्रनाऽह्नि, तापि चदे च दाशिनोनिशि नो तद्त्ये ॥ ४८ ॥

श्रयः—(महांतः के०) सत्पुरुपो, जे हे ते (श्रयदं के०) पाप दायक एवा (श्रमर्थदं के०) ते चेटक नामा राजा (एकेष्ठमात्रवि जयी के०) एकज बाणें करी विजयी थयो. श्रश्मात्र चेटकराजा युद्ध करती वखत एकज बाण मुकतो एवो नियम हतो ए वात सर्वत्र प्रसिद्ध हे इहां हष्टांत कहे हे. जेम के (श्रिमः के०) चंइमानी (प्रना के०) कांति, ते (निश्च के०) रात्रिने विषे (लोकस्य के०) लोकना (तापि हिद्दे के०) ता पने हेदवाने माटे थाय हे. (च के०) श्रने (तरणेः के०) सूर्यनी (प्रना के०) कांति ते (श्रिक्ष के०) दिवसने विषे (जाड्यहतये के०) लोकना जाड्यने हरण करवा माटे थाय हे. परंतु ते बेद्धनी कांति लोकने पीडा

करवा माटें होती नथी. तेम अनर्थदंमनो परिहार पण लाजने माटें थाय है. हवे आहिं चेटकराजानी कथा कहे हैं. विशाला नगरीनेविषे परमआईत एवा अर्थात् अनन्य जैनमतानुयायी चेटक नामा राजा राज्य करे है. तेणे श्री वीरजगवाननी पासे सम्यक्त्वसहित परिग्रह प्रमाणनुं ग्रहण करतां युद्धमां लडवा जानुं. त्यारें धनुषथी एकज बाण मुकनुं एवो नियम कस्थो. पही ज्यारें संग्राममां चडे, त्यारें वैरी राजा प्रत्यें एकज बाण मूके, परंतु बीजुं बाण कोइ वखत मूके नहिं. तथापि तेना एकज बाणयी वैरी राजा मरण ज पामे. तेमां संशयज नहिं. एकदा संग्राममां चड्या एवा चेटक राजायें पोतानी दिकरीना दीकरा एटले दोहित्रा काल अने महाकालादिक कुमारोना सैनिकोने एकेकज बाणथी दिनदिन प्रत्यें नाश पमाड्या ॥ ४६ ॥

मूढोमुधेति कुगति धिगनर्थदंमांत्, चिकत्विम नुर्वि नू नृदद्योकचं ।। किं नांगनंगमयते शरनोऽब्दशब्द, म न्युत्पतन् परिणमंश्च गजोनुशैलं॥४६॥ इत्यनर्थदंमदारं॥

श्रयः एक सकार्यपाप श्रने एक श्रकार्यपाप तेथी (मूढः के०) मूढ (कु गितं के०) कुगतिने (मुधेव के०) वृषाज (एति के०) प्राप्त थाय हे. ते श्रन्थदंमने (धिक् के०) धिक्कार होजो. (श्रन्थदंमात् के०) श्रन्थदंमय की (श्रशोकचंड्ःनूनृत् के०) श्रशोकचंड् नामा राजा, ते (इव के०) जे म (चिक्कलिमनुः के०) चिक्कपणानी इन्ना करतो हतो कुगतिने प्राप्त थयो तेम जीव कुगतिने श्रन्थदंमथकी प्राप्त थाय हे. जेम (शरनः के०) श्रष्टापद नो जीव, (श्रद्धशब्दं के०) मेघगर्जारवना शब्दनी सन्मुख (उत्पतन् के०) ग्रहीने पडतो हतो पण (श्रंगनंगं के०) श्रंगना नंगने (किं नश्रयते के०) ग्रं नथी प्राप्त थातो श्रर्थात् थाय हे. तथा (गजः के०) हस्ती (श्रनुशैलं के०) पर्वतपर्वत प्रत्यें (परिणमन वंः०) दंतमुशलना प्रदारने देतो हतो (श्रंगनंगं किं न श्रयते के०) ग्रुं श्रंगनंगने न प्राप्त थाय ना थायज ॥ ४६॥ श्राहें श्रशोकचंड्नी कथा कहे हे. राजगृही नगरीने विषे श्रशोकचंड्

श्राहि श्रशोकचंड्नी कथा कहे है. राजगृही नगरीने विषे श्रशोकचंड् राजा राज्य करे हे. ते राजानुं बीजुं नाम कोणिक करीने पण हतुं. तेणे पूर्वजन्मने विषे तापसपणामां मासक्षपणादि उथ तप तप्युं हतुं तेना पुखें करी श्रा लोकने विषे मोहोटा राज्यने प्राप्त थयो. एक दिवस चमरेंडें ते कोणिक राजाने त्रिग्नुल आप्युं. तेना प्रनावयी बीजा राजाउंयें वासुदेवनी पेठें तेनो त्रिखंमना अधिपतिपणाना राज्य उपर पट्टाजिषेक कखो. एक दिवस श्रीवीरप्रज्ञनी पासें कोणिक राजायें पूठ्युं स्वामी! चक्रवर्त्त केटला थया. जगवान् बोख्या के आ अवसर्पिणीकालने विषे बार चक्रवर्त्त थया हे. त्यारे कोणिकें कद्युं हुं तेरमो चक्रवर्त्ती थइश एम कहीने नवीन चक्र रत्नादि चक्र वर्त्तिनें योग्य बनाव्यां पही वैताद्यनी गुफाना हार पासें गयो तिहां हारने दंम मारवायी अधिष्ठायक देवें हार उघाड्युं तेनी उझतायी कोणिक राजा तेज समय बलीने जम्मीजूत थइ मरीने नरकें गयो माटे अनर्थदंमथी वि राम पामचुं,नही तो कोणिकनी पेठें अवस्य नाश थाय॥इति अनर्थ दंमहारं॥

सामायिकं विघटिकं चिरकर्मनेदि, चंडावतंसक वंडचिधयोऽत्र किंतु ॥ स्पर्शेऽपि सत्यमुद्कं मिल नत्वनाशि,घोरं तमोहरति वा कृतएव दीपः॥४७॥

अर्थः—(सामायिकं के०) सामायिक (िघटिकं के०) बे घडी पाट्युं होय तो पण (चिरकर्मनेदि के०) घणा कालनां संचेलां कर्माने नेदना रुं थाय हे. केनी पेहे ? तो के (चंडावतंसकवत् के०) चंडावतंसक रा जानी पेहे ? अर्थात् वे घडीवार पालें लुं सामायिक अनेक कर्मोनो नाश करे हे, तो जाजीवार पालवाथी (अत्र के०) ए सामायिकमां (उच्च धियः के०) उंची बुद्धिवालाने कर्मनो नाश थाय, तेमां तो ग्रंज आश्चर्य हे ? (सत्यं के०) ते वात सत्य हे त्यां दृष्टांत कहे हे, जेम के (उदकं के०) जल (स्पर्शेषि के०) स्पर्शने विषे पण (मिलनलाशि के०) म लिन पणाना नाशने करनारुं थाय हे (वा के०) तथा (दीपः के०) दी पक, (कृतः के०) कथा हतो (घोरंतमः के०) नयंकर घणा कालना अं धकारने (हरतिएव के०) हरण करे होज तेम जाणवं ॥ ४९॥

श्राहिं चंडावतंस राजानी कथा कहे हे. विशालापुरीने विषे चंडावतंस राजा राज्य करे हे. ते जैनधर्मपालक परमनेष्ठिक साम्राज्यने करतो हतो. एकदा पांखीने दिवसें ते राजायें पोताना घरने विषे एवो श्रानियह क स्रो के ज्यां सुधी श्रा दीवो रहेशे त्यां सुधी मारे कायोत्सर्ग पारवुं नहिं. दासीने ते श्रानियहनी खबर न होवाने लीधे, स्वामी निक्तयें करीने दा सीयें आवीने तेल बली गयुं, त्यारें बीजी वार पूखुं एम ज्यारें ज्यारें तेल यह रहे,त्यारें त्यारें दासी आवीने तेल पूरी जाय. ए रीतें आखी रात्रि दीवों बखो त्यां सुधी राजायें कायोत्सर्ग पूरो न कखो. सूर्योदय थयो त्यारें का योत्सर्ग पूरो थयो आखी रात्र उनो रहेवाथी शरीर रुधिरें करी नराइ गयो, तेथी जेम पर्वतनुं शिखर त्रूटी पडे,तेम ते राजा नीचें नूमीयें पडी मरण पा म्यो. ते शुनध्यानें करीने शुनगतिने पाम्यो. वास्ते सामायिक करनारा म नुष्योनां पातक दहन थइ जाय हे एम जाणवुं ॥ ४९॥

सामायिकं समतयारिसुहृत्सुसि इचे, प्रद्योतसुक्ति कृडदायिनराजवत्स्यात् ॥ सञ्चंदनांशुकमिवास्फुट कुछनाज, स्तत्कुर्वतः कंपटतोबहिरंगशु इचे ॥ ४०॥

अर्थः-(अरिसुहत्सु के०) , शत्रुमित्रोने विषे (समतया के०) समना व रूप (सामायिकं केण) सामायिक कखुं होय तो (सिद्ये केण) सिद्धिने माटे (स्यात् के०) होय. केनी पेवें तो के (प्रद्योतमुक्तिकत् के०) चंमप्रद्यो तराजाने वंधनधी मूकनार एवा (उदायिनराजवत् के०) उदायिन राजा नी पेतें अने (कपटतः के०) कपटथकी सामायिक, (कुर्वतः के०) करनार ने (बिहरंगग्रु ६ घे के ०) बाहेरना अंगनी ग्रु ६ ने माटे थाय हे. त्यां ह ष्टांत कहे ने के जेम (अस्फुटकुष्टनाजः के ०) नथी बाहेर पड्यो कुष्टरो गनो विकार जेने एवा प्राणीने (सच्चंदनां ग्रुकिमव के) सारु चंदन चो पडवुं तेज श्रंग्रुक एटले वस्त्र, ते जेम लागे तेम ते सामायिक बाहिरना दोषोने मटाडे हे माटे तेवुं सामायिक, सर्व नव्य जीवें जरुर करवुं ॥ ४०॥ आंहिं उदायिनराजानो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. वीतनय पत्तनने विषे चदायिन राजा राज्य करे हो, तेनी पहराएी प्रजावती नामे हती, ते राजाना घरमां अत्यंत रूपवाली एवी सुवर्णगुलिका नामें दासी हती. ते निरंतर अतिशय नाव सहवर्त्तमान देवाधिदेवनी प्रतिमानुं पूजन करती हती. एक दिवसे उजेणीना राजा चंमप्रयोतें प्रतिमास हिंत ते दासीनुं हरण कखुं तेवातनी जदायिनराजाने खबर पडवाथी दश राजाने साथें ज़इने ज़डवा माटे उजेणीयें गयो, बेहु राजायें दारु ण युद्ध कखुं. तिहां चदायिनराजायें चंमप्रयोतने जीवतो पकड़ीने बदी

वान कीधो मार्गे चालतां वर्षाकाल आववायी राजा, दशपुरनगरें रह्यो तिहां पर्यूषण पर्वे त्र्याववाथी उदायिराजायें उपवास कस्बो अने चंमप्र द्योतने रसोइयो पूठवा गयो के आपना सारुं केवी रसोइ वनावीयें ? चं मप्रयोतें कहां के जे उदायिराजा सारु बनावो तेज रसोइ महारा वास्ते बनावजो तेने रसोइयें कह्यं के उदायिराजाने आज उपवास है ते सांजली चंमप्रद्योतने शंका उपनी जे आज एएो मने फेर आपवानो विचार कस्रो जणाय ने माटेज जुदी रसोइ बनाववानुं कहे ने एवा नय थी वोद्यो जे महारे पण आज उपवास हे अने हुं पण जैनधर्मी हुं उदा यीनो साधर्मीजाइ डुं पण मने विस्मरण यइ गयुं तेथी रसोइ करवानुं क द्यं तेवात रसोइये जई उदायिनराजा आगल कही तेवारे उदायिनें विचा खुं जे ए धूर्नताथी बोव्यो हे खरों तो पण महारो साधर्मीनाइ यइ चूको माटे एनी साथे मिञ्चाइकड आप्याविना ग्रुद सामायिक करवुं सूजे नही. पढ़ी उदायि राजायें चंमप्रयोतने कह्यं के महारी साथे मिन्नाइक्कड कह्य तेणे कह्यं महारुं राज्य पातुं आप्य पत्नी बीजो कोइ उपाय नही होवा थी तेने होडी मूकीने पाडुं उद्भयणीतुं राज्य आप्युं अने पूर्वे उदायिरा जायें ते चंमप्रयोतना ललाटमां दासीपति ए राजा हे एवा खंहरनो मांम दीधो हतो ते मांमने ढांकी मूकवाने माटे तेने सोनानो पट्ट वंधावी स न्मान करीने उद्भयणी नगरीयें मोकली दीधो ते दिवसची चंमप्रद्योतना कपालमां सुवर्णपट्टबंध निरंतर रह्यो एवीरीतें अविकात पणायी उपवा सादि सामायिक करे तो पण लाज थाय तेवारे विकातपणाथी फलप्राप्ति थाय तेमां तो कहेवुंज ग्रुं ? माटे सामायिक अवश्य करवुं ॥४०॥

> देशावकाशिकमपास्य सकाकजंघ, कोकाशविष दमेति जनः प्रमादी॥ धत्ते प्रजां दिनचरोन निशा करोऽपि,न स्तूयतेऽपिच पयोजृदकालरुष्ठः॥४ए॥

अर्थः—(जनः के०) मनुष्य, (देशावकाशिकं के०) देशावकाशिकव्रत ने यहण करीने पढी (प्रमादी के०) आत्मसु थयो ढतो. ते देशावकाशि क व्रतने (अपास्य के०) तजीने (सकाकजंघकोकाशवत् के०) काकजंघ सिहतकोकाशनीपेठें (विपदं के०) इःखने (एति के०) पामे ढे. एज अ र्यनो हष्टांत कहे हे. (दिनचरः के॰) दिवसे विचरनारो एवो (निशाक रोपि के॰) चंड्मा पण (प्रनां के॰) कांतिने (नधने के॰) धारण कर तो नथी. (च के॰) वली (पयोनृत् के॰) मेघ, (अकालहृष्टः के॰) अ कालें वरसे तो (न स्त्यते के॰) वखणाय नही. तेम देशावकाशिकने त्या गनारो कोकाशनामा सूत्रधार,अने काकजंघनामा राजा काकजंघनी साथें जे वर्ते, ते सकाकजंघ कोकाश जाणवो. तेनी पेठें थाय ॥ ४ए ॥

श्राहिं काकजंघकोकाशनो हष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे. हे. विदेहा नगरीनेविषे काकजंघनामा राजा श्राने कोकाशनामा सूत्रधार वसे हे. ते कांकजंघराजा लाकडाना संचायें गोववेला एवा गरुडपर बेसीने फरेहे तथा ते कोकाशिक लाकडाना संचावाला श्राध्य उपर बेसीने फरे हे. ते सूत्रधार ने लोको कोकाशि एवे नामे कहे हे. ते काकजंघ परमजैन हतो, पोता नी विद्याना बलेंकरी समेतशिखर पर्वत तथा श्रष्टापद प्रमुख तीर्थने विषे श्रीदेवाधिदेव श्रिरहंत प्रशुने नमस्कार करे हे एकदिवस ते काकजंघें, प्रातःकालनेविषे गुरुनी पासें जइ श्रा नगरथी माहारे बाहेर जावुं नही. एवा देशावकाशिक व्रतने यहण कखुं. पही एक दिवस ते एक पोतानाज गामने विषे संचायें करी चालता एवा काष्ठना घोडा उपर बेसीने गगनमार्गनेविषे चालवा लाग्यो गामबाहेर निकली गयो देवयोगें ते काष्ठना श्रथनी कीलि का जांगी. तेवारें श्राकाश थकी पर्वतनी उपर पड्यो. त्यां मरण पामवाथी व्रतनी विराधनायेंकरीने ते काकजंघ ड्यीतिने पाम्यो. माटे व्रत यहण क रवुं ते कोइ दिवस श्रजाण पणायें पण होडवुं नही ॥ ४ए ॥

गुरुवचनवियोगाऽङ्गातदेशावकाशो, विपदि तरतिपुण्याच्चेद्यथा लोहजंघः ॥ हयमयरुषनावाः स्वामिना वाह्यमानाः सततमि तगत्या किं हितं स्वस्य कुर्युः ॥ ५० ॥ देशावकाशिकव्रतदारं ॥

श्रधी:—(गुरुवचनवियोगाङ्गातदेशावकाशः के०) गुरु वचनना वि योगें करी नथी जाण्युं देशावकाशिकव्रत जेणे एवो पुरुष जो पण (विपदि के०) विपत्तिने विषे पडे हे तो पण ते व्रतरूप (पुण्यात्के०) पुण्यथकी (तरतिचेत् के०) तरे हे केनी पेहे ? तो के (यथा के०) जे म (लोहजंघः के०) लोहजंघ नामा चंमप्रयोत राजानो लेखकहार हतो ते गुरुना वचनविना देशावकाशक व्रतमां अङ्गात थयो उतो विपत्ति मां आव्यो तो पण तखो, ते पुण्यथकीज तरतो हवो त्यां दृष्टांत कहे हे. (हयमयवृपजावाः के॰) अश्व, उंट, वेल ए सर्व (स्वामिना के॰) स्वा मियें (वाह्यमानाः के॰) वहन कखा उता (सततं के॰) निरंतर (अमि तगत्या के॰) अप्रमित गतियें करी (किं के॰) छं (स्वस्य के॰) पोता ना (हितं के॰) हितने (कुर्युः के॰) करे ? ना नज करे॥ ५०॥

आहिं ज़ोइजंघनो हष्टांत होवायी तेनी कथा कहे हे. उर्कायनी नग रीनेविषे चंमप्रयोत नामा राजा राज्य करे हे. तेनो लोहजंघ नामा दूत ह्तो. ते प्रतिदिवस चोवीश योजन चालतो हतो. एकदा सामंत राजार्ड यें विचाखुं के ज्यारें ए लोहजंघ पोताना राजानी सेवा माटें आपणा न गरमां आवे, त्यारे तेने युक्तियें करीने मारवो कारण के ते आपणा समा चार जइ जाय हे, तेथी आपणने कष्ट थाय हे. एम विचारी एक सलाह करीने पढ़ी ज्यारें ते लोइजंघ तेमना गामंथी पाढ़ो वख्यो, त्यारें तेने संब लने माटें विष मिश्रित लाडु करीने ऋाप्यो. जेवामां ते रस्तामां खावानो आरंन करे, तेवामां त्रण ढीक थइ त्यारें तेने शंका पड्याथी ते लाडु खाधो नहिं, अने जोयुं तो विषमिश्रित लाडु दीवो पत्नी पोतें उजयणीमां चंमप्रयोत राजा पासें आवीने ते लाइनुं वृत्तांत सर्व संजलाव्युं अने ते मोदक राजाने आप्यो. राजानी पासें ते वखत अनयक्रमार बंदीवान हतो तेने राजायें पूर्व्युं जे हे कुमार ! आ मोदकमां ग्रं हे ? त्यारें अनयकुमारें कह्यं के, आमां दृष्टिविष सर्प जत्पन्न थयो हे. त्यारें ते लाडु राजायें ली लाखंडवाला वननेविषे नाखी दीधो. तेमांथी निकलेला सर्पनी दृष्टिथी थोडाज वखतमां ते लीलुं वन सुकाइ गयुं. ए देशावकाशिकव्रत संपूर्ण थयुं.

हवे पोषधवतनुं द्वार कहे हे.

शुचिपोषधेन मुनितुख्यतेति किं, जिनतापि मेघ रथवक्रवेत् क्रमात्॥ किमु निर्धनस्य मणिनेष्ठदा यिना, धनितुख्यतेव नृपतुख्यता न किं॥ ५१॥

अर्थः—(ग्रुचिपौषधेन के॰) पवित्र पौषधें करी गृहस्थने पण (मुनितुव्यता के॰) मुनितुं तुव्यत्व थाय हे (इति के॰) ए प्रकारें होय तेमां (किं के॰)

ग्रुं केहेवुं वली तेने (मेघरथवत् के०) मेघरथनी पेवें (जिनतापि के०) तीर्थंकर पणुं पण प्राप्त थाय हे. ते मेघ रथनो जीव अनुक्रमें दशमे जवे श्रीशांतिनाथ नामें तीर्थंकर थयो. त्यां दृष्टांत कहे हे. जेम के (इष्टदायि ना के०) इज्ञित पदार्थने देनारा एवा (मिणना के०) चिंतामणियें करीने (धिनतुत्यताएव के०) धनवाननी तुत्यताज (जवित के०) होय हे ? परंतु (नृपतुत्यता के०) राजानी तुत्यता (किं के०) ग्रुं (न के०) न होय. ना होयज अर्थात् व्रतें करीने गृहस्थने केवल मुनितुत्यताज थाय अने जिनता न थाय एम जाणवुं निहं परंतु जिनता पण थायज.

श्राहिं मेघरथ राजानो हप्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. शावस्ती न गरीने विषे मेघरथ राजा राज्य करे हे. एकदा ते राजानी सनामां निमित्ति यो आव्यो. ते निमित्तियाने मंत्रीयें पूढ्युं जे कांइक निमित्त कहो त्यारें ने मित्तियें कह्यं के आजर्थ। सातमे दिवसें आ राजाना मस्तक उपर वीजली पड़शे. ते वचनथी सर्व जनो नयचांत थइगया. पढ़ी राजायें पूढ़्युं के हवे मारे केम करवुं ? त्यारें केटलाएकें कहां के वाणमां बेशीने समुझमां जावुं, केटलाएकें कहां के गिरिग्रफामां जइने रहेवुं. त्यारे तेनो एक सुबुद्धि नामें प्रधान हतो,तेणें कह्यं के ए सर्व जवा द्यो अने देवधमीराधन करो. जेणें करी सर्व विघ्नोनो नाश थइ जाय. पत्नी राजायें नवीन पाषाणनो यक्त कराव्यो अने तेने राज्यानिषेक कराव्यो. अने पोतें सर्व त्याग करी जिनालयमां बेसी पोषध व्रत धारण कखुं, सातमो दिवस ज्यारे त्राव्यो, त्यारें वीजली पा पाणना यक् उपर पड़ी, तेथी ते यक् तरत फाटी गयो एटले राजाने मूकी यक्तनी उपर विद्युत् पडी. अने राजा पौपधव्रतना प्रतापें करी बची गयो ते राजाना जीववायी सर्व जनोने परम प्रमोद ययो. ते राजा अनुक्रमें दशमे नवें श्रीशांतिनाथ नामा तीर्थंकर थया. एम पोपधना प्रतापें करी मरण इःख मटग्रुं तथा अनुक्रमें तीर्थकरपणुं प्राप्त थयुं. माटे सर्व जव्य जीवें पौषधव्रत धारण करवुं ॥ ५१ ॥

सत्पोषधं विविधसिष्दिसोषधं य, त्रनावनाद्यामरसार्ष हृद्गिलीढः॥ स्वः सागरें इरजनि स्फुटहेममूर्त्ति, रोर्वा मितप्तविमलाऽजिरिवाब्धिमंद्या॥ ५२॥ पोपधवारं॥ श्रथः—(यत् के०) जे (श्रोपधं के०) श्रोपधसमान एवं (सत्पोपधं के०) उत्तम एवं पोषधवत, (विविधसिदिदं के०) श्रनेक प्रकारनी सिदिने देना हं वे. श्रने (तज्ञावनाशमरसाईहद्दिष्टलीढः के०) ते पोषधनी जावना तेज श्रम तड्रप जे रस,तेणें श्राई एटले श्रकवोर नम्र एवं जे हृदय तेज श्रिष्ठ, तेणें करी श्रास्वादित एवो (सागरेंडः के०) सागरचंइ नामा राजा, (स्फुटहेम मूर्जिःके०) प्रगट वे सुवर्ण समदेद जेनो एवो वतो (सः के०) स्वर्गने विषे (श्रज्जित के०) उत्पन्न थयो. बीजुं सुवर्ण पण रससंयोगें करी श्रव्रियं करी फूंक्युं होय तो श्रद्ध थाय वे. केनी पेवें? तो के (श्रव्धमंथा के०) मेरु नामनो (श्रिइरिव के०) पर्वत तेज जेम (श्रोवितप्तविमलः के०) वाडवादिना तापें करी निर्मल थाय वे तेनी पेवे. मनुष्य पण प्रधान पें पथ वतें करी श्रुद्ध थाय वे एटले ते प्राणीना कर्ममलनो नाश थाय वे.

आंहिं सागरचंइनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. द्वारिकाने विपे श्रीकृष्णनो श्वसुर उयसेन राजा हतो तेना पुत्रनुं नाम ननसेन हतुं. तेने परणाववा माटे तेना पितायें कमलामेला नामनी को एक कन्या जो इ मुकेली हती, पढी नजसेनने घेर नारदमुनि खाव्या, तेनुं सन्मान नजसेनें कखुं नहीं तेथी रुष्ट थइने नारदें कमलामेलानुं रूप पष्टमां लखीने बलदेवना पुत्र सागरचंइनी पासें देखाडगुं. ते कन्यानुं चित्र जोइने सागरचंइ, कमला मेलानुं नाम गांमानी पेतें बोलवा लाग्यो, अने नूतानिनिवेश जेम थाय, तेम थइ गयो, ते पढ़ी वाक्रढ़ करी सांबकुमारें ते कमला मेला सागर चंइने परणावी आपी. नजसेन ते कन्या पोताने न परणवाथी सागरचंइ सायें देप वहन करवा लाग्यो, एकदा श्रीनेमीनाथनी पासें सागरचंईं श्रा वकनां व्रत लीधां तेने पालन करतो स्मशानमां कायोत्सर्ग रात्रियें करतो हतो तिहां जमतां जमतां दैवयोगें नजसेनें ते सागरचंइने कायोत्सर्गमां उनो रहेलो दीवो, त्यारें श्रविना श्रंगारानी नरेली वीब, तेना माथा उप र ते पापियें मूकी, ते सागरचंड उपसर्गने सहन करतो बलतो बतो मर ए पाम्यो अने देवलोकने विषे देव थयो. माटे पवित्र पौषध करनारो एवो प्राणी सजतिनें पामे हे, तेमां हां आश्वर्य जाणवुं ? ॥ इति पौषधवत ॥

किमिपफलमपूर्वं संविजागस्य साधो, येदिजिलिषत सि इये मूलदेवेऽपिमाषाः॥ कृशमपि हि सुपात्रे न्यस्तसृत्रैः फलक्यें, ननु तृणमिप धेनोर्ङम्धपीयूषदृक्ये ॥ ५३॥

अर्थः—(यत् के॰) जे (संविनागस्य के॰) संविनाग व्रतनुं (किम पि के॰) काइक अनिर्वचनीय (फलं के॰) फल, (अपूर्व के॰) अपूर्व याय छे. जेम (मूलदेवेपि के॰) मूलदेव नामा राजाने विषे पण (साधोः के॰) साधुने आपेला (मापाः के॰) अडदना वाकला, ते अनिलिपति ह्ये के॰) इहित पदार्थनी सिद्धिने माटे थया. (दि के॰) निश्चे ते वात घटे छे जेम के (सुपात्रे के॰) सुपात्रने विषे (क्शमपि के॰) थोडुं पण (न्यस्तं के॰) आरोपण करेलुं छतुं (अबैः फलर्क्ये के॰) उंचा फलनी क्दिने माटे थाय छे. केनी पेछे? तो के (धेनोः के॰) गायने दिधेलुं ए वुं (तृणं के॰) घांस पण (इंधपीयूषहृद्ये के॰) इन्धरूप अमृतनी ह दिने माटे थाय छे तेम ए पण जाणी लेवुं ॥ ५३॥

आहिं मूलदेवनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. कोशांबी नगरीने विषे रिपुमर्दननामा राजा तेनो पुत्र मूलदेव करीने हतो, ते अत्यंतदान नो व्यसनी हतो एक दिवस कोइना मुख्यी नवुं काव्य सांजलीने तेने एक लक्ष्ड्व्य आपतो हवो, ते सांजली तेना पितायें दाननो निषेध कहाो. त्यारें ते हानो मानो घरथकी निकली गयो. अनुक्रमें एक अटवीमां आव्यो त्रणदिवसें ते अटवी उत्तरी गयो त्यां कोइक नगरीनेविषे जमतां जमतां ते मूलदेवने बाफेला बाकला कोइयें आप्या. ते बाकला पोते न खाधा अने जाव सहित कोइ एक साधुने वहोरावी आप्या. ते जोइ ते बननी देवीयें तुष्टमान थइ मूलदेवने कह्यं वरदानके माग्य, कहेलुं हे के ॥ धन्नाणं सुनराणं, कुम्मासाहुंति साहु पारणए॥ गणियंच देवदनं, दंति सहस्तं च रचं च॥ १॥ तेवारें मूलदेवें एक हजार हाथी युक्त राज्य मा ग्युं, देवीयें पण तेज वरदान आप्युं, त्यार पही नगर प्रत्यें जातां कोइक गामनेविषे पर्णकुटीमां सुतो, त्यां पोताना मुखमां चंइप्रवेश थयो एवं स्वप्त दीवुं प्रजातें उठीनें मूलदेवें तेनुं फल कोइ स्वप्तपावकने पूक्युं. तेवारे ते स्वप्तपावकें प्रथम तो मूलदेवें तेनुं फल कोइ स्वप्तपावकने पूक्युं. तेवारे ते स्वप्तपावकें प्रथम तो मूलदेवने पोतानी पुत्रीनुं पाणियहण कराव्युं.

ते पढ़ी कह्युं के आ स्वप्नना फलमां राज्यप्राप्ति तमोने थाज़े. ते पढ़ी सा तमे दिवसें माहम्मित नगरीनेविषे अपुत्रीयो राजा मरण पाम्यो ते राजा नुं राज्य पंचिद्वच्य थकी ते मूलदेवने प्राप्त थयुं. एवीरीतें संविजागव्रतना प्रतापथी तेनी स्थिति उत्तम थह तेमाटे संविजागव्रत करवुं ॥ ५३ ॥

यदसद्पि दृद्गे प्राक्र्शालिज्ञ डोऽतियेः स्वं, तदसद्पि स लेजे कामरर्षिः कमर्त्यः॥ क जुविजलिधिरिंडः कांबरे तं सपुष्णा, त्यमृतजृतपयोदंः शोपणेष्यौर्ववन्हेः ॥ ५४॥

श्रथः—(प्राक् के॰) पूर्वनवें (शानिनइः के॰) शानिनइनो जीव ते (यत् के॰) जे (श्रसदिष के॰) श्रसत् एवा पण (स्वं के॰) पोताना पर मान्नरूप पारका घरथकी याचना करीने जावेनो हतो ते (श्रितथेः के॰) साधुने (दंदों के॰) श्रापतो हवो (तत् के॰) तेथी (श्रसत् के॰) श्रापतो हवो (तत् के॰) ते पामतो हवो नहीं तो (श्रमरिर्दिः क के॰) श्रमरनी समृद्धि क्यां श्रने (क मर्त्यः के॰) म नुष्य ते क्यां ? श्रयीत् श्रन्ननो कीटक एवो मनुष्य क्यां श्रने देवतानी क्रिक्ष क्यां त्यां दृष्टांत कहे ने (श्रवि के॰) प्रध्वीने विषे (जन्निःक के॰) समुद्द क्यां त्यां दृष्टांत कहे ने (श्रवि के॰) प्रध्वीने विषे (जन्निःक के॰) समुद्द क्यां त्यां हृष्टांत कहे ने (श्रवि के॰) श्राकाशने विषे (इंडःक के॰) चंदमा क्यां एम ने तो पण (श्रमृतनृतपयोदः के॰) जेणे पाणीयें करी मेघने परिपूर्ण नरेनो ने एवो (सः के॰) ते चंद्र जे ने ते (श्रोविवहेः शोषणे पि के॰) वाडवानन्विषी थता एवा शोपणनेविषे पण समुद्दुं (पुझाति के॰) पोषण करे ने. श्राहीं शानिन्यहनी कथा प्रसिद्ध ने माटे लखी नथी. हवे समक्तेत्रनुं द्वार कहे ने.

क्तेत्रेषु सप्तस्विप पुण्यत्य ६ये, वपेदनं संप्रति राजव ६नी ॥ कृपीवलः केवलशालितं छला न्, वपेत्सिकंयोऽखिलशास्यलालसः॥५५॥

अर्थः—(धनी के॰) धनवान पुरुष, (संप्रतिराजवत् के॰) संप्रति रा जानीपेठें (सप्तसुक्तेत्रेषुअपि के॰) सातक्तेत्रने विषे पण (पुण्यतृ ६ये के॰) पुण्यनी तृदिने माटे (धनं के॰) धनने (वपेत् के॰) वावे, (रुपीवजः के॰) खेड करनारो एवो (यः के॰) जे प्राणी, (अखिजशस्यजाजसः के॰) समय धान्यनो लालची होय, (सः के॰) ते (किं के॰) ग्रुं (केवल शालितंडुलान के॰) केवल शालितंडुलनेज वावे हे. ना सर्व धान्यने वावे हे.

आहिं संप्रतिराजानो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. पाडलीपुर नगरे मौर्यवंशने विषे अलंकार रूप चंड्यप्त राजा राज्य करे हे. तेना पुत्र नुं नाम बिंडुसार तेनो पुत्र अशोक तेनो पुत्र कुणाल तेनो पुत्र संप्रति राजा थयो ते जन्म्या पढ़ी दशमे दिवसेंज राज्य पाम्यो ते राजा वासुदेव नीपेते त्रण खंमनो जोका थयो एकदिवस गवाक्समां बेता राजायें रस्तामां जतां त्रार्थसुहस्ति सूरिने जोया. तेना दशैन करतांज संप्रति राजाने जा तिस्मरण उत्पन्न ययुं तेथी तरत आवीने सुरीने वंदन कखुं. राजायें पुरुषुं हे नगवन ! अव्यक्त सामः यिकनुं शुं फल हे ? गुरुये कहाँ के. राज्य प्राप्त याय. पढी गुरुजीये ते संप्रति राजानो पूर्वजव कहेवा मांड्यो. हे राजा! तुं पूर्वनवनेविषे कोइक रंक हतो स्रमारा साधुपासे लाहुनी याच ना करी हती. अमोयें कहां के तुं जो अमारो शिष्य थायतो लांडु आपी यें त्यारें तें मोदकनी इञ्चायी प्रव्रज्या यहण करी. ते पढी ते मोदकादि ञ्जति स्निग्धाहारधं। गृढ विशूचिकायें करी पीडा पामतो वतो पण धर्मनुं अनुमोदन करतो मरण पामीने हमणां तुं संप्रति राजा ययो हो. ए अ व्यक्त सामायिकनुं फल हे एवं गुरुवचन सांनली वली गुरुपासें दीहा ले वानी प्रार्थना करी. त्यारे गुरुयें कह्यं के तारे राज्य संबंधि जोगावली कर्म ज्ञेष रह्यां हे ते सांचली राजायें पोताना नगरनेविषे दान ज्ञाला उ मंप्रावी तथा श्रीजिनप्रासार्दे मंप्तित प्रथ्वी करी एक लाख, जिनविंबी कराव्यां अनार्य देशोमां पण धर्मनी प्रवृत्ति करावी. चतुर्विध श्रीसंघनी न कि करवा मांमी, अंते मरण पामीने खर्गे गयो माटे सातक्वेत्रमां आपना र प्राणी सजतिने पामेने तेमां शंका जाणवी नहीं ॥ ५५॥

> क्तेत्राणि सप्तापि फलंति सर्व, मप्येककं किंक जवत् सुजुष्टं ॥ यत्पुण्यमारार्त्तिकसप्तदीपै, रेकेन तन्मंगलदीपकेन ॥ ५६ ॥ सप्तक्तेत्रदारं ॥

अर्थः-(सप्तापि के॰) सात एवां पण (क्त्राणि के॰) क्त्रो, जे हे ते यथाशक्तियें स्पर्श कखां हतां (फलंति के॰) फलदायी थाय हे (ए कैंकमिष के॰) एकेक एवं पण (हेत्रं के॰) हेत्र, (सुजुष्टं के॰) सारी रीतें सेवन करेलुं (सर्वमिष के॰) सर्व प्रकारना महोटा एवा पण फलनुं आपनार थाय हो. केनी पेहें ? तो के (किन्कजवत् के॰) किन्किना पुत्र दत्त नी पेहें. त्यां दृष्टांत कहे हे (यत् के॰) जे (पुष्यं के॰) पुष्य (आरा र्तिकसप्तदीपैः के॰) आर्तिना सात दीवायें करीने थाय हे (तत् के॰) ते पुष्य (मंगलदीपकेन के॰) एक मंगलदीपें करीने पण थाय हे ॥ ५६॥

श्राहिं किन्छित्र दत्त राजानो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे है. श्री महावीरना निर्वाण दिनथी बे हजार वर्षना प्रांतमां पाटलीपुरमां किन्क राजा थारो. ते पूर्वनवना मित्र देवतायें श्रापेला त्रिशूलें करी नरतना त्रण खंमने साधरो, तेनो पुत्र दन्त नामा थारो, ते श्रीजिनना प्रासादोयें करी पृथ्वी श्रखंमित करावरो, परंतु श्री सर्वज्ञना नांखेला वचनने हसस्य नाषितनी पेठें श्रसंबद्ध जाणरो. हवे ते किन्किना पुत्र दन्तराजें जिनप्रासाद रूप एक हेत्र सेवन सारी रीतें कखुं, तो पण तेथी ते सुखी थयो ॥ ५६ ॥

विंबं महस्लघु च कारितमत्र विद्यु, न्माख्यादिवत् परज्ञवे ऽपि शुजाय जैनम्॥ ध्यातुर्ग्यरुर्लघुरपीप्सितदायिमंत्रः, त्राग्दौःस्थ्यज्ञाविघनविघ्नजिदे न किं स्यात्॥ ५७॥

श्रयः—(श्रत्र के०) श्रा नवने विषे जो (महत् के०) श्रत्युत्रुष्टिण्यी पांचशे धनुष प्रमाण श्रने (लघु के०) न्हानुं श्रंग्रुष्टपर्व समान एवं (जेनं के०) जिननुं (बिंबं के०) विंब (च के०) वली (कारितं के०) करावेलुं होय, तो ते (विद्युन्माव्यादिवत् के०) विद्युन्मालि देवादिकनी पेतें (परनवेऽपि के०) परनवने विषे पण (ग्रुनाय के०) ग्रुनने माटे थाय ते. कद्यं ते के "ज्ञांसपणधणुसय, लहुश्राश्रंग्रुष्ठ पव समा" ए वचन ते हासा प्रहासा देवांगनाना श्रधिकारने विषे स्वर्णकारनो जीव विद्युन्माली देव, तेणें जिनबिंब कराव्युं, ते तेने लानने माटे थयुं. इहां दृष्टांत कहे ते (ग्रुरः के०) ग्रुरं, श्रने (लघुरिष के०) लघु एवो पण (ध्यातुः के०) ध्यान करनारने (इप्सितदायि के०) इज्ञित पदार्थने श्रापनारो एवो (मंत्रः के०) मंत्र जे ते ते (प्राग्दौःस्थ्यनाविधनविद्यनिदे के०) पूर्वजन्मनां करेलां जे इष्कर्म तेणें

करी थयेला एवा जे निविड विघ्नो तेना चेदवाने माटे (किं के०) ग्रं (नस्यात् के०) न थाय? अर्थात् थायज ॥ ५७॥

आहिं वियुन्माली देवतानी कथा कहे हे. चंपानगरीने विषे कुमारनंदी स्वर्णकार रहेतो हतो. ते अत्यंत विपयी हतो, ते एक दिवस हासाप्रहासा व्यंतरीयोवुं रूप जोइने वाणमां बेशी पंचशैल घीपप्रत्यें गयो. त्यां ते बेहु व्यंतरीयोयें कछुं के, आ सात धातुनुं बनेलुं एवुं जे तारुं शरीर तेनाथी अमारे कांइ प्रयोजन नथी. एम कही ते बेहु जणी चेथें तेने मूकी दीधो. परंतु तेना रूपयी मोह पामेलो एवो ते सोनी तेने मित्रें वाखो तो पण अगिनीमरणने साधतो हवो. त्यांथी मरण पामीने हासाप्रहासा व्यंतरी योनो नर्ना थयो, परंतु आनियोगिक देवमां उपन्यो हे माटे आनियोग कर्में करी अत्यंत शोक करतो हतो. त्यारें देवता थयेला एवा तेना पूर्वनवना मित्र देवें तेने कछुं के हे मित्र! हवे शोक कर नही. तुं नवीन जिनबिंब कराव्य, के जेथी ते पुखें करीने तारी सजित थाय, एवा पोताना मित्र देवना वचनें करी ते विद्युन्माली देवतायें चंदननी मूर्ति करावी. तेने लाकडानी पेटीमां मूकी ने समुइमां तरती मूकी. कमें करीने ते पेटी उदायी राजाना हाथमां आवी. ते पुख्यना योगें करी ते विद्युन्माली देवता थोडाज नवोमां सिद्ध पामशे ए

निर्मायाऽईतिबंबमाईतपद्स्थानाश्रिमं धार्मिकः,स्वा त्मानं च परं च निर्मलयित स्तुत्यर्चनावंदनेः॥मंत्रि श्रेणिकस्रिवार्घकसुतं मोहांधकारे स्थितं,दीपः पुष्य ति कस्य कस्य न सुदं श्रेयः श्रियामास्पद्म् ॥५०॥

श्रर्थः—(धार्मिकः के॰) धार्मिक एवो पुरुष ते (श्राईतिबंबं के॰) जिनबिंबने (निर्माय के॰) निर्माण करीने (स्वारमानं के॰) पोताना श्रात्माने (च के॰) वली (परं के॰) परना श्रात्माने (श्राईतपदस्था नामिमं के॰) श्ररिहंत सिद्ध पवयवणेत्यादिने विषे श्रियम स्थान एटले प्रधम स्थानप्रत्यें पमाडे हे. श्रयवा श्राईत्पदवीनुं स्थान जे मोक्त ते मोक्त मार्गने विषे श्रयेसरपणाने पमाडे हे. इहां दृष्टांत कहे हे. (मंत्रिश्रेणिकस्र रिव के॰) श्रेणिकनो पुत्र श्रन्यकुमार मंत्री जे तेज जेम (मोहांधकारेस्थि तं के॰) मोहरूप श्रंधकारने विषे रहेला एवा (श्राईकसुतं के॰) श्राई

कुमारनें (स्तुत्यर्चनावंदनैः के०) जिनिबंबनां स्तुति, अर्चन, अने वंदनें करो (निर्मेलयित के०) निर्मेल करता ह्वा. ते वात घटे हे. (च के०) वली (श्रेयः श्रियामास्पदं के०) कव्याण अने लक्कीना स्थानकरूप एवो (दीपः के०) दीप ते (कस्यकस्य के०) केना केना (मुदं के०) हर्षने (नपुष्यित के०) नथी पोषण करतो ? अर्थात् करेज हे ॥५०॥ द्वार अद्वावीशमुं ॥

श्राहिं श्रनयकुमारनी कथा कहे हे. राजगृही नगरीने विषे श्री श्रे णिक राजानो पुत्र श्रनयकुमार मंत्री, राज्यव्यापारने चलावतो हतो, ते एक दिवसें वीरनगवानने पोतानो पूर्वनव पूठवाथी पोताना पूर्वनव नो मित्र श्रनार्थदेशमां उपन्यो जाणीने श्रत्यंत शोक करवा लाग्यो. पही ते मित्रने बोध करवा माटे पोताना मित्र वणिक पुत्रना हाथथी श्री जिनविंबने श्राईकुमार पासें मोकलतो हवो. ते वखत पूर्वें नही जोये ला एवा जिन विंबने जोइने श्राईकुमार, चिंतववा लाग्यो के श्रा केंद्रं श्रानरण मारा मित्रें मोकल्युं हे? एम समजीने पोताना मस्तकें मूक्युं वली पाढुं त्यांथी लक्ष्ने पोताना बेहु हाथमां बांध्युं, तो पण कोइ हेकाणे ते श्रानरण बंध बेहुं नही? पही सिंहासननी उपर स्थापन कखुं, तेथी श्रानरण श्रे केहाणें महारा जोवामां ते श्राव्युंज नहिं? एम उहापोह क रतां करतां जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी पोतानो पूर्व नव जोयो पही वैराग्य उपज्यो, तेवारें त्रत श्रहण करीने सिद्धिने प्राप्त थयो ॥ ए० ॥ हवे तीर्थद्वार कहे हे.

तीर्थं मुद्दे स्वपरयोरिप कीर्त्तिपाल, नूपालकारित तुरंगमबोधवत्स्यात्॥ ज्यानसारसहकारवनं फल इर्थे, किं वप्तरेव न पुनस्त ज्यासकानाम् ॥ ५ए॥

श्रयः— (स्वपरयोरिष के॰) पोताने तथा परने पण (मुदे के॰) ह षेने माटे (तीर्थ के॰) तीर्थ, ते नरुच्च हेत्र, (कीर्त्तेपालनूपालकारिततुरंगम बोधवत् के॰) कीर्त्तिपालनूपालें करावेला तुरंगम बोधनी पेतें (स्थात् के॰) थाय. त्यां दृष्टांत कहे हे. (उद्यानसारसहकारवनं के॰) प्रधान एवा श्रा स्रना तृह्नुं वन, (वसुरेव के॰) वावनारनेज (फलर्झे के॰) फलनी स मृदिने माटेज थाय हे ? (पुनः के॰) वली (तड्यासकानां के॰) ते स हकार वननी उपासना करनार प्राणीयोने (किं के॰) छुं (न के॰) नथी थातुं? ना थाय हेज. अर्थात् वावनारने तो फल मले,तेमां छुं आश्रर्थ, परंतु तेने उपासन करनार प्राणीने पण ते फलरूप क्रिने आपनार थाय हे ५९

श्रांहिं श्रथबोध तीर्थनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. प्रतिष्ठान पुरमां सुमित्र नामा श्रेष्ठी वसे हे. तेनो परम मित्र जिनदास नामें श्राव क परमजिनधर्मी रहे हे. ते सुमित्र श्रेष्ठी प्रतिदिन कुपात्रने दान आपे हे. तेने जिनदास मित्रें वाखो तो पण दीधाविना रहेतो नथी. एम करतां सु मित्र ञ्चार्त्तथ्यान वर्शे मरण पामीने ञ्चनुक्रमें नृगुकञ्चपुरने विषे राजानो पष्ट तुरंगम थयो. अने जिनदासनो जीव,मरीने स्वर्गमां जइने तिहांथी चवी श्री मुनिसुव्रत जिन तीर्थंकर थयो. ए अवसरमां नृगुकञ्चनो राजा ते पट्टाश्वने प्रातःकालमां अश्वमेध यक्तने माटे कुंममां होमहो. एम जाणीने श्रीमुनिः सुव्रत तीर्थंकर तेने बोध करवा माटे रातमां साठ योजन पृथ्वी उल्लंघन करी प्रातःकालें नृगुकत्वें आवी समवसखा. तेवारें ते राजा तेज घोडा उपर बेसीने स्वामीने वंदन करवा माटे आव्यो. तीर्थकरना दर्शनें करी अश्वनें जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न ययुं. तेथी पोताना पगना माबलायी नूमि खो दीने अश्रुपात करवा लाग्यो. राजानी पासें श्रीमुनिसुव्रत खामीयें पोतानुं तथा ते अथनुं वृत्तांत सर्व कही आप्युं. पत्नी ते अथें पूर्वनवना जातिस्मृति क्वानें करी अनशन व्रत यहण कखुं. ते मरीने अष्टमस्वर्गमां देवता थयो. पढ़ी ते नृगुपुरमां कीर्त्तिपाल नूपालें त्यां अश्वावबोध एवे नामे श्रीज़िन प्रासाद कराव्यो. ते राजा पण तेज नवमां दीक् ा लक्ष्ते मोक्तें गयो. अने त्यां अश्वावबोध नामक तीर्थ थयुं, माटे तीर्थथी परोपकार थाय है॥५ए॥

> वित्तं स्थिरं सुकृतकीर्त्तिकरं च बाहु, बट्यादिविधि धतीर्थिनिवेशिकानाम् ॥ केतृद्धसम्बरतपुण्ययशोर्थ वाद, मष्टापदं कइव नानमदद्य यावत् ॥ ६०॥

अर्थः—(विविधतीर्थनिवेशिकानां के०) अनेक प्रकारना तीर्थमां धनने निवेश करनार पुरुपोनुं, (वित्तं के०) इव्य, ते (सुरुतकीर्त्तिकरं के०) सुरुतने अने कीर्त्तिने करनारुं थाय हे. (च के०) तथा (स्थिरं के०) ते इव्य स्थिर याय है. एम जाण हुं. कोनी पेहें ? तो के (बाहुब व्यादिवत् के) बाहुब व्यादिकनी पेहें. बाहुब जीयें पोताना इव्ययी जेम श्रीक्षन पाइकारूप ती थें,तक्षशिजाने विषे स्थापन कखुं. ते अद्यापि पर्यंत 'हक्क' एवे नामें उजलाय है. आहिं (इव के) इव शब्द जे हे ते अनंकारार्थ है. (केतृ व्यस्त प्रत्य यशोर्थवादं के) केतुना मिपें करी उद्यसित एवं नरत राजानुं पुण्य तथा यश तेनी प्रशंसाने कहेवा वानुं एवं (अष्टापदं के) अष्टापद तीर्थ, तेने (कः के) कयो पुरुष, (अद्ययावत् के) अद्यापि पर्यंत (नअनमत् के) न नमतो हवो ? अर्थात् सर्व ते तीर्थने नमेज हे ॥ ६०॥

श्रांति प्रथम बाहुबलीनो हष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. तक्क्षिला पुरीने विषे बाहुबली राजा राज्य करे हे. एक दिवस श्रीक्षवनदेवजी हसस्या वस्यायें विचरता थका तक्क्षीला नंगरीना उद्यानमां पधाक्षा. ते श्राराममां रहेनारे श्रावी बाहुबलीने तेनी वधामणी श्रापी. बाहुबली राजायें संतुष्ट थक्ने वधामणीयाने पोताना श्रंगनो श्रंगार सर्व श्राप्यो. पही राजायें वि चाखुं जे हमणां सांज पडवा श्रावी माटें प्रातःकालमां महोटा श्रामंबरें स्वामीने वांदवा जाइश. पही ज्यारें रात्रि गइ, श्रने सूर्योदय थयो त्यारें जेवामां बाहुबली राजा चतुरंगिणी सेना सहित श्रीक्षपन देवजीने वांदवा श्राव्यो, तेवामां श्रीक्षपनदेवजी तो,श्रन्यस्थलमां विहार करी गया. बाहुबली यें स्वामीने न देखवाथी माहाक्षेश करवा मांम्यो. पही जिहां स्वामी रात्रि रह्या हता ते दिशानी सन्मुख थक्ने परिवार सहित राजायें नमस्कार कह्यो. श्रने ज्यां स्वामी पधास्ता हता, त्यां रह्ममय बे पाइकायें युक्त धर्मचक्रनुं नि मीण कह्युं. त्यां हाल म्लेश लोकोनुं हक्क एवा नामनुं तीर्थ थयुं हे.

हवे बीजी अष्टापद तीर्थनी उत्पत्तिनी कथा कहे हो. अयोध्या नगरीने विषे श्री क्षनदेव स्वामी वीश लाख पूर्व कुमरपणामां तथा त्रेशव लाख पूर्व राज्य जोगवीने सर्व मली त्र्याशी लाख पूर्व राह्मथाश्रममां रही जरतने राज्य आपी पोतें दीक् लीधी. हजार वर्ष दीक् पालीने केवलकान पामीने श्रीअष्टापद गिरिने विषे मोक्तने प्राप्त थया. पही स्वामीना निर्वाणना स्था नकनी उपर जरत राजायें वे गाउ पहोलो अने चार गाउ लांबो अने त्रण गाउ उंचो चार दरवाजायें सहित सिंहनिषद्या एवा नामवालो नंदीश्वरही पादि शाश्वत प्रासादने अनुसरतो सर्व तीर्थकरना पोतपोताना शरीरनां

मान, अने शरीरना वर्णें करी सरखी एवी चोवीशे जिनप्रतिमार्चयें करी अ लंकत एवो प्रासाद बनाव्यो. ॥ ६० ॥ इति चैत्यद्वार.

> क्वानं जगत्रयहितं पुनरप्यधीते, क्वोप्यार्यरिक्तत इवेतरद्यास्त्रपाठेः॥ ये स्वर्णधीकनककाचकृताद्ररा स्ते, हेमैव सत्यमधिगम्य किम्र त्यजंति॥ ६१॥

अर्थः—(क्रोऽपि के०) विद्वान् एवो जन पण (जगचयहितं के०) त्रण जगतना हितने करनार एवा (क्रानं के०) क्रानने (पुनरिष के०) वली पण (अधीते के०) नणे हे. केनी पेहें ? तो के (आर्यरिक्तिइव के०) श्रीआर्यरिक्तिजीनी पेहें ? (इतर शास्त्रपाहैः के०) अन्य जैनशास्त्रना पाठ करवा एटले जेम आर्यरिक्त ब्राह्मण चहदविद्यानो पारगामी हतो तथापि पोतानी माताना कहेवाथी तथा तेनी प्रेरणाथी चोंद पूर्व शास्त्र नणवा गयो. त्यां दृष्टांत कहे हे. के (ये के०) जेड (स्वर्णधी के०) सो नानी बुिद्यं करी (कनककाचकतादराः के०) सोना समान काचनेविषे कक्षो हे आदर जेणे एवा हे, (ते के०) ते प्रस्पो (सत्यमेव के०) सत्य एवंज (हेम के०) सुवर्ण तेने (अधिगम्य के०) प्राप्त थक्ने (किमु के०) छं (त्यजंति के०) ते खरा सुवर्णनो त्याग करे हे ? ना त्याग करता नथी. अर्थात् जेणें अजाणपणे पीला काचना कटकाने सुवर्ण मानी लीधुं हतुं ते पुरुषने जेवारें खरा सुवर्णनी प्राप्ति थाय तेवारें ते खरा सुवर्णनो त्याग करे ? ना ते नहींज करे ॥ ६१ ॥

श्राहीं श्रार्यरिह्त ब्राह्मणनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. माहे थरी नगरीने विषे सोमदेव ब्राह्मणनी फल्युमित्रा नामें स्त्री हती, तेने श्रायर हित नामापुत्र हतो,ते श्रव्यंत विद्या जणवामां रिसक होवाथी परदेशें जइ च विद्या शीखीने पोताने घेर श्राच्यो, मातापिताने प्रणाम कखो. ते श्रा थरिह्तने जणेलो सांजली सहु लोक खुशी थयां. परंतु पोतानी मातानी श्रप्रसन्नता जोइने श्रार्थरिह्ततें पूर्व्यं के हे माताजी! सहु मारी विद्याधी खुशी थयां, ने तमे केम नाराजी थया हो? त्यारें माता बोली के हे पुत्र! जो तुं चोद पूर्व जणीने श्राच्यो हत,तो मुने हर्ष थात, त्यारें तेणे पूर्व्यं के ते चौद पूर्व कोण जणावे हे? मातायें कह्यं के तारो मामो पुष्पित्राचार्य

नणावे हो. ते सांनली तरत ते चौदे पूर्व नणवा माटे बाहेर निकत्यो रस्ता मां प्रथम साडानव इक्दुदंम नेट थयेला जोवामां आव्या, पही ढहर श्राव कना प्रयोगणी वंदन विधि शीलीने आचार्यनी सान्निध्यें जइ कह्युं के महा राज! चहद पूर्व मने नणावो. त्यारें सूरियें कह्युं के जे दीक्दित होय तेना थीज ते पूर्वो नणाय हो. गृहस्थयी नणाय नहिं. ते सांनली दीक्दा लेइ साडानव पूर्व पर्यंत नणीने गुरुने कह्युं के हे महाराज! हवे केटलुं नणवुं हे? त्यारे सूरियें कह्युं के हजीतो हुं समुइमांथी एक बिंह नणेलो हो. समुइ तो अखंम हे आ वात सांनलीने तरत नम्रोद्यम थइ गयो. त्यारें सूरियें कह्युं के इक्दुदंमना योगें करी अमोयें जाण्युं जे हुं एटलांज पूर्व नणीश. त दनंतर तेणें माता पिताने पण दीक्दा लेबरावी ॥ ६१ ॥

पठ पठित यतस्वान्नादिना लेखय स्वैः, स्मरं वितर च साधौ ज्ञानमेतिक तत्त्वं॥श्रुतलवमिष पुत्रे पर्य श्राय्यंन वोऽदा, ज्ञगित हि न सुधायाः पानतः पेयमन्यत्॥६२॥

अर्थः—हं साधो! तुं पोतें (ज्ञानं के॰) ज्ञानने (पठ के॰) जण.
तथा (पठित के॰) जणेला जनने विषे (अन्नादिना के॰) अन्नादिकथी (यतस्व के॰) यत्न कर (स्वैः के॰) पोताना (इट्यैः के॰) इट्यें करी (लेखय के॰) ज्ञानने लखाव. (स्मर के॰) ज्ञाननुं स्मरण कर. अने (सा धों के॰) सुजनने विषे (च के॰) वली (वितर के॰) जणाववा माटे यत्न कर. आ संसारने विषे (एतत् के॰) ए (ज्ञानं के॰) ज्ञान (हि के॰) निश्चें (तत्त्वं के॰) तत्त्व छे. (पश्य के॰) जुवो. के (पुत्रे के॰) पुत्रने विषे (श्वयं ज्वः के॰) श्रीशय्यं ज्वसामी (श्वतलवमिष के॰) श्वतनो लवज (अदात् के॰) आपता हवा. (हि के॰) ते वात घटे छे जुवो के (जगित के॰) जगतने विषे (सुधायाः के॰) अमृतना (पानतः के॰) पानथकी (अन्यत् के॰) बीजुं कांइ (पेयं के॰) पान करवा लायक (न के॰) नथी ॥ ६ १॥

हवे आंहिं पण शय्यंज्ञवनो हष्टांत वे पूर्वें तेनी कथा जो के कहेली वे तो पण स्थानशून्यना हेतु माटे कांइक शय्यंज्ञवस्वामीनी कथा कहे वे. चडद पूर्वमांथी दशवैकालिक नामा यंथ काढीने शय्यंज्ञव गणधरें पोताना पुत्र मनकने जणाव्यो मनकना मरण पढी शय्यंज्ञव गणधर रडवा लाग्या, त्यारें यशोनइ मुनियें पूर्व्युं के हे नगवन ! आ ग्रं कहेवाय ? गुरुयें कह्यं के संसारनो स्नेह तो एवोज हे. आ हत्तांत सांजलीने साधु सर्व खेद पाम्या.

लोकेच्योन्पतिस्ततोपि हि वरश्चक्रीततोवासवः, सर्वे च्योपि जिनेश्वरः समधिकोविश्वत्रयीनायकः ॥ सोऽ पि ज्ञानमहोद्धिं प्रतिदिनं संघं नमस्यत्यहो, वैरस्वा मिवज्जतिं नयति तं यः स प्रश्रास्यः क्तितो ॥ ६३ ॥

श्रर्थः— (लोकेन्यः के०) सर्वलोकोथी (नृपितः के०) राजा (वरः के०) श्रेष्ठ जाएवो. वली (ततोपि के०) ते थकी पण (हि के०) निश्चें (चक्री के०) चक्रवर्त्ती श्रेष्ठ जाएवो. श्रमे (ततः के०) ते चक्रीयकी (वा सवः के०) इंड्'श्रेष्ठ जाएवो. तथा ते पूर्वोक्त (सर्वेन्योपि के०) सर्वथकी पण (विश्वत्रयी के०) त्रण जगतना (नायकः के०) नायक, एवा (जिने श्वरः के०) जिनेश्वर श्रीतीर्धकर देव ते (समधिकः के०) रूडे प्रकारें श्रधिक जाएवा. (सोपि के०) ते जिनवर पण (ज्ञानमहोद्धिं के०) ज्ञानरूप समुड् वे जेमां एवा (संघं के०) चतुर्विध श्रीसंघने (श्रहो के०) श्रा श्वर्ये (प्रतिदिनं के०) रात्रिदिवस (नमस्यित के०) नमस्कार करे वे. माटे (तं के०) ते श्रीसंघने (यः के०) जे पुष्यवान मनुष्य, (वेरस्वामि वत् के०) वेरस्वामीनी पेवें (ज्ञतिं के०) उन्नति प्रतस्यः के०) प्रशं सा करवा लायक जाएवो. जेम वज्जस्वामी माहेश्वरी नगरीनेविषे बेष्ट राजानी श्रागल श्रीसंघनी उन्नति करता ह्वा. तेम संघनी उन्नति बीजा पण पुष्यवान प्राणीयें करवी ॥ ६३ ॥

आंहि वज्रस्वामीनी कथा पूर्वें कही है तो पण यिंकिचित् कहे है. प्र नावकचक्रवर्त्ति श्रीवज्रस्वामीनी पेते शासनरूप गगनें उद्योत करवो. ए कदा बार वरसनो इष्काल पड्यो, ते वखत श्रीवज्रस्वामी साधु तथा श्राव कना संघने पट्टमां बेसारीने गगन मार्गें करी माहेश्वरी नगरी प्रत्यें पहों चाडता हवा. त्यां महासुनिक्द वर्ते हे. एवा समयमां पर्यूषण पर्व आव्युं, ते समयें श्रीसंघ आव दिवस नवनवा महोत्सव करे हे. त्यां ईष्यीं करनारा बौद्यों राजानी आक्वा लक्ष्ते जिनन्मगवानने पुष्प चडाववां निषेध करा व्यां, ते जाणीने श्रीवज्रस्वामी गगन मार्गेथी हुताशन देवने घरे गया. श्री वज्रस्वामीना श्रादेशें करी ते देव,मंदारना पुष्पोयें नरेला लक्क करंमिया मा हेश्वरी नगरीने विषे लाव्यो, ते प्रनाव जोइने बौद्धो हतप्रनाव घइ गया. श्रुने ते नगरीनो राजा बौद्ध हतो ते पण ते दिवसें जैनधर्मी थयो ॥ ६३॥

कोप्यन्योमहिमास्त्यहो जगवतः संघस्य यस्य स्फुर, त्कायोत्सर्गबलेन शासनसुरी सीमंधरस्वामिनं ॥ नीत्वा तत्कृतदोपशुष्टिमुदितां यक्तार्थिकां चानयत्, किंचैतन्ननुतत्त्रजावविज्ञवेस्तीर्थंकरत्वं जवेत् ॥ ६४॥

अर्थः—(नगवतः के०) समर्थ एवा (संघस्य के०) चतुर्विध संघने (कोपि के०) कोइ पण अनिर्वचनीय एवो (अन्य के०) बीजो (मिह्र मा के०) मिह्मा (अहो के०) आश्चर्ये (अित्त के०) छे. केम के (य स्य के०) जे श्रीसंघना (स्फुरत्कायोत्सर्गवंकेन के०) प्रकाश घतुं एवं जे कायोत्सर्ग तेना बक्नें करीने (तत्कतदोष ग्रुद्धिमुद्दितां के०) पोताना नाइने पर्यूषण पर्वमां तप करवाथी मरण प्राप्त घवाना दोषोनी ग्रुद्धिने इन्जती एवी (यक्तार्थिकां के०) यक्ता साध्वीनें (शासनसुरी के०) शासननी अधिष्टायि का देवी (सीमंधरस्वामिनं के०) ते श्रीसीमंधर स्वामीनी पासें (नीत्वा के०) लइ जइने बे चूलिकानुं दान कराव्युं. माटे (किंच के०) ग्रुं (एतत् के०) आ (तनुप्रनाविन्नवेः के०) श्रीसंघना तनु एटके योडा प्रनावना विन्न योयें करी (तीर्थकरत्वं के०) तिर्थकरपणुं (नवेत् के०) होय, एवो श्री संघनो महिमा जाणवो ॥ ६४ ॥

आंहिं यक्तासाध्वीनी कथा कहे हे. पाडलीपुरने विषे शकमाल मंत्रीनी दीकरी यक्ता हती तथा ते शकमालनो पुत्र श्रीयक नामा हतो, तेणें श्री नंदराजानो कारचार घणा दिवस पर्यंत कथो. पही वैराग्य पामीने श्रीय कें दीक्ता यहण करी. परंतु ते श्रीयक तप करवाने समर्थ हतो नही ते थी किया अनुष्ठान करतो हतो, एम करतां पर्यूषण पर्व आववाधी ते श्री यक मंत्रीनी बेन यक्तार्यों आयह करी तेने उपवास कराव्यो तेथी ते सां जे मरण पाम्यो. त्यारे तेनी बेने कह्यं जे मने क्षिहत्या लागी. पही श्रीसंघें तथा गुरुयें घणुं कह्यं के एमां तमने पाप लागे नहि तो पण ते य

क्यार्थिकाने संतोष थयो निहं त्यारे श्रीसंघें कायोत्सर्ग कखुं ते करवाथी शासन देवता खावी तेणें ते यक्वार्थिका साध्वीने उपाडीने श्रीसीमंधरस्वा मीपासें पोहोंचाडी. त्यां नगवानें कह्यं के तुने कांइ पण क्रषिहत्या लागी नथी. परंतु उलदुं पुण्य थयुं. ते वखतें तेने खागतानिक्वानने माटे बे चू लिका खापी पढ़ी ते शासन देवतायें पाढ़ी यक्वार्थिकाने स्वस्थाने पोहोंचा डी. श्रीसंघें कायोत्सर्ग पाखो. सर्वने खानंद थयो पढ़ी ते बे चूलिकानुं द शवैकालिक स्त्रनी खंतें खद्यापि स्थापन कखुं हे. एम श्रीसंघना महिमा थी ते सर्व कार्य बन्युं. माटे ए चतुर्विध श्रीसंघनी ते महत्ता जाणवी॥६४॥

नवित हि नवपारः शुरुया साधुनक्तया, धनग्रह्पतिजी वानंदवैद्येशावत् प्राक्॥ प्रथुरिप हि पयोधिस्तीर्यते चारु तर्या, तिमिरनरनृतोध्वा दीप्तयादीपयष्ठ्या ॥ ६५ ॥

अर्थः—(ग्रुड्या के०) ग्रुड्ड एवी (साधुनत्या के०) साधुनी निक्यें करी (प्राक् के०) पूर्व नवनेविषे (धनग्रह्पितः के०) धनसार्थवाह्नों जीव तथा (जीवानंद्वेद्येशवत् के०) आदिनाथनों जीव जे जीवानंद्वेद्येशवत् के०) आदिनाथनों जीव जे जीवानंद्वेद्येशवत् ते०) सारानों पार (नवित के०) थाय छे. अर्थात् ते जीवानंदसाधुनी निक्यें करी संसारनों पार पाम्या. त्यां दृष्टांत बे कहे छे. (पृष्ठ्रिप के०) मोहोटों एवो पण (हि के०) निश्चें (पयोधिः के०) समुड्, (चारुतर्या के०) मनोहर एवी नौकायें करी (तीर्यतं के०) त राय छे. तथा (दीप्तया के०) प्रकाशित एवी (दीपयष्ट्या के०) दीपपंक्ति यें करीने (तिमिरनरनृतोध्वा के०) अंधकारें नरेलों एवो रस्तो ग्रुड् था य छे तेम साधुनिक्यी सर्व पदार्थ लन्य थाय छे॥ ६५॥

आंहिं जीवानंद वेद्यराजनी कथा कहे हे. महाविदेह केत्रमां पुंमरिकि ए। पुरीने विषे जीवानंद नामा वेद्य वसे हे. तेने एक राजानो पुत्र, एक मंत्रीनो पुत्र,एक श्रेष्ठीनो पुत्र,एक सार्थवाहनो पुत्र,ए चार मित्र हता,एक दि वस जीवानंदने घेर चारे मित्र आवीने बेहा हता तेवामां एक महा क्रमी युक्त कुष्ट रोगना चपड्वें करी इःखी एवो साधु वहोरवा माटे त्यां आब्यो, ते साधुने जोड्ने ते सर्वे कहेवा लाग्या के हे वैद्यराज! आ बिचारा सा धुने साजो करो त्यारे जीवानंद वैद्यें कह्युं के मारे त्यां लक्क्षणक तेल हे प

रंतु तेथी ग्रं थाय ? बीजं रत्नकंबल तथा चंदन जोइयें ते तमो लावो तो ए नो जपाय थाय. आ वात सांनती ते साधुने त्यां बेसाडी चंदनकाएनी इकान मांमनार वाणीआनी इकानपर गया. लक् इच्य ते विणक पासें मूकी ने कह्यं के तमो रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन आपो. तेवारें ते वाणीयें गरीबनो पण पुण्यनो आदर जोइने धर्मथीज रत्नकंबल अने चंदन ए बेंडु वानां म फत आप्यां अने पोतें पण वेराग्य पामी प्रव्रज्या यहण करीने तेज नवने विषे सिद्धिने प्राप्त थयो. पठी ते पांचे जण एकत्र थइने ते मुनिने रोग म टाडवा माटे वनमां लेइ गया. प्रथम लक्क्पाक तेलें करी ते साधुने अन्यं ग कखुं. पठी रत्नकंबलें करी एनुं अंग ढांक्युं तेवारें कमी हता, ते सर्व बा हेर निकली गया. पठी ते साधुना अंगने चंदनें करी विलेपन कखुं, एम त्र .ण वार करवाथी ते साधुना शरीरथी कुष्ट मूलमांथी जतो रह्यो. अने ते मुनि नीरोगी देहवालो थयो ते जीवानंदनो जीव ते पुण्यना प्रनावें करी चा र जब करीने आदीश्वर जगवान थइ श्रीतीर्थंकर पदने प्राप्त थयो ॥ ६५ ॥

दानेः प्रामुकजकपानवसनावासोषधानां मुने, वैयाद्यकतेश्चविरमयकरा जोगा बलं चाप्यते॥ श्रीमहाहुसुबाहुवत्परजवे सा कामगव्यप्यहो, स चारीजलदानकोमल करस्पर्शेरलं तुष्यति॥६६॥

अर्थः—(प्रामुकत्तक के॰) प्रामुकएवो नात, तथा (पान के॰) जल, (चसन के॰) वस्न, (आवास के॰) उपाश्रय, तथा (औषधानां के॰) श्रोंपधो तेनो (मुनः के॰) मुनिने (दानैः के॰) दानदेवे करी (च के॰) वली (वैच्यावृत्यकतेः के॰) वैयावच करवायकी (परनवे के॰) परनवने विषे (श्रीमद्दादुमुबादुवत् के॰) शोनायमान एवा बादु अने सुबादु, पांचशे साधुने नक पान आवास विश्रामण करवायकी बेदु श्रीक्रवनदेव जीना पुत्र थया तेनी पेवें (विस्मयकराः के॰) विस्मयने करनारा एवा (नोगाः के॰) नोगो, (च के॰) वली (बलं के॰) बल, तेने (आप्यते के॰) प्राप्त थाय हे. अर्थात् साधुनिक एवं फल आपे हे पण (अहो के॰) आश्रयं (सा के॰) ते प्रसिद्ध एवी (कामगवी अपि के॰) काम धेनु पण (सचारीजलदानकोमलकरस्पर्शैः के॰) सारो चारो, जलपान,

करस्पर्श एटले हाथेथी खजवालवुं तेणें करी (अलं तुष्यित के॰) परिपूर्ण संतोष पामे हे अने फलदायक थाय हे अर्थात् गायने जेम सारो चारो आपवायी तथा जलदान एटले पाणी पीवराववाथी तथा करस्पर्शेकरी एटले हाथफेरववे करी इग्ध वगेरेनी देनारी थाय हे तेम साधुसेवा रूप गाय पण वैयाहत्यादि सारो चारो आपवाथी तथा फासु जलतुं दान देवाथी तथा पगचंपी वगेरे करस्पर्श करवाथी सारा फलनी देवावाली थायहे माटे सा धुसेवा अवश्य करवी ॥ ६६ ॥

श्रहिं बाहुबलीनी कथा कहे हे. माहाविदेह द्वेत्रने विषे पुंमरिगीणी नामनी नगरीयें वज्रसेन राजा राज्य करे हे. तेने पांच पुत्र हता तेनां ना म, एक वज्रनान, बीजो सुबाहु, त्रीजो बाहु, चोथो पीठ, पांचमो महा पीठ,ए पांच पुत्र 'हता ते पांचपुत्रोये पंण संसार सुख जोगवीने तीर्थंकर नी पासें दीका यहण करी. तेमां प्रथम पुत्र चौदपूर्व शास्त्र जणी श्राचार्य थ यो. अने बीजा चारेजण हता ते अग्यार श्रंगधारक थया. तेमां बाहुनामा सुनि नित्य पांचशे साधुने जात पाणी जावी आपता हता. अने सुबाहुना मा सुनि पांचशे साधुनुं वैयावच करे तथा पीठ अने महापीठ नामा बेहु सुनि ते बाहु अने सुबाहु ए बेहुसुनिनो महिमा सांज्ञीने तेनी ईप्यों करता ह वा, हवे वज्जनाज्ञों जीव तो श्रीयुगादि देवश्रादिनाथ जगवान थया. अने बीजा चार तो श्रवुक्तमें जरत अने बाहुबली तथा ब्राह्मी अने सुंदरीपणे आवी उत्पन्न थया. तेमां बाहुना जीवने जरतना जवमां परिपूर्ण जोगफल प्राप्त थयुं, श्रम तेर्ड साधुसेवा थकी उत्तमताने पाम्या ॥ ६६ ॥

अर्थः—(यत् के॰) जे कारण माटे (पुंत्रनवः के॰) पुरुषयकी हे जत्पत्ति जेनी एवो (धर्मः के॰) धर्म, (एतत् के॰) ए वात, (इदमेव के॰) एमज हे. कहेन्तुं हे के "धम्मोपुरिसप्पनवो, पुरिसवरदेसिन्न पुरिसजिष्ठो " इत्यादि

सर्व वेकाणे कहेनुं हे. (पुनः के०) परंतु तेमां (आर्यापि के०) आर्या एटले तपोधना स्त्री ते पण (पूज्या के०) पूजवा लायक होय हे. कारण के (यस्याः के०) जे आर्यानी (धर्मसमुज्ञवा के०) धर्मयकी उत्पन्न यइ एवी (उन्नतिः के०) उन्नति एटले गुरुता ते (गुरुजनेषु अपि के०) गुरुजननेविषे पण मुक्ति ने माटे थाय हे. जुवो (यत् के०) जे कारण माटे (पुरा के०) पूर्वें (किल के०) निश्चें (सौनंदेयनूपे के०) सुनंदा पुत्र बाहुबित राजानेविपे तातश्री क् पनदेवजीयें प्रेरेजी एवी (ब्राह्मी कें) ब्राह्मी बेहेन ते 'हेनाइ हाथी थकी हे वो उतस्य' एवं वाक्य कहेती बती (मुक्तये के०) मुक्तिने माटे (अनूत् के०) थाती हवी. तथा (अन्निकासुतगुरों के०) अन्निकापुत्र गणधरनेविषे (पुष्प वतीसुता के०) पुष्पवतीनी पुत्री पुष्पचूला साध्वी मुक्तिने माटे यह तथा (श्रीचंदन(यां के॰) श्रीचंदनबाला साध्वीनेविषे (मृग्यती के॰) मृगा वती साध्वी (किं के०) छं (न के०) मुक्तिने माटे न यइ? ना यइज है. अर्थात् साध्वीच पण गुरुजननी मुक्तिने माटे साधनजूत थाय हे ॥ ६७॥ या श्लोकमां ब्राह्मी तथा पुष्पचूला यने मृगावती ए त्रणेनो दृष्टां त होवाथी त्रऐनी कथामां प्रथम ब्राह्मी साध्वीनी कथा कहे हे. श्रीन रतचक्री पट् खंम प्रथ्वी जीत्या, पण न्हाना नाइ बाहुबलीयें आङ्का न मानी तेथी जरतचक्री पोताना जाइने जीतवानी इञ्चार्थी सैन्यसहित बाहु बलीनी तक्कशिलानगरीयें गयो. त्यां ते बेहु नाइने मोहोटुं युद्ध थयुं. अनेक मनुष्यनो संदार थयो. पढी इंडें आवी युद्ध बंध करावीने बाहुबलीनी सा में वाग्युद, मुष्टियुद, बाहुयुद, दृष्टियुद, अने दंमयुद ए पांच युद कर वां वेराच्यां, सर्वे युद्धमां बाहुबजीयें जरतनो पराजय कखो. तेवारें जरत राजायें चक्र मुक्युं ते बाहुबर्जी कुटुंबनो होवाथी तेने जाग्युं नही त्यारें बा द्भवली मुप्टि जपाडीने नरतनी सन्मुख दोड्यो ते वली पोतेज विवेकें करी ने ते मुष्टि नाइने मारी नहीं. परंतु उत्तम पुरुषनी मुष्टि पाठी फरे नहीं। माटे वैराग्य पामी ते मुठीयें करी पोताना मस्तकना केशनो लोच करी पोतानी मेलें प्रव्रज्या बहुण करीने त्यांज कायोत्सर्ग करी रह्या. त्यां शी तोष्ण कप्टने सहन करता हता, ते वात जाणीने श्रीक्रपनदेवजीयें म हासती एवी बाहुबलीनी जिंगनी ब्राह्मी हती तेने मोकली. ते बाहुबली नी पासें आवीने कहेवा जागी के हे नाई! गजधी हेवो उत्तख. ते बाहुब

लीयें विचार करीने जोयुं तो जाएयुं जे आंहिं गज तो नथी पण तेनो कहें वानो अनिप्राय एवो हे के मानरूप गज थकी उतस्य एम समजीने पही माननो त्याग कस्यो तेवारें तुरत तेने केवल ज्ञान वर्ष प्रांतमां उत्पन्न थयुं.

हवे पुष्पचूलानी कथा कहे हो. पुष्पपुरने विषे पुष्पकेतुनामा राजा तेनी पुष्पवती नामनी राणी हती तेना पुत्रनुं नाम पुष्पचूज अने पुत्री नुं नाम पुष्पचूजा पाड्युं, ते बेहुनाइ बेन युवावस्थाने प्राप्त थयां परस्पर स्नेह होवाथी बेहुनुं समान रूप जोइने राजायें विचार कखो ज़े बेहु जणा नो वियोग करीयें ते सारुं नही ? माटे नाइ निगनी बेहुनो परस्पर विवा ह कहा ते अधर्म तेनी माता पुष्पवती जोइ शकी नहीं तेथी दीक् लइ मरण पामीने देवता थइ. ते देवता ते बेहु जणने स्वप्नामां आवी अधर्मे करी यतां नरकनां इःखो देखाइवा लागी. ते इःखयकी बीहीती एवी पुष्प चूलायें वैराग्य पामीने अन्निकापुत्र आचार्यनी पासें जइने दीका यहण करी. ते आचार्य इीएजंघाबलं होवाथी साध्वी आहार लावी आपती सा ध्वीने केवलकान उपन्युं एकदिवस वर्षाकालें गुरुने माटे अन्न लावी त्यारें गुरुयें कहां के हे सित ! अचित्त प्रदेशिवपे अन्न जावता विराधना कां करे बे ? त्यारें साध्वीयें कह्यं एमां विराधना थइ नथी त्यारे गुरुयें कह्यं के तें केम जाएं के या यचित्त स्थल यने या सचित्त स्थल कहेवाय ? त्यारे पुष्पवती कहे है के नगवन्! तमारा प्रसादथकी में जाएयुं. ते सांनली केवलकान उपनुं जाए। मिथ्याइष्कृत दश्ने गुरुयें पूत्रगुं के मने केवल ज्ञान क्यारे उत्पन्न थशे. त्यारें तेएों कह्युं जे गंगा उतरतां तमने केवल ज्ञान उत्पन्न याज्ञो ते पढ़ी नावें करी गंगाने जतरता एवा सूरिने पूर्वजवना वेरी देवता यें त्रिशू हों करीने माखा, त्यां गुरुने ध्यान ध्यावतां ऋपकाय जीवोनी उ पर दया जत्पन्न थई ते दयायें करी केवल ज्ञान जत्पन्न थयुं. देवोयें केव लक्षाननो महोत्सव कस्रो त्यां प्रयागनामा तीर्थ पयुं ते लोकमां खद्या पि प्रसिद्ध हे ॥ ए पुष्पचूलानो संबंध ययो.

हवे मृगावतीनी कथा कहे हे. कोशांबी नगरीनेविषे शतानीक नामा रा जा राज्य करे हे. तेनी पट्टराणी चेटक राजानी दीकरी मृगावती नामा हती. तेणें ज्यारें पोतानो खामी मरण पाम्यो तेवारें पोताना पुत्रने रा ज्य उपर स्थापीने पोतें वैराग्य पामीने श्रीवोरखामो पासें दीका ग्रहण करी. एकदा ते बीजी साध्वीयोनी साथें श्रीवीर जगवानने वांदवाने समव सरणमां श्रावी. ते दिवसें श्रीवीर जगवानने वांदवा माटे सूर्य चंड़ पण वि मानसहित श्रावेला हता. तिहां बीजी साध्वीचे तो दिवस श्रस्त थया पहेलां पोताने चपाश्रयें श्रावीयो श्रने मृगावती तो चंड्सूर्य खस्थाने गयानंतर श्रंथकारनो प्रसार थयो तेवारें चपाश्रयें श्रावी. त्यां चंदनवाला सुती हती ते तेने कहेवा लागी. के हे जड़े! तुं महोटा कुलमां चत्पन्न थयेली हो. तने रात्रिमां फरवुं योग्य नथी. एम शिक्षा करतां करतां चंदनवालाने नि इा श्रावी, श्रने मृगावती तेना चरणमां मस्तक मूकीने कहेवा लागी के हे जड़े! क्मा करो. एम क्मा मागतां मागतां ते मृगावतीने केवल ज्ञान चत्पन्न थयुं. पही चंदनवालाने पण मृगावतीने पगें पडतां क्मा मागतां केवलज्ञान चत्पन्न थयुं ॥ ६९॥

किं पूज्या श्रमणी न सा श्रुतरसा ड्वोंधहन्मोहहन्, मात्रासक्तकुवेरदत्तद्यिता साध्वीवजातावधिः॥धन्या एव चिरंतना व्रतधना छप्याधुनिक्यः शुजा, याकि न्याहरिज्ञ वादि सुकुटः सोऽबोधिवाङ्गात्रतः॥ ६०॥

अर्थः—(किं के॰) ग्रं (सा के॰) ते (श्रुतरसा के॰) सांचयो ने शास्त्ररस जेणे एवी (श्रमणी के॰) साध्वी (न पूज्या के॰) पूजवा ला यक नथी. ना नेज. कारण के जुवो (इबोंधहत् के॰) माना बोधने हरण करनार, तथा (मोहहत् के॰) मोहने हरण करनार, एवी (मात्रासक कुवेरदत्तदियता के॰) मातानेविषे आसक एवो जे कुवेरदत्त तेनी दिय ता एवी जे कुवेरदत्ता ते (जाताविधः के॰) उत्पन्न थयुं ने अविध्हा न जेने एवी (साध्वी इव के॰) साध्वी जे ने तेनी पेनें केम पूजवा योग्य थाय नहीं अर्थात् थायज. वली (आधुनिक्यः के॰) आधुनिक एवी अने (ग्रुजाः के॰) पित्र एवी (चिरंतनाः के॰) घणा कालनी (व्रत धनाः के॰) व्रतरूप ने धन जेने एवी साध्वी (धन्याः एव के॰) वन्यज जा णवी. जुवो (याकिन्या के॰) याकिनी नामा साध्वीयें (सः के॰) ते (ह रिनइवादिमुकुटः के॰) वादकरनाराउनेविषे मुकुटसमान एवा जे श्रीहरि चइस्रुरि, तेने (वाब्यात्रतः के॰) एक गायामात्रेकरीने (बोधितः के॰)

वोध पमाड्यो. माटे साध्वीथी पण मोहोटा पुरुषोने ज्ञान प्राप्त थाय हे. छा श्लोकमां कुबेरदत्तानो तथा याकिनी साध्वीनो द्रष्टांत होवाथी प्रथम कुवेरदत्तानी कथा कहे हो. मधुरा नगरीनेविषे वसंततिलका नामा एक वारांगना रहे हे. एकदिवस ते वारांगनाने वे बालक उत्पन्न थयां के तुरत पोतानी नामांकित मुिका सहवर्त्तमान पेटीमां नाखी पेटीने यमुना मां तरती मूकी, तेमां बोकरो तथा बोकरी इती पढ़ी तरती तरती ते पेटी शोर्यपुरमां गइ. ते शोर्यपुरना वे वेपारी हता तेने ते पेटी मली तेमांची ए क पुत्र, अने एक पुत्री अतिस्वरूपवान मत्यां, तेवारें बेहुजणने संतान न होवाची एकें कन्या लीधी अने एकजरो पुत्र लीधो ते बेहु वेपारीयें ते बेहु नाइवेननो विवाह कस्रो पत्नी एंक दिक्स कुबेरदत्तायें पोतानी तथा पोता ना नाइनी मुडिका जोइने समानता देखीने विचाखुं जे अमो वे नाइ वेन है यें एम जाणवाथी कुवेरदत्तनें कह्या विना एकदम दीक्वायण कंरी. एकदा कुबेरदत्त वेपारने माटें मधुरामां ज्यां पोतानी माता गणिका रहे छे त्यां आ व्यो. तेणे पोतानी माताने गणिका जाणी जोगववा मांमी. तेथकी तेने एक पुत्र ज्रान थयो. तदनंतर कुबेरदत्ता साध्वीने अवधिक्वान ज्रापन थवाथी ते त्यां ञ्चावीने ते सुतेला बालकने ञ्चढार नात्रां थयां ते प्रकट करवामाटें रमाडवा लागी अने हिंचको नाखतां केहेवा लागी के हे पुत्र ! सांचव्य ॥ श्लोक ॥ चातासि तनुजन्मासि, वरस्यावरजोपि च ॥ चातृव्योसिपितृव्योसि, पुत्रपुत्रो ति चार्नक ॥१॥ यश्च ते बाजकिपता, समे नवित सोदरः ॥ पिता पितामहो नर्ता, तनयः श्वसुरोपि च ॥१॥ याच बाजक ते माता, सा मे मातापितामही ॥ चातृजायावधुःश्वश्रूःसपत्नीचनवत्यहो ॥ ३ ॥ त्या श्लोकनो नावार्थः-तुं महारो नाइ, पुत्र, देर, नत्रीजो, काको, दीकरानो दीकरो, याय हे अने हे ऋर्नक ! ताहरो जे बाप ते माहरो जाइ थाय हे. पिता थाय हे, पिता मह याय हे, स्वामी याय हे, पुत्र याय हे, अने श्वसुर पण याय हे, वली हे वालक ! ! जे तारी माता ते माहरी माता तथा पितामही थाय हे. अने नाइनी वहु याय है. वहु याय है. सासु याय है अने शोक्य याय है आम अढार संबंध कह्या. ते सांनली कुबेरदत्त नीचें आवीने पूछवा लाग्यो के हे साध्वी! आ ग्रं कहो हो अने तमे कोए हो? त्यारें साध्वीयें सर्व बनेलो

संबंध कही आप्यो, ते सांजली कुबेरदत्तने वेराग्य उपन्यो तेवारें संसार बोडी दीक् यहण करी. स्वर्गने प्राप्त थयो.

हवे याकिनी साध्वीनी कथा कहे हे. नम्लू कपुरनेविषे च उद विद्याने जा एनारो अनेक वादनेविषे महा प्राङ्ग एवो हिर ज्ञामा जृह रहेतो हतो,तेनी एवी प्रतिङ्गा हती के जेनुं कहेलुं हुं न जाएं, तेनो हुं शिष्य था छं. एक दि वस ते हिर ज्ञामा जह, साध्वीनी शाला प्रत्यें जाता हता, तेवामां म हासती एवी याकिनीयें कहेली एवी गाथा सांजली ते जेम के ॥ गाहा ॥ चिक्क छुगं हिर एएगं, पएगं चक्कीए केसवो चक्की ॥ केसवचक्की केसव, इच कि केसीय चक्कीय ॥ १ ॥ आ गाथा सांजली तेनो अर्थ न जाएता हिर ज्ञाह्म स्वें पृत्र हुं, हे आर्थे ! चाक चक्य चहु ए गाथामां करेलुं जासे हे. त्यारें ते आर्थायें कहां के नवीनलिपित जूमिनेविषे चांक चक्य थाय हे. ते पठी वाणीयें करी हलेला जाणीने गायाना अर्थ जुं अविङ्गातल जाणीने हिर ज्ञाह साध्वीने पगे लागीने कहेवा लाग्यो के हे साध्वी ! तमे मने शिष्य करो पठी ते साध्वीयें तेने आचार्यनी पासे दी हा अपावी. अज्ञ कमें ते श्रीहरिज इस्हरि, याकिनीपुत्र नाम जुं विरुद्द धार ए करनारा थया. एम एो चोद हों चुम्मालीश प्रकर ए कहां श्रीजनशासनमां महाप्राजाविक थया.

च्यकत नरतचक्रीविश्वसाधर्मिकाचीं, कुरुत तद्नुमा नाक्नेयसेऽत्रोद्यमं तत् ॥ यदिसकलधरित्रीं त्रीणयत्यं चुवाहः, किमु न तद्रघट्टःकेत्रमात्रं एणातु ॥ ६ए॥

अर्थः—(जरतचक्री के०) जरत चक्रवर्ता (विश्वसाधर्मिकार्चा के०) सर्व साधर्मिक जाइन्रेनी अर्चाने (अरुत के०) करता हता, (तत् के०) तेमाटे (तदनुमानात् के०) तेना अनुमानधी (अत्र के०) आंहीं साधर्मिकना वात्सव्यने विषे (श्रेयसे के०) मोक्तूष्ण कव्याण माटें (ज्यमं के०) ज्यमने हे जव्यजनो ! (कुरुत के०) करो. जुवो (यदि के०) जो (अंबुवाहः के०) मेघ, (सकलधरित्रीं के०) सर्व पृथ्वीने (प्रीणयित के०) पूरे हे (तत् के०) त्यारे (अरघटः कें०) अर्हट (केत्रमात्रं के०) केत्र मात्रने (किमु के०) ग्रं (नप्रणातु के०) न पूर्ण करे ? करेज अर्थात् जर

तचक्रवर्तियें सर्व साधर्मीनुं पोषण कखुं तेथी आपणयी तेटलुं न बने तो यथाशक्तिपणें साधर्मी वात्सव्य करवुं जेम वरसाद तो आखी पृथ्वीने तृप्त करे हे, परंतु अर्दृष्ट जे हे ते पण एक क्रेत्रने तृप्त करे हे ॥ ६ए ॥

त्रांहिं नरतचक्रवर्तीनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. अयोध्या नगरीनेविषे नरतचक्रवर्नी राज्य करे हे. एक दिवस श्रीक्रपनदेवजी चो राज्ञी हजार साध्रयें युक्त जद्यानमां समोसखा. तेनी जरतचक्रवर्ज्ञाने ख वर पडवायी अशन, पान, खादिम, खादिमनां सहस्रशकट नरीने समव सरणनेविपे गया. स्वामीने वंदन करीने जरतचक्रवर्जीयें कह्यं के स्वामिन! ञा सर्वे अन्नपानादि साधुना पारणाने माटे यहण करो. त्यारे स्वामीयें क ह्यं के या यनादिकमां घणाज द्रोपो हो, एकतो खांहि लाव्यो तेमां जीव हिंसा दोप, वीजो अन्याहत दोष, त्रीजो राजपिंम दोष, एम अनेक दोषो बे माटें ए अमारे सर्वथा कब्पे निहं. ते सांजली जरत राजा अत्यंत पश्रा त्ताप करवा लाग्यो. त्यारें स्वामीयें कहां के मध्यम पात्र श्रावको हे, माटें ते साधर्मिक हे तेथी श्रावकोनी जिक्क तुं कहा. पही ते जरतचक्रवर्चीयें स र्वत्र उद्घोपण देवरावी जे सर्व श्रावकोयें माहरें घेर जमवुं. अने रसोया उने पण कहां के जे श्रावक श्रावे तेउने जोजन करावजो. एम करवाथी सर्व लोको त्यांज जमवा लाग्या. पढी रसोया थाकी जवाथी जागी गया. चक्रवर्त्तियें जाए्युं जे खा तो सर्व जए नोजन करवा खावे हे, माटें श्राव कनी परीक्वा करीने पढ़ी जमाडवा अने तेने कांइक चिन्द करवुं एम विचा रीने चक्रवर्त्तियें श्रावकनी परीक्षा करी तेमना कंत्रमां काकिए। रत्नें करी त्रण रेखा करी. एम व व मासें परीक्वा करवा मांनी. तेथी श्रावकर्नी अ ने बीजानी व्यक्ति थवा लागी. एवी रीतें जरतचक्रवर्त्तियें साधर्मीवात्सव्य कखुं.

श्राश्वानां सङ्पासका बहुमताएवैकधर्मत्वतः, साधूनामपिजातु गोरवपदं वीतरुप्रहाणाममी॥ रुग्नाशाङ्पसर्गहत्स्तवनतःश्रीन डबाहोर्यथा, चंडाक्काब्दवङ्तमेषु सहजंविश्वोपकारिव्रतं॥ १०॥

अर्थः-(सड्पासकाः के॰) श्रेष्ठ उपासना करनारा (एकधर्मत्वतः के॰) एक धर्मपणाथी एटले साधर्मिपणाथी (श्राद्धानां के॰) श्रावका ने (बहुमताएव के ॰) अति अनीष्ठ एवाज (अमी के॰) आ उपास को (जातु के०) कोइ समये (वीतस्प्रहाणां के०) निःस्प्रह एवा (साधू नामि के०) साधु उने पण (गौरवपदं के०) गौरवना स्थानरूप (जवंति के०) थाय हो. (यथा के०) जेम (श्रीजङ्बाहोः के०) श्रीजङ्बाहुना उपासको (रुग्नाशात् के०) रोगने नाश करनार एवां (उपसर्गहत्स्त वनतः के०) उपसर्गहर स्तोत्रयी गौरवताना स्थानरूप थया तथा (उ समेषु के०) उत्तम पुरुषोने विषे (चंडाकों च्वत् के०) चंड सूर्य अने मेघनी पेहें (सहजं व्रतं के०) स्वाजाविक व्रतं जे हे ते (विश्वोपकारि के०) विश्वनो उपकार करनार हो. अर्थात् जेम सूर्य, चंड अने मेघ ए त्रणे स्वजावेज परोपकारी हो तेम उत्तम जननेविषे पण विश्वने उपकार करनारं एवं व्रत स्वाजाविक होय हो एम जाणी खेवं ॥ ७०॥

था श्लोकमां नड्बाहुनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. पोलास पुरनगरनेविषे सोमदत्त ब्राह्मणना पुत्र नइबाहु अने वाराहमिहर नामे वे नाइ हता. तेणें एकदा गुरुनी वाणी सांनली वैराग्य पामी दीका लीधी वेहु नाइ सर्व शास्त्रना जाएनारा थया. तेमां नड्बाहुने अधिक गुणवालो जाएी गुरुयें खाचार्यपद खाप्युं.तेथी वाराहमिहर खेद पामीने दीहानो त्याग करी पुनः संसारासक थयो. एक दिवस वाराहमिहरें राजा पासें आवी कह्यं के, आ कुंमालानेविषे बावन पलनुं मत्स्य आकाशमांथी पडशे अने श्रीन इबाद्ध गुरुयें कह्यं के कुंमथकी बाहेर पडशे. तेवार पढी श्रीनइबाद्धयें जेम कह्यं हतुं तेज प्रमाणें थयुं. एक दिवस वाराहमिहिरें राजाना पुत्रनुं आयुदी सोवर्षनुं वरत्युं अने कह्यं के तमारो पुत्र सो वर्ष जीवशे. त्यारें नइवाह ग्रहयें कह्यं के ए सात दिवसज जीवशे अने मार्जारीयकी मरण पामशे तो ते त्रण गुरुना कहेवा प्रमाणेज थयुं. एम स्थानकें स्थानकें वाराहमिहिरने श्रीजड़ बाहुयें जींत्यो. तदनंतर योडोक काल रहीने वाराहमिहिर मरण पामीने व्यंतर थयो ते साधुश्रावक वगेरेने महामारीनो चपइव करवा लाग्यो संघें आवीने श्रीनइबादुस्वामीने कह्यं के संघमां मनुष्य मरण पामे हे ? ते सां चली गुरुयें उपसर्गेहर स्तोत्र रचीने आप्युं तेनो पाठ करवाथी मारीनो उपड्व शांत थयो धरऐंडें श्रीग्रह्मी पासेंथी बही गाथा चंमारे मूकावीने कह्यं के एटलायीज हुं महारे थानके रहीने सर्वने सान्निध्य करीश ॥ १०॥

स्त्रीपुंसोप्यधिकात्रिपक्तविशदापुंरत्नखानिर्यतः,स्वा मिन्या मरुदेवया तु सहरािनूताननाविन्यपि ॥ वि श्वायोजिनचिक्रणोप्रयमतोयत्पुत्रपोत्रावहो,याप्रागे व शुनेह्नयनूि वपुरप्रस्थानकस्था प्रनोः ॥ ११॥

अर्थः- (पुंसःअपिअधिका के॰) पुरुष थकी पण अधिक एवी तथा जे (त्रिपक्विशदा के॰) मातृपक्त, पितृपक्त, अने श्वसुरपक्त, एवा त्रणे पक्तोयें करी निर्मल, एवी वली (यतः के॰) जे कारण माटे (स्त्री के॰) ते स्त्री (पुंरत्नखानिः के०) पुरुष रूप रत्ननी खाण एवी (मरुदेवया के०) मरुदेवा (स्वामिन्या के०) स्वामिनी (सहशी के०) सरखी कोइ पण (ननूता के॰) जथी थइ तथा (ननाविनी अपि के॰) थवानी पण कोइ नथी. वली (खहो के ०) खाश्रर्थे (यत्पुत्रपौत्रों के ०) जे मरुदेवीना पुत्र श्रीक्तपनदेव अने पोत्रा श्रीनरत ते केवा है तो के (विश्वार्धी के०) सर्व विश्वमां आर्य हे तथा वली कहेवा हे तो के (जिनचिक्रणों के०) ए श्रीक्रषनदेव जिनेश्वर तीर्थंकर यया है तथा बीजा श्रीनरत ते चक्रवर्क्ता थया है. वर्ती (या के॰) जे मरुदेवी (प्रजोः के॰) श्रीक्रपजदेव तीर्थ करनी (प्रागेव के०) प्रथमज (ग्रुनेह्नि के०) ग्रुनदिवसनेविपे (शिवपुरप्र स्यानकस्या के०) शिवपुर प्रत्यें प्रस्यानने विषे रहेनारां (अनूत् के०) थतां हवां. जेम बीजो कोइ पुरुष पण महोटा कार्यने माटे जती वखतें प्रथमथी प्रस्थान मूके हे तेम ज्यां नगवान् श्रीक्षनदेवजी शिवपुर प्रत्यें आवनार हे तेना प्रस्थानने माटे प्रथमधी श्रीमरुदेवी माताजी पोतेंज प्रस्थाननेविषे रहेतां हवां. एवी स्त्री जगत्मां उत्तम जाणवी ॥ ७१ ॥

श्रा श्लोकमां मरुदेवीनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. श्रयोध्या नेविषे नानिराजानी स्त्री मरुदेवीजीना पुत्र श्रीक्षप देवजी हता तेमणे पोताना सो पुत्रने राज्य श्रापी दीक्का यहण करी पही पोताना पुत्रना इःखें करीने मरुदेवीनां चकुने पडल श्राव्यां ते ज्यारें क्षजदेवजीने पुरिमतालनेविषे वडनी नीचें केवलकान उत्पन्न थयुं, त्यारें तेमना पुत्र न रत चक्रवर्त्तां मरुदेवीजीने हस्ती उपर बेसारीने श्रीक्षपनदेवजीने वंदन कर वा गया त्यां श्रीक्षपनदेवजीनी वाणी सांनलीने मरुदेवि माताने हर्ष उ

त्पन्न थयो तेथी आंखनां पडल उघडी गयां. त्यां पोताना पुत्रनी समृद्धि जो इने पोताने पण केवल कान उरपन्न थयुं तरत मुक्तिने पामतां हवां ॥११॥

या श्राविकाप्यमलशीलपवित्रितांगी, सा श्लाघ्यतेत्रि नुवनेऽपि यथा सुनजा ॥ यस्यास्त्रिवारिचलकाहित लोकतुष्टेः स्रोतःसहस्त्रकृतसृत्सहशी क गंगा॥ १२॥

अर्थः -(या के०) जे (अमलशीलपवित्रितांगी के०) निर्मल एवा शी लें करी पवित्रित ने अंग जेनां एवी (श्राविका के०) श्राविका ने (साअ पि के०) ते पण (त्रिज्ञवनेपि के०) त्रण ज्ञवननेविषेपण (श्लाघ्यते के०) वखणाय ने. केनी पेने? तो के (,सुन्न यथा के०) सुन्न श्राविका ने तेज जेम ? वली (त्रिवारिजुलकाहितलोकनुष्टेः के०) पाणीनी त्रण अंजलिने नांटवेकरीने करी ने सर्वलोकनी नुष्टि जेणें एवी (यस्याः के०) जे सुन्न श्राविका ते (सहशी के०) समान (गंगा के०) गंगानदी (क के०) क्यांची होय ? अर्थात् नज होय. कारण के सुन्न श्राविका यें तो त्रण अंजलियी त्रण हार ज्यांच्यां अने गंगा नदी तो वली (स्रां तो त्रण अंजलियी त्रण हार ज्यांच्यां अने गंगा नदी तो वली (स्रां तो त्रण अंजलियी त्रण हार ज्यांच्यां स्रां पाणीना प्रवाहोंयें करी लोकोने हर्ष देनारी याय ने अर्थात् सहस्त्रप्रवाहें करी जगत्नुं कव्याण करे ने अने आ सुन्न श्राविका तो पाणीनी त्रण अंजलियेंज जगतने संतोष दाय क यइ ने माटे गंगायकी सुन्न श्राविका अधिक ने ॥ ७१॥

श्राहिं सुन्नां हष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. चंपापुरीनेविषे जिंनदत्तनामा श्रेष्ठी रहे हे. तेनी दीकरी परम जैनधमे पालनारी सुन्ना नामें हती ते बौदना नक बुद्धास नामा व्यवहारीना पुत्रनी साथें पर णी. एकदा सुन्नाने घेर कोई जिनकल्पी साधु आव्याः ते साधुनी आंख मां घांसनुं फोतरुं पडेलुं हतुं तेने जिह्वायें करी लई लीधुं. तेवारे सुन्नाना कपालमां सिंदूरनुं तिलक हतुं ते मुख अडवाथी साधुना नालमां सिंदूर लागी गयो, हवे ते सुन्नानी नणंद महा इष्ट हती तेणे पोताना नाइने कहां के नाइ! आ मारी नानीने में साधुसाथें संग करतां नजरें जोई, ते जो खोदुं मानोतो जुवो आ मारी नानीना कपालमां लगावेलो सिंदूर ते एक बीजाना मुखे मुख मलवाथकी साधुने लाग्यो हे ते वात सांनलीने

जुवे तो साधुने कपालें सिंदूर लागेलो दीवो. के तरत ते सुनड़ाने असती मानीने तेना खामीयें तेनों त्याग कखो पढ़ी सुनड़ा कायोत्सर्ग करवा वेठी तेवारे शासनसुरी प्रगट थइने कहेवा लागी के हे सुनई ! तारुं कलं क हुं उतारीश तेनी तुं चिंता करीश नहिं एम कही गामना त्रणे दरवाजा ना बारणां ते शासनदेवीये कोइयकी न उघडे एवां कमाड बंध करी दीधां. राजायें बीजा उपाय करवा मांमचा तेवारें आकाशमांथी शासनदेवीयें कह्यं के जो कोइ सती काचा सूतरना तांतणायें बांधेली चारणीएं करी सि चेलो जल दारने ढांटे, तो ते दार उघडे, परंतु बीजा कोइ उपायथी उ घडे तेम नथी. पढी गाममां जे सती स्त्रीयो हती ते सर्वने राजायें बोला वी अने तेमने काचे तांतएो चारणीयो बांधी कूवामांथी जल काढवानो वेराव कस्यो परंतु कोइस्री ते बन्धुं नहिं एम सर्व सतीनो मदनंग श्रयो. त्यारे सुनइा पोताना सतीपणानी परीक्वा देवा माटे त्यां आवी क्राचे ताः तणे बांधेली चारणीयें करी कुवामांथी जल काढ्युं काढीने त्रणे दरवाजा उपर एक एक ढांट जलनी नाखी के तरत ते त्रणे दरवाजानां कमाड उ घाड्यां अने कदापि कोइ बीजी स्त्री कहे के ए रीतें तो हुं पण उघाडी आएं तो तेने जघाडवा माटे एक दरवाजो रहेवा दीधो ॥ ७२ ॥

> पुष्पाक्तताश्वतग्रणस्तवनादिनेदात्,त्रेविध्यतःप्रति दिनंजिनपादपुजा॥श्रीश्रेणिकादिजनविक्जनताहि दत्ते, चक्रादयःकलज्ञातामिवनृद्दलस्य॥ ७३॥

अर्थः—(पुष्पाक्ता क्षतगुणस्तवनादि नेदात् के०) पुष्प, अक्त, अंक्षत एवा ग्रण स्तवनादिक तेना नेदें करीने (प्रतिदिनं के०) प्रति दिवस, (जिनपादपूजा के०) जिननगवानना पगनी पूजा (त्रैविध्यतः के०) त्रणे प्रकारें करी करवी. आ वेकाणे आदिशब्द प्रत्येक नेदें जाणवो. जेम के पुष्प वे त्यां पुष्पादि, अक्त वे त्यां अक्तादि, स्तवन वे त्यां स्तवनादि एम आ दिशब्द जेवो अने जे देह उपर चढे वे ते पुष्पादि पूजा जाणवी. अने जे देवनी पासें मूकीयें ते अक्तादि पूजा जाणवी अने जे गीतनाटक करियें ते पूजा स्तवनादिकमां जाणवी. ए पूजाना त्रण प्रकार जाणवा. ते जिनपूजा (श्रीश्रेणिकादिजनविक्तनतादि के०) श्रीश्रेणिकादि राजानी पेवें तीर्थक

रादिक पदवीने (दन्ते के०) आपे हो. आहिं आदिशब्दें करी वासुदेव, बल देव राज्यादिक पण लेवां एटले जिनपूजा करनारने ए सर्व पदवी प्राप्त था य हो. केनी पेतें. तो के (मृद्दलस्य के०) मृत्तिकाना दलना (चक्रादयः के०) चक्र, लाकडी, दोरडी, कुंजारप्रमुख जेहे, ते (कलशतामिव के०) कुंजादिक ने जेम आपे हो. तेम जिनपूजा पण तीर्थकरादिकपणाने आपे हो ॥७३॥

या वेकाणे श्रेणिक राजानो हष्टांत होवाथी पूर्वे श्रेणिक राजानी कथा कही हो तो पण फरीने किंचित्मात्र कथा कहे हो. श्रेणिक नामा राजा परम जैनी क्वायिक सम्यक्त्वने धारण करनारो हतो त्रण काल श्रीजिनज गवाननुं पूजन करतो हतो. ते राजा प्रति दिवस एकशो आह सोनाना य वोयें करी श्रीजिनजगवाननी पासें स्विक्तक पूरतो हतो. ए प्रकारनी श्रीजिनजिक्तें करी तीर्थंकर नामकर्म उपाजन ते राजायें कखं. ॥ १३ ॥

स्याक्किनार्चनकृतस्त्रिकद्या, दांविपद्यिपयया दवदंत्याः ॥ स्वस्तरुःफलित किं निहरोरे, नेंडरस्यतितृषंचचकोरे ॥ १४॥

अर्थः—(त्रिकग्रद्धा के॰) मन, वचन अने कायानी ग्रुद्धियें करी (जिनार्चनरुतः के॰) जिननुं अर्चन करनारने (विपद्यपि के॰) विपत्तिने वि पे पण (ग्रं के॰) सुख (स्यात् के॰) होय. केनी पे ते ? तो के (दवदं त्याः यथा के॰) दवदंतीनी पे ते जेम (रोरे के॰) दारिष्ठें करी पराजव पामेला एवा पुरुषने विषे (स्वस्तरुः के॰) कल्पतृक्ष (किं के॰) ग्रुं (निहफलित के॰) नथी फलतो ना फलेज हे. (च के॰) वली (इंडः के॰) चंडमा, (चकोरे के॰) चकोर पक्षीने विषे (तृषं के॰) तृष्णाने (न अस्यित के॰) नथी फलतो ? अर्थात् फेंकेज हे ॥ ५४॥

आहीं दृष्टांतमां द्वदंतीनी कथा कहे हे. अष्टापद पर्वतनी पासें धन्य नामा गाम हे. तेनो मम्मण नामें राजा हतो, तेनी वीरमती नामें स्त्री हती. एक दिवस ते राजा आयडो करवा नीकत्यो तेने जैनसाधु सामो मलवाथी अपग्रकन थयुं एम मानीने ते साधुने पकडीने बार प्रहर राख्यो पही वीरमतीयें राजाने समजावीने ते साधुने होडाव्यो. साधुयें धर्मोपदे श दीधो वीरमती श्राविका थइ पांचशें आंबिल कथां वली अष्टापद कपर जइने चोवीश जिनजगवानने मिणमय तिलक कराव्यां ते पही ते वीरमती मरण पामीने कुंमिनपुरनेविषे श्रीजीमनृपनी कन्या दवदंती नामें यइ. म म्मणनो जीव नल राजा थयो. ते दवदंतीने परण्यो ते दवदंतीना कपाल मां जन्मतांज स्वाजाविक रविमंमल जेम शोजे तेवुं देदीप्यमान तिलक यइ रह्यं हतुं. एकदा जुगारें रमता नलराजा राज्यादिक सर्व हाखा. बार व रस ते स्वी पुरुपने परस्पर वियोग रह्यो. दवदंतीने स्थानस्थानमां विकट इःखो आव्यां हतां ते सर्व जिन अर्चनना प्रजावयकी लय थइ गयां बार वरसना अंतमां नलराजाने फरीने राज्य प्राप्त थयुं. इति जिनपूजनाधिकार.

श्रीरामवन्नोनयएव सेव्यः, प्रजानुरागव्रतवित्तमूलं ॥ कोद किणावर्तमुपेत्यशांखं, त्यजेन्मुधाश्यामलचित्रकंवा ॥ ७८॥

अर्थः—(नो के०) हे नव्यजनो! (प्रजानुरागव्रतित्तमूलं के०) प्रजाने विषे अनुरागप्रतीति,व्रत,आचार, अने इव्यना मूलरूप एवो (नयःएव के०) न्याय तेज (श्रीरामवत् के०) श्रीरामचंइनी पेठे (सेव्यः के०) सेववां योग्य हे. त्यां दृष्टांत कहे हे के (सुधा के०) खोटा एवा (क्यामलचित्रकं के०) काली चित्र वृद्धीरूप कोडाने (उपेत्य के०) पामीने (दृह्णावर्त्त के०) दिह्णावर्त्त नामना (शंखं के०) शंखने (कःवा के०) कयो पुरुष, (त्यनेत् के०) त्याग करे ? कोइ त्याग करे नही॥ ७५॥

श्रा वेकाणे श्रीरामनो दृष्टांत होवाथी तेनी कथा प्रसिद्ध वे तो पण कहे वे. कौशला नगरीनेविषे रामचंड्जी राज्यने जोगवे वे तेनी पट्टराणी सीताजी हतां, ते रामना जाइ लक्ष्मण, जरत, शत्रुघ्न, एवे नामें हता. बा पनी श्राक्षाथी राज्यनो त्याग करीने वार वरस वनवास जोगव्यो. न्याय मार्गने श्राक्षसरी रावण प्रतिवासुदेवने मारीने तेणे हरण करीने लइ गयेली निष्कलंक एवी पोतानी स्त्री सीताने पाढी वाली. ते पढी दशहजार वरस पर्यंत न्यायें राज्य जोगव्यं, लोकमां पण सारुं देखतुं राज्य होय तो राम राज वे एम श्रयापि पर्यंत ख्याति वे एवं राज्य चलाव्यं ॥ ७५ ॥

मनिस वचिस दाश्वत्न्यायण्वोत्तमानां, यदमरवर जब्ध्या पारदारिक्यचौर्यं ॥ अनुविषयमरोत्सी चक्र नृद्रह्मदत्तः, कसुरसरितिपंकः केदाचं के कलंकः॥ १६॥ अर्थः – (मनिस के०) मनने विषे (वचिस के०) वाणीने विषे (शक्ष त् के॰) निरंतर (उत्तमानां के॰) उत्तमोने (न्यायएव के॰) न्यायज योग्य है. (यत् के॰) जे कारण माटे (अमरवरलब्ध्या के॰) प्रधानदेव तानी प्राप्तियें करी (पारदारिक्यचोर्य के॰) परदारानी चोरीना कार्यने (अनुविषयं के॰) देशदेश प्रत्यें (चक्रजृत् ब्रह्मदत्तः के॰) ब्रह्मदत्त नामा चक्रवर्त्ता (अरोत्सीत् के॰) निवारण करतो ह्वो. त्यां हष्टांत कहे हे. के जेम (सुरसरिति के॰) स्वर्गगंगाने विषे (पंकः के॰) कचरो (क के॰) क्यां थी होय, तथा (ईशचंडे के॰) शंकरना शिर उपर रहेला चंडने विषे (कलं कः के॰) कलंक ते (क के॰) क्यांथी होय. ना नज होय ॥ ७६ ॥

श्रांहिं ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तांनी कथा कहे हे. ब्रह्मदत्तें वनने विषे कोइक दें वतानी स्त्रीने कोइ पुरुष साथें रमती जोइने ते स्त्री पुरुष वेहुनुं ताडन क खुं. ते स्त्री त्यांथी जइने पोताना स्वांमी प्रत्यें कहेवा लागी के हे स्वामिना श्र! मने श्रावी रीतें ब्रह्मदत्तचक्रीयें मारी,पृत्ती तेना पित नागकुमार देवने सहेज तरतज कोप चड्यो, श्रने तरत त्यां श्राव्यो. ते वखतें ते ब्रह्मदत्त चक्री पोतानी स्त्रीने घरमां कहेतो हतो के हे स्त्री! में कोइ स्त्रीने कुकमें करती जोइने मार माखो हे,ते वाक्य सांजलतांज नागकुमार देव प्रसन्न थयो थको प्रगट थइने कहेवा लाग्यों के हे राजन! वरदान मागो. त्यारें ब्रह्मदत्तें कह्यं के तमें श्रवधिक्तानथी सर्व वात जाणों हो, माटे मारा देशमां परस्त्रीनी चोरी जो याय, तो मने श्रावीने कहेवुं, तेने हुं शिक्ता श्रापीश. ए वरदान मागुं हुं. पही ते प्रमाणें ते देवें कछुं श्रने ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तायें पण तेमज कछुं॥ १ हा

विद्याविजूतिमहिमत्रतधर्ममोक्त, संपत्तये विनय एव विजुः किमन्येः॥ किं किं निमः सविनमिर्जिनतो न खेजे, पूज्यां घ्रिरेणुरिप पश्य नमस्यएव॥ ७७॥

अर्थः—(विद्या के०) विद्या, (विजृति के०) लक्की वा संपत्ति, (मिहम के०) मिहमा (व्रत के०) व्रत, (धर्म के०) धर्म, (मोक् के०) मोक्क तेनी (संपत्तये के०) संपत्तिने माटे (विनयएविद्यः के०) विनय तेज समर्थ हे. (अन्यैः किं के०) बीजाउंयें करीने छं ? (सिवनिमः के०) ते वि निमयें सिहत एवो (निमः के०) निम ते (जिनतः के०) श्रीक्रपनदेव ती र्थंकरथकी (किंकिं के०) छं छं. (न लेने के०) न पामतो हवो. अर्थात्

सर्व राज्यादि लक्कीने प्राप्त थतो ह्वोज. माटे (पश्य के०) हे जव्यजन! जुवो. (पूज्यां घिरेणुरि के०) पूज्य एवा तीर्थकरना चरणनी रज पण (नमस्यएव के॰) नमन करवा योग्यज हे माटे विनय राखवो ॥ ७७ ॥ छाहिं निम विनमिनी कथा कहे हे. निम अने विनमि बे क्त्रिय ते कन्च महाकन्चना पुत्र ते श्रीक्षन देवजीना श्रंगरक्तक होता हवा, ते बेह्र कोइक कार्यने विपे देशांतर गया. तदनंतर श्रीक्ष नदेव खामीयें दीका यह ए करी पढी, ते जेवारें पाढा आव्या तेवारें स्वामी ज्यां विहार करे, त्यां सा थें फरता रहे. प्रातःकालमां श्रीक्पनदेवजीना चरणने कमलें करी पूजीने कहे के हे स्वामी! राज्य देनारा थाजो. एम मागता हता. एक दिवस धर ऐंड, श्रीक्षनदेवना वंदन माटे श्राव्यो ते बेहु जणने जोइने कहेवा ला ग्यो. के तमो थेंद्र नरतचक्रवर्नी पासे जार्च ते तमोने राज्य आपशे. त्यारे तेऐं कह्यं के ग्रं ऋपनदेवजी नहिं आपे ? वचमां तमारे बोलवानुं ग्रुं काम हे ? तमारे जावुं होय तो जाउं श्रमोने तो ज्यारें स्वामी राज्य श्चापज्ञे, तेवारें खेद्यं. श्रमारे कांइ जरतनी साथें प्रयोजन नथी,ते सांजजी धरऐंड़ें तुष्टमान थइने चोराशी ह्जार विद्यार्त आपी. अने वैताद्य पर्वतने विषे दक्षिण श्रेणी अने उत्तर श्रेणीनुं राज्य वेंचीने वेदु नाइउने धरणेंई त्र्याप्युं, ते तेऐं लीधुं ॥ ७७ ॥

> किंमर्त्यसिद्ध शोष्यपास्तिवनयोम्लानेः सहानेः पदं, यक्तोरु ६करः किमार्यखपुटाचार्येण ना शिक्तितः॥ किंवा विष्णुकुमारतोन नमुचिर्मृत्वाऽगमहुर्गतिं, नद्यो घस्तरुमुन्नतं रुजति वा नद्यं तु नो वेतसम्॥ १०॥

अर्थः—(अपास्तिवनयः के०) त्याग कह्यों हे विनय जेएों एवो (त्रि दशोपि के०) देवता पण (सहानेः के०) हानियें सहित एवा (म्लानेः के०) पराजवनुं (पदं के०) स्थानक थाय. जुवो (वृद्धकरः के०) वृद्ध कर नामा (यद्यः के०) यद्य तेने (आर्यखपुटाचार्येण के०) आर्यखपुटा चार्यें (किं के०) ग्रुं (नाशिक्तिः के०) न शिक्षा कह्यों ? ना कह्यों ज हे. तो (मर्त्यः किं के०) माणसनुं तो ग्रुंज कहेवुं ? हवे ते वृद्धकर यद्य केवो हतो ? तो के जिनशासननो हेवी, साधुने इःख दायक हतो अने हुं महा

इानी हुं. एम अनिमान कखुं तेथी आर्यखपुटाचायेँ प्रासादनो अंतराय करे हते गुरुयें तेने प्रतिपत्तिने पमाड्यो. पही गुरुयें बोध कखो (वा के०) वली (वि ष्णुकुमारतः के०) विष्णुकुमार जे मुनीश्वर तेथकी (नमुचिः के०) नमुचि नामा प्रधान ते (मृला के०) मरीने (इगेतिं के०) इगेतिने (किंनअगमत् के०) छं न पामतो हवो ? किंव कहे हे ते वात घटे हे. जेम (वा के०) वली (नद्योघः के०) नदीना जलनो समूह, (जन्नतं के०) उंचा एवा (तरुं के०) हक्ते (रुजित के०) जंग करे हे परंतु (नम्रं के०) नम्र एवा (वेतसं तु के०) वेतस नामा हक्ते तो (नो के०) जंग करतो नथी. अर्थात् अनिमाननो तो जंग पण याय हे. परंतु विनयनो जंग कोइ हेकाणें यतोज नथी. एम जाणहुं ॥ १०॥

श्रा श्लोकमां वे दृष्टांत होवाथी प्रथम वृह्कर यक्तनी कथा कहे हे. गू हशस्त्र नगरंने विषे ज्ञवनमुनियं वृह्कर नामा बुह्मुनिनो वादमां विजय कंखो. ते मरीने यक्त थयो. पढी ते यक्तें संघने उपइव करवा मांम्यो. तदनं तर त्यां श्रीखपुटाचार्य देवइह्यायं श्राव्या. गुरु ते यक्तना घर प्रत्यें जइने यक्तना कर्णनें जुना खासडानो निवेश करी तेनी हातीने विषे पोतानो पग मूकी वस्तें करी ते यक्त्वं श्रंग हांकीने खपटाचार्य सुता, ते प्रनातें यक्तना पूजन करनारें जोइने सर्व हुनांत राजाने निवेदन कखुं. राजायें तिहां श्रा वीने सेवकोना हाथें कोरडायें करी गुरुने मारवा मांम्यो. ते कोरडाना प्र हार राजाना श्रंतःपुरमां लाग्या, ते जोइ श्राचार्यने पगे लागीने राजायें क्तमा मागी. तेवारें गुरु त्यांथी उठ्या श्रने गुरुयें तिरस्कार पमाडेला यक्तें चतु विधसंघनी रक्ता करी. पही ते गुरुयें यक्त विनायक रुझादि देवतायें गुरू थया हता पुर प्रत्यें जइ वे पापाणनी कुंद्रीचे नगरने दरवाजे स्थापन करी सर्व देवताचेन रजा श्रापी. देवो पोताने स्थानकें गया. ते श्रद्यापि पर्यंत पापा एनी कुंद्रिकाचे प्रतोलिकामां देखाय हे. कोइ पण तेने चलावी शकतुं नथी.

हवे विष्णुकुमारनी कथा कहे हे. पद्मपुर नगरने विषे पद्म नामाचक्र वर्ती राज्य करे हे. तेनो नमुचि नामा मंत्री हतो. तेने एक दिवस नास्ति क मतने प्ररूपण करता थकां सुस्थिताचार्यना लघु शिष्यें सर्व लोकोनी सम क् जींती लीधो. एकदा नमुचियें कोइ कार्य करीने चक्रीने अत्यंत प्रसन्न कह्यो. तेवारें चक्रीयें कह्यं तुं माग, ते हुं आपुं. तेणें सात दिवस पर्यत राज्य माग्युं. ते राजायें पण सात दिवस राज्य आप्युं. नमुचि मंत्री राज्यासने वेतो. अने साधुनेने कहेवा लाग्यों के मारी प्रथ्वीनों तमों त्याग करों, निहंं तो हुं संवें साधुनेने हणीश. पत्नी कोइक साधुयें गगनमार्गें मेहना शिखरप र जइने श्रीपद्मचक्रवर्त्तांना जाइ श्रीविष्णुकुमारनी पासें नमुचिनुं तृतांत सर्व कह्यं. विष्णुकुमार त्यांथी आवीने नमुचिने कहेवा लाग्या के हे राजन! आ साधुनेने उपइव करवो तुफने घटे निहंं? केटली एक प्रथ्वी तुं साधु जेने आप के जे तेकाणे सर्वे साधुने निवास करे. त्यारें मंत्री कहेवा लाग्यों के त्रण पगलां प्रथ्वी आमो आपीयें त्रेयें, माटे जान तेटली प्रथ्वीमां रहो. ते सांचली विष्णुकुमार मुनियं लाख योजननुं वैक्रियरूप धारण करीने प्रथ्वीने उल्लंघन करी एक पगलुं पूर्वसमुइ उपर मूक्युं, अने एक पगलुं पश्चिम समुईं मूक्युं. पत्नी विष्णुकुमार कहेवा लाग्या के हे पापी! त्रीजुं पगलुं हुं क्यां मूकुं? ते मने कहे. एम कही तेना मस्तकपर एक पगमूक्यों ते पगना प्रहारें करी तेने चूर्ण करी नाख्यों. पत्नी विष्णुकुमारें पो तानुं वैक्रियरूप संहरण करी लीधुं पोते आलोयणा लेता हवा॥ ७०॥

राज्यं राककतानिषेचनमहो रूपं त्रिलोकेऽप्यस,
त्सारूप्यं च सनत्कुमारनृपतेः सोऽप्पंगवेराग्यतः॥
चक्रे चारुतपः सलब्धिरपि तत् स्वं नाचिकित्सत्पुना,
रज्येद्वा प्रतिकर्मनिर्मलरुचो कः कुप्यपात्रे सुधीः॥ १ए॥

अर्थः—(शककतानिपेचनं के०) इंडें कस्रो हे अनिपेक जेनो एवं (राज्यं के०) राज्य, (च के०) तथा (अहो के०) आश्रयें (त्रिलोकेऽपि के०) त्रण लोकनेविषे पण (असत् के०) नथी विद्यमान (सारूप्यं के०) समानपणुं जेनुं एवं (रूपं के०) रूप, ते वेहु (सनत्कुमारनुपतेः के०) सनत्कुमाररा जाने हतां, (सोऽपि के०) ते सनत्कुमारनुपति, पण (अंगवैराग्यतः के०) ते अंगनेविषे वैराग्यथकी (चारुतपः के०) मनोहर एवा तपने (चक्रे के०) करतो हवो. तथा (सलव्धिरपि के०) ते लब्धियें सहित थयों तो पण ते सनत्कुमारराजा (पुनः के०) फरीने (तत् के०) ते (स्वं के०) पोताना अंगने सारुं करवानो (नाचिकित्सत् के०) जपाय न करतो हवो, एटले शरीर बगड्युं तो पण तेनी प्रतिक्रिया करी नही. किन कहे हे. ते वात घटे हे कारण

के (सुधीः के॰) रूडी है, बुि जेनी एवो (कः के॰) कयो पुरुष, (प्रतिकर्मनि मेलरुचों के॰) प्रतिकर्में करीने है निर्मल कांति जेनी एवा (कुप्यपात्रे के॰) ताम्रपात्रनेविषे (रज्येद्वा के॰) राजी थाय वारु ? नज थाय. तेम वेराग्य थवा पही कूप्यादि सहश देहादिकनेविषे कोए राजी थाय ? ॥ ७ए ॥

आंही सनत्क्रमारनी कथा कहे हो. अयोध्यानगरीनेविपे सनत्क्रमार नामा चक्री राज्य करे हे. एकदिवस सनत्कुमारनुं रूप इंई पोतानी सना मां वखाप्युं, तेनुं रूप जोवाने तत्काल वे देवता आव्या, ते वखत चक्रवर्त्ता स्नान करवा वेवा हता, तेनुं रूप जोइने ते वेहुजण विस्मय पामी गया. च कवर्तीयें कहां के दे देवतारी! दुं जेवारें सिंदासन उपर बेसुं, तेवारें तमो माहरा स्वरूपने जो जो. पढी जेवारें सन्धमां सिंहासन उपर बेवा, तेवारें सनत्कुमारनुं रूप जोता वेहु देवोनां मुख विज्ञाय ययां. ओइने ते वेहुने च ·क्रवर्त्ती कहेवा लाग्यो के केम तमारुं मुख विज्ञाय देखाय हे ? देवतायें कहां के तमारा शरीरमां कुष्टादिक रोग थवाथी अमोयें स्नानवखतें जेवुं तमारुं रूप जोयुं हतुं, तेथी हमणां अत्यंत हीन थइ गयुं. आ वात देवताना मुख -थी सांचली चक्रीने तुरत वैराग्य उत्पन्न थयो, तेथी राज्य ढोडीने दीका य इए करी. पढ़ी तेने कुष्टादिक आठ रोग उत्पन्न थया. सातशो वर्षरोगनुं इःख सहन कखुं. परंतु पोतामां लब्धि बते पण तेना निवारणनो कोइ उपाय कस्बो नहिं. वली ते उसड़ करे ने के नहिं एवी तेनी परीक्ता करवा माटे वे देवतार्र वैद्य थ आव्या परंतु सनत्कुमार मुनियें वैद्यें कहेलो रुपाय कांइ पण कस्रो नहिं. माटे वैराग्य हे तेज ज्ञानसाधन हे ॥ ७ए ॥

ञ्जाजनमांतमनंत इमुंदि जवे वैराग्यमरूत्येव त, व्यक्तं हेतु पु सत्सु किंतु जवित प्रत्येक बु देष्विव ॥ सूर्या इमन्यन लं पयः दाद्यामणो स्वर्णं सुवर्णावनो, कोऽ ज्ञाक्कीत् पुनरक चं इतुजुग्रयोगात् कृतोप्येति वा॥ ७०॥ वैराग्यप्रक्रमः॥

अर्थः—(आजन्मांतं के०) जन्मथी आरंजीने मरण पर्यंत (अनंतड़ मुंदि के०) अनंत हे डःखाकुतमुद् जेमां एवा (नवे के०) संसारने विषे (वैराग्यं के०) वैराग्य (अस्त्येव के०) होय हेज. (तघ्मकं के०) ते स्पष्ट देखाय हे (किंतु के०) केम ? तो के (सत्सु के०) प्रसिद्ध एवा

(हेतुषु के०) वृपनादि हेतु वते (प्रत्येकबुदेष्विय के०) प्रत्येक बुद्दोने विषे जेम वैराग्य (नवित के०) थयो. त्यां किव कहे वे. इःखदायक संसा रने विषे पण वैराग्य रह्यों वे. केनी पेवें तो के (स्वर्यादमिन के०) सूर्य मिणिने विषे (अनलं के०) अभिने (कोऽइाङ्गीत् के०) कोण जोतो हवों कोइ निह तथा (शशमणों के०) चांइमिणिने विषे (पयः के०) अमृतहूप इथने कोण जोतो हवों तथा (सुवर्णावनों के०) सुवर्णमय पृथ्वीने विषे (स्वर्ण के०) सुवर्णने कोण जोतो हतो, अर्थात् ते पूर्वोक्त सर्व वस्तु एटलाने विषे अदृष्ठज वे. परंतु (पुनः के०) वली (अर्कचंइडुतज्ञग्योगात् के०) सूर्यमिण, चंइमिण, सुवर्ण तेनें एटले अनुक्रमे सूर्यमिणनें सूर्यनो, चंइमणीनें चंइनो तथा स्वर्णनूमिने अभिनो योग होवायी अभि, इध, अने सुवर्ण उत्पन्न थाय वे (वा के०) तेमं (कुतोपिके०) क्यारेंक पण देह थकी वैराग्य (एति के०) उत्पन्न थाय वे. एम जाणवुं. जेम पूर्वोक्त प दार्थ सुर्योदिकना योगथी थाय वे तेम कोइक वखतें देहादिकथी वैराग्य उत्पन्न थाय वे॥ ००॥ इति वैराग्यप्रक्रमः ॥

आंदिं चार प्रत्येक बुद्धनो दृष्टांत होवायी तेनी कयाउमां प्रथम करकं मुप्त स्येक बुधनी कया कहे हे. किलंग देशें काकंदी नगरीमां करकं सुराजा राज्य करे हे. तेणें एक दिवस राजमार्गमां जतां एक गोकुलने विषे जाडा कांधवालो, उंची कोट वालो, थोला दांत वालो, अने महाबलवान, पोतानी त्राडयी दिशाउने गजवतो, अत्यंत सुशोनित,एवो एक हुपन दीहो. तेथी राजाना मनमां अत्यंत प्रमोद उपनो. वली केटला एक वर्ष पढी पाढा तेज रस्ते चालता ते राजायें जर्जरीजूत गात्रवालो पडी गयेला हे दांत जेना एवो तथा जेना मोढामांथी लाल पडती जाय हे विजल्स सुखवालो अने पद्मुची इःख सहन करतो शोना रहित एवा तेज हुपनने जोयो ते जोइने राजा विचार करे हे के जेवी दशा आ हुपननी यइ तेवी दशा आ माहारा कलेवरनी पण यशे? एम चिंतवता वैराग्य उत्पन्न यवाथी ते करकं सु राजा पोतेंज दीका यह ए करी कमेनो क्रय करी सिद्धिने प्राप्त थयो. ए करकं सु प्रत्येक बुद्धनी कथा.

हवे डम्मुहराजानी कथा कहे हे. पंचाल देशमां कांपिव्यपुरने विषे ड मुंख नामा राजा हतो. ते एक दिवस नगरथी बाहेर निकव्यो हे तेणें रस्तामां नगरना घणा लोकोयें पूजन करेलो, तथा जेनी खागल शृंगार सजेली एवी स्वीयोनां वर्गें गान करेलो अनें नानाप्रकारनां याचक लोकों यें स्तुति करेलो तथा हजार ध्वजायें करी शोजायमान जाणीयें साक्तात् इंड्ज होय निहं. एवा इंड् स्तंजने जोइने राजाना मनमां विस्मय थयो. पा बो फरीने राजा तेज रस्तामां सायंकालें गयो त्यां दरिड्युक्त पृथ्वीने विपे पडेलो शोजा रिहत एवा तेज स्तंज जोइने राजाने वैराग्य उपन्यो, तेवारें चा रित्र लइ मोक्सुख पाम्यो ए डुर्मुख प्रत्येक बुद्धनी कथा कही.

हवे निम प्रत्येक बुद्धनी कथा कहे हे. श्रीमिथिला नगरीने विषे निम राजा राज्य करतो हतो. ते अत्यंत स्वरूपवान् तथा लक्क्षीने पण तिरस्का र करनारी देवांगना सरखी पांचशो स्त्रीयोनी साथें नोग नोगवतो सूर्यना चदय असती पण तेने खबर नथी. एक दिवस ते निम राजाना अंगने विषे दाहज्वर उत्पन्न थयो. तेथी राजा कोई ठेकाणें सुखने न पाम्यो. ते अवसरें राजाना अंगने शितलता थवाने माटे पांचशें स्त्रियोयें चंदन घ सवा मांमग्रुं, तिहां स्त्रीयोना हाथमां पहेरेली चुडीयोना खणखणाटथी राजाने कंटालो आब्यो, तेवारें एकेक चूडी सर्व स्त्रीयोने राखवानो हुकुम क खो. ते सांनली सर्व स्त्रीयोयें एकेक कंकण हाथने विषे राख्युं, ते वखत रा जाने समाधि थई, अने मनमां विचाखं के जाजाना संगधी मोहोटुं इः ख थाय हे, माटे एकलांज रहेवुं ते सारुं हे. ए द्वारें वैराग्य उत्पन्न थयो तेवारें पांचशे स्त्रीयोने तथा राज्यनें हांमीने प्रवज्या यहण करी. तेनी ई इं ब्राह्मणनुं रूप विकूर्वी अनेक प्रकारें परीक्का करी, तो पण चलायमान थया नही. ए निम प्रत्येक बुद्धनी कथा कही.

ंहवे चोथा नयति प्रत्येक बुद्धनी कथा कहे हे. गांधार देशने विषे मा हिष्मती नगरीमां नयति नामें राजा राज्य करे हे. एक दिवस ते राजा व नने विषे कीडा करतां थाकी गयो. ते समयें मनोहर नवपछ्यवनी शोजा यें विराजमान, नवी आम्र मंजरीयें करी सुशोजित, पाकेला फलें करी दे दीप्यमान अने अत्यंत हायायुक्त एक आम्रहक्तने राजायें जोयो. तेनी नी चें जश्ने घणीवार सुधी विश्रांति लीधी. फरी केटलाएक कालें पाहो रा जा ते वनमां गयो. त्यां तेज आम्रने सुकाइ गयेंलो पत्र रहित मालविना नो जोइने ते नयति राजाने वैराग्य चत्पन्न थयो. तेवारें व्रत यहण करी केवलक्कान पामीने मुक्तिने प्राप्त थयो ॥ ६०॥ इति वैराग्यप्रक्रमः संपूर्णः ॥ सुत्रापं शुरुपात्रं धनमपि विशदं किंतु निष्पुण्यकानां, नो वित्तं पात्रदानं प्रति नवित मितर्यत्र शुरुशशनाधैः॥ आद्यो ऽहेन् वर्षमेकं प्रतिदिनमगमनुरुनेह्रयेऽपि देशे, श्रेयांस स्त्वेकमाद्यं सुकृतिषु कृतवान् स्वं प्रजोः पारणेन॥ ७१॥

श्रथः—जे दानथकी (यत्र के०) जे वित्तने विषे (शुक्षाशनायोः के०) शुक्ष एवा श्रश्नादिकोयें करी दान देवानी (मितः के०) शुक्ष, उत्पन्न थाय तथा तेवुं दान श्रने (शुक्ष्पात्रं के०) शुक्षपात्र, (सुप्रापं के०) प्राप्त थये खुं होय तथा (धनमिष के०) इव्य पण (विशदं के०) शुक्ष होय (किं तु के०) तो पण (निष्पुष्यकानां के०) पुष्य रहित जनोनुं (वित्तं के०) इव्य, ते (पात्रदानंप्रति के०) पात्रदान प्रत्यें (नोजवित के०) थतुं नथी. त्यां दृष्टांत कहे ने के (श्राद्योऽर्दन् के०) श्रादिनाथ जे श्री क्पनदे वजी तीर्थंकर ते, (वर्षमेकं के०) एक पर्ष पर्यंत, (श्रव्योक्ष्येऽपि के०) श्रद्ध ने नेक्ष्य एटले श्रद्ध जेमां एवा (देशे के०) देशने विषे (प्रतिदि नं के०) प्रतिदिन (श्रामत् के०) जता हवा, परंतु श्रद्ध श्रश्मादिक कोइयें पारणा माटे श्राप्युं नहिं. श्रने (सुरुतिषु के०) एक सुरुतिजनने विषे रुतार्थ एवो (श्रेयांसस्तु के०) श्रेयांस राजा जे ने तेज (श्राद्यं के०) श्रदन करवा योग्य (एकं के०) एक एवा (स्वं के०) पोतानी पासे रहे ला शेरडीना रसने (प्रजोः के०) श्रीश्रादिनाथना (पारणेन के०) पारणा ने कराववे करीने सार्थक (रुतवान् के०) करतो हवो ॥ ७१ ॥

त्रांहिं श्रेयांस राजानी कथा कहे हे. गजपुर नगरने विषे हद्मस्य श्रंव स्थायें विहार करता एवा श्रीक्षनदेवजी मध्याह्नने समयें निक्काने माटे नमे हे परंतु ते समये निक्का ते वली शुं? अने कोण निक्काचर होय. ते वात कोइ पण जाणतुंन हतुं, एवामां पोताना घरनी गंची वारीमांथी श्री श्रेयांस कुमारें श्रीक्ष्पनदेवजीने जोया. ते जोता वेंतज ते श्रेयांस कुमारने जातिस्मरण क्वान ग्रत्पन्न थयुं, तेवारें श्रेयांसकुमार त्यांथी ग्रति प्रस्त पासें जइने प्रस्ते पोताने घेर तेडी लाव्यो. तेवामां कोइक जन घणा एक शेर डीना रसना कुंन नेट लाव्यो. तेज शेरडीना रसथी प्रस्ते पारणुं कराव्युं ते समय पांच दिव्य प्रगट थयां आकाशमांथी सुवर्णनी ग्रिष्ट थइ. कहे

खुं वे के " रिसहेस समं पत्तं, निरवक्तं इक्तुरससमाहारं ॥ सेयंस समो नावो, हिवक्त जइ मिग्गियं हुक्ता ॥ १ ॥ एम सुपात्रने दान आपवाषी तेज नवमां श्रेयांस मुक्तिने प्राप्त थयो ॥ ७१ ॥

यदिष तदिष शुद्धं चंदनावत्प्रदत्तं, किटिति फलिति पात्रेऽन्य त्र नो चार्विष स्वं॥ जलिधजलमसारं वारिवाहेऽसती स्या त्, मधुरमिष हि इग्धं पन्नगास्ये विषी स्यात्॥ ७०॥

श्रथः—(यदिषतदिष के०) सरसिवरसएवं पण (ग्रदं के०) बहेंतालीश दोषरिहत एवं दान, (चंदनावत के०) चंदनबालानी पेवें (पात्रे के०) पा त्रनेविषे (प्रदत्तं के०) दीधेलुं होय तो (फ्रिटित के०) उतावलयी (फ्रिटित के०) फले हे (श्रन्यत्र के०) कुपांत्रनेविषे (चार्विष के०) सारुं एवं श्रने (स्वं के०) पोतानुं इव्य दीधुं होय तो पण ते (नो के०) नथी फलतुं. केनी पेवें? तो के (श्रसारं के०) साररिहत एवं जे (जलधिजलं के०) समुइनुं खारुं जल हे ते (वारिवाहे के०) मेघनेविषे (श्रमृती स्थात् के०) श्रमृतवालुं याग्न श्रयीत् श्रमृत समान मिष्ट यायहे,श्रने (मधुरमिष के०) मधुर एवंपण (इग्धं के०) दूध हे तो पण ते (हि के०) निश्चें (पन्नगास्ये के०) सर्पना मुखने विषे (विषी स्थात् के०) विषवालुं याय हे श्रयीत् सुपान्नने दान श्रापेलुं श्रमृतसदृश फल श्रापे श्रने कुपान्नने श्रापेलुं दान विप जेवुं फल श्रापे हे ॥ श्राहीं चंदनवालानी कथा कहे हे. चंपानगरीनेविषे दिधवाहनराजा तेनी धारिणी नामा पटराणी हती ते राजाने वसमती नामनी दीकरी हती. प

चार्ण पर्माविता क्या कर्ड हैं प्राप्त स्ति प्राप्ति स्ति स्ति प्र ही रिणी नामा पटराणी हती. ते राजाने वसुमती नामनी दीकरी हती. प ही शतानीकराजायें चंपानगरी नम्न करी, तेवारें एक प्यादो हतो तेणे ते वसुमती कन्यानुं हरण कखुं, तेने कोशांबी नगरीमां आणी. ने वेचवा काढी त्यां धनावहनामा श्रेष्ठियें ते इव्यक्षापीने वेचाती जीधी. घेर आणी पोतानी पुत्री करी राखी, तेनुं चंदनबाजा एवं नाम स्थाप्युं. पही ते धनावह श्रेष्ठी नी मूजा नामें स्त्री हती तेना मनमां एवी शंका थइ जे आ कुमरीने महा रो धणी स्त्री करी राखशे, एवा हेनु यी तेने इःख देवा माटें इज जोती रहे हे. एकदा शेव बीजे गाम गया तेवारें अवसर पामीने ते मूजायें चंदनबाजा नुं शिर मुंनन करावीने वंधीखाने नाखी. पही धनावह श्रेष्ठी पाढो आव्यो तेवारें ते वात जाणीने त्रण उपवास वाजी चंदनबाजाने जमवा माटे ग्रुक

एवा अडदना बाकला स्पडाना खुणामां नाखीने आप्या. अने तेने जंबरा ज पर बेसाडी पोतें तेनी बेडी नंगाववा माटे खुहारने तेडवा गयो. एवा सम यमां श्रीवर्धमान स्वामी ठमासी तपना पारणा माटे त्यां आव्या. ते वखतें त्रणजपवासना अंतमां ते बाकला चंदनबालायें वर्धमानस्वामीने आप्या. त्यां पांच दिव्य प्रगट थयां. साडाबार कोटि सुवर्णनी वृष्टि आकाशमांथी पडी. नवो वेणिदंम आव्यो. अने लोढानी वेडीयो हती ते सुवर्णनी थइ गइ, पढी चं दनबाला, नगवान पासे दीका लइ केवलकान पामीने मोक्सुखने प्राप्त थइ. ए चंदनबालाये पात्रदान आप्युं, तेथी सजितने पामी ॥ ०१॥ दानप्रक्रमः॥

> स्त्रीविश्वमेश्चलित लोलमनानधीरः, श्रीस्यूलन्ड इव तादुशसंकटेपि ॥ चूर्णाञ्चवेदृषदयोपि विलीय ते च, वेपूर्यमेति विकृतिं ज्वलनात् पुनर्न ॥ ए३ ॥

अर्थः—(लोलमनाः के॰) चंचल हे मन जेनुं एवो पुरुष, (स्त्रीविच्न में: के॰) स्त्रीना हावनाव कटाक्तादिकें करी (चलित के॰) चलायमान थाय हे परंतु (धीरः के॰) धीर पुरुष जे हे ते (न के॰) चलायमान थतो नथी. केनी पेतें ? तो के (श्रीस्यूलनइश्व के॰) श्रीस्यूलनइनी पेतें. ते जे म (तादृशसंकटेषि के॰) कोश्यागणिकाना संकटने विषे पड्यो हतो पण चलायमान न थतो हवो. किव कहे हे खरी वात हे. जुवो (ज्वलनात् के॰) अप्रियकी (दृषद् के॰) पाषाण ते (चूर्णीनवेत् के॰) चूनो थइ जाय हे (च के॰) वली (अयोषि के॰) लोह पण (विलीयते के॰) विशेषें करी लय पामे हे परंतु (वैमूर्यं के॰) वेमूर्य नामा रत्न, जे हे ते (विकृतिं के॰) विकारने (नएति के॰) प्राप्त थतुं नथी. (पुनः के॰) परंतु विशेषें करी देदीप्यमान थाय हे ॥ ७३ ॥

श्रांहिं श्रीस्यूजिनइजीनी कथा कहे हो. पामजीपुर नगरें नंदराजानो प्रधान शकमाज नामें हतो तेनो एक स्यूजिनइ श्रने बीजो सरियो ए बे पुत्र हता तेमां स्यूजिनई तो कोशावेश्याने त्यां साडी बार करोड सुवर्णनो व्यय कखो श्रने नाना प्रकारना जोग जोगव्या. पही पोताना पिता शकमाज नुं मरण सांजजीने ते स्यूजिनइने तरत वैराग्य उत्पन्न थवाथी श्रीसंनू तिविजय ग्रस्नी पासे दीक्षा ग्रहण करी. चोमासुं करवा माटे श्रीग्रस्नी

कर्पूरप्रकर, अर्थ तथा कथा सहित.

श्राज्ञाथी चार मास कोशावेश्याने घरे चित्रशालीयुक्त घरमां रह्यो त्यां श्र नेक प्रकारना हाव, नाव, कटाक्त ते वेश्यायें कछा. परंतु तेथी लगार पण चलायमान थयो निहं. एम कामराजने जींतीने कोशावेश्याने बोध कछो. चातुर्माती पूर्ण थयेथी गुरुयें त्रण वार इःकरकार कहीने तेनां वखाण कछां. कह्यं हे के, "वेश्या रागवती सदा तदनुगा, पड्नीरसेनोंजनं, छुन्नं धाम मनोहरं वपुरहो नव्यं वयोयोवनं ॥ कालोयं जलदागमस्तदिषयः कामं जि गाय क्णात्, तं वंदे युवतिप्रबोधचतुरंश्रीस्यूलनई गुरुं ॥ १ ॥ नावार्थः—जे स्यूलनइने कोशावेश्या श्रनुराग वाली तथा पोताना कहेवा प्रमाणे चाल नारी श्रने ते कोशावेश्याना घरमां रहेवाथी पद्रस नोजन मलतुं हतुं श्र ने मनोहर धाममां रहेता हता. पोतानुं तथा वेश्यानुं पण नवयोवन हतुं तेमज समय पण वर्षाक्तुनो हतो तो पण स्यूलिनइमुनियें महाप्रवल कोइ यी न जींताय एवा कामदेवने जींतीने ते क़ोशावेश्याने पण एक क्ल्णमां ज बोध कस्त्रो. एवा ते श्रीस्यूलिनइ महामुनिने किव कहे हे के हुं वारंवार प्रणाम कहं हुं, कारण कोइयी न बने तेवुं तेणें काम कह्युं ॥ ०३ ॥

> सजूपयोवनगुणागतसानुराग, वित्तेशद्ततनयान यनेष्वजेदात् ॥ वजेण वज्रमुनिना स्वयशोर्ण साऽसत्, संगाशुचि कचिदपूयत शीलमेव॥७४॥

अर्थः—(सपूप के०) सारं रूप (योवन के०) सारं योवन अने (गु एण के०) साराग्रणो तेणें करी (आगतसानुराग के०) आत्यो हे अत्यंत स्नेंह जेने एवी (वित्तेशदत्ततनया के०) धनदत्तनामा व्यवहारीनी कन्या ते तेना पितायें आपी(नयनेष्वजेदात् के०)तो पण ते कन्याना नयनवाणें करी नजेदाणा एवा (वज्रेण के०) वज्रसमान (वज्रमुनिना के०) वज्रमुनिये (क्वित् के०) कोइ वखत (असत्संगाग्रुचि के०) असत्संगथकी अपवित्र थयेलुं एवं (शीलमेव के०) शीलनेज (स्वयशोऽर्णसा के०) पोताना यश रूप जलेंकरी (अपूयत के०) पवित्र करता हवा. अर्थात् स्त्रीना हावजावयी नहिं पराजय पामेला वज्रस्वामीयें कोइक दिवस कुसंगयी अपवित्र ययेला एवा शीलने यशरूपजलें करी पवित्र कर्षु ॥ ए४ ॥

आंहिं वज्जस्वामीनो द्रष्टांत होवाथी ते पूर्वे कथा कही हे तो पण फरी

संक्षेपची कहे हे, कह्यं हे के ॥ जो कन्नाइ घणेणय, निमंति उ ज्रवणंमि गिहि वयणे ॥ नयरिम कुसुमनामे, तं वयरिसिं नमंसामि ॥१॥ एक दिवस धन दत्तव्यवहारीना गृहनेविषे आवेजी साध्वी उयें दत्तव्यवहारीनी पुत्री पासें वज्रस्वामीना रूपनुं वर्णन कह्यं. ते सांनजी ते कन्याये मनमां विचाखुं जे महारे वज्रस्वामीनेज परण वुं अने जो तेम नहीं वने तो अग्निमां पडीने मरण करवुं पण अन्यजननुं पाणियहण करवुं निहं. पढी ते कन्यानो बाप कोटिधन जड़ने वज्रस्वामी पासें आव्यो अने कह्यं के हे स्वामिन! आ कन्याने अने धनने अंगीकार करो. त्यारें वज्रस्वामीये कह्यं के अमें जो प्रमदाने इन्नीयें तो अमारुं यितपणुं क्यां रहे? ते विचार करो. एवा तेमना उपदेशयकी कन्याने पण बोध एयो. तेवारें ते कन्यायें पण वैराग्य पामीने वज्रस्वामीना हाथयीज दीक्हा यहण करी ॥ ए४ ॥

तपःशिवकुमारवच्चरित गंदिरस्थोऽपि यः, सदेवपरिपद्यपिद्यु तिमहत्त्वविरूफूर्तिनृत्॥ कृज्ञान्वकृज्ञातापनोल्लसितवर्णिकं कां चनं, न धातुषु विशिष्टतां नृपतिमोलितामेति च ॥ ७५॥

अर्थः—(यः के॰) जे पुरुष, (मंदिरस्थोऽिष के॰) मंदिरने विषे रह्यों वतो पण (शिवकुमारवत् के॰) शिवकुमारनी पेठें एटले जेम जंबुस्नामीनों जीव पूर्वला नवे शिवकुमार नामे हतो तेणे मंदिरने विषे रह्या वतां पण पांचशो अंतःपुरीमध्यें वार वर्ष पर्यंत तप कखुं अने पारणामां आंबिल कखुं, तेनी पेठें (तपः के॰) तपने (चरित के॰) कोइ पण पुरुष घरने विषे रह्यो वतो पण आचरण करे वे तो (सः के॰) ते पुरुष, (देवपरिषद्यंपि के॰) देवतार्जनी सनाने विषे पण (द्युतिमहत्त्वविस्फूर्तिनृत् के॰) तेज ना महत्त्वनी विस्फूर्तिने धारण करनारो थाय वे. त्यां दृष्टांत कहे वे कें (कशान्वकशतापनोद्यसितवर्णिकं के॰) अव्याना महोटा तापें करी प्रकाशित वे वर्ण जेनो एवं (कांचनं के॰) सुवर्ण जे वे ते, (धातुषु के॰) सर्वधातुर्जने विषे (विशिष्टतां के॰) विशेषपणाने ग्रुं (न एति के॰) न पामे ? ना पामे वे (च के॰) वली (नृपतिमोलितां के॰) राजाना मुकुटपणाने ग्रुं नथी प्राप्त थातुं ? ना प्राप्त थायज वे. एम घरमां वेशी तप करनारा पण महा अविमां तपावेला सुवर्णनी पेठें सर्वने विषे उत्तमताने पामे वे. एम जाणवुं.

श्रांहिं शिवकुमारनी कथा कहे हो. शिवकुमार पूर्वनवने विषे श्रार्डमंपिता स्त्रीना पितपणामां चारित्रने विराधवे करी दीक् लेवामां समर्थ थयो निहं परंतु त्यां बत्रीश श्रंतः पुरीना मध्यमां रहीने निरंतर हु हु तपने पारणे श्रांबिल करतो एरीतें तेज नगरमां हृढधर्मी श्रावक पासें रह्यो थको साधुनी पेहें श्रुन्न पाणी वहोरी लावीने जोजन करतो हतो, एम बार वर्ष पर्यंत एवं तप कखं. पही ते मरण पामीने महाद्युतिमान देव थयो. ते देवनुं श्रद्धंत कांतिमत्त्व जोइने श्रेणिक राजाना मनमां विस्मय थयो. तेवारें ते वात श्रीवीरनगवानने पूढी श्रीवीरस्वामीयें शिवकुमारना पूर्वना सर्व जव कह्या. वली कह्यं के ए देवता एज नगरीनेविषे क्षजनदेव नामा श्रेष्ठी रहे हो, तेनी धारिणी नामनी स्त्रीनी कूखें श्रावी श्रीजंबु कुमार नाम्में पुत्रपणे श्रवतरज्ञे. ते चारित्र लइ केवलकान पामीने मोक्तने प्राप्त थाज़े. ते सांजलीने त्यां जंबुस्वामीनो पितृव्य श्रनाहत नामा देव हतो ते नृत्य करवा लाग्यो॥ एए॥

तपःसकलकर्मजििवधिलिधिकित्रिश्चितं, ग्रहे पुरि च छर्जगो न्य प्यहह नंदिषेणोिषजः॥ त्रते द्यामतपःपरःसुरनरैकवंद्योऽज्ञव, ज्विज्वलनतापितः,श्रयति दीप्तिमामोघटः ॥ ए६॥ तपोदारं॥

अर्थः—(सकलकर्मनिद् के०) सर्व कर्मने नेदनारुं अने (विविधलिध्य कृत् के०) अनेक प्रकारनी लिध्यने करनारुं एवं (तपः के०) तप (निश्चितं क्षे०) निश्चें हे (अहह के०) खेदें (गृहे के०) घरने विषे (च के०) वली (पुरि के०) पुरने विषे (इनेगोपि के०) इर्नाग्य एवो पण (नंदिपेणोहिजः के०) नंदिषेण नामा ब्राह्मण, (व्रते के०) व्रतने विषे (शमतपःपरः के०) शम अने तपने विषे तत्पर हतो (सुरनरेकवंद्यः के०) देवताने अने मनुष्यने एकज वंदन करवा योग्य (अनवत् के०) थतो हवो. त्यां दृष्टांत कहे हे. के जेम (आमोघटः के०) माटीनो काचो घडो, होय ते (रिव ज्वलनतापितः के०) सूर्य अने अिद्या तेणे ताप पमाड्यो हतो (दीप्तिं के०) दीप्तिने (अयित के०) आश्रय करे हे. एटले प्रकाशने पामे हे ॥ ए६ ॥

आहिं नंदीवेण ब्राह्मणनी कथा कहे हे. कोई नंदिवेण ब्राह्मण हतो ते जन्मतांज तेनां माता पिता मरण पाम्यां. कोई रीतें करी तेना संबंधी उयें पोषण करी महोटो कखो. जन्मथी आरंजीने इर्जागी हतो, तेने ते ना मामायें कह्युं के माहरे सात दीकरी हे तेमांथी तुने हुं एक दीकरी आपीश. तेवा जोनमां नाखी तेने घरनां काम करवामां राख्यो. परंतु ते इर्नागी होवाथी कोइ पण दीकरी तेने परणवानी इञ्चा करती न हती. तेवारें नंदिषेण मरवानो विचार करी कोइ पर्वत उपर चढ्यो. त्यां साधुयें प्रतिबोध आप्यो, तेथी प्रवज्या यहण करी. महोटुं तप कखुं, ते नंदिषे णनां वखाण इंडें पोतानी सनामां कखां. ते साननीने बे देवतायें त्यां आवीने ते नंदिषेणनी परीक्वा करी. तो पण ते क्षि सत्यथकी चलायमा न थयो नहिं. हजारो वर्ष तप करी श्रंतमां दौर्जाग्यना स्मरणथकी एवं नियाणुं कखुं जे हुं आवता नवसां स्त्रीवलन याउं! एम विचार करतां म रण पामीने वसुदेव दशाईपणे उत्पन्न ययो. त्यां स्त्रीयो, तेनुं पडखुं क्यारें पण मूकती न हती. अने सर्वत्र. क्रीडा करतो हतो. तेवुं जोइने सर्व गामना महाजनें समुड्विजय राजा पासें जड़ने कहां के आ महोटो अधर्म वे जे सर्वत्र वसुदेव दशाई निर्ज़ अको क्रीडा करे हो. ते वात सांचली राजायें कह्यं के, वसुदेवें पोताना घरना कोटमांज क्रीडा करवी. बीजे स्थलें बाहेर क्यांही फरवुं नही. ते वात दासीना मुखयी वसुदेवें जाणी. ने पोतानुं अ पमान थवाथी वसुदेवें बाहेर जइने बहोंतेर हजार राजकन्याउ तथा वि द्याधर कन्यार्त परणी. ते जन्ममां ते वसुदेवें पूर्ण जोग जोगव्या ॥ ए६ ॥

दानं वित्तव्ययेनापरयुवतिरतित्यागतः शीललीला, ना नाहाराप्रचारात्तपइह तदहो हृद्यपध्यानहीनाः ॥ नावं कु वंतु येनाप्यिखलसुखनृतां वटकलस्येव सुक्ति, मिष्टास्वा दैर्यदि स्यान्ननुतनुपदुतां कोन तां कारयेत्तत् ॥ ७७॥

अर्थः—(वित्तव्ययेन के०) इव्यना व्ययें करी एटले इव्य वावरवे करी (दानं के०) दान देवाय हो, अने (अपरयुवितरितत्यागतः के०) पर स्त्रीने विषे रितना त्यागथकी (शीललीला के०) शीलनी लीला प्राप्त घाय हो तथा (नानाहाराप्रचारात् के०) नानाप्रकारना आहारना परित्या गयकी (इह के०) आ लोकने विषे (तपः के०) तप, थाय हे (तत् के०) तमाटे (अहो के०) आश्चर्यें हे जव्यजनो! ते पूर्वोक्त तप वगेरेमां (ह

दि के०) हृदयने विषे (अपध्यानहीनाः के०) छृष्ट्यानरहित बता (नावंकुर्वंतु के०) नावने करो. कारण के (येन के०) जे नावें करी (अखिलसुखनृतां अपि के०) समय सुखने धारण करनारा एवा पुरुषोनी मध्यें पण (वब्कलस्य इव के०) वब्कलसुनिनी जेम (मुक्तिः के०) मुक्ति थइ, तेम पूर्वोक्त नावयुक्त दानादिकें करी बीजा जननी मुक्ति थाय बे, वली (यदि के०) जो (मिष्टास्वादैः के०) मिष्टनोजनोयें करी मुक्ति (स्यात् के०) जो (तत् के०) तो (नतु के०) वितर्कें (कः के०) कयो पुरुष, (तां के०) ते (तनुपदुतां के०) शरीरपदुताने (नकारयेत् के०) न करे. ते कारण माटे सङ्गावना शिवाय ए दानादिक सर्व व्यर्थ जाणवुं. अर्थात् सङ्गावना युक्त दानादिक करवाथी मुक्ति आय बे.

आ श्लोकमां वल्कलमुनिनो हंष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. पोत नपुर नगरने विषे सोमचंड् राजा इतो तेनी धारिणी नामें स्त्री इती तेने प्रसन्नचं नामा पुत्र थयो. एकदा राजायें पोताना मस्तकमां पत्नी जोयुं तेथी तरत वैराग्य उत्पन्न थवाथी पोतें पोतानी नार्या सहित तापसी दी-क्वा यहण करी. पाढल प्रसन्नचंइ पढ़ी तेनो पुत्र, राज्य करवा लाग्यो. अ ने ते प्रसन्नचंइ राजानी माता तापसणी हती तेने केटला एक दिवस प बी वननेविषे एक पुत्रनो प्रसव थयो ते तापसी स्तिकाना रोगथकी म रण पामी. पढ़ी ते पुत्रने सोमचंड तापसें हजु हजु उढ़ेरीने महोटो क खो. ते पुत्रनुं नाम वक्कलचीरी पाडगुं. पढी ते वक्कलचीरी पोताना पिता ने माटे वनमांथी फलफूल लावी आपतो हतो, एकदा प्रसन्नचंड् राजा ने खंबर पड़ी के माहारों जाइ वनमां हे अने माता मरण पामी हे माटे मारा नाइने वनमांथी तेडावी जावुं. एम विचारी गाममां पटह वग डाव्यो जे माहरा नाइ वब्कलचीरीने जे गाममां तेडी लावे, तेने जे अ नीष्ट मागे ते आपुं. ते वात गामनी गणिकार्चयें स्वीकार करी पढ़ी ताप सीनो वेश धारण करीने ते वनमां गई. वक्क स्वीरीयें ते गणिका उने पूरव्यं जे क्यां तमारा आश्रमो हे ? कया वनमां तमारो निवास हे ? त्या रें ते कहेवा लागीर्र जे अमें पोतनपुरमां रहीयें वैयें, माटे अमारा वनमां तमो खावो. अमें पण तमारी प्रतिपत्ति करंग्रं. एम कही ते तापसी चेयें लाडु हता ते वल्कलचीरीने आप्या. तेने वल्कलचीरीयें पूर्वां के आ ग्रं

हे ? त्यारें ते स्त्री उपें कहां के, आ अमारा वननां फल हे. पही ते वेश्या उपें पोताना अंगनो स्पर्श कराव्यो. वक्क में पूर्व्युं आ ग्रुं? गणिकार्र कहेवा लागी के जे पोतनपुरमां आवीने फलो खाय हे, तेने आ प्रकारनां फल मखे हे. एम करी लोज पमाडीने ते वल्कलचीरीने लइने पोताना नगरमां गणिकार्च त्रावी. ते वब्कलचीरी मुनि लाहुमां लोन पाम्यो यको नित्य वेक्याने घेर जवा लाग्यो, तदनंतर वेक्यां उपें पोतानी दीकरीनी सार्थें पाणियहण कराव्युं,ते लगननी वखत मृदंगनो शब्द घवा लाग्यो, अने ध वल गावा मांमघां तेनो नाद चोतरफ प्रसार थयो ते सांचली पोताना नाइना न त्राववाथी शोकातुर थयेला प्रसन्नचंड राजायें प्रवर्ध जे त्रा म होत्सव कोने घेर यावा मांम्या है ? तेने लोकोयें कह्यं के वेश्याने घेर ते मनी कन्यानो विवाह थाय हें, तेनो महोत्सव वर्त्ते हे. ते सांचली राजा यें वेक्यार्रने बोलावी पूत्रगुं वेक्यार्रयें कह्यं के तमारा जाइने खमो तेडी लाव्यां वैयें अने अमारी कन्यानुं पाणियहण पण कराव्युं. ए वचन सां जिली राजा संतोष पाम्यो, अने तेने घटे तेवुं इव्य आप्युं. पढी राजा ते वब्कजचीरीने पोताने घेर तेडी जाव्यो. त्यां घोडो योडो व्यवहार जाएावा लाग्यो कारण के पशुर्र पण शीखव्या हता व्यवहारने जाणे हे, तो मनुष्य जाएो, तेमां ग्रंज कहेवुं ? एक दिवस पोताना पिताने वांदवाने माटें प्रस न्नचंड राजा वनमां गयो, वल्कलचीरी पोताना बापनी पर्णकूटीमां गयो. त्यां पोताना बापना उपकरणनुं प्रतिखेखन करतां हतां ते वल्कलचीरीने वैराग्य उत्पन्न थयो तदनंतर केवलक्वान पामी मुक्तिने प्राप्त थयो ॥ए७॥ :

> योदानं न ददों तथेव न तपःशिलाईदर्शागमे, य स्यानार्ययुजोऽत्र केवलमजूजावादिलानंदने ॥ स्व र्णाञो ज्वलनेन विह्नदपदोर्गाढं मियोघडने, रादशें रिवणा महोषिधवने किं तु स्वनावेन ना ॥ ००॥

अर्थः-(यः के०) जे इलापुत्र, (दानं के०) दानने (नददौ के०) आपतो न हतो (तथेव के०) तेमज वली (शीलाऽर्हदचींगमे के०) शील, अने जिननी पूजा तथा आगम अवण तेने विषे (अनार्ययुजः के०) अ नार्य लोकोने योजना करता एवा (यस्य के०) जे इलापुत्र तेने (नतपः के॰) तप न हतुं परंतु (अत्र के॰) इहां ए (इलानंदने के॰) इलानंदनने विषे (नावात् के॰) नावना नाववा यकीज (केवलं के॰) केवलकान (अन्तू के॰) होतुं हवुं. त्यां हष्टांत कहे हे. के (स्वर्णाईो के॰) सुवर्णाईने विषे (ज्वलनेन के॰) अग्नियें करी (ना के॰) कांति उत्पन्न याय हे, अने (विह्वहपदोः के॰) चकमकना पाषाणनेविषे (गाढंमियोघहनैः के॰) अत्यंत परस्पर घसवा यकी प्रकाश उत्पन्न याय हे. अने (आदर्शें के॰) दर्पणनेविष्ने (रविणा के॰) सूर्ययकी कांति उत्पन्न याय हे (किंतु के॰) खं वली तो के (महोषधिवने के॰) महोपधिना वनने विषे (स्वनावेन के॰) स्वनावें करीने पण कांति याय हे. एम जीवमां पण जाणवुं ॥ ००॥

श्रांहिं इलापुत्रनी कथा कहे हे. सांकेतिक पुरनेविषे धनदत्त नामा श्रे ष्ठी वसे हे. तेने इलाची नामापुत्रं हतो, एक दिवस तेणें गवाक्समांथी सु रूपवती क़ोइ नटडीने जोइने मोह पामी नाटकीयाने कोइने मुखें कहेवरा व्युं के तारी पुत्री मने तुं परणाव्य. ते सांचली नट कहेवा लाग्यों के ए वट लीने अमारी न्यातमां आवे तो हुं मारी पुत्री आपुं. तेवारें कन्याना लोजें करी इलाचीपुत्रें ते वात अंगीकार करी वटलीने नट थयो अनेक नाटक करी घणुंज इव्य उपार्जन कख़ुं. एक दिवस जितशत्रुराजानी पासें नाटक करवा माटे इलापुत्र, वांसडा उपर चड्यो हे ते समय जाणीयें विजलीनो जबकारोज होय जी ? एवी नीचें उनेली नटीनी उपर राजानी दृष्टि पडी. तेने जोइ मोह पामीने राजा मनमां विचारे हे जे जो आ वांसडेथी नीचें पडीने मरण पामे तो हुं ए नटीने यहण करुं. एवी राजाना मननी वात इलाचीपुत्रें पण जाणी जे हवे राजा मने दान आपतो नथी अने एनी न जर मारी स्त्रीनी उपर पड़ी हे राजा एनी उपर आसक थयो है. ते समयमां कोइ व्यवहारीने घेर वहोरवा आवेला साधुने व्यवहारीयानी स्त्रीयें अन नुं दान ञ्राप्युं, ते साधुनी दृष्टि अन्न उपर हती पण ते स्त्री उपर पड़ी न ही. अने तेवी तेनी नावना पण यइ नहीं ते साधुनी तथा राजानी दृष्टिने जोइने इलाचीपुत्रने मनमां वैराग्य उत्पन्न थयो. त्यारें विचारतो हवो के अरे धिकार हजो मने जें हुं महोटा कुलमां उत्पन्न ययेलो बतां केवी मावी बुद्धि मने उपनी के जे बुद्धि को इहीन जातिवाला मनुष्यने पण न थाय? अरे में विषयासिकयेंकरी मारा आत्मानें डुगैतिमां पाड्यो ए प्रकारें संसा

रथकी मन उत्रखुं अने स्वस्वरूपमां मन तद्धीन यतां यतां एताचीपुत्रने वंश उपर रह्यां रह्यांज केवल कान उत्पन्न थयुं. पढी त्यां शासन देवतायें आवी रजोहरणादिक साधुनो वेश आप्यो. त्यांज एलाचीपुत्रें देशना दे वा मांमी. राजादिकने प्रतिबोध आप्यो॥ एए॥

मातुर्गर्जावतारे चतुरधिकदशस्वप्तसंसूचितोप्राक्, जातो यावेकरात्रोत्वजितसगरयोः पुण्ययोः पश्य जातिं ॥ ज्ञाग ज्ञांत्पादमिं हैरसुरसुरनरैः सेवनीयस्त्रिलोकी, नायोऽर्हत्रेक ज्ञासीद् जरतनृपनतोऽन्यश्च चक्री वितीयः ॥ ७ए ॥

अर्थः—(प्राक् के०) पहेलां (मातुः के०) माताना (गर्नावतारे के०) गर्ना वतारने विषे (चहुरिकदशस्त्रप्तसंसूचिते के०) च च स्वप्नायें करी नाग्यसं पित्रवाला एवा (यो के०) जे वेहु (एकरात्रों के०) एक रात्रिनेविषे (जाते के०) उत्पन्न थया ते (तुके०) वली (पुण्ययोः के०) पुण्यशाली एवा (अजितसग ख्योः के०) श्रीअजितनाथ तीर्थकरनी अने सगरचकीनी (जातिं के०) जातिने हे नव्यजनो! (पश्य के०) जुवो (एकः के०) एक श्रीअजितनाथतो (आग नींत्पादं के०) गर्ने रहेवाना आरंजधी ते उत्पत्तिपर्यंत (इंदेः के०) इंदोयें तथा (असुरसुरनरेः के०) असुर देवो तथा मनुष्योयें (सेवनीयः के०) सेवन क रवायोग्य अने (त्रिलोकीनाथः के०) त्रण लोकना नाथ एवा (एकः के०) एक (अर्दन् के०) तीर्थकर थया (च के०) वली (अन्यः के०) अन्य (हितीयः के०) बीजा (नरतनृपनतः के०) चक्रवर्त्त थया। एए॥

श्राहिं श्रीश्रजितनाथनो तथा सगरचक्रवर्त्तानो हष्टांत होवाथी प्रथम श्रीश्रजितनाथ तीर्थंकरनी कथा कहे हे. शावस्तीनगरीने विषे जितशत्रु रा जा तेमनी विजया नामे राणीना पुत्र श्रीश्रजितनाथ नगवान ते ज्यारें गर्न मां रह्या त्यारें तेमनी मातायें वृषनादिक चवद स्वप्नो दीवां तथा प्रञ्जी गर्नगत थया, ते दिवसथी राजा साथें विजया राणीरमे तो तेमां राणीज जीतवा लाग्यां. त्यारें राजायें विचाखुं जे श्रा प्रनाव एना पेटमां गर्न र हेलो हे तेनो जाणवो परंतु कांहि मंत्रजंत्रथी राणी जींतती नथी. माटे प्रसवथया पही तेनुं नाम श्रजित पाडशुं. पही जन्मथया नंतर जन्मोत्सव

थयो उपन्न कुमारीकायें आवी स्नितका कमें कखुं. चोशवइंडोयें मेरपर्वतनी उपर स्नात्रमहोत्सव कखो. ते स्वामीनो सुवर्ण सम वर्ण हतो, अने गजतुं लांउन हतुं. साडाचारसो धनुपनुं शरीरमान हतुं बोहोंतेरलाख पूर्व आयुष्य हतुं राज्यनोगवी सांवत्सरिकदान दइ चारित्र लइ, आवे कर्मनो नाश करी के वल ज्ञान पामी. तीर्थकरनी लक्क्षीनो उपनोग करीने मुक्तिने प्राप्त थया.

हवे सागरचक्रवर्तांनो कथा कहे हे. विनीता नगरीयें सुमित्र नामे रा जा तेनी यशोमती राणीनी कुक्तिमां केसरी सिंहनी पेहें सगरचक्री उत्पन्न थया. गर्नरहेवाने समयें तेमनी माताने पण ह्यनादिक चोद स्वन्न थयां पुत्र जन्म्या पढ़ी तेनुं नाम सगर पाड्युं आयुधशालामां सगर कुमार गया, त्यां आयुधशालाने चलायमान करतो चक्र रत्न उपन्या पढ़ी दक्तिण नर तार्हना त्रणखंम साधिने उत्तर नंरतना त्रण खंमने साध्यानंतर अयोध्या मां आव्या पढ़ी बत्रीश हजार राजायें सगरचक्रीने चक्रवर्त्तनुं पद आपी अत्रियं कथो. एकदिवस अजितनाथ स्वामीनी वाणीने सांनली ते चक्री यें श्रीशत्रंजयपर्वतनी उपर ताम्रमय श्रीजन प्रासाद करावी तेमां रत्नमय बिंवो पथराव्यां संघपित थइने अति विस्तारथी तीर्थ यात्रा करी अंते प्रवज्या यहण करीने मुक्तिरूप लक्क्षीने वरता हवा ए सगरचक्रवर्त्तांनी कथा.

तुख्यं तीर्याधिपत्यं बलमि सहद्यां सर्वतीर्थंकराणां, किं तु श्रीमिल्लानायः प्रथयित सुकृतेः किंचिदाश्चर्यमुच्चेः॥ पूर्वाह्रे यस्य जङ्गे व्रतमिष सुलनं केवलं चापराह्रे, ज्ञानं नानेयवीरप्रमृतिजिनपतेरप्यनूयचिरेण॥ए०॥

अर्थः— (तीर्याधिपत्यं के०) तीर्याधिपतिपणुं ते (सर्वतीर्थंकराणां के०) सर्व तीर्थंकरोनुं (तुव्यं के०) तुत्य ने तथा (बलमिप के०) बल पण सर्वतीर्थंकरोनुं (सहशं के०) सरखुं ने, (िकंतु के०) तो पण (श्री मिल्लितायः के०) श्रीमिल्लिनाय (उच्चैः के०) उत्तम एवा (सुरुतैः के०) सुरुतोयें करी (िकंचित् के०) कांइक (आश्रयं के०) आश्रयने (प्रयय ति के०) विस्तार करे ने, ग्रुं आश्रयं विस्तारे ने तो के (यस्य के०) जे श्रीमिल्लिनायने (पूर्वोत्ते के०) पूर्वप्रहरने विषे (व्रतमिष के०) व्रत पण प्राप्त थयुं (च के०) वली (अपराह्ने के०) अपराह्न कालने विषे (सुल्जं

के०) सुलन एवं (केवलंकानं के०) केवल कान (जक्ने के०) उपन्यं अने (नानेववीरप्रनृतिजिनपतेः अपि के०) क्षनदेवथी वीरनगवान् प्रमुख जिनपतिने पण (यत् के०) जे केवलकान (चिरेण के०) घणाकालें (अनू त् के०) ययुं. अर्थात् सर्व तीर्थंकर थकी मिल्लीनाथ तीर्थंकरनो एटलो वि शेष के बीजा तीर्थंकरने दीका लीधा पढी घणाकालें केवलकान थयुं अने मिल्लिनाथने एकदिवसमांज व्रतादि सर्व प्राप्त थयां ॥ ए०॥

श्राहीं मिलीनाथनी कथा कहे हो. मिथिलानगरीनेविषे श्रीकुंजनामा राजानी स्त्री प्रजावती राणीयें च उदस्तप्तायें सूचित तथा नील जेनो वर्ण हो, कुंजनुं जेने लांहन हो, पचवीश धनुप जेना देहनुं प्रमाण हो एवा मिल नाथ तीर्थकरने जन्म श्राप्यो. इंडोयें जन्ममहोत्सव कखो यौवन श्रवस्था मां पण जन्मधीज ब्रह्मचारी होवाथी पाणियहण कखुं नही श्रने राज्य पण यहण कखुं निहं. सांवत्सरिक दान दीधा पही स्वयमेव दीका यहण करी दिवसना प्रथम प्रहरमां व्रतनुं यहण थयुं श्रने तेज दिवसना बीजा प्रहरमां प्रश्नने केवलक्षान उत्पन्न थयुं ॥ ए० ॥ इति धमेप्रकरः समाप्तः ॥

श्रुत्वाह्वानंस्त्रियस्तामनुसरितरसोहंसकोन्नादपादे, ना शोकः स्पष्टमात्रस्तिलककुरुवकोचंबनाालंगनाच्यां ॥ पुष्येदक्राब्जवासाधिकरससुरयाकेसरश्चेदिकारो, ऽप्ये पांतत्सत्यकीवाधिकविषयरितर्यातुकिं नो नवार्ति॥ए१॥

अर्थः—(स्वियः के॰) स्वीना (आह्वानं के॰) आह्वानने (अत्वा के॰) अवण करीने (रसः के॰) पारो, ते (तां के॰) ते स्वीने (अनुसरित के॰) अनुसरे हे, एटले तेनी पहवाहे जाय हे. तथा (हंसकोन्नादपादेन के॰) नेपुरें करी, अधिक नाद करता एवा स्वीना पगे करीने (स्प्रप्टमात्रः के॰) स्पर्श कराणो एवो (अशोकः के॰) अशोक हक्त ते (पुष्येत् के॰) पोषण ने प्राप्त थाय हे. तथा (तिलक्कुरबकों के॰) तिलक अने हुरबकनो हक्त, (चुंबनालिंगनाच्यां के॰) स्वीना चुंबन अने आलिंगनथकी पोषणने प्राप्त थाय हे. अर्थात् बेहु हक्तां पुष्पो विसिकत थाय हे. (वक्कान्नवासाधिकर ससुरया के॰) कामिनीना मुख कमलना परिमलें करी अधिक हे रस जेमां एव। मिदरायें करी हांट्यो एवो (केसरः के॰) केसर नामा हक्त पोषण था

य है. (चेत् के०) जो वली (एपामपि के०) ए पूर्वोक्त वृक्त वगेरे एकेंडि य जीवोने पण (विकारः के०) विषय विकार उत्पन्न थाय हे (तत् के०) तो (सत्यकीव के०) सत्यकीनी पेते (अधिकविषयरतिः के०) अधिक ते विषयमां प्रीति जेने एवो जीव, (जवार्त्ति के०) संसारना इःखने (किं कें। केम (नो के। निह (यातु के। पामे. अर्थात् एकेंड्यिने पूर्वी क्त विषयरसनी आसक्ति हे,तो सत्यकीनी पेहें बीजाने थाय तेमां तो ग्रंज कहेवुं ? तथा तेने संसार इःखनी वृद्धि प्राप्त थाय तेमां ग्रुं नवाइ ? ॥ ए१॥ आंहिं सत्यकी विद्याधरनी कथा कहे हो. चेजाराजानी सुज्येष्ठा नामे महोटी दीकरी साध्वी थइ हती तेने घणी खरूपवाली जोइने पेढालविद्या धरे चमरनुं रूप धारण करीने जोगवी तेने सत्यकी नामें पुत्र थयो तेणें रो हिणी प्रकृति प्रमुख विद्यार्च साधी पोतानी माताना शीलना लोपक पेढाल ने मारी नाख्यो ते सत्यकी महा समकेत धारी त्रणे काल जिनाचीमां त त्पर यइ तीर्थंकर नामकर्म उपार्क्तन करतो ह्वो. तदनंतर ते स्त्रीलंपट थ यो थको राजादिकनी स्त्रियोने विद्याबलयी लइ आवीने जोगववा लाग्यो, एकदा तेने मारवा माटे उज्जयणी नगरीयें चंइप्रद्योतन राजायें उद्घोषण कराव्युं तेवारें उमा नामें वेश्यायें राजाने आवी कह्यं के सत्यकीने हुं व श करीश पढ़ी तमे मारजो एम कही शृंगार सजीने उमा वेश्या सात्यकीने मोह उपजाववा माटे जेवी रीतें सात्यकी तेना अंगने जूए तेवी रीतें उ घाडां अंग मूकीने प्रतिदिवस अगासीमां आवी बेसे. एक दिवस तिहां बेवेजी जमावेज्याने जोइने ते सत्यकीने मोह थयो तेवारें जुब्ध थइने बी जी स्त्रियोथी विरक्त थइ तेज स्त्रीने जोगववा जाग्यो. एकदा उमायें तेने ए कांतमां पूर्व्युं जे, तमारी पासे शी शी विद्या है ? त्यारे तेऐं कह्युं के मारे रोहि एया दिक विद्या डी हो तो मारा अंगमां हो परंतु ज्यारें मैशुन करुं हुं त्यारें तेने मारा खजमां राखुं बुं त्यारें मारुं बल क्यां चालतुं नथी ते सर्वे वा त उमायें राजानी पासें निवेदन करी. वली उमायें कहां के शब्दवेधि जो कोई पुरुष होय तो जे वखत ए मारे विषे आसक थयेजो होय ते वखत ते सिद्ध एने मारे तो तरत मरण पामे अन्यथा मरे नही, पढ़ी राजायें शब्दवेधि पुरुषोनी परीक्वा करवाने अर्थे एकशो आत कमल पत्र चेदाव्यां ते पुरुषें उमानी साथें मैथुनमां आसक्त थयेला सत्यकीने मारी नाख्यो,

सात्यकी मरीने नरकें गयो पढ़ी तेना मित्र कालसंदीपक विद्याधरें नगरने चूरण करवा माटे एक शिला नगर उपर विकूर्वी. राजा ज्यारें नोगादि करे, त्यारे ते विद्याधर सात्यकीनो मित्र आवीने कहे के जो तुं मिश्रुनावस्था ने रूपें करी सात्यकीने पूजे, तो तुजने जीववा दश्श निहं तो ताहरों ना श करीश आ वात सांजलीने राजायें जलाधारीमांहिं लिंगस्थापना करी तेनुं पूजन कखं ते दिवसथी लोकोमां लिंगपूजानो प्रचार चाव्यो. एम विषयासक प्राणी नरकें जाय ॥ ए ॥

संसारार एयमध्ये मधुरमुखक दुप्रांत जृत्का मधूर्तो, दक्का नमूढांश्च तत्तत्सुख जवजनेः प्राणिनोविप्रतार्य ॥ हत्वा तत्पुण्यवित्तं गमयति र्कुगतिं ब्रह्मदत्तं यथातत्, पूर्वश्चा तेव धीरः शिवमटति पुनस्तं तपोऽस्त्रेण जित्वा ॥ ए०॥

अर्थः—(संसारारण्यमध्ये के०) संसाररूप वगडानेविषे (मधुरमुखक दुप्रांतनृत् के०) प्रथम मधुर अने अंते कडवा फलनो देनार एवो (काम धूर्मः के०) काम रूप धूर्म, (तत्तरमुखलवनजनैः के०) ते तु विनिश्चर एवा लवमात्र मुखना जोगववायें करीने (मूढान् के०) मढ़ (च के०) वली (दक्षान् के०) माह्या एवा (प्राणिनः के०) प्राणियोने (विप्रतार्य के०) वेतरीने (तत्पुण्यवित्तं के०) तेना पुण्यरूप वित्तने (हत्वा के०) हरण करीने (ब्रह्मदन्तं यथा के०) ब्रह्मदत्तनेज जेम तेम (कुगतिं के०) नरकगति प्रत्यें (गमयित के०) पमाडे हे. (पुनः के०) वली (तं के०) ते कामदेवने (धीरः के०) धीर एवो (तत्पूर्वचाताइव के०) ते ब्रह्मदत्तने नो पूर्वजन्मनो नाइ, जेम (तपोस्त्रेण के०) तपरूप अस्त्रें करीने (नित्वा के०) चेदीने (शिवं के०) मोक्त्यत्यें (अटित के०) अटिन करे हे. अ र्थात् मोक्त प्रत्यें जातो ह्वो. एम जाणवुं ॥ ए२ ॥

आंहिं ब्रह्मदत्तनी कथा कहे हो. कांपिख्यपुरने विषे ब्रह्मदत्तचकी राज्य करे हो. एक दिवस त्यां तेनो पूर्वनवनो मित्र कोइक साधु आब्यो, तेने जोइने चक्रवर्त्ताने मोहोटो हर्ष उत्पन्न थयो. तदनंतर ते साधुयें ते चक्र वर्त्ताने पूर्वजन्म कहेवा मांम्या के हे राजन्! सांनद्ध मारा अने तारा पूर्वनव हुं कहुं हुं ॥ श्लोक ॥ आश्वदासों मृगो हंसो, मातंगावमरोतथा ॥ एषानौषष्ठिकाजाति, रन्योन्यान्यांवियुक्तयोः ॥ १ ॥ नावार्थः - आपणे वे पे हेलां घोडाना रखवाल हता त्यांथी मरी मृग थया, त्यांथी हंस थया, पढी हाथी थया, पांचमे नवे देवताठ थया अने आ आपणो ढिं नव हे ॥ १ ॥ तेमां पूर्वनवें तें रूडीरीतें चारित्र पाद्युं, तेथी तुं चक्रवर्नीं थयो हो अने हुं पुरिमतालने विषे धनदत्त व्यवहारीनो चित्रक नामा पुत्र थयो. तिहां श्रीगुरुनी वाणी सांचली वैराग्य उत्पन्न थवाथी में महाव्रत यहण कथां. हमणां मुजने अवधिकान उपन्युं हे तेथी हुं तने बोध करवा माटे आव्यो हुं. जे हवे तुं धर्माचरण कर. एम घणुं ते साधुयें कह्यं तोपण धर्मा चरण न करतो हतो चक्री राज्य नोगववा लाग्यो, अने मरीने सातमे नरके गयो अने ते तेनो मित्र साधु हतो ते रूडीरीते व्रत आराधन करी ने मोक्कने प्राप्त थयो ॥ ए२ ॥ इति विषयहारं ॥

गीतामृतातिरतिकर्णपुटस्त्रिप्टष्ठ, पर्यकपालइवक ष्टमुपेति घोरम् ॥ सचद्मलुब्धककृता बृतगीतलु ब्धं,बर्द्धं विलोकय सृगं जयविब्हलांगम्॥ए३॥

अर्थः— (गीतामृतातिरितकणिपुटः के०) गीतहृप अमृतनेविषे छे अ
त्यंत प्रीति जेने एवा छे कर्णपुट जेना एवो (त्रिष्टष्ठपर्यंकपालइव के०)
त्रिष्टष्टराजानो शय्यापालक तेज जेम, एटले ते शय्यापालकने त्रिष्टष्ट रा
जायें कह्युं के हुं ज्यां पर्यंत निष्ठा न पामुं त्यां पर्यंत तुं गान थवा हेजे,
पढी गान बंध करावजे. हवे जेवारें राजाने निष्ठा आवी तेवारें गान मांहे
आसक्त थयेला एवा शय्यारक्तकें ना न पाडवाथी ते गान चालवा लाग्युं,
तेथी ते शय्यापालक (घोरं के०) घोर एवा (कष्टं के०) कष्टने (उपैति
के०) प्राप्त थयो. वली जुवो के (सच्च झजुब्धककता झतगीत लुब्धं के०)
ढल युक्त एवा पाराधीयें करेला अझुत गीतनेविषे लोनायेलो एवो अने ते
गाने करी (बद्धं के०) बंधायेलो तथा तदनंतर ते लुब्धक कंपावेला एवा
पं के०) नयें करी कंपायमान जेनुं अंग छे अर्थात् लुब्धकें कंपावेला एवा
(मृगं के०) मृगने (विलोकय के०) हे नव्यजनो! तमें जुवो ॥ ए३॥
आंहिं त्रिष्ठष्ठी राजाना शय्यापालकनी कथा कहे छे. हारवित पुरीने विषे

त्रिष्ट्रिशी नामा वासुदेव राज्य करे हे. एक दिवस तेनी आगल रूडा स्वरवा

ला गंधर्व गान करता हता, तिहां पोताना शय्यापालकने त्रिष्टष्ठ राजायें कहां के हुं निडावश थाउं तदनंतर गीतगान बंध करावजे, तथापि गीतगान मां लुब्ध थयेला ते शय्यापालकें राजाने निडा आव्या पढी पण गान शरु रखाव्युं तेथी राजा जागी गयो, अने कोपायमान थइने कहेवा लाग्यों के हे ड्रष्ट ! तें आ मारा कहेवाथी उलटुं कखं अने कर्णातकिने लीधे तें गान शरु रखाव्युं माटे तुं शिक्तापात्र हो एम कहीने ते शय्यापालकना कानमां शीशुं तपावीने रेड्युं. तेथी ते मरण पामीने नरकें गयो. अने त्रिष्ठ राजानो जीव अनुक्रमें केटला एक जब संसारमां करी चोवीशमा तीर्थ कर श्रीवीरजगवान थया। ते वखत शय्यापालकनो जे जीव हतो ते अनुक्रमें गोवालियो थयो. पूर्वजन्मना वैद्यकी ते गोपालें श्रीवीरना कानने विपे कटा हवंशिलाकनुं हेपण कखुं ते मरण पामीने नरके गयो. ए प्रमाणें त्रिष्ट िष्ठ राजाना शय्यापालकनी कथा कही ॥ ए३ ॥

स्यात् कुल्लकानिधकुमारवद्स्थिरेपु, स्थेर्याय गीतम पि बोधकरं कदाचित् ॥ बालोपि निर्द्यतिसुपैति निर्मम्य सम्यक्, मात्रोदितानि कलमन्मथगीतकानि ॥ ए४ ॥

श्रथः—(श्रस्थररेषु के०) श्रस्थर पदार्थीने विषे (स्थैयीय के०) स्थे र्यने माटे (गीतमिष के०) गीत पण (कदाचित् के०) क्यारेंक (हुझका निधकुमारवत् के०) हुझक नामा कुमारनी पेठें (वोधकरं के०) बोध क रनारुं (स्यात् के०) होय. (बालोपि के०) बालक पण (मात्रोदितानि के०) मातायें कहेलां एवां (कलमन्मथगीतकानि के०) मनोहर काम गी तोने (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (निशम्य के०) सांजलीनें (निर्श्वतें के०) निर्श्वतिने (उपैति के०) प्राप्त थाय श्रयात् सुगीतथी पण बोध थाय हे॥ श्राक्तिमां हुझककुमारनो हष्टांत होवाथी तेनी कथा कहे हे. पूर्वें चंपापुरीनेविषे वज्जबाहु राजा राज्य करे हे, केटला एक कालें राजा मर ण पाम्यो तेनो जाइ वज्जवंघ राजा राज्यगादीयें वेठो तेवारें वज्जबाहु रा

जानी स्त्री पोताना पुत्रना संरक्षणने माटे पुत्रने लइने त्यांथी नाशीने म श्वरामां त्रावी स्र्रिजीनी पासे पुत्र सिंहत प्रव्रज्या यहण करीने एक सा ध्वीनी पासें रही,त्र्यने तेनो कुल्लककुमार पुत्र श्रीगुरुनी पासें शास्त्रने नणतो

रह्यो. केटला एक कालें ते कुल्लककुमारें व्रतने मूकवानी इज्ञा करवा मांमी, त्यारें तेनी मातायें तथा महोटा महोटा जनोयें उपाध्यायोयें आचायों यें मली समजाववाथी तेनी दाहिणतायें करी बार वरस पर्यंत दीका पा जी. पढी पोताना काका वज्जजंघें राज्य दबावेज्जं हतुं तेने खेवा माटे पोता ने गाम गयो, त्यां राजसनामां नाटक थतुं हतुं. ते समयमां नाटक कर नारनी स्त्री नटी थाकी गयेजी होवाथी ते समय वृद एवी कोइक स्त्रीयें गीतमध्यें एक गाथा कही. ते जेम के " सुहुगाइत्रं सुहुवाइयं, सुहु निञ्च यं साम सुंदरी ॥ अणुपालियं दीहराईयं, उसुमिणंते मा पमायए ॥ १ ॥ ए गाथा सांचलतां वेंत कुलक कुमारें रत्नकंबल ते वृद नाटिकाने आप्यो, अने व्यवहारीनी स्त्रीयें रत्नजडित सोनानुं कंकण हतुं ते अर्पण कखुं त या मंत्री वेगो हतो तेएां सोनानी मुंडिका आपी. राजामा पुत्रें एकावल दार समर्पण कथो, अने हिस्तपालकें कनक़नो अंकुश अर्पण कथो. त्यारे ते सर्व आपनारने राजायें पूरुयुं जे तमोयें एने दान केम आप्युं ? त्यारें कुछकें राजयहणादि सर्व स्वरूप कह्युं ते सर्व कुल्लक कुमारनी साथें प्रतिबोध पाम्यां कुझककुमार श्रीगुरुनी समीप जइने प्रायश्रित यहण पूर्वक दीक्दाराधन करीने रूडी गतिने प्राप्त थयो. ए प्रमाएों एक गायाना गीतें करी बोध पाम्या.

नोविंदत्युष्णशीताद्यपि न सदसद्प्युक्तमाविष्करोति, इः सर्जधात्र वेत्ति प्रथयति न रसान् रूपनिर्मग्नदृष्टिः ॥ तदृ प्वेकें ज्येऽस्मित्रहितहितमितः कः कुमारायनंदो, चंपापः स्वर्णकारे विवशदृश्चि यथा पंचशेलेशदेयोः ॥ ए५ ॥

अर्थः—(रूपिनमेग्रहिष्टः के०) रूपने विपेज हे निमग्न हिष्ट जेनी एवो पुरुष, (उष्णशीताद्यपि के०) उष्ण शीतादिकने पण (नोविंदित के०) जाणतो नथी विचारणायें विचारतो नथी एणें करी शरीरेंडियनो जाव क ह्यो, वली (सत् के०) सारुं अने (असत्अपि के०) खराब (उक्तं के०) क देखुं तेने पण (नआविष्करोति के०) प्रगट करतो नथी. काने आणतो नथी एणें करी कर्णेंडियनो जाव कह्यो, तथा (इःसर्ज्धान के०) सुगंध इगंध ने (नवेत्ति के०) जाणतो नथी एणें करी प्राणेंडियनो जाव कह्यो. तथा (रसान के०) रसोने पण (नप्रथयित के०) विस्तार करतो नथी अर्था

त पर्स पण जाणतो नथी एणें करी रसनेंडियनी जावरिहतता कही. ए रखे ए सर्व इंडियोने विषे जावरिहतपणानुं प्रतिपादन करवाथी मात्र (श्र सिमन् के॰) श्रा (एकेंडियें के॰) एक चकुरिंडियना व्यापारमां श्रासक्त होवाथी (तत् के॰) ते रूप (हष्ट्वा के॰) जोइने (श्रिहतिहतमितः के॰) श्र हित श्रने हितनी मित वालो (कः के॰) कोण उत्पन्न थाय हे ? त्यां कहे हे के (चंपापू:स्वर्णकारे के॰) चंपापुरीनो सोनी (कुमारायनंदी के॰) कुमारायनंदी (पंचरोलेशदेव्योः के॰) पंचरोलिहीपनी हासा प्रहासा नामनी देवीयोनुं रूप जोइने (यथा के॰) जेम (विवशहरी के॰)पर वश हिष्ट थये हते ते हिषें गयो.

त्रांहिं कुमारनंदीसुवर्णकारनी कथा पूर्वे कहेली हे तो पण आंही कहे हो. चंपापुरीने विषे कुमारनंदी नामा सुवर्णकार आह कोटी सुवर्णनो धणी अने पांचरो स्त्रीमो स्वामी हतो,एक दिवस ते हासा अने प्रहासा नामनी देवीयोनुं रूप जोइने मोह पामीने तेमने विषय सेववानी प्रार्थना करी त्यारे व्यंतरियोये कह्युं के तारें इन्ना होय तो पंचरोल घीपमां आवजे. ते सुवर्णकारे उद्घोपणा करावी के जे कोइ मने पंचरोल घीपमां पोहोंचाडे, तेने हुंत्रण लाख सुवर्ण आपुं. ते वात सांजलीने कोइ वृद्ध नाविक हतो, तेणे तेने पंचरोल घीपें पोहोंचाड्यो. त्यां देवीयोयें नाकारो करवाथी अनि नीमरण करीने ते देवीयोनो स्वामी विद्युन्माली देव थयो ॥ एए ॥

ञ्यास्तां सत्यं रूपमालेख्यावेंब, स्यालोकेऽपि क्षेत्राएवातिरागात् ॥ सुज्येष्ठाश्रीश्रेणिकद्यापव त्स्यात्, नेणश्रांतिर्भातवारीक्षणात्किम् ॥ ए६॥

अर्थः—(सत्यं के॰) प्रकट एवं (रूपं के॰) रूप (आस्तां के॰) रहो अर्थात् प्रकटरूप तो दूर रहो, परंतु (आलेख्यिवंबस्य के॰) चित्रित एवा रूपना (आलोकेऽपि के॰) जोवानेविषे पण (अतिरागात् के॰) अत्यंत राग यकी (क्षेत्रएव के॰) क्षेत्रज्ञ थाय हे. (सुज्येष्ठा के॰) सुज्येष्ठा स्त्री नी, तथा (श्रीश्रेणिकस्मापवत् के॰) श्रीश्रेणिक राजानी पेहें (स्यात् के॰) होय, एटले जेम सुज्येष्ठानुं स्वरूप पट्टमां आलेखेलुं जोइने श्रेणि क राजाने मोह थयो, तथी क्षेत्रने प्राप्त थयो, अनयकुमारें खोदेली सुरंग ने रस्ते जइने श्रेणिक सुज्येष्टाने बदले चिल्णानेज यहण करीने पोताने

नगरें गयो. तथा (एएश्रांतिः के०) हरएने थाक (च्रांतवारीक्रुणात् के०) जलफांफवाना जोवाथी (किंन के०) ग्रुंन होय. ना होयज ॥

श्राहिं सुज्येष्टानी कथा कहे हे. विशाला नगरीयें चेडा महाराजानी सुज्येष्ठा नामे दीकरी हती तेनी पासें एकदा कोइक तापसणी मिण्याल हुं प्रतिपादन करवा लागी तेने सुज्येष्टायें निजृंही तेथी ते तापसणी तेनुं यथास्थित रूप पट्टमां श्रालेखीने राजग्रहमां जइ श्रेणिकराजाने देखाड्युं, ते जोइने राजा मोह पाम्यो. पही श्रज्यकुमार श्रेणिकराजानुं रूप पट्टमां श्रालेखीने विशाला नगरीमां गयो, त्यां विणक थइ सुगंधि वस्तुनी इका न मांमी श्रेणिकराजानो चित्रपट्ट लइने वेहो. सुज्येष्ठाने श्रेणिकराजानुं चित्र देखाड्युं ते जोइने सुज्येष्टा पण श्रेणिकराजामां तल्लीन थइ गइ. पही श्रज्यकुमारें धरतीमां सुरंग खोदी, ते सुरंगेथी श्रेणिक राजा श्रावीने सुज्येष्ठाने स्थानकें चिल्लणाने लइने पोताने पुर श्राच्योः एम पट्टमां श्रा खेखेलुं रूप जोवाथी परस्पर मोह प्राप्त थयो ॥ ए६ ॥

स्याजंघोपि यतस्ततोऽप्यधिगतः क्षेत्राय नात्राय च,त चाणाक्यधियाऽतुरः श्रुतिमगान्मंत्री सुबंधुर्न किं ॥ प इय क्षिर्यति पुष्पसोरचधृतः सर्पः सदपीपि सन्, सा यं चांबुजकोत्राबंधनमिलः प्राप्तोति गंधातितृद् ॥ ए॥

अर्थः—(यतस्ततोपि के०) ज्यांथी त्यांथी पण (अधिगतः के०) आव्यो एवो (गंधोपि के०) गंध पण (क्वेशाय के०) क्वेशने मार्ट (च के०) वली (नाशाय के०) नाशने मार्ट (स्थात् के०) होय, केनी पेतें ? तो के (चाणाक्यधिया के०) चाणाक्यनी बुिंद्यें करी एटले चाणाक्ये प्रे षण करेला पुष्पपुटना सुगंधना सुंघवाथकी (आतुरः के०) आतुर थको क्वेशने प्राप्त थयेलो एवो (सुबंधुःमंत्री के०) सुबंधुनामा मंत्री ते हे नव्यो ? (किं के०) शुं तमारा (श्रुति के०) कर्ण पुट प्रत्यें (न अगात् के०) न आवतो हवो ? एटले पुष्पपुटना सुंघवाथी कष्टने प्राप्त थयेला एवा सुबंधु मंत्रीने हे नव्यजनो ! तमोये शुं नथी सांनव्यो ? वली (पश्य के०) खुवो (सद्पीपिसन् के०) आहंकारयुक्त एवो बतो पण (सर्पः के०) सर्प,

(पुष्पसौरनपृतः के॰) पुष्पसौरन्नने धारण करतो बतो (क्विस्यित के॰) क्वेश पामे बे. एटले सुगंधनी लालचमां नाखीने ते सर्पने गारुडी लोको वंधनमां नाखी डःख आपे बे. (च के॰) वली (गंधातितृद् के॰) गंध ने विपे अत्यंत बे तृष्णा जेने एवो (अलिः के॰) चमर, ते (सायं के॰) सायंकालने विपे (अंबुजकोशवंधनं के॰) कमल कोशना बंधनने (प्राप्तीत के॰) पामे बे. एटले चमर जे बे ते सुगंधना लोनें कमल गंधने ले वा माटे कमलमां जि वेसे, तेवामां सायंकाल पडवाथी कमल कोशवंध यह जाय. तथी तेमांज मरण पामे, माटे अतिसुगंधासक प्राणी सुबंधु मंत्री अने सर्प तथा चमरनी पेवें क्वेश पामे बे. (तत् के॰) ते माटे गंध नी अत्यासकिनो त्याग करवो ॥ ए९॥

आदीं सुबंधु मंत्रीनी कथा कहे हे. पाडलीपुरने विषे मौर्यवंशनो चं इग्रत नामा राजा राज्य करे वे तेनो बुिवचतुर चाणाक्य नामा मंत्री वे, ते चाणाक्यें अवसर पामीने जातमां योड़ं योड़ं विप नाखीने राजाने खवराव्युं एक दिवस को इएक राजानी राणी पोताना स्वामीनी साथें ज मवा वेठी परंतु ते तो जमतांज विप प्रयोगें करी मरण पामी. चाणाक्यें राणीनं उदर विदारीने पेटमां गर्न हतो तेने जीवतो काढ्यो ते ठोकरानुं नाम विंडुसार एवं छाप्युं. चंड्युप्त स्वर्गमां गयो त्यारें तेनो पुत्र विंडुसार राजगादीयें वेठो. एवा वखतमां चाणाक्यनो वैरी सुबुद्धि नामनो मंत्री हतो तेणे एकांते विंडुसार राजाने कह्युं के तमारी मातानुं पेट, चाणाक्यं फोडी नाख्युं, ते सांनजी राजाने रीश चडी पढी प्रनातमां ज्यारें चाणा क्य आव्यो त्यारे तेनाथी पराङ्मुख यह वेवो. ते राजायें सुबंधुने घर ञ्चाप्युं, ते घरमां एक मंजुपा हती तेमांथी एक सुगंधवासनो दाबडो सुबंधुने मत्यो, सुगंधयकी वासनुं आघाण कखुं तेमां लखेलो एक पत्र मली आव्यो, तेमां लख्युं हतुं जे आ सुगंधोने सुंघीने जे पोतें जोग वशें, रूडा वस्त्रोने धारण करजो, रूडां नोजन करजो ते मरण पामजो अने आ दावडाने सुंघी ने क्तपिनी पेठें जे रहेशे, ते जीवशे. इत्यादिवांचीने विपरीत चालवाथी सु बंधु मंत्री आ लोकमां महाकष्टोने पाम्यो अने परलोकें नरकनां इःख पाम्यो. विस्त्रेधीतुजिरंगमेतद्घिट प्रागेव तत्राप्यहो, इगें धः प्रतिकर्मणापि हि बहिः प्राक्कर्मतःकश्चन ॥ इ गंधेव मृगातनृजवद्तः सोरज्ययहोत्रको, गंधड्य चयेर्निबोध शुचिता का नीलिकाजाजने ॥ ए०॥

अर्थः—(विस्तेः के०) बीनत्स एवा (धातुनिः के०) सात धातुयें करीने (एतत् के०) आ (अंगं के०) अंग, (प्रागेव के०) पूर्वेज (अघटि के०) बने लुं हो. (तत्रापि के०) वली ते अंगने विपे पण (अहो के०) आश्रयें (क श्रव के०) को इक (प्राक्षमेतः के०) पूर्वकर्मना योगयी (इर्गधेव के०) इर्गधानामा नारीनी पेठें तथा (मृगातन् जवत् के०) मृगापुत्र लोढकनी पेठें (इर्गधः के०) इर्गध याय हे, तो तेना (प्रतिकर्मणापि के०) इर्गध मटाड वाने माटे (बहिः के०) बाह्यक्रत्रिम स्नानादि अश्रूपायें करीने अह करे हो, तो पण (हि के०) निश्चें ते इर्गधज निकले हो, (अतः के०) ए कारण माटे (अत्र के०) ए पूर्वोक्त अंगने विपे (गंध इव्यच्यैः के०) गंध इव्यना समूहोयें करी (सोरन्ययतः के०) सुगंधनो यत्न (कः के०) शो करवो ? एम हे जव्य ! तमे (निबोध के०) जाणो जे (नीलिकानाजने के०) गलिना पात्रने विपे (सुचिता के०) पवित्रता (का के०) शी करवी ? तेम आ शरीरनुं पण जाणी लेवुं ॥ ए० ॥

आंहिं लोढकनी कथा कहे है. चंपानगरीने विषे जितशत्रु राजानी मृगावती रा णीना उदस्थी कोइक पापी जीव प्रस्त थयो. तेने पग, हाथ, कान, आंख्यो, तथा मस्तक ए कांइ हतां नहीं मात्र जेवो पापाणनो लोढक होय, तेवो ते हतो, तेथी पुत्रनुं लोढक नाम आप्युं. एक कलशी अनाजनो महोटो ढगलों करी तेनी उपर ते लोढकने वेसाडीने तेनी उपरथी लोटावे त्यारें तेना मुख रूप घारमां अनाज पेसवाथी पोषण थाय. ए प्रकारें आहार करे हे. एकदा त्यां श्रीवीरनगवान आवता हवा, तेनी साथें श्री गोतम गणधर हता, तेणें ते लोढकनुं खरूप जोइ विस्मय पामीने श्रीवीरनगवानने पूरुगुं के हे नगवन ! आणे पूर्वजन्में शुं पाप कखुं हज़े ? जे कमें करी आ वो थयो ? त्यारे श्रीवीरनगवाने कहुं के पूर्वजन्मने विषे लोढकनो जीव, मकाती नामा क्त्रिय हतो, ते प्रकृतियें करी निर्दय हतो, अने गोधनने चा रतो हतो, एकदिवस गोधन चारीने गोधन ज्यारें बेढुं त्यारें ते केटलाएक ढोरोनां पुंढडां अने केटलां एक ढोरोना पगने कातरतो हवो, केटला एक नी जपर घोडानी पेठे आरोहण करतो हवो, ए प्रकारें जीवहत्या करी मरण पामीने आहिं लोढकनामें जत्पन्न थयेलो है. आ वात सांजलीने घ णाये बोध पाम्या ॥ तथा डुर्गधास्त्रीनी वात ज्ञानपंचमीमां प्रसिद्ध है ॥ ए०॥

> स्पर्शेतिगृध्रुरतिबृख्यपि याति इःखं, प्रद्योतजूपइव मंत्र्यज्ञयेन बद्धः॥कोवाऽयहीष्यदिज्ञमेष न चेत्करे णु, स्पर्शोधधीः स्थगितगर्तगतोऽज्ञविष्यत् ॥एए॥

अर्थः—(अतिबलीअपि के॰) अत्यंत बलवान एवो पण प्राणी (स्प र्शेंऽतिग्रधुः के॰) स्पर्शने विषे अति इज्ञावालो वतो (इःखं के॰) अत्यंत इःखने (याति के॰) प्राप्त थाय वे, केनी पेवे? तो के (मंत्र्यन्येन के॰) अन्यकुमारनामा मंत्रीयें (बंदः के॰) बांधेलो एवो (प्रद्योतनूपश्व के॰) प्रद्योत नामा राजानी पेवें, जुवो (यदि के॰) जो (एपः के॰) आ प्रत्यक् जगतमां प्रसिद्ध एवो हस्ती ते (करेणुस्पर्शीधधीः के॰) हाथणी ना स्पर्शने विषे वे अंध बुद्ध जेनी अर्थात् विचार ग्रुन्य एवो वतो (स्य गितगर्नगतः के॰) तृणयी ढांकेला खाडानेविषे प्राप्त (नअनविष्यत्चेत् के॰) जो नहि थशे तो (कोवा के॰) कयो पुरुष (इनं के॰) हस्तीने (अयहीष्यत् के॰) यहण करी शकशे ? अर्थात् कोइज नहिं करी शके ॥एए॥

आंदिं चंमप्रद्योत राजानी कथा कहे हे. उद्घिषनी नगरीने विषे चंम प्रद्योत नामा राजा हतो, तेणे एक दिवस उद्घोषणा करावी, जे कोइ अ नयकुमार मंत्रीने बांधी लावे, तेने मनोनीष्ट हुं आपीश ? ए उद्घोषणा एक वेश्यायें कबूल करी,पही ते कपटथी श्राविका बनीने केटला एक परि वारें युक्त थइ राजग्रहने विषे आवी. तिहां आ मोहोटी श्राविका हे एम मानीने अनयकुमारें ते वेश्याने नोजन कराव्युं, पही कपट श्राविकायें अ नयकुमारने पोताना उतारामां जमवा तेड्यो त्यां अनयकुमारने चंइहास नामनी मिद्राथी घूणीयमान करीने रथें वेसाडी उद्घितीमां चंमप्रद्योत राजानी पासें लावी उनो राख्यो तेने राजायें बंदिखाने नाख्यो, त्यां बंदी खानामां रहेला अनयकुमारें चहुवींं करी राजाथी पोताने मूकाव्यो अने

राजाचंमप्रयोतने कहेवा लाग्यो के अरे राजा ! मने तें धर्मढ़ हों करी बंदी खाने नखाव्यो,पण हुं तने सर्व लोकसमऋ बांधीने उद्धयणीना रस्तामांची राजगृहि नगरीमां लइ जइश, त्यारें हुं अनयकुमार खरो, एम जाएजे. ए वी प्रतिका करीने केटलाएक दिवस पढ़ी नानाप्रकारनी वस्तु उंदें करी गाडां प्रमुख नरी पोतें सार्थवाहनो वेश धारण करीने उक्कियनी नगरीने विषे ते अनयकुमार आव्यो,त्यां राजाना घरनी पासेंज एक घर नाडे लीधुं एकदा पोतानामाणसोने गाडामां वेसाखां पढी जेम राजानी नजर पडे,ते वेकाणे गाडुं चलाव्युं, ते माणसोमांथी एक माणसने चंमप्रयोत एवं ना म आप्युं, तेने मार मारतो बतो बाहेर जइ चाव्यो ते माणस उंचें स्वरें करी कहेवा लाग्यों के हे लोको दोड़ो ! दौड़ो ! हुं चंमप्रयोत नामा हुं ते मार खाउं 'डुं माटे मने बोडावो, ए प्रकारें बोलता एवा तेने राजाना सेवकोयें अने गामना माणसोयें ढोडाव्यों; एम पाड़ें वे वे चार चार द हाडे करवा मांमगुं. तेने जोइने गामना माणस कहेवा लाग्यां के अरे त्रा मूर्ख ज्ञेव केवों ने के ए बिचाराने वारंवार पकड़े ने ? तो वारें वारें एने कोए बोडावरो ? वली ते अनयकुमारें घणीज स्वरूपवान वे वेश्यार्जने राखी, ते वेज्याने नित्य सायंकालें पोतानी पासें नृत्य कराववा लाग्यो, एक दिवस चंमप्रयोत राजा गवाक्समां उनो हतो तेणे ते मनोहर एवी बेहु वेश्याने नजरें जोइने तरत बेहु वेश्या पर तेना मननी आसिक थइ. पढ़ी ते वेश्याने विषे ख़ुब्ध एवा चंमप्रद्योत राजायें पोतानी एक दासी साथें केवराव्युं जे तमने बेहुने राजा बोलावे हे,ते प्रमाणे ते दासीयें आ वी वेक्यार्जने कहां अने वली दासीयें कहां के तमोने राजा पहराणी करज़े ते सांजली वेश्यार बोली के राजाने जो प्रयोजन होय, तो आंहिं आवे, ते वात दासीयें राजाने कही. राजा जुब्ध थइने अनयकुमारने उतारे आ व्यो के तरत अनयकुमारें चंमप्रयोत राजाने बांधी लीधो, ढोलीआ उपर नाखीने मारवा मांमचो अने गाडामां नाखी लोकोनी समक् सहु जोवेते वी रीतें बजारनी वचमां मारतो मारतो चाल्यो. राजायें पोकार कस्बो परं तु लोकें जाएयुं जे एतो चंमप्रयोत एतुं पोतातुं माणस हे तेने ए निरंतर गाडीमां बेसाडी मार मार हे तेम आंज पण मारे हे एम जाणी कोइयें

तेने बोडाव्यो नही. अनय कुमारे तेने राजगृही नगरीनेविषे लावीने श्रेणि कने अर्पण कस्यो, पढी श्रेणिकें तेने दया करीने बोडाव्यो ॥ एए ॥

यः स्पर्शसोख्यलविम् तिमूढबुिकः, सििक्प्रदेन त पसा सुकुमारिकेव ॥ चिंतामणेः सकलजूतलराज्य दातु, बोलः सज्रुष्टचणकान् रुणुते कुधार्तः॥१००॥

अर्थः—(यः के०) जे (मूहबुद्धः के०) मूह वे बुद्धि जेनी एवा पुरुष, (सिद्धिप्रदेन के०) सिद्धिने देनारा एवा (तपसा के०) तपें करीने (सुकु मारिकाइव के०) सुकुमारीकानी पेवें, (स्पर्शसोख्यलवं के०) स्पर्श इंडिय रूप सुखना लेशने (इन्जति के०) इन्जा करे वे, (सः के०) ते (बालः के०) मूर्खजन, (सकलजूतलराज्यदातुः के०) समय प्रथ्वीना राज्यने देनारा एवा (चिंतामणेः के०) चिंतामणिथी (कुधार्तः के०) जृख्यो वतो (जृष्टचणकान् के०) ग्रंजेला चणांने (वृणुते के०) मागे वे. एम जाणवुं. अर्थात् जे तपश्चर्यां करी फरी विषय सुखनी इन्जा करे वे, ते चिंतामणि वोडीने ग्रेकेला चणांनी इन्जा करे वे एम जाणवुं ॥ १००॥

आंदि सुकुमालिकानी कथा कहे हे. मशुरापुरीमां सागरदत्तश्रेष्ठीनी दी करी सुकुमालिका करीने हती ते योवनावस्था पामी तेवारें समुद्दत्तव्यव हारीना पुत्रनी उपर मोहित थड़ तेने घरजमाइ करीने ते कन्या परणावी दीधी परंतु तेनुं श्रंग श्रंगारानी पेतें तपतुं हतुं तेथी तेनो स्वामी तेने स्प श्रेकरवा जाय तेवामां दाजवा लाग्यो तेवारें ते स्त्रीने एमज शब्यामां स्र् तेली मूकीने पोताने घेर जतो रह्यो पाठलथी ते रुदन करवा लागी त्या रें माता पितायें रुदन करती श्रटकावी. तदनंतर कोइक निक्वाचरनें ते श्रापी, ते पण तेवी रीतें तेने ठोडीने चाल्यो गयो, पठी पिताने घर रही दान देवा लागी, तेवामां कोइ साध्वी त्यां श्रावी तेणे प्रतिबोध कल्लो तेथी वैराग्य पामीने दीक्ता श्रहण करी, महोटुं तप करवा लागी, एक दिवस वनमां श्रातापना करती हती एवामां तेणें एक गणिकाने पांच पुरुपें सेवेली नजरें जोइ, तेवारें विचारवा लागी के श्ररे मारे श्रा जवमां एक पण स्वामी थयो नहीं श्रा जाग्यशाली स्त्रीने पांच स्वामी जोग वे हे, ते माटे मारे पण पांच जत्तीरों थाय तो ठीक ? एवं नियाणु करी

मरीने देवपणुं पामीने पढ़ी पांच पांमवोनी शिपदी नामें स्त्री थइ ॥१००॥ निःसत्वं निर्देयत्वं विविधविनटनाशोचनाशात्महानि, रस्वास्थ्यं वैरद्यिक्यंसनफलमिहासुत्र इर्गत्यवाप्तिः॥ चौ लुक्यह्मापवत्तक्यसनविरमणे किं न दक्ता यतध्वं, जा नंतोमांधकूपे पतत चलत मा दृग्विषाहेःपथा हे ॥१०१॥

श्रथः—(निःसत्त्वं के०) निःसत्त्वपणुं तथा (निर्देयत्वं के०) निर्देय पणुं अने (श्रस्वास्थ्यं के०) अस्वस्थपणुं (वेरवृद्धिः के०) वेरनी वृद्धि, (शौचनाशात्महानिः के०) पित्रतानो नाश, तथा आत्मानी हानि, (विविधविनटना के०) विविध प्रकारनी जे जीवोने विडंबना ते सर्व (व्यसनफलं के०) कुव्यसननां फल ते (इह के०) आ लोकमां प्राप्त थाय वे अने (अमुत्र के०) परलोकमां तो ए कुव्यसन थकी (इ शैत्यवाप्तिः के०) इर्गतिनी प्राप्ति थाय वे. केनी पेवें ? तो के (चौलुक्य क्यापवत् के०) चौलुक्य राजानी पेवें, (तत् के०) ते कारण माटे (व्यसन विरमणे के०) व्यसननाविरमणने विषे (इह्याः के०) हे माह्या पुरुषो ! (किं के०) ग्रुं (नयतध्वंके०) यत्न नथी करता ? अर्थात् ते व्यसन त्यागनो हे माह्या जनो ! तमो यत्न करो. (जानंतः के०) जाणता वता (श्रंध कूपे के०) श्रांधला कूवाने विषे (मापतत के०) म पडो, अने (हग् विषाहेः के०) हे दह्यो ! तमें (माचलत के०) म चालो अर्थात् हिविषयुक सर्प ज्यां रहे वे ते मार्गमां तमो चालो नहिं ॥ १०१ ॥

श्रांहिं कुमारपाल राजानी कथा कहे हे. श्रणहिल्लपुर पाटणने विषे चौलुक्यवंशनो कुमारपाल राजा राज्य करतो हतो, ते राजा, कलिकालमां सर्वे किदधारक, त्रण करोड यंथना कर्ता एवा प्रज्ञश्री हेमाचार्यना वच नोयें करी बोध पामी परम जैनधर्मी थयो, तेणे पोताना श्रद्धार देशमांथी सात ड्रव्येसन निवृत्त कथां अने पोताना देशोमां रहेली कंटकेश्वरी देवी नी श्रागल पाडाउनो नाश थतो हतो, ते सर्व निवृत्त कराव्यो. तथा तेना राज्यमां को जू पण मारे नही एवो हिंसानो निषेध कथाे. जो को इज् ने मारे तेनो दंम करीने ते इव्यथी जु विगेरे जंतुना नाना महोटां रक्षण स्थान कराव्यां हतां यूत तथा मारी शब्दना कथनें करी पोतानी बेहेनना वर शाकंनरी राजाने शिक्ता करी मांस नक्त्ए करनार पासेंथी दंम जइने बत्रीश जेनप्रासाद कराव्यां,ए प्रकारेंसाते डर्व्यसननो नाश कखो ॥१०१॥

रुक् पथ्यं च रसेर्यथा बहुतया संसेवितैलीं लुपे, धीरे यीविधना जवेदि ॥ पाठांतरे ॥ (बहुतया यूनेन संतोषि णा योग्यायोग्यतयाद्यातेरिह) तथा संसारमोक्तावि ॥ यन्नानारसलालसःस मथुरामंग्रर्जवं भ्रांतवान्, यत्ती र्णश्च सुढंढणः सममधेः सन्मोदकक्तोदकः ॥ १००॥

अर्थः-(लौलुपें के०) रसलोलुप एवा पुरुपोयें (बहुतया के०) घणी रीतें (संसेवितैः के०) सेवन क़रेला एवा (रसैः के०) रसोयें करी (रुक् के०) रोग (यथा के०) जेम थाय हे (च के०) वली (तथा के०) तेम (धीरैं: के॰) धीर पुरुषोयें (यत् के॰) जे (विधिना के॰) विधियें करीने सेवन करेला रसें करी (पथ्यं अपि के०) पथ्य पण (नवेत् के०) थाय (पारांतरथी) (बहुतयायूनेन के०) अत्यंत नोजनना प्रीतिवानें तथा (संतोषिणा के॰) जोजनमां संतोषी एवा पुरुषें (योग्यायोग्यतयाऽशितेः के०) योग्यायोग्य नोजनथी (इह के०) खाहिं (तथा के०) तेम (खपि के०) वली (संसारमोद्घाविप के०) संसार अने मोद्घ पण प्राप्त कराय वे. अर्थात् रसलोजुपने संसार वृद्धि अने त्यागीने मोक्त थाय वे. जुवो (यत् के॰) जे कारण माटे (नानारसलालसः के॰) नाना प्रकारना रसमां लोलुप एवो (सः के०) ते प्रसिद्ध (मथुरामंग्रः के०) मथुरामंग्र नामा श्राचार्य (नवं के०) संसार प्रत्यें (च्रांतवान् के०) नमतो ह्यो (यत् के॰) जे कारण माटे (च के॰) वजी जुवो ते केवो ? (सन्मोदक होद कः के०) सारा लाडुने चूर्ण करी परववनार एवो (सुढंढणः के०) सुढंढ ण मुनि, ते (अधैःसमं के०) पाप सहित (तीर्णः के०) संसारथी तरी ग यो. अर्थात् मोक्तने प्राप्त ययो, एटले रसलोलुपतायें मथुरामंग्र दीर्घ संसा री ययो, अने ढंढणमुनि रसलोद्धप न होवायी संसारथी तरी गयो, पाठां तरथी अत्यंत नोजनिपय पुरुषें तथा नोजनमां संतोष राखनारा एवा पु

रुपोयें योग्यायोग्यना विचारथकी वर्त्तवुं, रसलोलुपल बोडवुं ॥ १०१॥ आंहिं मथुरामंग्र तथा ढंढणमुनिनी कथामां प्रथम मथुरानंग्रनी कथा कहे हे. मथुरानगरीने विषे मथुरामंग्र नामा आचार्य पांचशे साधुयें युक्त रह्या हता, तेने पुरमां रहेतां रसलांपट्य द्वाहिंगत थयुं. ते आचार्य मरण पामीने ते पुरनी खाल पासें देवकुलमां यद्द थयो, ते पढी जे अनुगमना दिकने माटे साधु आवे, तेने पोताना मुखें करी खेंचीने मोहोटी जीन काढी देखाडे हे. ते यहें प्रतिदिन एम करवा मांमग्रं, एक दिवस साहिस क कोइ साधु हतो, तेणे पूछ्युं, के तुं कोण हो? अने शामाटे जीन नित्य देखाडे हे, तेनुं कारण अने तारुं सहूप कहे? त्यारें यद्द कहेवा लाग्यों के, हुं तमो सर्व साधुनो गुरु मथुरामंग्र नामा आचार्य हुं. रसलांपट्यें करी मरण पामीने पुरिनर्धमणने विषे यद्द थयो हुं, तमोयें पण रसलांप ख्यानो त्याग करवो, जिन्हादि इंड्योनो जय करवो. एम उपदेश कह्यो.

ह्वे ढंढणमुनिनी कथा कहे हे. द्वारकाने विषे श्रीकृष्मनी ढंढणा ना मा राणी इती, तेनी कुक्तिरूप सरोवरमांथी इंसनी पेवें ढंढण नामा पुत्र उत्पन्न ययो, तेएो एक दिवस श्रीनेमिनाय पासेंथी देशना सांजलीने स्त्री त्यागीने स्वामीनी पासें दीका लीधी. ए अवसरनेविषे पोताना केत्रने वि पे पूर्वजन्में साधुने दान आपतां अंतराय करेजो हतो, ते कर्मनो उदय ञ्चाववाची ज्यां वोरवा जाय, त्यां साधुने कल्पे, एवी निक्का मखे नहिं, एम ह मास पर्यंत तेणे उपवास कथा, एकदिवस श्रीनेमीश्वर जगवानने श्रीकृक्षें पूर्व्युं के महाराज! तमारा श्रदार हजार साधुर्व हे तेमां उत्क प्ट तपस्वी कोण हे ? ते कहो. नगवाने कह्यं के ढंढणकुमार जेवो को इपण मुनि नची, ते सांचली श्रीकृष प्रसन्न चया अने हाची उपर चडीने गा ममां आवे हे त्यां सामा आवता ढंढणकुमारने जोइने हाथीयी उतरीने ढंढ एसाधुने वंदन कख़ुं, ते कोइ गवाक्तमां बेवेला व्यवहारीयें जोयुं, तेएो श्री क्सें वंदन करवाथी ढंढणमुनिनुं माहात्म्य जाणीने त्यां आवी ढंढणमुनि ने घेर बोलावीने मोदक वोराव्या, ते मोदक जगवानने देखाडवाथी जग वाने कह्युं ए तुजने श्रीरुष्टाची मत्या हे एवं सांचली ते मोदकतुं चूर्ण क री परववी खाच्या, पोतें ग्रुनध्यानमां रही केवलकान पाम्या ॥ १०२ ॥

किं जेयो रसनें ियेण स महान् यः सत्वरक्वारुचि, र्यद्वर्ह्मरुचिः कुतुंबकमसो पक्वाम्यविष्ठक्येत् ॥ किं वा विश्वहिताय नोदरगतं सिंधुर्दधो वाडवं, सारया हि सुरास्तमाशु न विषं किं नीलकंवः पपो ॥ १०३॥

अर्थः- (यः के०) जे (महान् के०) महोटो पुरुष इंड्यि लोजुप ता रहित एवो है, (सः के॰) ते पुरुष, (किं के॰) हुं (रंसनेंडियेण के०) रसना इंडियें करीने (जेयः के०) जिंतवायोग्य हे ? ना नथीज. के नी पेतें? तो के (सत्त्वरक्वारुचिः के०) जीव रक्क्णमां ते रुचि जेने एवो (असो के॰) আ प्रसिद (धर्मरुचिः के॰) धर्मरुचिनामा साधु तेण (कुतुंब कं के॰) कडवा तुंबडाने (यहत् के॰) जेवी रीतें (पकाम्रवत् के॰) पा केला आम्रफलनी पेवें (नक्ष्येंत् के॰) नक्ष्ण कख्रुं त्यां द्रष्टांत कहे वे (विश्वहिताय के॰) विश्वना हितने माटे (सिंधुः के॰) समुइ (उदरग तं के०) चद्रमां रहेला (तं वाडवं के०) ते वडवानलने (किंवा के०) ग्रुं वली (नद्धों के॰) न धारण करतो ह्वो अर्थात् वडवानलने धारण करतो ह्वो, तथा (सारमाहिसुराः के०) समुइमंथन करती वखतें सारना यहण करनारा देवता तो थया, परंतु प्रसिद्ध एवं (विषं के०) विषने (आग्रु के॰) जलदी (नीलकंतः के॰) महादेव (किं के॰) ग्रुं (न प पो के०) न पान करता हवा? अर्थात् महादेव विषनुं पान करता हवा॥ माटे जीवरक्षणने माटे इंड्यिलोल्लुपत्वनो त्याग करी महोटा पुरुषो उय इःख सहन करे बे अने विष जेवा पदार्थनुं नक्क्ण करे बे. जो रसनेंडिय लोज़ुप होय तो ते विषादि नक्षण करे नहिं ॥ १०३॥

आ श्लोकमां धर्मरुचि तथा वडवानल अने नीलकंठ ए त्रणना दृष्टां त हे, तेमां प्रथम धर्मरुचि साधुनी कथा कहे हे. उज्जियनी नगरीने विषे सोमदेव, सोमजूति, अने सोमशम्मी नामें त्रण ब्राह्मण जाइयो हता, ते त्रणेने अनुक्रमें नागश्री जूतश्री अने यक्तश्री नामनी त्रण स्त्रीयो हती, ते त्रणे स्त्रीयो पोत पोताने वारे वारे रसोइ करे. एक दिवस नागश्रीनो रसोइनो वारो आव्यो त्यारें कडवुं तुंबहुं तैयार करी

ने धर्मरुचि नामा कोइ साधु वहारवा जता हता, तेने ते पापणीयें वो होराव्युं, साधुयें ते तुंबडुं लड़ने पोताना गुरुने देखाड्युं ते जोड़ने गुरु बोद्या, के एने स्थंमिलमां परववो, त्यारें साधु परववा गयो, त्यां मिक्क का अने कीटकादिक जीवोनो घात थशे एम जाणी, ते तुंबडाने पोतें न क्रण करी गयो,ते विष प्रयोगें मरण पामी सर्वार्थ सिद्ध विमानप्रत्यें गयो.

हवे बीज़ी वडवानलनी कथा कहे हो. पूर्वे ब्राह्मणनी जाति वडवा नलनामा एक नवीन असुर उत्पन्न थयो, ते प्रचंम एवा सर्व देवताउनो उपरोध करवाने तत्पर थयो ते समयें सर्व सुरपित प्रमुख देवताउयें एक ठा थइने ब्रह्मपुत्री सरस्वतीनी प्रार्थना करीने, ते वडवानलने समुइमां ना खी दीधो. पही तेने कोइ बाहेर कांद्रवा शिक्तमान थयुं निहं, पही शारदा देवी घटनीवचें तेने प्रदेपण करीने ते वडवानलने देखतां हतां. कहेलुं हो के ॥ श्री जारतीसुरपितप्रमुखें सुरोधे, रन्यर्थिता जलनिधं ज्वलयांचका र ॥ तन्नंदनेषु सतत वैरमनुस्मरंती तन्नंदनेषु विबुधेषु पद्मुराखी सा ॥ १ ० ३॥

हवे नीलकंवनी कथा कहे हे, एकदिवस सर्व देवता इस्पित प्रमुख ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सुरपित, यहपित, निशापित, देता उंचें एक वा यइने मेरुनो मंथानक करीने शेषनागनुं नेत्रुं बनावी, समुइनुं मंथन करवा मां मगुं, ते समय च उद रत्न उत्पन्न थयां, तेमां लक्कीनामनुं रत्न निकल्युं तेने विष्णुयें यहण कखुं. एम च तुर्दश रत्नो सर्व देवोयें वेंची लीधां. तेमां देवता उंचें रंना अप्सरा मेलवी, तथा शंकरना नागमां काहिं पण आव्युं नहिं, त्यारें शंकरें कह्यं हवे हुं समुइ मंथन करीश ते प्रमाणे मंथन कर वा मांमगुं त्यारें विष्णु प्रमुखें कह्यं बहु मंथन करवाथी कालकूट विष उ त्यन्न थशे, पण ते न मानतां मंथन कखां, तेवारें कालकूट विष समुइमां थी उत्पन्न थशुं, ते विषने सर्व जगत्ना कल्याण माटे शंकर, पोतें पान करी गया अने कंवमां राख्युं, तेथी नीलकंव एवं शंकरनुं नाम पड्युं.

सप्तापि व्यसनानि पापसदनान्येतानि वर्ज्यानि यत्, सत्कर्मापि न शरुयते व्यसनमत्यासेवयास्या खद्या॥

स्त्रेहोऽईत्यिप गोतमस्य गणनाऽकाले च कोशाग्ररोः, ग्लानिःपारद्वचाविते हि कनकेऽरिष्टं फलेऽनार्त्तवे॥१०४॥

अर्थः—(एतानि के०) ए (सप्तापि के०) सात एवां पण (व्यस नानि के०) व्यसनों जे हे, ते (पापसदनानि के०) पापनां घर हे, माटे (वर्ज्यानि के०) वर्जवा योग्य हे, (यत् के०) जे कारण माटे ते व्य सन सेवनारो प्राणी (सत्कर्मापि के०) सारा कर्मने करनारो होय तो पण (नशस्यते के०) वखणातो नथी. ते व्यसनोनी (अत्यासेवयां के०) अति सेवनायें (व्यसनं के०) इःख (स्यात् के०) होय. केनी पेहें ? तो के (यथा के०) जेम (गौतमस्य के०) गौतमने (अर्दित के०) अरिहंत नग वानने विषे (स्नेहोपि के०) स्नैह पण्.जे हे, तेने लोको व्यसनज कहे हे. (च के०) तथां (कोशाग्ररोः के०) स्यूलिनइने (अकाले के०) अका लने विषे (गणना के०) पूर्वमी गणना ते पण (ग्लानिः के०) व्यसनं रूप थाय हे. तथा (पारदन्नाविते के०) पारासाथें अत्यंत नावना करे ला एवा (कनके के०) सुवर्णने विषे स्यामता थाय हे. तथा (अनार्त्व के०) क्तु विनाना समयमां उत्पन्न थयेला (फले के०) फलने विषे (हि के०) निश्चें (अरिष्टं के०) अरिष्ट थाय हे. एम लोकोक्ति हे, तेमाटे अति सर्वत्र वर्जयेत, एम जाणवुं ॥ १०४॥

श्रा श्लोकमां गौतम तथा स्यूलिनइनो दृष्टांत होवाथी प्रथम गौतम गणधरनी कथा कहे हे. श्रीवर्६मानस्वामीना शिष्य प्रथम गणधर श्रीगौत मस्वामी हता,हवे जेने वीरनगवानें पोताने हाथें दीक्ता श्रापे तेने तरत के वलकान उत्पन्न थाय, परंतु गौतमगणधरने श्रीवीरनगवाननी उपर श्रत्यं त स्नेह होवाथी स्नेहांतरायथी केवलकान उत्पन्न थयुं निहं,पही वीरनगवाने पोताना निर्वाण समयने विषे देवशमीने प्रतिबोध करवा माटे गौत मने श्रासन्नश्रामें मोकत्या, श्रीवीरनगवान श्रपापा नगरीने विषे हस्तीपा ल राजानी जीर्ण रक्षक सन्ताने विषे रह्या, शोल प्रहर पर्यंत देशना देवा पही कार्त्तिक विद श्रमावास्याने दिवसें परमपदने प्राप्त थया, हवे देवशमी ने प्रतिबोधीने पाता श्रावता देवताउना मुखयकी वीरनगवान् निर्वाणप दने प्राप्त थया, एवं सांनलीने गौतमस्वामी श्रत्यंतशोक करीने पढी प्रश्च वैराग्य श्राणी स्नेहपाशनो बंध त्रोडीने केवलकान पाम्या.

हवे स्यूलिनइनी कया पूर्वें कहेली पूर्वें के, तथापि प्रकारांतरयी वली कहे के. एक दिवस श्रीनइबाहुस्वामीनी पासें स्यूलिनइनी बेहेनो यद्दादि आ योजेंचें कहां के हे नगवन ! स्यूलिनइ हाल क्यां के? त्यारें ग्रह्में कहां के, अशोकवनने विषे पूर्वोंनी गणना करतो बतो रह्मो के, त्यारें सर्वे साध्वीयो तेने वांदवा माटे अशोकवनमां गइ, त्यां पोतानी बेनोने आवती जोइने स्यूलिनइ पोतानी विद्यानी परीक्ता करवा माटे सिंहनुं रूप विक्रवींने सन्मुख आब्यो तेने जोइने सर्व साध्वीज त्यांची नाशीने ग्रहनी पासें आवी कहेवा लागी के हे नगवन ! स्यूलिनइने तो सिंह नक्षण करी गयो. ते सां नली गुह्में कहां के हजी त्यांज स्यूलिनइजी के. बीजी वार तेनी बेनोयें जइने वंदन कखं पढ़ी गुह्में जाएलं एनाथी विद्या जीरवाती नथी माटे हवे पूर्व नणाववां नहीं तो पण श्री संघना जपरोधयकी चार पूर्व मूलपा कें गुह्में नणाव्यां, परंतु अर्थयकी नणाव्यां नहिं ए. स्यूलिनइनी कथा कही.

चूतेनार्थयद्याः कुलक्रमकलासोंदर्यतेजःसुहत्, सा धूपासनधर्मचितनगुणा नइयंति संतोपि हि॥ यद त्पांमुसुतेषु तद्द्युतसुधीप्वादित्यनावर्जिते, विश्वे किं तमसा रफुटं घटपटरुतंनादि वा लह्यते॥ १०५॥

अर्थः—(संतः अपि के०) विद्यमान एवा पण (अर्थ के०) धन अथवा शास्त्रना अर्थ (यशः के०) यश (कुलक्रमः के०) कुलाचार, (कला के०) लिखित, पित, गीत, वाद्यादिक बहोंतेर कला, (सोंदर्य के०) सुंदरपणुं (तेजः के०) तेज, (सुहृत् के०) सुमित्र, (साधूपासन के०) ग्रुस्पर्यु पास्ति, (धमेचिंतन के०) दानशीलादि धमेचिंता, एवा (ग्रुणाः के०) ग्रुणो (द्यूतेन के०) द्यूतें करी (हि के०) निश्चें (नश्चेंति के०) नाश पामे हे. केनी पेहें ? तो के (यहत् के०) जेम (पांकुसुतेषु के०) पांच पांमवोने विषे. ते केवा पांमवो हे ? तो के (त्रच्युतसुधीषु के०) ते द्यूत्यकी च्रष्ट था हे बुिक जेनी एवा हे. किव कहे हे के (आदित्यनावर्जित के०) आदित्यनी कांतियी रहित एवा (विश्वे के०) विश्वने विषे (तमसा के०) अंधकारें करी (स्फुटं के०) प्रगट पणे (किंवा के०) खं वारुं. (घटपट स्तंनादि के०) घट, पट, स्तंनादिक (लह्यते के०) लह्य थाय हे. ना थ

ता नथी. तेम यूतमां पण पूर्वोक्त गुणो दृश्यमान यता नथी, ए नावार्ष हे. श्राहें पांच पांमवोनी कथा कहे हे. कुरुहेशमां हस्तिनापुर नगरने विषे युधिष्ठर राजा, नीम, श्रर्जुन, सहदेव अने नकुल ते चार नाइलें सह वर्नमान पोतें साम्राज्यश्रीने नोगवता हता. एक दिवस पोताना नवीन करावेला श्रीशांतिनाथजीना देरासरनी प्रतिष्ठा करवाना महोत्सवने श्रर्थे पत्रहारायें हस्तिनापुरथकी ह्योंधनादिकने तेडाव्या, त्यां प्रतिष्ठाना नवन वा महोत्सव थइ रह्या नंतर मणिचूड विद्याधरें सहस्र स्तंनयुक्त निर्माण करेली सन्ताने विषे कोरवो तथा पांमवो मलीने यूत रमवा लाग्या, तेने तेमना काका विहरजीयें घणी रीतें रमवानो निषेध कखो, तो पण पांमवो तथा कोरवो यूत रमवाथी विद्यम पाम्या नहिं, पढी शकुनियें नाखेला दे वाधिष्ठित पाशाचें करी ह्योंधन पांमवना राज्यने हरण करतो हवो. श्रत्र कमें होपदीने पण हारी गया, तेवारें नीष्मादिकें ठेराव्युं के पांमवो बार वरस वनमां रहे तथा, एक वरस ढाना कोइ जाणे नहिं एवी रीतें रहे, ते प्रमाणे पांमवो बार वर्ष वनवासमां रह्या श्रने एक वरस रूपांतर करीने वैराट नगरमां ढाना रह्या. पढी कोरवो साथें युद्ध करी कोरवोनो पराज य करी राज्यने प्राप्त प्रमा थया. ए प्रमाणे यूतमां इःख हे एम जाणवं ॥१०५॥

चूतं न किं त्यजत किं दहत स्वदेहं, ग्रागं च मूत्रयसि किं वदने स्वकीये ॥ तत्तादृशी त्रियतमासहितोनलोपि, जानीत रोरइव राज्यसुखान्निरस्तः॥१०६॥ चूतत्रकरणम्॥

श्रथः - हे मूढजनो! (यूतं कें०) यूतने (किं कें०) केम (नत्यजत के०) त्याग करता नथी तथा (किं के०) शामाटे (खदेहं के०) पोता ना देहने (दहत के०) यूतािययें करीने बालो हो. (च के०) वली (हागं के०) बकराने (खकीये वदने के०) पोताना मुखने विषे (किं के०) शा माटे (मूत्रयिस के०) मूत्रावो हो जुवो (तत् के०) ते माटे (ताहशी के०) तेवी (प्रियतमा के०) वहान एवी पोतानी स्त्री दमयंतीये (सहितः के०) सहित एवो (नलः श्रपि के०) नलराजा पण (राज्यसुखात् के०) राज्यसुखयकी यूतें करी (निरस्तः के०) च्रष्ट थयो हतो (रोरइव के०) जेम दिही होय तेनी पेठे थयो. एम (जानीत के०) हे जनो तमो जाणो ॥ १०६॥

श्राहिं नलराजानी कथा कहे हे. नलराजा त्रणखंमनो श्रिधपित हतो एकदिवस राजने विषे लोज पामेला कुबर नामा पोताना नाइ साथें नलरा धूत रमतां देववज़ें राज्य हारी गयो. पही दमयंती सहित वनमां गयो, मार्गमां विचाखुं जे हुं ग्रुं श्रावा हालें सासराने घेर जाउं, एम विचारीने दमयंतीने वनमां स्नतेली मूकीने जातो रह्यो, पाहलथी जेवारें दमयंती जागी तेवारें बहुविलाप कखो, मार्गमां साथवाहनुं धाडीथी रक्षण कखुं, पही पर्वतनी ग्रुफामां रहिने पांचज़े तापसने बोध कखो, सात वरस त्यां रहि. पही पोतानी मासीनी दीकरीने घेर गइ, नलराजा पण देवप्रयोगें करी विरूपांग कुज थयो, सुसमार पुरमां दधीपर्ण राजानी पासें रसोयो थइने दस वरस पर्यंत रह्यो. श्रने दमयंती पण पोतानी फइने त्यां ठि श्राहम तप करती रही पही पोतांना बापने घेर गइ. नलराजा पण त्यां ते दमयंती साथें मत्या, वली पण यूत रमाडीने पानुं पोतानुं राज्य कुबर पासेंथी लइ लीधुं, माटे सर्वथा यूत रमनुं नहिं॥ १०६॥

मांसाद्यानान्ननरकएव ततः सदेव, स्तद्घोलुपं हरि नृपं कृतवान्सरोपः ॥ किंपाकपेदालतराद्यानदत्ततः एऐ, किंपाकनोजिनि मृतेरिप संदायोस्ति ॥ १०९॥

अर्थः—(मांसाशनात् के॰) मांसाशन थकी (नरकएव के॰) नरकज होय, (ततः के॰) तेमाटे (सरोषः के॰) रोषयुक्त एवो (सः के॰) ते (देवः के॰) देव (हरिनृपं के॰) हरिनामना राजाने (तक्षोद्धपं के॰) ते मांसनाअशनमां लोद्धप एवो (कृतवान् के॰) करतो ह्वो, (पाकपे शलतराशनदत्तृष्णे के॰) पाकें करीने अत्यंत मनोहर एवं छे अशन जेनुं एवा पदार्थने विषे दीधी छे तृष्णा जेणे एवा ते (किंपाकजोजिनि के॰) विष हक्ता फलनुं जोजन करनारने विषे (मृतेरिष के॰) मरणनो पण (संशयः के॰) संदेह (किं के॰) ग्रुं (अस्ति के॰) छे. ना नथीज. एटले फेर खा नारने विषे मरण संदेह होयज नहिं एम जाणवुं ॥ १०९॥

आंहिं हरिनृपनी कथा कहे हे. मधुपिंगलनों जीव अने बीजो हरिनृ पनो जीव ए बेहु पूर्वनवना वैरें करी मरण पामी, एक हरिवर्ष द्वेत्रमां युगलीक थयो, अने एक देवता थयो, परंतु ते तेनो वैरी जीव युगलीक होवाथी तेने मरणादिक कष्ट करवामां कोइ रीतथी देवता समर्थ थयो निहं तेवारें ते युगिलियाने ते पूर्वजन्मनो वैरी देव उपाडीने जरतखंममां लावी राज्य दइने ते युगलीयाने मांस लोलुप करतो हवो थोडे थोडे मद्य पान पण करावतो हवो, तेथी ते युगलीयो मरीने मांसाशनना पापथी नरकमां गयो. एवीरीतें ते देवें खरेखरुं पोतानुं वैर लीधुं ॥ १०७॥

स्नेहोदयापि हदि कामिषलोलुपानां, किंचिख्नणापि पति मांसदलानि नैचत्॥ नाश्नाति किं निजकुदुंबमपि दिजि व्ही,स्थानं स्वमन्यद्पि किं दहतीह नाग्नः॥ १००॥

अर्थः—(आमिषलोनुपानां के०) आमिषने विषे लोनुप एवा प्राणी योना (हिद के।) हदयने विषे (स्नेंहंः के०) स्नेह स्यो ? तथा (दया पि के०) दया पण (का के०) शी ? अर्थात् आमिषलोनुपने हदयमां दया तथा स्नेह होतो नथी. जुवो (चिल्लणि के०) चिल्लणा नामनी स्त्री पण पोताने पुत्रनो गर्न रहेवाथी (पितमांसदलानि के०) पित श्रेणि कराजाना मांसना कटकाने (किं के०) ग्रुं (नेज्ञत् के०) न श्रुती हवी ? अर्थात् मांसलोनुपा चिल्लणा थइ,त्यारें तेणे पोताना पितनुं पण मांस खा वानो विचार कथो, वली (हिजिन्ही के०) सिपणी (निजकुटुंबमिप के०) पोताना कुटुंबने (नाश्रातिकिं के०) ग्रुं नथी खाती ? ना खायनेज, अने (अन्नः के०) अन्नि जे ने, ते (इह के०) आहिं (स्वं के०) पोतानुं तथा (अन्यत्अपि के०) बीजा स्थानने पण (किं के०) ग्रुं (न दहित के०) बालतो नथी ? ना बालेनेज ॥ १००॥

आंहिं चिछ्छणा राणीनी कथा कहे हो. राजगृही नगरीने विषे कोई तापस मास क्ष्पण करतो हतो, तेने सर्व लोक निमंत्रण करीने पारणुं करावतां हतां, एक दिवस ते तापसनुं लगजग मासोपवास व्रत पूर्णथवा आव्युं ते वखत तेने श्रेणिकराजायें आवीने विनंति करी पोताने घेर पारणुं कराव वा माटे आमंत्रण कखुं पढ़ी मध्याह समये पारणुं करवा तापस आव्यो त्यारे राजाने विस्मरण थइ गयुं तेथी क्षि आवे तो तेने पारणुं करावजो एवं कोइने कह्युं नही. क्षि पण बोव्या विनाज पोताना स्थानक प्रत्यें जइने बीजा मासक्ष्पण तप करवानो प्रारंज कस्बो, वली राजायें जाण्युं जे में आमंत्रण करीने क्रिके पारणुं कराव्युं नही एम विचारी श्रेणिक राजायें पाडुं क्षिने पारणामाटे आमंत्रण कखुं वली पण पारणाने दिवसें ते वात राजाने वीसरी गइ अने घरमां कोइने कह्यं नहिं. तेथी फरी पण ऋषि पाढा गया, अने त्रीजा मासक्षपणनो आरंन कस्रो, एम त्रीजी वार पण श्रेणिक राजायें कछुं ते पढ़ी तपस्वी क्रोधायमान चइने कहेवा लाग्या के श्रावता नवमां श्रवतार लक्ष्मे श्रा राजानो हुं श्रनर्थकारक थाउं एम नि याणुं करी ते तापसनो जीव मरीने चिछ्नणाना उदरमां आवी उपन्यों तें पेटमां रहेवाथी गर्नप्रनावथी तथा पूर्वजन्मना वैरथी चिल्लणा राणीने दो होलो थयो, जे हुं मारा पतिना मांसनुं नक्त्ण करुं ? ए विचार थाय पण कहेवाय नहिं, अने तेनी चिंतामां राग्णी डुबल। यह गइ, त्यारें श्रेणि कें एक दिवस राणीने पूछ्युं के हें राणी! तुं दिवसे दिवसें डुर्बल केम य ती जाय है ? राणीयें जे पोतानो विचार इतो, ते यथास्थित राजापासें निवेदन कखो, पढ़ी अनयकुमारें श्रेणिक राजाने अंधकारमां राख्यो, ते ना पेट उपर मृगनुं मांस बांध्युं, अने तेमांथी प्रतिदिन कातरीने चिछणा ने जेम जेम आपे, तेम तेम राजा खोटी रीतें रुदन करे, जेम कोईनुं पेट कापे, ने रुवे तेम ते रोवे, तेवारें चिछ्नणा हर्ष पामे, एम ते चिछ्नणा राणी नो दोहोलो संपूर्ण कस्रो, पढी पोताथी उत्पन्न थयेला बालकने चिछणा राणीयें चकरडे नाखी दीधो, तेनी मालम पडवाधी श्रेणिक राजायें त्यां थी यहण करी लीधो, त्यां उकरडामां कुकडे ते बालकनी श्रंगुलि वगेरे नुं नक्ष्ण कखुं तेथी तेनुं नाम कोणिक पाड्युं, अने वीज्ञं नाम अशोक चंइ एवं पाडगुं, अनुक्रमें करी ते त्रण खंमनों अधिपति ययो ॥ १०० ॥

> नाकृत्यकृत्यविदलं मधुपानमत्तो, जूताजिजूतइव शून्यमनोवचोंगः॥किं देवकीपरिणये मदपारवइया न्नाश्लेषि जीवयद्यासाऽप्यतिमुक्तकर्षिः॥ १०ए॥

अर्थः—(मधुपानमत्तः के०) मधुपान थकी मदोन्मत्त थयेलो तथा (ग्रून्यमनोवचोंगः के०) ग्रून्य हे मन, वचन अने काया जेनी एवो ह तो (जूतानिनृतक्व के०) जूतप्रेतादिकें परानव पमाडेलो होय निह ग्रुं ? एवो, ते प्राणी (अलं के०) पूरी रीतें (अकृत्यकृत्यवित् के०) अ कत्य श्रने कत्यने जाणनारो (न कें०) थातो नथी. (देवकीपरिणये के०) देवकीना परिणयने विषे (मदपारवश्यात् के०) मदना परवश पणायी (जीवयशसा के०) कंसनी स्त्री जीवयशायें (श्रतिमुक्तकार्षः श्रपि के०) श्रतिमुक्त नामा क्षिने पण (किं के०) ग्रुं (न श्राश्वेषि के०) न श्रातिंगन कथा. श्रयीत् मदिराना परवशपणायकी कंसनी स्त्री जीवयशा यें श्रतिमुक्त क्षिने श्रातिंगन कथाज ॥ १०ए॥

आहिं जीवयशानी कथा कहे हे. मथुरापुरीनेविषे कंस राजा राज्य करतो हतो, तेनी जीवयशा राणी हती ते कंसराजायें देवकराजानी दी करी देवकीजीने पोतें अथेसर थइने तेना खामी वसुदेवजीने आपी, दे वकीने परणवाने ते वसुदेव अथव्या, अने मंमपमां नवनवा उत्सवो थ वा मांम्या, तेवा समयमां कंसनो जाइ अतिमुक्त क्षि जिक्हाने माटे त्यां आव्यो, तेवामां मद्यपानेकरी परवश थयेली एवी जीवयशा पोताना दे वरने कंठने विषे वलगीपडी, अने कहेवा लागी कें तमो गीत गान करो, हुं नृत्य करीश ? तेवारें साधुये तेना हाथमांथी छुटवानो घणो उपाय क खो तो पण तेणीये ते साधुने होड्यो नही. त्यारें मुनियें कह्यं के एटलो बधो हिष तुंने केम उत्पन्न थयो हे ? एज देवकीनो सातमो गर्न थाशे ते तारा वापनें, तथा तारा पितने मारशे आ वात सांजलतांज जीवयशाने मद्यनो निशो उत्ररी गयो अने कांइक क्षिने होड्या अवसरजोइने क्षि निकली गया,कालेंकरीने श्रीहरूझना हाथथी कंस तथा जरासंध मरण पाम्या॥१०ए॥

मधु मधुरवचोनिः प्रेयसीप्रेरितोयः, पिबति निजकुलोचा चारचिंतां विमुच्य ॥ वररुचिवदिहापि प्रेक्तते डर्गतिं सः, क च तनुदृढता स्याजीगिजुकाज्यजोगैः ॥ ११०॥

अर्थः—(मधुरवचोनिः के॰) मधुर एवा वचनोयें करी (प्रेयसीप्रेरितः के॰) प्रियायें प्रेखो एवो (यः के॰) जे पुरुष (निजकुलोच्चाचारचिंतां के॰) पोताना कुलना उंचा आचारनी चिंताने (विमुच्य के॰) मूकीने (मधु के॰) मद्यने (पिबति के॰) पान करे (सः के॰) ते पुषरु (इ हापि के॰) आ लोकनेविषे पण (इर्गतिं के॰) इर्गतिने (प्रेक्ते के॰) जोवे हो. कोनी पेठें ? तो के (वररुचिवत के॰) वररुचिनी पेठें ? जेम वर रुचि पंमितना कानमां मद्यपान करवाथी उकालेलुं शीशुं रेड्युं ते वात घटे वे केम के (च के॰) अने (नोगिन्नकाज्यनोगैः के॰) सर्पे बोटेला घृतथी (तनुदृदृता के॰) शरीरनी दृदृता (कस्यात के॰) क्यांथी होय ॥११०॥

ञाहिं वररुचिनी कथा कहे हे. पामलीपुरने विषे वररुचिनामा पंमित रहेतो हतो, ते पंमित नित्य पांचशे नवीन काव्योयें करी नंदराजानी प्रातः कालमां स्तुति करतो इतो, ते काव्यो सांजलीने तरत राजा, पोता ना शकमाल मंत्रीनी सामुं जूवे,जे आ मंत्री काव्योना अर्थ सारी रीतें क रे, तो डुं कांहिंक पंमितने दान आएं? शकमाल मंत्री तेनुं पांमित्य यथा स्थित घणुंज सारुं वे एम जाणे खरो, परंतु सम्यक्त मजीनतायें करी ते ना काव्यनी काहिं प्रशंसा करे नहिं. पद्धी शकमाल मंत्रीनी स्त्रीयें कहां जे तमो ते वररुचि पंमितना काव्यनी प्रशंसा करता नथी ने कांदी ठीक निहं एवां स्त्रीना वचन सांनती एकदिवस एकश्लोकनुं व्याख्यान शकमाल मंत्रीयें कखुं. तेवारें तरत राजायें तेने दान आप्युं, एकदिवस ते वररुचि पंमितन्नं अनिमान जतारवा माटे शकमाल मंत्रीयें राजाने कह्युं के जे वररुचियें काव्यो कखां, ते सर्व मारी दीकरियोने आवडे हे त्यारे राजायें कह्यं के त मारी दीकरीने केवरावो, तेवारें पडदो आडो नाखीने कन्याउयें वररुचिनां कहेलां सर्व काव्य कह्यां. पढी वररुचि, प्रागमां गंगानी पांचशें काव्योयें करी स्तुति करे तिहां यंत्रप्रयोगें करी पांचसो दिनार धारण करनारी, कोश स्थली जडीने हाथमां पडवा लागी, तेवारें वररुचि कहेवा लाग्यो. के गं गाजी स्तुतिथी मने प्रसन्न थइने इव्य आपे हे. पही शकमालें तेवा त जाएीने संध्याकाले कोशस्थली हती तेमां यंत्रप्रयोगें करी पाषाणो मुक्या, अने नंदराजा पासें वररुचिनी लङ्का खोवरावी. हलको पाड्यो, तेवारें वररुचियें पोतानी पासें जणनारा बोकराउने आ प्रमाणे गाथा शीखवी, जे ॥ नंदराय जाणे निह, जे शकमाल करेसि ॥ नंदराय मारी करी, सिरिड रक्जववेसि ॥ १ ॥ ए गाया सांनली राजाने शकमाल उपर क्रोध चड्यो तेवारें शकमार्जे विषनक्षण करी पोताना बोकराने शीखव्युं तेनी शीखवणीयी राजानी समक्त सरिये पोताना बापने तरवा रथी मारी नाख्यो राजायें सिरीयाने प्रधान व्यापारमुडा त्यापी, श्रीयकें वररुचिथी वैरलेवा माटे कोशाध्यक्तने कह्यं के जेवी तेवी रीतें वररुचिने

पाडवो, एकदिवस तेणे रात्रिनेविषे चंड्हास मद्यपान कराव्युं प्रातः का लमां राजानी सनाने विषे कमल सुंघवाषी मद्यनी वांति करी, त्यां नरी सनामां तेनी लक्का गइ खष्ट थयो,ते मद्यपानना प्रायश्चित्तमां ते वररुचिने शीग्रं चकालीने तेनुं पान कराव्युं तेथी मरण शरण थयो॥११०॥सुराप्रकरणं.

वेश्याविश्वकलत्रमत्र तदहो पानीयशालाजले,यद्दकां द्विकाशने च शुचिता का प्रायशस्तादशी ॥ तस्मात् साकृतपुण्यवत् कृतकमुत्त्वोकोदया किं प्रिया, पूर्णे लं विशदा स्वजावकलुषा, दोषापि नेंदो कृशो॥ १११॥

अर्थः-(वेश्या के॰) वेश्या.जे हे, ते (अत्र के॰) आ संसारने विषे (विश्वकलत्रं के •) आखा विश्वनी स्त्री हे (तत् के ०) ते कारण माटे (सा के॰) ते (किं के॰) ग्रुं (विया के॰) मनो, नीष्ट थाय, ना नज थाय. (अहो के॰) आश्रर्ये (यद्दत् के॰) जेम (पानीयशालाजले के॰) पा णीना परबना जलने विषे (च के०) वली (कांदविकाशने के०) कंदो इना नोजनगृहने विषे (ग्रुचिता के॰) पवित्रता (का के॰) शि ? तेम (प्रायशः के०) प्रायें बहुप्रकारे करी वेक्या पण (ताहशी के०) तेवीज जा णवी अर्थात् जेम पाणीना परबमां तथा कंदोइना नोजनघरमां पवित्रता होती नथी तेम वेश्यामां पण पवित्रता होयज नहिं. (तस्मात् के०) ते का रण माटे (सा के०) ते (कृतपुष्यवत् के०) कृतपुष्य नामा ज्ञोवनी पेवे (कतकमुन्नोकोदया के०) पहेलां कथा वे मोद एटले हर्ष आनंद जेणे अने पढ़ी कखो है शोकनो उदय जेणे एवी वेदया जाणवी. जुवो (दोषापि के॰) रात्रि पण (अलं के॰) अत्यंत (पूर्णे के॰) पूर्ण (इंदौ के०) चं इ उते (विशदा के०) निर्मेल (न के०) ग्रुं नथी थातीना था यज हे अने चंड्मा (करो के॰) इशिए थये हते, (खनावक दुपा के॰) रात्रि स्वनावधीज मेली थाति नधी ग्रुं? अर्थात् स्वनावे करीने कञ्जूष एवी रात्रि वे ते चंड्मा रूप पोतानो स्वामी कलायी पूर्ण होय त्यारें निर्मल देखाय हे, अने ज्यारें चंड्मानी कला नष्ट थाय, त्यारे रात्रि काली नासे वे तेम वेश्या पण स्वनावकञ्जूष वे ते परपुरुषोत्रं धन मखे तेथी निर्मल लागे वे अने पुरुष निर्धन याय त्यारे पोतें पोताना खनावने पामे ॥१११॥

या श्लोकमां कृतपुष्यनो दृष्टांत होवाची तेनी कथा कहे हे. राजग्र हिने विषे कोइक धनदत्तनामा श्रेष्टी रहे हे, तेने कतपुर्णकनामा पुत्र ह तो, तेना पिता धनद्तें चातुर्यने माटे कतपुष्यकने योवनमां वेक्याने घेर शिक्ता माटे मोकल्यो, ते वेश्यानुं नाम वंसतमंजरी करी हतुं, त्यां रहि ने ते कतपुष्यकें पोताना बापनुं बार कोटिधन हतुं ते सर्व जडाडी दीधुं, कालें करी तेनां माता पिता नष्ट थइ गयां, इलवे इलवे इल्यनो नाश थइ गयो, पढ़ी ते ज्यारे निर्धन थयो त्यारे वेदयायें तेने अपमान करीने काढी मूक्यो, कृतपुष्यकनी जार्यायें ककलाट करवा मांमघो तेवारे घरमां निर्धन पणुं जोइने परदेश जवानो विचार धास्रो, ते विदेशीनी सार्थे गाम बाहेर निकल्यो, त्यां सूतो हतो, तेवामां रात्रिनेविषे चार स्त्रियोयें ञ्चावीने सुतोने स्नुतो त्यांची उपांडीने तेने पोताना नवनमां राख्यो, त्यां ते चारे सियोनी साथें जोग जोगवतो बतो रह्यो, ते सियोथकी चार पुत्रो उत्पन्न थया, केटलोक काल गया पढ़ी एकदा ते कतपुष्यक सूतो हतो तेने तेमज पाढो ज्यांथी उपाड्यो हतो, त्यां लावी सार्थमां मू क्यो, तेनी साथें एक जातानो लाडु आप्यो हतो, तेने कयवन्नायें पोताने घेर नांगीने जोयुं, तो अंदरथी चार रत्न निकव्यां, अनुक्रमें ते श्रेणिकरा जानी दीकरीने परएयो, ते अनयकुमार मंत्रीनी बुद्धियेंकरी पाढ़ी चारे स्त्रियो तथा पोताना चारे पुत्र तेने मद्या ॥ १११ ॥

क्व छिन गिणकानां ह्यनेके गवाक्ता, दधित यदनुवेलं ता रसं नव्यनव्यं॥तदजिन हत्वरतः क्रलवालोऽपि ताजि,र्गल ति हिमगिरिवां जानुजाजिर्दढाजिः॥ ११०॥ वेइयादारं॥

अर्थः—(गणिकानां के॰) वेश्यार्गना (लघुनि के॰) हलका एवा (हिंद के॰) हदयने विषे (अनेके के॰) अनेक (गवाद्याः के॰) गो खना जेवां ढिड़ो (क के॰)शा माटे थतां हवां, (यत् के॰) जे कारण माटे (ताः के॰) ते वेश्यार्ग (नव्यनव्यं के॰) नवीन नवीन एवा (रसं के॰) रसने (अनुवेलं के॰) प्रति समय (दधित के॰) धारण करे हे, (तत् के॰) तेमाटे (कूलवालोऽपि के॰) कूलवाल नामा तपस्वी पण (ता निः के॰) ते वेश्यार्थें (हत्तृत्तःअजिन के॰)हरण करी हे हिन जेनी ए

वो चारित्रथी च्रष्ट थयो ते वात घटे हो, केम के (हिमगिरिः के०) हेमाच लगिरि हिममय हो ते (वा के०) जेम (हढानिः के०) हढ एवी (ना जुनानिः के०) सूर्यना किरणोयें करी (गलित के०) गले हो.

आंहिं कूलवाल क्षिनी कथा कहे हो. कोणिकराजायें पोतानी पहराणी पद्मावतीना वचनथकी पोताना पुत्र इझ विइझनी पासें सेचानक इस्ती, हार, अने कुंमलनी याचना करी ते बेहु जणायें ते वस्तु आपी निहं. पढ़ी ज्यारें घणीज मागणी करी त्यारें चेडा महाराजानी पासें गया, दूत मोकलीने चे टकराजाने जणाव्युं के कोणिक राजा आ प्रमाणे वस्तुर्व मागे हे. पही ते वस्तु न मलवाथी कोणिक राजा युद्ध करवा माटे समस्त सैन्य लइने वि शालानगरीने विषे गयो, त्यां युद्धमां प्रथम चेटकें एक बाएेंकरी कालु कुमरने हुएयो, तंदनंतर दश युद्धोये करी कोणिकना दश बांधवो माखा, ते वारें कोणिकें चमरेंइनुं अने सौधर्मेंइनुं आराधन कखुं, तेणें चेटकराजा ना बाणनुं स्वलन कराव्युं, तेवारें चेटक राजा अनशन लइ देवगतिने प्रा प्त थयो, पढी सेचनक हाथी उपर वेशीने हलविहलें रात्रिनेविपे घणा माणसोने मारी नाख्यां, पत्नी कोणिकना कूडकपटथी ज्यारे सेचनक ह स्ती संयाममां मरण पाम्यो, त्यारें इल्ल तथा विद्वें श्रीवीरनगवाननी पा में दीक् यहण करी, अने कोणिकें विशालानगरीने यहण करवानो उपाय कहाो, तो पण ते नगरी लेवाने समर्थ थयो नही. त्यारें कोइ राक्सें कह्यं के कूलवालक ऋषि जो आवे, तो विशाला नगरी यहए यइ शके! ते काम मागधिका वेक्याची चाय तेम हे. पही कोणिकें मागधिकाने कहे वाची तरत ते कपटश्राविका चइने जे वनमां कूलवालकक्षि हता, त्यां पोतानी साथें बीजी पांच व वारांगना लइने गई ते स्वियोयें लाडुमां ने पालानुं चूर्ण नाखीने क्षिनें वहोराव्या तेथी क्षिनें जाडा थवा मांम्या त्यारें ते स्त्रियोयें ते मुनिनुं वैयावृत्य करवा मांमग्रुं, अने अंगस्पर्शनादिकें लोनित करी चारित्रथकी पतित करीने राजानी पासें आख्यो,राजायें पूछ्युं के हे मुनि ! ए विशालागनरी केवीरीतें खेवाय ? त्यारें क्षियें कह्यं के पुर नी वचें श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनो प्रासाद है तेमां एक इंद्रुं है, ते जो पाड्य, तो विशाला नगरी तने मखे, पढ़ी क्षि पोतें ते पुरमां गया, अने के

हेवा जाग्या के जे तमें सर्वे मजीने प्रासादना दंम कजशादिकने पाडो, तेवारें कटक तथा जोकोयें तेम कखुं तेथी प्रथ्वी यहण करी. पढ़ी त्यां ह जनी साथें गर्दजने जोडीने केत्रो खेडवा मांमग्रां, तेथी राजानी प्रतिका पूर्ण थइ ॥ ए कूजवाजकक्षिनी कथा ॥ ११२ ॥

व्याधोनान्यहिताय सत्यमसकृष्ठिश्वस्तजंतूंस्तुद्न, न स्व स्मिन्नपि तुष्ठये च्युतशरकोडादितोंऽतं व्रजन् ॥ मृत्यो डर्गतिमाप्तवांश्च मृगयालोकद्यात्यें ततो, गांगेये न सशांतनुक्तिपितस्तस्यानिपिश्वस्ततः ॥ ११३॥

अर्थः-(सत्यं के॰) ते वात तो सत्य हो, के (अन्यहिताय के॰) अ न्यना हितने माटे (व्याधः के०) जे पाराधि जे हिंसक ते.(न के०) नथी वली ते पाराधि केहेवो हे ? तो के (विश्वस्तजंतून के०) गायनेकरी वि थास पमाडेला जे मृगादि जंतु तेने (असकत् के०) वारंवार (तुदन् के॰) इःख देतो एवो तथा (च्युतशरक्रोडादितः के॰) पोताना हाथथी बोडेलां एवां जे बाणो, ते शूकरादिकने लाग्यां, ते माटेज ते व्याधने मा रवा दोड्या, एवा जे ग्लूकरादिक तेथकी (श्रंतं के०) श्रंतने (व्रजन् के०) प्राप्त थयो एवो ते व्याध हे, ते (स्मस्मिन् अपि के०) पोताने विषे पण (तुष्ठये के०) तुष्टिने माटे (न के०) यातो नथी. अने ते को डादिक ग्लूकरादिकोनुं (मृत्यो के०) मरण थये उते, मारनार जे व्याध डे, ते (डुर्गतिं के॰) डुर्गतिने (आप्तवान के॰) पामतो ह्वो, (च के॰) वली (मृगया के०) ते मृगादिक मारवानी जे हिंसा ते (लोकघ्यात्यें के०) बेहु लोकनेविषे इःख दायी हे अर्थात् हिंसा करवायी आ लोकमां मरणादि नय अने परलोकमां इर्गति ए बेहु प्राप्त थाय हे. (ततः के॰) ते माटे (ततः के॰) ते हिंसाथकी (गांगेयेन के॰) नीष्मिपतामहें (सः के॰) ते (शांतनुद्धितिपतिः के०) शांतनुराजाने (तस्याः के०) ते मृगयाथ की (निषिदः केण) निषेध कखा अर्थात् मृगया करवायकी विराम पमाड्यो.

हवे ते गांगेय शांतनुनी कथा कहे है, हिस्तनापुरमां कुरुवंशनेविषे शां तनु राजा ख्रत्यंत मृगयाना व्यसनी हता, ते शांतनुराजायें वनमांहि सात नूमिनी श्वेत हवेलीमां रहेली जहु विद्याधरनी पुत्री गंगादेवी जेम कहे ते

वी रीते राजायें वर्चवुं एवी प्रतिक्वा करीने ते गंगासाथे लग्न कखं,परणीने घेर आव्या पढी गंगायें शांतनु राजाने उपदेश करी मृगया रमवानुं व्यसन मू काव्युं एकदा गंगाने गर्न रह्यो त्यारें तेने धनुष्टंकारव करवाना तथा खर्न धाराना मुखदरीन करवा वगेरेना दोहद जलक थया,तदनंतर गांगेय ना मा पुत्रनो जन्म थयो, पढी फरी पण शांतनु राजा मृगया व्यसनमां आ सक्त थयो, त्यारें गंगायें तेने घणुंए समजाव्यो तो पण तेणें मान्युं नही अने मृगया रमवा गयो, तेथी परणती वखतें करेली प्रतिकानो जंग थयो जाणीने गंगा पोताना पुत्र गांगेयने लक्ष्ने पोताना पिताने घेर जती रही त्यां गांगेयना मामायें शस्त्रास्त्र विद्या सारीरीतें गांगेंयने शीखवी, तेथी गांगेय सर्व कलामां उत्कृष्ट थयो, पढ़ी जगतुमां लोकोयें केहेवा मांम्यूं जे गंगा पोताना स्वामीने त्यागीने पीयरमां रहे हे तेवी निंदाना इःखद्यी पोताना पुत्र गांगेयने लक्ने गंगा पाढ़ी वनमां ते प्रासादनेविपे जक्ने रही. पाढ जयी शांतनु राजायें गंगा पोताने पियर तरफ जवाथी चोवीश वरस प र्थत पोते शोक कस्रो, केटला एक दिवसें जे वनमां गंगा पोताना गांगे य पुत्रनी साथें रहे हे तेज वननेविषे शांतनु राजा मृगया रमवा माटे आव्या, त्यां गांगेयें मृगया करता अटकाव्याधी गांगेयने अने शांतनु रा जाने परस्पर महायुद्ध थयुं, ते युद्धमां गांगेयें शांतनुने जींत्या, पढी गंगा ने युद्धनी खबर पडवाथी त्यां आवीने पोताना पति शांतनु राजाने कह्यं के आ तमारो पुत्र महाप्रतापी गांगेय हे. तेनी साथें तमें युद्धमां पराज य पाम्या, ञ्रा वात सांजली शांतनु राजा ञ्रत्यंत प्रसन्न थया, पढी गां गेयें शांतनु राजाने मृगया रमवाना निषेधनी प्रतिका करावी जे द्वेषी तमारे कोइ वखत मृगया रमवा जवुं नहिं॥ ११३॥

> पाप हों तनुमद्योचितघृणः पुत्रेपि छष्टाद्याय, श्रंमः खांमवपावकादिप मुधा कं कं न हन्याक्जडः ॥ किं बाणेन जरासुतो वनगतो विव्याध नो बांधवं, प्रापो चैर्मुनिघातपातकनरं किं नाजराजांगजः॥ ११४॥

अर्थः—(पापकीं के०) हिंसाकर्म रूप क्रिने विषे (तनुमद्योक्तितवृ एः के०) शरीरधारी प्राणीना वधनेविषे त्याग करी हे दया जेणे एवो

खने (चंमः के०) तीक्षण ने मन जेनुं एवो प्राणी (पुत्रेषि के०) पुत्रने विषे पण (छ्राशयः के०) छर ने खंतः करण जेनुं एवो थाय ने, अर्था त् तेने पुत्रनी पण दया खावती नथी. खुवो (जडः के०) जड एवो इंइ ते (खांमवपावकादिष के०) खांमववनने बालवा मुकेला ख्रिम थकी पण (कंकं के०) कया कया प्राणीने (मुधा के०) विनापराध (न हन्यात् के०) नहण तो हवो खर्थात् घणा प्राणीने इंहें हल्या, वली (वनगतः के०) वनने विषे गयेलो एवो (जरासुतः के०) जरा पुत्र ते (बाणेन के०) बाणें करी (किं के०) छं (बांथवं के०) पोताना श्रीकृष्म बांथवने (नो विव्याध के०) न मारतो हवो ना मारतोज हवो, खने (खजराजांगजः के०) खजराजानो पुत्र दशरथराजा (उच्चैः के०) खत्यंत पणे (मुनिघा तपातकचरं के०) मुनिघातना पातकचरने (किं के०) न पामतो हवो ना मुनिघातना पापचारने प्राप्त थयोज माटे हिंसा सर्वथा करवी नहिं॥११४॥

आश्लोकमां त्रण दृष्टांत हे तेमां प्रथम खांमव वननी कथा कहे हे. जनमेजय राजायें यक्तविषे अत्यंत घृत होमवा थकी अमिने एटली तृ मि थई के जेणे करी अमिने अजीण थयुं, पही कोइना यक्तमां घृतदाह याय निहं त्यारें सर्वेने विचार थयों जे हवे आपणे ग्रुं करवुं ? पही इंडें वायुने सहाय करीने अमिने खांमव वन हतुं तेमां मोकत्यों तथी ते अमियें खांमव वन सजीव हतुं ते जस्मीनूत करी नाख्युं, अने अमिने अजीण रोग हतो, तेनो नाश कथो, आ कथा लोकिक शास्त्रगत होवाथी असंबद जेवी हे. तो पण इहां दृष्टांतमां लीधी हे एम जाणवुं.

वली बीजा जराकुमारनी कथा कहे हो. एकदिवस श्रीरुक्षें नेमीश्वर जग वानने पूछ्युं के मारुं मृत्यु केवी रीतें थाज़े ? त्यारें जगवाने कह्युं के जरा कुमारना हाथथी तमारुं मरण थज़े ? ए वचन सांजलीने जराकुमारें जा एयुं जे हुं श्रांहिं रहीश तो महारे हाथें कदाच महारा जाइनो नाश थाज़े एम पोताना जाइ श्रीरुक्षनी जिंक्षें करी वनमां जतो रह्यो पही देपाय न नामा श्रमुरें ज्यारे हारिका जस्म करी नाखी तेवारें बलदेव श्रने श्री रुक्ष जमता जमता ते वनमां गया, त्यां श्रीरुक्षने तरष लागवाथी पा णी जरवा बलदेव कोइ जनाशय प्रत्यें गया पाइन श्रीरुक्ष पीतांबर उढी एक जाइतलें सुइ गया, त्यां फरतो फरतो ते जराकुमार श्राव्यो, तेणे हे टेथी पीतांबर उढे जुं तथा पादतलमां पद्मनुं चिन्ह जोवाथी जराकुमारने आ मृगलो हे एवी चांति थइ, तेथी तेनो शिकार करवा तेऐं जोरथी बाए मूक्यो, जेथी श्रीकृक्ष मरए पाम्या ॥ २ ॥

हवे दशरथराजानी कथा कहे हो. अयोध्या नगरीमां दशरथ राजा राज्य करे हो. एकदिवस ते राजा वनमां क्रीडा करवा गयो, त्यां वारिजी जायें करी विज्ञास करतो एवो हस्तीनो शब्द सांनव्यो, त्यारे दशरथ रा जायें तदनुसारें बाण मास्रो, ते बाणधी पाणीनो घटनरतो एक मुनिपुत्र मरण पाम्योः तेवारें हातात एवो शब्द करी ते मुनि धरतीयें पड्यो, तेवामां ते दशरथराजा त्यां जुवे, तो बाणविद्ध थयेला मुनिपुत्रने जोयो, एटलामां ते मुनिपुत्रनां माता पिता पण त्यां आव्यां, तेणे शरविद्ध थइ मरण पामेला पोताना पत्रने जोइने घणोज शोक कस्रो, राजा विल्रखो थइ ते हद माता पिताना पगमां पड्यो, त्यारे ते वेहु हदें कह्यं जे अमो जेम पुत्रवियोगें मरण पामीयें हेयें तेम तुं पण पुत्रवियोगें मरण पामी श ? एवो राजाने शाप दइ ते वेहु हद्धमरण पाम्यां, अने तेमज दशरथरा जानुंपण पुत्रवियोगें मरण थयुं माटे हिंसा थकी इःख प्राप्त थया विना रहेतुं नथी ॥ ११४॥

चौरोडः खमुपैतिनारकसमंसत्योपितत्सऽन्निधेः, शुष्के प्रज्विति हि साईमपि किं नो विद्वा दह्यते ॥ संघोद्घंटनस्यद्ग्धचरट्यामेऽन्नि तप्तप्रजा, मध्योत्पत्ति नवे समं सगरजैः किं किं न लेने तथा ॥११५॥

श्रर्थः—(चौरः के॰) चोर (हि के॰) निश्चें (नारकसमं के॰) नार कीस मान, (इःखं के॰) इःखने (उपैति के॰) पामें छे, ते चोर तो पामे परंतु (सत्योऽपि के॰) चौर्यकर्म रहित एवो साचो पुरुप पण (तत्सिन्निधेः के॰) ते चोरना सहवास थकी इःखने पामे छे केनी पेठें? तो के (ग्रुष्के के॰) सुकुं एवुं काष्ट (प्रज्ज्विति के॰) सलगे छते तेनी साथें रहेलुं एवुं (सा ईमिष के॰) लीलुं काष्ट पण (किं के॰) ग्रुं (विह्नना के॰) श्रिम्न जे छे, तेणें करी (नोदह्यते के॰) नथी बलवुं ना बलेज छे. तेम चोरनी साथें रहेवाथी सारो मनुष्य पण इःख पामे छे। वली जुवो (संघोल्लंटन के॰) संघना लुंटवामां (सक्त के॰) सक्तीनृत थया एटलामाटेज (दग्धचरट

यामे के॰) बालेला हे चोर जेमां एवा याममां (अग्नितप्तप्रजामध्योत्प त्तिनवे के॰) ते चोरोनी मध्ये अग्नीथी तपीने प्रजा लोक पण बली गया ते शावहजार चोरानी उत्पत्ति केटलाएक नवें (सगरजेः समं के॰) सग रराजाना पुत्रे पणे सर्वनी साथेंज थइ. माटे (तथा के॰) ते प्रकारें (किं किं के॰) ग्रं ग्रं (नलेने के॰) जीव न पामे ॥ ११५॥

आंहिं सगरराजाना पुत्रोनी कथा कहे हे. महाइगिस्थपल्लीने विषे शा व हजार चोर रहेता अने जलालोकपण रहेता हता एकदा त्यांथी श्रीन रतचक्रवर्तिनुं संघ चाल्यो जतो हतो तेने लूंटवाने चोर तैयार थया तेवा त जरतराजायें जाणी तेवारें त्यां आवीने पल्लीनुं द्वार बंध कखुं तेवारें स वैचोरो अभीषी जली गया तेनी साथें त्यां रहेनारा साधुलोकोपण बली गया. शावहजार चोर घणा जव जमण करीने सगरचक्रवर्तिना पुत्र थया. एक दिवस ते रलदंमकें करी अष्टापदपर्वतने परिखा करवा तत्पर थया,तेने देवताउंयें वास्वा तो पण ते अष्टापद चपर गंगानदीना जलने लावता एवा ते साठे हजार पुत्रोने अभिकुमार देवतायें बाली जस्मीनृत करी दीधा.

चौर्य स्वेन च वर्णकेन च कृतं मूढा इरंतं ज्वे, राङ्गा मं फिकशालकोऽपि न हतः किं मूलदेवेन सः ॥ किं चैत चिजगत्रियोऽपि मदनस्त चित्तचौर्योधतः, शापं प्राप न किं प्रजापतिगिरा दाहं च रौडा मिना ॥ ११६॥

श्रथः—(स्वेन के॰) पोताना (वर्णकेन के॰) पोतानी जाति वाला संबंधीए पण (चौर्य के॰) चौर्य, (कृतं के॰) कछुं (मूढाः के॰) हे मूढ जनो ! (नवे के॰) जवने विषे (मूलदेवेन के॰) मूलदेव नामा (राज्ञा के॰) राजायें (सः के॰) ते प्रतिक्ष एवो (मंनिकशालकोपिके॰) चोरी करनारो मंनिक नामा पोतानो शालक (किं के॰) ग्रुं (न हतः के॰) न माखो. ना माखोज (च के॰) वली (एतज्ञिजगत्प्रियोऽपि के॰) श्रा त्रण जग तने वहालो एवो पण (च के॰) श्रने (तज्ञिजगत्प्रियोऽपि के॰) तेना चित्तने चो रवामां चयुक्त एवो (मदनः के॰) कामदेव, (प्रजापतिगिरा के॰) ब्रह्मा नी वाणीथी (इरंतं के॰) इरंत एवा (शापं के॰) शापने (किं के॰) ग्रुं (न प्राप के॰) न पामतो ह्वो ? वली कामदेवें ब्रह्मानुं मन हरण क

खुं तेथी ब्रह्माने पोतानी दीकरी सरस्वतीनी उपर कुदृष्टि थइ पढ़ी कोइकें कहां कें आ खुं ? अकार्य करवा इक्षो हो ! त्यारें ब्रह्मायें जाएं जे आ सर्व अनंग एटले कामदेवनोज रंग हो. पढ़ी कामने शाप आप्यो (च के०) वली (रौड़ामिना के०) शंकरना त्रीजा लोचनमांथी निकलेला एवा अमियें करी (दाहं के०) दाहने खुं कामदेव न पाम्यो ? ना दाहने पण पाम्योज॥११६॥

श्रांहिं मूलदेव तथा कंदर्पनी कथामां प्रथम मूलदेवनी कथा कहे हे. रत्नपुर नगरने विषे मूलदेव राजा राज्य करे हे, तेनो मंिक नामा शालो हतो,ते पोताना बनेवीना घरमांथी सर्व पदार्थों लड़ने सुख नोगवतो हतो, एम करतां पूर्वकृतकर्मोंद्यथी तेने जुगारना व्यसनमां मन थयुं, ते जुगार रमतां रमतां श्रद्धकर्मों घर वगेरे सर्वख. हारी गयो, पही इव्यहीनताने लीधे श्रत्यंत इःखी थवाथी नगरमां चोरी करवा लाग्यो, नगरनां लोको यें मूलदेव राजानी पासे श्रावी फरीयादि करी, के श्रा तमारो सालो गाम मां चोरी बहुज करे हे, ते सांजली राजायें तेने वाखों के हवेथी तारे श्रा काम करवुं निहं. श्रा वखत श्रा तारो श्रन्याय हुं सहन करुं हुं श्रने तुं महारो संबंधी होवाथी कांही पण शिक्षा तेने देतो नथी. वली केटलाए क दिवसें ते शालायें पोतानी बेनना घरमांज खातर पाडगुं, त्यारे गृहर क्क शिपाइचेयें तेने नाशी जतो जोइ पकडीने राजानी पासें श्राख्यो, न्या यवंत राजायें तेने ग्रुलीयें चडाव्यो ते मरण पामीने हुर्गतियें गयो ॥११६॥

हवे कंदर्पनी कथा कहे हे एक दिवस ब्रह्मा ध्यान करता हता, त्यां कामदेव तेना ध्यानने जंग करवानो विचार करी ब्रह्माना मनमां पेठो, के तरत पोतानी पासें रमती एवी पोतानी दीकरी सरस्वतीने जोइने तेनी उपरज ब्रह्मानी सरागता थइ, त्यारें सहुयें जोइने कह्युं के आ तो धर्मलोप याय हे अने घणोज अनर्थ थाय हे ते वातनुं ब्रह्माने झान थवाथी मनमां विचार करवा लाग्या के आ ते शो गजब बन्यो! जूर्ड आ कामदेवज आवा अधर्ममां मुने उतारवा तत्पर थाय हे एम जाणी पहवाहे जुने हे तो त्यां कामदेवने नजरें जोयो त्यारें रोषयुक्त थइने ब्रह्मा बोख्या के हे पापी! म हादेवना त्रीजा नेत्रना अग्निथकी तुं बजीने जस्मीजृत थइ जाइश एम ब्रह्मायें शाप आप्यों, के तरतज शंकरने काम उपर क्रोध आववाथी

पोतानुं नाललोचन चघाड्युं, तेमांथी अमि निकल्यो, तेऐं करी कामदेव नस्मीनृत थइ गयो, ए सर्व चोरीनुं फल मब्युं माटे सर्वथा चोरी करवी निहं ए तात्पर्यार्थ हे. ए लेकिकशास्त्रनो दृष्टांत हे.

पुण्यापुण्यचयेन बुिक्रमला स्यात्करमलाऽप्यंगिनां, वा तेनेव युगंधरी सदसता मुक्ताफलं गारचा ॥ लंकेशो नलकूबरियतमां नाम्नोपरंचां रता, मत्याक्तीद्र तां च रामविनतां सीतां जहाराशुवत् ॥ ११७॥

अर्थः—(पुण्यापुण्यचयेन के०) पुण्य तथा अपुण्यना समूहें करी (बु कि०) बुिक, (अमला के०) निर्मल तथा (कइमलापि के०) पापिष्ट पण (अंगिनां के०) सर्व प्राणीयोनी (स्यात् के०) होय, (वातेन के०) वायुयें करी (युगंधरीव के०) युगंधरी जेम तेम (सदसता के०) सारा अने न रसा वायुयें करीने अनुक्रमें (मुक्ताफल के०) मुक्ताफलनी अने बीजा (अं गारना के०) अंगारनी कांतिने प्राप्त याय हे. जुवो (लंकेशः के०) राव ण (रतां के०) आसक एवी (नलकूवरप्रियतमां के०) नलकूवरनी प्रिया (नाम्ना चपरंनां के०) उपरंना नामें हती तेने (अत्याद्वीत् के०) त्यागकरतो हवो, ते सत्कर्मना चदयनुं फल थयुं, (च के०) वली तेज रावण (अर तां के०) आसक निह एवी (रामवितां के०) दशरथना पुत्र राम ते नी स्वी (सीतां के०) सीताने (आग्रुवत् के०) शीवतानी पेठें (जहार के०) हरण करतो हवो, तेथी तेनो कुलक्वय थयो, ते पापकर्मना चद यनुं फल थयुं ॥ ११७॥

श्रांहिं रावणनी कथा कहे हे. कांचनपुरने विषे नलकूबर राजा राज्य करे हे. एकदा दिग्विजय करवा रावण त्यां श्राव्यो, नलकूबर राजा सैन्य लक्ष्ने साहामो लडवा श्राव्यो, रावणें सैन्य जांग्युं, जोइने गढमां प्रवेश करीने रह्यो, नगरनी फरतो श्रमाली विद्यायेंकरी श्रम्निय प्राकार कस्रो, तेवारें रावण कोप्योथको श्रिव्या ज्येंकरी कोटनी नजीक रह्यो थको,खेद पाम्यो, त्यारें नलकूबरनी पट्टराणी सखीसहित त्यां श्रावीने रावणने कहेवा लागी, के मने तुं श्रंगीकार कर, तो हुं तुने हुर्गयहण विद्या सम पण करूं रावणें ते वात कबूल करीने पट्टराणी पासेंथी विद्या लइ श्रम्नना

कोटने जांगीने पठी नलकुबरनी पहराणीने रावण कहेवा लाग्यों के तुं मा री विद्या गुरु थड़ माटे हे स्त्र! हुं तुने इन्नतों नथी. एम कही पठी नलकूबर राजाने रावणे कह्यं के ज्ञा मारी विद्यागुरुस्थाने हे माटे महारी जिंगनी थइ एने तुं पहराणी करी राख्य,वली कालेंकरी दशरथ राजाना पुत्र श्रीराम चंड वनवास गया त्यां दंमकाऽरण्यमां रह्या हता,तेवामां श्रीरामचंडनी सी ताने माटे सिंहनादादि ज्यायो विकूर्वीने रावणें सीतानुं हरण कह्युं ॥११ ॥

मृढः परस्त्रियमुपेत्य कुवाक्यबंध,घातापकीर्त्तमृतिङ्गेति इःखपात्रम् ॥ स्याद्रह्मराजचुलणीरतदीर्घवर्तिकं, लह्म क्रयादिव विधोगुरुतलपगस्य ॥ परस्त्रीदारं॥ ११७॥

श्रयं—ः(मूट के०) मूट पुरुष, (परिश्वयं के०) परिश्वाने (उपेत्य के०) प्राप्त थइने (कुवाक्य के०) हुर्यश, (बंध के०) रोधनादि, (धात के०) लकुटादिनुं ताहन, (श्रपकीर्त्त के०) श्रपकीर्त्तं, (मृति के०) मरण (हुर्गति के०) हुर्गति, इत्यादि (हुःखपात्रं के०) हुखनुं पात्र, (स्यात् के०) होय, केनी पेतें (ब्रह्मराजचुलणीरतदीर्घवत् के०) ब्रह्मराजानी चूलणी नामा स्त्रीनेविषे श्रासक एवा दीर्घराजानी पेते थाय हे, (गुरुतत्पगस्य के०) हुद्सरपतिनी स्त्रीसाथे व्यनिचारने करता एवा (विधोः के०) चंइ माने (लक्ष्मक्ष्यादिव के०) कलानाक्ष्यथकी जेम हुःख (किं के०) ग्रं निहं ? ययुं ना थयुंज ॥ ११०॥

श्रा श्लोकमां दीर्घ तृपनो तथा चंड्मानो दृष्टांत होवाथी प्रथम दीर्घ तृपनी कथा कहे हे. कांपिट्यपुरने विषे ब्रह्मराजा राज्य करे हे, तेनी चु लिए। नामें स्त्री हती, ते ब्रह्मराजा मरण पाम्यो तेवारें तेनो पुत्र ब्रह्मद च चक्रीहतो ते घणोज नानो हतो, चुल्लणी दीर्घराजानी साथे विषय जोग ववा लागी एकदिवस पुत्र श्रमे माता बेहु बेवां हे तेवामां एक हंसी हती ते कागडानी साथें रित सुख करती नजरें पड़ी ते जोइने तेज वखतें ते ब्रह्मद पोतानी माताने देखतां ते हंसीने मारी नाखी, ते जोइ चिल्ल एथिं जाएं जे श्रा पुत्रे मने शिक्षा श्रापवा माटे श्रा काम कखं जणाय हे श्रमे मारुं चरित्र पण श्रा पुत्रे जाएं हे, तेथी लाखनुं घर करी उपर धोलाव्यं श्रमे पुत्रनें कहां के हे पुत्र! श्रा घरमां ताहरी स्त्री सहित नुं र

है. ए निड़ा करवानुं एकांत स्थल घणुंज सारुं हे ते सांजली ब्रह्मदत्त ते मां रह्यो रात्रिये मातायें ते घरने अग्नियें सलगाव्युं तेमांथी ब्रह्मदत्त, मं त्रीनी शिक्ताथी सुरंगने मांगें निकली गयो. ते प्रथ्वीमां फरतां फरतां अ नुक्रमे त्रणखंमनुं राज्य प्राप्त करी पाह्यो पोताने गाम आवतो सांजव्यो के तुरत तेनी माता चुलणी आर्या थड़ गइ. अने दीर्घराजाने चक्रवर्ति ब्रह्मदत्तें अनेक कदर्थनाथी मारी नाख्यो ॥

हवे चंइनी कथा कहे हे. एकदिवस दृहस्पतिनी नार्या तारानामे घ णीज सक्रपवती हती तेने जोइ चंइमा तेना नोग माटे आव्यो, कहां हे के ॥ विकलयति कलाकुशलं, हसित शुचिं पंप्तितं विडंबयति ॥ अधीरयति धीरनरं,क्रणेन मकरध्वजोदेवः ॥ १ ॥ नावार्थः –कामदेव हे ते, एक क्र णमां कलाकुशल पुरुषने विकल करे हे,क्रणमां पवित्रने हसे हे,क्रणमां पं मितने विडंबन करे हे.क्रणमां धीर पुरुषने अधीर करे हे.एवो ए कामदेव हे. हवे पोतानीस्त्री तारा तेनी साथें असमंजस कमे करता चंइने जोइने हृहस्पतिये शाप आप्यो, के हे पापी! तुं लांहन सहित था. तथा वली ताहरे कोइदिवस आहिं आववुं नहिं. एम तिरस्कार कथो ॥ ११०॥

सुनूमजमदिम्नजप्रतिमपुंजुमाघर्षजे, कषायदवपावकेवि षयवात्यया दीपिते॥ महजुणवनं दहत्यहह पुण्य कटप जुम,स्ततोस्तियदिदेवतः द्यामघनाघनोवर्षति॥ ११ए॥

श्रयः—(सुनूमजमदिव्रजप्रतिमपुंडुमाघर्षजे के०) सुनूम राजा श्रमे ज मदिव्र पुत्र परग्रराम तेना सरखा पुरुषहूप जाडना घसावायकी उत्पन्न थये लो एवो श्रमे (विषयवात्यया दीपिते के०) विषयहूप विंटोलीया वायुयेंकरी प्रदीप्त एवो (कषायदवपावके के०) कषायहूप दावाध्रिनेविषे (महजुणवनं के०) मोहोटा गुणहूप वन (श्रह्हदहृति के०) श्ररे बली जाय हे. (ततः के०) त्यार पहि पुष्यकल्पडुम उपर दवाध्रि लागे हे त्यारें (पुष्यकल्पडुमः के०) पुष्यहूप कल्पडुम जे हे, ते (यदि के०) जो (देवतः के०) नाग्य थकी (श्रमधनाधनः के०) श्रमहूप मेध (वर्षति के०) वरसे हे, तो ते क ल्पडुम (श्रक्ति के०) त्यां रहे हे, श्रयांत् दाह थतो नथी एम जाणवं ॥ श्रांहिं सुनूमचक्रवर्ति तथा परग्ररामनी कथा कहे हे. एक वनने विषे

जमद्मि ऋषि तप करता इता, त्यां तेऐों एवं सांनव्युं जे " अपुत्रस्य गतिर्नास्ति " त्रा वैदिक वाक्य सांजलीने ते जितशत्रु राजानी दीकरी रे णुकाने परएया, तेने परग्रुराम नामा पुत्र थयो, रेणुका एकदिवस पोता नी बेनने मलवा गइ त्यां ते रेणुकाने तेना बनेवी कृतवीर्य राजायें जोग वी ते वातनी जमद्रि क्रिने खबर पडवाथी तेणे पोताना पुत्रने कह्यं के हे पुत्र ! आ ताहारी इष्टाचरणी माताने तुं मारी नाख्य, ते वात सांजल तांज परग्ररामे तरत पोताना कुठारेंकरी पोतानी मातानुं शिर कापी ना रुखुं आ वात जाणीने जमदिमने कतवीर्य राजायें मारी नारुयो, वली प रग्रुरामें पोताना बापने मारनार कतवीर्यने माखो तेवारें कतवीर्य राजानी स्त्री सगर्जा हती ते नाशिने ताषसना आश्रममां गइ. त्यां तेने पुत्र ययो, तेनुं सुनूम एवं नाम पाड्यं, ज्यारे ते योवन वयने प्राप्त थयो त्यारे सर्व पोतानुं वृत्तांत माताना मुखर्थी सांजली सुनूमचक्री कांपिव्यपुरमां आव्यो, तेनी दृष्टिमां क्त्रियोनी दाढा ते स्थलने विषे रहेली हती ते परम अ न्नरूप थती द्वी त्यां सुनूमने मारवाने माटें परशुराम श्राव्या,पढी सुनूम ना नाग्ययोगें करी ते स्थलचक्ररूप थइ गयुं, ते चक्रें करी सुनूमें परग्ररा मनुं शिरहेदन करी नारुयुं, पूर्वे परग्रुरामें सात वार निःक्त्री पृथ्वी करी हती तेवार पढ़ी सुचूम राजा एकवीश वार निर्बाह्मणी पृथ्वी करी नर कें गयो माटे कपायनो त्याग करवो ए सर्व सुक्त संमत है ॥ ११७ ॥

> जीवाः कषायविवद्यान विचारयंति, चाणाक्यविक मिप कृत्यमकृत्यमत्र ॥ कट्पांतवात विततिक्तुजित स्य पूर्ण,रोदोंऽतरस्य जलधेर्ननु कोविवेकः॥१२०॥

अर्थः—(कषायिववशाः के०) कषायथी विवश एवा (जीवाः के०) जीवो, (चाणाक्यवत् के०) चाणाक्यनी पेठें (किमिष के०) कांही पण (अत्र के०) आहिं (कत्यं के०) कत्यने अने (अकृत्यं के०) अकृत्य ने (न विचारयंति के०) विचार करता नथी. (कृष्णांतवातिवतितृज्ञातस्य के०) कृष्णांत कालनो जे पवन तेनो जे विस्तार तेणें करी कुनित एवो अने (पूर्णरोदोंऽतरस्य के०) पूर्ण हे पृथ्वी आकाशनो अंतर जेनेविषे एवा (जलधेः के०) समुइने (किं के०) ग्रं (विवेकः के०) विवेक होय?

अर्थात् न होय तेम कषायविवश जीवने पण विवेक न होय ॥ १२०॥ आंहिं चाणाक्यनी कथा कहे हे. चणकयामने विषे चणीनामा विप्र तेनी चणेश्वरीनामें नार्या इती, तेने चतुरबुदि चाणाक्यनामा पुत्र थयो, एकदिवस कांइक प्रार्थना करवा माटे नंदराजाना दरबारमां ते चाणा क्य आव्यो, त्यां सनामां सोनानो सिंहासन जोइने तेनी उपर बेंगो, एट लामां नंदराजा जमीने सनामां आव्यो, तेणे चाणाक्यने कहां जे हे चा णाक्य! तुं राज्यासन उपर केम बेतो? हवे तुं नीचें उतर एम सामवृत्ति यें करी कहुं, तो पण ते आसनथी उठ्यों नहिं, तेजोइ राजानी पासें रहे नारा जनोयें तेने सिंहासनधी गलोधो दइ नीचे पाडी नाख्यो, तेवारें को धावेशित थयेला चाणाक्यें राजानी समक् प्रतिका करी के जो हुं तारुं उन्मूलन न करुं तो दुं ब्राह्मणज नहिं. एम कही माथ्य उपरनी शिखा बांधी त्यांची मयूरयाममां गयो,त्यां क्त्रीनी पुत्रीनो चंड्पानदोहद पूर्खो, तेने चंड्युप्त नामा पुत्र थयो, तेने राज्यानिषेक करावी कटक लड्ने चाणा क्य पाडलीपुरमां गयो,त्यां परस्पर युद्ध थयुं,तेमां चंड्गुप्त तथा चाणाक्य पराजय पामी नाशि गया, पढी वृद्धुद्विवाला पर्वत राजाने सखा करी ने देशने बोडीने पाडलीपुरनेविषे जइने पढ़ी नंदराजानो धर्मद्वारेंकरी नाश करीने चंड्ग्रप्तने अने पर्वतराजाने नंदराजानी गादीपर बेसाखा, अने मंत्रीनुं काम पोतें चाणाक्यें करवा मांमग्रुं पढी ॥ तुखार्थ तुखसाम र्थ्यं,मर्भक्ञं व्यवसायिनं ॥ ऋर्दराज्यहरं मित्रं योन हन्यात्सहन्यते ॥ ऋा प्र कारनुं नीतिनुं वाक्य संनारी ते चाणाक्यें पर्वतने विषकन्यानुं पाणियह ण करावीने मारी नाख्यो. कह्यं हे के:- जुड़ा सकचतुरिया सुहिणो, विवि संवयंति कयकज्जा ॥ जह चंदगुत्तगुरुणा,पद्यइत्र घाइत राया ॥ १ ॥१ २०॥

मिष्ठान्नं चुंद्धव हृद्धं पिब जलमि तान् पड्रसान् मा च हं दि, कायक्षेत्रां त्यजांगं विमलयसुकरः ऋरकुं निर्णोक्तः॥ मोक्तोपायोऽस्ति कोपं जय नज शिवजं शर्म साधो निबोध, वाक्तेक्तुक्तीरखं नप्रनृतिरसबलात्सिन्नपातेऽप्य छृद्म॥१११॥

अर्थः—(साधो के॰) हे साधु! (निबोध के॰) जाए ते ग्रुं? जाए तो के (मिष्टान्नं के॰) मिष्टान्न जोजनने (जुंद्दव के॰) जम, तथा (ह

यं के॰) ञ्चानंद करनार एवा (जलमपि के॰) जलने पण (पिब के॰) पान कर, (च के॰) वली (तान के॰) ते (षड्रसान के॰) व रसोने (मा रुंदि के०) म रोक्य अर्थात् षट्रसनुं आस्वादन कर अने (काय क्षेत्रां के०) कायक्षेशने (त्यज के०) त्याग कर तथा (अंगं के०) अंगने (विमलय के॰) निर्मल कर. कदाच तुं कहीश के एवा उपदेश करवाषी मोक्त तो सर्वथा थाय निहं परंतु नारकीनां इःख उत्पन्न थाय हे. त्यां कहे वे के ना एम नहिं (कूरकुं नर्षिणा के) कूरगडु क्षियें (मोक्तोपायः कें। मोक्तनो जपाय (सुकरः के।) रुडी रीते थाय एवो (जक्तः अस्ति के।) कहेलो हो. ते कयो उपाय? तो के (कोपं के) क्रोधने (जय के) जीं त. जेथी (शिवजं के०) मोक्थी थयेलां एवां (शर्म के०) सुखने (न ज के॰) जज. अर्थात् सर्व विषयसुख जोगव अथवा चाहे तो न जोगव, पण कोप करीश नहीं तेवारेंज मोक्सुखनी प्राप्ति थशे परंतु जो कोप क रीश अने बीजा विषयोनो नोग न करीश तो सुखी थाइश नहीं एम जा णजे. (इाक्तेकुक्तीरखंमप्रनृतिरसवलात् केण) इाक्ता, श्कुरस इध, खांम प्र मुख रसनां बल जे हे ते (सन्निपातेऽपि के०) सन्निपात थयो होय,तेने विषे पण (अइष्टं के॰) अइष्ठ याय हे परंतु कोप जय ते महारसवल हे वा स्ते सुबुदियें क्रोधनो त्याग करवो ॥ १२१ ॥

आंदिं क्र्रगडुनी कथा कहे हे. तुरमणिपुरीने विषे श्रीकुंनराजा राज्य करे हे. तेनो पुत्र लिलतांग नामा हतो, एक दिवस ग्रुरुनां वचन सांजली ने लिलतांगें वैराग्य पामी दीक्षा यहण करी. परंतु वेदनी कर्मना प्राबद्ध थकी तेने क्लोक्सणे जूख घणीज लागती हती,बहु क्रूर जोजन जमतो हतो तेथी तेनुं क्र्रगडु मुनि एवं नाम सहुयें पाड्युं, एकदा पजोसणना दिवसें तेने जूख लागी, त्यारे जमवाने बेवो, तेने साथें रहेनारा साधुर्वयें क ह्यं के हे पापी! आज पर्वने दिवसें पण तुं जमे हे? तो पण क्मामंदिर मां रह्यो हतो कांहीं पण बोल्या विना पोताना आत्मानी निंदा करवा ला ग्यो के अरे पापी आत्मा तुं आजनो दिवस पण जूख सहन करी शक्यो नहिं. एम आत्माने धिक्कारता तेने जोजन करतांज केवलकान उत्पन्न थयुं. त्यां देवतालयें आवीने केवलकाननो महोत्सव कह्यो, ते जोइ चार जण

साधु जे कूरगडूने जमती वखतें धिक्कार देता हता तेणें आवो कूरगडूनों महिमा जाणीने नमस्कार करी मिण्या डःष्कृत देता एवा ते चार क्रपकोने पण केवलकान उत्पन्न थयुं॥ एम कोपजय करनारने पण मोक्सुख मले हे.

> यदि शिवगतिरिष्टा सार्यमेतार्यवत्त, ज्ञयरुषमुपसर्गे ऽपीप्सिता डर्गतिश्चेत् ॥ करडकुरडवत्तक्रोधमुच्चैर्वि ध्रेयः, सुरतरुकनकडोर्योमतस्तं जजस्व॥ १५५॥

अर्थः—(यदि के०) जो (सा के०) ते प्रसिद्ध एवी (शिवगितः के०) मोक्तगित (श्रष्टा के०) इिंत होय (तत् के०) तो (आर्यमेतार्यवत् के०) मेतार्य मुनिनी पेते (जपसगेंऽपि के०) जपसगेमां पण (रुषं के०) रोपने (जय के०) जींत्य, अर्थात् मोक्तनी इज्ञा करतो होय तो मेतार्यनी पेतें रोष जय कर अने जो (ड्रगीतः के०) ड्रगीत (इिंप्सता चेत् के०) इिंत होय, तो (करडकुरडवत् के०) करडकुरडनी पेतें (तक्रोधं के०) ते क्रोधने (ज्ञेष्टित होयेयः के०) जंची रीते अर्थात् अतिशयपणें करवो, ए वेमांथी हे जव्य जीव! तुने गमे तेने सेव. एटले (सुरतहकनकड़ोः के०) कल्पतृक्त अने धतुरो ए वेहुना वृक्त हो, तेमध्यें (यः के०) जे (मतः के०) मनमां मा नेलो होय, (तं के०) तेने (ज्ञस्व के०) सेव. अर्थात् सुरतह अने धतुर ए वेहु हो तेमां तुने गमे तेने सेव्य. कल्पतृक्त समान रोपविजय जा एवो अने धतुरहृक्त समान रोपनो अविजय जाएवो ॥ १११॥

आंदिं मेतार्यनी तथा करडकुरडनी कथामां प्रथम मेतार्यमुनीश्वरनी कथा कहे हे. मेतार्यक्तिनी उपर सुवर्णकारें उपसर्ग कखो, तो पण तेने क्रोध चड्यो नही अने कुरड महाकुरड नामना बेसुनीश्वरो हता, तेमणे क्रोध कखो तथी ते बेहुजण डुर्गतिने प्राप्त थया ते कहे हे. श्रीवत्सा नगरीनेविषे बंधुदत्त नामा श्रेष्ठी रहे हे, तेनो मित्र यक्तदत्त ब्राह्मण हतो, ते पण बंधुदत्तना संसर्गथी जैनधर्मी थइ गयो, ते बेहुजणायें गुरुनी वाणी सांजलीने दीक्षा यहण करी. तेमां ब्राह्मणक्रियें तो पोताना ब्राह्मणकुल नो मद करवा मांम्यो, साधुउने कहे के ग्रूड्ना घरनुं जे अन्न तमे द्योहो? ते वीक नथी करता तेमज पारकी निंदा पण करवा लाग्यो पही ते बेहु मित्र मरीने स्वर्गमां देवता थया, तेमां यक्तदत्तनो जीव देवगितथी चवीने रा

जग्रहने विषे चांमालकुलमां उत्पन्न थयो, तिहां धनश्रेष्ठीनी स्त्रीने पुत्र न होवाथी ते ज्यारें गर्नवती थइ त्यारे प्रसवती वखतें ते चांमालणी पासेंथी पुत्रज्ञ ने पोताने आवेली दीकरी तेने आपी दीधी पढ़ी आ मारो पुत्र हे एम खोटी वात चलावीने तेनुं पोषण करवा मांमग्रुं,नगरमां ते वातने को इयें जाणी नही. ते पुत्रनुं नाम मेतार्थ एवुं पाडगुं, ज्यारें ते पुत्र युवान थयो त्यारें पितायें तेने आठ कन्यार्थ सारा घरनी परणावी. देवता प्रयोगें करी श्रेणिकराजानी दीकरी तिलकसुंदरीने पण परण्यो तेनी सार्थें घणां वर्षपर्यंत सुख नोगवीने पढ़ी देवतायें प्रतिबोध करवाथी श्रीवीर पासें दीक्ता यहण करी. एकदा निक्हाने माटे कोइ सुवर्णकारना घर प्रत्यें गया. ते सोनीना घरनेविषे सोनाना'यव हता ते कोंचपक्तियें नक्तण कथा, पढ़ी स्वर्णकार घरंथी बाहेर आवी जुवे तो यव दीठा नहिं, त्यारें तेणे जाण्यं, माहरा यवो निश्चें आ साधुयें यहण कथा हे. एमां संदेह नहिं. पढ़ी कोपायं मान थइ सुनिनें मस्तकें वाधरी वींटी गलापाश दइ मारी नाख्या, मेतार्य कृषि केवल पामी मोक्ते गया कोधजयनुं फल सोनीने मल्युं॥

हवे कुरड महा कुरडनी कथा कहे हे. कुणाला नगरीनेविष खाला नी समीप कुरड अने महाकुरड नामना बेंद्र क्रियों कायोत्सर्गमां उ ना हता, तेना महिमायी ते साधुने जलोपसर्ग म थाउ एवा अनिप्राय थी त्यां मेघ वरसतो नथी. ते जोई गाममा रहेनारा मिथ्यादृष्टि लोको आवी क्षिने कहेवा लाग्या के तमारा वे जणना तपयी गाममां दृष्टि याती नथी आ अरिष्ट तमारा वे जणयी सर्व लोकोने याय हे एम कही कहीने उपसर्ग करवा लाग्या, तेथी ते बेंद्र मुनिनो कायोत्सर्ग नंग थयो, त्यारे बेंद्र मुनिने कोध उत्पन्न थयो, अने कप्टेंकरी तेणे आ श्लोक कह्यो, ते जेम के, वर्ष मेघ कुणालायां, दिनानि दश पंच च ॥ मुशलप्रमाणधारानि, र्यथा रात्रों तथा दिवा ॥१॥ एम कह्युं के तुरत मुशल धारायें मेघ वरसवा लाग्यो, जलें करी नगर सर्व पलाली नाख्युं आखा नगरने उपाडीने वरसादें समुद्मां नाखी दीधुं, अने बेंद्र क्षि दृष्टिये करी निंजाई गया, पही ते बेंद्रजण मरीने नरकने प्राप्त थया, ए क्रोध करवाथी तेने कायोस्सर्गनुं फ ल न मलतां नरक गमन थयुं माटे क्रोध सर्वथा करवो नहिं ॥ १११ ॥ मानी तपःश्रुतद्यामव्रतधर्महीनः, स्यात्नंदिषेण इ व पण्यवधूपहासे॥ किं तारकः कमलजूवरङ्रईरो ऽपि, नाकारि दांजुिहाद्युना हृतसर्वगर्वः॥१२३॥

श्रर्थः— (मानी के०) जे श्रनिमानी मनुष्य होय, ते (तपःश्रुतशम व्रतधमेहीनः के०) तप, शास्त्राध्ययन, समता, व्रत, श्रने धमे, ते थकी हीन (स्यात् के०) याय छे. केनी पेठें ? तो के (पण्यवधूपहासे के०) वेश्यायें करेला उपहासने विषे (नंदिषेण इव के०) नंदिषेणमुनि जेम थयो तेम, एटले वेश्याये नंदिषेणमुनिनो उपहास कस्त्रो जे तमे धमेलान कहो छो पण श्रमारे तो धनलान जोश्यें, श्रा सांनली क्षिने श्रनिमान श्राव्युं जे मारामां शुं धन श्रापी शकुं एवी शक्ति नथी ? एम विचारी तृ एएसलाना नंजनेकरी बारकोटि सोनामोर्नी दृष्टि करी. तेथी तप श्रने शास्त्राध्ययन, समता तथा वत श्रने धमे ते थकी त्रष्ट थयो. श्रा नंदिषेण मुनि श्रेणिक राजानो पुत्र हतो, वली (कमलनूवरक् ईरोऽपि के०) ब्रह्माना वरदानथकी कुर्दर एवो पण (तारकः के०) तारकासुर देत्य (हतसर्वगर्वः के०) हस्त्रो हे सर्वगर्व जेनो एवो (शंग्रिशिश्चना के०) शिवपुत्र जे कार्तिक स्वामी तेणे (न श्रकारि किं के०) शुं श्रनिमानथी हीन न कस्त्रो॥ १ २३॥

श्रा श्लोकमां नंदिपेण तथा कार्त्तिक स्वामिनो दृष्टांत होवाथी तेमां प्रथम नंदिपेणनी कथा कहे हे. राजगृही नगरीमां श्रीश्रेणिकराजानो पुत्र नंदिपेण हतो, ते श्रीवीरनगवाननी वाणी सांनली वैराग्य पामीने दीक्षा लेवा उजमाल थयो तेने नगवानें कहां जे हजी तारें नोगावली कमेनो उदय हे माटे तुं हाल दीक्षा लेवी रहेवा दे, तो पण रह्यो नही ग्रूरपणायें करी तप तपतां तेने श्रमेक प्रकारनी लिब्धि प्राप्त थइ, एम क रतां बारवरसने श्रंते नोग्य कमेनो उदय श्राव्यो, तेवारें ते मुनि विहार करतां श्रजाएयां कोइ वेश्याने घेर गया, त्यां साधुनी रीत प्रमाणे धमेला न दीधो, त्यारे वेश्यायें कहां के, श्राहिं श्रमारे तो धनलान जोइयें हियें, एम मशकरी करी. तेवारें मुनियें मनमां विचाहां जे द्यं मारे धननी खो ट हे, एम श्रनिमान लावी, घांसनी सली लइ तेना कीणा कीणा कटका करीने उपर उहाव्या, श्रमे कहेवा लाग्यो जे श्राची धननृष्टि थाई, एवं बो

खतांज तपना प्रजावची जेने सर्व लिच्च प्राप्त चई वे एवा क्षिनां वाक्य ची खाकाशमांची बारकोटी सुवर्णनी वृष्टि चई,वेश्याना घरना खांगण मां सोनामोरोनो मोहोटो ढगलो चई गयो, पढ़ी मुनि ज्यारें चाव्या, त्यारें ते वेश्यायें तेनो वेडो पकडी लीधो, खने पोतानुं इच्च जे वृष्टिची खाव्युं हतुं ते, मोह उत्पन्न घवाची वेश्याने घेर रहीनें त्यां जोगव्युं, प्रतिदिन दश पुरुषने प्रतिबोध करीने पढ़ी जोजन करे एम बारवरस त्यां रहीने उदय खावेलां जोग्य कमे जोगवीने वारवर्षने खंते नवजणने प्रतिबोध्या खने दशमो पुरुष कोई न खाव्यो तेवारें खंते वेश्यायें हास्यची कह्यं के खाजे दशमा तमेंज चाउं एवां वेश्यानां वचनची प्रतिबोध पामीने फ रीने पाढी प्रवज्या ग्रहण करी, मोक्सें गया,

दवे कार्त्तिक स्वामीनी कथा कहे हे. पूर्वे प्रध्वीनंविषे प्रचंम एवा पो ताना हाथेकरी अखंम वैरिमंमल जेणो जीत्युं हे एवो अने सर्व कलाथी पूर्ण तथा ब्रह्मानी करेली सृष्टिमांहेला कोइथी जीताय निह एवो तारक नामनो दैत्य हतो, ते पापियें अनेक तीथोंनो तथा देवनी प्रतिमानो विध्वंस करी नाख्यो, तथा घणा लोको अने घणा गामनो नाश कखो ए प्रकारे ज्यारें म होटो उपइव थयो, त्यारें सर्व देवताउं एकता थइने ध्यानमां वेवेला शंकर देव पासें गया,त्यां तारकासुरनो सर्व जुलम शिवजीनी पासे निवेदन कखो, शिवजीयें कह्युं बधुं सारुं थशे, तमो चिंता करशो निहं थोडा वखतमां त मारा इःखनो पार आवशे आम कही, देवोने विसर्कन कखा पही हेमा चल पर्वतनेविषे शिवजीयें पार्वती साथें महामेथुन कखुं, तेथी कार्त्तिकस्वा मी नामा पुत्र उत्पन्न थयो, ते जन्मथी ब्रह्मचारी रह्यो तेणे तारक देत्यने मास्रो अने सर्व देवताउंतुं इःख निवृत्त कखुं, माटे माननो त्याग करवो.

स्वस्यापरस्य च बलान्यविचित्यमानः, शकान्यमित्रचम रेंज्वदापदे स्यात् ॥ शुक्रः कदाचिदिह् चेत्तनुते प्रकाश,ले शं ततः स्थगयतीं इमहो महित्कं ॥ १२४॥ मानप्रक्रमः॥

अर्थः-(स्वस्य के०) पोताना (च के०) वली (अपरस्य के०) पर नां (बलानि के०) शक्त्यादिकने (अविचिंत्यमानः के०) न चिंतन करतो एवो बतो अनिमान करी महाबलवाननी साथे वैर करे, तो ते इःखने माटें थाय है, केनी पेहें तो के (शकाऽन्यमित्रचमरेंड्वत् के॰) सौधमी सुरेंड्नी पासें गयेला एवा चमरेंड्नी पेहे (आपदे के॰) आपदने माटे (स्थात् के॰) होय. जुवो (शुक्रः के॰) शुक्रतुं,तारो, (इह के॰) आहिं (कदा चित् के॰) क्यारेंक (प्रकाशलेशं के॰) लेशमात्र प्रकाशने (तनुतेचेत् के॰) विस्तारे हे खरो परंतु (ततः के॰) तेथी (किं के॰) शुं (महत् के॰) मो होटा एवा (इंडमहः के॰) चंड्माना तेजने (स्थगयित के॰) ढांकी शके हे? ना ढांकी शकतो नथी. अर्थात् महोटा साथे अनिमान करवुं नहिं.

श्रांहिं चमरेंड्नी कथा कहे हो. गजपुरमां पूरण नामें तपस्वी बहु वर्ष पर्यंत इस्तर तप करतो हतो, तेना महिमायें करीने मरण पामी पाताल मां चमरचंचा राज्यधानीनेविषे नवीन चमरेंड्पणे उपन्यो. तेणे एक दि वस श्रवधिकानेंकरी पोताना मस्तंक उपर सौधर्मेंड्नुं सिंहासन जोयुं, ते थी तेने प्रवल कोप उपन्यो तेवारे शकेंड् साथे लडवा चाव्यो, तेने परिकर देवें वाखो, तो पण मिथ्यानिमानना वशयकी स्वर्गमां गयो, त्यांज्ञ देवो मांहे महाकोलाहल कखो, इंडें श्रवधिकान प्रयुंजी चमरेंड्ने श्राव्यो जाणी तेनी उपर पोतानुं वज्र मूक्युं ते वज्रने जोइने नय पामतो थको ते च मरेंड् ज्ञमरनुं रूप विकूर्वीने श्रीवीरनगवान काउसगो रह्या हता तेना प गनी नीचें पेसी गयो, वज्र पण नगवानने प्रदक्षिणा करीने पानुं देवेंड्ना हाथमां श्रावी रह्यं, पठी परस्पर शकेंडें तथा चमरेंडें मिथ्या इःकृत दीधुं श्रने क्षेश मट्यो, श्रामां पातालवासी देवो उपरला स्वर्गमां जाय नहिं श्रने चमरेंड् गयो माटे ए श्रन्नेंडं थयुं ॥ इति मानप्रक्रमः ॥ १ १४ ॥

माया इर्गतये परत्र विपदे चास्मिन् नवे संनवेत्, श्री वीरेण सुरोऽपि केतवसखा कुञ्जीकृतोसुष्ठिना॥ किं कर्ण स्य न निष्फला युधि कला वित्रचलाताऽनवत्, किं श्री शोनजगाम वामनतनुर्देन्यं बलेबंधनम् ॥ ११५॥

श्ररीः—(माया के॰) माया है ते (श्रह्मन के॰) श्रा (नवे के॰) नवने विषे (हुर्गतये के॰) हुर्गतिने माटे (संनवेत के॰) संनवे, (च के॰) तथा (परत्र के॰) परलोकने विषे (विपदे के॰) विपत्तिने माटे थाय है, जुवो (श्रीवीरेण के॰) श्रीवीरनगवाने (केतवसखा के॰) कपटथी थये

लो सखा एवो (सुरःश्रिप के०) देव पण (सृष्टिना के०) सुवियं करी (कु जीरुतः के०) कुज करी नाख्यो. वली (कर्णस्य के०) कर्णराजानी (वि प्रज्ञलात्ता के०) ब्राह्मणनो वेश लड़ने बल करवायी लीघेली (युधि कला के०) परश्चरामनी पासेथी शीखेली युद्ध कला (किं के०) शुं (निष्फला के०) निष्फल (नश्चनवत् के०) न थइ ना थइज. श्वने (वामनतनुः के०) वामनरूप धारण करनारा एवा (श्रीशः के०) लक्ष्मीपित जे विष्णु ते, (बलेः के०) बलिराजाना (बंधनं के०) बंधनने श्वने (दैन्यं के०) दीनपणाने एटले निक्लावृत्तिने (किं के०) शुं (न जगाम के०) न पामता हवा ॥ ११५॥

श्रा श्लोकमां वीर जगवाननो तथा कर्णराजानो तथा विष्णुनो दृष्टांत होवाथी प्रथम वीरजगवाननी रूथा कहे हे. एक दिवस सौधर्मना श्रिधपति यें श्रीवीरकुमारना पराक्रमनुं श्राधिक्य वर्णव्युं,ते सांजलीने कोइक देव हतो ते इंइना वचनने न सहन करतो हतो मायायें करी बालकनुं रूप विक्कवीं ने होकरानी साथे क्रीडा करवा माटे श्राव्यो, तेमां एवी सरत करी के जे कोइ हारे, तो ते हारेलो जींतेलाने पोतानी पीठपर उचकीने श्रमुक स्थान पर्यत लइ जाय. एम करवाथी श्रीवीरथी देवता हास्रो तेवारें ते वां को थइने वे हाथ तथा बेहु पग जोंय उपर राखीने रह्यो श्रीवीरजगवान् तेनी पीठपर चडती वेलाज ते देव सात ताड जेटलुं उंचुं रूप विक्कवींने उंचो थयो तेने श्रीवीरजगवाने एक मुष्टि मारीने कुबडो करी दीधो, ते व खत श्रीवीरजगवाननुं नाम महावीर पाड्युं.

हवे कर्णनी कथा कहे हे. एक दिवस कर्णराजा कपटथी ब्राह्मण हुं रूप लक्ष्ने परग्रुराम पासें युद्धविद्या शिखवा गयो कारण के परग्रुराम एक मा त्र ब्राह्मण शिवाय बीजा कोइने शिखवता निहं हता. पही एक दिवस पर ग्रुराम कर्णराजाना उत्संगमां मस्तक मूकी सुइ गया, तेटलामां एक सर्प श्राच्यो ते कर्णनी जंघामां कर ह्यो तो पण जंघा उंची करी निहं श्रने लोइनी निक चाली त्यारें परग्रुराम जाग्या श्रने पूहगुं के ए श्रांहिं रुधिर क्यांधी चाल्युं. त्यारे कर्णराजायें सर्व ह्यांत परग्रुरामने कह्यं ते सांजली परग्रुरामें जाण्युं जे श्रा कांही ब्राह्मण नयी परंतु क्त्रियज हे कारण के क्त्रिय विना एटलुं सहनशीलपणुं ब्राह्मण नुं होय निहं के जेने सर्पहंश थवाथी लोइ चाल्युं परंतु जरा पण मनमां जय श्राण्युं निहं माटे जरूर श्रा क्त्रिय

यज है. एम जाणीने क्रोधायमान थइ शाप आप्यों के तुं क्विय हतां कपटथी ब्राह्मणनों वेश लड़ने विद्या शीख्यों तो जा तारी शिखेली विद्या सर्व व्यर्थ थाशे ? पही ते कर्णराजाने तेमज थयुं ॥

हवे श्रीपित विष्णुनी कथा कहे हे. बलीराजा करीने दैत्यपित महा दानग्नूर राजा हतो ते जे याचना करवा श्रावे तेने जे मागे ते श्रापे, एवो हतो, एक दिवस कपटथी विष्णुयें वामनरूप धारण करी बिल पासें ज़श्न्य मगलां पृथ्वीनी याचना करी, त्यारें सत्यवादी दानग्नूर एवा बिलरा जायें ते श्रापवुं कबूल कखुं पही तुरत विष्णुयें बे पगलायें करी श्राखी पृथ्वी ग्रह्मं कहां के त्रीजा पगलामां ग्रं लहुं ? त्यारें बिलराजा बोल्यों के माहरी पीठपर त्रीजों पग मूको, तेवारें त्रीजा पगलायें करी हिरयें बिलराजाने पातालमां चांप्यो, पही विष्णुयें प्रसन्न थड़ने कहां जे हे बिल ! तुं घणोज सत्यवादी हो माटे कांही मारी पासें माग्य, त्यारे बिलराजा बोल्यों के मारा दरवाजामां हारपाल थड़ने तमो रहो, ते वात हिरयें कबूल करी एम कपटरहित काम करवाथी बिलराजा सुखी थयो.

सर्वेऽप्येते कषायाः सहश्रबलजृतः किंतु तीव्रैव माया, जित्वा याऽऽषाढजूतिं नटिमव नटयामास गौरीव रुष्म ॥ स्त्रीत्वं स्त्रीलिंगजावादिव नृषु न ददो मिल्लमुख्येषु या किं, सत्यं इदीतदेत्यं कपटसुरमणीरूपविष्णुर्जघान ॥ १२६॥

अर्थः—(एते के॰) ए (सर्वे कषायाः अपि के॰) चारे कषाय पण (सहशबल नृतः के॰) समान बलवाला हे, (किंतु के॰) तो पण तेमां (ती वेव के॰) तीव्र एवी (माया के॰) माया हे. (या के॰) जे माया (आषा हनूतिं के॰) आपाहनूति मुनिने (जिल्वा के॰) जिंतीने (गोरी के॰) पार्वतीपोतानी आगल (रुइंइव के॰) रुइने जेम नचावती हती, तेम (नट मिव के॰) नटनी पेरें (नटयामास के॰) नचावती हवी. त्यां कि उत्प्रेह्ण करे हे, के (स्वीलिंग नावात् के॰) स्वीलिंग ना नावधकी (तृषु के॰) पुरु पोने विषे (स्वीलं के॰) स्वीपणुं करवाने (इव के॰) जाणे इन्नती होय नहिं ? जुवो ते उत्प्रेह्ण सत्य हे ते जेम के (मिल्लमुख्येषु के॰) मिल्लना स्वतिर्थंकर प्रमुखने विषे (या के॰) जे माया स्वीपणाने (किं के॰) ह्यं

(न ददों के॰) न देतीहवी ना देतीहवी वली (सत्यं के॰) सत्यवात वे जुवो (कपटसुरमणीरूपविष्णुः के॰) कपटें करी रमणीय स्त्रीनुं रूप से नारा विष्णु, (इदींतदैत्यं के॰) इदींतनाम दैत्यने (जघान के॰) मारता हवा, अर्थात् ज्यारें विष्णुयें कपटथी रमणिय स्त्रीनुं रूप यहण कखुं, त्यारे इदींत दैत्यनो नाश थयो ॥ ११६॥

हवे आ श्लोकमां आषाढजूतिनो, मिलनाथनो, महेशनो तथा विष्णु नो, ए चार दृष्टांत होवायी प्रथम आषाढनूति मुनिनि कथा कहे हे. एक गन्नमां आषाढनूतिनामा साधु नानाप्रकारनी लिच्धिनुं पात्र इता, ते पुरु षमां शिरोमणि एवा को इनटने घेर निक्तामाटे गया, ते नटनी एवी रीत वे के जे कोइ नवो निकुक आवे वे, तेने एक लाई आपे वे, तेथी तेणे आषाढनूतिने एकलाडु आप्यो, पठी मुनि पाठो वली चिंतवे हे, के आ लाइ तो मारा गुरुनेज पूर्ण बाहो, एम समजीने लब्धियें करी बीज़ं रूप करीने वली याचना करवा गया, त्यारे बीजो मोदक मत्यो, आ प्रमाणे वली कपट करी ते त्रीज़ुं वृद्ध साधुनुं रूप कखुं ते उपर बारीमां उजेला नटें जोयुं त्यारे नटें जाएयुं जे या नानाप्रकारनां रूप करवां या मुनिने आवडे हैं,माटे जो आपणीपासें ए होयतो आपणो नटनो धंधो सारो चाले, अने इव्य घणुंज मले,पढी घरमां आवीने पोताना घरना माणसोने कह्यं के आ साधुने तमे लार्ड आपशो निहं अने पोतानी दीकरीने कहां के ए साधु आहिं आवे के तुरत तेने हाव, जाव, कटाक्तें करी संयमधी च्रष्ट करवो. ते वात कन्यायें कबूल करी, पढ़ी ते साधु ज्यारें वोहोरवा आव्यो, त्यारें तेने हावनाव कटाकें करी कन्यायें फसावी दीधो तेथी ते मुनियें चारित्र हो डीने गृहस्थाश्रम श्रंगीकार कचो. अने नटनी साथें रह्यो, ते नटने आ षाढनृतियें कह्यं के जो तारे घेर मांस, मदिरा जोवामां आवशे, तो हुं र हीश नहिं. ते नटे कबूल करी पढ़ी तेना सहायथी अनेक प्रकारना नाट क करी थोडा दाहाडामां ते नटें घणुंज इव्य उपार्जन कखुं,एकदिवस पो तानी स्त्रीने मदों करी मदोन्मत्त जोइने उत्पन्न थयो हे वैराम्य जेने एवो बतो नरत राजानुं नाटक करतां करतां तेने केवलकान जत्पन्न थयुं.

हवे बीजी मछीनाथनी कथा कहे हे. ज्यारें मछीनाथें पूर्वजवमां दी क्यायहण करी, त्यारे पोताना ह मित्रोने कहेवा लाग्या के माहरी साथें सर्वेयें समान तप करवुं पण कोयें वधारे उबुं करवुं निहं ते सहुयें कबू ल कखुं परंतु मिलनायनो जीव कपट करी ज्यारें मासक्ष्पण व्रतनुं पा रणुं आवे त्यारे बीजा मित्रोने कहे, माहरा पेटमां इःखे वे माटे हुं सर्व या पारणुं करीश नहीं. एम कही वली बीजा मासक्ष्पण व्रतनो आरंन करे, एम पारणे पारणे कपटथी बीजा व साधु थकी अधिक तप करतां तेणें तीर्थंकर नामकमे उपार्जन कखुं, परंतु कपटे तप करवाथी मिलीनायना नवमां तेमने स्त्रीपणुं प्राप्त थयुं, त्यां तीर्थंकर थया तो पण स्त्रीपणुं तेमने हतुं, पाणियहणने अर्थं आवेला पोताना पूर्वनवना व मित्र जे राजाउ थ या हता तेमने अग्रुचियं नरेली शालिनंजिका एटले मूर्चिमां नरेला अन्नना दर्शनथी प्रतिबोध पमाड्या एम श्रीमिलीनाथने कपटे करी स्त्रीपणुं प्राप्त थयुं॥ दर्शनथी प्रतिबोध पमाड्या एम श्रीमिलीनाथने कपटे करी स्त्रीपणुं प्राप्त थयुं॥

हवे महेशनी कथा कहे हे. एंकदिवस महादेवजी पौतानी स्त्री गंगा अने पार्वतीनी पासें कहेवा जाग्या के हुं संसारमार्गथी उिद्य यह गये लो हुं. माटे हवेथी माहारे तमारी वेहुनी साथे कांइ काम नथी. हुं तो ह्रवे तपज करीश. एम कहीने शंकर कैलास प्रत्यें गया, त्यां ते पर्वत नी गुफामां पद्मासन वालीने ध्यानमां बेवा, पार्वतीयें जाए्युं जे शिवजी तपस्यामां बेवा वे पण ते संसार उिद्य हुं हुं एम कही गया वे, माटे तेना तपनो हुं नंग करुं. एम धारीने पोतें निजडीनो वेश धरीने त्यां जइ शंकर पासें रहीने नाना प्रकारना हावनाव कटाक्त करवा मांम्या, तेवारे ध्यान मूकीने शिवजी ते निलडीनी प्रार्थना करवा लाग्या के हे नरे ! तुं माहरी स्त्री था. त्यारे निलडी बोली के माहरो स्वामी तो निल हे ते प ववाडे चाव्यो आवे हे. माटे जो तेम हुं करुं तो ते निल, मने अने तम ने बेहुने शिक्ता आपे, त्यारें शिवजी कहैवा लाग्या के हे सुंदरि! में त्रिपु रासुर जेवा जक्क दैत्योने मारी नाख्या तो ताहरो खामी बीचारो शी गणतीमां हे ? त्यारें जिलडी कहे हे, जो एम होय तो तमो माहरी पा सें नृत्य करो तो हुं तमारी स्त्री षाउं त्यारें ते जिलडीने वश पडेला महा देवें नृत्य करवा मांम्युं ते जोइ पार्वतीने हास्य छाव्युं त्यारें शिवजी स मजी गया के आ तो पार्वती हे एम जाणीने लिक्कत थर मनमां खेद पा म्या जे खरे! आ ग्रुं थयुं! हुं कहेतो हतो के हुं संसारथी विरक्त हुं ख ने मने कपटें करी एएो ढ़ां तेथी हुं परवश यह गयो एम समजी ल

क्का पाम्या. एम मायायी शंकर पंण तगाया माटे मायानो त्याग करवो.

हवे इदींतदैत्यने विष्णुयें स्त्रीपणायें करी मोह कस्रो तेनी कथा कहे हे. इदीत दैत्य हतो तेणे ब्रह्मानुं आराधन कखुं, तेनी घणी निक्तयें ब्रह्मा सं तुष्ट थया, अने ब्रह्मायें कह्युं के तुं वरदान मान्य. त्यारे दैत्यें कह्युं के मने अजेय करो. तेने ब्रह्मायें कह्युं के जेने माथे तुं हाथ मूकीश ते नस्मीनूत थइ जारो तेवा वरदानथी प्रसन्न थयेलो एवो ते दैत्य जगतमां अन्याय करवाने तत्पर थयो, एक दिवस तेणे पार्वतीना यहण माटे शिवजीनी प्रार्थना करी के मने तमारी स्त्री पार्वती आपो तेने शंकरें ना पाड़ी त्यारें ते शिवजीना मस्तक उपर हाथ मूकवा तैयार थयो तेजोइ शिवजी त्यां यी नाशिने विष्णुनी पासें खाच्या, खने कहेवा लाग्या के हे प्रच ! माह री रक्ता करो तेने विष्णुयें कह्यं के तमे स्वस्थ यात्र नय राखोमां हुं तेने शिक्ता आएं बुं. पढ़ी विष्णु पोते पार्वतीनुं स्वरूप लइने दैत्यनी सन्मुख गया, दैत्य बोंख्यो के तुं मारी नार्या हो मने तुं सुखी कर. त्यारे **उमानुं** रूप धारण करनारा विष्णु कहेवा लाग्या के माहरी पासें तहारा माथा उपर हाथ मूकी तुं नृत्य कर. तो हुं ताहरी स्त्री थाउं त्यारे ते माथा उ पर हाथ मूकीने नृत्य करवा लाग्यों तेने श्रीकृष्णे कह्यं के तुं नस्म था तेथी तरत ते देत्य जस्मीजूत थइ मरण पाम्यो ॥ १२६ ॥

लोनी तृप्यति नो घनेरिप धनेरिज्ञन्नवं स्वं नवा, दृप्या द्यः पितृकिएपतानुजपदं किंवार्षिन्नर्गाज्ञिदत् ॥ अश्रां तं सरितां दातेरिपनृतः किं वांबुधिः पूर्यते, किंवा द्याम्य ति काष्टकोटिनिरिप ज्वालाकरालोऽनलः ॥ १,०० ॥

अर्थः—(लोनो के॰) लोनी प्राणी (घनैरिप के॰) घणा एवा पण (धनैः के॰) धनें करी (नो तृष्यित के॰) तृप्ति पा मतो न ते केवो लोनी हे ? तो के (नवादिप के॰) नवा एवा इव्य आववायी पण वली (नवं स्वं के॰) नवा धननी (इज्जन् के॰) इज्ञा करतो एवो हे. जुवो (आ द्यः के॰) आद्य (आर्षिनः के॰) क्रपनदेवजीनो पुत्र नरतचक्रवर्त्तां, (पि तृकिष्पतानुजपदं के॰) पोताना पितायें आपेला एवा पोताना न्हाना ना इन्नां पदने (किंवा के॰) हां (नाज्ञिदत् के॰) नहिं हिनवी खेतो हवो ? ते वात घटे वे जुवो (अश्रांतं के०) निरंतर (सिरतां शतैः के०) निद्वं ना सेंकडाउंचें करी (जृतः अपि के०) पूरायो वतो पण (अंबुधः के०) समुड् (किं के०) ग्रुं (पूर्यते के०) पूराय वे ? ना पूरातो नथी. वली (का ष्ठकोटिनिरिष के०) करोडो काष्टोचें करीने पण (ज्वालाकरालः के०) ज्वालाए विकराल एवो (अनलः के०) अप्रि जे वे, ते (किंवा के०) ग्रुं (शाम्यित के०) शांत थाय वे. ना शांत थातो नथीज ॥ १ १ ९ ॥

श्रांहिं नरतचक्रवर्त्तिनी कथा कहे हे. विनितापुरीने विषे नरतचक्रवर्त्ति राजा राज्य करता हता, अनुक्रमें वये खंम तेणे खहस्तगत कथा, पढ़ी पोताना ऋष्ठाणुं नाना चाइउने बोलाववा माटे दूतोने मोकव्या, दूतोयें जइने कुरुप्रमुख जाइयोने कद्यं के हे राजकुमारों! षद्खंमने साधनारा एवा तमारा नाइ नरतजी चक्रवंत्तींने तमे प्रणाम करो के जेथी तमारा सर्वनो विनय थयो गणाय ? कारण के वृद्ध नाइ ते पिता समान तथा ग्ररु समान मानवा योग्य हे. माटे तमो नरतचक्रवर्तीनो विनयादि कर शो तो तमोने देश, याम, नगरना राज्यनो लाज थहाँ ? अने जो तेम न हिं करो तो तमारुं राज मूलयकी लइ लेशे ते सांचलीने पत्नी श्रघाएं चा इउ एकता थइने अन्योन्य कहेवा लाग्या के आपणुं नरतराजापासें ग्रुं चालज्ञे ? एतो ञ्चापणी साथे युद्ध करी पराजय पमाडीने ञ्चापणुं स वेंनुं राज्य ग्रहण करज़े ? माटे आपणे श्रीक्रषनदेवजीनी पासें ज़क्ने श्रा वात निवेदन करीयें श्रने जेम ते कहे, तेम करीयें ? श्रा प्रमाणें सर्वे नाइड विचार करीने श्रीक्षनदेवजी पासे गया, तेमनी प्रदक्तिणा करी नमन करीने बेठा अने नरतजी चुं ठुत्तांत जे दूत दारायें बन्युं ते सर्व कह्यं ते वखत ऋषनदेवजी देशना देता हता,तेमां आ गाथा कहेता हता जे ' सुलहा सुरलोख सिरि, एगज्ञनावि मेश्णी सुलहा ॥ इलहा पुणसंसारे, जिएंदवर देसिउ धम्मो ॥१॥ आवी उपदेश गाथा सांनजीने तेमने बोध थयो, तेथी सर्वे नाइडियें राज्य बोडीने प्रञ्जनी पासें दीक् यहण करी. पढ़ी ते ऋहाणुं नाइनेनुं राज्य नरतचक्रवर्त्ती यहण करता हवा ॥ १२९॥

चित्तावन्यां जनानां किपलसमिधयां वित्तलेशाप्तमूलः, प्रत्याशावारिसिक्तोधनिविविधधनप्रार्थनान्नोगवल्गः ॥ नूपेंद्रत्वादिसंपन्मतिकुसुमतिनोंगचिताफलर्फि, लोंनो रुत्या श्रवंत्या व्रजतु कलितरुर्वप्तुरप्यार्तिहेतुः॥ १२७॥ इति लोजप्रक्रमः॥ इति कर्पूरप्रकरयंथः समाप्तोयम्॥

अर्थः-(लोनः के॰) लोनरूप (कलितरुः के॰) नयंकर वृक्त, ते (वृ त्या केण) संतोषरूप (श्रवंत्या केण) नदीयें करी (व्रजतु केण) तणाइ जार्ड एटले जेम नदीना जोरची वृक्त तणाइ जाय तेम आ लोनहरप वृक्त पण सं तोष नदीथी तणाइ जाउं. हवे ते लोजरूप वृक्त केवो वे ! तो के (किपलस मिधयां के॰) कपिल ब्राह्मण समान बुद्धिवाला (जनानां के॰) जनोनी (चि नावन्यां के ०) चित्ररूप अवनीने विषे (वित्त खेशाप्तमूं छः के ०) प्राप्त छे वित्तना जेशरूप मूल जेनां एवो हे तथा (प्रत्याशावारिसिकः के॰) आशा अने प्र त्याशा ते रूप जे जल तेणें करी सिंचायेलो एवो हे. तथा (धनिविविधधः नप्रार्थनानोगवल्युः के०) अनेक धनवाननी विविध प्रकारनी प्रार्थनानो जे विस्तार, तेणें करी मनोहर अने वली (नूपेंड्लादिसंपन्मितकुसुमत तिः के॰) मोहोटा मोहोटा राजादिकनी जे संपत्ति तेने विषे मतिरूप हे कुसुमनो विस्तार जेमां एवो हो. वली (जोगचिंताफलर्दिः के०) जोगनी जे चिंता ते रूप जे फल तेनी वे संपत्ति जेने विषे एवो वे. माटे कवि कहे बे संतोष नदीयें करी लोजवृक्त तणाइ जार्त. एवी इन्ना सर्वे जन राखो ॥ आंहिं किपलबाह्मणनी कथा कहे हे. चंपापुरीने विषे किपलदेव नामा ब्राह्मण रहेतो हतो,ते नाग्ययोगधी दासीमां खासक थयो,तेथी थोडे थोडे ते निर्इव्य थइ गयो. एक दिवस ते दासीयें तेने अर्दरात्रियें राजा पासें बे मासा सुवर्ण खेवा माटे मोकव्यो, त्यां तेने राजाना माणसोयें पकडी बांधी ने राजानी पासें खाए्यो. राजायें तेना खाकारची जाए्युं जे खा चोर नची, राजायें पूर्वयुं के अरे तुं कोण हो ? त्यारें ते ब्राह्मण बोल्यो के एक दासी मारी राखेली स्त्री हे तेंणे मने मोकव्यो हे या खरी वात सांजलवायी रा जा संतुष्ट यइ कहेवा लाग्यों के जे तारे इज्ञा होय ते माग्य. त्यारे ब्राह्मणे कह्यं के हुं तमारा अशोक वनमां जइ एकांतमां थोडी वार विचार करीने प

बी मागीश ? राजायें तेमकबूल कखुं पढ़ी ते त्यां वनमां जइ विचारवा लाग्य

के डूं ते ग्रुं माग्रं सो माग्रं? के सहस्र माग्रं? के लक्क माग्रं? के करोड

माग्रं ? के दश करोड माग्रं ? एम आशानो तो कांइ अंत आवतोज नथी.
माटे आ लोनने धिक्कार हजो जेनो हजी सुधी अंतज आवतो नथी.
हुं तो मात्र वे मासा सोनुं लेवा आव्यो हतो पण राजायें कहां जे माग्य
ते आपुं पण मने कोट्याविध धनथी पण तृप्ति थती नथी कहां ने के
"जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ड ॥ दो मास कणय कर्कं,
कोडिएविन निष्ठियं ॥" एम चिंतवन करतां ते ब्राह्मणने वैराग्य जल्प
न्न थयो, त्यारें तेणें आलोचनाने स्थानकें केश लोचन करी नाख्युं.
पन्नी प्रत्रज्यायहण करीने मार्गमां पांचशें चोरने तेणे प्रतिबोध पमा
ह्या, माटे लोन विस्तार करवो नहिं लोन ने ते पापनुं मूल ने ॥ १ १ ए ॥
इति कर्षुरप्रकरांतरीताः सर्वाः कथाः समाप्ताः ॥ समाप्तायं यंथः ॥

॥ सप्तपंचाशदधिक शतसंख्यासंमन्वितः॥ कथामहोदधियंथो हृद्यपेदीर्वे निर्ममे ॥ १ ॥ अर्थः—एकसो सतावन कथाउना महासागर रूप आ यंथ मनोहर पद्योपेंकरी युक्त रचायेजो हे ॥ अस्मिन् यंथे सहस्रे हे,हे शते ष ष्रिसंयुते ॥ अनुष्ठुपां सर्वसंख्या, प्रत्यक्तरिक्णात् ॥ १ ॥ प्रत्येक अक्त्र रनी गणना करतां सर्वे मजीने आ यंथनी अंदर वे हजार बसोने साव अनुष्ठुप् श्लोकनी संख्याहे ए संख्या अवचुरीकारें जखी हे ॥ १ ॥

॥ वर्षे वार्ड्यवरशरसुधारहिमसंख्ये बन्नृव,श्रीमान् यंथः सकलसुमनश्चित्त हर्षप्रदायी ॥ यावत्क्रीडां गगनकमले राजहंसो विशाले, तन्वानो स्तिस्तिमर निष्ठरो तावदेषोऽपि जीयात् ॥१५०४ नी शालमां सघला विद्वानोना चित्तने विषे हर्षनुं अर्पण करनार आ श्रेष्ट यंथ निर्माण थयेलोढे माटे ज्यांसुधी विशाल एवा आकाशरूप कमलनेविषे विहार करता अंधाराने नेदनार राज हंस सरखा एवा सूर्य चंइ ढे त्यांसुधी आग्रंथ जगतनेविषे जय पामतो रहो १

त्रैविद्योपनिषिद्वतासवसतेश्रांतुर्यलक्कीपतेः, श्रीस्ररीश्वररत्नज्ञेखरग्ररोः प्रामाणिकस्य प्रनोः ॥ शिष्यः पंडितसोमचं इन्न धीर्माधुर्यधुर्योच्यधात्, कर्पूर प्रकरादिकाव्यकथिता एताः कथाः सत्प्रथाः ॥ १ ॥ अर्थः—त्रेविद्य अने न्यानिषद्ना विलास करवाना मंदिर रूप तथा चातुरीरूप लक्कीना स्वामी अर्थात् चातुरीरूप संपत्तिना पति तथा प्रमाणिक अने समर्थ श्रीस्ररीश्वर रत्नज्ञेखरनामना जे ग्रुरु तेमना शिष्य पंक्ति सोमचं इके जे अतिनदारबु दिवाला माधुर्यवाली सुंदर किवताना रचनारनेविषे मुख्य हे तेमणे आ सुं

दर रचनावाली, अतिप्रसिद्ध कर्पूर प्रकरनामे महाकाव्यनी कथाउं कही.
॥ इति श्रीबालावबोधसिह्तः कर्पूरप्रकरयंथः संपूर्णः ॥

॥ अय कर्पूरप्रकर अवचूरिकत तपंजपक्रमः॥

॥ प्रतिदिनमपि दानं पुष्यसंपन्निदानं, पुनरधिकफलं स्यात्पारणाहोत्तराहे ॥ दिशति जलनृदन्नं कृत्तिकादौ सुतृष्टः, पुनरमलमनर्घ्यं मौक्तिकं स्वातियो गे॥१॥ अर्थः-प्रतिदिन जे दान आपवुं ते पण पुण्यरूप संपत्तिनुं आदिकारण हे वली तेज दान, जो पारणाने दिवसें तथा उत्तर पारणाने दिवसें देवाय तो अधिक फलने आपनार थाय हे. कृतिकाना आरंनमां सारी रीतें वर्षें जो वरसाद धान्यनी जत्पित सारी करे हे. वली ते वरसाद जो स्वातिनेविषे वरस्यो होय तो निर्मल एवा अमूव्य मोतिने उत्पन्न करे हे. ॥ १ ॥ जितनवदकषायः पाह्निकादेदिनोऽय्यो, वितरएकरणेः प्रा क्पश्चिमावप्युदारे। ॥ विहितच्चवनमुत्किं पार्वणश्चंडएक, स्तदितरशशिनी किं नो मुह्रचीऽप्रकाशो ॥ १ ॥ अर्थः-संसारने वधारनारा चार कषाय तेने जीतनारो एवो पाक्तिकनो (पांखीनो) आगलो दिवस हे तेमज दान वि गेरेना आपवाधी पांखीनो पहेलो बेलो बंने दिवस उदार उत्क्रष्ठ फलदा यक गणाय है. ते जेम के सघला छवनने जेणे हर्ष आपेलो है एवो एक पुनमनो चंड्मा नथी ग्रुं ? ना बेज. ते शिवायना बीजा दिवसना चंड् ते, मात्र वे चार घडी प्रकाश अने अप्रकाश करनारा नथी शुं ? ना तेवाज हे. अ र्थात् सर्वे दिवसो करतां पांखीनो दिवस ते दान विगेरे कर्मनो अति फलदाय क वे बीजा सर्व दिवस सामान्य फलदायक वे. वली पारणानेविषे कहे वे. ॥ ग्रुदं तपः केवलमप्युदारं, सोद्यापनस्यास्य पुनः स्तुमः किं॥ द्रद्यं पयोधे नुगुणेन तत्तु, इाक्वासिताक्वोदयुतं सुधैव ॥ ३ ॥ अर्थः- केवल ग्रुद तप हे ते पण अति श्रेष्ठज हे तेमां वली ज्यारे ते तप उद्यापन सहित होय तो तेमां ग्रंज कहेवुं. अर्थात् तेनां वली ग्रुं वखाण करवां ? जेम के जे गायनुं ड्य गायना गुणयीज मधुर हे, परंतु तेमां वली इाख अने साक रनो जुको नाख्यो होय त्यारे मधुर अमृत जेवुं थाय तेमां ग्रुंज कहेवुं ॥३॥ वृक्तोयथा दोहदपूर्णेन, कायोयथा सइसनोजनेन ॥ विशेषशोनां जनते यथोक्त, सोद्यापनेनैव तथा तपोऽपि ॥ ४ ॥ इति उद्यापनप्रक्रमः ॥ अर्थः - जेम खातर विगेरेनी पूरणी करवाथी वृक्त, विशेष शोनाने पामे वे. जेम शरीर, सारा रसवाला सुंदर पदार्थोना जोजनेंकरीने विशेष शो जाने धारण करे वे; तेम यथाविधि अर्थात् शास्त्रमां कहेला विधिप्रमाणें ज्यापन करवाथी तप पण अधिक जनमोत्तम शोजाने आपेवे॥ ४॥ इति ज्यापनप्रक्रमः समाप्तः श्रीरस्तु शुजमस्तु.

स्वर्तूमेर्मातृगर्मेऽगमइदयमहो यः सुरैमैरिशैलोस्तिकस्तातालयेऽगाइपचय मनिशं ग्राययाऽक्रांतविश्वः॥ पादोपांताऽवनम्रत्रिच्चवनजनतास्वीकृतोच्चैःफ लर्दिः श्रीवीरोवोऽस्तु चिंताऽधिकतरवरदः कल्पशास्वी नवीनः॥ १ ॥

श्रथः—जे स्वर्गनूमियी पोतानी माताना गर्नरूप क्यारानेविषे उत्पन्नय येला श्रने जे देवताउंयें मेरुपर्वत उपर नवरावेला श्रयांत्सिंचन करेला,तथा पोताना पिताना घरनेविषे निरंतर इिष्पामेला श्रने जेणे पोतानी ग्रयायें करी श्राखाविश्वने विश्रांति श्रापेली हो, तथा जेणें पोताना चरणमां नमेली त्रण स्रवननी जनतारूप फलसमृद्धि स्वीकार करी हो श्रयांत् सर्वजगतने नमन करवारूपजहे फल जेने एवा श्रपूर्व कल्पवृक्ष जे श्रीवीरनगवान् ते, तमारा श्रिकमनोवांहित वरने देनार थाउ. श्राहिं वीरनगवाननेविषे क ल्पवृक्षनी उत्प्रेक्षा कवियें करेली हो, जेवा जाडमां उत्पन्नथवाथी फलप्रा प्रि पर्यंत ग्रणो हो, तेम श्राहिं श्रीवीरनगवानरूप कल्पवृक्षमां सर्वे घटाव्याहे.

स्युर्हात्रिंशत्सहस्रा नरतजनपदाः सार्६पंचाय्यविंश,त्यार्थेष्वर्हतप्रबोधः सु गुरुनिरधुना पंचषेष्वस्ति धर्मः ॥ सत्देत्रं तत्र चाल्पं नवनच्चवि यथा पव्वले यीष्मतुत्ते, पद्मं हंसस्य तुष्ट्ये तदिव समनवत्सच्चतुर्मासिकन्नः ॥ २ ॥

अर्थः—सर्व मली बत्रीश हजार जरतखंममां देशों हे तेमां पण साडी पचीश आर्यदेश हे तेनेविषेज श्रीअर्दत्यन्ननो प्रबोध प्रचार पामेलों हे तेनी अंदर हाल पांच के ह देशनेविषे सारा ग्रह धमेनुं श्रवण करावे हे वली ते जरतखंमनी जवनजूमिनेविषे सारां केत्र अति थोडां हे, जनालामां सुकाइ गयेला अल्प जलाशयनेविषे रहेलुं कमल जेम हंसने संतोषने माटे थाय हे तेम आ अल्पकेत्रनी अंदर अमारे चातुमीस्य संतोषदायक यार्ज ॥ १३०॥ आ बे श्लोक बीजी प्रतिमांथी मल्या हे. तेम बीजा पण ४० श्लोक ते प्रतमां हे परंतु तेनी अवचूरी पण न होवाथी तथा ते प्रकेप काव्य जेवा जाणवामां आव्याथी इहां मूलपाठें नीचें दाखल करीये हैयें. वर्षाकमा श्रमणे॥ ६३॥

यन्नश्चिरं विदाराक्जिननतिपुण्यं तदाग्च वोऽत्रानूत् ॥ कर्षकशाखे यत्नाघ र्दकशाले द्वतं तु फलं ॥१॥ कृतिकर्म कर्ममर्मि विदे नवेद्रावतोऽन्यया श्रांत्ये ॥ पुल्याधिकनिष्पुल्यककृतकामदमंत्रसाधनवत् ॥ २ ॥ प्राघूर्णकवंदनके ॥ ६४ ॥ राजा विश्वहितो जिनो नयपरा व्यापारिणः श्रावकाः, स्थाने सर्वग्रणो ज्वलेऽत्र शमिनः कौटुंबिकास्ते वयम् ॥ जैनाङ्गागुणपत्रदंत्तविधिना वर्षासु तेन स्थिता, ज्ञानकेत्रमुपास्महे बहु मिथः स्याद्येन पुण्यं धनं ॥ ३ ॥ फुझ कोधविषडुमं बहुरजो मानप्रचंडानिलं, मायोद्यन्मृगतृष्णिकं परिलसलोना स्थिमापन्निधि ॥ निंदनमोहनिदाघकालमिनितः सञ्चानवृष्ट्या नवचांतिश्रां तिनिदेऽस्तु वोनवघनश्रीमञ्चतुर्मासकं ॥ ४ ॥ पारणके ॥ ६६॥ व्याख्या नश्रवणं सदैव हि मुदा पीयूपपानं यथा, वर्षास्वस्य पुनर्विशेषमहिमा यद नमयूरध्वनेः ॥ तद्नव्याइदं तु त्रिकापणिनिने पूज्यप्रसादोदयात्, दाना द्यंगिणमादिवस्तुवदलं गृह्णंतु पुष्यर्दये ॥ ५ ॥ वर्षातर्बद्भवर्दिनो नवरसै र्जाड्यक्रुधोर्विह्नदः, शश्वत् श्रीजिनसन्निधेरनिनवाद्द्याख्यानरत्नाकरात्॥ मादग्वाग् लहरी स्फुटं शमसुधासम्यक्लचिंतामणिः, श्रेयःस्वस्तस्मुख्यरत्न निवहं गृह्णंत्वनायासतः ॥ ६ ॥ व्याख्यारंने ॥ साप्टमी व्यनिचाराय श्रे यःकर्मणि किंयया ॥ तुव्यः पद्घघ्येऽपींड्रधृतः पद्घांतरस्थया ॥ ७ ॥ कैकाऽपि हि पुण्याय नूतेष्टापि तदंतिके ॥ योगे किं खिंधवेलायां गंगायमु नयोरिव ॥ ७ ॥ पुण्यतियो ॥ ६० ॥ अर्देश्विंतामणित्वं कनककुसुमतां पंच यञ्जूषणानि, यस्याः सत्कंकणत्वं द्धिति च सततं पंच यझक्तणानि ॥ धर्मः सिद्धार्थसार्थः सुगुरुपदरजोदोरकस्तजुणाली, धार्या सम्यक्लरक्ता कु गतिनयनिदे सजितिश्रेयसे च ॥ ए ॥ रक्तायां ॥ ६ए ॥ कल्पाखानकपं चिदव्यविहितः क्लृप्तानिषेकोत्सवे, नव्येः पर्युषणामहः हितिपतिर्मिथ्या त्वकोपादिकं ॥ दृष्ट्वा पंच कुलं जनेऽतिविषमं नव्यं नवं स्थापयन्, सम्य क्त्वं शममार्दवार्जवनिरीहत्वं शमायाऽस्तु वः ॥ १० ॥ चेतःस्थालं विशा लं कलमकणगणः श्रावकाणां ग्रणाली, सम्यक्त्वं सद्दुकूलत्रितयमनुपमं नालिकेरं विवेकः ॥ जैनाङ्गा सूर्धि ड्वीमलयज्घुसृणे जावलोकानुरागौ, सत्कीर्त्तः पुण्यवद्भीपनमिति नवतादांतरिइजये वः ॥ ११ ॥ पर्युषणाप र्वणि ॥ ४२ ॥ सोरव्यं शाश्वतमेकएव हि जिनः क्वर्यानु शेषैः सुरैः, स्याचे दैहिकमेव किंचन ततोयद्वा सवित्रा यथा ॥ तद्वत्किंशशिद्वीपतारमणिनि

र्विश्वप्रकाशो नवे, देवं मंगलदीपकोञ्चशिखयाऽद्याष्टाहिका शंसति ॥ १२ ॥ रागदेषजितोऽर्हतोंऽघियुगलं पाणिद्वयेनार्चयन, साधुश्रावकधर्मनाक् परन वेस्वर्गापवर्गी नजेत् ॥ हक्कर्णिद्वतयेन रूपगुणनृचैहापि तोषं परं, घंटाचाम रचेष्ठितेन विवृणोत्यष्टाहिकैकोत्तरा ॥ १३ ॥ त्रेलोक्यं त्रिपदीतनुस्त्रिपथ गा तोषाय यस्यान्वहं, कालेषु त्रिषु तं त्रिकालविद्धरं देवं त्रिग्रुम्बा महः॥ स्व हात्रत्रयसंपदं दिशति वोयेनैष रत्नत्रयं, त्रिःपुष्पांजिलसं इया इपयतीत्य ष्ट्राह्मिकाद्युत्तरः ॥ १४ ॥ व्याख्या सप्तचतुर्विधामरकतं प्राप्यावदयं चतु, मूर्तस्तीर्थपतिश्रतुरीतिहितं धर्मे चतुर्दा बुधाः ॥ तं कुर्वतु चतुःकषायरिहता स्तुर्ये प्रमर्थरता, ब्रुते संघकतस्तुतिप्रतिरवे स्तुर्ययमष्टादिका ॥ १५॥ किं पंचें इियशर्म पंचविषये मूढामितं वांबतो, दंचत्पंचसु नावनानि दधतां पंचव्रतान्युचकेः ॥ पंचक्रानवतां यथा बहुसुखावः स्याजितः पंचमी, स्प ष्टं जल्पति पंचशब्दनिनदेरष्टाहिका पंचमी ॥ १६॥ जिल्वा पड्डिकति स्प्रहां पडिप तान मुक्ता रसान शिकतः, षड्जीवावनतस्तपः कुरुत पड़ नेदं बिहश्राबिहः ॥ दिद्रषड्वर्गजयोमतः पड्रतुजा पूजा च चेन्मानसे, नहो न्नादितषद्पदध्वनिरुवाचाष्टाहिका पष्टिका ॥ १७ ॥ सप्तापि व्यसना नि सप्त नरकद्वाराष्यदो सप्तनी, हेतृनित्यजताग्र पुष्यनृपतेः देत्राणि रा ज्यांगवत् ॥ सप्ताप्याप्रुत सप्तन्नूमिकग्रहे तत्वे वसंतु खयं, सत्सप्तस्वरगीत कैतवमुवाचाष्टाहिका सप्तमी ॥ १०॥ मुक्लाऽष्टो मदकारणान्यविरतं स स्प्रातिहार्याष्टकं, देवं पूजय पूजयाष्टविधया येनैषतुष्टः पदं ॥ तद्दोयञ्चतु यत्र नास्ति पतनं इष्टाष्टकमीपदां, चष्टे मांगलिकाष्टदीपकिमपादष्टाहिका चाष्टमी ॥ १ए॥ नैतेप्येत इवोपमानविगमादृष्टा हिकावासरा, एकैको चकला इतीं इसदृशाः किंचित्त्वनूविन्नमे ॥ श्राद्यांतपयोधिनेत्रकुमुद् श्रेणीचकोरेक्त्णो द्यासाय स्मर तापमोद्दितिमरोज्ञित्यै यतोद्दिनिशं ॥ २० ॥ अष्टादिकासु ॥ कव्याणिकं नगवतां धुरि यत्र चानूत्, श्रेष्टः सएव दिवसः पुनरागतोद्यः ॥ श्रीवीर मोक्तदिवसोद्भवदीपपर्व, यद्दत्ततः सुकृतिनोत्र महोऽनुवर्ष ॥ ११ ॥ सम्बानोज्वलदीपकप्रविलसत्स्वाध्यायमेरात्रिकः, ग्रुदाचारं सुनोजनः सुगु एवाक् तांबूलशोनाग्रनः ॥ अश्रीनिर्गमलक्ष्म्यपागमजयज्येष्ठावनामोत्तरः, शीलालंकतिनाग् मुदे नवतु वोऽई-६र्मदीपोत्सवः ॥ ११ ॥ दीपोत्सवे ॥ ॥ ७३ ॥ व्याख्यानं श्रुतप्रथसारमधुरं स्निग्धं निपीयादरा, न्मात्याकू र

सिका मुधा शमद्धि श्रेयो घृतोन्नायकत् ॥ अस्मात्तस्य समर्थनायतदिदं कालेन नव्यैः पुनः, सम्यक्लांगविवृद्धिकृद् बहु तृषा पेयं तमस्तापनित् ॥ १३ ॥ सिद्धांतांबुधसंज्ञवेऽद्य विरते व्यारव्याघने सहसे, र्देष्टांतैः स कषायतापजनहृद्भमं रामित्वाऽनितः ॥ सप्तदेत्रधरासु वित्तवपनं कुर्वेतु वः पुण्यतो, निःसत्पव्यसनेतिजीतिविविधं शस्यं यथा सक्जनाः ॥ १४ ॥ व्या ख्यासमर्थने ॥ व्याख्यानांबुधरोपदेशसिलेकैः सुश्रादचेतः सरः, पूर्तिः की र्त्तिनदीतनिर्मलरजिविश्व यत्राज्ञवत् ॥ बालश्रावकजेककेकिपवनस्वाध्या यकोलाइलं, सत्कत्यान्नफलाय वो नवतु तद्दर्शचतुर्मासकं ॥ १५॥ व्याख्यासमर्थने ॥ वृष्टे धर्मकयोपदेशसिलजैर्नव्योर्वरायां गुरा, वब्दे संयम धन्यसप्तदशकं रूढिकया मारुते ।। हृष्टेः स्पष्टगुणं विशोधितमनः स्वव्यार्थ शस्योजमं, स्थादेवोद्यमरक्षपालदलितापायं फलस्फातिमत् ॥ १६॥ कार्त्तिक्यां चतुर्मास्यां ॥ धस्त्रे शीनोष्णकाले प्रथमवयसि तत्कमे कुर्वीत् विद्या न, येनांते स्यात्सुखीतोवयमि तदहोवेत्य क्रुमोविहारं॥ नानाईंनीर्थयात्रा श्रुतधरनमनं संशयांतः श्रुतायः, ग्रुदान्नोपध्यवाप्तिः प्रवचनमहिमा मूढबो धोद्यता यत् ॥ २७ ॥ विहारे ॥ ७६ ॥ चातुर्मातिकमेकपारणदिनं नूनं फलं प्राप्नुया, न्नेतुर्वार्षिकमप्यवाप न कथं श्रेयांसएकाह्नचपि ॥ स्थान स्याननिखातकोटिविजवः कोटीश्वरः किं जवे, त्कोटीमूखमहामणिं करतले किं खेलयन्नापरः ॥ २० ॥ कार्त्तिक्यां ॥ ७४ ॥ े तीर्थेशैर्वतधर्मनाष णपुरस्कारात्परामुन्नतिं, नीतं यच ददाति नूतिमतुलां श्रीशालिनइादिवत्॥ तन्नः सलितरस्क्रिया लघुकली दानं लयोद्यासितं, कैः कैर्ने पुनः फलिष्य ति फलेसिने जिनोवेनि तत् ॥ १ए ॥ मान्यस्तीर्थपतेः परियह इवहमाप स्य संघोध्रवं, धन्योयस्य गृहांगणं सचरणां नोजैः पुनीतेतराम् ॥ किं ब्रूमः फ लमस्य तज्ञरतवद्योवेत्त्यमुं संमदात्, श्रीरप्यस्य गृहे स्थिराः प्रतिचुवः श्री जैनपादाइमे ॥ ३० ॥ नीला स्थानेऽनिरामे घनसमयममी संयताः श्वे त्पक्ता, स्तत्तत्स्थाने विजद्धः सुकृतिनिरिनशं जाड्यशीतं च निन्नं ॥ शीतक्तौ मैस्तपोऽिय्रवतियमगृहेर्नावमागंधतेेले, यत्राऽचार्यार्कगोनिर्हिमसमयचतुर्मा सकं तन्मुदे स्तात् ॥ ३१ ॥ चातुर्मासिकपर्वसं नवतपोवहिस्तदावश्यक, च श्यत्कमेदलोब्रितस्थगणकस्तोमेऽत्र नस्मीकृते ॥ प्रातर्वेदनके मुखां ग्रुकविधि व्याजािद्वनीर्णेऽनितः, धन्योऽर्ह्जुणपाल्युनोऽमलरजाः स्यादागमांनःद्ववैः

रजःपर्वणि ॥ ७४ ॥ स्पर्धा महत्सु नरवाक् ग्रुकवत् क्वमाय, सत्यं पुनः पद्मुपैति जनः कृतार्थः॥ मत्यीहि पंचमग्रणस्थितिमुक्तियोग्याः, श्रादेषु तंज्ञिनमहेऽनुचितेंड्ताऽपि ॥ ३३ ॥ देवैर्जिनस्य यदि जन्ममहा दि चके, न श्रावकैरनुकृतिः क्रियतां तदेषा ॥ स्वःशक्रदंतिमदतुंबरुगानरंना, नृत्यादि चेड्डवि नकोऽपि ततः करोतु ॥ ३४॥ कव्याणके ॥ ०३ ॥ जै नार्चयाऽपि नवनिः कुसुमैरशोक, उच्चोच्चसंपदनवन्नवशेवधीशः ॥ जद्दार्च नेन तु फलं जिनएव वेत्ति, सङ्गस्यकालघनसिक्तसुबीजवत्तत् ॥ ३५॥ आश्चर्यकारि फलमप्यतुलं प्रदास्य, त्याश्चर्यजंगिनिरियं विहिता जिनाची ॥ कार्यं हि कारणगुणेन नवेनु चित्रं, पुष्पेरिमैस्निदशवृक्त्फलप्रस्तिः ॥ ३६॥ महापूजायां ॥ ०४ ॥ अप्येकजैननवनस्त्यनादिनाय, नावाइपार्जि सुक तं शिवकन्नविनः, स्थानं कचेत्युपरिपाटिकयार्जि तस्य, ज्ञातं महत्स्तुतिकतां हृदयानि संति ॥ ३७ ॥ अद्योदियाय सुदिनोत्तवतां कला वा, जक्के य दल्पवसुनाऽपि हि नूरिलानः ॥ चेत्यावलीषु यष्टपार्जि शिवाय पुण्यं,नत्त्या सुलंनदलपुष्पफलोपहारैः ॥ ३० ॥ चेत्यपरिपाट्यां ॥ ७१ ॥ सुद्धं तपः के वलमप्युदारं, सोद्यापनस्थास्य पुनः स्तुमः किं ॥ हृद्यं पयोधेनुगुणेन तन्तु, इाक्तासिताक्तोदयुतं सुधैव ॥ ३ए ॥ वृक्तोयया दोहदपूरऐन, कायोयया सड्सजोजनेन ॥ विशेषशोजां लजते यथोक्ते, नोद्यापनेनैव तथा तपोऽपि ॥ ४० ॥ ज्यापने ॥ नूपाश्बत्रगुरूदरावृतिरथायेषूपयोगान्मया, वंशत्वे कट सुंमकादिषु जनाश्चाराधितानूरिशः ॥ नेतत्काऽपि महत्त्वमापि सुलने केल यहस्तोरणे, घंटावाग्निरिति ध्वजस्त्वरयतेवोदेवताऽराधने ॥ ४१ ॥ सिंहस्त पःप्रक्रमएव तावत्, इष्कर्भदंतावलमंमलीनां ॥ तदय तस्मिन् प्रखरानिवे शो, यह्यड्यापनविस्तरोऽयं ॥ ४२ ॥ नैवेंदोः सफलैः शिवाध्वसुखदं स्पष्टं समं शंबलं, धूपेनोध्वेगतिः सुगंधि तदिदं वासेन ग्रुचं यशः ॥ न स्वर्गादिफ लं फलेश्व कलमेर्जेनाटकाचीत्मनः ॥ पुष्पेर्लोकशिरः स्थितिः शिवतनुदीपे र्जिनाचीफलं ॥ ४३ ॥ अष्टविधपूजायां ॥ ०० ॥ आदर्शोदितकेवलर्दिरस मैश्वर्यश्च नड्रासनाद्, ब्रह्मांमस्य शरावसंपुटतनोर्यः कामकुंचंपुरः ॥ श्रीव त्सांगमिति स्फुटश्च तनुते नित्योत्सवः स्वस्तिका,न्नंदावर्चवद्घनुताकृतिकृतानं दः सवोऽव्याक्तिनः ॥ ४४ ॥ अष्टमंगले ॥ ७ए ॥ मुक्तेः सौख्यप्रमाणं नव ति सुरगिरिः सोऽस्ति वा योजनानां, लक्षं वार्दिः स्वयंनूरमणइति पुनः सो

ऽस्ति रक्कप्रमाणः ॥ लोकातीतं तदेतिक्किनपितरिप वा नोपमातुं प्रगब्नो, नू नृष्णोगानुनूतिं स्वजनमनुवदन् यहद्द्धः पुलिंदः ॥ ४५ ॥ यत्पादांबुजनृं गतामिवरतं नेजुिस्त्रलोकीजना,यिश्चितामिणवन्तदीयहदयानीष्टार्थसंपादकः ॥ सोप्यर्दनमिह्तोयदर्थमिनिशं तत्तत्तपस्तप्तवान, नानीष्ठं हृदि कस्य कस्य तद हो नैःश्रेयसं मंगलं ॥ ४६ ॥ मुक्तिहारं समाप्तं ॥ ७२ ॥ ब्रीहिर्यवोमसूरो, गोधूमोमापमुज्ञतिलकाः ॥ अणवः प्रियंगुकोड्व, मगुष्ठकाशालिराहक्यः ॥ किं च पलायकुलन्नो शणसप्तद्द्योति धान्यानि ॥ ४७ ॥ श्रीवज्रसेनस्य ग्ररो स्त्रिषष्ठि, सारप्रबंधस्फुटसजुणस्य ॥ शिष्येण चक्रे हिरणेयिमष्टा, स्नकावली नेमिचरित्रकर्चा ॥४०॥ इति श्रीकपूरप्रकरानिधः सुनाषितकोषः समाप्तः ॥ यंथांते वैराग्यदर्शकोऽयं श्लोकः हिस्तो स्त्रि सयथा ॥

॥ येषां विनैः प्रतिपदिमयं पूरिता जूतधात्री, येरप्येतज्ज्ववनवंजयं निर्जितं जीलयेव ॥ तेऽप्येतिसमन् जवपुंरुहृदे बुहुदस्तंबजीनां भृत्वा भृत्वा सपिद विजयं जूचुजः संप्रयाताः ॥ श्रीरस्तु. इति श्रीकर्पूरप्रकर यंथ मूज तथा बा जावबोध अने कथाउंसिह्ति समाप्त ॥

॥ मतलबविषे प्रस्ताविक दोहा ॥

॥ मतलबके सब आदमी, मतलब विना न कोइ॥ जब जाकी मतलब हुवे, तबिह दूर व्हें सोइ॥ १॥ मतलबसम या जगतमें, कोउ न और पदार्थ ॥ यातें सब व्यवहार है, याबिन है सब व्यर्थ ॥ १॥ मतलब नां ही सुजनकों, जाको अंग स्वजाव ॥ ताकोंही सज्जन कहत, जिहिं सब सरखो जाव ॥ ३॥ मतलब बिना सुनारिहू, रहें न पितके गेह ॥ पितहू नारी ना रखें, जो सुत चाहन रेह ॥ ४॥ मतलबके सबही सगे, मतलब जो लिग जांहि ॥ जो मतलबि जगमे नहीं, उत्तम मनुष कहांहि ॥ ५॥ मतलब ताको राखिये. जातें कारज होत ॥ ग्रूके तरुवरपें गये, फल बाया न मिलोत ॥ ६॥ मतलब तबलग होतहें, जबलग कर में दाम ॥ पीबे कोइ न आवहीं, ज्यूं ग्रूके सर गाम ॥ ९॥ मतलब धनसम और निह; मित्रहु वैरी होय ॥ मतलब पाये होत पुनि, शत्रु मित्रहू सोय ॥ ए ॥

श्रथ

॥ श्रीनद्यरत्नजी महाराजकृत जुवनजानु केवलीनो रास प्रारंजः॥ ॥ दोहा॥

॥ सकल सिदिदायक सदा, अकल अरूप अनंत ॥ सिद्ध नमुं हुं ते सदा, आपे जे नव अंत ॥ १ ॥ विल वंदूं वारू विधें, क्रपनादिक जिन राय ॥ नेटुं इमेति नंजणा, नावी नारित पाय ॥ १ ॥ गुरु गणधर गुण आगला, जे जे नर जगमांदि ॥ शासन देवादिक सहु, प्रणमुं परम उत्सा हि ॥ ३ ॥ जनक शाह यशवीर जस, जनि खिमादे जास ॥ श्रीहीर रत्नसूरी नमुं, असारु पूरे आस ॥ ४ ॥ जे जग रमणिक जाणियें, ते ते वस्तु अनित्य ॥ विल राजा परें बूकिने, धर्म करो दृढ चिद्ध ॥ ५ ॥ छव ननानु जे नूतलें, केविल करुणा धाम ॥ प्रगट थया हे पूरवे, गाउं तस गुण याम ॥ ६ ॥ बिल राजा पहेलो हुतो, नाम जेनुं अनिराम ॥ छ वननानु वलतो थयो, गुणनिष्पन्न सुनाम ॥ ७ ॥ त्रिविधेंसं हूं तेहनो, रास रचूं रसरूप ॥ श्रोता जन सुणजो तमे, आणी नाव अनूप ॥ ७ ॥ चिरित्र ए चोखे चिनें, सुणसे जेह सुजाण ॥ मारी मोह नरेंड्ने, लेशे परम कव्याण ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पहिलाने पासो ॥ ए देशी ॥ ए जंबुद्दीपें होजी मेरूथी पश्चिम दिशें, गंधिलावती विजय वखाणियें जी ॥ विजयपुर नामें होजी नगर वसे ति हां, सर्व संपदनुं सदन ते जाणीयें जी ॥ १ ॥ धर्मनुं धाम होजी वेस्म विलासनुं, ग्रुद्ध व्यवहारनुं सोध सोहे घणुं जी ॥ श्रघनो श्रमाश्रम हो जी श्राश्रम न्यायनो, श्रमरपुरीथी श्रधिक सोहामणुं जी ॥ १ ॥ वेष्टित वप्नें होजी खाश्यें छगम, श्रमेक कौतुकनो श्रास्पद उपतो जी ॥ तलक सिरखुं होजी जूरमणी नाखें, श्रलकालंकानी शोना लोपतो जी ॥ ३ ॥ राजे तिहां राजा होजी चंइमौलि नामें, नमे वे जेहने श्रमेक नरेसक जी ॥ बल दल बुद्धनो होजी जे जलिध श्रवे, श्रतिहि सुरामां वे श्रये सक्द जी ॥ ४ ॥ वासवैनवनो होजी विस्मयकारी वली, महामंत्रीनी म तिने बखें ग्रुदा जी ॥ कामीना मननी होजी पूरवा कामना, काम सिर

खो जेह जाणो सदा जी ॥ ५ ॥ किर कुंजस्थल होजी दलन किन क रें, रिपु रमणीना केशनें खींचतो जी ॥ ते तरुणीने होजी नेत्रजलेंकरी, कुल कीरतिना कंदने सींचतो जी ॥ ६ ॥ वज्रथी विरुठ होजी पर दल पाटने, लागे हे ते धरनो लोजिठ जी ॥ कीरति जेहनी होजी व्यापी दि गंतरे, जेह न जाए केंणें खोजिठ जी ॥ ७ ॥ अंतेज्ञरने होजी पूरें पर वखो, विचरे हे ते अनंगने गंजतो जी ॥ सुरपित सिरखो होजी अखं म आणें करी, जूमि पितना माननें जंजतो जी ॥ ० ॥ पहिली ढालें हो जी जदयरतन कहे, जियण जावें सहुको सांजलो जी ॥ कोतुककारी हो जी रास ए हे रूडो, जणतां जाजे जवनो आमलो जी ॥ ए ॥ सर्वगाथा ॥ १ ०॥ ॥ दोहा ॥

॥ रतन जिंदि सिंदासनें, बत्र धरांवतो श्वेत ॥ वेवो बे नृप एकदा, सुनटनी कोडी समेत ॥ १ ॥ पूरव दिशि प्रगट्यो तुरत, तेन अतुल तिणि वार ॥ रवि मंप्तल्यी रम्य ते, पस्थो सना मकार ॥ १ ॥ अकस्मात तव कब्यो, सुरनि पवन समकाल ॥ पस्थो ते सघले पुरें, परिमल जास रसाल ॥ ३ ॥ सहसा तव सहु सांनली, गगनें किन्नर गान ॥ सुरवधुने समुहें करी, नन उपे तिणि थान ॥ ४ ॥ गगनमंप्तल गाजी रह्यो, नूपुर हंदे नाद ॥ नानु मंप्तलसुं नृपणें, जाणे के लीधो वाद ॥ ५ ॥ सुर गाय न कोलाहलें, इंडिन नाद अपार ॥ अंबर तव बिहरो थयो, तुमुल खरें ते वार ॥६॥ तब नृप ते सहसा तिहां, ससंच्रम सस्नेह ॥ परपद जनसुं प्रेम सुं, अचरज लही अबेद ॥९॥ आसनथी उंचो थइ, प्रावो कर धिर नाल ॥ बीजो कर वि बेवकें, जूवे नयण निहाल ॥७॥ अहो अहो ए अचरज कि रयुं, इम अवलोके सोय ॥ तेमज पेखे तिहां वली, सना लोक सहु कोय ॥७॥ ॥ ढाल बीजी ॥

॥ सोरठी रागना चालनी देशी ॥ तव श्रीखंमतिलक निलाडे, करें केसर खाडे ॥ करें कनक ढडी जे धारे, सोहे पीन पयोधर नारें ॥ १ ॥ हिये मुक्ताफल हार, धारणी प्रतिहारी चदार ॥ प्रणमी नूपतिना पाय, बेसी ते बोली तिणे वाय ॥ १ ॥ पूरव दिशिनो वनपाल, इहां खाब्यो ढे जनमाल ॥ जो खापो प्रस्त खादेश, तो परपदें करे प्रवेश ॥ ३ ॥ खावे ते तृप खाणायें, वनपाल सनामां त्यांयें ॥ प्रणमी पृथिवीपति पाय, मुखें

बोले हे महा राय ॥ ४ ॥ किन्नर नर सुरनी कोडि, जेहने नमे कर जोडी ॥ च्चवननानु जस नाम, केवली करुणा रसधाम[ं]॥ ५ ॥ ख्रवनिपति सु णिने एम, पूरण ते पाम्यो प्रेम ॥ ऐन अमृतने रसें अरच्युं, जाणे चंदन स्रं तन चरच्युं ॥ ६ ॥ जाणे त्रिज्ञवन लीला लाधी, सुख सागरनी लहेर वाधी ॥ दीधुं तेह्ने प्रीतिदान, जेह्नुं निव थाय मान ॥ ७ ॥ एक आं ख उलालामांहि, सामयी सजी उढांहि ॥ श्वेत जइ गजेंइ समारी, ज पर करे असवारी ॥ ए ॥ श्वेत बत्र शिर कपर बाजे, जे चानु प्रतापने नाजे ॥ शशिकरण समूह समाने, ढले चामर उर्जल वाने ॥ ए ॥ हय गय रथ पायक पूरें, वींट्यो चोफर सनूरे ॥ परिकर श्रेणें परवरित्र, अव निपति उत्तर नरिंचे ॥ १० ॥ पुरव दिशिने उद्यानें, पहोतो पावन यावा ने ॥ इरथी देखि मुनि राय, तजी असवारी तिणे वाय ा ११॥ शस्त्र चामर मुकुट ने बन्न,तजी तंबोलादिक तत्र ॥ कर चरण वदन जल ग्रुदि, परवाली परम ग्रुट बुदि ॥ १२ ॥ तजी पाइका विनयसुं त्रिविधें, करक मल जोडीने सुविधें ॥ परपदमां पेसी प्रीतें, मुनिनें वंदे मन दीतें ॥१३॥ देइ प्रदक्तिणा त्रण तेह, शिर जुमीसुं फरसी स्नेह ॥ नावें वंदी नगवान, सपरिवारें राजान ॥ १४ ॥ जदयरत्न कहे ए ढाल, बीजी में बोली रसा ल ॥ नेहें जे मुनिने नमशे, ते जवनी जावत गमशे ॥१५॥सर्वगाथा ४१॥ ॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी स्तवना करे, निरवद्य नूमि निहालि॥ बेवो वे कर जोडी ने, वारू सना विचालि॥ १॥ दीधी मुनिवर देशना, शांनिल ने नृप सो य॥ अरज करी वलती इसी, उत्तम अवसर जोय॥ १॥ रांक रीजे जि म रत्ननी, वृष्टि देखिने वेग॥ तुम आगमने तेम हूं, निज मन पाम्यो ने ग॥ ३॥ नव सागर नूंमो घणो, ऊंमो जेह अथाग॥ दरश आज तुम देखतां, तेहनो पाम्यो ताग॥ ४॥ सर्वगाथा॥ ४६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ यां पर वारि मारा साहेबा ॥ ए देशी ॥ जगवन मुक्त बाल जावमां, मुनिवर एक मिल्रि ॥ बोध आपीने बहु परें, इकत नीर दिल्रि ॥ १ ॥ पण समिकत निव सहह्यो, बाल बुिषणायी ॥ उपदेश ते अणगारनो, जे ह मुक्तिनो साथी ॥ १ ॥ संस्कारमात्र ते साधुनी, देशना दिल धारी ॥

यौवनने जोरें करी, ते पण में वीसारी ॥ ३ ॥ राज्य धुरा नारें वली, मद तिमिरे मंज्यो ॥ उपदेशरूप उद्योत ते, मोहें मन रंज्यो ॥ ४ ॥ वजतो विपय विजासमां, काल गयो केतो ॥ जातो पण जाएयो नही, तृष्णावश तेतो ॥ ५ तेवार पिं में आजनी, रजनी विरमंती ॥ जागीने जोयूं मनें, ञ्चालोची एकांती ॥ ६ ॥ अहो महारंन तिणे नरें, इरित दल मेख्यो, वि पाक समे अहो केम ते, जासे अवहेत्यो ॥ ७ ॥ इःख देशे मुने इष्ट ते, परनवमहापाप ॥ त्राडो तव कोण त्रावज्ञो, एम चिंतु त्राप ॥ ७ ॥ ग्रह ज्ञानी कोइ जो मिले, तो पुढुं तेहने, कोए रक्ता करको कहो, आविजदयें एहने ॥ ए ॥ नाव समो नियंथनो, संग जे थयो पहेलो ॥ च्रष्ट थयो हूं तेंद्यी, मंद बुिक महेलो ॥ ४० ॥ जन्म समुइमांहें पड्यो, प्रेखो अघ पवनें ॥ आरो अहो कोण आपज्ञे, उब्हवी नव दवने ॥ ११ ॥ खेदें इ म करतां खरखरो, डुर्घट ए वातें ॥ प्रगट प्रनात समय थयो, यामनि शे प जातें ॥ १२ ॥ कृत्य करी प्रनातनां, सनायें जेहवे ॥ मजलस मेली आसने, वेवोडुं तेहवे ॥ १३ ॥ वनपालें वधामणी, दीधी मन खांते ॥ ताजी तुम खांच्या तणी, सुणी हरख्यो ए जांते ॥ १४ ॥ जिम हरषे म रु देशमां, पंथी सर पेखी ॥ जिम चातक यीपम क्तें, रीजे घन देखी ॥ ॥ १५॥ जिम वनवासी घाममां, श्रंबनी घन ढाया ॥ पामी रति पामे म ने, उद्दसी अति काया ॥ १६ ॥ सुधारसनी तिह कूपिका, रोगी जिम रीजे ॥ तिमहूं रीज्यो ते समे, घणुं ग्रुं कहीजे ॥ १७ ॥ तरशे त्रीजी ढाल मां, जेह मुनिने नमवा॥ तर्ज्ञो जव जल ते वदे, उदय श्रव गमवा॥१०॥ ॥ दोहा ॥

॥ जिम कायर युद्धे जुड्यो, पडियो अरीगणमांहें ॥ शरण चाहे जिम शुरतुं, पीड्यो शस्त्र प्रवाहें ॥ १ ॥ तिम जीड्यो पातक जरें, जब वेरीषी जाग ॥ तुम शरणे हूं आविड, लही अपूरव लाग ॥ २ ॥ महेर करी मु फ जपरें, ते माटे कहो स्वाम ॥ शरण होशे मुने केहनुं, पर जब पीडावाम ॥३॥ ॥ हाल चोषी ॥

॥ वृपनानु च्चवन गई दूति ॥ ए देशी ॥ तव दसनयोति तम नरने, द लतोमुनि कहे नरवरने ॥ त्यारे शरण होशे तुफ तेह, महापुरुषें खंगीकखो जेह ॥ १ ॥ तुम सरिखे बीजें पण निजयुं, विशेषे खमे पिडविजयुं ॥ ते होशे तुजने त्राता, परनव जाता सुण क्वाता ॥ १ ॥ इम सांजित ते न रनाथ, महा कोतुक लही मन साथ ॥ मरकलडुं दइ सुखें बोले, रूडां वयण अमीरस तोलें ॥ ३ ॥ त्रिज्ञवन त्राता प्रज्ञ तुमने, कुण शरण बीज़ं कहो अमने ॥ ए अचरज कारी उदंत ॥ नापो विवरी नगवंत ॥ ४ ॥ त व सुनि कहे कथा ए मोटी ॥ नवनी ज्यां कोटा कोटी ॥ राज काज वशें विडवार ॥ मन न रहे तुमारूं तार ॥ ५॥ अधिकार असंख्य ते एतो ॥ ते माटे किह्ये केतो ॥ मनने घेरवा लहो ममे ॥ धमेथी जोरावर कमे ॥ ६॥ नापो मां एहवुं नगवान ॥ सुधापान तजी असमान ॥ जड पण करवा विषपा न ॥ किम चाहे कहे राजान ॥ ७ ॥ मेघने जिम इन्ने मोर, चंदने जिम चाहे चकोर ॥ तिम वाट जोतां सुनिराज, पुण्यें पाउधाखा आज ॥ ० ॥ अवर तज्या आहेप, हवे लागे नहीं अन्य लेप ॥ ते माटे-कथा तुमारी, विगतें तमें कहो विस्तारी ॥ ए॥ तुम वचन सुधारस पान, करवा चाहे सुफ कान ॥ सफली करीने ए प्रज्ञा, पूरो प्रज्ञ तेहनी इन्ना ॥ १० ॥ चोथी ढालें चित चाहें, उदय रत्न वदे कमाहें ॥ जग जन तारक जिन वाणी, नावें सुणजो निव प्राणी ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तव ज्ञानी ग्ररु बोलिया, सांचल थर सावधान ॥ एक ध्यानें एक आसनें, रंगें तूं राजान ॥ १ ॥ कांइक कढुं तुज आगलें, मुफ वीतक म हाजाग ॥ सांचलतां सूधे मनें, वधशे मन वैराग ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ७ ०॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निट्याणीनी देशी ॥ या लोकोदर इण नामें, नगर विराजे हो वसे लोक यानंत जिहां ॥ निहं जस यादि न यांत, यापर पर वस्ती हो पुखुं निहं खाली किहां ॥ १ ॥ सर्व संपदनुं गेह, पुरुपोत्तमने समुहें हो सेवित जे जाणो सदा ॥ याचरजनो याश्रम, कोडा कोडी कल्पांतें हो जेहनो नंग निहं कदा ॥१॥ निहं ते योनि ने जाति, गोत्र ने कुल वर्ण हो निहं सा विद्याने कला ॥ निहं ते हिरण्यने हाट, नाटकने निहं नीति हो, निहं ते यागम यामला ॥ ३ ॥ धर्म कर्म निहं तेह, वैनव ने विलास हो निहं ते दशनने किया ॥ निहं विल ते व्यवहार, रह्नने रंनादिक हो निहं ते सुर

पतिनी श्रिया ॥ ४ ॥ केतां कहियें नाम, बीजो पण पदार्थ हो जोतां को न जहे तिक्यो ॥ जे निव दीको त्यांहि, सर्व वस्तुमां हो रम्य ते पुर राजे इस्यो ॥ ५ ॥ कटक सदा इहां दोय, मांहोमांहें जूंफे हो अंत न आवे ते हनो ॥ एक धर्म ने बीज़ं पाप, अन्योअन्य इःख दाई हो दल ए बल बहु बेह्नो ॥६॥ पाप सेनानो नाथ, मोह राजा महा वितर्छ हो त्रिज्ञवन वश कीधं तिणे ॥ अदितकारी अत्यंत, संसारी सहु जीवने हो जाय नहीं जी त्यों किएो ॥ ।। इंड्नी पए ए आए, मनावि पोतानी हो महीजा रूप पालां धरी ॥ चक्रीनें पण तेम, बाएं लाख पायकनें हो पेखि वशवर्त्ति करी ॥ ॥ ७ ॥ राजाने करे रंक, सेवने सेनापति हो सारथवाह सचीवने ॥ दास ना जे करे दास, कुवासनायें वासे हो जे सहु पामर जीवने ॥ ए ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म, जिर करीने थापे हो तजावी तलनी वासना ॥ अतलनो करी अनुकूल, अवस्तुनो आसंगो हो करावी राखे आसना ॥ १० ॥ त जावि पुष्यनो पक्क, पातकसुं पोसीने हो करावे जे निज चाकरी ॥ हिंसा अदत्त अलीक, मेथुन ने परियहनी हो लगन लगावी आकरी ॥११॥ निशि नोजनसूं नेह, जोडावी जोरेसुं हो क्रोधानलें नाखी वली ॥ नारी मान शिलाएं, मायारूप छजंगी हो मुखे मसावे रली ॥ १२॥ पाडे लोज समुइ, पुत्रादिक संबंधें हो प्रेम तए। नरें ॥ यंत्री युवति रागे, घणनेहें घेरीने हो पीडे पग पग बहु परें ॥ १३॥ दोलतथी करे दूर, महत्व घटाडी हो देखा डी महादीनता ॥ ञ्चारति ञ्चरति ञ्चपार, उपाइने ञ्चापे हो इगीत नरकनी हीनता ॥ १४ ॥ अवतारे तिरयंच, कुत्सित नर योनिमां हो घालीने पीडे घणुं ॥ इःख दारिइ इर्नाग्य, विडंबिने देखाडे हो वली कुगतिनुं बारणुं ॥ ॥ १५॥ एम अनंती वार, जमाडे जवमांहे हो प्राणीने पीडे इःखें ॥ अ हित तिऐं कहेवाय, आचरणा विल एहनी हो केती कहेवाये मुखें॥१६॥ चद्य रतन कहे एम, पांचमी ढालें हो परमारथ तुमें प्रीवजो ॥ मेली मो हनो पास, आगम निसुणीने हो उत्तम गतिने ईवजो ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

॥ अहंकार कोप आदि दे, अड़्रुत कटक अनंत ॥ आएकारि तेहने अहे, अति उद्धत बलवंत ॥ १ ॥ पीडे ते सहु प्राणिने, अहितकारी अ पार ॥ जेवो नृप तेवी प्रजा, अंतर नहीं लगार ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥एए॥

॥ ढाल ब्रही ॥

॥ ईमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ चारित्र धर्म नामें लहो रे, धर्म सेनानो नाथ ॥ शम दम आदें शोनतो रे, सबलो जेहनो साथ ॥ राजेसर, सुण मन राखी वाय ॥ १ ॥ समकेत सत्य सुवासना रे, सदागम ने सद बोध ॥ अक्कव मद्दव उपता रे, जालम जेहने योध ॥ राजे० ॥ २ ॥ गंजीर धीर शौचादिकें रे, सुनट अनंतें सोय ॥ सोति ए सहु जीवने रे, हितवंढक ते होय ॥ राजेण ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरुनेविषे रे, जे उपजावे राग ॥ अत त्वने अवस्तुनो रे, जेह करावे त्याग ॥ राजे० ॥ ४ ॥ सिक्रया जे शीखवे रे, दया धरी दिल मध्य ॥ अलिक अदत्त ज्ञापिने रे, शील पलावे ग्रुद्ध ॥ राजे । ॥ ॥ परियहना महा पासची रे, बुरत बोडावे तेह ॥ निशि नोजन मूकावीने रे, शमें शोनावे देह ॥ रांजे० ॥ ६ ॥ सरल मृड गुण सोंपिने रे, स्नेहिन सांकल त्रोडि ॥ नांजी बेडी रागनी रे, अरथनी आपे कोडि ॥ रा जे॰ ॥ ७ ॥ ग्रुरुता ग्रुणने उपिने रे, जेणी लघुता ऋतीव ॥ सुजस व धारे जे सदा रे, सुमित आपे सदीव ॥ राजे० ॥ ७ ॥ नरक तिर्यंच गति रोकीने रे, आपे सुर अवतार ॥ नरनव दइ वित निर्मलो रे, धर्मे धरावे प्यार ॥ राजे० ॥ ए ॥ परमैश्वर्य पमाडिने रे, शुद्ध सधावे योग ॥ देवप एं विल देइने रे, जला विलसावे जोग ॥ राजे० ॥ १० ॥ एम सहु संसा रिने रे, सुख आपे संसार ॥ अंतें आपे शिवपुरी रे, तिणे जाणो हितका र ॥ राजे । ॥ ११ ॥ ब्रही ढाखें चादीने रे, कहे कवि चदयरतन्न ॥ धर्म नणी जे ध्यायसे रे,जय लहेसे ते जन्न ॥राजे०॥११॥ सर्वगाथा ॥१११॥ ॥ दोहा ॥

॥ एम ए दल जूंफे बने, सुख इःख देवा काज ॥ सदा काल सहु जी वने, वहतां नावे वाज ॥ १ ॥ काल अनंतो अतिक्रम्यो, दल ते जूंफे दो य ॥ हार क्यारे केनी हुवे, क्यारे जीते कोय ॥ १ ॥ बलिर्ड ए बेहु थकी, त्रीजो त्रिज्ञवन राण ॥ कमे परिणाम नामें प्रञ्ज, मोटुं जस मंमाण ॥३॥ ग्रुज अग्रुज रूपेंकरी, चिरत्र विचित्र हे तास ॥ स्थूल मती निव डेलखे, योगी लहे गित जास ॥ ४ ॥ वडो जाइ ए मोहनो, काल परिणती कंत ॥ नाटक वल्लज जेहने, त्रिज्ञवन व्यापक तंत ॥५॥ लोकस्थित जिगनी वडी, जेहने जाणे सहु कोय ॥ बाकी बल निह केहनुं, तेह करे ते होय ॥ ६॥

॥ ढालं सातमी ॥

॥ दोणा दे रे मोड्या दोणा ॥ ए देशी ॥ कुदरत जो जो कमेनी, वि ध विधना बनावे वेष रे ॥ नाच नचावे नवनवा, दिलमां रीके नृप देखरे ॥ वे एहवो रे ते तो वे एहवो ॥ १ ॥ रासनरूपें करे देवने, रासनने करें देवरूप रे ॥ तिर्थचने करे नारकी, नारकीने तिरिय सरूप रे ॥ वे एहवी ० ॥ २ ॥ कुं शुरूपें करिने करे, कुं शुने करे गजराज रे ॥ रंक करे जे रायने, रं कने करे महाराज रे ॥ वे एहवी ० ॥ ३ ॥ धनवंतने निर्धन करे; निर्धनने करे धनवान रे ॥ रोगरहित करे रोगिने, निरोगीने करे ग्लान रे ॥ हे एह वोण ॥ ध ॥ शोकरहित शोकवानने, शोकरहितने करे शोकवंत रे ॥ सुखि याने इिवया करे, इिवयाने कि सुविया अनंत रे ॥ हे एहवो० ॥ ५ ॥ ए हवी शक्ती एहनी, नापी हे नगवान रे ॥ विचित्ररूपी कह्यों ते वती, निहं कोइ एह समान रे ॥ वे एहवोन ॥ ६ ॥ देव मानव तिरिय नारकी, अनं त पात्रें मोह एम रे ॥ नृत्य देखाडे नित नवां, ए देखी रीके जेम रे ॥ हे एहवो० ॥७॥ चारित्र धर्म तणे पखें, थाय ग्रुनरूपें ए सखाय रे ॥ अन्य दा मोहना पक्तने, पोपंतो रहे सदाय रे ॥ वे एहवो० ॥ ए ॥ ज्यारें पासुं करे जेहनुं, त्यारे तेहनी थाय जीत रे ॥ साधारण समजो तिणे, एहवी क ही एहनी रीत रे ॥ वे एहवो० ॥ए॥ उदयरतन कहे आतमा, बीजो मेली बनाव रे ॥ सूथो सातमी ढालमां, समज जे कम सनावरे ॥ हे एह्वो०॥ १०॥

॥ दोहा ॥

॥ वे गोलीनो चरडुउ, ज्येष्ठ वंधुने जाए ॥ रूठो मोह राजा मने, व दे ते एवी वाए ॥ १ ॥ वंधव तुफ आगल बहू, नेह धरी अमे नित्य ॥ नृत्य कला दाखूं नवी, जिम रीफे तुज चित्त ॥ १ ॥ सदागम योगें ते सदा, नाटकनो करे जंग ॥ पात्र पहोचाडे शिवपुरी, वेरी करे विरंग ॥ ३ ॥

॥ ढाल छातमी ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ तो पण तुं तेहनुं पासुं करी, अमने मनावे रेहा र ॥ सहोदर ॥ ए लक्ष्ण ताहरुं हुं लहेतो नथी, एहक्स्यो ताहरो रे आ चार ॥ सहोदर ॥१॥ इम निव कीजें हो सुग्रण सहोदरु, मूक तुं मननी रें गाढ ॥ सहोदर ॥ जाते दाडे हो पर निह आपणा, हसतां न जक्षें रे हा म ॥ सहोदर ॥ २ ॥ खांतें कहो किम ते खेल खेलियें, जेणे थाए घरमां

रें हांण ॥ सहोदर ॥ पुत्र पीयारे हो निज घर निव वसे, ए शीख तूं मनमां रे आए ॥ सहोदर ॥३॥ आचरण तारां कहो कोण उलखे, नानाविध ता रा रे ढंग ॥ सदोदर ॥ कुलनो बोलु बेरु तुं सही, जे शत्रुसुं करे रे संग ॥ सहोदर ॥ ४ ॥ तव हसी शिर चुंबो देइने, छजसुं जरावी रे बाय ॥ सहो दर ॥ इम बोले ते आंस्लं वरसतों, करम संचय नर नाथ ॥ सहोदर ॥ ५ ॥ वत्स हूं जाएं डूं चेष्टा एहनी, जिम तुं नाखेठे रे तेम ॥ बंधवजी ॥ मूल कापे हैं ए सही आपणां, तो पण करिये रे केम ॥ बं० ॥ ६ ॥ स्वनाव माहरो हे ए रीतनो, तज्यो न जाय रे तेह ॥ बं० ॥ अनंत कालनो एह सुं माहरे, चाट्यो खाच्यो रे सनेह ॥ बं० ॥ ७ ॥ महोबत मेली न जाय ते हनी, जीव जो जाय तो जाउं ॥ बं ।।। कांइक क्यारे समारुं तेहनो, दिल धरी तेऐं रे दार्र ॥ बं० ॥ एं ॥ काज तुमारां साधुं द्वं सर्वदा, तुमे 'ढो मारी रे पांख ॥ बं० ॥ त्रिज्ञवनमां हूं गाजूं तुम वहें, जे कहो ते सधा रुं रे धांख ॥ बं० ॥ ए ॥ तव त्यां मोह महिपति बोलिर्ड, निज अव्यय पु रथी रे घेर ॥ बं० ॥ सहाय संसारी जीव छापो मुने, जिम करुं शत्रुने रे फेर ॥ बं० ॥ १० ॥ असंव्यवहार नामें निजपुरथकी, कर्मनूपार्जे रे ताम ॥ बंण ॥ दुर्नव्य ने अनव्य बहु आपिआ, अनुज ने सखाई उद्दाम ॥ बंण ॥ ११ ॥ मोहनृपनुं महत्व उपिनं तिएो, खलकमां वधारी रे ख्यात ॥ श्रो ता जी ॥ उदयरतन कहे आठमी ढालमां, मोहनी मोटी रे वात ॥श्रो०॥१ १॥ ॥ दोहा ॥

॥ चारित्र धर्मना सैन्यमां, वेगें गइ ते वात ॥ निरानंद स घजुं थयुं, सैन्य सुणी सहसात ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १४३ ॥ ॥ ढाज नवमी ॥

॥ सिंद्यां माहरां नयण समारो ॥ ए देशी ॥ तेहवुं ते देखी ने मंत्री, सदबोध कहे नृपने रजी जी ॥ खामी एम ग्रुं गिज जार्र हो, कायरनी परे कलकजी जी ॥ १ ॥ आपद पडे उपाय तेहनो, उत्तम आलोचे मुदा जी ॥ पग पसारी बेसवुं शोचे, क्वीबके कामनीने सदा जी ॥ १ ॥ उद्यम पांखे आवास जागे, बुि विना जे बेशी रहे जी ॥ जलण तेहनुं सर्वस्व जाले, जान किश्यो कहो ते लहे जी ॥ ३ ॥ दिन खामी जातीमद घेखो, निज पराक्रम मूके नहीं जी॥तो ते फरी उदयने पामे, आपदने अंते सही

जी ॥४॥ धीरपणुं धरिने ते माटे, उपाय एहेवो की जियें जी ॥ जिम एह्मुं समाधान थाये, अरियणनो अंत ली जियें जी ॥ ए ॥ तव मंत्रीने कहे म हाराजा, युक्ति ए तुं जाणे सवेजी ॥ ते माटे जे तुजने गमे ते, हुकमत ते की जें हवे जी ॥ ६ ॥ निज स्वामीना पाय निमने, सदबोध वलतो एम वहे जी ॥ मनमां हिंथी आरित मेली, वात एक धरजो हृदे जी ॥ ७ ॥ अ वश्य आपणने जांवुं घटे हे, कमें परिणाम कने वही जी ॥ जिम पावकें दाधा प्राणीनी, पावक पांडे समे सही जी ॥ ० ॥ शत्रुनी पण समय लही ने, मरजी माफक चालियें जी ॥ जिम सघलुं बाल्युं जे अशें, घरमां तेहने किरि घालियें जी ॥ ए ॥ पोखिएं हैएं आपण एहना, ग्रुन पक्ते सर्वदा जी ॥ आपण वली आदेश एहनो, फेरवता नथी कदा जी ॥ १० ॥ चा करी ए चित धरीने, दिलासो देशे किश्यों जी ॥ आखर एहवो छट नथी ए, जोतां मोहराजा जिश्यों जी ॥ ११ ॥ नवमी हालें नेह धरीने, उदयरह इम उचरे जी ॥ जाण अहे जे जिन वाणीना, फेरव्या ते निव फरे जी ॥१॥ ॥ दोहा ॥

॥ सदबोधनुं कह्यं सांनित, इत्यादिक अवदात ॥ चारित्रधर्म ते चित्तमां, राजा थयो रितयात ॥ १ ॥ आगल किर मंत्रीशने, थोडे से परिवार ॥ धर्म राजा तव धाइने, पोहोतो तसु दरबार ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ १ ५७ ॥ ॥ ढाल दशमी ॥

॥ निज गुरु चरण पसाय ॥ ए देशी ॥ सदबोध मंत्री ताम, अवसर जोईरे, कर्म राजाप्रति बोलिउरे ॥ पिंड वेलामां आज, प्रज्ञ अम साथेरे, तुमें पण अंतर कियोरे ॥ १ ॥ न घटे ए तुमने नीति, काल प्रमाणें रे, अधिके उठे जे त्रेवडो रे ॥ स्वनावे तुमें स्वामी, अमग्रूं तेणे रे, आंटो न राखो ए वडो रे ॥ १ ॥ जुनी स्थितने जोय, केंद्र हुं कहुं रे, लेखे तुमें मत लेखवो रे ॥ यालो पूरव प्रीत, न करो एक पखो रे, इम न घटे कवेखवो रे ॥ ३ ॥ मौन रही वडी वार, तव ते नृप रे, मनमांहि विचारिने रे ॥ अव्ययपुरची एक, एडुने काजें रे, सहायक आख्यो धारिने रे ॥ ४ ॥ सदबोधने ते देखाडे, प्र वन्नपणे रे, कानमांहि कहुं तदा रे ॥ तमने पण एक एह, सहाय थाजे रे, अनुक्रमें सजो मुदा रे ॥ ५ ॥ हवणां तो एहनां तेह, वेरी थासे रे, अनुमित महार। हो इशी रे ॥ नहिंतो कुटंब विरोध, थाय अमारी रे, करशोमां

चिंता किशी रे ॥ ६ ॥ आखरें तुमने एह, जिम तिम करी रे, आएी मेल वशुं अमे रे ॥ ए वातनो संदेह, रखे हृदयमां रे, रेख मात्र राखो तुमे रे ॥ ७ ॥ इम सुणी धर्म निरंद, परिकर छेई रे, पहाँतो पोताने घरें रे ॥ मंत्री ने कहे एम, ए ज्ञूं कीधूं रे, कमे नृपें कपटनरें रे ॥ ए ॥ मोह राजाने स खाय, बंधव जाणी रे,बहु आप्यो मननी हरे रे ॥ आपणने दिउ एक,तो पण जुर रे, देखाडरों कालांतरे रे॥ ए॥ तव मंत्री सद्बोध, हसीने कहे रे, खामी ग्रुं सूर्णा नथी रे ॥ धेनु अन गविग्नाण, लिह्यें ते वारू रे, मन सायें जुर्र मथी रे ॥ १० ॥ मोह बंधु हितवंत, आदेश कारी रे, सुनट सह वे तेहना रे ॥ अंत तणा करनार, जग जाणीता रे, आपण वेरी एहनारे ॥ ११ ॥ बहिन वडी बलवंत, लोकस्थिति नामें रे, कर्म राजानी जे कही रे ॥ ते मोहनी वांबे जीत, अनंतमे नागें रे, आपणो जय वांबे सही रे '॥ १२ ॥ शत्रु अनेक हुं एक, ए पण इहां रे, खेद रखे राखो हृदे रे ॥ ए कलो जिम छादित्य, तमनर दले रे, फेरि जिम पामें उदे रे ॥ १३॥ ब द्ध कालें ते सहाय, मिलसे तेहनो रे, खरखरो न करो विच रे॥ पंखा नू ख्या माट, काची कतें रे, जंबर किम पाके प्रञ्ज रे ॥ रे ।। शीघ न यइयें स्वामि, धीरां धीरां रे, कारज सघलां नीपजे रे ॥ दशमी ढालें एम, जदय पयंपे रे, धर्में धन सुख संपजे रे॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ १७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक चितें सब ए सुणो,चंइ मौिल नूकंत ॥ अचरज लिह इम चिंत वे, अहो मंत्रि बुिह्वंत ॥ १ ॥ यथार्थ नामें ए सही, धन्य मंत्रि सदबोध ॥ बीजानें इम बोलतां, िकम आवे अविरोध ॥ १ ॥ केवल इम अनुयह कस्रो, इहां आवि मुनिराज ॥ आख्यानक किह् आपणुं,साम्रां आतम का ज ॥ ३ ॥ ऋणेक इम आलोचिने, िमिलत लोचन मिहपाल ॥ बोल्यो बे कर जोडिने, मन लिह मोद रसाल ॥ ४ ॥ नगवत चारित्र धर्मने, सोंप्यो जेह सहाय ॥ ग्रुं ग्रुं तेहने ग्रंजल्युं, आगल कहो जपाय ॥ ५ ॥ अति ज त्सुक मन माहरं, सुणवा एह संबंध ॥ कहो नगवन सुपसायकर, प्रेमें एह प्रबंध ॥ ६ ॥ सर्वगाथा ॥ १९० ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ चरणाली चामुंमा रण चढे ॥ ए देशी ॥ मुनिवर कहे महाराजने,

तव कमे परिणामें मोदें रे ॥ असंव्यवहारची उद्दरी, धस्तो तेह व्यवहार निगोर्दे रें ॥ मुनि० ॥ १ ॥ तेह समीपें रह्यो तिहां, पोतें प्रवन्नरूपें सोई रे ॥ मोहादिक तव चिंतवे, जुगति तेहनी सर्व जोई रे ॥मुनि०॥१॥ अहो ए नायक ञापणो, नारदरूप निहालों रे॥ गारना खीलानी परें, अस्थिर माया घालो रे ॥ मुनि० ॥३॥ वणकरनी जेहवी नली, जेहवी घंटनी ला ली रे ॥ मृदंग जेहवुं मातंगनुं, एहवी एहनी गति जाली रे ॥ मुनि०॥४॥ मध्य मणी जिम हारनो, तिम ए उनय पक्तगामी रे ॥ शीखामण पण देतां सही, हुत निव मेले हरामी रे ॥ मुनि० ॥ ५॥ श्रंगी जे एऐं कखुं,ते हृदयमांहि निव रह्यं रे ॥ जूत घट ऊपर जल यथा, चिह्नंपासे जाए वयुं रे ॥ मुनि ।। इ ॥ जल जिम जलपो तापव्युं, वलि शीतल याय विशेषो रे ॥ शीखामण शी लहेजने, जिहां अफल याय उपदेशो रे ॥मुनि ॥।।। जोए थयो वे वेरडो,तो जाज्ञे एहनी जाजो रे ॥ समय जोइ निज चुजबक्षें, आर पण साधग्रुं काजो रे ॥ मुनि० ॥ ० ॥ इम चिंतीने आवियो, ते संसारी जीव पासें रे ॥ मोहादिक मिल एकता, इःख देवा उल्लासें रे ॥ सुनि ।॥ ए॥ नावी धर्म नूपालनो, नीरु जाणी टोक्यो रे ॥ अनंत उत्सर्पणी लगें, व्यवहार निगोदमां रोक्यो रे ॥ मुनि० ॥ १० ॥ इख दीधां कोडो गमें, जे संसारिने तेणें रे ॥ अग्यारमी ढार्से चदय वदे,ते कह्यं न जाए केणें रे ॥मुनि०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ कालांतरे कोइक समे, लाग लहिने तेह ॥ कर्में प्रथिवी कायमां, वास्यो तिहांथी लेह ॥ १ ॥ मोहादिक इप्टें मली, त्यां पण तेने निशंक ॥ घेरी राख्यो घण इःखमां, उत्सर्पणी अशंख्य ॥ १॥ इम अप तेज वाजमां, तेमज रोकी तास ॥ इःख दीधां लाखो गमे, कर्मनुं जपर जास ॥ ३ ॥ प्र त्येक तरुमांहे पढ़ी, शितेर कोडाकोडि ॥ सागरोपम राख्यो सही, इःख दइ लख कोडि ॥ ४ ॥ सर्वगाया ॥ १ ए ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ गौतम समुइ कुमार ॥ ए देशी ॥ इम ते संसारी जीव, वित मोहा दिकें, वित वित पाढ़ो वाितने ए ॥ वाश्यो व्यवहार निगोदें, प्रथिव्यादिक मां, फिर राख्यो तिहां घाितने ए ॥ १ ॥ इम एकेंडिमांहि, अनंत उत्सर पणी, फेरव्यो ते फिर फिरी ए ॥ पुजल तिहां असंख्य, परावर्त्यो तिणे, नव बहुला किर करी ए॥ १॥ विल पामी विचालु, कर्में ते तिहांथी, वि गर्लेडिमां वासिन ए॥ ते जाणीने डुप्टें, पूर्वे आवीने, परानव पासें पासि ने ए॥ ३॥ वरष संख्याता सहस्रें रे, तिहां विल रोंकीने, निगोदादिक मांहे धखो ए॥ असंख्याता पुजल, परावर्तावीने, विगलेंडि। रूपें कखो ए॥ ४॥ संख्यातो तिहां काल रे, वासी ने विल, एकेंडिमां आणिने ए॥ विल विगलेंडिमांहे, विल एकेंडीमां, तेहने इम बहु ताणिने ए॥ ५॥ इम अवतरी वार अनेक, पुजल अनंता, परावर्त्त तिहां इःख घणे ए॥ विल कर्में लिह्य विचालुं रे, अवताखो तेहने, समुर्विम पंचेंडियपणे ए॥ ६॥ तिहां पण धायां पूंते रे, मोहादिक मली, अष्ट नव तिहां रोकीने ए॥ पूर्व कोडि प्रत्येक, इःख दीधां बहु, दया न आवी दोषीने ए॥ १॥ अरि ने लिह आसन्त रे, विल वाली पात्तो, एकेंडि अवतारीने ए॥ १॥ अरि ने लिह आसन्त रे, विल वाली पात्तो, एकेंडि अवतारीने ए॥ पण इम पुजल अनंतरे, परावर्त्तिवयां, ते संसारी जीवने ए॥ मोह राजानी साथें रे, इःख मां रोकीने, राख्यो करतो रीवने ए॥ ए॥ बोख्यो बारमी ढालें रे, महा राजा मोहनो, जोरो जो जो निवजना ए॥ सांनिल एह संबंध रे, चित मां चेतजो, उदय वहें थइ एकमना ए॥ र०॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर जिह तव अन्यदा, तिरिय पंचें इि मांहि॥ कर्में ते अवतारि इं, अंगीरुत उठां हि॥ १॥ त्यां पण अरि आवी तिणें, पूर्व कोडि प्रत्ये क॥ अष्ट नवां तस रोकिने, दीधां इःख अनेक॥ १॥ वजी कोधें वाजी त्यां थकी, अवताखो ते जंत॥ एकें इीची आदिदे, गर्नज तिरय पर्यत॥ ३॥ पुजल परावर्त्या तिहां, आपदमां हि अनंत॥ विज मठ पंचे इी कखो, तक जिह कर्में तंत॥ ४॥ सर्वगाया॥ २०९॥

॥ ढाल तेरमी॥

॥ किरती अरजे जेम वारी ॥ ए देशी ॥ मोह राजादिक लहि ते ममे, चिंते जोजो बंधुनां कमे ॥ आघो आघो चलवे हे एहने, जाणिये हे मेल वरो तेहने ॥ १ ॥ इम आलोची ते संसारी, मोहें दीधो मांस अहारी ॥ घणुं करावीने जीवघात, नरकमांहे ते नाख्यो अनाथ ॥ १ ॥ असंख्य काल त्यां इःखमां धरीच, वली कर्में तिहांथी उधरीच ॥ विहंगम जातिमें

वाज्यों लेइ, वली मोहादिक क्रोध धरेइ ॥ ३ ॥ एकेंडिश्रादि नरक पर्यंत, तेमांहे रूंथ्यो जंत ॥ पुजल परावर्त अनंत, इःख तेहनुं जाणे नगवंत ॥४॥ संमुर्विम मनुष्यमाहें वित सोई ॥ कर्में सरजाव्यो तक जोई ॥ तिहां पण मोहादिकें जब अष्ट ॥ रोकीने दीधुं महाकष्ट ॥ ५ ॥ अष्ट अंतर मुहूर्त तिहां राखी॥ वली तिमज डर्गति ते दाखी॥ संमुर्हिम अंते एकेंडी आदे॥ ज्ञव बहुला कीधा प्रमादें ॥६॥ अनंत पुदगल परावर्तन कीधां ॥ मोहादिकें रोकी इख दीधां ॥ गतागतें जही बाधा जेह ॥ ज्ञानी विना कुण जाणे तेह ॥ ७ ॥ वली कमें कांइक तक साधी ॥ गर्नज मनुज तणी गति बाधी ॥ अनारजदेशें लहि अवतास्रो ॥ तब मोहादिकें एम विचास्रो ॥ ए ॥ हा हा इसे अहो सिह हि एया ॥ खापसने लेखे निव गिराशा ॥ अहो अहो कमे परिणामें उदेरी ॥ घणी नूमि आंख्यो ए वेरी ॥ ए ॥ तव रसगृद्धि प्रवृत्ति ए नामें ॥ मुख मरडी बोली ते वामें ॥ श्रम श्रबलानुं जुर्र बस सामी, सबलाने पण नाखुं दामी ॥ १०॥ तो प्रञ्ज ञ्चागल कही ए ज़े ले खे ॥ आण तुमारी कुण जवेखे ॥ आदेश जो अमने आपे देव ॥ तो गले जाली एहने ततखेव ॥११॥ तुमचरणे लावुं तहकीक ॥ वचन श्रमारां ए मा नजो ठीक ॥ जदय रत्न कहे तेरमी ढार्झे ॥ धन्य जे न पडे मोहनी जार्झे ॥ १ २॥ ॥ दोहा ॥

॥ तव मोह नृप मुखें बोलिड, जलट आए। जर ॥ अहो अमारा सै न्यमां, स्त्री पण एह्वी ग्रूर ॥ १ ॥ इम किह आपी आगना, वेगें घेरो जइ तेह ॥ हुं पण तुम पूंठें लगो, आवुं बुं दल केह ॥ १ ॥ प्रज्ञ आणा यें त्यां जई, रस यिद्धयें दीन ॥ रसनो ते रागी कस्तो ॥ मिदरामांस तल्ली न ॥ ३ ॥ प्रवृत्तियें जई प्रेरिड ॥ जननी जिंगनी साथ ॥ अगम्यगमन उ लट जरे, कराव्युं दिन रात ॥ ४ ॥ नरक गतें वली नाखीड, तरत केइने तेह ॥ मह एकेंड्रीमां फरी, रोक्यो काल अहेह ॥ ५ ॥ पुदगल परावर्त्यां तिहां, आपद जरे अनंत ॥ विपदा वेठी जे वली, ते लहे तेहज जंत ॥ ६॥ ॥ हाल चौदमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उमें दो पंखियां॥ ए देशी ॥ अनारज देश मजार ते, कमें आणि ॥ मातंगना कुलमांहि, ते मोहें जाणि ॥ १ ॥ घाव्यो नरक मजार, विल नरचव दी ॥ तव महाजड जात्यंध, ते मोह नृपें कीयो ॥ २ ॥ किहां एक पाषाणरूप, विरूप वली कस्रो ॥ एकेंडियादिकमां हे के, धवधव से धस्रो ॥ ३॥ रोक्यो केतो काल, विल कर्में रली ॥ श्राप्यो नर श्रवतार के, श्रवसर श्रटकली ॥ ४ ॥ दरसनावर्णे ताम के, जाति बधिर पणुं ॥ आपी कस्चो पञ्चररूप के, इःख देवा घणुं ॥ ५ ॥ तिमज फेख्यो तेह के, पहेलो जिम कह्यो ॥ क्यां एक पंग्र मूक के, कुबजपणो लह्यो ॥ ६ ॥ क्वीब कांणो कुरूप के, दासपणो धरी ॥ वसक रि वार अनंत के, फेरव्यो फरि फरी ॥ 9 ॥ अनंता पुजल एम, परावर्चन कह्या ॥ गएया ते न गए। यके, फेरा जे फह्या ॥ ए ॥ कर्म परिणामें ते व ली, मनुजगतें तव्यो ॥ निजचर मोकली मोहें, तिहां पण परनव्यो ॥ ए॥ इष्ट चरें ते किहां एक, कुष्टी महोदरी ॥ वायुरोगी पित्तवानके, गु ब्मी नगंदरी ।। १०॥ कंठ ने कर्ण कंपाल, तालु आदे घणा ॥ उपाया महा रोग, जिहां इःखनी नहिं मणा ॥ ११ ॥ ताव पीहो अतिसार. द सन रसना गर्दे ॥ अधर बीवा आंख रोगें ते, पीड्यो पर्दे पर्दे ॥ ११॥ कपोल रोगी बंध कुष्टीके, शिर रोगी कस्रो ॥ हृदय जदर पूर्वे सूलके, आ म रोगें जहां ॥ १३ ॥ अरुचि प्रमेह खीन रोग, आदि महा गद जरे ॥ पीड्यो पाडे मुख रीवके, विलवे बहु परें ॥ १४ ॥ चौदमी ढालें तेह, ज ड्यो मोहने जुएं ॥ उदय वदे महा दीन ते, घेखो गद घएं ॥ १५॥

॥ दोहा ॥

॥ जाण्यां अजाण्यां आचरे, औषध अनेक उपाय ॥ जिम तिम जे तें ना कह्या, नूकी काय बनाय ॥ १ ॥ अजक अपेय बे आदखां, मंत्र तंत्र बितदान ॥ शरीर काज शंका तजी, पाप कथां असमान ॥ १ ॥ पाप ज रें पामी प्रगट, नर जवहारी जंत ॥ एकेंडियादिकमां कपनो, इम ते वा र अनंत ॥ १ ॥ मानव जव वित एकदा, पाम्यो कर्म पसाय ॥ तव मन मांहे कोपिड, मोहराय तिण वाय ॥ ४ ॥ सर्व गाया ॥ १४६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ सोनारी नणी ॥ ए देशी ॥ राजा किहां एक मोह निरंदें, दंम नाय क तेहने कस्रो ॥ सोई साधु निण ॥ किहां रे आहेडी अति कूर, किहां रे कसाब कुर्जे धस्रो ॥ सो० ॥ १॥ किहां रे धीवर किहां रे चंमाल, किहां रे मांसनक्षी घणो ॥ सो० ॥ किहां एक मद्यपानी मत्सराल, किहां एक

मंसा हिंसकपणुं ॥ सो० ॥ १ ॥ किहां खात्रपाडो खरो इष्ट, किहां एक साधु घाती किर्र ॥ सो० ॥ किहांएक कान त्रोडो कुलहीएा, किहांएक दा सपणो दिने ॥ सो० ॥ ३ ॥ किहांएक धूर्त वग धर्महीण, धाडपाडो परधन हरो ॥ सो० ॥ कूडा घाटतणो घडनार, जनवंचक जोडागरो ॥सो०॥४॥ किहांएक बांद जलो कोटवाल, गुप्ति पालक मंत्रीसरू ॥ देश नगरना देश अधिकार, खर कमीनो कच्चो आगरू ॥ सो०॥ ५॥ किहांएक जेल सजे लमां जेलि, तेल इकु पीलाविने ॥ सो०॥ मदिरा मांस वेचावी क्यांइ, किहांएक शस्त्र घडाविने॥ सो०॥ ६॥ जोह जाख अने रस केस, इल मू सल कखलतणा ॥ सो० ॥ सोंप्या बहु सावद्य व्यापार, घरटी आदि अति घणा ॥ सो० ॥ ७ ॥ वली सोँपी अध्म अनेक, कुटुंब काजे आजीविका ॥ सो० ॥ इम हिंसा करावी अनंत, डुगैतिनी जे दीपिका ॥ सो० ॥ ए ॥ एकेंडियादिकमांहि, वाक्यो तेहने वली वली ॥ सो० ॥ अनंतां पुजल ए म, परावर्त्तन कीथां वली ॥ सो०॥ ए ॥ इम मानव गति पुरमांहि, प्राणी ते पाठो फरी फरी ॥ सो० ॥ आव्यो त्यां अनंती वार, अवतार बहुला करी करी ॥ सो० ॥ १० ॥ चदय रत्न कहे इणि नांति, पनरमी ढालें प्रेम सुं ॥ सो०॥ कथा ए सुएवा कान, नितप्रते आवजो नेमसूं ॥सो०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह राजा हवे अन्यदा, मेली निज समुदाय ॥ मनसूं आलोची मुदा, इम बोव्यो तिणि वाय ॥ १ ॥ असंव्यवहार पुर आदिथी, मांनी अय पर्यत ॥ एसंसारी साथें जम्यो, मुज आदेशें तंत ॥ १ ॥ मिण्या दर्शन महा सुनट, सेवक तेहना ग्रूर ॥ ज्ञानावर्ण अज्ञान वे, जडवाव जेहनो नृर ॥ ३ ॥ ए त्रणेना प्रजावधी, देव धमें ग्रुर नाम ॥ कानें पण क्यारे निव सुण्युं, जमतां तिण कोइ वाम ॥ ४ ॥ लोक जापित पण निव लह्यो, केवल गमायो काल ॥ आहार निइा मेथुन वसें, अवर जाण्युं सर्व आल ॥ ५ ॥ हवे सुणिएंग्रे एहवो, कनक पुरें कमें राय ॥ अमरशेव घरें अंग ना, नंदा नाम कहेवाय ॥६॥ तेहनी कुखें उपजावशे,पुत्र पणें पुर तेह ॥ कांइक धमें वासित अग्रे, तिण मुज चिंता एह ॥ ७ ॥ रखे पामे ते धमें ने, धर्मी लोक प्रसंग ॥ अधर्मी पण लहे धर्मने, वसतां धर्मी संग ॥ ७ ॥

श्रीनुवननानु केवलीनो रासः

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ जरमर वरशे मेह होराजा परनाखे पाणी पडे महारा लाल ॥ ए दे शी ॥ मिय्या दरीन नामें हो राजा, मंत्रीसर इम सांचली, महारा लाल ॥ ताली ले अकानने हाथ ॥ हो० ॥ मुखें तव बोख्यो मन रली ॥ मा० ॥ १ ॥ अहो नलुं षयुं एह ॥ हो० ॥ घी ढल्युं खीचडी ऊपरे ॥ मा० ॥ ञ्चाण न लोपे कोई ॥ हो० ॥ सेव ते अमरतणे घरें ॥ मा० ॥ १ ॥ माथे लई ते माटे ॥ हो ।। काम ए में करवूं सही ॥ मा ।। इम करतां जो कांइ ॥ हो० ॥ मुजयी निपजरो नहीं ॥ मा० ॥ र ॥ तो अनंत तमारे यो ध ॥ हो । ॥ एक एकथी बितया घणुं ॥ मा । ॥ रसग्रह आदी रौड ॥ हो। अड्डत दल अबलातणुं ॥ मा। १४॥ तेहवो हुं नहि वलवान ॥ हो ।। जेहवुं बल हे एहतुं ॥ मां ।। पग पग पाहे वाट ।। हो ।। मुह निव राखे केंद्रनुं ॥ मा० ॥ ५ ॥ स्वामी वहें संसार ॥ हो० ॥ अथवा बल दाखे सहु ॥ माण ॥ तो माहारां वखाण ॥ होण ॥ इये कारणे बोव्यो ब दु ॥ मा० ॥ ६ ॥ तेहवें तिहां तरुणी एक ॥ हो० ॥ चिंतव्या मोह मंम पतलें ॥ माण ॥ क्वीबग्रं करती कछोल ॥ होण ॥ बेठी ने बाहेर जूतलें ॥ मा० ॥ ७ ॥ ते मंत्रीना सुणि बोल ॥ हो० ॥ अष्टद्वहासे ते हसी ॥ मा० ॥ क्वीब करे ततकाल ॥ हो० ॥ ताली लेईने उल्लसी ॥ मा० ॥ ० ॥ तव विस्मित मोह निरंदु ॥ हो० ॥ जठी आव्यो बाहिरें ॥ मा० ॥ तिहां विपर्यय समुह त्रासने ॥ हो०॥ वेसी बोट्यो इणि परें॥ मा०॥ ए ॥ कहे वत्से तूं केम, हे जड़े ॥ ए क्वीब छागें हसी इहां ॥ माण ॥ तव प्र णमी तसु पाय ॥ हो०॥ तरुणी ते बोली तिहां ॥ मा०॥ १०॥ देवा सहुने इःख ॥ हो० ॥ जालम हुं हुं योगिणी ॥ मा० ॥ वाहलांना पाइं वियोग ॥ हे० ॥ हुं ञ्चापदा इष्ट वियोजनी ॥ मा० ॥ ११ ॥ ए मरणना में महा योध ॥ हो० ॥ पंमक पराक्रमनो धणी ॥ मा० ॥ गणे त्रिज्ञवननें तृण मात्र ॥ हो । सूरो सुनट शिरोमणी ॥ मा ।। ११॥ इंडादिक माने आए ॥ हो० ॥ अलंघ्य शासन एह्नुं ॥ मा० ॥ धिंगी हे एह्नी धाड ॥ हो ।।। जगव्यापक बल जेहनुं ॥ मा ।। १३ ॥ जन बाल वृद्ध यु वान ॥ हो० ॥ उत्तखे एहने सहु ॥ मा० ॥ प्रञ्ज प्रसादें एह ॥ हो० ॥ बल धरावे हे बहु ॥ मा० ॥ १४ ॥ चदय रतन कहे एम ॥ हो श्रोता ॥

सोलमी ढालमांहे सुणो ॥ मा०॥ यमने जीते जेह ॥ हो० ॥ जालिम जोर तेहनुं गए। ॥ मा० ॥ १५॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रज्ञ तुम बंधु कनक पुरें, अमरज्ञेवने गेह ॥ लइ नंदा कूखें धस्रो, सल संसारी तेह ॥१॥ व महिना वोव्या जिइये, तव लहि तुम अनिप्राय ॥ मरण सहायनी हुं तिहां, ततिखण पहोती जाय ॥ १ ॥ तुरत तात तेह नो हस्रो, जननी जएतां खेव ॥ शेष कुटंब सर्व संहस्रुं, तुम पसांयें देव ॥ ३ ॥ तव मरऐं आवी तिहां, ते पण लीधो ताणि ॥ कुलमां कोइ न ऊ गखुं, नाम रह्यं निर्वाण ॥ ४ ॥ एकेंडियादिकमांहि विल, कंमो धस्त्रो अथा ग ॥ पुजल अनंत परावर्तशे, तब ते लहेशे ताग ॥५॥ मिण्या दशीन महत्त म, मंत्री मुखभी वाणि ॥ सांजलिने स्वामी अमे, इस्यां बने ते ठाणि ॥६॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ सुंदर हे सुंदर बालुं दक्षणरी चाकरी ॥ ए देशी ॥ राजन हो राजन, मोह राजा मन विस रह्यो ॥ खिजमतकारी ते खंत ॥ रा० ॥ पराक्रम ते हनां सांजली, उपनो हर्षे ऋत्यंत ॥ रा० ॥ मो० ॥१॥ रा०॥ तव प्रेमें ऋ वलोकिने, करशुं फरसी देह ॥ राण॥ आयह नामें खवासने, कहे मोह रा जा तेह ॥ राण्॥ मोण्॥ २॥ सेवक हो सेवक, जो जो महारा सैन्यमां, पंमकनुं पण जोर ॥ रा० ॥ त्रण ज्ञवनमांहे एकलो, जेह पडावे शोर ॥ राण ॥ मोण ॥ ३ ॥ राण॥ मरणमुखें तव बोलिन, एहवुं म कहो स्वामि ॥ रा०॥ प्रतापते प्रज्ञनो सही, जे सेवक साधे काम ॥ रा०॥ मो०॥ ४॥ यतः ॥ सिद्धांति मंदमतयोऽपि यदत्रकार्ये, संनावनागुणमवैहि तमीश्वरा णां ॥ निद्यात्सपंगुररुणोऽपिकथं तमांसि, सूर्योरथस्य धुरि तं यदिनाऽकरि ष्यत् ॥ १ ॥ मोह राजा वलतो वदे, वत्स सांचल कहुं वात ॥ से० ॥ जो तो चोपें ते जीवने, रहिजे तुं दिन रात ॥ से० ॥ मो० ॥ ५ ॥ मानव गति पुरिमां किञ्चां, जोते ञ्चावे जीव ॥ से० ॥ तो उठवा पण तेहने, रखें देतो सुणि रीव ॥ से० ॥ मो०॥ ६ ॥ से०॥ धर्म अक्र जिम नवि धारे, तिम उ नमूली तास ॥ से० ॥ ततिखण पाढो वालि ने, आणजे आपणें वास ॥ से॰ ॥ मो॰ ॥ ९ ॥ ञ्चाण प्रमाण करी सर्वे, उठ्या न करी जेडि ॥ से॰ ॥ मरणादिकें मन मोदशुं, कीधी जेहनी केडि ॥ से० ॥ मो०॥ णासे०॥ कर्मप

रिणामें ते आणि छ, कुलटा नारिनी कूंख ॥ से० ॥ इष्टोषध पानादिकें, गर्न थी घाट्यो इःख ॥ रा० ॥ मो० ॥ ए॥ रा० ॥ विल एकें िचादिकमां फरी, तेम ज राख्यो नेट ॥ रा० ॥ विल कर्में काढी धखो, प्रथम गर्ना त्रिय पेट ॥ रा० ॥ मो० ॥ र ०॥ रा० ॥ त्यां पण योनिना यंत्रमां, पीडाणो ते प्राणि ॥ रा० ॥ ज णतां जननी सिहत ते, मरणें लीधो ताणि ॥ रा० ॥ मो० ॥ र १॥ रा० ॥ विल एकें िचादिकमां धखो, अहो अनंतो काल ॥ रा० ॥ इम किहां इक वर्षनो, किहां वे चरपनो बाल ॥ रा० ॥ मो० ॥ र १॥ रा० ॥ विल किहां एक प्रण वर्ष नो, एम अनंतीवार ॥ रा० ॥ मरणें ते लीधो हरी, न लह्यो धमे विचार ॥ रा० ॥ मो० ॥ र ३॥ रा० ॥ एम एकें िचादिकमां तेहने, वाक्यो वार अनंत ॥ रा० ॥ मो० ॥ र ३॥ रा० ॥ एम एकें िचादिकमां तेहने, वाक्यो वार अनंत ॥ रा० ॥ पुजल परावर्त्यो घणां, जेहनो नावे अंत ॥ रा० ॥ मो० ॥ र ४॥ रा० ॥ सतरमी ढालें सांनलो, इम वदे उदयरतन्न ॥ रा० ॥ नरनैव पामी निर्म लो, करजो जीव यतन्न ॥ रा० ॥ मो० ॥ र १॥ सर्वगाया ॥ ३० १॥

॥ श्री निलय नामे नगर, मानव क्षेत्र मकार ॥ तिहां धन तिलक श्रेष्ठि वसे, धनवति तस घर नार ॥ १ ॥ कर्म परिणामें अन्यदा, जीव संसारी तेह ॥ तसु उदरें आवतारी छं, लघु लाघव कले लेंह ॥ १ ॥ मिण्या दर्शन मंत्रिने, मोह लही ते तंत ॥ नाषे नय पामी मने, आतुर थइ अत्यंत ॥ ३ ॥ ॥ ढाल अढारमी ॥

॥ दोहा ॥

॥ आहे लालनी देशी ॥ नीचां नमावी नयण, वदनें न वदे वयण ॥ आहे लाल ॥ क्रण एक मनसुं आलोचिने ॥ शिर धूणी तेणि वार, मुख मेली हुंकार ॥ आ० ॥ सचिव कहे ते शोचिने ॥१॥ मन मान्या महाराज, करशुं सघलां काज ॥ आ० ॥ मुफ सबलुं कुल तेह अहे, आज लगें प्रष्ठ कांइ, वीरीयें वासित नांहि ॥ आ० ॥ में पण मगन कशुं न हे ॥ २ ॥ आज चकी ते माट ॥ विशेषे आणीसुं वाट ॥ आ० ॥ चिंता शी ए वातनी, त जावी तुम ताक, किहां ए जाशे वराक ॥ आ० ॥ नजर अमोघ हे नाय नी ॥ ३ ॥ अल्प कालें ए बान, गले जाली राजान ॥ आ०॥ आणीसुं आ पणें घरें ॥ पण पांकीने आम, बीडुं हबी बलधाम ॥आ०॥ मंत्री जई निज मंदिरें ॥ ४ ॥ बेठो चिंतामगन, लागी जोर लगन ॥ आ० ॥ कपाल थापी मावे करें ॥ अवनी जिमणे हाथ, खणतो थको मन साथ ॥ आ० ॥ आ

लोचें अरित नरें ॥ ५ ॥ क्रुट्टि नामें तस नार, पेखी कहे तिणिवार ॥ आण ॥ कुण जगमां युवत। इशी ॥ जेहने काजें धरि राग, अरित करो हो अथाग ॥ आ०॥ क्रण तुम कालजमां वशी॥ ६॥ रूप पुरंदर स्वामि, यु वती जन विश्राम ॥ आण्॥ मोहन मुनें कहोने खहं ॥ कुण एहवी गुण वान, नारी रूप निधान ॥ आण् ॥ जेऐं मन प्रजुनुं हख़ुं ॥ ॥ तव ते कहे गुण खाण, इसतां पण ए वाण ॥ सुण वाम ॥ कहेवी सही न घटे तुने ॥ जे तुज विण वीजी नार ॥ स्नुतां सुपन मजार ॥ आ० ॥ दीवी पण न गमे मुने ॥ ७ ॥ कोइक कार्य विशेष, चिंता वर्ते हे एष ॥ आ । तवसा नम री उल्लालीने ॥ कहेवुं स्वामी ग्रुं काम, एहवुं हे उदाम ॥ आए ॥ जिएो रा ख्युं हे चित घालीने ॥ ए ॥ लीलामां त्रिच्चवन देव, वश करो ततखेव ॥ ञाण ॥ समरथने चिंता किशी ॥ कहेवा योग्य जो होय, तो कहो मुज ञा गले सोय ॥ ञ्रा० ॥ चिंता जे चित्तमां वसी ॥ १० ॥ सुण सुनगे में कांइ, श्राजलगें मनमांहि ॥ सुणो वाम ॥ कपट किक्यो निव राखिउ ॥ सुज घर नो कारनार, तुजहाथें निरधार ॥ आ० ॥ एग्धं आज तें नाखिर्न ॥११॥ उ दयरतन कहे एम,सुणो श्रोता धरि प्रेम ॥ सुख कामें,श्रागमने जे अन्यसे ॥ अढारमी ढाले तेह, नवनो लहेशे ठेह ॥ सु० ॥ मन मान्युं तेहनुं थशे ॥१ १॥ ॥ दोहा ॥

॥ चिंतानुं कारण हवे, सुण मन राखी वाय ॥ कर्म परिणामें धर्मने, कार्जे एक सखाय ॥ १ ॥ अव्ययपुरथी कधरी, कंचो आएयो तेह ॥ सांप्रत श्री निलय पुरे, धन तिलक श्रेष्टी गेह ॥ १ ॥ धनवंती कुखें धखो, जीव संसारी सोय ॥ जिम जिम ते वाधे तिहां, तिम इहां चिंता होय ॥ ३ ॥ प्रतिका प्रज्ञ आगले, पण पांकी ते काज ॥ में कीधी ने मजलसे, अहो अवले सुण आज ॥ ४ ॥ तें पण तेह सुणी हवो, किण अने ए काज ॥ ६ तर लोकतणी परें, अफल न होय अवाज ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३११ ॥ ॥ ढाल जंगणीशमी ॥

॥ गढ बुंदि हो वाला ॥ एहनी देशी ॥ चारित्र धर्म नृप हे चावो, संया मे महा सुरो हो ॥ त्रिये पंकजनयणी, सुनगे सुण शशिवदना ॥ कर्म प रिणाम राजाने काने, ते लागो हे पुरो हो ॥ त्रि० ॥ १ ॥ मोह राजानी माजा सुकीने, कर्म करे हे पासुं हो ॥ त्रि० ॥ आग हहे हे तिणे निजघर मां, लोक करे हे हांसुं हो ॥प्रि०॥२॥ त्राजलगें तो कुशलपणे ते,मे पूरण नथि पास्युं हो ॥ प्रिण्॥ फेरव्युं पण न फरे श्रमारूं, वेरीएं जे वाइयूं हो ॥ प्रि॰ ॥३॥ निपुण अने शत्रु ए सघला, मुक मतनिमां जेवा हो ॥ प्रि॰ ॥ ए अम वासित जनना मनने, समरथ है नांजेवा हो ॥ प्रिण्॥४॥ स म्यक् दर्शन नामें सिंह माहरो, विशेष अबे ते वेरी हो ॥ प्रिण्॥ धर्मबुद्धि नामें हे धूया, तेहने गुणनी लहेरी हो ॥ प्रिण्॥ ५॥ सुरपति सरिखा से वे जेहने, चक्री जेहने चाहे हो ॥ प्रिण्॥ मगन थईने रहे सुनि मनमां, अवनीपति आराहे हो ॥ प्रिण्॥ ६ ॥ सुधी जन जेहनी संगति इत्ते, ध्या नी जेहने प्याये हो ॥ प्रिण्॥ उत्तम जन अंगीकरे जेहने, जे अमरने मो ह उपाये हो ॥ प्रि॰ ॥ ७ ॥ सकल सौनाग्य रूप सुधीनी, तरंगिणी ते रा जे हो ॥ प्रि० ॥ तापस पण तेडें सहु तेहने, ठबी अनोपम ठाजे हो ॥ प्रि० ॥ ० ॥ वश्य करवा चाहे तेह पासें; प्रथम एहने प्रेखे हो ॥ प्रि०॥ अम वासित देखी जन एहने, अमने न गणे छेखे हो ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ अम स्वामीना जक जे पूरा, जे रहे चरणें विज्ञा हो ॥ प्रि० ॥ ततिखण ते हना मन एह जांजी, अमथी करे ते अलगा हो ॥ प्रिण ॥१०॥ उत्तम कु लनी उपनी अबला, जे अदनूत रूपाली हो ॥प्रिणा आशक थया जेह नर एहना, ते मेखे तेहने टाली हो ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ उपदेशें जे एहने लागे, तेहने संग बीजो न सुहाय हो ॥ प्रिण्॥ एहनी पूर्वे नमतो हीं मे, निविड स्नेही थाय हो ॥ प्रिण्॥ १२ ॥ सार करीने माने तेहने, तेहनुं पासुं ता णी हो ॥ प्रि॰ ॥ संसार सघलो तेहमें देखी, अमने वेरी जाणी हो॥ प्रि॰ ॥ १३ ॥ पक् अमारो एह समूलो, उनमूले इम जाएो हो ॥ प्रि॰ ॥ चिं तातुर हुं हुं ते माटे, अवर न सांसो आणो हो ॥ प्रिण ॥ १४ ॥ उगणी शमी ढां हों एम बोहें, उदय रतन एकतानें हो ।। प्रिण्॥ नविजन नावें त त्पर याजो, जिन वाणी सुणवाने हो ॥ प्रिणा १५॥ सर्व गाया ॥३३६॥

॥ दोहा ॥

॥ तव सा कांइक मन हसी, कुदृष्टि कहे सुणो कंत ॥ विणकपरें ए तु मने, नयनी लागे चंत ॥ १ ॥ अर्कपत्र जिम दूरथी, शश ज्योति सा क्वात ॥ व्याघ्र कर्ण जासे प्रञ्ज, शरद पुनमनी रात ॥ १ ॥ तिम लागे हे तुमने, अहतो जय अनंत ॥ मन किल्पत कायर परें, शुरा निव शंकंत ॥३॥ जीवन जेह तुमें कहाो, कमें करे हे पक् ॥ खामी ते साचूं सही, ब जिड़े एह अलक् ॥ ४ ॥ अंगीरुतने कधरे, ते जाणो तहकीक ॥ पण केव ल केहनी नथी, वात कहूं हूं ठीक ॥ ५ ॥ अखंम अहे ए आपणो, रिष्ठ पखे हे रेख ॥ दाकिण लगे तेहने मिले, आपणा कुलनो एख ॥ ६ ॥ वे रि अहे ते एहना, आपण एहनी बांह ॥ जे जेहना ते तेहना, आखर हुए उहांह ॥ ९ ॥ ते संसारी जीवने, आज लगें एकंत ॥ रोकी इःख दी धां घणां, जेहनो नावे अंत ॥ ए ॥ मध्यम वर्ति त्यां जाणजो; राजा क में परिणाम ॥ एह विना तुमे तेहने, इःख किम देइ शको खाम ॥ए॥ नि ज घर वाहालुं सहूने, पाणी पाणीनी वाट ॥ आखर जातां कतरे, नवो न शोने घाट ॥ १०॥ सर्व गाया ॥ ३४६॥

॥ ढाल वीशंमी॥

॥ वातम काढो व्रतताणी, ए देशी ॥ वाहाला सुणां वाल वानता, एह्वुं कह्यं तुमे जेहरे ॥ वेरी निपुण हे वासवा, हुं निव मानुं तेहरे ॥ वाणार॥ जो ते निपुण अति हे एहवा, तो काल अनादिना फरतारे॥ एक निगो दना जीवने, वश्य कहो को निष्य करतारे ॥ वा० ॥ १ ॥ एक निगोदें जंतु जेता, तेहने अनंतमे नागें रे॥ एऐं कीधा आपणा, काल अनंते लागेंरे ॥ वाण ॥३॥ बाकी अनुचर तुमतणा, त्रिञ्जवन पूरियुं तेणेंरे ॥ अनंत जंतु गण जेहनी, संख्या न थाए केऐंरे॥ वा०॥ ध।। चोराशी लक्ट् चोवटे, नृत्य अनंतां थायरे ॥ जुर्र तुमारा राज्यमां, नाटक चाव्यां जायरे ॥ वाण ॥ ५॥ तो निपुणपणुं पण तेहनुं, इये कामें आव्युं रोपेरे॥ चांच बोले जो चरकली, तो सायर जल ग्रुं शोपे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ जेह वली तुमें क ह्यो, धर्म बुद्ध तस बेटीरे ॥ इंडादिकने सेव्य हे, सौनाग्य गुणनी पेटीरे ॥ वाण ॥ ७ ॥ सापनी चातें शींदरुं, देखी जिम कोइ बीहेरे ॥ तिम तुम ने प्रञ्ज तेहनी, चांति वशी ने हिएरे ॥ वा० ॥ ए ॥ घोडाचड जिम कोइ क घणुं, तस्कर देखी त्रासेरे ॥ बीहिकें निज बल निव लहे, सांसे पड्यो निव नासेरे ॥ वाण ॥ए॥ तिम प्रञ्ज तुमे वते बले, शाने पड्यावो सांसेरे ॥ जालिम मोह राजातणो, हाथो हे तुम वांसेरे ॥ वा० ॥ १० ॥ आपणे पण पुत्री अहे, धर्म बुद्धि इणि नामेरे ॥ तेहने पगसुं हेसी परी, त्रिच्चवन जेहने कामेंरे ॥ वा० ॥ ११ ॥ ते सम्यक् दर्शननी सुता, मुज पुत्रीनी बी

केरे ॥ गमन करे आप गोपिव, नीर जिम चाले नीकेरे ॥ वा० ॥१२॥ जे आपणी तनयायें तज्या, वक अनें बहु वादीरे ॥ जे चर्चकने शक नह्या, ते नर एहना स्वादीरे ॥ वा० ॥ १३ ॥ ते रांकडीने मुक्त आगलें, द्यं दाखो हो दीदाहरे ॥ चदय रत्न कियों कही, वीशमी हाल ए वाहरे ॥ वा० ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ विल स्वामी ग्रुं कहुं घणुं, जो पामो प्रज्ञज्ञीत ॥ तो मुफने तिहां मो कलो, जिम जइने करुं जींत ॥ १ ॥ गले फालिने गेरसूं, तुम इिह्नतानों किर दास ॥ ते संसारी जीवने, आणुं तुमारे पास ॥ १ ॥ प्रीतम हुं प्री छुंअ छुं, इम मूकीने लाज ॥ न घटे बोल छुं नारिने, विनयग्रं जेहने काज ॥ ३ ॥ आरत अलगी टालवा, जे जे कह्या जबाप ॥ महेर करी ते माह रो, अविनयं करजो माफ ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३ ६ ४ ॥

॥ ढाल एकवीशंमी॥

॥ सुम्यानी पास जिएांदाबे, ए देशी ॥ सब सुख दायक सुंदरि, तूं मु ज प्राणाधार ॥ आज में तुजने पारखी, मारा घरनो तुं शणगार ॥ सया नी सुण सुखकंदावे, सुनगे में तुज बंदावे ॥ १ ॥ मिथ्याददीन मंत्री हसी तव, बोले एहवा बोल ॥ प्रिये महिला प्रधान हे, सहि राखवा घरनो तो ल ॥ स० ॥ २ ॥ मोह राजाना राज्यमां सघलें, राजे एहवी रीत ॥ मर द महिला पूर्वे चले, परिघल दाखंतो प्रीत ॥ सं० ॥ ३ ॥ ते माटे अति सुंदर दाख्यों, सुंदर तें ए जेद ॥ तिहां जाइने प्रिया तुमे, अरिने नाखजो **उद्धेद ॥ स० ॥ ४ ॥ इम सुणि सा अबला बोली, नाथ ए घटतुं नांहि ॥** पग होय जिहां तुमतणो, मारुं बज चाजे त्यांहि॥ सुक्वानी साहेब मेरा बे ॥ स॰ ॥ ५ ॥ मोहन विण गजूं सुं माहरुं, ते माटे सुणो स्वामि ॥ तु मे पण तिहां आववुं, आपण शोनियें एकवामि ॥ स०॥ ६॥ पासें रह्या अमें पेखशूं, तूं तिहां करजे फेलाव ॥ कलत्र सुताशुं संचर्धो, इम मंत्री ते करिय बनाव ॥ स० ॥ ७ ॥ मोइ नृपें वली केडची मेट्या, आपद व्य सनने लोन ॥ लानांतरायादिक लह्यों, जे जगने पमाडे क्लोन ॥ सु क्ला नी सुणो श्रोतारूबे ॥ स० ॥ ७ ॥ उदय वदे एकवीशमीं ढाखें, जगने कर वा जेर ॥ मोह सम को मोटो नहीं, जेहनी आए फरे चोफेर ॥ स० ॥ ए॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे ते श्रीनिलयपुरें, धन तिलक ज्ञेत धाम ॥ जायायें सुत जनिम ड, वैश्रमण धखुं तस नाम ॥ १ ॥ अनुक्रमें यौवन आविड, करतां कला अन्यास ॥ तव निज अवसर डलखी, धन तृष्णायें तास ॥ १ ॥ आिं ग्यो जलट नरें, गाढालिंगन देह ॥ अनिलाष तव तसु जल्यो, लागो ते हसुं नेह ॥ ३ ॥ तव सा प्रेरे तेहने, जो मुजसुं बहु प्यार ॥ तो धन काजें धाइने, विविध करो व्यापार ॥ ४ ॥ सर्वगाया ॥ ३७९ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ बिंदलीनी देशीमां ढाल हे ॥ वसन सोवन मणि केरां, व्यापार करो जलेरा हो ॥ तृष्णा कहे तेहने n कण कस्तुरी कपास, विणजो जिम पो चे आस हो। तृष्णा कहे तेहने ॥१॥ लोह फोफलने गली लाख, वोरो जिम फले अनिलाप हो ॥ तृ० ॥ वाणोतर चलवो विदेशें, वाणना करों विणज विशेषे हो ॥ तृ० ॥ २ ॥ जरी जांमसुं गाडी जूरे, देशावरे जार्र दूरे हो ॥ तृ ।। विल वाही ऊंटने पोठी, बंदरप्रतें घाली कोठी हो ॥तृ ।॥३॥ मांमवी निर्त दाण वोलावी, जक्तमी जिम रहे घर आवी हो ॥ तृ०॥ लिर्च गाम नगर इजारे, थार्च कोटीध्वज सकरारे हो ॥ तृण ॥ ध ॥ करो खेतीने पशु पालो, जिम दरीइ नरे उचालो हो ॥ तृ० ॥ खणो खाणने धातुर्वाद, अन्यसो धरीने आव्हाद हो ॥ तृण ॥ ५ ॥ रस बिल्ल प्रवेश अ न्यासो, करी घरने नाडुत वासो हो ॥ तृ० ॥ कारमां करीत्र्याणां कर वा, शीखो वली कपट आदरवा हो ॥ तृ० ॥ ६ ॥ एहवा सुणिने उपदे श, उझिसर्र तेह विशेष हो ॥ तृष्णाए प्रेखो ॥ तव तेहने कहे ते वा रू, उपदेश दीधो सुख कारू हो ॥ तृ० ॥ ७ ॥ एह पाखें धननी रासि, किम आवे निज आवासि हो ॥ हण ॥ इम कहीने विणज ते सघला, मांम्या मेली मन अर्गला हो ॥ तृ० ॥ ए ॥ बावीशमी ढाल ए बोली, खांतें जो जो दिल खोली हो ॥ तृ ॥ उदय कहे आगम पाखे, इर्गति पडतां कुण राखे हो ॥ तृ० ॥ ए॥ सर्वगाथा ॥ ३०६॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर जाणी आपणो,तव त्यां लानांतराय ॥ धनस्थाने वश्यो धा इने, वैश्रमणना घरमांय ॥१॥ तव तेह्ना परनावथी, कांणी कोडी मात्र॥ लाज न थाये हाटमां, तस्कर पांडे खात्र ॥ १ ॥ चिंतातुर मन चिंतवे, तेह तेणे प्रस्ताव ॥ जांडुं जरीयें जेट छुं, तेती न मिले आव ॥ ३ ॥ जाटक मात्र जो ऊपजे, तो विल चिंते तेह ॥ वाणोत्तरी सूजे नहीं, वणज खोटो सिह एह ॥ ४ ॥ तसु लाजें घर खरचनी, आरित करी आपार ॥ इम जो गोपजोगादिक बहु, विध विध धरे विचार ॥ ५॥ खोट आवे छे आहो खरी, मूलिंग पूंजीमांहि ॥ तो कोटिध्वज किम थाइग्रुं, एम चिंतवे त्यांहि ॥ ६॥ ॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ जाटणीनी देशी ॥ धनने कार्जे हो ते धातो फिरे, न गणे रातने दी ह ॥ तृष्णाएं वाह्यो आरति नरें, न गणे नूख तृष बीह ॥ ध० ॥ १ ॥ ग रथनी करतां गवेपणा, जिहां तिहां नमतां हो जोर ॥ एक दिन पुरुष एक .चेटिड, चंचल जातें ते चोर ॥ ध० ॥ २ ॥ विलोकावे ते वैश्रमणने, एकां तें तेडी आनर्ण ॥ शिर कंठने श्रवणादिकनां, जहवेर जिंदत पंचवर्ण ॥ थ०॥ ३॥ इंगित आकारें उलख्यां, चोरीनां एह सूत्र ॥ धनतृष्णायें त व धाइने, प्रेखो सेवनो पुत्र ॥ ध० ॥ ४ ॥ होनारूं जे होयहो, निर्वहि छेशूं तेह ॥ दूध पीतां मांग वागरो, तो वागो ससनेह ॥ ध० ॥ ५ ॥ इम चिं ती अलंकार ते, अल्प आपीने मूल ॥ ते पासंघी लीधा तिएो, जो जो लोननां ग्रूल ॥ ध० ॥ ६ ॥ तस्करं ते गयो जेहवे, तेहवे राजचरें त्यांहि ॥ आवि विणिक ते बांधिर्छ, नूषणसिहत उद्घांहि ॥ घ० ॥ ७ ॥ जइ गया लािं हिए।, विगोता जिहां वसुधेश ॥ नाखे ते जइ नूपने, जन त्यां जु वे अशेष ॥ ध० ॥ ७ ॥ प्रज्जी नूषण तुमतणां, लोनें लीधां एण ॥ पर्ने वाइया बांधिने, इहां आएयो ए तेण ॥ ध० ॥ ए ॥ नृप कहे निश्चें एहने हणो, तव जनकें महाजन्न ॥ मलीने मूकाविर्ड, आपीने बहु धन्न ॥ ध० ॥ १० ॥ धन पिपासा प्रेखो वली, पुरमां हाट प्रनृत ॥ मंमावी मन मोद सुं, उद्यम करे अदनूत ॥ ध० ॥ ११ ॥ लानांतरायतेणे उदे, लान न थाय जवजेश ॥ महा खापद पद पामिन, पग पग पामे क्वेश ॥ ध०॥ १२ ॥ त्रेखो प्रदेश चलाववा, धन तृष्णाएं ते धाय ॥ तव तातें ते मनें करी, अ न्य सोंपी विवसाय ॥ घ० ॥ १३ ॥ करियांणां बहु जांतिनां, गाडीयें जरी गेल ॥ चात्यो तेह देशावरें, खेलवा नवो खेल ॥ ध० ॥ १४ ॥ चदयरतन

कहे ञ्चातमा, तुं त्रेवीशमी ढाल ॥ लालच मेलने लोजनी, जिम न पडे ज वजाल ॥ घ० ॥ १५ ॥ सर्वगाया ॥ ४०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महा अटिवमां मारगें, जूलो पड्यो ते साथ ॥ तरशें खोले तोयने, जलनी न मले जात ॥ १ ॥ आशा तूटी आपनी, तव मिलित लोचन मु र्वाय ॥ जन सर्वे जगतीतलें, पड्या अचेतन थाय ॥ १ ॥ तिऐ समे त्यां आवी पडी, महातस्करनी धाड ॥ सर्वस्व ते लूंटी गया, अटवी तेडी उ जाड ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१०॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ शालिनइ मोह्यो शिवरमणी रसें रे ॥ ए देशी ॥ छवननानु नांषे इ म केवली रे, चंइमोलि महाराय ॥ सावधान थइने सुणजे तुं हवे रे, पा तक जेम पलाय ॥ छ० ॥ १ ॥ कोइक रूपालु पंथियें ते समे रे, किहां ए कथी जल ऋाणि ॥ थोडुं थोडुं सघला साथने रे, पायुं परमारथ जाणि ॥ छु०॥ श। स्वस्य थया तव तेणें पंथिएं रे, जलाशय जणाव्यो तास ॥ तिहां जर्ने सहु जल पिये गली रे, अंग पखाले उल्लास ॥ छ० ॥ ३ ॥ सक यइने पंचिसरे सहु रे, आप तणी इज्ञाएं ॥ संबल रहित तिहाची संचचा रे, जेहने पूरवे ज्यांएं ॥ छ०॥ ध ॥ वैश्रमण पण एक गामें जइ रे, तर स्यो जुख्यो तरुग्नां एष्या प्रधानियें पग पसारीने रे, मूर्जित मार्गमां हि ॥ छ ।। ।। दीन देखीने दया जपनी रे, कोइकर्ने तिणि वाम ॥ अ न्नादिक ते आपे आणिने रे, चेतन आव्युं ताम ॥ उ० ॥ ६ ॥ विल आ गल मारगें चालतां रे, श्रांत थयो ऋत्यंत ॥ पहोर पहोरे पण पग निव जपडे रे, जर जर लोहि जरंत ॥ छ०॥ ७ ॥ रहि रहि पडीने मुर्हीये वली रे, विल विशोचे विरंग ॥ वैजववाहलां विरहें जूरतो रे, दीन ययो गति नंग ॥ छ० ॥ ० ॥ गामो गामे नीख काजे नमे रे, तो पण न मखे तेह ॥ श्रंतराय पापी श्रावी श्राडो पड़े रे, डर्बल थइ तिणें देह ॥ छ० ॥ ए ॥ न मतो जमतो इम इःख देखतो रे, पहोतो वेलाकुर्छे कोइ ॥ वाणोत्तर राख्यो विषक सही किऐं रे, कांइक सधन थयो सोइ ॥ छ० ॥ १० ॥ तृष्णाएं प्रेखो तव मांमें तिहां रे, विध विधना व्यवसाय ॥ लक्कमी लाखगमें लाधी तिऐं रे, एक श्लोक सुख्यो कोइ वाय ॥ छ० ॥ ११ ॥ यतः ॥ इकुक्तेत्रं

समुज्भ, योनिपोषणमेवच, प्रसादो जूछजां चैव, सद्योघ्नंति दरिज्तां ॥१॥ जदय वदे चोवीशमी ढालमां रे, पोत पूरी तव तेह ॥ पयोधिमांहि तृ ण्णा प्रेरियो रे, चाल्यो धरि चूंप अबेह ॥ छ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ जलिधमां जातां यकां, घटा करी घन घोर ॥ अंबर मंमल उन्ह्यो, चमिक वीज चिहुं उर ॥ १ ॥ कल्पांतकाल तणी परें, पवन वाया प्रति कूल ॥ उद्धि तव तिहां कढियो, जलधर प्रगटघा स्यूल ॥ २ ॥ जल मो जाना जोरची, नाव थयां शतखंम ॥ वेश्रमण तव पामिड, फलक तणो एक खंम ॥ ३ ॥ चपल कलोलें जलचरें, आकुल थतो अपार ॥ तरंग त णा सुपसायची, पाम्यो जलधी पार ॥ ४ ॥ सर्व गाया ॥ ४२६ ॥

॥ ढांल पचीशमी॥

॥ मालीकेरें बागमें दोय नारंग पकेरे लो खहो ॥दो०॥ ए देशी ॥ नाम पण निज देशनुं, न जणाए जे देशें लो, अहो न जणाए जे देशें लो ॥ रा जेसर सुण रसरागीरे लो, खजननी न जडे वारता ॥ पड्यो तेह प्रदेशें लो ॥ अ ० ॥ १ ॥ इःखनरें तिहां रेहेतां यकां, रोगें तक साधी लो ॥ अ०॥ दग्ध उपर फोटकपरें, वेदना बहु वाधी लो ॥ अ०॥ २॥ ज्वर शिर रोगग्नुलादिकें, महारोगें पीड्यो लो ॥ अ० ॥ सूने देवकुलें सुए, जा ववें बहु जीड्यो लो ॥ अ०॥ रा०॥ ३॥ वेवकें हिंमे बेसतो, पडे प्रपाय लो ॥ अ०॥ मठ महियें लोटतो फिरे, आकंदे सराय लो ॥ अ०॥ रा० ॥ ध ॥ जमतो रहे घर घरें, बोले दीन वाणी लो ॥ अ० ॥ पथ्य औषध याचे वली, पाये कोइ न पाणी लो ॥ अ०॥ रा०॥ ५॥ इम इःखें दिन गालतां, केते एक कालें लो ॥अ०॥ रोग रहित तव ते थयो, तृक्षाएं ते ता लें लो ॥ अ० ॥ रा० ॥ ६ ॥ उदेखो तव उद्यमें, लोनें करी लागें लो ॥ अ। संपद काई न संजवी, तोय पाठो न जागे लो ॥ अ। रा० ॥॥॥ किहां एक नृप जूंटी जिये, धूते धूरत किहां रे जो ॥ अ०॥ चोर क्यारे चोरे वली, दहे अगिन कोर्वारे लो ॥ अ०॥ रा०॥ ७॥ इम ते अटन करी बहु, नानाविधदेशें लो ॥ अ० ॥ विषमधलें विचरे वली, वेवे विपद विज्ञेषें जो ॥ अ० ॥ रा० ॥ ए ॥ वृश्चिक व्याल व्यंतरतणा, परानव सहे तो लो ॥ अ०॥ धर खणतो धन लालचें, हींमे गह गहितो लो ॥ अ०

॥ रा०॥ १०॥ अरहट घटि जलोक़ा परें, नरी वलवातो लो ॥ अ०॥ ६ मते आपद अनुनवी, जिहां तिहां वजातो लो ॥ अ०॥ रा०॥ ११ ॥ दे श दारा धन खजनने, वियोगें वरित्र लो ॥ अ०॥ नूपीतें नमतो रहे, आरतियें आवरित्र लो ॥ अ०॥ रा०॥ १२॥ तृक्षाने जोरेंकरी, ६म व दय ते बोले लो ॥ अ०॥ पंचवीशमी ढालें जुत्र, जिहां तिहां ते मोले लो ॥ अ०॥ रा०॥ १३॥ सर्वगाथा ॥ ४३०॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें नमतां एकदा, सुणो सहु श्रोता लोक ॥ मनमांहे कोइक मुखें, सांनच्यो एक श्लोक ॥ १ ॥ ॥ यतः ॥ ॥ त्यार्यावृत्त ॥ स्वज नधनज्ञवनयौवन, वनिता तत्वाद्यनित्य मिदमखिलं ॥ ज्ञात्वाऽपञ्चाणसहं, धर्म शरणं नर्जत लोकाः ॥ १ ॥ सर्व गाया ॥ ४४० ॥

॥ ढास हवीशमी॥

॥ काठबानी देशी ॥ ए श्लोक सुणीने त्यांही, तव मनमांहें हो विण क ते चिंतवे ॥ इःख जे आगें जाय, किह्यें तिहारे हो ते सहु इम चिंत वे ॥ १ ॥ धर्म न कीधो धाय, यतन करीनें हो ते जन्मांतरें ॥ धर्म विना जगमांहे, प्राणी पामें हो छापद बहु परें ॥ १ ॥ इः खिञ्चाने ते माट, ए क धर्म विना हो शरण बीजुं नथी ॥ अनेक धरो उचाट, पण पुण्य पाखें हो सुख न लहियें रित ॥ ३ ॥ चिंते कुदृष्टि ताम, मिथ्यादशीन हो केरी जे गेहनी ॥ अहो अवसर अनिराम, आजहुं पामी हो चिंता हुती जेहनी॥ ॥ ४ ॥ वैराग्य नामें विख्यात,श्रम वेरीनों हो सेवक ए सही ॥ ए पात्रमां हें सहसात, प्रगटियो दीज़े हो इहां संदेह नहीं ॥ ५ ॥ जो आवज़े एह नी केडि, वेरणी अमारी हो सम्यक्दर्शनसुता ॥ तो अमने नाखरो उथे डि, उद्यम सघलो हो अफल करी सर्वथा ॥ ६ ॥ इम चिंती उजमाल, धर्म बुद्धि हो नामें निज नंदिनी॥ ते पासें ततकाल, प्रेमें प्रेखी हो कुटुंब ञ्चानंदिनी ॥ ७ ॥ तेहतणे सुपसाय, उत्सुकपणे हो इम चिंत्युं तिणें ॥ नेहें निजघर जाइ, धर्म करीद्यं हो हवे ब्यादर घर्णे ॥ ७ ॥ कारण पुष्टें कार्य, सहेजें थाये हो ते माटे जाउं घरें ॥ एम आलोची ताम, जमतो नमतो हो गयो कोइ बंदरें ॥ ए ॥ प्रवहण चिंड तेह, कोइक जननो हो रही वतागरो ॥ निजपुरें पहोतो नेह, थलवट थइने हो अनुक्रमें पाधरो ॥ १० ॥ मात पिता पर लोक, पहोतां तेह्नी हो दिशा ते देखिने ॥ तव तसु वाध्यो शोक,घर हाटादिक हो पड्यां तिहां पेखिने ॥११॥ विध विध करे विलाप,ञ्चारति पूरें हो ञ्चातम निंदतो॥ पूरव नवनां पाप, उदय ञ्चाव्यां हो इम कहि कंदतो ॥ ११॥ धर्म बुद्धें धरे मन्न, मावित्र केरां हो मृतकार ज करे॥ कहे कवि उदय रतन, ववीशमी ढालें हो कर्म गतिनवि फरे ॥१३॥ ॥ दोहा ॥

॥ एहवे समय मिल एकता, चारित्र धर्मादिक ॥ प्रेखी सदबोधने प्रीत वी, कर्म परिणाम नजीक ॥ १ ॥ तव ते जइ कहे तेहने, अमने एक सहाय ॥ आगें कह्यों ते आपवो, मन मोजें महाराय ॥ १ ॥ कथन तेह कह्या पत्ती, अनंत अनंती वार ॥ पुजल परावर्त्या तिणें, तोहे न आव्यो पार ॥ ॥ श ॥ आज लगें जुर्र अमने, वातें पण ससनेह ॥ महाराजा मेलव्यो नथी, जीव संसारी तेह ॥ अंगिक खंजे उत्तमें, युगांतें पण तेह ॥ अवस्य न याये अन्यया, कहो स्वामी इं एह ॥ ५ ॥ सर्वगाया ॥ ४५० ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी॥

॥ आठीनें वणांजो हो, मेडितया ठाकुर ॥ ए देशी ॥ सदवोध मंत्रीने हो तव कहें कर्मनरेसह, आंख उलांजी एम ॥ वात सिवगतें हो आज लगे पण एहनी, तुं निथ लहेतो केम ॥ स० ॥ १ ॥ ताकी दीन तुम सा मो हो आएं हुं हुं तेहने, पण मुफ बंधव प्राण ॥ फिफिर ने पाठो हो वाले हे ते रांकने, जाणि प्रजानी प्रजानी हांण ॥ स० ॥ १ ॥ घरने वि रोधी हो आखर जो ताणुं घणुं, तो वालां वेरी होय ॥ मस्तकें लक्ष्ने हो में पण निश्चय एकले, काज न थाए कोय ॥ स० ॥ ३ ॥ जव्य खनावने हो लोकस्थित उद्यम वली, काल पिरणित आदि ॥ एहुनी रजा विण हो कांइ काज न नीपजे, पग पग मांमे ए वाद ॥ स० ॥ ४ ॥ ते माटे स हुसुं हो एकांतें आलोचिने, समय लही तुम काज ॥ निश्चयग्रं करीने हो बोल जे बोल्या मुखें, तेहनी हे अमने लाज ॥ स० ॥ ५ ॥ कथन में तुम ने हो पहेलें जे कह्यं अहे, ते जिहां लगें पिंममां प्राण ॥ वीसरी न जा ए हो तिहां लिग वीशे वसा, समको चतुर सुजाण ॥ स०॥ ६ ॥ सदबोध पयंपे हो संप्रति सुणिएं हिएं इसुं, धर्म बुद्धि ते पास ॥ गई हे ते माटे हो आजें पण अमने तुमे, ग्रं निह मेलो तास ॥ स० ॥ ७ ॥ स्वनाव इिण ना

में हो निज मंत्रीश्वरने करें, ताली खेइने ताम ॥ जंचे खरें इसीने हो एह वी वाणी जचरे, नरपति कमेपरिणाम ॥ स० ॥ ७ ॥ धर्म बुद्धि सा साची हो खहो खहो जुर्र पारखी, ए ग्रुं बोद्यो सदबोध ॥ पूरण पाप बुदि हो जातें एहने जाणजो, सत्यग्रं जेहने विरोध ॥ स० ॥ ए ॥ नाम धरावे हो धूतारी जगने धूतवा, एहतुं तो मुह खदीत ॥ सम्यक् दर्शननी हो सु ता ते बीजी अहे, धर्म बुद्धि धरे पीठ ॥ स० ॥ १० ॥ अमारी ए पखी हो जाणो उदयकारिणी, तमारी पखें विषकंद ॥ समूलो उनमुले हो ए ह तमारा वंशने, चालतो इःखनो कंद ॥ स० ॥ ११ ॥ सहुने सुखकारी हो अमृतनी धारा जिशी, अलौिकक ने ते एक ॥ अम बंधु मंत्रीनी हो पुत्री ए सहु जीवने, अरित उपाए अनेक ॥ स० ॥ १२ ॥ अनिधान सरीखें हो सहेज न होवे सारिखा, विंप जिम जलने जहेर 11 कहेवाए पण जहेरें हो जीवने जोखम कपजे, जलनी जीवाडे लहेर ॥ १३ ॥ पा न कहेवाए हो कनकने नागर वेलनां, जिम बहु नाणा जाति ॥ वृक्त कही जें हो वित श्रंबने लींबने, पण जूई जुई धात ॥ स०॥ १४ ॥ दिध दूध घृ तादिक हो कांजी बहु विध तेलने, रस कहेवाए जेम ॥ बहेन कहेवाए हो जिम सोकने, इणि परें जाणो तेम ॥ स० ॥ १५ ॥ नाम सरीखें हो सरिखा गुण न होये कदा, जिम बहु विधनां धान॥ उदय पर्यपे हो एह सत्तावीशमी, ढाखें सुणो धरि कान ॥ स०॥ १६॥

॥ दोहा ॥

॥ कां इ कहे खुं अमने निव घटे, शत्रु मित्र समान ॥ अधिके उने निव गणुं, ए अम सहज निदान ॥ १ ॥ अम बंधुना मंत्रिनी, पुत्री एह प्रत्य क् ॥ अवगुण एहना अमने, कहेवा न घटे मूख ॥ १ ॥ पण गुण अवगु ण जेहनो, जेह बुं देखुं नयण ॥ त्राहित अमे दाखुं तिश्यो, कुण शत्रु कुण सयण ॥ ३ ॥ तव स्वनाव कहे प्रभुजी सुणो, कह्या गुं गुं काम ॥ आचरण सघलां ए लहे, तेहना जे ने स्वाम ॥ ४ ॥ शिर धूणी तव बोलि गुं, राजा कमे पिरणाम ॥ अहो ए तें साचूं कहां, धूरत ए बलधाम ॥ ५ ॥ ए त रुणो अम गरढा नणी, हिस नांगे ने हाम ॥ युक्ति सर्व जाणे अने, पण मुंदी रह्यो मुह फाम ॥ ६ ॥ कांन ढांकिकिर तव कहे, सदबोध मंत्री सो य ॥ एह बुं प्रभु म कचरो, तुम नजरें सब होय ॥ ७ ॥ हूं तो हवे जा गुं श्रुष्ठं, जे कांइ श्रम योग्य होय ॥ कारज ते कहेजो प्रञ्ज, श्रमने श्रवसर जोय ॥ ७ ॥ तव ते जूपित कहे फिरि, समयें याज्ञे सर्व ॥ श्राज जार्ड घर श्रापणे, मूकी मननो गर्व ॥ ए ॥ वाणी जेह मुखें वदी, ते निफल न होज्ञे नेट ॥ श्र्य श्रमे ए साधग्रुं, मननो सांसो मेट ॥ १० ॥ इम सुणि मंत्री श्राविर्ड, नेहें निज श्रावास ॥ वात सर्वे निज स्वामिने, श्राखे मन द्वास ॥ ११ ॥ सर्वेगाया ॥ ४०५ ॥

॥ ढाल अष्ठांवीशमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥ ह्वे माता पिता इख जरि र्च रे, वैश्रमण विपत्तें वरिर्च ॥ कुदृष्टि सुता आवरिर्च रे, तापस थावा मन करिंड ॥ १ ॥ तिहां एक त्रिदंभिंड वसे वासें रे, खयं ज नामें तसु पासें ॥ ते विषक आधे तिदां रोज रे, सुणवा तस आगम बोज ॥ १ ॥ सांजलतां तेहनी शिक्ता रे, अंते लीधी तसु दीका ॥ पूरण निज पंथमां लीनो रे, शौ चादिकमां रहि लीनो ॥ ३ ॥ अएगेल जलमां उढांहि रे, नित्य नाहे न द्यादिकमांहे ॥ जाजन कोपीन उपगरण रे, रोज पखाले वार त्रण ॥४॥ ग्ररु पद पाम्यो काल केते रे, उपदेश कुपथना देते ॥ ग्रुद्ध पंथने तेह उ थापे रे, अन्यने निंदी आप थापे ॥ ५॥ आतम सर्व देवमें माने रे, उत्त म देवने अपमाने ॥ कुधर्म बुद्धें वश कीधो रे, मद मत्सरें घेरी लीधो ॥ ॥ ६ ॥ मरी एकेंड्यादिकमार्हे रे, ते अनंत पुजल अवगाहे ॥ पुत्रीना प राक्रम जाणी रे, कुदृष्टि घइ सपराणी ॥ । मिण्या दर्शन मोह राजा रे, ते वात सुणी थया ताजा ॥ आपणि उन्नति थाए ज्यारें रे, कुण म दित न थाए त्यारें ॥ ए ॥ विल कर्में तिहांथी निकाश्यो रे, लेई मनुज तणी गति वाक्यो ॥ ब्रह्मदत्त ब्राह्मण घर जायो रे, सोमदत्त नामें निपा यो ॥ ए ॥ तिहां पण कुट्टियें केडो रे, कस्रो रिप्रनो करवानो मेडो ॥ प ति पुत्रीसुं जइ वलगी रे, अध क्षण न रही ते अलगी ॥ १०॥ इप्ट दल तेहने उपराखें रे, मोकब्धुं वित मोह चूपाखें ॥ क्रुग्रह हिंसादिक बहु खुं रे, पर्दितने करे जे इह् खुं ॥ ११ ॥ तप तिहां पण तेह अपारा रे, करे यज्ञने वावे जवारा ॥ यागने काजें हणे हाग रे, तसु मांस नक्ष्ण धरी राग ॥ १ श ॥ हल लोह लवण तिल दान रे, गौ जूमि कन्या उपान ॥ दासी तुर ग शय्याने कपास रे, इत्यादिक थापे उद्यास ॥ १३ ॥ इम बीजां पण डुः

खदाई रे, धर्मने वर्जे पातक धाई ॥ करावी ते पाड्यो नरकें रे, मजीने मो हने कटकें ॥ १४ ॥ ए अवावीशमी ढाज रे, सांजजजो थइ उजमाज ॥ कद्य रत्न कहे उद्यासें रे, पडता रखे मोहने पासें ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वित तिहांथी लिइ वासिन्नं, एकेंडियादिकमांहि॥ परावर्त्त्या परवश पणे, अनंत पुजल त्यांहि॥ १॥ बौदादिक मतमां धरी, धर्म ढलें अघ ढेक॥ करावि इणिपरें फेरव्यो, जीव ते वार अनेक॥ २॥

॥ ढाल उंगएत्रीशमी॥

॥ रूडी रे रवारणी रमला पदमणी रे ॥ ए देशी ॥ सोनाम्यपुर नामें न गरें वली रे, मानव खेत्र मजार ॥ गृहपति सुंदर घर जपजाविने रे, ते व रुण नामें कुनार ॥१॥ इणिपरें चिंते कमी नरेसरू रे, में जीव संसारी एह ॥ चारित्र धर्म समीपें नवि धक्षो रे, छाज लगे इःख गेह ॥६०॥२॥ नामें धर्मबुद्धि पण महा पापणी रे, जिहां लिंग एहची दूर ॥ न रहे तिहां लिंग पहोचाडी निव शकूं रे, चारित्र धर्म हजूर ॥इ०॥३॥ सम्यक् दर्शननी सुता विना रे, अलगी एह न थाय ॥ तेहने संगें ए लहेज़े सही रे, सुद दिशा सुखदाय ॥५०॥४॥ ग्रद दिशाएं श्रुति दूतीतणो रे, खरथी याशे एह ॥ सु गुरु सदागमयी ते पामज्ञे रे, योग मेलुं तिएो तेह ॥६०॥५॥ अनिप्राय क र्मनो एहवो उलखी रे,बीनो मोह नरेंइ॥कलुपाणो मनसुं रागकेसरी रे, धूज्यो देप गजेंड् ॥इ०॥६॥ मनसुं बीहीनो मोह नरेसरू रे, पाठांतरें॥ वज्र पड्यो जाएो सद्भने शिरें रे, तव मंत्री सामंत ॥ मजलस मेलीने बेठा मली रे, ञ्रालोचे एकंत ॥इ०॥७॥ तव कोइ निज नाथने ते कहे रे, त्रिज्जवन गं जन स्वामि ॥ तुमने पण सचिंता साहिबा रे, सहिबे तुमारे नाम ॥६०॥०॥ दीर्घ निसासो मेहली ते कहे रे, जे तुमें कह्यो ते तंत ॥ चाबख सम पण महारी चाकरी रे, सुर पतिसा धूजंत ॥ इ०॥ ए ॥ मुक्त पायकने पण को न पमाडवा रे, समस्य नहिं वे कोय॥ पण सुं कीने मुक्तवर वेरहुं रे, बंध वें मेट्यो विगोय ॥ इ० ॥ १० ॥ तेह कहे्छुं नवुं गयुं किछुं रे, कर्म परिणा मने संग ॥ मोह वदे तव एक नवो इर्णे रे, उपजाव्यो है रंग ॥ इ० ॥ ॥११॥ सदगुरु संगें सदा मनो सिंह रे, ते जीव संसारीने जोग ॥ मनसुं चाहे ने ए मेलवा रे, एहवुं कहे ने लोग ॥ इ० ॥ १२ ॥ अम कुल कंद स

मूलो बालवा रे, जे दावानलनी जाल ॥ श्रुति दूंतिका ते पासें प्रेखरों रे, ते सजुरु अम कुल काल ॥ ६० ॥ १३ ॥ उदय वदे उंगणत्रीशमी रे, मारु रागें ढाल ॥ नाषी नवियण नावें सांनलो रे,आगें थइ उजमाल ॥६०॥१४॥ ॥ दोहा ॥

॥ तव ढुंकारो मुख मुकिने, बोख्या सवला तेह ॥ जो एवं वे तो प्रञ्च, न करो चिंता एह ॥ १ ॥ श्रमे करी छुं एहवुं, जिम ए चिंता मूल ॥ ते ग्ररु श्रावी तिहां निव शके, कारण लिह प्रतिकृल ॥ १ ॥ मोह राजा मन हर खिने, तव फिर श्राखे तास ॥ वत्सो वेगें तेहवुं करो, जिम सफल फले मुफ श्रास ॥ ३ ॥ इम कही ते कतावला, पाषक पहोता त्यांही ॥ श्रप श्रकन श्रालोचिने, प्रेखा मारगमांहि ॥ ४ ॥ विविध विधन प्रेखा वली, श्रम श्रालस शिररोग ॥ वत्र जंग नृप विग्रह, मरकी उपइवं सोग ॥ ५ ॥ ग्रं श्रागमननो गेल छुं, जीत्यादिकें मिल जंग ॥ की धो हुकम ते केलवी, श्रमुनो लिह संग ॥ ६ ॥ कुदृष्टि सुता कथनें करी, धम विलें बहु पाप ॥ एकें इ्यादिकमां कपनो, वरुण मरी ते श्राप ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ शीरोहीनो शेलो हो दाडिम योधपुरी ॥ ए देशी ॥ वली मानव खेतें हो, विमलपुरें धरित ॥ रमण श्रेष्टि घरें हो, कमे ते इःख दरित ॥ १ ॥ यौवन पहोतो हो, सुमित्र नामें सोई ॥ एक दिन कमें हो, तव तिहां तक जोई ॥ १ ॥ आख्या आचारज हो, मोज धरी मनमां ॥ गुण जलधी पूरें हो, वहु शालक वनमां ॥ ३ ॥ संयमश्रीयें शोनित हो, पूरित प्रशमनरें ॥ तपे तप तेजें हो, जे सत्य शोच धरे ॥ ४ ॥ जय जमरें जूषित हो, सु ख पंकज जेह्नुं ॥ शीलें विलेपित हो, तनु राजे तेह्नुं ॥ ५ ॥ सद गुण शृंगारें हो, ठेपे अंग सदा ॥ चारित्र सीमायें हो, न चले जेह कदा ॥६॥ समिकतने धरवा हो, थिर जे मेरु परें ॥ मित श्रुत ज्ञानी हो, मंमित मु निप्रकरें ॥ ७ ॥ तव ग्रुद्ध सिद्धांतें हो, श्रोता तिहां रिस्त्रा ॥ पुरजन मु प आदें हो, सहु आवे धित्रा ॥ ० ॥ मन कखुं तिहां जावा हो, सुमि तें पण जेहवे ॥ ते लही मोहराजा हो, इम बोब्यो तेहवे ॥ ए ॥ रे रे य ही राखो हो, बाकी गइ बाजी ॥ इम सुिणने ससंज्ञम हो, कठ्या सहु गाजी ॥ १० ॥ रोके तसु राखवा हो, पायकने प्रेरी ॥ मोह महीपित हो, इम बहु उदेरी ॥ ११ ॥ आलस अलसावा हो, प्रेखे मूटपणुं ॥ कुटंबना रागमें हो, चडावी ग्रूर घणुं ॥ १२ ॥ अवका करि आगें हो, मद बलव्या मांकी ॥ कथा सज कोधादिक हो, प्रमाद कथा राजी ॥१३॥ अदन ग्रुण उप्यो हो, शोक कथो ग्रूरो ॥ अक्षान्त्रचादिक हो, प्रेरी दल पूरो ॥१४॥ किप गृह हुट्टनी हो, सबल सजी सेवा॥ विषय वकाथा हो, वली व्यसन देवा ॥ १५ ॥ नाटक पेषणादिक हो, कौतुक कोडि सज्यां ॥ निज स्वा मीने कामें हो ॥ तिणे निज काम तज्यां ॥१६॥ किलली करिधायां हो, इत्यादिक सघला ॥ वेगें तिहां जइने हो, अनेक करी अर्गला ॥ १७ ॥ केणें कोइक दिन हो, गृह पासें जातां ॥ विल यहि ते राख्यो हो, विघन करी माता ॥ १० ॥ ते गृह पण एक दिन हो, विहार करे तिहांची ॥ ते पण मरी पहुँतो हो, आव्यो हुतो जिंहांची ॥ १० ॥ एकेंड्यिदिक हो, मांहे तिम राख्यो ॥ काल अनंतो हो, पहिले जिम नाख्यो ॥ २० ॥ त्री ग्रमी ढालें हो,मोहना बल जेहवुं ॥ बल निथ केहनुं हो, उदय वदे एहवुं॥ ११॥ ॥ दोहा ॥

॥ ते संसारी जीवने, एम अनंती वार ॥ फेरा तेमज फेरव्या, एकेंडि यादि मकार ॥ १ ॥ अवित पुरि अवतारित्रे, गंगदत्तने गेह ॥ सिंधुदत्त नामें ते वली, कमे परिणामें लेह ॥ २ ॥ यौवन नर जव आवीत्रे, सुगुरु सदागम संग ॥ तव कमें जिम तिम करी, मेख्यो मन ठढरंग ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ॥ एकत्रीशमी ॥

॥ रामचंदके बाग चंपो मोही रह्योरी ॥ ए देशी ॥ मोह लही ते वात, चिंता समुद्दें पड्योरी ॥ कहे मेली निज साथ, अहो ए जंचो चड्योरी ॥ ॥ १ ॥ तरकस खुटा तीर, अंत अरीनो न आव्यो ॥ धरिएं किम किर धी र, फंद ए एहनो फाव्यो ॥ २ ॥ ज्ञानावरण सामंत, तव तिहां एम वदेरी ॥ प्रज्ञ तुम सुन्नट अनंत, एक एकथी अ वधेंरी ॥ ३ ॥ सागरथी सुणो स्वामि, अंजली एक नरी री ॥ नंदिनी शून्यता नामें, माहरी सज्ज करी ॥ ४ ॥ मोकलो तेहने पास, सुखुंजे अफल करी री ॥ तब नृपें प्रेषी ता स, चाली सा प्रेम नरी री ॥ ५ ॥ सिंधुदत्तना मनमांहि, जई तिणे वास कीयो री ॥ तव तेहने गुरें त्यांहि, इम उपदेश दीयो री ॥ ६ ॥ मिण्यादशै न तसु नारि,तेहनी सुताने तजी री ॥ श्रुत जे सुणे नर नारी, शिव सुख ते

ह नजी री ॥ ७ ॥ गुए। वखाएया गेलि, सम्यक् दर्शन तनयाना ॥ मोहने मेलो ठेलि, अर्थी थार्र दयाना ॥ ए ॥ मोहतुं दल महा इष्ट, पग पग स हुने पीडे ॥ कोडी पमाडे कष्ट, जब संकटमां जीडे ॥ ए ॥ चारित्र धर्म प साय, वली तस सैन्य बलें री॥ लिह्यें लील सवाय, इर्गति दूर टले री ॥ १०॥ इम दीधो उपदेश, सिंधुदत्तने तेह सूरें ॥ पण थयो अफल अशे ष, प्रबल महा ग्रुन्यता पूरें ॥ ११ ॥ पूछे तसु परषद लोक, मारगमां घरे जातां ॥ तें कांइ सांचव्यो श्लोक, ते कहे हुं निहं ज्ञाता ॥ १२ ॥ मित्रा दिकने उपरोध, गुरुकने तेह गयोरी ॥ बीजे दिन पण प्रतिबोध, ग्रून्यता एंन जहाो री ॥ १३ ॥ चालणी नीरने न्याय, तेहने गुरुनुं कह्यं री ॥ मन मां न रह्यं कांई, चित्त शून्यताएं यह्यं री । १४॥ तव गुरु गया अन्य देश, कुदृष्टि कुधमेबुधें री ॥ सिंधुदत्त वांक्यो विज्ञेष, कुमत कदायह वधेरी ॥ ॥ १ ५ ॥ जव रही ग्रून्यता कूर, तव ते रंग नरें री ॥ कह्यं कुमतिनुं नूर, समजी चित्त धरे री॥ १६॥ एम करी पाप उपाय, एकेंडियादिकमांहि॥ उपजी वेवे खपाय, काल खनंतो त्यांहि ॥ १७ ॥ ए एकत्रीशमी ढाल, उ दय रतन कही आखी ॥ बलिराजानुं रसाल,चरित्र इहां हे साखी ॥१०॥ ॥ दोहा ॥

॥ हृदयांतर ह्वे अन्यदा, चिंते कर्मे परिणाम ॥ अहो ए किमे बापडो, न लहे धर्म सुवाम ॥ १ ॥ सर्वगाया ॥ ५६० ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ जरमर वरशे मेह जरूखे वीजली हो लाल ॥ज०॥ ए देशी ॥ बंधव मुफ बलवान, जोरावर जालमी हो लाल ॥ जोरावर जालमी ॥ उद्धत ए हनो साथ, प्रबल महापराक्रमी हो लाल ॥ प्रबल महा० ॥ १ ॥ चारि त्र धमें नरेंड्नुं, जई जूए बज्युं हो लाल ॥ ज० ॥ ए संसारी जीवनुं, एह वुं नहीं गज्जं हो लाल ॥ ए० ॥ १ ॥ तुह्च थाए बल तास, कला करं तेह वी हो लाल ॥ क० ॥ पण पोतानी पांख, पडे बे बेडवी हो लाल ॥ प० ॥ ३ ॥ विषम ए दोइ न्याय, हुए ग्लं जूरतां हो लाल ॥ हु० ॥ जे थाए ते थान, प्रतिक्वा पूरतां हो लाल ॥ प्र० ॥ ॥ वडवानल वारिध जेम, इखें पण निवेहे हो लाल ॥ इ० ॥ शशक काजे शशि जेम, कलंक पोतें सहे हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥ निवार करतां आप, गुणी क्य निवार गणे हो

लाल ॥ गु॰ ॥ जिम देह दजाडी दीप, दिशा तम ने हणे हो लाल ॥ दि॰ ॥ ६ ॥ धर्मादिक सघलां मुक्त, जो ऋय वां हो सदा हो लाल ॥ जो० ॥ तो पण करुं उपकार, एहवुं जाणी मुदा हो लाल ॥ ए० ॥ ७ ॥ यतः ॥ उ पकारिणि कतमत्सरें वा, सदयत्वं यदि तत्र कोतिरेकः ॥ अहितसहसावज ब्धे, सघृण यस्य मनः समासधुर्यः ॥ १ ॥ अपास्य जन्मीहरणोञ्जवैरतां, मा चिंतियेला च तद्दिमर्दनं ॥ ददौ निवासं हरये महार्णवो, विमत्सरा धीरिधयां हि वृत्तयः ॥ १ ॥ अथवा मारो पक्त ग्रुन, पोषे हे ए नितें हो लाल ॥ पो० ॥ सम्यक् माहरूं स्वरूप, जाएो हे जे श्रुतें हो लाल ॥ जा० ॥ ७ ॥ जगमां मुज अवदात, जणावे जोपशुं हो लाल ॥ ज० ॥ त्रिष्ठव नमां परिसद, चलावुं चोपग्धं हो लाल ॥ च० ॥ ए ॥ निहतो महारुं कु ण नाम बतुं जगमां लहे हो लाल ॥ व० ॥ प्रसिदिना अर्थी पुरुष, ते सुं द्यं निव सहे हो लाल ॥ ते ० ॥ १० ॥ यतः ॥ तमसाऽनिशं शशांको; गगनं न त्यजति खंममानोपि ॥ कैतावती प्रसिद्धि, र्यस्मादन्यत्र परिवस तां ॥ १ ॥ विजय वर्धनपुरें लेई, सुलस श्रेष्टि घरें हो लाल ॥ सु० ॥ सुत अवतास्त्रो सोय, कर्में को अवसरें हो लाल ॥ कण ॥ ११ ॥ नंदन धंसुं नाम यौवन आव्युं जिज्ञो हो लाल ॥ यौ० प्रवन्नपरो जइ पास कर्में आ प्युं तिज्ञे हो लाल ॥ क० ॥ १२ ॥ खडग यथाप्रवृत्त, करण नामें सही हो लाल ॥ क० ॥ वली एक ग्रानी वात, कर्णमांहें कही हो लाल ॥ क० ॥ १३ ॥ ए खडगें अरिनो वृंद, कहुं तिम मारजे हो लाल ॥ क० ॥ शी खामण मनमांहि, नती परें धारजे हो लाल ॥ न० ॥ १४ ॥ मोहनो सी तेरमो नाग कांईक कणो सही हो लाल ॥ कां॰ ॥ मेली चगन्योतेर नाग, अधिक केती लही हो लाल ॥ अ० ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणादिक चार, अ रीनो त्रीशमो हो लाल ॥ छ० ॥ नामने गोत्रनो नाग, तजीने वीशमो हो लाल ॥ त० ॥ १६ ॥ उंगणत्रीशने उंगणीश, कांइक अधिका वली हो लाल ॥ कां॰ ॥ हणजे तूं हुशियार, ए खडगें मन रली हो लाल ॥ ॥ ए० ॥ १९ ॥ ए साते थाशे ऋीण, कटक तव एह्नुं हो लाल ॥ क० मुहजंग थारो विरोष, गर्जु ग्रुं तेह्नुं हो ॥ लाल ॥ गण ॥ १० ॥ तव नि र्नेयपणे महामात्य, सम्यग्दर्शन तणुं हो लाल ॥ स० ॥ देखीश तूं स हि हार, जे सुखदाइ घणुं हो लाल ॥ जे० ॥ १ए ॥ बत्रीशमी ए ढाल बो

ली, बहु चेदनी हो लाल ॥ बो० ॥ उदय रतन कहे एम, अरि उह्नेदनी हो लाल ॥ अ० ॥ २० ॥ सर्वगाया ॥ ५०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिहां राग देष रूपें अवे, द्वारें सजड कपाट ॥ ते जघाड्यानो पवे, वेखाडी इं घाट ॥ १ ॥ हमणा में ए जिम कह्यो, तिम तुं करजे तंत ॥ तव तेणें तिम आचखुं, अरिनो खेवा अंत ॥ १ ॥ सम्यक् दर्शन मंत्रिनुं, जब इणें दीवुं द्वार ॥ तव कर्में सजुरुतणो, योग मेख्यो तिणिवार ॥ ३ ॥ सहायनी सोंपी दक्ता, ग्रून्यसा जिणें पलाहि ॥ सुगुरु सदागम संगतें, कर्में आण्यो साहि ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ च उसद्दर्णा ति लिंग हे ॥ ए देशीमां ॥

॥ आख्याननी देशी, रामगिरि रागें चाल ॥ मोह राजा भूबी लीनजी, 'क्वानावरण सामंत दीन जी ॥ नाम गोत्र शोकाधीन जी,रूए राग केसरी थइ बलहीन जी ॥ बलहीन सघलुं सैन्य देखी, मिष्या दर्शन नाम ए ॥ मंत्रीश्वर तव थयो कनो,धरी हियामां हाम ए॥ अवस्था सहु निज साथ नी, अवलोकी अमरष नखो ॥ अश्रदान नामें महाइष्ट चूर्ण, यही वेगें परवस्त्रो ॥ १ ॥ पहोतो जइ शीघ्रं ते नंदने पासेंजी, सुगुरु सदागम तव तिहां जासे जी ॥ ते नंदन आगें आजस बांमी जी,मोह मिथ्या दर्शनना मांनी जी।। मांनी कह्या मोह साथना,तिएो अवगुण एकेक ए।। तब धर्म नृपना पक्ता पण,गुण कह्या अनेक ए॥ धर्में सुर शिव दुवे संपद, पापें नरकादिक जही ॥ तव दक्ता प्रनावधी, ते साचुं सघजुं सददी ॥ २ ॥ तव मिथ्या दरीनें निज कामें जी ॥ इष्ट चूरणते अश्रदा नामें जी ॥ हेला तसु दीधुं हिंमत योगें जी ॥ तव ते चेती तास प्रयोगें जी ॥ तिऐं प्रयोगें मित पालटी,चिंते ते नंदन ताम ए॥ कुण कर्म ने कुण धर्मने कुण,कुगित ने सुर धाम ए॥ किएो कांइ दी हुं नहीं ए, आल जिम तिम जचरे॥ फोगट माटें फंद मांमी, पेट जराइ इम करे ॥ ३ ॥ समीप वर्त्तिने शने शने एम जी, ताली लेइने कहे धरी प्रेम जी॥ अहो चरचा ए चितनी उपाई जी॥ धीरजें ग्रुं कहे हे दढ थाई जी ॥ दढ थई अहो धर्मनी ए, करे चर्चा फो क ए॥ प्रत्यक्त ते प्रमाणियें, किणे दीनो ने परलोक ए॥ तिहारे कर्म राजा कोपिर्ड, मोह्नी वाधी मानता ॥ तेना सुनट सघला सज थया, परिपूर्ण पहेला जिम हता ॥४॥ सम्यक् दर्शन महामंत्रीने जी॥ घरे जर्शने ते प्रा णीने जी॥ गले यहीने कीधो आगें जी॥ मोहने साथें कोध अतागेंजी॥ कोध अतागें तेहने तव, करावी महापाप, एकेंडियादिक मांहि धरी , जोजो मोहनो व्याप॥ विल नर्क तिर्यंच मनुष्यमांहे, फेरव्यो ते फिर फिरी॥ वार अनंती विगत तेहनी, ज्ञानी विण कुण लहे खरी॥ ५॥ पूरव रीतें खडग देखाडी जी॥ मोहादिकने पातला पाडी जी॥ सम्यक् द शिन मंत्री हारें जी॥ वार अनंती एणे प्रकारें जी॥ वार अनंती गयो पण तिहां,पाम्यो नही प्रवेश॥ रोग विषय रस कोधयोगे, अफल कखा उ पदेश॥ फरी मोहादिकें सक्क थ६, एकेंडियादिकमां धखो॥ उदय रत्न क हे वार अनंती, तेत्रीशमी ढालें किस्थो॥ ६॥

॥ दोहा ॥

॥ मलयपुर नामें नगर, मानव केंत्र मकार ॥ इंड् नामें खवनीपति,' राज्य करे ते वार ॥ १ ॥ विजया राणी तेहने, तेहनी कूखें तास ॥ खंगज पणे खवतारी है, कमें परिणामें खास ॥ १ ॥ विश्वसेन वारू तिहां, निरुपम दीधुं नाम ॥ खनुक्रमें योवन खावि है, सकल कला गुण धाम ॥ ३ ॥ खशोक सुंदर ज्यानमां, एक दिन रमवा काम ॥ परिकर पूरें पर विखा, राजकुमर ते जाम ॥ ४ ॥ सविगाया ॥ ६०२ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ जरमर जरमर हो सेला मारु वरशे लो ॥ ए देशी ॥ तव कमें हो सुगुरु सदागम योग, तिहां विश्वसेनने वनमां मेलिउ ॥ तेहने दर्शने हो उलस्युं वीर्य विशिष्ट, तिऐं सुविशेषें मोहने अवहेलिउ ॥१॥ त्यां ते खद्गे हो मोहादिक शत्रुनां तन्न, पूर्वेषी अधिक छेदी प्रेमने नरें ॥ प्रणमीने हो सुगुरु सदागम पास, कर जोडीने बेतो ते सपरिकरें ॥१॥ सदागम हो निणनें सुगुरें तास, श्रुतसंगम कीधो तव सा किह् ॥ विश्वसेनने हो श्रवणें लागी विर तंत, सुणतां जेहबी ज्ञान दशा लही ॥ ३ ॥ नमाड्यो हो नवसागरमांहे निर, नइ नोला तुने परें परें नोलवी ॥ प्रौढ पापीयें हो मोह राजाने प्र धानें, मिथ्यादर्शनें राख्यो उलवी ॥ ४ ॥ गेहिनी संगें हो प्रेखी निजनंदि नी सोय, धमेबुद्धि नाम तेहनुं जुतूं धरे ॥ महापापणी हो त्रिज्जवनें नम ती तेह, सहु प्राणीने घेरी वश करे ॥ ५ ॥ धमेने ढलें हो करावी पाप अ

घोर,पाडें नरक गतें सहु प्राणीने ॥ मिण्यादर्शन हो तात कुदृष्टि मात, म न तेहनां रीण्वे हित आणीने ॥ ६ ॥ मिण्यादर्शन हो कुदृष्टि जे करे क रतुक, क्यां क्यां मांमी ते कहूं तुफ आगले ॥ रागादिक हो दोप रहित जे देव, अदेवपणुं थापे तेहमां ठलें ॥ ७ ॥ निःस्प्रहादिक हो गुणें जे रा जे गुरुराज, अगुरु बुद्दी तेहनेविषे धरे ॥ दयादिक हो सहित जे धर्म स दाय, ते धर्मना घेषी सहु जीवने करे ॥ ७ ॥ कुदेव कुगुरु हो कुधर्मसुं क रे तल्लीन, विपर्ययपणुं उपजावी बहु परें ॥ आचरावी हो प्राणीने पाप अनेक, दूरतें इःख दाखे सहुने शिरें ॥ ए ॥ तुफ्तने पण हो मोहादिकें म ली जोर, काल अनंतो कष्ट दीधां घणां ॥ सकुटंब हो मिण्यादर्शन सु वि शेष, महा इःख दीधां निव राखी मणा १। १० ॥ तेहनी नारी हो पुत्रीएं पीड्यो जेह, सहस्र जीनें जो विवरीने कहे ॥ तो पण तेहनो हो पारन 'पामे कोय, उदय चोत्रीशमी ढालें इम कहे ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रुति नाषित इम सांनली, नय पामी ते नूर ॥ गद गद स्वर गुरुने कहे, पद प्रणमी हित पूर ॥१॥ ञ्याज लगें प्रञ्ज ए सवे, हूं निव समज्यो कांइ ॥ ञ्याचरणें ञ्रज्ञानने, ञ्यातम मेट्यो ढांइ ॥२॥ एहवा मुक्त ञ्रशरण निष्, वेरियें ञ्याणतां वाज ॥ शरण होशे प्रञ्ज केहनुं, उपदेशो ते ञ्याज ॥ ३ ॥ ॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ अणसण ते रे विरह अनाहक दी हुं ॥ ए देशी ॥ गुरु कथनें फरी तेह ने रे, श्रुति समफावे विशेष ॥ वार अनंती में तुने रे,ए दीधो छे उपदेश ॥ गु० ॥ १ ॥ किहां एक ग्रून्यताने छतें रे, अंश्रदानयोगें क्यांयें ॥ मद मो ह हेषवशें किहां रे, शतगुणने महिमायें ॥ गु० ॥ १ ॥ कुदृष्टि सुताप्रसं गथी रे, जे में कह्यो ते छेक ॥ आतमहित अणवांछते रे, ते अफल कखुं अनेक ॥ गु० ॥ ३ ॥ हित उपदेश जे कहुं हवे रें, ते तुं सुण सावधान ॥ उपयोगशुं तव ते सुणे रे, कर जोडी धरी कान ॥ गु० ॥ ४ ॥ सा कहे सु गुण सुधारसें रे, जिरगुं सागररूप ॥ चारित्र धर्म छे नूपित रे, जस राज धानी अनूप ॥ गु० ॥ ५ ॥ सम्यक दर्शन मंत्री नलो रे, सदागम सोदर सार ॥ सदबोध बंधु जेहने वडो रे, सर्व जीवनो हितकार ॥ गु० ॥ ६ ॥ पीपल पानतणी परें रे, मोह राजानुं सेन्य, धूजे जेहना नामथी रे, पामे

श्रवस्था देन्य ॥ गु० ॥ ७ ॥ परें परें पीस्यो घणुं रे, सवधू सुता समेंत ॥ मिण्या दर्शनने जेणे रे, रंगेग्रुं रणखेत ॥ गु० ॥ ० ॥ पाईयो धर्म प्रसाद नो रे, मोक् तरुनुं मूल ॥ धरवा गुण सुपीठने रे, फणीश्वर जे महा स्थूल ॥ गु० ॥ ए ॥ सुख स्मृति विपदने ते नहीं रे, जे तूवो न श्रापे एह ॥ सम्यक् श्राश्रित सत्वने रे, पहोचाडे नव छेह ॥ गु० ॥ १० ॥ तनुजा छे एक तेहने रे, सकल सौजाग्य सदन्न ॥ धर्म बुद्धि सहि तेहनुं रे, नाम छे गुण निप्पन्न ॥ गु०॥ ११ ॥ जंतु जे एहने नजे रे, निबंड धरीने नेह ॥ सम्यक् दर्शन मंत्रीनुं रे, दर्शन पामे तेह ॥ गु० ॥ १२ ॥ दीवो जे इरगति हरे रे, शरणे राखे सदीव ॥ मोहादि त्रास पामे मनें रे, जेहने नामे श्रातीव ॥ गु०॥१३॥ तस इहिता न लही जिणें रे, ते दर्शन न लहे तास ॥ सत्व ते शर्ण विना सही रे, पग पग पामे त्रास ॥ गु० ॥ १४ ॥ जो गर जू होय तूं तेहनो रे,तो सा मेखुं नुद्धा ॥ जिम नागे नवयातना रे, मननीं मटे श्रद्धा ॥ गु० ॥ १५ ॥ पांत्रीशमी ढाल ए कही रे, जे मोहनीमांजे जाति ॥ सांनल जो साचे मनें रे, चदय वदे इिण नाति ॥ गु० ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ दर्शन तेहनुं देखवा, ज्रस्तक हूं बुं आज ॥ दया करी देखाडियें, क हूं बुं मेली लाज ॥ १ ॥ तव गुरुराजें तेहनुं, योग्यपणुं ते जोय ॥ श्रुतिमु खें सुविस्तरपणें, जंपावे तक जोय ॥ २ ॥ मोह मिष्या दर्शनतणा, कुट ष्टि साथें जोडि ॥ अवगुण फरी तिणें जच्छा, कुधमेबुद्धिना कोडि ॥३ ॥ ग्रुद्ध धर्म सूधी परें, त्यां लगें कह्यो अविरुद्ध ॥ आदरवानी एहने, ज्यां लगें जपनी बुद्ध ॥ ४ ॥ सर्वगांथा ॥

॥ ढाल हत्रीशमी॥

॥ लेख आपीने कहावे ॥ ए देशी ॥ तव मगन घइने तेह, सजुरुने क हे सस्नेह ॥ जगवन तुम श्रुति सुपसाएं, धर्म बुद्धि हूं पाम्यो उठांहि ॥ ॥१॥ चित्तमां हवे चाहूं करेवा, तुम जाषित धर्मनी सेवा ॥ कुदृष्टि कुध्मे बुद्धिनो, संग न करुं अन्य लिंगीनो ॥ १ ॥ जांषो करी तेणे सुपसाय, ग्रु ६ धर्म विधान उपाय ॥ तव ग्रुरु कहे तारी ए थिरता ॥ घइ अमने उ ठाइनी करता ॥ ३ ॥ श्रोता श्रुत अर्थी लाधे, वक्तानुं महाबल वाधे ॥ ग्रुद्ध धर्म विधान कहेवाने, अमे पण घया एकतानें ॥ ४ ॥ ग्रुद्ध धर्मनो

याय जे अर्थी, पहेलो परहो रहे ते परथी ॥ मन वचन कायानी छुदें, निर्नय नेही एक बुदें ॥ ५ ॥ सम्यक् दर्शन विण खामी, अन्यने न करे शिर नामी ॥ मनसुं हित राखे बहुलुं, दिल किहांरे न करे मुहुलुं ॥ ६॥ सम्यक् आराधो एहं, चडतां सुखं आपे अबेह ॥ तव चिंते राजकुमार, आणी हदयमां हर्षे अपार ॥ ७ ॥ अही ए सम्यक् दर्शन केरी, प्रनाव दीशें जे जेंसे ॥ नाम पण अति सुंदर जेहनुं, क्यारें दर्शनदेखीश तेह नुं ॥ ७ ॥ अंतरंग आलोची एम, मनमांहे धरी ते प्रेम ॥ तव अवसर न ज्ञावी तास, राजा कमे परिणामें खास ॥ ए ॥ ग्रुह्ता परिणाम स्वरूप, अपूर्व करण नामें अनूप ॥ दृढ तीक्षण किन कुगर, एक आप्यो तेहने उदार ॥ १० ॥ कानमां विल कही एक वात, तव उल्लस्युं वीर्य विख्यात ॥ युगतेसुं यथोक्तप्रकारें, पोलें जई तेह कुनारे ॥ ११ ॥ निबिड राग अने बीजो देप, परिएति रूप लहो सविशेष ॥ यंथी नाम कमाडनी जोडी, ततिखण ते नाखी त्रोडी ॥ १२ ॥ मोहादिक शत्रूने मयतो, उत्तम पंथ ने अनुसरतो ॥ अंतःकरण नामें सुविचार, महामात्य प्रसाद उदार ॥ १३ ॥ उदय रत्न वदे एम वाणि, बन्नीशमी ढार्ले जाणी ॥ जिनवाणी जे सद्दिसे, जान ते अपूर्व जिहसे ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतिक्वा पूरी थई, तब हरखी कमें परिणाम ॥ श्रति विद्युद्ध श्रध्यव सायमें, श्रापे एहने ते वाम ॥ १ ॥ श्रनिवृत्तिकरण नामें इसें, वज्रदंम प्र चंम ॥ ते पामी तस उद्धर्युं, श्रनिनव वीर्य श्रखंम ॥ १ ॥ देष गजेंड् मोह राजनो, सुत तेहना सुत दोय ॥ कोध मान नामें जहो, श्रनंतानुबंधी सोय ॥ ३ ॥ तथा बीजो सुत मोहनो, राग केसरी पुष्ट ॥ माया तेहनी नंदि नी, श्रनंतानुबंधिनी इष्ट ॥ ४ ॥ सुत तेनो विज्ञ जालमी, श्रनंतानुबंधी लोज ॥ मिण्या दर्शन मंत्रीश ते, जे मोहघरनो मोज ॥ ५ ॥ ए पांचे श्रति श्राकरा, ते दंमे हण्या पृंव ॥ मेहली निह तेहनी किमे, जना थाये जव ॥ ६ ॥ तिम फेरी चूथा तिणें, जीवित जइ गत सान ॥ महाश्रद्धवमां ज ई पड्या, मूर्वागत तिज्ञ मान ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ ६ ५ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥

॥ बाले वेसे ने बाबरी नाहनी ॥ ए देशी ॥ इइमन सघलां दूर करीने,

बहु दिननो श्राजायो रे ॥ श्रंतःकरण नामें तव मोहोर्छे, राजकुमर ते आयों के, दर्शन देखीने ॥ सम्यक् दर्शननुं सार,मोह्यो मुख पेखिने ॥१॥ तिहां उपशम समिकत रूपधारी, सम्यक् दर्शन मंत्रीने रे ॥ देखंतां दि ल जलस्युं तेह्नुं, मृग जिम सुणि तंत्रीके ॥ द० ॥ २ ॥ पुष्करावर्त नामें घनयोगें, जिम तरु दवनो दाधोरे ॥ नवपछ्यव थाए तिम तेऐं, हर्ष अपू र्व लाधों के ॥ द० ॥ ३ ॥ जिम पंची सर देखी रीके, बीष्म ऋतु मरुदेशें रे॥ इर्जन वचनें दाधो जिम साधु, सुवचनें सीच्यों विशेषें के ॥ द०॥ ॥ ४ ॥ जनम दरिइ। जिम धन धारा, देखीने दिल हीसे रे ॥ हीमें बाल्यां जिम खंबुज विकसे, वारु वसंत जगीसें के ॥ द० ॥ ५ ॥ जिम विरही व छनने योगें, मेघागमे जिम मोरा रे ॥ माजती जही जिम मधुकर माखे, चंदने देखि चकोरा के ॥ द० ॥ ६ ॥ मोहादिक वेरिएं मलिने, काल अ नादि अनंत रे ॥ इःख दावानल दक्तव्यो ते प्राणी, एहवो तप्त अत्यंत कें ॥ द०॥ ७ ॥ सुधारस पूर समो महा शीतल, देखी तास दिदार रे ॥ ति म विश्वसेननुं मन उझसियुं, आनंद पाम्यो अपार के ॥ द० ॥ ७ ॥ त व गुरुराज कहे फिर तेहने, विगतेंसुं विस्तारी रे ॥ वली वली शीखामण वारू, हेजेसुं हितकारी के ॥ द० ॥ ए ॥ साडत्रीशमी ढार्से सुणो श्रोता, उदय रतन इम बोखे रे ॥ मुक्ति तो तेहने हे मुह आगें, जे दरीनथी निव मोले के ॥ द० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ कह्यो ने जो पूरवे, तो पण दृढवा काम ॥ सूरी कहे नृपसु त सुणो, एक चितें अनिराम ॥ १ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी॥

॥ हमीरांनी देशी ॥ रखेरे राचो कोई अन्यने, जीव सलामती सीम कुमरजी ॥ आए एहनी आराधजो, निश्रयसुं धरी नीम ॥ कु० ॥ १ ॥ सुर पए न शके चालवी, दृढ तिम धरजो धीर ॥ कु० ॥ प्राणांतें पए प्रीठियें, व्रत निव खंमियें वीर ॥ कु०॥ २ ॥ शंका कंखा विगंठा वली, पर पाखंमी प्रसंग ॥ कु० ॥ प्रशंसा पर धर्मनी, रखे करो मन रंग ॥ कु०॥ ॥ ३ ॥ पिंम प्रदान प्रपादिक, एहवा अनेक प्रकार ॥ कु० ॥ समिकतने ते सर्वथा, दूषएाना देनार ॥ कु० ॥ ४ ॥ आतमहितवंठक नरें, समिकत राखवुं ग्रद ॥ कु० ॥ थोडुं पए जो मेलुं करें, तो मांमे मोहादिक युद

॥ कु० ॥ ५ ॥ पापी ते सहु बक्षें पहें, तव समरी पूरव वीर ॥ कु० ॥ को पें चड्या जाली गले, लई जाए निज घेर ॥ कु० ॥ ६ ॥ विडंबी विविध परें वली, निर्देय तेह निर्वार ॥ कु॰ ॥ ते माटे तूं एहनुं, जतन करजे जो र ॥ कु० ॥ ७ ॥ क्यारे जो ते पामशे, थोडो पण अवकाश ॥ कु० ॥ तो बाधो गढ जेलसे, रखे करो विशवास ॥ कु० ॥ ७ ॥ सम्यक् दर्शनने स दा, श्राराधजे इकचित्त ॥ कुण ॥ पतिव्रता नारी परें, मेली मननी न्नांति ॥ कु०॥ ए॥ चारित्र धर्म राजान ते, योग्य जाणि गुणगेह ॥ कु०॥ देखा डरो दिन केटले, नक्तवत्सल प्रञ्च तेह ॥ कु० ॥ १० तनुजा बें हे तेहनी, श्रंगथी पण निह श्रलगी ॥ कु० ॥ परम वल्लन पूजित जगें, शीलग्रं रही जे विलगी ॥ कु॰ ॥ ११ ॥ साम्राज्य संपद दायिनी, प्रवर लक्क्णोपेत ॥ कु० ॥ सुख खाणी सुनगी घणुं, संकल सोहगनुं खेत ॥ कु० ॥ १२ ॥ स र्वेस्व गुणनी उरडी, देश विरति एक दिव्य ।। कु० ॥ सर्व विरति बीजी स ही, नामें उत्तमतरें सेव्य ॥ कु० ॥ १३ ॥ एकमनें आराधतां, चक्री चा रित्र धर्म ॥ कु० ॥ ते पुत्री तुने परणावज्ञो, शाश्वत जे ये शर्म ॥ कु० ॥ ॥ १४ ॥ तरवारनी धारा जिसुं, हे खाराधन तास ॥ कु० ॥ सुजाएने सु खतुं मूल है, अजाणने हे इःखरास ॥ कु० ॥ १५ ॥ त्रिविधें तेहने सेव तो, पामीश तूं सुख पूर ॥ कु॰ ॥ क्रमे क्रमे चडतो पगथिए, रहे तो तास हजूर ॥ कु० ॥ १६ ॥ परम प्रचूता पद पठे, मुक्ति पुरीनुं राज्य ॥ कु० ॥ पामीश परमेश्वरपणुं, जिहां वेरी न आणे वाज ॥ कु० ॥ १७ ॥ अडत्री शमी ए ढालमां, उदय रतन कहे एम ॥ कु० ॥ सुखिया तो तेहज सही, जेहने संयमसुं प्रेम ॥ क्र॰ ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सम्यक् ए सर्व सांजली, ते विश्वसेन क्रमार ॥ सम्यक् दर्शन मंत्रि नो, सेवक थई तिणिवार ॥ १ ॥ नेहेंग्रं ग्रुरुने नमी, पोतो पोताने गेह ॥ क्रमर ते सपरिकरें, लाहो अपूरव लेह ॥ १ ॥ सुग्रुरु वचन संजारतो, स म्यक् दर्शन सेव ॥ सम्यक् ते सूधा करे, नवे नेहें नितमेव ॥ ३ ॥ कर्म राजा तव चिंतवे, अहो प्रतिक्षा प्राहि ॥ पूरी में पाडी हवे, चिंता न र ही कांहि ॥ ४ ॥ बांधव मुक्त बहु कोपरो, जो आगें तो पण सत्य ॥ अ र्थ पुद्गल उपहरी, एहने नहिं जव स्थित्य ॥ ५ ॥ प्रौढ सहाय प्रजाव थी, निर्हति पुरियें नेट ॥ श्राखर ए सिंह पोचरो, खेली मोह श्राखेट ॥ ॥ ६ ॥ सर्वगाथा ॥ ६ ए ॥

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी॥ अनुक्रमें ते राजा थयो रे, जनकें जातां पर लोक ॥ जूमिका तेहने जालवी रे, सोंप्यो सघलो लोको रे ॥ १ ॥ समिक त सांचवे, पाले राज्य पटूरो रे ॥ न्याय सुनीति हुं, डुर्जनने किर दूरों रे ॥ स० ॥ २ ॥ निरानंद इवे एकदा रे, अमरषरहित अत्यंत ॥ पक्त पो तानो पेखीने रे, कोप्यो राग केसरी चिंत्यो रे॥ स० ॥३॥ दृष्टि राग रूपें यई रे, वडो स्रुत मोहनो ते वीर ॥ पिताने प्रणमी संचर्छो रे, पहोतो वि इवसेनने तीरों रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ छिड् जुवे बल कारणें रे, निर्शदिन रहे नि जीक,पण लांग न पामे ते किशो रे, थांपवा निज मत वीको रे ॥स०॥५॥ पूर्व परिचित एकदा रे, तव एक तापस त्यांयें ॥ आव्यो पुर ज्यानमाँ रे, सांजब्युं ते नररायें ॥ स० ॥ ६ ॥ विइवजूति नामें ते सदी रे, कपट कलानों कोट ॥ दरी इष्ट विद्यातणों रे, चूके न मंत्रनी चोटों रे ॥ सण ॥ ७ ॥ आकर्षा अज्ञानना रे, जन सद्ध जोवा जाय ॥ पण नरपति नावे कदा रे, समिकत जिएो इहवायो रे॥ स०॥ ए॥ कोईक साथें कहाव्युं इ शुं रे, तव ते त्रिदंमीएं तास ॥ दरीनने पण आवतां रे, स्यो थाए हे विणा शो रे ॥ स० ॥ ए॥ पूर्व प्रसंगतऐं वशें रे, दाहिए लगे नरदेव ॥ कांइ क मुहशरमें करी रे, तिहां पहोतो ततखेवो रे ॥ स० ॥ १० ॥ मंत्र वि द्या कीतुक कला रे ॥ तपसी देखाडे तास ॥ दृष्टिरागें तव तक लही रे, मृपघटें पूखो वासो रे ॥ स० ११ ॥ त्रिदंिमएं तिम रीजव्यो रे, राजा आ वे तिहां रोज ॥ नित जोए कौतुक नवां रे, चित्तमांहे धरि चोजो रे ॥ स॰ ॥ १२ ॥ चित्त चंचल ययुं कुमरतणुं रे, ते कुदृष्टिरागें कस्रो जेरो ॥ समकेतथी तव ते चख्यों रे, इम नाखे ते वेरो रे ॥ स० ॥ १३ ॥ ए इवेत पटा निकु जडा रे, कला न बूजे कांइ॥ ए त्रिदंिम नगवानमां रे॥ ज्ञान **जिला किसी नांइ रे ॥ स० ॥ १४ ॥ तव सम्यक् दर्शन चिंतवे रे, कुद्द** ष्टि स्नेह काम राग ॥ रूपें इहां राग केसरी रे, प्रगट्यो पूर्ण जही जागो रे ॥ सर् ॥ र ए ॥ एक ज्वरतरो जोरें करी रे, व्यापे सघला रोग ॥ तिम ए एकने आगमे रे॥ आवशे इहां अरि उघो रे ॥ स० ॥ १६ ॥ इहां रहे

वुं जुगतुं नहीं रे, मुक्तने हवे ते माट ॥ अलोप थयो इम चिंतिने रे, कु संग लही ते कुघाटो रे ॥ स० ॥ १७ ॥ मिथ्या दर्शन मंत्रवी रे, किहांय थी प्रगटी त्यांही ॥ गले कालीने तेहने रे, नाख्यो निज फंदामांही रे ॥ स० ॥ १० ॥ कुलिंगी संग करावीने रे, धमे बले बहु पाप ॥ एकेंडियादि कमां धस्त्रो रे, मोहादिकें मली सपापो रे ॥ स० ॥ १० ॥ तिमज राख्यो तिहां रोकीने रे, तेहने अनंतो काल ॥ उगणचालीशमी ए कही रे, उद यरतन ए ढालो रे ॥ स० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली हवे ते एकदा, कमे नृपें धरि हेत ॥ धन श्रेष्टीने धाम लेइ, उ पजाच्यो नर खेत ॥ १ ॥ सुनगनामा सुत ते सही, यौवन पाम्यो जाम ॥ सुग्रुरु सदागम संगयी, समिकत पाम्यो ताम ॥ २ ॥ मिण्या दर्शन आदि दे, इरमन कीधा दूर ॥ सम्यक् दर्शननी सेवना, तिमज करे नरपूर ॥३॥ सम्यक् दर्शन मंत्रि जे, ह्वायोपशमिक रूप ॥ त्रिविध आराधे तेहने, आ णी नाव अनूप ॥ ४ ॥ वरष केतां एक वही गयां, सुपरें करतां सेव ॥ प रख्यांपूर्वे एकदा, सुत तसु जणतां खेव ॥ ५ ॥ अवसर जाणी आपणो, विल तिहां आव्यो वेग ॥ रोपनरें राग केसरी, उपजाव्या उद्देग ॥ ६ ॥ ते सुनगतणां घटमां सही, बीजे रूपें बलवंत ॥ स्नेह रागिमपें संक्रम्यो, तव उपनो स्नेह अनंत ॥ ७ ॥ मात पिता निगनीविषे, नाइविषे अति नूर ॥ दास दासी परिजनविषे, प्रीतिनुं वाध्युं पूर ॥ ७ ॥ बाहिरस्यी आ वे घरे, जो नजरे नावे कोय ॥ तो तेहने जोतो फिरे, नूख्यो तरस्यो सोय ॥ ए ॥ नजरें देखे तेहने, तव तसु थाय करार ॥ पुत्रतणा तो प्रेमनो, प रमेश्वर लहे पार ॥ १० ॥ सर्व गाया ॥ ७१० ॥

॥ ढाल चालीशमी ॥

॥ नणदल साल्र्डामां मोतीडो मणेर ॥ ए देशी ॥ वारी वेहुं मासानो बाल ते, वारी आिलंगे लई उत्संगे हो ॥ ढलबल ढोरुडामां मनडो ढिक रिं ड ॥ वारी मुखपर माखी गण गणे, वारी तो पण चुंबे मनरंगें हो ॥ढ०॥१॥ वारी खेलें खरडी नासिका, वारी लपनची चुए लाल हो ॥ ढ० ॥ वारी कोकाकरी जुहे करें, वारीमल मूत्र बहु जंबाल हो ॥ ढ० ॥१॥ वारी केडें घाली क्रीकलो, वारी त्रिक चोक चाचरे तेह हो ॥ढ०॥ वारी सुत यस्तनीं

परें नमें, वारी गलियां गलियां पुर हेद हो ॥ हण । वारी अनेक विधें हु लरावतो, वारी लोकनी न गणे लाज हो ॥ छ०॥ वारी दिन सारो लागी र हे, वारी नोजन न करे काज हो ॥ उ० ॥ ध ॥ सुखें रातें सूए नहीं, वा री जिहां निव उंघे ते बाल हो ॥ ढ० ॥ वारी चर निंदामांथी चडिकेंड, वा री कठे जेवा संजाल हो ॥ ठ० ॥ ५ ॥ वारी जनकनां जाणामांहेथी,वारी मीवुं मधुरुं नेह हो ॥ ढ० ॥ वारी आसडी जाए सवे, वारी खातो खयो जब तेह हो ॥ छ० ॥ ६ ॥ वारी तिहां तिहां साथे संचरे, वारी जिहां जिहां जाए ते बाल हो ॥ छ०॥ वारी जे जे कांई जोइयें तेहने, वारी चि त्तमां राखे चाल हो ॥ ढ० ॥ ७ ॥ वारी निशालें जई नित्यें, वारी पठावे रही पास हो ॥ढ०॥ वारी पांडसपाडां बहु करे,वारी पूरे पंम्यानी आस हो ॥ ढ० ॥ ७ ॥ वारी व्याधितणे उद्धें वली, वारी अधिक करे उचाट हो ॥ उ० ॥ वारी ते जपर खड़ो रहे, वारी अहनिश सूवे न खाट हो ॥ विष् ॥ ए ॥ वारी वैद्य तेडावे विल विलि, वारी श्रीषध करे श्रनेक हो ॥ ढ़ ॥ वारी जाणा जोषीने जूवा, वारी विध विध मेले विशेष हो ॥ ढ़ ॥ १०॥ वारी मंत्र यंत्र मिए श्रीषधी, वारी श्रनेक परें जतार हो ॥ उ० ॥ वारी करी इम करतां कांइ, वारी जो न पड़े करार हो ॥ ११ ॥ वारी हिंमत तो हारे हिए, वारी इखी थईने दीन हो ॥ उ० ॥ वारी विविध परें विलवे घणुं, वारी लंघे आरती लीन हो ॥ ढ० ॥ १२ ॥ वारी हाहा शुं थाज़े हवे, वारी नावे कां अमने मोत हो ॥ ढ० ॥ वारी अती नेहें इ म कचरे, वारी घर गयुं सर्वस्वसोत हो ॥ ढ० ॥ १३ ॥ वारी चालीशमी ढा खें जुर्च, वारी स्नेहवर्शें गई सान हो ॥ ढ० ॥ वारी उदय रतन कहे ते हने, वारी सुणजो सहु सावधान हो ॥ ढ० ॥ १४॥

॥ दोहा ॥

॥ इम करतां मोटो थयो, जालिम तेह जुवान ॥ परणावी तस प्रेम सं, कन्यारूप निधान ॥ १ ॥ हाट बेसाडी हेतसुं, शीखवे रही समीप ॥ विणिज कला तसु वेगसुं, कुमर लही कुल दीप ॥ २ ॥ धनद शेवनुं धन सवे, सुज्ञें सोंपी तास ॥ धव धव कीधो घर धणी, अंगें धिर उल्लास ॥ ३ ॥ लेवुं देवुं ते वसू, गरथ ने गृहव्यापार ॥ पोतें कांई प्रीठे नही, बेवो रहे घरबार ॥ ४ ॥ सविगाथा ॥ ७३६ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

॥ लाल वेंसरदे ॥ ए देशी ॥ इम अंगजनी चेष्टा लीनो, नावतें नरमां रही जीनो ॥ लाल सुत नेहें, मनसुं मुंफाणो ॥ सु० ॥ पापें पथराणो ॥ सु॰ ॥ ला॰ ॥ १ ॥ सुत स्नेहें ते जो जो सुनगो, इर्गति लहेसे महा इ नगो ॥ ला० ॥ १ ॥ दिलमांहे न संनारे देवा, वली वीसारी गुरुसेवा ॥ लाण। ३ ॥ सुत विसाखां पड्यो सांसे, मुखयी न कहे सामी वरांसे ॥ ला० ॥ ४ ॥ अलगा रह्या गुरुना उपदेश, वेरणि थइ धर्मकथा विशेष ॥ लाण ॥ ५ ॥ सम्यग्दरीन नामें पण तेह, आरति मने जही अबेह ॥ ला ।। ६ ॥ स्नेहरूपें राग केसरी बिलर्ड, लिह ने तिहां थी जचिल्र ।। ला॰ ॥ ७ ॥ सम्यक्दरीन नामें पण तेहः, आरति मनें लही अबेह ॥ ला॰ ॥ ७ ॥ मिथ्याददीन मंत्रीसर धांयों, लेइ परिकर ने तिहां आयों ॥ ला० ॥ ए ॥ सुनगतणा घटमां सकुटंबे, त्रावी वश्यो अवलंबे ॥ ला० ॥ १०॥ जात वधूनो जव थयो जोरो, तव संचास्रो तिणे दोरो ॥ ला० ॥ ११ ॥ तिएो दोरे सुतनो दिल फरिर्ड, तव तातनो ग्रुण विसरिर्ड ॥ ला० ॥ १२॥ आते पहोर उद्देग उपाय, ए दीवो अम न सुहाय ॥ ला० ॥ १३ ॥ स घला अनर्थनुं ए मूल, अमने सुखमांहे जगावे ग्रुल ॥ ला० ॥ १४ ॥ सु खें बेसी रहेवा न दीयें, अवगुण केता मुख वदीयें ॥ ला० ॥१५॥ इम चिंति घरमांथी नेटे, बापने काढ्यो ते बेटे ॥ ला० ॥ १६ ॥ सुधर्म बुद्धि तजी ते सुनगो, अंगज वधूथी घणुं उनगो ॥ ला० ॥ १७ ॥ घर घर नी ख मागीने खाय, किहां रे पेट पूरुं न नराय ॥ ला० ॥ १० ॥ मन वचन ने काया केरां, करी पातक तेह घणेरां ॥ ला० ॥ १ए ॥ तिमज एकेंडि यादिकमां निमंत्र, डुःखें मोहादिकें दिमति ॥ लाण ॥ २०॥ एकतालीश मी ढालें कहे उदय, श्रावक विण कूण हूए सदय ॥ ला० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरनव वित कर्में दियो, सिंह नाम नर सोय ॥ अनुक्रमि समिक त पामिन, योवने आव्यो जोय ॥ १ ॥ विषय राग त्रीज़ं वली, रोषें ध रिने रूप ॥ वक्यो तेमां राग केंसरी, मन हरख्यो मोह जूप ॥ १ ॥ शब्द रूप रस गंध फरस, तेहना त्रेवीश जेद ॥ तीव्र राग तेहनो धरे, अहिन श्चि तेह नमेद ॥ ३ ॥ रमणीरागें रंजिन, मांजी सोनो मोह ॥ आपें ज १ अलगी वश्यो, खिण निव खमे विबोह ॥ ४ ॥ जे सा बोली ते खरुं, बीजो न गमे बोल ॥ हितकारि तेहनुं कखुं, मनसुं मानि अमोल ॥ ५ ॥ वाहलां सहु विष सारिखां, विनता अमृतवेलि ॥ शरण न को श्यामा स मुं, बाला समी न बेलि ॥ ६ ॥ मनसुं तो ६म मानतो, अवरां कहे अव हेलि ॥ सुखनुं मूल बे सुंदरी, बाकी घीनो मेल ॥ ॥ सर्वगाथा ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ढाल बेतालीशमी ॥

॥ तट जमुनानो अति रिज्ञामणो रे ॥ ए देशी ॥ तव तसु नारी रे निज जोरो लही रे, जूनां दास दासी जेह ॥ दूर करीने रे दूजां दिल ना वतां रे, राख्यां घर रंग छोह ॥ १ ॥ नखरां जो जो रे निर्जज नारिनां रे, अडिवल मेहली उचालि॥ सिलल सुगंधें रे स्नान करे नितें रे, वेणि वधा री वाल ॥ न ।॥ २ ॥ सुरनिइव्यें रे नित जीनी रहे रे, पहेरे मन गमता वेष ॥ जूषणजारें रे अंग जांगी यहेरे, दर्पणमां रहि देखं॥ न० ॥ ३ ॥ ज' ली पेरें जूंजे रे जोजन जावतां रे, मन माने ये मोज ॥ जे जे गमे रे ते ते जारग्रुं रे, रमए। रमतें रोज ॥ न०॥ ४ ॥ माया गाली रे तो पण ते मा नुनी रे, न्यायने वचनें नाथ ॥ जीजने जोरें रे जली परें जोलवे रे, जो जो युवतिनी जात ॥ न० ॥ ५ ॥ पवित्र ए नारी रे हे पतिव्रता रे, सित श्रामां शिरदार ॥ दियता माहरी रे हे देवपूतली रे, नांखे १म नरतार ॥ ॥ न० ॥ ६ ॥ एक दिन तेणें रे पारखा कारेणें रे, अवतो दोष जपाय ॥ माथामां हे रें माखो पग पानिएं रे, तव तस महें ते पाय ॥ न० ॥ ७ ॥ कहे कांइ जुतुं रे नही ए कामनी रे, चतुरा पिंड मुने चूक ॥ आज पती एदवुं रे, दुं निह श्राचरुं रे, दिलमां न धरो दूख ॥ न० ॥ ७ ॥ जो विल चुंकूं रे इम करतां कदा रे, तो चंदन रसधी जोर ॥ शीतल तुम परें रे प्र हार करी मुने रे, सुख देयां बल फोर ॥ न०॥ ए ॥ तव सा चिंते रे दास ए रांकने रे, क्याने जमाडुं जूर ॥ जे गमे मुने रे तेहने लावूं घरें रे, शंका मेहेली दूर ॥न०॥१०॥ तव बीजे दाडे रे नर दोषा समे रे, श्रंगणे तेडी ए क ॥ नर कोई तरुणो रे नाथने ते कहे रे, सुणो स्वामी सुविवेक ॥ न०॥ ॥ ११ ॥ पितृनुं प्रेष्युं रे पितृलोकथी रे, मनुज आवी रह्यं बार ॥ ते मु क साथें रे करवा कांई वारता रें, इबे एकांतें अपार ॥ न० ॥ १२ ॥ पण हूं न करुं रे तमने पूछ्या विना रे, पर घर जंजा लोक ॥ मननुं कल्प्युं रे का

सें कहे किइयुं रे, अवता जपाइ दोष ॥ पण हूं० ॥ १३ ॥ तुमे तो महा रां रे लक्ष्ण सवे लहो रे, लोक लवे जो लाख ॥ तो पण केहनुं रे कह्यं मानो नहीं रे, स्नेह पूरे वे साख ॥ पण हूं० ॥ १४ ॥ ढाल ए बोली रे वे तालीशमी रे, जदय वदे इम धार ॥ कामिनी परें रे कोई आप गोपवा रे, समफूं नहिं संसार ॥ पण हूं० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तव ते कहे प्रिया तुने, न घटे कहेवुं एम ॥ विकल्प कोइ ताहरेविषे, कहो हुं चिंतवुं केम ॥ १ ॥ हुं निहं बीजा सारिखो, जोकने कहेणे जाग ॥ मेजुं जे मूरखपणे, आपणा घरमां आग ॥ १ ॥ ते माटे जाई तुमे, तस सनमानो तेम ॥ पूर्वज प्रीतें आपणा, जयकारी होंय जेम ॥ ३ ॥ ॥ ढाल त्रेताजीशमी ॥

॥ रुकमणि राणि मोहोलमां ॥ ए देशी ॥ तव सा जइने तेहसुं, खेले वि ध विध खेल हो लाल ॥ स्वेढाएं तनु सोंपती, रसनी चलावे रेल हो लाल ॥ १ ॥ माया जो जो महिलातणी, जे किऐं परखी न जाय हो लाल ॥ बयल पुरुषनें बेतरे, आखर केंह्नी न थाय हो लाल ॥ माण ॥ २ ॥ न रतारने नाखे पत्रे, अवहेली मुने एए हो लाल ॥ नकें तुमे नजो नहीं, पूर्वज रूठा तेण हो जाज ॥ माण ॥ ३ ॥ विनयतणे वचनें करी, नाव दे खाडी चूरि हो लाल ॥ तिम संतोष्यो तेहने, में उलट आएी कर हो ला ल ॥ माण् ॥ ध ॥ पूर्वजने ए प्रीववी, प्रसन्न करहो विहोष हो लाल ॥ स घला पितृनो सही, अति मानीतो एष हो लाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ बीजुं प ण बहु काम है, पितृसंबंधी स्वामि हो लाल ॥ दिन केताएक ते वती, ए रहेज़े आ गाम हो लाल ॥ मा० ॥ ६ ॥ ते माटे में नूंतखो, जिहां ल गें रहो छांहि हो लाल ॥ नोजन तिहां लगें छम घरें, करजो तुमे उठां हि हो लाल ॥ माण ॥ ॥ तव ते कहे तें रूडूं कख़ुं, आमंत्र्यों जे एह हो जाल ॥ निल परें चुंजावजो, अति आदरें सस्नेह हो लाल ॥ मा०॥ ॥ ७ ॥ पितृ जन कोइ प्राहुणा, आवे आपणे छवन्न हो लाल ॥ चाही कीजें चाकरी, पोते दोवें जो पुन्य दो लाल ॥ मा० ॥ ए ॥ शालि दालि घृत शालणां, लापिस घृत पूर आदि हो लाल ॥ उपपितने ते अंगना, सु विधें जमाडे खादि हो लाल ॥ माण ॥ १० ॥ अनेक विधने आसनें, स रत सजि तसु संग हो जाज ॥ अकज गित अबजातणी, ढांकी राखे ढंग हो जाज ॥ माण ॥ ११ ॥ फल फूल मेवादिक नवा, आपे धरी उमेद हो जाज ॥ नरतार निकनरें करें, नित नवलां निवेद हो लाज ॥ माण ॥ ॥ १२ ॥ तव ते जार वदे अहो, पूर्वज तुज नजी पेर हो लाज ॥ संतो ष्या हे में सही, मनमांहे धरसे महेर हो लाज ॥ माण ॥ १३ ॥ जे जे क रे हे सेवना, ते ते पहोचे हे तास हो लाज ॥ एह्वं जाणी ने तेहने, अंगें षयो उल्लास हो लाज ॥ माण ॥ १४ ॥ निक अपूर्व उल्लसी, अष्टांग प्र णमी विशेष हो लाज ॥ कांई जे खातां कगरे,शिर चढावे ते शेष हो लाज ॥ माणा १५ ॥ तेतालीशमी ढाजमां, जो जो महिलानां काम हो लाज ॥ उदय वदे निज नाथने, गोरीयें कीधो गुलाम हो लाज ॥ माण ॥ १६ ॥

॥ जो कोई कहे तेहने, इःशीला तुज नार ॥ तव ते कहे हुं जाएं अं छुं, ए सघलो आचार ॥ निर्मल मुफ नारी अछे, गोप्य न राखे गूफ ॥ सं बंध पहिलो ए सवें, मांि कह्यो छे मुफ ॥ १ ॥ इम उत्तर नापे किश्यो, कह्यं न माने कांिह ॥ मगन थयो महिला रसें, निर्गम समफे नांिह ॥३॥ तव एक दिन कोई इर्जनें, देखाड्यो ते जार ॥ तेहने घरमां पेसतो, सम्य क् परें सुविचार ॥ पोताने घरें पेसतो, पेखी तेह पुरूष ॥ घर आवी घरणी प्रतें, रंगें जणावे रूष ॥ ५ ॥ हे कांते कहो ए किसी, लव करे छे लोक ॥ तव सा कहे थइ तरतरी, लोक तणा मुख बोक ॥६॥ सविगाया ॥ ७०३॥ ॥ ढाल चुमालीशमी ॥

॥ सीता हो पीछ सीतारा प्रजात ॥ ए देशी ॥ जाण्युं हो पिछ जाण्युं तुमारुं में आज, सघछुं हो पिछ सघछुं जाण पणुं सही ॥ परघर हो पिछ परघर जंजा लोक, तेहनी हो पिछ तेहनी वातें लागा वही ॥ १ ॥ घरनी हो पिछ घरनी त्रेवड लहे जेह, परनी हो पिछ परनी न माने वा रता ॥ दोषी हो पिछ दोषी जन विण दोष, पापी हो पिछ पापी रहे प चारता ॥१॥ में तो हो पिछ में तो आगलथी एह, तुमने हो पिछ जमने गुह्म कह्युं हतुं ॥ तुमें तो हो पिछ तुमें तो दिलनुं कूड, नहीं हो पिछ नहीं आज कह्युं बतुं ॥ ३ ॥ फलशे हो पिछ फलशे मनोरथ माल, जो जो हो पिछ जो जो आज यकी सहु, धरशें हो पिछ घरशे पितृपण हेत ॥ नग

ति हो पिछ जगित तमारी देखी बहु ॥ ४ ॥ जावी हो पिछ जाथी प्रमाणें बुिंदि, आखर हो पिछ आखर सहुने ऊपजे ॥ मितने हो पिछ मितने मा ने फलपित, जगमां हो पिछ जगमां जोतां नीपजे ॥ ५ ॥ सुंदरी हो पिछ सुंदरी अवर समान, मुफने हो पिछ मुफने जाणीने सदा ॥ रहेजो हो पिछ रहेजो रखोपा काज, महारो हो पिछ महारो हाथ फाली मुदा ॥ ६ ॥ आपद हो पिछ आपद कोइ अत्यंत, लहेसो हो पिछ लहेसो तुम लहूणें लहो ॥ दीशेहो पिछ दीशे वांको दींह, अमने हो पिछ अमने जे एहवुं कहो ॥ ७ ॥ निपट हो श्रोता निपट निचृंढ्यो तास, पोतें हो श्रोता पोतें रोष धरी रही ॥ छदय हो श्रोता छदय रतन ए ढाल, चुंपें हो श्रोता चुंपें चुमालीशमी कही ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥जोजन काजे निज च्रवन, विट आवंतो तेह ॥ वनितायें वर्ज्यों तदा, निश्रल दाखी नेह ॥ १ ॥ तव एक दिवसें ताकीने, मनोहर महिषी एक ॥ गोप्य रखावी आपणी, विटपाहे सुविवेक ॥ १ ॥ तव सिंह जणे सुण सुंदरी, महिषी नावी बार ॥ के कोई चोरें अपहरी, के रही रान मकार ॥ ॥ ३ ॥ ते कहे तो हुं चुं करुं, फुटूं ताहरुं कमे ॥ आचरण उंधा ताहरां, मूढ न जाणे ममे ॥ ४ ॥ तव शोधे सघली दिशा, आरतिवंत अपार ॥ जूख्यो तरस्यो वन जम्यो, न लही चुिह लगार ॥५॥ घर आवी तव ते घ णुं, मुख मेली नीसास ॥ नारीने कहे निव जडी, अहो हवे शीआस ॥६॥ ॥ ढाल पीसालीशमी ॥

॥ वीजाजी हो रतन कुर्र मुख सांकडो रे वीजा ॥ ए देशी॥ तव सा कहें जेवो ताहरों रे पिर्जी, पितृ जपर हे जाव ॥ स्वामी सुणजो शीख साची॥ पिर्जी हो सिद्धि हे घरमां तेहवी रे ॥पि०॥ कहुं हुं पामी प्रस्ताव ॥स्वा०॥ १॥पि०॥ वधतो विल याशे किशोरे ॥पि०॥ आगल तुम उतपात ॥स्वा०॥ पि०॥ मुहुरत ए मांमगुं सही रे ॥पि०॥ धूल तुमारी धात ॥स्वा०॥ शा श्रोता जी हो, तव ते वेगें जिने रे ॥पि०॥ वदे विलगी पाय,वात सुणजो सेण वा हा । प्रियाजी हो सघलुं ए तमे साचुं कह्यं रे प्रियाजी, में पितृ मेख्या पजाय ॥ वा०॥ शाप्रि०॥ तेमाटे हवे तेहवुं रे ॥प्रि०॥ आराधन करो एम ॥वा०॥ त्रियाजी हो, जिम आवे आपण मंदिरें रे ॥त्रि०॥ पूर्वज धरीने प्रेम ॥वा०॥ त्रियाजी हो, जिम आवे आपण मंदिरें रे ॥त्रि०॥ पूर्वज धरीने प्रेम ॥वा०॥

॥ ४॥ श्रोताजी हो, तव सा कोपी कामिनी रे ॥ श्रोता ॥ मंदिरमां न स माय ॥ वा० ॥ सवाजी हो सत्य पुरुष तुं रहे ने परहो रे ॥ स०॥ इम बो जी उनराय ॥ वा०॥५॥स०॥ जहण ताहरां जहुं सवे रे ॥ स० ॥ इम क ही माखो जात ॥वा०॥स०॥ फरी फरी वजी नाखे परहुं रे ॥श्रोता॥ इडसेंजी पग साथ ॥वा०॥६॥स०॥ जोरपणे युवतीतणे रे ॥श्रोता॥ चरणें थापी र ह्यो सीस ॥ वा० ॥ साधीस हुं तव सा कहे रे ॥ पि० ॥ पूर्वजने सुजगी स ॥वा०॥॥पि०॥ पण पर घर पंमित जोकनां रे ॥पि०॥ तमे धरसो वच मनमांहि ॥ वा० ॥ तव ते कहे हवे श्राजयी रे ॥ श्रो० ॥ नहिं धरुं जी वित तांहिं ॥ वा० ॥ ७ ॥ त्रि० ॥ महारुं कखुं फल में जहुं रे ॥ त्रि० ॥ हजी छुं वली नथी शीख ॥वा०॥श्रो०॥ बेल परें इम बांधिने रे ॥ श्रोता॥ ते कामिनीएं कखो ठीक ॥वा०॥श्रो०॥ चदयरतन इम उच्चरे रे ॥ श्रो ता ॥ पिस्तालीशमी ढाल ॥ वा० ॥ श्रो० ॥ मई महिलाने वर्शे पड्यो रें ॥ श्रोता ॥ न छुए श्राप संजाल ॥ वा० ॥ १०॥

॥ दोहा ॥

॥ बिल पूजा उपचार बहु, आणावी पिछ पास ॥ पितर पूजे सा प्रेम दा, अगर उखेवी खास ॥ १ ॥ इम करतां आराधतां, यामनी जव गई याम ॥ तव ते विटने तेडीने, निज पीछने कहे आम ॥ १ ॥ मनुष्य पितृ नुं मोकब्युं, आब्युं हे यह बार ॥ तव ते कहे तुमे जई सुणो, जे जंपे तेह विचार ॥ ३ ॥ जिक्त करो बहु परें जली, जिम आपणें जयकार ॥ परिघल कमला पामियें, तिम करजो तुमें नार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ०३० ॥

्॥ ढाल हेतालीशमी॥

॥ श्रेणिक मन अचरज थयो ॥ ए देशी ॥ तव सा जईने ते कने, प्रेमें पूरव रीतें रे ॥ सुख विलसी निज स्वामिने, प्रीव्वे मननी प्रीतें रे ॥ १ ॥ स्नेह वशें परवश थयो, ते जामनीयें जोलविडरे ॥ जवसंकटमां जारिड, आचरणमां डलवीड रे ॥ स्ने० ॥ १ ॥ विनय विवेक वचनरसें, में पितृ संतोष्या विशेषें रे ॥ महीषी किहां एकथी आवशे, वलित कुशल कव्याण करेशे रे ॥ स्ने०॥ ३ ॥ प्रदोष समे तम पसरते, महीषी रिकती मोदे रे ॥ घारें पेठी दोडती, तव सिंह हरष्यो सविनोदे रे ॥ स्ने० ॥ ४ ॥ अदजूत प्रत्यय जपनो, अति रंज्यो रमणीरागें रे ॥ विल कांइ आपो आगना, इ

म कहे स्त्री आगें रें ॥ स्ने० ॥ ५ ॥ शिर मुंमावो सा कहे, जिम विज्ञेषें ते रीजे रे ॥ मुंमन वाह्लुं प्रेतने, ते तिम करें दिन बीजे रे ॥ स्ने ० ॥ ६ ॥ इम विषय रागरूपें करी, राग केसरीयें विगोयो रे, प्रमदाने वश पाडीने, अवतार आलें खोयो रे ॥ स्ने० ॥ ७ ॥ देव ग्रुरु आदिक दिलयकी, प रिहरि प्रमदा राची रे ॥ धर्मादिक धंधोलिया, सुंदरी जाए। साची रे ॥ ॥ स्ने ण ॥ ण ॥ को इक्यारे कहे तेहने, तें समिकत दरीन सेवा रे ॥ कि म मेली तव ते कहे, सुणो कडुं समकावी हेवा रे ॥ स्ने० ॥ए॥ श्लोक ॥ सम्यक् दर्शनमेतस्याः, प्रियायाएव निश्चितं ॥ सम्यगुदर्शनो ह्यन्यस्तु, को पि धूर्तैः प्रकल्पितः ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ रागकेसरीना राज्यमां, इम ते बोले जंधुं रे ॥ त्राचरण अवलुं ए सर्वे, सम्यक् जाणी सुधुं रे ॥ स्ने ० ॥ १ ०॥ सम्यक् दरीन मंत्रवी, दिल चोरी रह्यो दूरें रे ॥ मिण्यादरीन तव मोद्द्यं, पैवो निज दल पूरें रे ॥ स्ने ०॥ ११ ॥ मरेण लहीने मूढ ते, एकेंडियादिक आदें रे ॥ योनि ते फरसी फरी फरी, वाह्यो विषय सवादें रे ॥ स्ने णार श॥ बेताजीशमी ढाले बेतखो, विषयें तेह वराको रे ॥ जदयरतन कहे अहो न वी, विरुख्या विषय विपाको रे ॥ स्ने ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवतास्रो वित अन्यदा, जिनदास श्रेष्टि गेह ॥ पुत्रिपरो ते प्राणि ने, कर्मे तिहांथी खेह ॥ १ ॥ जिनश्री नामें ते सही, सकुटंबें ते सेव ॥ स म्यक् दर्शन मंत्रिने, सेवे सदा ग्रुन देव ॥ १ ॥ जिनश्री पण पाले तिणे, समिकत धरी स्नेह ॥ विमल सेव ग्रुद श्रादने, परणावी हे तेह ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरु रागिए।, श्री जिन धर्म जदार ॥ करतां कुलमंमन पया, ते हने पुत्र बे चार ॥ ध ॥ घर धिए छाए। ते घई, छाए न लोपे कोय ॥ चारों निह कोइ अवरनो, जे एह करे ते होय ॥ ५ ॥ धनश्री नामें धर्मि णी, वडा पुत्र घर नार ॥ सारथ वाह्नी ते सुता, खरूपवंत उदार॥ ६॥

॥ ढाल सडतालीशमी ॥

॥ वेडो नाजी ॥ ए देशी ॥ तेह्वें तक सांधीने विनव्यो, देष गजेंडें धाई ॥ मोह गजेंड्नें मननी मोजें, जो जो मुज सकजाई ॥ १ ॥ दूजयोजी ॥ मानें मोहराजा महाराजा ॥ दू० ॥ मेहेलावी तेहनी माजा ॥ दू० ॥ वजडावी सुपंशवाजां ॥ दू० ॥ द्यौजी द्योजी द्योजी इंग्रद्योजी ॥ ए आंक

णी॥ ज्येष्ट बंधु माहरो जोरावर, राग केसरी रोसालो॥ जीती करी खाव्यो ते जालिम, पोते जई तिहां पालो ॥ दू०॥१॥ तातजी महेर करीने तेहने, नेहनो आप्यो नेजो ॥ अहिली वार अमारो वारो, नड जाणी तिहां नेजो ॥ दूर ॥ ३ ॥ ६णि परें उल्लिस उंजे, अमरपसुं आवरित ॥ जनकने प्रण मीने ते वेगें, जिनश्री घर संचरित्र ॥ दू० ॥ ४ ॥ तेह् तरो संजोगें तेहने, धनश्री उपरें देष ॥ परें परें ते पुत्र वधूसुं, उपनो रोष अशेष ॥ दू० ॥ ॥ ५॥ दीवे रीसें बले दिलमांहि, अवलुं अवलुं बोले ॥ प्रीसे नहीं ना णामां पूरूं, खोटा अवग्रण खोले ॥ दू०॥ ६ ॥ विण अपराधें वांक उपा ई, चहोडे शिरमां चाटूं ॥ वहु बिचारी पग चांपे तव, सासु मारे पाटूं ॥ द्र०॥ ७॥ काम कस्यां सर्घलां अवहेले, निकुकने पर्णे मेलो ॥ पोते आपीने पचारे, पुत्र न राखुं चेलो ॥ दू० ॥ ए ॥ रोटी अंन्नादिकने री सें, आगलधी न ये अडवा । कए मात्र जो कोरुं खाए, तो जडकी बे से जडवा ॥ दू० ॥ ए ॥ विनयवती ते न करे अविनय, पद पद्दाखें बे सी ॥ निचं ही तव नाखे तेहने, पगसुं पाही हेसी ॥ दूर्ण ॥ १० ॥ वांसो चोलें तो विल तेहने, निपट नाखे निष्ठेटी ॥ प्रीसती वेला जो रहे पासें, तो अलगी करे आर्टेटी ॥ दू० ॥११॥ रखे एहनो कांइ थाए चारो, घडी एक घर निव ढंमे,इम जाएी रहे ढल जोती,जूंमी कहीने जंमे ॥दू०॥१२॥ ॥ देव धर्मने गुरुने दिलची, वली मेहेव्या वीसारी ॥ ढांकणादिक नांगुं ल ही नांमे, जूनुं पण संनारी ॥ दूण॥ १३ ॥ लोक ञ्यागल हींमे लवलवती, अवता अवगुण कहेती ॥ वहु पावो उत्तर निव वाले, कुल लङ्काने वहेती ॥दू०॥१४॥ देवनरें इम रहे धंगधगती, सदाकाल ते सास् ॥ वेरणीनी परें थई वहुने आंखें पडावे आंस् ॥दू०॥१५॥ सडतालीशमी ढालें सास्नने, व हुनी सार्थे वेर ॥ चदयरतन कहे चाँव्यां आवे, आगममां इणि पेर ॥दू ०॥ १ ६॥

॥ दोहा ॥

॥ समज्युं सयल स्वरूप ते,विमल श्रेष्टि सिव आदि ॥ स्वजन कुटंब सहु पुर जनें, वाध्यो तव विषवाद ॥ १ ॥ जो शीखामण को इक हे, तो कोपे सुविशेष ॥ कोध दावानलें धम धमे, आकुल हूइ अशेष ॥ १ ॥ मावी कर मेली तदा, इर्जननी परें दूर ॥ सहुएं मिलने जिनिसरी, जूंमी जाणी जूर ॥ ३॥ सम्यक् दरीन पण सह।, बटक गयो तव बोड ॥ परिकस्सुं वासी तदा, मिथ्यादरीन मन कोड ॥ ४॥

॥ ढाल अडतालीशमी ॥

॥ ञ्राज सखी सामलीउरे मुने मारगडा ॥ ए देशी ॥ एकदा ते रोषें न राणी रे, वदे हे जिम तिम वाणी रे ॥ विमल श्रेष्टिकने विवहारी रे ॥ तव श्राव्यो कोई श्रधिकारी रे॥ १ ॥ मुखें मौन धरी रही वहू रे ॥ सासु तव नांमें बहू रे ॥ तिहां बेठे ते नरें दीठों रे ॥ ऐन बखें जाएों अंगीठों रे ॥ १॥ तव ते कहे सुण नई रे॥ सुं वहुसुं वहे हे हिई रे॥ फोकट ए फजेत थावुं रे ॥ एक श्लोक कही समजावुं रे ॥३॥ आर्या ॥ सत्वं कस्यगृहिमदं, या स्यति सह केन चेयमिति लक्कीः ॥ कतिपयदिनपर्यतं, नत्वं न गृहं न चेयं .श्रीः ॥१॥ वंद्रुनो स्वनावते सारो रे ॥ दीसे हे लाज श्रपारो रे ॥ नाहकसुं एहने निचं हो रे ॥ वेढी सेवा छं वंहो रे ॥ ध ॥ कार्से थारो एहनो वारो रे, मनमां एह्रवुं न विचारो रे ॥ आखर ए घर थाज्ञे एह्रनुं रे, दिल इःख धरि एं ग्लुं तेहनुं रे ॥ ५ ॥ इत्यादिक इणि परें वारी रे, घरे गयो ते व्यवहारी रे ॥ ते जपरे पण सा कोपी रे, अहो लाज माहरी इऐं लोपी रे ॥ ६ ॥ केव ल वहुसुं वढे निव इापें रे, बीजाने पण संतापे रे ॥ हली ए कुण ताहरो सणीजों रे, तातो यई जण त्रीजों रे ॥ ७ ॥ शीखवणी ए सहु ताहरी रे, इऐं जात विगोई माहरी रे॥ इम कहेती करें यहि पाली रे, यई वाघणी सी विकराली रे ॥ ७ ॥ धनश्री उपरे तव धाई रे, धरायें पड़ी धसकाई रे ॥ हैया कपर बेसीने रें, हणी बरीयें दंत पीसीने रे ॥ ए ॥ तव हाहाकार करी धाया रे, सहु सक्जन मिलने आया रे ॥ तव तेहने पण सा खीजी रे, हणवा दोडी बरी बीजी रे॥ १०॥ पाटू यष्टिका पहाणे रे, तेहने तव स द्भु मजी आहणे रे ॥ तिहां जगे ज्यां वहु तिणें मारी रे, तेहने पण स्वज में संहारी रे ॥ ११ ॥ असमंजस एहवुं जोई रे, सकुटंब विमल सेव सोई रे ॥ संयम पंथे परवरित्र रे, जिनश्री जीव नरकें संचरीत्र रे ॥ १२॥ वली मञ्ज एकेंडियादें रे, अवतार लिया विखवादें रे ॥ इम काढ्यो काल अनंतो रे, देष गजेंड् थयो बलवंतो रे॥ १३॥ ए अडतालीशमी ढार्जे रे, उदयरत्न वदे अंतराखें रे॥ जे जिनमतमां रहे जीना रे, ते नर नरमांहे नगीना रे॥ १ ४॥

॥ दोहा ॥

॥ वली ते मानव जपनो, विप्र ज्वलनिसख नाम ॥ श्रावकनी तिहां संगतें, समिकत पाम्यो ताम ॥ १ ॥ श्री जिन धर्मने साधतां, दिन केता एक वेह ॥ मोह राजायें मोकली, निर्वनता तसु गेह ॥ १ ॥ तव तेहनी सहचारिणी, दरिइता पण दोडि ॥ श्रावी तिहां जतावली, मंदिर तसु म न कोडि ॥ ३ ॥ तव वश्यो न्हाने गामडे, ज्वलनसीख ते जाय ॥ हल खेडे हाली परे, तिहां निहं श्रवर जपाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल उंगणपचाशमी ॥

॥ चित्रलंकीरो नमर सुजाए जेइडहारो ॥ ए देशी ॥ तव देष गजेंड ने धाय, वडो पुत्र वीनवे ॥ महाराज ॥ अनंतानुबंधी क्रोध नामें, ते हरषें सुं हवे ॥ महाराज ॥ १ ॥ वैश्वानर बीज्ञं नाम ते, तातप्रतें वदे ॥ म० ॥ एक अरज महारी महाराज के, आज धरो हृदे ॥ म० ॥ २ ॥ पहेले ए विं प्रनी पासें, हुं रहेतो जलटे ॥ मण्॥ विचें सम्यक् दर्शन आवी, वश्यो ए हने घटें ॥ मण ॥ ३ ॥ तेणें हूं थयो दूर, हवे अवसर सही ॥ मण ॥ जो श्रापो तुमे आदेश, तो तिहां जाउं वहीं ॥ म० ॥ ४ ॥ तुमे बेठा रहो ते माटे, श्रापो श्रागना सुने ॥ म०॥ जईने करुं श्रिर फेर, गले यहुं विप्रने ॥ म० ॥ ५ ॥ पिताजी तुमारे प्रसादें, हूं जय कमला वरं ॥ म० ॥ इसम न शिर दई दोट, के देसुटे धरुं ॥ मण्॥ ६॥ इम तातनी अनुमित लेइ, श्चनंतानुबंधिन ॥ मण ॥ क्रोध चात्यो थइ महासूर के, खवसर सांधिन ॥ ॥ म० ॥ ७ ॥ जई पहोतो विप्रने संग, ज्वलनसिख तव थयो ॥ म० ॥ ज्वलननी सिखा समान, नामार्थ संग्रह्यो ॥ म०॥ ए॥ अपराध विना पण जोर, कोघें रही धमधमी ॥ म० ॥ हृदयांतरची महारोष, न जाय उपश मी ॥ म० ॥ ए ॥ योडे गुनहे पण दंत, पीसी निज नारने ॥ म० ॥ बां धी मारे बहु मार, न पामे विचारने ॥ म० ॥ १०॥ उठित करे उनमाद, अनलपरें परजले ॥ म० ॥ पाडोसी करे पोकार, तोहे पण नवि खले ॥ ॥ म० ॥ ११ ॥ बालने पण बांधी जोर, ताडे तेह्वी परें ॥ म० ॥ बहु लो क मिल जेम गाली, दीए आवी घरें ॥ म०॥ १२॥ पिताने वेली पाय, मारे निज मातने ॥ मण ॥ बहिनने दिए बहु गाल, जंमे निज चातने ॥ मणार हा। पूज्यने पजाए अपार के, गुरुने अवगरो ।। मणा निष्कारण प एम उचरे ॥म०॥ शत्रू कोई घणे ॥ म० ॥१४॥ उगणपचाशमी ढाले, उदय एम उचरे ॥म०॥ शत्रू कोई कोध समान, बीजो बल निव करे ॥म०॥१५॥ ॥ दोहा ॥

॥ अग्निरूप यई आकलो, नृकुटि चडावे नूर ॥ त्रांबावरणो तपतपे, को धें दीज्ञे कूर ॥ १ ॥ आंखो जंबाडा जिसी, रोषें राती थाय ॥ मार्तम मं मलनी परें, सामुं किणें न जोवाय ॥ १ ॥ जीताकुल परें थरथरी, स्वेद बिंड जरंत ॥ मुहमांथी जिम तिम लवे, विकल परे विलखंत ॥ ३ ॥ अ ग्रिकुंमस्यो उलली, बोलावे निहं कोय ॥ अवस्य अंगारापरें, सहेजें बो लाव्यो सोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल पचाशमी॥

॥ वूता दल वादल हो नदीयां नीर चट्यां ॥ ए देशी ॥ एकदा ते ब्राह्मण 'हो, हल खेडे खेत्रें ॥ जावाकुल नूमें हो; निव जुए नेत्रें ॥ १ ॥ उखेडे बद्ध हैंपाहो, जिहां जाजां जिह्यां ॥ हल निव चाले हो, अडके तरु घडि यां॥ १ ॥ कुरों पड्यो कुचो हो, वली गोधो गलीउ ॥ ते ताजो तरुणो हो, मांसालो बलियो ॥ ३ ॥ पण जाए ते बेसी हो, निव चाले दिमर्छ ॥ त्यारें वित्र ते कोधें हो, सूधो धमधिम । ॥ पराणें ते मारे हो, तो पण निव चाले ॥ तव नाथें जाली हो, बहु आरो घाले ॥ ५ ॥ वासे ने पासे हो, खंधे खरीएं खारें॥ जंघ यीवा उदरें हो,बहु माखो आरें॥ ६॥ तव जीन काढीने हो, ते नूमिसुं रह्यो लिपि ॥ वैश्वानरें प्रेखो हो, तव घ यो वित्र खपी ॥ ७॥ तव पूर्वडुं मरहे हो,वली दंतें करहे ॥ शकट बधीने हो, दंत घणुं घरहे ॥ छ॥ तव खेत्रने ढलीए हो, मारे दूरे रही ॥ मोटे म हास्युखे हो, पूरी तेणे मही ॥ ए ॥ त्यारे ते याको हो, जव ययो यजि यो ॥ हेपां ते तले हो, ते बलद मुर्च गलिर्च ॥१०॥ तो पण ते जडनो हो, रोष न कतरी ।। दाध्यो विशेषें हो, जिम लहेरें दरि ।। ११ ॥ महाको धने पूरें हो, हृदयांतर रेख्यो ॥ समिकतने प्राणें हो, तव ततिक्रण मेख्यो ॥ १२ ॥ तव मिथ्यादरीन हो, मोहादिकें मली ॥ गखे जालीने हो,ते ना ख्यो नरकें वली ॥ १३ ॥ तिमज नमाड्यो हो, नवनी कोडी गमे ॥ ते काल अनंते हो, आवे न उंचो किमे ॥ १४ ॥ पंचाशमी ढार्ले हो, उदय रतन्न कहे॥ समिकित विना जवनो हो, कोइ न पार लहे ॥ १५॥

॥ दोहा ॥

॥ सम्यक् दृष्टि कुर्ले अन्यदा, धनंजय नृपने गेह् ॥ रुकमिणि नामें रा गिणी, तेह्नी कुर्ले धस्त्रों तेह् ॥ १ ॥ पूरे मासें प्रसिविर्ड, कुर्लेर नामें कुमा र ॥ श्रावक कुल जन्म्या जणी, समिकत लाधुं सार ॥ १ ॥ शीघ्र कला साधी सवे, पाम्यों यौवनवेष ॥ तेज प्रतापें ते तपे, इसरों जाणे दिनेश ॥ ॥ ३ ॥ व्याघनामा एक वाघस्यों, पिल्लपित खित प्रौढ ॥ गंजे न को तस गढपित, नपुंसक जेम नवौढ ॥ ४ ॥ धनंजय धरपित तणों, इंगें वासि त इष्ठ ॥ मुलक उजाडे महाबिल, परिकर लेइ प्रष्ट ॥ ५ ॥ गरहेरे पण ए हुने, आगे अने अजीत ॥ वली पड्यों ते तिणे समे, जूरि पमाडे जीत ॥ ६॥ कोईक देश दपत्थों तिणे, बूंब सुणी तिणिवार ॥ ते जपरें वाहार च ढ्यो, कुर्लेर ते राजकुमार ॥ ७ ॥ देवयोगं महा इष्ट ते, आव्यो एहने हा थ ॥ कोइक नावी योगथी,सकुटंबें सहु साथ ॥ ०॥ इंगें निजदल थापिने, वरतावि निज आण ॥ आव्यो घरें उलट नरें,सहु जन करे वखाण ॥ ७॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

॥ चित्रोडा राणा रे ॥ ए देशी ॥ ग्रण गीत गवाते रे, महा महोत्सव थाते रे ॥ बहु बिरुद बोलाते, कुमर ते आविउ रे ॥ सहु बोले इलाघा रे, आवीने आघा रे ॥ इइमन दूर नागा, जन मन नाविउ रे ॥ र ॥ तव अवसर जाणी रे, पितु आण प्रमाणी रे ॥ अमरप अति आणी, आव्यो ते कने रे ॥ देप गजेंड्नो जात रे, विश्वानर जात रे ॥ न्हानेरो विख्यात, जग लहे तेहने रे ॥ १ ॥ अनंतानुबंधी मान रे, शैलराज राजान रे ॥ ए बे अनिधान, तेहनां जाणो तमे रे ॥ तेहने अनुसरवे रे, नराणो ते गरवें रे ॥ मुखें इम बरवे, ग्रूरा शिरहुं अमे रे ॥ ३॥ नयण गगनने गाहे रे, रोम जना थाए रे ॥ सूर ग्रण न समाए, तेहना शरीरमां रे ॥ अहंकार अवेह रे,त्रिज्ञवनमां तेह रे ॥ न माए तिणे देह, थंनी रह्यो धीरमां रे ॥ धा सहु कोने साखें रे,मुखथी इम नाखें रे ॥ महारा पिंम पाखें,ए इप्टने कुण हणे रे ॥ रांमनी परें टरहे रे,अमारे घरहे रे ॥ राज्य की धुं जरहे,न जीत्यो ए किणें रे ॥ ५ ॥ धनंजय पण एह रे,विणक वृत्ति गेह रे ॥ बेवो रहे नेह, धरी अन्न पाठी हे ।। जो हुं न हुई आडो रे,तो नीलें नीलवाडो रे ॥ इहां करी जाडो, क्यारे हुए त्राठी रे ॥ ६॥ गायुं जे गाए रे, इंटनें ते वाहे रे॥

ते नर तिऐो, वार्ये थई वाजला रे ॥ निज गाल फूलावी रे, बहु वात ब नावी रे ॥ सद्भने समकावी कहे चर राजना रे ॥ ष ॥ क्रमरें कह्यो शिष्ट रे, पोढो ए पाँपष्ट रे॥ देवें पण इष्ट, न जाए गंजीड रे॥ दैवने ए क्रमा र रे, वे विण निरधार रे॥ एहनो छहो तार, किऐं क्यारें जंजीड रे॥ ७॥ एह्वी सुणी टूलो रे, फूली थई चोलो रे॥ निज बल लही बहुलो, कुकठ तणी परें रे ॥ सहुने अण नमतो रे, दान देई मन गमतो रे ॥ मृडु गुण ने वमतो, पहोतो निज मंदिरें रे ॥ ए ॥ मात तात ने गुरुने रे, देवने श्रु तथरने रे ॥ न नमें कवीश्वरने, मुखें बोर्जे नहीं रे ॥ नूषण धरी नारी रे, निज तनु शणगारी रे॥ बेनक समारी, वेसे ते सही रे ॥ १० ॥ तंबोर्झें ताजे रे, गलस्थल ग्रुच साजे रे ॥ पूरी समाजें, बोले बेतमां रे ॥ अधुरां वयणां रे, फेरवतो नयणां रे ॥ देखीने सयणां, नही जुए हेतमां रे ॥ ११ ं॥ त्रिच्चवन तृण तोखें रे, गणतो इम बोसे रे ॥ मुफथी सिंह मोसे, सुरप ति सारिखो रे ॥ इम निज परिकरमां रे, बेवो बरवे घरमां रे ॥ नाणे केह ने हरमां, न जूवे पारखो रे॥ ११॥ एह एकावनमी रे, ढार्झे ते अनम। रे॥ उदय वदे न नमी, आपे केहने रे॥ विद्यावंत ने ग्रूरो रे, दानेश्वरी पूरो रे ॥ विण गर्वे सनूरो, कहे सहु तेहने रे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवनिपति ह्वे एकदा, प्रीववीने परधान ॥ पुत्रनी पासें मोकले, ते जई कहे तसु थान ॥ १ ॥ तेडे वे तुम तातजी, कुमरजी मिलवा काज ॥ आवो तिणें आसनतजी,वाट जुए महाराज ॥ १ ॥ वासर बहु वही गया, दीवां तुम दीदार ॥ तरसे वे ते कारणे, जिम चातक जलधार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावनमी॥

॥ हो मतवाले साजना, मुफ कोई न बेडोबे ॥ ए देशी ॥ बोले कुमर ते बेतमां, मुख नाकतणी अणि मरडी रे ॥ मूबें वल देतो थको, वली नजर करीने करडी रे ॥ बो० ॥ १ ॥ काम किसुं बे माहरुं, अहो वलि ए हने केणें रे ॥ संकटमां नाख्युं किसुं, तेडे बे मुफने तेणें रे ॥ बो० ॥ १ ॥ जो एहवुं होय तो कहो, इंडादिकने पण बांधी रे ॥ आणी सोपुं एहने, श त्रु जाणी तक सांधी रे ॥ बो० ॥ २ ॥ पण अमे नावूं को कने, अमपासें पण जो कोई रे ॥ नहीं आवे तो ग्रुं थरो, सर्वे मेल्युं बे जोई रे ॥ बो० ॥ ॥ ४॥ काज किछं किऐं नीपजे, आखर महारा पिंम पाखें रें ॥ हूं एह वो नथी कोइ देखतो, जे रएथंजीने राखे रे ॥ बो० ॥ ५ ॥ तव मंत्री कहे तेहने,जिहां वाजे तुम यस वाय रे ॥ तिहांजों महाराजा शिरें, शत्रु कोई कजो न थाय रे ॥बो०॥ ६ ॥ जनक जगत अति जाजमी, जगमांहे इक तुं जायो रे ॥ ताहरी जनितायें तुं सही, ग्रूरां शिरताज कहायो रे ॥बो०॥॥॥ पण ए न घटे बोलवुं,तुम सिरखाने सुणो स्वामी रे ॥ पितृ काजें पण आबुं नहीं, ए वातें वे तुम खामी रे ॥बो०॥०॥ ॥ आर्यावृत्त ॥ शोंर्थ सोंद्यं वा, विद्या लक्क्वीविचस्विताऽन्योवा ॥ शोजां नावहित ग्रुणो, विनयालंकारप रिहीणः ॥१॥ वसंतितलका वंद ॥ त्यागोगुणोगुणशतादिधको मतो मे, विद्या विज्यवित तं यदि कं ब्रवीमि ॥ पर्याप्तमस्ति यदि शोर्यमपीह किंतु, यद्यस्ति ते छिव नयः सगुणाधिराजः ॥ १ ॥ श्लोक ए बे सचिवें कह्या, कुमरने शी खामण कामेरे ॥ कुमरें पण सुख्यो अवे,आगममां कोइक वामेरे ॥बो०॥ए॥

॥ यतः॥ आर्यावृत्तं इः प्रतिकारों माता, पितरों स्वामी ग्रहश्च लोकेऽस्मि न्॥ तत्र ग्रहरिहामुत्रच, सुङ्करावरप्रतीकारः ॥ १ ॥ इम आगल विल कांई उच्चरे, तव कुमरने तिहां शैलराजें रे ॥ प्रेखो तव बोल्यो फरी, गर्वें जरी समाजें रे ॥ बो०॥ १०॥ रे झानदम्थ गमार तूं, अमने शिक्का शी आपे रे ॥ त्रिज्ञवन तत्व लहुं अमें, जीते कोई अमसुं जवापें रे ॥ बो० ॥ ११॥ ते माटे ताहरा वापने, जई शीखामण जांखे रे ॥ जिम थाए ए पाधरो, उणिम कांई मित राखे रे ॥ बो० ॥ १२ ॥ इम कहीने गले कालीने, का ही मेल्यो तव तेहो रे ॥ जई कहे ते महाराजने, संबंध सवे धुर लेहो रे ॥ बो० ॥ १३॥ उदय रतन इम कचरे, वावनमी ए में बोली रे ॥ ढाल ग्रमानी लोकने, गमशे जो जो दिल खोली रे ॥ बो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तव चिंते ते जूपती, छहो मुक पुत्र छत्यंत ॥ छहंकारें ए छावस्रो, जिरती किस न लहंत ॥ १ ॥ राज तज्युं तिएा कारणें, वसवुं मोहने रा ज ॥ हवे मुक्तने जुगतुं नथी, साधुं पर जब काज ॥ १ ॥ इम चिंती छंग ज प्रते, रंगे देवा राज ॥ सामग्री सघली सजी, मोहें ते महाराज ॥ ३ ॥ गोप्य राखी ते गेलिसुं, प्रेखे वली प्रधान ॥ तनुजने एक दिन तेडवा, रा ग वशें राजान ॥ ४ ॥ तिंहा जई ते कहे तेहने, कोईक काज विशेष ॥

तात तेडे ने तुमने, आवो शीघ क्ण एक ॥ ५ ॥ शैनराजा संकेतथी, अनुक्रमें एकाएक ॥ अपमान देई अवगण्यो, कुमरें मंत्री नेक ॥ ६ ॥ अवहेव्यो सामंत गण, मंमिलक मेव्या धूल ॥ जे जे आवे तेडवा, ते तोल लहे अकतूल ॥ ७ ॥ तव तसु माता मोकली, निपट निचंनी तास ॥ पण पत्र स्नेहें न उसरे, अनेक करी अरदास ॥ ए ॥ पाय पडी जिम तिम करी, माए महिपति पास ॥ अति कष्टें ते आणि उ,तव नृप थयो उल्लास॥ ए॥ ॥ ढाल त्रेपनमी ॥

॥ पांच सोपारी हो दार्थे ॥ ए देशी ॥ तव नरपति निज पास, आसन एक मंनावीयुं जी ॥ ते कपर बेवो कुमार, रेष न श्रंग नमावीयुं जी ॥ १॥ नाखे तव नृपाल, सूरगुणे संसारमां जी । जस तुफ व्याप्यो जोर, नावे जस कोई हारमां जी॥ १॥ देशं देशयी दूत, कन्यादान कोजे सही जी ॥ राजवीयें मन रंग, मोकव्या हे तुम गुण लही जी ॥ ३ ॥ पूरो मनोरथ तास, ए राज्य तुमारुं संयहो जी ॥ अमे थासुं अणगार, प्रजाने तुमे निर्व हो जी ॥ ४ ॥ तव शैजराजें श्रवणेह, मंत्र ग्रमाननो मेजीर्र जी ॥ त्यारें चकुटी चडावी जाल, उत्तर तिऐं इम दिन्न जी ॥ ५ ॥ रजसरखो ए रा ज, ग्रं आपो तुमे अमने जा ॥ एवां तो राज सतेक, प्रगट करी दिनं तुम ने जी ॥ ६ ॥ इम कही पगनो प्रहार, आसन जपर मारीने जी ॥ जठी नीसखो बार, वन जांबुं मनें धारीने जी ॥ ७ ॥ अयोग्य जाएी तत खेव, सम्यक् दर्शनें ते तज्यो जी ॥ मोह राजाने साथें, तव सहसा आ वी जव्यो जी॥ ए॥ एकलो अटवीमांहि, पहोतो ते तिज गेहने जी॥ नील नामें लघु जात, राज्य दीधुं नृपें तेहने जी ॥ ए ॥ पोतें लेई संयम नार, शिव पद पाम्यो अनुक्रमें जी ॥ द्वे ते कुबेर कुमार, एकलो अटवी मां जमे जी ॥१०॥ चित्र नामें एक चंम,ते व्याघ्र पछिपति स्रुत तदा जी॥ युद्ध समय गयो नासि,ते वनमांहे वस्यो मुदा जी ॥ ११ ॥ तेऐं दीवो ते कुमार, तीरें मास्रो तव ताकिने जी॥ पामी मरण अकाल, नरकें गयो मद ढाकिने जी॥ १२॥ महादिकनी गतिमांहि, काल अनंतो घेरियो जी ॥ त्रेपनमी ढार्झे तेह, उदय कहे उदे करियो जी॥ १३॥

॥ दोहा ॥ महापुर नगरे मेलिन, कर्में ते विल काढि ॥ धनाढ्य श्रे

॥ ढाल चोपनमी ॥

॥ साहिबो रे माहरो जिल रह्यो जागोयें ॥ ए देंशी ॥ पदम नामें तिं हां थापित रे, ञ्राजन्म थकी ते बाल ॥ ञ्रनंतानुबंधि मायाबलें रे, मा यावी ऋति ऋसराल ॥ पोढो रे प्राणी जो जो मायानो पास ॥ १ ॥ राग केसरी जीते सुता रे, बहुली जस बीज़ं नाम ॥ तेहने उदयें ते थयो रे, एक कपट कलानुं धाम ॥ पो० ॥ २ ॥ बालपऐं पण बहुविधें रे, बोकरा ने बेतरी तेह ॥ खावुं धूती खाये सवे रे,जेहना बलनो नावे बेह ॥ पोण ॥ ३ ॥ साधु खनाव जाणे सहु रे, सुणि वचन तणा विजास ॥ मोटो थयों तव मायने रे, बापने पण पाई पास ॥ पो० ॥ ४ ॥ जाईने पण जो लवे रे, जगिनने जमाडे जोर ॥ परिजन्ने पट ये घणां रे, करी कपट क ला करोर ॥ पो० ॥ ५ ॥ धूते धर्म दाता प्रते रे, मित्रसुं मांमे महा कूड ॥ देवनी पण खोटें दिखें रे, महांस्तवना करी ते मूढ ॥ पो० ॥ ६ ॥ निवेद मोदक से हरी रे, अंगलूहणा घंटा आदि ॥ कक्कांतर घाली गर्छे रे,माने नहिं किमे अपराध ॥ पो० ॥ ७ ॥ साचो किहांए न जतरे रे, कोइ न लहे मन श्रनिप्राय ॥ वंच्याविण मेले नहीं रे, कुण परजन खर्जनने माय ॥ पो० ॥ ए ॥ जनकादिक जाणे इक्यो रे, तेडी तेहने ग्ररुपास ॥ आवीने इम उचखुं रे, एक अवधारो अरदास ॥ पो० ॥ ए ॥ नगवन अमारे कुर्ले रे, श्राजलगें एहवो कोय ॥ नर मायावी न नीपनो रे, सेवक पण एहवा न होय ॥ पो० ॥ १० ॥ महेर करीने ते वती रे, एहवो आपो उपदेश ॥ मा यावीपणुं मूकिने रे, कुलवटें चालें सुविशेष ॥ पो० ॥११ ॥ चोपनमीयें चेतजो रे, ढां संदु धरमी लोक ॥ धूर्तपणुं जोतां धरा रें, आखर छपा ये सोक ॥ पो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तव ग्रह करुणा आणिने, धर्म कथा कही धीर ॥ माया शील मान वतणी, सहु मनें धरे अधीर ॥ १ ॥ अपराध जो न करे किश्यो, तो पण सर्पनी पेर ॥ आशंका मन कपजे, सहुने जाणी जहेर ॥ १ ॥ मायावी विल मानवी, अधम कुलें अवतार ॥ मिर पामे महिलापणुं, इक्करगरुली अपार ॥ ३ ॥ इम ते प्रतिबोध्यो थको, दिन केताइक तांई ॥ मूके माया वीपणुं, कांइक कमें सहाय ॥ ४ ॥ मिण्या दर्शन बल घट्यो, तब समिक तनी सेव ॥ करतां दिन केता गया, हरखें सुणो सहु हेव ॥ ५ ॥ ॥ ढाल पंचावनमी ॥

॥ समवसरण त्रिच्चवन पति सोहे ॥ ए देशी ॥ एक दिन तस उपने विसवासें, पिताएं राख्यो ते पासे हो ॥ पोतें सुंपी एक वासरें, जनक ज मवा निजघरें ॥ पहोतो जिहारे छलटनरें, श्रोता सुएजो ते अवसरें ॥ जो जो पास मायानो ॥ १ ॥ घोडो खेलावतां नृपना करथी, मुझ रत्न पड्युं धरती हो ॥ मूसी लीधूं ते केणें, लेई देखाड्युं तेणें ॥ पदमने हट श्रेणें, देखि उत्तरखुं एणें ॥ जो० ॥ २ ॥ अवसर जाणी पूर्व मायाएं, तव ते प्रेखो तिऐं गयें हो ॥ जेतुं अलंकार एह, मुक्त बजें सस्नेह ॥ हीये हर्ष धरेह, दीये उत्तर गुणगेह ॥ जो ं ॥ ३ ॥ कथन धखुं तेहनुं एऐं मनमां, तव मिण्या दरीन तेहना तनमां हो ॥ मोह सहित संक्रमिन, तिहांरे स मिकत विमर्ज ॥ अव्पमूर्कें तव गमिर्ज, नूषण लीधो अण मिवर्ज ॥ जो० ॥ ४ ॥ तातने पण काँइ न कह्यं कपोतें, प्रवन्न राख्यो पोतें हो ॥ तव नूपें ढंढेरो, पुरमां फेखो सवेरो ॥ मुझा रत्नए मेरो, जे कोई आपे वहेले रों ॥ जो • ॥ ५ ॥ ते निर्दोष थई साबाशी खेशे, निहं तो प्राण सहित मु इा देशे हो ॥ तव सारुं ते नगर, थयुं चिंतायें विगर, जिम ञ्चागमां त्यगर, थाये बलीने फगर ॥ जो० ॥ ६ ॥ पाडोशियें ते कांई वात जणावी, धना ढच ज्ञोवने त्र्यावी हो ॥ तव ते एकांतें धरी धरी, पूछे पुत्रने फरी फरी ॥ कांन ढांकी हे हरी हरी, एग्नुं बोलो बो अरी अरी ॥ जो०॥ १॥ एह्वो कुण घइ साहस नागी, मरण जिये मुखें मागी हो ॥ महर्दिक जोकें पिता यें, पुरजन पडोली मायें ॥ अनेक अनेक छपायें, तेहने बुजव्यो त्यांयें ॥ ॥ जो ० ॥ ७ ॥ जुनी वंसनी जडने न्यायें, अनिप्राय तेहनों न जणाये हो ॥ इकदिन राज जंमारी, जवहरीमां शिरदारी ॥ तेहनो मित्र एक नारी, परदेशी विवहारी ॥ जो० ॥ ए ॥ कोईक कामविशेषें त्यांहि, आव्यो छे छ ह्याहिं हो ॥ जंमारीने संकेतें, थई वणजारो हेतें ॥ पदम पासें ते प्रीतें, प होतो कपटेंसुं रीतें ॥ जो०॥ १०॥ कहे ते तेडी एकांते, सिंहसेश्वर जू कंते हो ॥ मुझरत्नने कामे, मुक्तने प्रेष्यो ए गामें ॥ जो होए तमारे धामें, देखाडो तो खा वामें ॥ जो० ॥ ११ ॥ मूल मुखें तुमे मांगसो जेतो, ख

मे आपसुं तेतो हो ॥ तव ते पदम विचारे, एहने आपे निरधारे ॥ जासे देश उतारे,प्रगट नहीं थाए किहारे ॥जो०॥१२॥ इम चिंती ते देखाडे निज हाथें, राज प्ररुष तिहां तेहवे साथें हो ॥ जंमारीनी ते साने, पकडी आ वी ते थानें ॥ व्याना सहित राजाने, जई सोंप्यो पदमाने ॥ जो०॥१३॥ प्राणांत लगें दीधो प्रहार, अनेक विधनो मार हो ॥ मरी काल अनंत, ज वमां जिम ते जंत ॥ पंचावनमी ए तंत, ढाल उदय कहंत ॥ जो०॥१४॥॥ दोहा ॥

॥ जयपुर नगरें अन्यदा, श्रावक कुल श्रीकार ॥ धनदत्त धामें ते घयो, स्रुत सोमदत्त चदार ॥ १ ॥ स्रुकुल संयोगें पामिन्न, सम्यक् दर्शन संग ॥ पण निर्धन धातो फरे, धन काजें धरी रंग ॥ २ ॥ सर्वगाया॥ १०२३॥ ॥ ढाल ढपनमी ॥

॥ चांदलीउने उग्यो रे हरए। आयमी रे ॥ ए देशी ॥ धनने काजें रे ते धातो फरे रे, संबल हीण सदीव रे ॥ तैलादिक रे विणज करे वहीरे, आपद सहे अतीव रे ॥ घ० ॥ १ ॥ इणि परें करतां माया गांवडी रे, गर थनी कांइक गांव रे ॥ घणे कालें रें बाजी तेहने रे, पाधरी खावी कोई खां ट रे ॥ ध० ॥ २ ॥ व्यापार तिहारे रे कणनो करे रे, तव राग केसरी धाय रे ॥ अनंतानुबंधी रे जोन तिहां मोकत्यो रे, जल जेहनो जडवाय रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ बहुनी केरो रे जे लघु बंधवो रे, सागर बीज़ं जस नाम रे ॥ तनुज ते जाणो रे राग केसरी तणों रे, तेहना तनुमां वच्यो ताम रे ॥ ध० ॥ ध॥ दामनी तिहारे रे ते सोमदत्तने रे, इन्चा वाधी जदाम रे ॥ वणिज वधासा रें तव बहु नांतिना रे, सहस्रपति थयो ताम रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ जघु इ ख सहेतां रे घयो लखेश्वरी रे, दिन केता इक बेह रे ॥ कोडि क्वेश वैठी रें विल केते दिनें रे, कोटिध्वज थयो तेह रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ जिमजिम वाधे रे वैज्ञव तेहची रे, बमणो वाधे तिम लोज रे॥ अगनि न धाए रे जिम ज ग इंधणें रे, तिम लोजनो दीशे निह योज रे॥ ध०॥॥ अतिशय लोजेंरे दे वने अवगणे रे, गुरुसुं राखे ते गाढ रे॥ सेव्यो पण नापेरे दमडी केहने रे, कोडी काजें करे राढ रे॥ ध०॥ ७॥ उपदेश देतांरे मनें आंटी जजे रे, धर्मने कामें धरे ढीज रे॥ पापने ठामेंरे पुरुषातन फोरवे रे, दान देतां करे खडखील रे॥ ध०॥ ए॥ समिकत तिहारें रे रह्यं वेगल्लं रे, मिण्या

दर्शनने मोह रे ॥ सपरिवारें रे तिहां आवी वस्या रे, तव वाधी तेहनी सोह रे ॥ ध० ॥ १० ॥ दिल दोडावी रे बहु देशावरें रे, विध विधना व्य वसाय रे ॥ मोटा मोटा रे तिऐं तव मांिम आ रे, जलवट खलवटें धाय रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ क्वेश सार्थें रे वाधी संपदा रे, केइ रत्ननी कोडी रे ॥ तृष्णा पूरें रे तिऐ मेली तदा रे, अंगधी आलस बोडी रे ॥ ध०॥ १२ ॥ उदयर तन १ए। परें उचरे रे, ए बपनमी ढाल रे ॥ परखी जोतांरे मोहना सैन्य मां रे, लोज जुंमो चंमाल रे ॥ ध० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तो पण तृष्णा निव मिटे, अर्थ उपायो जेह ॥ रखोपुं करतां तेह्नचुं, निक् नावे नयणेह ॥ १ ॥ रात दिवस जूरण रहे, छेखुं जूए लखवार ॥ बिलाडीना बच्चा परें, फेरवे अर्थ अपार ॥ १ ॥ बदाम काजें त्यजे बापने, मातने मूके दूर ॥ याचक लागे जहेरसो; जोजन न करे जूर ॥ ३ ॥ तो ली मापीने गणी, जोइ आपे तेह ॥ घण कप्टें घर खरच पण, तिल पापड ययो तेह ॥ ४ ॥ खाए खोकं धान ते, नवुं न खाए रेष ॥ हाथो हाथें आपतां, प्रतीत न पामे एष ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १०४१ ॥

॥ ढाल सतावनमी ॥

॥ मोरा खादि जिन देव देखी तुफने खानंद नयो ॥ ए देशी ॥ मुलाइ नाइने तिणे, एकदा निज खाय ॥ कोडि गमे सोंपी किमें, लोजने परमा य ॥ जो जो लोजनां काम ॥ लोज जूंमो एह जंमो दिर लहाो ॥ १ ॥ नाणानुं ते लेखूं करतां, बहु कीया तव पंच ॥ पूरा न पढे तेहने काजें, य ई खिंचा खिंच ॥ जो० ॥ १ ॥ पग बंधीने लेखूं करतां, वही गया दिन सात ॥ मुलाई ते मृत्यु पाम्यो, विस्चिका संघात ॥ जो० ॥ ३ ॥ तव इ छमां शिरदार तेहने, लोक कहे ए लंम ॥ बत्या हाथनो बिरुद एहवुं, वली कहे करचंम ॥ जो० ॥ ४ ॥ प्रसिद्ध एहवी परवरी रे, खाप्युं तेहनुं कोय ॥ हाथमां न काले हाहा, लोजें छुं छुं होय ॥ जो० ॥ नगरमांहे एकदा तिहां, मुंघो थयो काव ॥ खेरनी महा खोट पडी, नहीं खाव्यानो घाट ॥ जो० ॥ ६ ॥ सागरें तव प्रेखो तेहने, कां मेहलियें लाज ॥ हिमत हिए राखतां, उंमलिमांहे खाज ॥ जो० ॥ ७ ॥ तनुजने पण ते न धीरे, का ई नापे काम ॥ रखे जाणे ए माहरो, इष्ट वेरे दाम ॥ जो० ॥ ० ॥ पांच

सें सकट ज़ेंड, लोनने उन्नांहि॥ स्वजनलोकें वारतां ते, गयो अटवीमां हि॥ जो०॥ ए॥ काष्ट तिहां मजूर कापे अरहा, परहा को क्यांहि॥ एकाकी तें आप जइ, बेठो तरुठांही॥ जो०॥ १०॥ दैवयोगें इष्ट तिहां, आव्यो एक वाघ॥ देखी सोमदत्तने तिऐं, माखो जोइ लाग॥जो०॥ ११॥ विलयतो विलुरी नाख्यो, नखें नस ताणि॥ एकेंडियादिकमांहे जई, उपनो ते प्राणी॥ जो०॥ १२॥ विल तिहां नवनी ते कोडी, निर्म काल अनंत॥ उदये ए ढाल कही, सतावनमी तंत॥ जो०॥१३॥॥ दोहा॥ ॥ समिकत इलिन पामिने, इिण परें वार अनंत॥ बल हीणो ते बापडो, जगमां हाखो जंत॥ १॥ सर्वगाथा॥ १०५५॥

॥ ढार्ज अघावनमी ॥

॥ सुसाधुं गुरुसही मोरे मन माने ॥ ए देशी ॥ किहां एक रागें किहां एक देषें, किहां एक अनंतानुबंधि ॥ क्रोध मान माया लोजयोगें, समिकत न शक्यो संधि ॥ जगतमां जो जो मोहनो जोरो ॥१॥ बीजे पण एहवे नव बहुले, पामीने नीगमिछ ॥ समकित सुरतरु सरिखो सहेजे, इगीत इखें तिऐं दिमरी ॥ ज० ॥ २ ॥ किहां एक शंका दोष संयोगें, अने वली अ तिचारें ॥ किहां एक कीडा कामविकारें, किहां एक कुटंबने नारें ॥ जण ॥ ३॥ किहां एक वल्लनतणें वियोगें, धन नाशादिक सोगें ॥ किहां एक परदल नयप्रयोगें, किहां एक रागने योगें ॥ ज० ॥ ४॥ किहां एक इगंढा दारिइ नावें, पुरुष स्त्री नपुंसक वेदें ॥ किहां एक संगें व्यसनने रंगें, किहां एक कुशास्त्रने नेर्दे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इम प्रत्येकें काल अनंते, नरनव ल ही जही हाखो ॥ समकित रतन चिंतामणि करची, संसार तिणें वधाखो ॥ ज० ॥ ६॥ मोह राजाने जोरें करीने, सम्यक् दर्शन साथें ॥ पूरी जिहां तिहां न प्राति बंधाणी तिऐं, इःख लह्यां तेह अनाथें ॥ ज०॥ है ॥ हेत्र पव्योपम असंख्यात नागें, प्रदेश राशि प्रमाणे ॥ समिकत फरस्या पढी व्यो त्रीढी, नव कीधा ते त्राणि ॥ ज० ॥ ए ॥ ऋगवनमी ढाल ए बोली, उ दयरत्न कहे आगें ॥ सबंध ए सावधान घइने, श्रोता सुणजो रागें ॥ ए॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय खेटपुरें श्रन्यदा, धर्म श्रेष्टिने गेह ॥ सुंदर नामें सुत श्रयो, जीव संसारी तेह ॥ १ ॥ सुगुरु समीपें श्रुत सुणी, समिकत धरी सुजाण ॥ विचरे जिन मारग विधें, धरतो व्रत पचखाण ॥ २ ॥ कमें तब्र करणा करी, धर श्रुत अध्यवसाय ॥ तदरूप करवाल तसु करें, आप्युं तेणे वाय ॥ ३ ॥ मोहादिक महा शत्रु जे, शरीरतणा तिणें अंश ॥ अधिकतर वेदे तदा, करतो कमें प्रशंस ॥ ४ ॥ जीनाकुल जागा तदा, अप्रत्याख्यानाव रण ॥ कषाय ते करवालची, जिम सिंह आगे हरण ॥ ५ ॥ सम्यक् दर्शन तव सचिवें, सुग्ररु पासें लेंह ॥ चारित्र धर्म महा चक्रवर्ति, देखाड्यो नयणेह ॥ ६ ॥ गुरें तव गुण तेहना कह्या, चारित्र धर्मने जेह ॥ सुवि धें सेवि सहजें लहे, सुर नर शिव सुख तेह ॥ ७ ॥ वली विंशेषें वर्णव्या, गुरुराजें गुण तास ॥ तव सुंदरें सो खामी कस्त्रों, अंगें धरि उल्लास ॥ ७ ॥ ॥ ढाल उंगणसावमी ॥

॥ कर जोडी रही ॥ ए देशी ॥ समिकत धारी सांचयो, चारित्र धर्म नूपालें रे ॥ योग्य जाणी तव तेहने, परणावी उजमालें रे ॥ स० ॥ र ॥ देशविरति लघु कन्यका, तेहने संगें ते धारे रे ॥ नाहक त्रस जीव नवि हणुं, इविधि त्रिविधि हुं किहारें रे ॥स०॥श॥ स्यूल प्राणीने जालवुं, विल वरें अतिचार रे ॥ वध बंधन हेदन निव करुं, न नरुं वधतो नार रे ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ जात पाणी रोकूं नही,ए पांचे मन ग्रुद्ध रे ॥ अतिचार ते पाले सदा, व्रत राखवानी बुदें रे ॥ स० ॥ ४ ॥ इम करतां हवे एकदा, पिता तेहनो पढीनो रे॥ तव घरना कारनारमां, सुंदर रहे ते नीनो रे॥ सण ॥ ५ ॥ अवसर त्यारे उलखी, पासें तेहने प्रेखी रे ॥ सण ॥ निस्तृं सता मोहादिकें, जे व्रतने नाखे उर्वेखी रे ॥ स० ॥ ६ ॥ तसु संगें ते आ दरे, निर्दयपणुं अतागें रे ॥ लंघावे ते लोकने, धन जे पासे मागे रे ॥ सण्॥ ७॥ वध बंधन ताडन करे, कोइ मरे अकलाइ रे॥ इम करतां नि र्धन थयो, तव राज्य कामूं ह्ये धाइ रे ॥ स० ॥ ७ ॥ तव हिंसा प्रगटी हे जसुं, अप्रत्याख्यानावरण रे ॥ क्रोधादिक पण थया उता, अधम जेहनां श्राचरण रे ॥ स० ॥ ए ॥ व्रतनी नाग। तव वासना, बंधनें केहने बंधे रे ॥ ताडे तरजे ने हणें,धर्म त्यजि पड्यो धंधे रे ॥ स० ॥ १० ॥ देशविरति इलही तदा, अलगी रही तेहची रे॥ पण कुलकम मूके नही, बूटी न शके जेहथी रे ॥स०॥११॥ देव वंदे देहरासरें,पक्तपाती थई पूजे रे ॥ जिन दर्शन करे दिन प्रतें,दिल निव राचे दुजे रे ॥ संगारशा नरकें न गयो ते वती, पण देशविरति विराधी रे ॥ विल समिकत विराधि छं, तेणें मरी ते अपराधी रे ॥ स० ॥ १३ ॥ ज्ञवनपतिमां कफ्नो, हीन जाति थयो देव रे ॥ जब अनंता विल जम्यो, ते जाणे जिन देव रे ॥ स० ॥ १४ ॥ उदय रतन कहे अहो जवी, उगणसाउमी ढां हे ॥ समिकतथी चूको रखे, जेणें पिडयें जब जां रे ॥ स० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शालिन् विवहारिन, समिकत दृष्टि तास ॥ श्रंगज ते थर्यो एकदा, माणिन् नामें तास ॥ १ ॥ समिकत तिहां सहेजे लह्यो, देशविरति वरि दार ॥ स्थूल मृषावाद विरमण, व्रत कखुं श्रंगीकार ॥ १॥ सर्वगाथा १ ० ए०

॥ ढाल सारमी ॥

॥ ग्रुं करियें जो मूलज कूडुं ॥ ए देशी ॥ कन्या गो चूमि थापण मो सो, कूडी साखने कूडो दोसो ॥ इत्यादिक जे जूवां मोटां, इविध त्रिविध न बोले खोटां ॥ १ ॥ बीज्ञं व्रत साधे इणि नातें ॥ अतिचार पांच त्यजे मन खांतें ॥ सहसातकारें आल न बोले ॥ खदार तणुं विल ग्रह्म न खो से ॥ २ ॥ कूडो उपदेश ने कूडो सेख ॥ अज्ञात कांइ न बोर्स विशेष ॥ ए पांचे श्रतिचारने त्यजतो ॥ व्रत बीजाने रहे ते जजतो ॥ ३ ॥ एक दि न जनक गयो अन्य हार्टे ॥ कोइक वस्तु खेवामार्टे ॥ तव मोहादिक प माडवा क्लोन ॥ अप्रत्याख्यानावरण जे लोन ॥ ४ ॥ मृषावाद आदे न ट सोई ॥ तेह पासे मेव्या तक जोई ॥ तेहतणे आगमनें एह ॥ विणज काज वदे अलिक अठेह ॥ ५ ॥ पाडोसीनुं वस्त्रादिक व्यावे ॥ बमणो ला न ते पोतें खावे ॥ पोतानुं आपे परहाथें ॥ बहु मूल खावा पर माथें ॥ ॥ ६ ॥ याहक जो पूर्व सुण सेव ॥ ग्रुं एहतुं मूल खेसो नेट ॥ तव ते क हे अमें कह्यो जेतो ॥ सोगन सेंती लेसुं तेतो ॥ ७ ॥ तव याहक कहे बोलोने साचुं ॥ एक मूल कहो तो अमे राचूं ॥ तव कहे कहुं बुं निरधार, एतामांहि नहीं फेरफार ॥ ए॥ वारु तमे ए खेसो केते ॥ याहक कहे अमे लेसुं एते ॥ तव सेव कहे ए मूलें जो आएं ॥ तो घर अमे ग्रुं यहणे थाएं ॥ ए ॥ इत्यादिक बोली वंकाई ॥ जोला लोकने मेले वाही, मनसुं मूल ते साचूं मानी ॥ लान आपी ते जाए खड़ानी ॥१ ०॥ चद्यरत कहें सावमी

ढाखें ॥ जिम तिम लोकने नाखे जाखें ॥ लोनिर्ड नर जगमां लख्न वातें ॥ पण जयकारो न लहे दिनरातें ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥ समय जही सागर तदा, १म तसु दे उपदेश ॥ जूठुं तूं छं जंपता, शंकायें सुविशेष ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ ११०२ ॥

॥ ढाल एकसवमी॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे॥ ए देशी ॥ जूतुं बोलतो जोखमां रे, मुल मिल ग्रुं करे मांम ॥ माहरा वाहला रे, मृषावाद वदे श्र्युं रे, लोचें प्रे खो ते लांम ॥ मा० ॥ जू० ॥ १ ॥ फेरव्यों तुं बोले फेखुं रे, नथी लहेतो कांइ न्याय ॥ मा० ॥ घरतुं खरच बहु उंहुं रे, प्रचूर जांमां जराय ॥ मा० ॥ जू०॥ १ ॥ वाणोतरी वली आपवी रे, करवा नोगोपनोग ॥ मा० ॥ बेसराणि बहु बाजारमां रे ॥ जोडंवा विवाहादिक योग ॥ मा ॥ जू० ॥ ॥ ३ ॥ साचूं बोलतां सोंखिया रे, लिह्यें न लान अपार ॥ मा० ॥ अलि क अने अक्तय निधि रे, केतेक नामें निरधार ॥ मा० ॥ जू० ॥ ४ ॥ यतः श्लोकः ॥ वाणिज्ये परमो नीवी,वेक्यानां परमो निधिः ॥ लिंगीनां परमा धारो, मृषावाद नमोस्तुते ॥ १ ॥ जूतूं बोर्जे बीजा बहु रे, तेहनी थासे जे पेर ॥ मा० ॥ गति थाज्ञे माहरी पण तेहवी रे, वणिजने साचने वेर ॥ मा ।। जू ।। ।। ते पण कानें कांई तूं धरे रे, जे मुखयी बके ए मूं म ॥ माण ॥ पर घर सूरा पिंभिया रे, अखंभ एँहनां पाखंम ॥ माण ॥ जूणे॥ ॥ ६ ॥ न घर बारा नकरा सदा रे, सुखें आपे ए शीख ॥ मा० ॥ पण क ह्यं एहनुं जे करे रे, ते आखर मागे जीख ॥ मा० ॥ जू० ॥ ७ ॥ माधुं मुं माववुं जो होय रे, तो मुंमना मानियें वयण ॥मा०॥ सोहेद्धं न रहेवुं सं सारमां रे, जोने उघाडिने नयण ॥ मा० ॥ जू० ॥ ७ ॥ उपदेश तेहनो ते सांजली रे, अलिक बोले निशंक ॥ मा० ॥ व्रत जागुं वीशे वीसारे, देश विरित नावी लिह् वंक ॥ मा० ॥ जू० ॥ ए ॥ देव पूजादिक आचरे रे, अनुक्रमें पूरी ते आय ॥ मा० ॥ हीन व्यंतर ते उपनो रे, समिकत च्रष्ट महिमाय ॥ मा० ॥ जू० ॥ १० ॥ किहां मुंगो किहां बोबडो रे, कंठ तालु जीन दंत ॥ मा० ॥ अधर रोग डर्गधता रे, एहवा मुख रोग लहंत ॥ मा० ॥ जू० ॥ ११ ॥ किहांयें बोव्युं गमे निहं रे, इःस्वर सहु रहे दूर ॥ मा० ॥ नर जव पामी एहवा बहु रे, पीडा दीवी प्रचुर ॥ मा० ॥ जू० ॥ ११॥ नरक तिर्यंचमां ते नम्यो रे, एए। परें काल अनंत ॥ मा० ॥ एकसवमी ढालें उद्य वदे रे, जूवें वाह्यो ते जंत ॥ मा० ॥ जू० ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ एक दिन ते विल कपनो, विणक श्रावकनो पुत्र ॥ सोमनामें श्रित सुंदरुं, समके सघला सूत्र ॥ १ ॥ धण कण सोवन रजत रस, इंधण वस न तृण श्रादि ॥ बादर श्रदत्त न श्रादरे, इविधि त्रिविधि श्राव्हाद ॥ १ ॥ त्रीजं व्रत जजे सर्वथा, स्यूल श्रदत्तादान ॥ श्रितचार पंच वस्जे सदा, तेहमां यई सावधान ॥ ३ ॥ सर्वगाया ॥ १११० ॥

॥ ढाल बासवमी ॥

॥ हिर गुण गातां लाज लागे तो लागजो रें ॥ ए देशी ॥ चोरनी आ णी वस्तु, त ल्ये चित्तसुं लही रे॥ न ल्ये चित्तसुं लही रे॥ चोरीने काजें क्यारे साहाय्य, वली आपे नहीं रे ॥ व० ॥ र ॥ उलंघे न राज्य विरुं इ, आपद पद ते कदा रे ॥ आण ॥ कूडा तोलने कूडां मापके, वरजे ते सही रे ॥ व० ॥ १ ॥ सरसमां निरस न जेखे, क्रियाणां केलवी रे ॥ क्रि० त्रीजूं व्रत पाले तेह के, इम मन मेलवी रे ॥इ०॥३ ॥ बहुली सागर बेहु ते, अप्रत्याख्यानिया रे ॥ अ० ॥ तिणे जंजेक्यो तेहने, राय संतानिया रे ॥ राण ॥ ध ॥ तव व्रतने विराधी तेहके, पूरवनी परें रे ॥ पूण ॥ थयो नही जाति देव, पीड्यो पापने नरें रे ॥ पी० ॥ ५ ॥ नवांतर निमर्च नूर, दरि हें दामिर्ड रे ॥ द० ॥ विल श्रावक कुल अवतार, ते प्राणी पामीर्ड रे ॥ ॥ ते० ॥ ६ ॥ दत्त नामें तेणे देव, तिर्थेच नारीपणुं रे ॥ ति० ॥ इविधें त्रिविधें लीधुं नीम, वली ञ्रागें नएं रे ॥ व० ॥ ७ ॥ मनुष महिलासुं सं गके, कायायेंकरी रे ॥ काण ॥ न करूं हुं निर्धार, लही इंखनी देरी रे ॥ ॥ ल॰ ॥ ॰ ॥ इत्वर परियहताने, अपरियहता तजे रे ॥ अ॰ ॥ अनंग क्रीडा अधराशि, जाणी निव जे जजे रे ॥ जा० ॥ ए ॥ जोडे न परविवा हके, महादोष जाणीने रे ॥ म० ॥ विषयनो तीव्रानिलाष, वरजे हित आणीने रे ॥ व० ॥ १० ॥ इणिपरें चोधुं व्रत, लई आराधतां रे ॥ ल०॥ केतो गयो तसु काल के, समकित साधतां रे ॥ स० ॥ ११ ॥ पुरुष वेदो दय तीव्र, तिणे योगें करी रे॥ ति०॥ व्रतने विराध्यो तेह के, छायु छांतें मरी रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ पूर्व परें हीन देव, तणी योनी गर्छ रे ॥ दे० ॥

नवमां निमयो नूर ते, क्वीब यई पछे रे ॥ क्वी० ॥ १३ ॥ बोली बासतमी ढाल, ए जदय ते जचरे रे॥ ए०॥ धन्य सदा नर तेह, जे धर्म हृदय धरे रे ॥ जे० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपनो पुनरिप अन्यदा, धनबहुत इण अनिधान ॥ समिकत धा री श्राइते, पंचम श्रणुव्रतवान ॥ १ ॥ खेत्र वास्तु रूप्य हेम धन, धा न्य दिचतुष्पद कुप्य ॥ परिमाण तेहनुं ते करे, चितमांही धरि चूंप ॥ ॥ २ ॥ योजन दान बंधन वली, कारण नावादिक ॥ अतिचार पांचे प्ट थक, तेहना लहा तहकीक ॥ ३ ॥ इर्गम कांई लही एहनो, विवरी कहुं विचार ॥ सनाजन सद्घ सुणजो तुमें, नेहेंसुं नंर नार ॥४॥ सर्वगाया॥१ १३६॥

॥ ढालं त्रेसवमी ॥

॥ गोडी रागें जकडीनी देशीमां ॥ खेत्र वास्तु परिमाणयी, अधिक तणी इंडायें जी ॥ पासेंनां लेई प्रेमसुं, एक करें चढाहे जी ॥ आगल पाढलनां यहे जहाहे, एक करे जे योजना ॥ वाडी वरडी टालीने ते, नावेंसुं सुणो निव जना ॥ अतिचार पहेलो एह प्रीठ्यो, पांचमें व्रत ग्रुन मती ॥ अति चरी जे अधिक लोनें, खेत्र वास्तु प्रमाणयी ॥ १ ॥ तार अने सोना त णो, नियम करे जे नेह्यी जी ॥ चोमासादिक समय लगें, अधिक न रा खुं एहची जी ॥ अधिक न राखुं एहची, इम त्रेवडी मनें अर्गला ॥ पर्ने नृपादिक मोज योगें, आथ पामी अर्गजा ॥ खजनादिकने सोंपी ते फ री, संग्रहें धरि मोह घणुं ॥ इणि परें थाए नियम मुहु हुं, नार अति सो नातणुं ॥ १ ॥ धन धान्यादिक मान जे, उतंगे अति लोनें जी ॥ वृद्धि दे खी मूर्डी लगें, मनमां जाए न योचें जी ॥ मन न योचे लाच जाणी, पोतानुं करी पर घरें ॥ थापे तथा निज जनने आपे, एम बहु बंधन क रे ॥ मुंमादिक विल बांधे मोटा, इणि विधें खड़ान जे ॥ खतिचरी खतिचार त्रीजे, धन धान्यादिक मान जे ॥ ३ ॥ हिपद चतुष्पदमां नथी, जे तृष्माने जोरें जी ॥ प्रसव लही पशु वालनो, अवधि अपूरो चित चोरी जी ॥ चित चोरी धरे पर घरें इम, कारणे अवसर लही ॥ पढ़े आणे घरें पोताने, निं दाने अवसर जही ॥ अतिचार चोथो एह प्रीवघो, सुगुरुवचनें ज्ञानथी ॥ लोनें जे इम मन न मगावे, हिपद चतुष्पद मानधी ॥ ४ ॥ कुप्य शय नासन आदि दे, नाजन शस्त्र कचोलां जी॥ दश पंच ते मेली मोकलां, बाकी नियम बहुलां जी ॥ व्रत उपहरे वृद्धि देखी, जंजावी ने घाट ते ॥ स्यूल घडावे तजी थिरता, पण जाणो जवाट ते ॥ जिम तिम करीने सं ख्या पूरी, पण पूराए जब आपदें ॥ इम राग वसें जे अधिक राखे, कुप्य शयनासन आदि दे ॥ ५ ॥ ते पण बहु दिन पालिने, सागरने उपदेशें जी ॥ स्युल परियह परिमाण ते, व्रतते नांगी विशेषें जी ॥ व्रतने नांगी न म्यो नवमां, पूरवनी पेरें ते वली ॥ दिगपरिमाण पण तिमज क्यारें, खं म्यूं सागरने मेली ॥ नोगोपनोग पण तिमज नाग्युं, अनर्थ दंम जलालि ने ॥ नाख्युं धरि तिम सामायक व्रत, ते पण बहु दिन पालिने ॥ ६ ॥ व जी छेई विराधियां, देसावकासिक आदे जी ॥ दशमुं अग्यारमुं बारमुं, व्रत विषयादि प्रमादें जी ॥ प्रमादें पोषधोपवास, व्रत विषमी को नवें ॥ अ तिथिसंविचाग नांगें, खदत्त गुणने खनुनवें ॥ हास्य विकथा रौड् आरति, ध्यान योग न सांधियां ॥ विषयं कषाय ने राग देषें, वली लेई विराधियां ॥ ७ ॥ इणिपरें नमतां तिणें, वे त्रण पांच चार जी ॥ ढ सात श्रात कोइक नवें, नव दश श्राग्यार नें बार जी ॥ बारे व्रत धरी बहुल ने हें, विल विल मोहने बलें ॥ विराधीने वमी समिकत, इःख दीवां इरगित थवें ॥ अनुनवी महा आपदा मुखें, कही न जाए ते किएों ॥ ढाल त्रे सवमी ए वदय नाखे, इिएपरें नमतां तिएों ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुंििनी नगरी वसे, सुनइ सार्थवाह श्राध ॥ ते जीव संसारी श्र न्यदा, सुता पणुं तसु लाध ॥ १ ॥ रोहिणी नामें रागिणी, जिन मतनी जालीम ॥ ग्रुद्ध घई ते श्राविका, श्रिष्यर लिह श्रालीम ॥ १ ॥ मेलें नमे ग्रुरु देवने, सांजले सूत्र सदाय ॥ साध्वीनी करे सेवना, सूधे मनें सवाय ॥ ३ ॥ विमल वणीकें ते वरी, स्नेहें वाह्यों सोइ ॥ श्रावीने वश्यों एक वो, घर जमाई होइ ॥ ४ ॥ धमें करे ते धसमसी, सवा लाख सज्जाय ॥ कमें यंथादिक ते जणी, तात तणे सुपसाय ॥ ५ ॥ व्रत बारे विल श्राद ह्यां, टाले तसु श्रातचार ॥ ज्वाले कमें कषायने, पाले ग्रुद्धाचार ॥ ६ ॥

॥ ढाज चोसवमी ॥

॥ आदि जिऐसर वीनती ॥ए देशी ॥ तव मोह बेठो निज आसनें,एक

दिन इम आलोचे रे ॥ अहो अहो ए उंची चढी, हुं करहुं एम, शोचे रे ॥ १ ॥ मोह राजा मनें खोजियो, दिशने रखे दिलगीरो रे ॥ तव सचिवा दिक सहु मली, कहे जाखो मनहीरो रे॥ मो०॥ १॥ तव मोहनृप बोख्यो मुखें, ग्रुं पूढो हो सचिवो रे ॥ रोहिणी दिशि थई रागिणी, अरि आपणासुं अतीवो रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ते हवे किम वश आवशे, आपणे एम सुणी ने रे॥ तव हिस बोव्या ते सहू, अरियणने अवगणिने रे॥ मो०॥ ४॥ निवड सहु जंग तिहां लगें, प्रचुजी तुम एक पालो रे ॥ जई न पहोचे जि हां लगें, ए ग्रुं बोख्या तमें आलो रे॥ मो० ॥ ५ ॥ तव मोह कहे तिहां मोकलो, कोइक एहवो जोरालो रे ॥ जे पाठी वाले तेहने, देखाडी निज चालो रें ॥ मो० ॥ ६ ॥ तव ते कहेवा कैरे तेहने, इम सुणिने तव आपें रे ॥ उनी थई इम कच रे ॥ विकंथा निज बल व्यापे रे ॥ मी ।॥ ।। प्र साद करीने ए प्रञ्ज, आपो मुक्तने आदेशो रे ॥ प्रमाण पेखुं हूं तेह्नुं, ति हां जईने सुविशेषों रे ॥ मो० ॥ ए ॥ तरतरी देखी तेहने, प्रधानादिकें प्रेरी रे ॥ तव तसु पासें जई तिऐं, ततिखण लीधी घेरी रे ॥ मो० ॥ ए ॥ चार रूपें चतुरा यई ॥ विकथा योगिनी वारू रे, वदनें वसी जइ तेहने, क्केश करी दीदारू रे ॥मो०॥१०॥ चोसतमी ए ढालमां, जदय वदे ए आंटी रे ॥ मोटी मोह राजातणी, सुगती जातां हे घांटी रे ॥ मो० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात घरें रहता तिहां, जलां वसन जोजन्न ॥ पामे परिघल रोहिए।, जी जी करे सहु जन्न ॥ १ ॥ काम काज न करे किइयुं, अरित न एक लगार ॥ मात पिता सुपसायथी, को न कहे तुंकार ॥ १ ॥ सर्व०॥११४५॥ ॥ हाल पांसतमी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ देव च्रवन तव गए थ के जी, उलट आणी कर ॥ वात प्रीय कोइ प्रेखीने जी, देव वंदन त्यजे दूर ॥ १ ॥ विकथानें रसें वाही रोहिणी जी, पोतें जइने तेह पासे ॥ बे साडीने ते बोले इद्युं जी, ए मेंहली सुण्युं तुफ आवासे ॥वि०॥ १ ॥ आज ए तुम घरें नीपनुं जी, काज कखो सुने केणें ॥ ते कहे अलिक ए उचखुं जी, तुफ आगल सहि तेणें ॥ वि० ॥ ३ ॥ तूं वाहरे माही वदे रोहिणी जी, सुफनें पण उलवे हे मांम ॥ सा कहे समफण विना सही जी, जिम तिम हुं लवें हे नांम ॥ वि० ॥४॥ इम उत्तर पहुत्तर आपता जी, वहवाहे आव्यो त्यां पार ॥ तव बीजासुं राजकथा करे जी, विकथाएं वाही अपा र ॥ वि० ॥ ५ ते पण घरें गई थाकिने जी, तव त्रीजीसुं तेणे सराग ॥ पु रूप स्वीनी प्रारंजी कथा जी, ते सासरियाने जयें गई जाग ॥ वि० ॥ ६ ॥ चोथीसुं चाहीने तेकरे जी, जक्त कथा तिहां जूर ॥ इम पांचमीसुं देशक थाकरे जी, आवे तव शिर परें सूर ॥ वि० ॥ ९ ॥ इम आचरतां विकथा अनुदिने जी, कोई श्रावक कहे एक दिन्न ॥ कर जोडीने ते कामनी प्रतें जी, जहे आवी देव खुवन्न ॥ वि० ॥ ए ॥ एक मनें त्यजिने आशातना जी, नमवुं घटे नाथने पाय ॥ ते वंदनातो रहि वेगली जी, किम करो हो कमें कथाय ॥ वि० ॥ ए ॥ तव उत्तर आपे ते तेहने जी, बंधव बीजे को वाम ॥ किहारे को नवि मिले केहने जी, केहने को न जाये धाम ॥ वि० ॥ १० ॥ प्रिय मेलो थाये ए थानकें जी, तेणे सुख इःखनी क्रण एक ॥ पासवमी ए ढालें धर्मने कमेनी जी, वात थाये विसराल ॥ वि० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपाश्रय पण अक्का तणे, सहेजे तिज व्याख्यान ॥ जे ते श्रािद सुं करे, विकया तेह सदाय ॥ १ ॥ साधु श्रावकने श्राविका, साधवीना सु विशेष ॥ अवर्णवाद मुख जचरे, अनुदिन तेह विशेष ॥ १ ॥ तव सीखा मण ये साधवी, ना ने नणतर सर्व ॥ जाए हे तुफ वीसरी, जिम गुण जा ए गर्व ॥ ३ ॥ एह नावे इःख दायिनी, केवल कष्ट निवास ॥ एह्वी कथा करे ग्रुं होय, अनर्थ दंम आवास ॥ ४ ॥ सदन जे संपत्ति तणुं, मुक्ति पुरीनुं मूल ॥ सुधासम स्वाध्याय कर, अहनिशि थई अनुकूल ॥ ५ ॥

॥ ढाल बासवमी ॥

॥ जोसीयडो जाएो जोस विचार ॥ ए देशी ॥ मुह मरडी तव ते कहे रे, साधवी जी सुएो वात ॥ साधुजनें पए सर्वथा रे, विकथा न वरजी जात ॥ १ ॥ गुरुणीजी मिल मिल म करो मांम ॥ आंकणी ॥ न गमे मु ने पांखम ॥ गु० ॥ न तजाए अनर्थ दंम ॥ तो जीज थाए शत खंम ॥ गु० ॥ २ ॥ मुह्रपतिएं मुख बांधिने रे, तुमे बेसो बो जेम ॥ गु० ॥ तिम मुखें मूचो देईने रे, बीजे बेसाए केम ॥ गु० ॥ ३ ॥ मुख बांधी मुनिनी प रे रे, पर दोष न वदे प्राहिं ॥ गु० ॥ साधु विना संसारमां रे, क्यारे को दीवो क्यांहि ॥ गुं० ॥ ध ॥ सरल पणे अमे सही रे, जेवूं देखुं ज्यांहिं ॥ गु० ॥ परने पण मुख ऊपरें रे, तेहवूं जाखुं त्यांहि ॥ गु० ॥ ५ ॥ कपट न जाएं केलवी रे, अवरां परे एक रेष ॥ मुह रखती संगाबापनी रे, वा त न जंपुं विशेष ॥ गु० ॥ ६ ॥ को रुसो तूसो कोई रे, पण अमे अमारी टेव ॥ मरणांते मूकूं नहीं रे, जो इहवाए देव ॥ गुण ॥ ७ ॥ सद उपदे श निव सद्दहे रे, अयोग्य बापडी एह ॥ अजाण जाणी तव अजाए रे, उवेखी मेली तेह ॥ गु० ॥ ७ ॥ शंका तजी सा एकदा रे, श्रुत सुणतां गुरु पास ॥ वस्त्रें वदन आंबादिने रे, मुसकें मुंकित हास्य ॥ गु॰ ॥ ए॥ ज एजए श्रवणे जूजूआ रे, अनेक वहे अवदात ॥ जख जख करती ते करे रे, वखाणमांहे व्याघात ॥ गु० ॥ १० ॥ माती महीषी तलावनुं रे, जल जिम मोहोले जोर ॥ तिम वखाण मोव्युं तिणे रे, सना जनसुं करी शोर ॥ गु॰ ११ ॥ सारथवाहनी सुता लही रें; कोइ न वारें कांइ ॥ तिम तिम बमणी थाइने रे, लवती लाजे नांहि ॥ गु० ॥ १२ ॥ जो ग्रुरुवादिकवारे कदारे, तो त्राडी कहे तनु जीड ॥ जगवत हूं बगनी परें, बेसी रहूं मुख बीड ॥ गुण्॥ १३ ॥ पण पहुत्तर पूछ्यातणो रे, जो जिम तिम न दे वाय ॥ तो लोक सहु मुंगी कहे रे, ते बीके कांइ बोलाय ॥ गुण्॥ १४ ॥ अयोग्य जाणीने सर्वेषा रे, गुरें पण मेहली उवेख ॥ तेव निशंक मुखें मो कले रे, विकथा करे विशेष ॥ गु० ॥ १५ ॥ बासवमी ढालें जुर्र रे, वातें विणसे काज ॥ आखर उदय रतन कहे रे, वातें विगडे जाज ॥ग्र०॥१६॥ ॥ दोहा ॥

॥ विकथाने जोरेंकरी, वीसखुं विद्या पूर ॥ अर्थ सहु आगम तणा, दिल्यी तव थया दूर ॥१॥ व्रत मेट्यां वीसारिने, आलोए निहं अतिचार ॥ प्रमादें न नमे देवने, न गमे नियमाचार ॥१॥ जणतां मन जेदे नहीं, धर्में न धाए चित्त ॥ पडिकमणुं अनादरपणे, करे विकथाएं सहित ॥ ३॥ ॥ ढाल सडसवमी ॥

॥ करेलडां घडी देरे ॥ ए देशी ॥ कोइक साथें एकदा, विकथा कोइ कुठाम ॥ मगनपणे मांमी तिणे, केवल जाणे क्वेशने काम ॥ १ ॥ श्रवतुं श्राल न दीजियें रे, श्रालें थाए उतपात ॥ वरजो विकथा वातडीरे ॥ तजो पियारी तात ॥ श्रण ॥ १ ॥ रखे कोई इहां सांजले, न रह्यो ते उपयोग

॥ विकथाने वस परवसें, सहसा वहे सुरो लोग ॥ अ० ॥ ३ ॥ पटराणि ए पुरनायनी, अति इसीला इष्ट ॥ सम्यग हुं समफूं अहुं, पापिणी हे ए प्रष्टु ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइएक जलें माणसें, कह्यो मुक्तने एह ॥ तेमाटे वी से वसा, साचुं ए नहीं संदेह ॥ छ० ॥ ५ ॥ तिए समे ते थानके, कोइ क काम विशेष ॥ ते राणीनी दासीयें तिहां, उदंत सुख्यो ते अशेष ॥ अ० ॥ ६ ॥ राणीने दाख्यो तिणे, राणियें राय हजूर ॥ आदिथकी अवदात ते, कह्यो करी दिल कूर ॥ अ०॥ ७॥ तिहां राये तेडावी रोहिणी, तेने तेडी गयो तिहां तात ॥ प्रथवीपति पूछे तदा, एकांते तेडी ते वात ॥ अ०॥ ७॥ कहे नई ने तें सुखो, मुर्फ महिला अवदात ॥ ते ग्रं सा चो सुंदरी, विवरी कहो ते वात'॥ अ०॥ ए॥ एतो में सुण्युं नथी, सा कहे सांजलो खामि ॥ हुं केंहनुं कांई जांखुं नहीं, बेठी रहुं निज धाम ॥ ॥ अ०॥ १०॥ जिम तिम जवती जाणी तिहां, तव ते दासी तेडि॥ अहिनाऐं सहु अवनीपति, पूराव्या करि केडि ॥ अ० ॥ ११ ॥ मुखा मुखें इम मेलतां, संशयमां पडी सोय ॥ उत्तर निव आपे किश्यो, जगित सा हामुं रही जोय ॥ अ० ॥ १२ ॥ तव सारथवाह सुनइने, तिहां रोपें तेडी राय ॥ ते दासिपें दाखाविड, संबंध ते समजाय ॥ अ० ॥ १३ ॥ तव स हसा वज पडे सिरें, तिम यई पूर्व तात ॥ अहो अहो पुत्री ए किश्यो, दासी वदे अवदात ॥ अ० ॥ १४ ॥ एकांतें पण ए किश्यो, पूर्वतां बद्ध पेर ॥ उत्तर जव आपे नहीं, तव तातें तिज हेर ॥ अ० ॥ १५ ॥ तेडा वी ते तारुणी, जे खागल एणे वात ॥ खागलथी कही हुती, उलखी ते दासी संघात ॥ अ०॥ १६ ॥ कामनी ते आवी कहें, सारथवाहनी सा ख ॥ हा एऐ। इम उञ्चर्षुं, न जाएं। इये अनिलाष ॥ अ०॥ १७ ॥ जन क तेहनो जाएो अहे, मूल यकी मुख दोष ॥ ते वनिताने वश जाइने, त नुजाने तेडी सरोष ॥ अ० ॥ १० ॥ आवी अवनीपति कने, नेत्रें धरतो नीर ॥ पर्यपे ते पाए नमी, दिलसुं थई दिलगीर ॥ अ० ॥ रेए ॥ सहस वमी ढालें बटकी, सहू को रहे सेण ॥ जदय वदे आपद पडे, कोई न माने कहेए ॥ अ०॥ २०॥

॥ दोहा ॥

॥ ञ्राज लगें प्रञ्ज ञ्रमकुर्ले, दीवो पण कोई दोष ॥ जीव जातां लगें

निव वदे,पापनो जाणी पोष ॥१॥ अण दीवो अण सांज्यो,ए द्रोष दाखी महाराज ॥ कलंक प्रथम ए मुफ कुलें, एऐं चढाव्युं आज ॥ २ ॥ बीज तणां शितहर थकी, विमल मुफ वंश विशेष ॥ कबुरुयें ते कालो कखो, अलिक वदीने एष ॥ ३ ॥ मोकलजीजी लोकमुखें, जाणीने में जेह ॥ वारी नहीं ए ते वती, तकसीर माहरी तेह ॥ ४ ॥ विविध गृह व्यापार वसें, संजारीने शीख ॥ निव दीधी विल निव तजी, लागी तो ए लीक ॥ ॥ ॥ ते माटे प्रञ्जी तुमें, जिम जाणो तिम जोर ॥ ए अपराधिण क पर करो, निशंक थई निवोर ॥ ६ ॥ सविगाथा ॥ ११०० ॥

॥ ढाल श्रडसक्मी ॥

॥ धणरारे पंथी ढोला मत वादलियें ॥ ए देशी ॥ परतात कीएं इमसा विगोइ हो, हो सुगुणा रे, सुणजो श्रोता ॥ प० ॥ निगुणा रे, नर तिहां विगोता ॥प०॥ पुरनारे जन मिल जोता ॥ प०॥ ए आंकणी ॥ नृप कहे मारा नगरमां रे, अवल पुरुषनुं एक ॥ वचन न लोपूं हूं ताहरुं, मुजने मानवा योग्य तूं वेक हो ॥ सु० ॥ १ ॥ शतखंम करी चौवटे रे, नहिं ना खुं ते माट ॥ पण देशोटो देवो घटे, जिम अवर को न वहे उवाट हो॥ ॥ सुण ॥ श ॥ अवनिपति तेहने इम कही रे, विसज्यों तिएो वाय ॥ ते एो पए तेहज गामधी, तनुजा ते कीधी विदाय हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ राज नरें वींटीयकी रे, राजमारग सा जाय ॥ देशवटे इखणी घणुं, इष्ट जोक वदे तव त्यांहि हो॥ सु०॥ ध॥ अहो अहो आते श्राविका रे, अहो देव वंदनाए तेह ॥ पडिकमणो मुखे विश्वका, आते पूर्वे पूर्वे अर्वेह ॥ सु॰ ॥ ५ ॥ अहो ए ते नणतर नलुं रे, एहवो ए जैननो धर्म ॥ अवगुण अ बता कचरे, परना परख्या विर्ण मर्म हो ॥सु०॥६॥ पग पग इम पामरज नें रे, निंदाती निज धर्म समेत ॥ नगर बाह्रि ते नीसरी, संनारती सहु ना हैत हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ जनक वैजव न वीसरे रे, मातनो संजारी मो ह ॥ बंधु जन गौरव बहु परें,मनें समरे पामि विठोह हो ॥सु०॥७॥ परि जनना ते परें परें रे, खादर ध्याती खनाय ॥ सुग्ररु वियोगें शोचती, ग मन करे धूजती गात हो ॥ सु० ॥ ए ॥ सुर्वात सुखे विलपती रे, गति हीण गामों गाम ॥ जीकाने काजें जमे, किंदांयें पामे निह विश्राम हो ॥ सु० ॥ १० ॥ वनमां हें वींधाए वली रे, कांटे कोमल चरण ॥ रुधिर धा राये सींचे धरा, कघराला थयां आजरण हो ॥ सु० ॥ ११ ॥ क्रोध तदा कोच्यो घणुं रे, अप्रत्याख्याना वरण ॥ आरति सैन्य उदेरीने, तिणे समिकतनुं कसुं हरण हो ॥ सुं० ॥ १२ ॥ आयु पूरी ते कपनी रे, अपिर यहीता व्यं तरी हीन ॥ एकेंड्यादिकमां वली, अति इःख दीनं धर्र दीन हो ॥ सु० ॥ १३ ॥ किंहां बेहेरी किहां बोबडी रे, किहां थयो जिव्हा रोग ॥ अड सन्मी ढालें सुणो, उदय वदे आस्तिक लोग हो ॥ सु०॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तालि लेइ मोहराय तव, महा मूढता प्रिय साथ ॥ हसी कहे सुण हे प्रिये, विस्मयकारी वात ॥ १ ॥ सूधी निवड जे श्राविका, निश्चल जे हना नीम ॥ विकथायें जुड तेहनी, शी शी जांजी सीम ॥ १ ॥ ए गरीब डीतुं कहो श्चं गजुं, सा कहे सांजलो स्वाम ॥ श्रचंनो स्यो ए वातनो, जो नर सुरपति तुम नाम ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १ २ ० ४ ॥

॥ ढाल उंगणोतेरमी ॥

॥ सूर्य साहमी पोले ॥ ए देशी ॥ पुरोहित चक्रीने पूज्य हो प्रञ्ज, अम रगणें अक्तोन जे ॥ महारा लाल ॥ जगमां अतुलबल जास ॥हो०॥ सहु जीवने ये योन जे ॥ म० ॥ १ ॥ शिव शोधना जे सोपान ॥ हो० ॥ चौद ते मांहे अग्यारमें ॥ म० ॥ पगथीए पहोता जे सूर ॥ हो० ॥ पग मांमवा चाहे बारमे ॥ म० ॥ २ ॥ पुरुष पलकमां तेह ॥ हो० ॥ हुंकार मार्गे तिहां यकी ॥ म० ॥ पाडी नमाव्या पाय ॥ हो० ॥ दीन ते जिहां तिहां रुखे इखी ॥ म० ॥ ३ ॥ ए जीव संसारी अनंत ॥ हो० ॥ आण प्रमाण करी सहु ॥ म० ॥ हाजर बंधा होय ॥ हो ।॥ सुविधें तुम सेवे बहु ॥ मण ॥ ४ ॥ तव सम कार्ले त्यांहि ॥ होण ॥ सामंत मंत्री सद्ग कही ॥ म० ॥ अहो देवीने बुि ॥हो०॥ वातनी विगतें केहवी लही ॥ ॥ म० ॥ ५ ॥ जुर्र संसारी ते जीव ॥ हो० ॥ नरनव पामी एकदा ॥ ॥ मण ॥ समिकत पाम्यो ग्रद ॥ होण ॥ मोहे ते चष्ट कस्रो मुदा ॥मण ॥ ६ ॥ देतां कोइकनवें दान ॥ हो० ॥ अनुचरें मोहनी आणयी ॥म०॥ ततिवण जई यंन्यो तेह ॥ हो० ॥ किहां एक चुकाव्यो शीलयी ॥ म०॥ ॥ ७ ॥ क्रोधें किथो कीहां जेर ॥ हो०॥ तपना देखी तानमां ॥ म०॥ किहां एक कच्चो नावना नंग ॥ हो ।। धरी तेहने इष्ट ध्यानमां ॥म०॥

॥ ण॥ देश विरतिथी दूर॥ होण॥ किहां एक वली तसु वासिछ ॥ मण॥ मोकली मोहें जृत्य ॥ होण॥ परेंपरें सुख पीसीछ ॥ मण॥ ए॥ इम यो जन कूपने माने ॥ होण॥ हेत्र पब्योपम लहो खरो ॥ मण॥ यसंख्या तमो तसु जाग॥ होण॥ स्क्रम रोम खंमें जह्यो ॥ मण॥ १ण॥ ते प्र देस रासि प्रमाण ॥ होण॥ देश|वरित सुण में वरी ॥ मण॥ पण मो हने सुजटें तेण॥ होण॥ कषायादिकें लीधो हरी॥ मण॥ ११॥ अप्र त्याख्यानावरणचार ॥ होण॥ कषाय तणे छदयें करी॥ मण॥ देशविरित जाए दूर॥ होण॥ आगमें जाखी इणि परे॥ मण॥ १२॥ छदयरतन इणि जांते ॥ होण॥ उगणोतेरमी ए जचरी ॥ मण॥ हाल ए हलते रागें ॥ होण॥ सुणजो सहु कलट धरी॥ मण॥ १३॥

॥ दोहा ॥

॥ चंडमोिल तृप १णि समे, मोर्दे मुनिंना पाय ॥ प्रणमीने पूर्व इर्युं, करी रोमांचित काय ॥ १ ॥ नगवन ए नूंमा घण्टं, मोहादिक अरिमस्त ॥ पीडे जे सहु प्राणिने, सोंपी इःख समस्त ॥ १ ॥ सुख सघलां हो संहरी, इःख सघलां दो इष्ट ॥ शब्य पडो ए मोह शिरें, पापी जे महापुष्ट ॥ ३ ॥ सकल सिद्धांतनुं रहस्य ए, उतम तुम आख्यान ॥ ए विचें अवर जे पू विचें, न घटे ते नगवान ॥ ४ ॥ केवल संदेह कारणे, प्रश्न पूर्बुं जे कांइ॥ अपराध खमजो ते प्रञ्च, महिर धरी मनमांहि ॥ ५ ॥

॥ ढाल शीतेंरमी ॥

॥ जमर गीतानी देशी, धन्याश्री रागें ॥ जगवन पहेलुं तुमे जे जांखि छ, समिकत जेणे बेघडी फासिछं ॥ अर्ध पुजल परावर्त्तन रह्यो, संसार ते हने छल्छो कह्यो ॥ कह्यो विल समिकत संगम, तेहने असंख्याते जवें ॥ ते वार पि पण तिमज तेणे, देशिवरित लाधी सवें ॥ ते बेहुयकी थई घष्ट जवमां, जूरि जव लगें इःख लह्यो ॥ ते जूरि जवनों मान जाखों, सांसो मुक्तने ए रह्यो ॥ १ ॥ ज्ञवनजानु जाषे तव केवली ॥ किहां एक संख्याता असंख्याता वली ॥ किहा एक अनंता जव पण ते करे ॥ समिकत देशिवरित तजी फरें ॥ फरे अनंती जत्सिणिणी, अवसर्णिणी ते प्राणिछं ॥ अर्ध पुदगलें केम अनंतरें, आगम मांही जाणिछं ॥ इणि परें विचे विचे काल, अनंता अनंत जेदें जमे ॥ अंश मात्र तोपण अर्ध पुजल, तणो जोतां

नवि समे।। २ ।। अनादि कालनो जीव निगोदिर्छ।। अव्यवहार रासें अति इखें नेदिन ॥ समिकतहीणो तिहांची नीसरी ॥ व्यवहाररासें वखते अव तरी ॥ अवतरे ते लाख चोराशी, जीवा योनी सर्वदा ॥ परावर्त्ततां अनंत पुद्गल, पार नवि पामे कदा ॥ समिकत वण संसारपारा, वार पार न पा मियें ॥ वकायमां वेदन जेदन, इःखे जिहां तिहां दामियें ॥ ३ ॥ समिकत पाम्यानो महिमा जुर्र ॥ मुहूर्त लगें जे समकेती हुर्र ॥ मोहादिक जो त स कोपे घणुं ॥ तो पण तेहने अर्६ पुदगलिकपणुं ॥ घणुं तेहने अर्६ पुदगल, लगें नवनी अर्गला ॥ पर्ढे परमानंद पामे, नांजी नवना आम ला ॥ इल्लु कर्मी कोइक जीव वहेलो, मुगति गामी माहाबली ॥ समकि तनुं ए फल में नाख्युं, सुण तुं राजन मृन रली ॥ ध ॥ नृप निम सुनिने तव कहे पंडवडो ॥ नाखो नगवन ए अचरज वडो ॥ समिकित देश विर. ति वस्ना स्वामी ॥ मोहादिक इःखं एम दीये दामी ॥ दामी इःख ये इष्ट स घला, सुनट मोह राजातणा ॥ तव केवली कहे अनंत कार्ले, अरि न उसरे ए घणा ॥ सर्वदा सर्व जीवने ए, संतापे सर्व पापित्रा ॥ ते माटे सहु ज्ञानीये पण, इमज उत्तर आपिया ॥ ५॥ यतः ॥ समत देश वि रया, पितयस्त असंख नाग मित्तार्र ॥ अह नव रविते, अणंतकालं च सम एति ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ समम्यक् द्रीन देश विरति लही ॥ देत्र प ख्योपम असंख्य नागें सही ॥ केश प्रदेश राशिमांहे जेती ॥ तेहना नवनी संख्या कही तेती ॥ तेती संख्या जहो तेहने, चारित्र सामायकवंतने ॥ ज व ञार तस नगवंते नाष्या, परे पामीनव श्रंतने ॥ श्रुत सामायक सम्य क् दृष्टि, मिष्यादृष्टि नावें जहो ॥ त्रसमांहे ते नव अनंता, नमे साचुं सददो ॥ तेऐ। शीतेरमी एइ नाखी, ढाल एम जदय वदे ॥ संसार सागर तेह तरज़े, ज्ञास्त्र जे धरज़े हृदे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वामी किह्यें संसारिते, चारित्रधर्म सहाय ॥ सर्व विरित कहो थाय से, पूर्व इम महाराय ॥ १ ॥ तव मिन कहे तक जोइने, रंग जरें राजान॥ अंतर ए थोडो अहे, सांजल थई सावधान ॥ १ ॥ सूधो हूं सावधान हुं, राजा कहे क्षिराज ॥ महेर करी मुजने कहो, संबंध ए शिरताज ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ एकोत्तरमी॥

॥ मारुजी हो अवर नदीरे माहरी बेहेनडी हो राज ॥ ए देशी ॥ राजा जी हो त्यारे कहे रे तेह केवली हो राज ॥ मनुष्य के्त्रेंपुर एक ॥ सहाय लहोने राज, संसारीने ॥ स० ॥ अवतारीने ॥स०॥ सहुकुं समिकत वे सुखदाय ॥ स० ॥ टेक ॥ रा० ॥ इंइपुरें रे तेह जपनो हो राज ॥ विश्व थकी व्यतिरेक ॥ स० ॥ १ ॥ रा० ॥ समीरण नामें रे नृप सोहे तिहां हो राज, जयंति नामे तसु नार ॥ स० ॥ रा० ॥ कर्म नृपें लई ते जीवने हो राज ॥ तेहनी कूखें दियो अवतार ॥ स० ॥ २ ॥ रा० ॥ पूरे मासे रे जनम्यो ते यदा हो राज ॥ अरविंद तेहनुं अनिधान ॥ स० ॥ रा० ॥ थाप्युं थयो रे सहु कलाधरु हो राज ॥ निरुपम सुगुण निधान ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ राज् ॥ तव तरुण ते थयों रे तेहने ते समें हो राज ॥ अवसर ल ही उत्वरंग ॥ स० ॥ रा० ॥ उद्यानमांहि आणि मेलिउ हो राज ॥ कर्म नृपें ग्रह संग ॥ स० ॥ ४ ॥ रा० ॥ मोहें नमी रे ते मुनींइने हो राज ॥ ते कुमर बेवो तिहां पास ॥ स० ॥ रा० ॥ तव कर्म नृपें रे तेहने आपिड हो राज ॥ खडग वारु एक खास ॥ स० ॥ ए ॥ रा० ॥ अध्यवसाय रे अ ति सुंदरु हो राज ॥ तदरूप ते करवाल ॥ स० ॥ रा० ॥ मोह त्रादि रे शत्रु सातना हो राज ॥ स्थिति रूप तनु तिएो ताल ॥ स०॥ ६ ॥ रा०॥ सागर संख्याएं रे तव बेद्यां तिएो हो राज ॥ तेहुनां तनु केटलां एक तेह ॥ स० ॥ रा० ॥ तेहने योग्य जाणीने तव ते साधुएं हो राज ॥ निर्मल धरी मननेह ॥ स० ॥ ७ ॥ रा० ॥ सम्यक् दर्शन रे ते मंत्रीसरु हो राज ॥ धरपति जे चारित्र धर्म ॥ स० ॥ रा० ॥ त्रागल चकी ते बन्हें मेलव्या हो राज ॥ जे सेव्या आपे शिव शर्म ॥ स० ॥ ७ ॥ रा० ॥ सर्व विरति रे नामें सुंदरी हो राज ॥ सालंकारा सुवेश ॥ स० ॥ रा० ॥ दिव्य देखाडी ग्र ण दाखवी हो राज ॥ ते मुनिएं धरि मोह अशेष ॥ स० ॥ ए ॥ रा० ॥ राज कुमरें रे तव रीजिने हो राज ॥ सर्व विरति वरी वेग ॥ स० ॥ रा० ॥ सुगुरु समीपें व्रत उचखां हो राज ॥ ग्रु६ धरी संवेग ॥ स० ॥ १० ॥ रा॰ ॥ दीक्का महोत्सव रे कीथो दीपतो हो राज ॥ जदय वदे मनोहार ॥ ॥ स० ॥ श्रोताजी हो एकोतेरमी ढाखें तातें सही हो राज ॥ नित मु निने नमो नर नार ॥ स० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धरपित चारित्र धर्मनुं, सैन्य पाम्युं संतोष ॥ तव तेहने पासें रहे, दूर निवारण दोष ॥ १ ॥ अतिशय बोध आनंदिन, सम्यक् दर्शन थिर ना व ॥ पामी तसु पासें वसे, नांगरीनं जिम नाव ॥ १ ॥ सदागम लीन रहे सदा, आचिर ग्रुद आचार ॥ प्रथम आनूषण पहिरणे, मार्दव मंमन सार ॥ ३ ॥ नेपे ते आर्जव ग्रुणे, संतोषसुं मन मेल ॥ तप तरवारने जे धरे, करे संयमसुं केल ॥ ४ ॥ सेवें सत्य सुमित्रने, शौचसुं धरी सनेह ॥ आकिंचन ब्रह्मचर्य जपरें, राखी राग अबेह ॥ ५ ॥ चारित्र धर्म नृप अंगना, द शे मिल्या ए दोस्त ॥ ते अरविंद अणगारग्रुं, जिम पाणीसुं मले पोस्त ॥ ६ ॥ सदबोध सदागम प्रेरिनं, मुनिवर ते महा धीर ॥ सबल मोहनां सै न्यसुं, रोज चढे रणवीर ॥ १ ॥ सविगाया ॥ १ १ ५ ० ॥

॥ ढांज बहोतेरमी ॥

॥ कडखानी देशी ॥ इम तेह् अरविंद् अणगार अरिशुं नहे, रण वहें रोज मन मोज धरतो ॥ मोह दल दलन बलवंत नह नंजणो, अखंम रि पु चंमना खंम करतो ॥ इ० ॥ १ ॥ चढी अप्रमाद अदनूत गजकपरें, ऐन अदंनते धिर अंबाडी ॥ समाधि सिंदूरसुं जेह् शणगारित्ते, अलोन गुण घंट घणणंत गाढी ॥ इ० ॥ १ ॥ धनुष समतृति ग्रुन सधर धरित्त करें, नावना रूप सर नूरि वंरसे ॥ मारि मोह रायने ममें स्थानकें लही, शत्रुनी सूरते सीम फरसे ॥ इ० ॥ ३ ॥ जलकि ब्रह्मचर्यने काम नट नेदित्तं, रणमां हद यांतरें रोष पूरें ॥ घेरी राग केसरी जोर घूमावित्तं, अराग आयुधें ते नसाडगुं हूरे ॥ इ० ॥ ४ ॥ देष गजेंइ अकोध बाणे धस्तो, जाए नातो तदा चीस पाडी ॥ एम सद्बोध सदागमे तेलखी, सैन्य शत्रुतणी तिणे नसाडी ॥ इ० ॥ ४ ॥ वीर विश्वानर वींध्यो समता सरे, विनय बाणे वली शैव्य राज ॥ सरल बाणें करी बहुली दूरें करी, लोन निर्लोनसरे आख्यो वाज ॥ ॥ इ० ॥ ६ ॥ हिंसा असत्य अदन मेथुन तथा, मूर्वा आदिमहावेरी बिल या ॥ अहिनशे तेहतुं मूल तन्मूलतां, सर्व सामंतना गर्व गिलया ॥ इ० ॥ ॥ ॥ प्रमाद दंमाधिषें मोहने अन्यदा, तेह क्षराजने जोर घेसो, ताम अथाम अणागार ते तेलखी, श्रुति रूप दूतियें इम त्रदेखो ॥ इ० ॥ ० ॥ ॥ यतः ॥ वरं हलाहलंग्रुनं, वरं अग्गिपवेसणं ॥ वरं सप्पोहि सहवासो,

मा पमायाण संगमो ॥ १ ॥ एहवा आगमतणा अर्थ मन धारिने, शतु ना सैनने जोर जूंसे ॥ पिसह बावीस मोह राय पटाउते, एकंदा घेरिंड आवि हुंसे ॥ ६० ॥ ए ॥ धिर जिल्हा धीरता वीर ते वेरिने, देहनी अनि त्यता आदि फोजें ॥ दूरकरि इप्टने आप बल दाखवी, मोहसुं इम चढें तेह मोजें ॥ ६० ॥ १० ॥ त्रिविधि उपसर्ग नट उत्कट मोहना, विकट लेइ कटक थया निकट वरती ॥ प्रवचन वयणथी कमें गित पारखी, ताम करि दूर तस तेह वरती ॥ ६० ॥ ११ ॥ तहण तपसी इह बालने गिलान नी, विविध परें सेवना नित्य करते ॥ जोर संज्वलन कषायें जोरो कह्यों, उपशम्यो प्रशम रस ध्यान धरते ॥ ६० ॥ ११ ॥ शब्द हृप गंध रस फरस आदि वली, प्रगट थया पंच ए प्रौट पापी ॥ सकाम रणांगणे प्रगट थई तव तिणों, तास संतोष बलें शीख आपी ॥ ६० ॥ १३ ॥ गृद्ध जह्यों, हारे ने जीत करे हाथों हाथें ॥ उदयरतन्न कहे कमें कर्जी अने, बहोतेरमी ढालमां आव्युं धातें ॥ ६० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय पराजय पामतां, शिए परें ते आएगार ॥ जय लक्क्षी विर जे समे, ते समे सुणो नर नार ॥ १ ॥ गाढो ते तरज्यो गुरें, कोईक काम विशेष ॥ घेखो तव तेहने घणुं, आपणो अवसर देखि ॥ १ ॥ प्रत्याख्यानावरण जे, कोध मान नट दोय ॥पीड्यो तिणे निर्देयपणे, मर्मस्थाने मुनि सोय ॥३॥ ॥ ढाल तहोतेरमी ॥

॥ उधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥ वेरी कषाये वाहीने, घेरी चोफे रें ॥ बलवंते बेहु जणे, यती कीधो जेरें ॥ वे० ॥ १ ॥ तव थई ते तरतरो, ग्रुरु साहमो गमार ॥ बोलवा लागो ते बेतमां, लोपी लाज अपार ॥ वे० ॥ १ ॥ अहो आचारज जी अमे, कीधो स्यो अपराध ॥ गुगतें विचारीने जुर्ड, बोलें पामशो बाध ॥ वे० ॥ ३ ॥ अएगार तो अनेक छे, गुरुजी तुम गढ मांहि ॥ समोविडिआ मुफ सारिखा, तेहने न कहो कांही ॥ वे० ॥ ४ ॥ गरिब लही गुनह विना, केवल मुफ वंक ॥ दाखो हो सहु देखतां, कोए हे निकलंक ॥ वे० ॥ ५ ॥ जो कोई बीजो पए यती, एहवुं आचरे नांहि ॥ तो मुफनें उवेखवो, इम घटे आंहि ॥ वे० ॥ ६ ॥ यिवर वारे जव तेहने, कुलवंत तुफ केम ॥ इम घटे इहां बोलवुं, जद्द बोले जेम ॥ वे० ॥ एतो कु

ल मुक जगरे, इम चिंते ते ताम ॥ अहंकार कोपें कफत्यो, गाहो तिणे वाम ॥ वे० ॥ ० ॥ जव गुरु कांइक कहे फरी, तव त्राही कहे तेह ॥ सा द तुमारा सांजली, हीए पहेंछे वेह ॥ वे० ॥ ए ॥ मिल मिल एह मेहलो फरी, ग्रुं करशो छेडि ॥ आ ल्यो तुम छ्यो मुहपति, मूको माहरी केडि ॥ ॥ वे० ॥ १० ॥ वेष तजावी वेगसुं, इिए परें अवहेलि ॥ सुंप्या तिणे मो हना सैन्यना, तेहने तिए वेलि ॥ वे० ॥ ११ ॥ छटें मिली ते दीनने, निंद नीक यहवेष ॥ पहेरावीने परे परे, दीधां इःख अनेक ॥ वे० ॥ ११ ॥ जीख मांगी करे चाकिर, पर घरें नरे पेट ॥ वरष तेहने वोल्यां घणां, करतां लोकनी वेठ ॥ वे० ॥ १३ ॥ अहो में च्रष्ट बुदें नज्यो, धर्म त्यजी अधर्म ॥ अंत समय ते इिए परें, निंदे कत कर्म ॥ वे० ॥ १४ ॥ इह लोकें लही आपदा, पर नवें बहु पीड ॥ पामीश एहना प्रनावची, नवनी पण नीड ॥ वे० ॥ १५ ॥ इम ते आतम निंदतो, मरी ज्योतिषीमांहि ॥ अमरपणे जई कपनो, सुण नृप छन्नांहि ॥ वे० ॥ १६ ॥ तिहांची चवीने जीवते, नव निमर्च नूर ॥ बोली ए तिहोतरमी, हाल उद्यें सनूर ॥ वे० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपनो ते वित अन्यदा, मंत्री स्नुत मनुहार ॥ राज्य पुरें रम्य श्राह्त ते, चित्रमित नामें कुमार ॥ १ ॥ मावित्र परलोके गयां, तव पुत्र ववी निज गेह ॥ पोते संयम आदरी, बहुदिन पाने तेह ॥ १ ॥ पूर्व परें मोह सैन्यने, मुहकम देतां मार ॥ अंते विषय सुख महानटें, हरव्यो ते अण गार ॥ ३ ॥ संयम विराधी सुर थयो, सौधर्में सुर लोय ॥ पत्योपमने आ उसें, तिहांथी चवीने सोय ॥ ४ ॥ नूरि नवांतर ते नम्यो, हेमंकर नृप धाम ॥ कंचनपुरें थयो एकदा, सुत विजयसेन इण नाम ॥ ५ ॥ तिहां पण सदगुरु संगयी, धर्म सुणी सुखखाण ॥ मात पितादि मूिकने, सं यम लीये सुजाण ॥ ६ ॥ तिमज हरस्ते रहे ते कने, सदागमने सदबोध ॥ मोहराजाना सेन्यसुं, युद्ध करे ते जोध ॥ ७ ॥ सदागमसुं थयो स्नेह अति, सद बोधनो थयो पोष ॥ अप्रमाद नेद्यो अंगमां, स्थिर थयो संतोष ॥ ० ॥ तव पाम्यो ते महा सुनि, अप्रमन गुण स्थान ॥ सिदिसोधनुं सुं दरुं, सातमुं जे सोपान ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ १ १ ए३ ॥

॥ ढाल चमोत्तरमी॥

॥ चोपाईनी देशी॥ कोईक कर्म परिणाम पसाय ॥ उपशमं श्रेणि ना में तिणि गय ॥ महावज्र दंम मुनि पाम्यो तेह ॥ जयवीर्य तव जलस्युं अवेद ॥ १ ॥ अनादिकालना जे महा अरी ॥ तव शिरें माखा तेद दंमें करी ॥ क्रोध मान माया ने लोज ॥ अनंतानुबंधी जे जव थोज ॥ २ ॥ नस्म पाम्यो रहे विह विषी ॥ तिम ते चारे रह्या तव लिपी ॥ अवता थई ते पड्या अचेत ॥ जिम कोईक घायल रए खेत ॥ ३ ॥ विद्युद्ध समिक त मोहनी परे ॥ अर्६ विशुद्ध जे मिश्र अरे ॥ अविशुद्ध मिष्यात मोहनी जोय ॥ त्रिहुं नेदे दर्शन मोहनी होय ॥ ४ ॥ ए त्रिणे थई तुं सांनल नूप ॥ मिथ्या दर्शन मंत्री रूप ॥ तव तेएँ। दंमें हिण्ड तेम ॥ अचेत थई ने पडिडे जेम ॥ ५ ॥ अपूर्व करंण नामें गुणयान ॥ पहोतौ तव आव मे सोपान ॥ नवमुं निर्वृत्ति बादर संपराय ॥ तुरत ते थाने चढ्यो क्रिपरा य ॥ ६ ॥ हणी मूर्वी पमाड्या त्यांही ॥ नपुंसक ने स्त्रीवेद उढांहि ॥ हा स्यरती अरतीने शोक ॥ नय इगंढादिक ढ दोष ॥ ॥ पुरुष वेद कियो गति नंग ॥ क्रोध मान मायानां अंग ॥ त्रिहुं नेदें जाएो तहकीक ॥ अप्रत्याख्याना वरणादीक ॥ । । बिहुं प्रकारना लोन समेत ॥ अनुक्रमें एहने कहा अचेत ॥ संज्वलनानें देतां मार ॥ नासी लोन गयो तिणि वार ॥ ए ॥ दशमे गुण स्थानें ते इष्ट ॥ सुक्तम संपराय पापिष्ट ॥ वतो न जणाए तिम ते विप्यो ॥ सूक्तम रूप करीने लिप्यो ॥ १०॥ ते पण केंडें आवी तेण ॥ मूर्वीग त कींधा ततखेण ॥ एह अठावीस कारण जूत ॥ मोहतणां जाणो अद नूत ॥ ११ ॥ श्रंगित माणस पडते सहु ॥ मोह पण मूर्वी पाम्यो बहु ॥ जिम जड थड शाखा कापवे ॥ वृक्त घणुं विसंस्थल हवे ॥ १२ ॥ उपशम श्रेणि महावज्र दंम ॥ सकुटुंबे हणि मोह प्रचंम ॥ इम निचेष्ट करी गुण गेह ॥ परमानंद पद पावतो तेह ॥ १३ ॥ उपशांत मोह नामें ग्रण स्था न ॥ एकादशमे पहोतो सोपान ॥ केवलीना सरिखुं चारित्र ॥ धरतो ते ति हां पुष्य पवित्र ॥ १४ ॥ द्ये सर्वार्थ सिद्धि विमान ॥ सकल सुरासुर पू ज्या स्थान ॥ पद एहवो ते मुनि पामियो ॥ वे घडी लगें तिहां विसामिचे ॥ १५ ॥ तव लोनें कांईक चेतन लही ॥ निज तनुषी जे जूदी नहीं ॥ दे होपकरण मूर्वा नाम ॥ बेिव कोप धरी तिणि वाम ॥ १६॥ मोकली ते

मुनिवरने पात ॥ तिणें जई कहा हृदयमां वास ॥ देहादिक मूर्वा घेरियो॥ गले जाली पात्रो फेरियो॥ १७॥ इग्यारमां गुण ठाणायकी ॥ पापणीएं ते पाड्यो क्षि ॥ अनुक्रमें पडतो ते अडवड्यो ॥ पहिले पावडिएं जई पड्यो ॥ १०॥ मिथ्यादरीन मंत्रीने हाथ ॥ सुंप्यो ते मूर्वीएं अनाथ ॥ तव तें अरि सघलायें कत ॥ पड्याते मुनिवरने पूंत ॥ १० ॥ परिघल पाप करावी तास ॥ एकेंडियादिकमां दीधो वास ॥ नरकादिक गतिमां नरपूर ॥ नवमां तेह नमाड्यो नूर ॥ २० ॥ उदय वदे सुणजो उजमाल ॥ चमोन्नरमी ए नाखी ढाल ॥ कमे तणी गति जे नर कले ॥ त्रिधा ताप तस दूरें टले ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्मसूर नामें अहे, नगर'निरूपम एक ॥ सुनंद नामें श्रावक ति हां, वसे धनवंतो हेक ॥ १ ॥ श्रेष्टिमां तें शिरोमणी, धना नामें तस ना र ॥ तनुज थयो ते तेहनो, पुंमरिक नामें कुमार ॥२॥ सर्व गाथा ॥१३१६॥ ॥ द्वाल पच्चोत्तरमी ॥

॥ मेरों नाह नितुर अनिमानी हो ॥ ए देशी ॥ बालपणाथी ते बुिं द्रीयो, सकल कलाएं वरीत हो ॥ तेने जोर पठन मित जागी हो, थो डा दिनमां ते घणुं जिएते ॥ गुणवंतें मुख्य गिणते हो ॥ ते० ॥ १ ॥ अधित विद्याएं ते अण धातो, कोई मुनिने पूळे वातो हो ॥ ते तो आगम नो अति रागी ॥ सकल कलानो सघलो वेरो ॥ किहां छे कहो अधिके रो हो ॥ ते० ॥ १ ॥ हादशांगिमां छे कहो साधु, चौद पुरवधी वाधु हो ॥ ते० ॥ वद्या अनेरे ठाम न दीसे, जाणो विसवा वीसे हो ॥ ते० ॥ गुरुने पूळे कहे ग्रे कहे कुमरने, तव ते पूछे जई गुरुने हो ॥ ते० ॥ ध ॥ गुरु कहे ग ज सम मिति जो थाय ॥ तो पूरव पहेलुं लखाय हो ॥ ते० ॥ वाण बम णी इम मिति पूंजे, सघलां लिखवा सूजे हो ॥ ते० ॥ पूर्व ए मुखपाठे जे नणाए, किणही लिख्या न जाए हो ॥ ते० ॥ घ ॥ ये ए पुलकें लिख्या निक्ष के नणावशो एतो हो ॥ ते० ॥ गुरु कहे यहस्थने केम ज णावुं, तव कहे साधु में थावुं हो ॥ ते० ॥ ध ॥ मात पितानी अनुमित मागी, संयम लीये ते सोजागी हो ॥ ते० ॥ महा महोत्सवसुं लई दीहा, गु

रु तणी सुणि शीक्षा हो ॥ ते० ॥ ज॥ चौद पूर्व ते नण्यो चूंपूँ, उदय व दे अनूपें हो ॥ ते० ॥ पचोत्तरमी ढालें चित धरजो, प्रमादने परिहर जो हो ॥ ते० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महाचरें तिणि समे, तन्मय देखी तास ॥ सनामां सहुको देखतां, मुखें मेख्यो नीसास ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ १३१६ ॥

॥ ढाल बहोतेरमी ॥

॥ रंगी रातो चूडो ॥ ए देशी ॥ सनायें वेठे सहु सेवके, पाणी जोडी रे त्व पूर्व्युं एम ॥ जो जो मोहनो जोरो ॥ नीसासो आज नाथजी, अति लांबो ते मुखें मेल्यो केम ॥ जो० ॥ १ ॥ करकपालें यापिने, मुखें बोले रे हवे आव्युं मोत ॥ जो० ॥ अलवे पंखी उमाडतां, जिम जाएरे गोफ णी गोला स्रोत ॥ जो० ॥ २ ॥ सदागमं वेरी सदा, श्रमारो रे तुमे जाणो अतीव ॥ जो० ॥ अनेद बुदें तेद्दसुं मिख्यो, जय कामें रे ते संसारी जीव ॥ जो० ॥ ३ ॥ सदागम कहेसे सर्वे, अमारा रे ए आगल मर्म ॥ जो०॥ जण जणने ते जणावशें, गहगहसे रे तिहारे चारित्र धर्म ॥ जो० ॥ ४ ॥ पुत्र पौत्रादिक गोत्रने, तव लणसे रे मली सघला लोक ॥ जो० ॥ वंशो बेद थाज़े तदा, मोह बोले रें इम मेलतो पोक ॥ जो० ॥ ५ ॥ तेहवो कोइ नथी देखतो, जे विघटे रें ए इष्ट संयोग ॥ जो ।। सखेद देखी स्वामिने, थया जांखा रें परषदना लोक ॥ जो० ॥ ६ ॥ निज्ञा नामें नारी तिसे, जंध ञ्चालस रे वैकव्य श्रंग जंग ॥ जो० ॥ स्वप्न जंखन च्रम ग्रून्य ता, जुंनादिक रे निज परिकर संग ॥ जो० ॥ ७ ॥ मावा पासायी उठी ने, करजोडीने कहे सुण स्वामि ॥ जो० ॥ ए अनाथनो स्यो आशरो, तुम दासियें रे एतो सींजे काम ॥ जो ।। । । चिंता शी ए वातनी, खण वो मूंगर रे हणवो मूषक महामझ ॥ जो । ॥ कीडी नगारा जपरे, शी कटकी रे देवज्ञ दिल्ले ॥ जो० ॥ ए ॥ ताजा तृणनी जपरें, कुहाडो रे जिम मारे कोय ॥ जो० ॥ आरित ए तिम जाणवी, तुम नामें रे कुण अनमी होय ॥ जो० ॥ १० ॥ काव्हे किसुं दीतुं नहीं, मूर्वीयें रे गले जाली तेह ॥ जो० ॥ एकादशमा सोपानधी, वाब्यो पाढो रे जिम पवनें खेंह ॥ जो ० ॥ ११ ॥ हरषें कहे तव हेजमां, महाराजा रे मरकलडो देह

॥ जो०॥ वारु वारु वढी वेगसुं, करो कारज रे तुमें कहो ढो जेह ॥ जो० ॥ १२॥ ताहरी पण मन कामना, सिद्ध थार्ट रे इम दीधी आशीस ॥ ॥ जो०॥ ढहोत्तेरमी ढालमां,वदे उदय रे धरो हृदयमां हीस ॥जो०॥१३॥॥ दोहा ॥

॥ तव सा पोती ते कने, पापिण परिकर खेह ॥ अवतास्त्रो तसु अंगमां, आलस प्रथम अहेह ॥ १ ॥ आलसने उदयें करी, संनारी सिंह सूत्र ॥ अरथ खेतां आरित वधे, जिम तिम लवें उत्सूत्र ॥ १ ॥ तव बीजे त्रीजे दिने, थिवरे थिर करि तास ॥ गुणवा बेसाड्यो जोरसुं, पण न गमे अन्या स ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १३४२ ॥

॥ ढाल सीतोतेरमी ॥

॥ होजी जरमर वरसे लो मेह ॥ ए देशी ॥ होजी तव निष्ठाएं अशेष, परिकर प्रेष्यो ते कने हो लाल ॥ हो जी सम कार्ले सर्वांग, व्याप्यो न कहे तां ते बने हो जाज ॥ १ ॥ हो जी जंनाएं ते जोर, वांसो घणुं मरहे वजी हो लाल ॥ हो जी हाथपग शिरने सर्वीग, कंपावे उंघने बलें हो लाल ॥ ॥ १ ॥ हो जी वंची धरी खुज दोय, कड कड मोडे आंगली हो लाल ॥ हो जी जूतावेशनी जांति, धुजंतो धरणी ढली हो लाल ॥३॥ हो जी खंगी पूर्व बेद्ध पास, ढबे ढीकजीनी परें हो लाल ॥ हो जी थविर पठावे प्राण, पण अक्र मात्र न उचरे हो लाल ॥४॥ हो जी निंद नीसामां आप, पने घणुं ते घेरियो हो लाल ॥ हो जी पडे पग्रनी परें तेह, जिहां तिहां प्रमिला प्रेरि यो हो लाल ॥ ५ ॥ हो जी काष्ट्रपरें कुठामें, सूवे संधारा विना हो लाल ॥ हो जी घोराएं घणुं जोर, चित्तमां न रहे चेतना हो लाल ॥ ६ ॥ हो जी पडिकमणे प्रनात, थविर ठठाडे महा इखें हो लाल ॥ हो जी जनो करी इक दिन्न, गुरु सूत्र गुणावे मुखें हो लाल ॥ ७ ॥ हो जी पलकमांहि जूपीत, प्रमिलायें तव पाडियो हो लाल ॥ हो जी कुंहणी ढींचण ने शीश ॥ नांपीने नमाडिन हो लाल ॥ ७ ॥ हो जी अक्र न नएो एक, मुनि प ण मोन धरी रह्या हो लाल ॥ हो जी अतिव्यापी तव उंघ, चिह्न न जाए जेहनां कह्यां हो लाल ॥ ए ॥ हो जी क्रिया करतां अनेक, चकुना चाला करे हो लाल ॥ हो जी केडि मुख कर ने पाय, मोडे पसारे बहु परें हो लाल ॥ १० ॥ हो जी निइा नारीयें एम,नव नव नेदें नचावियों हो लाल

॥ हो जी एहवां जोई खाचरण, खचरज सहुने खावियो हो जाल ॥ ॥ ११॥ हो जी एवडी एसी उंघ, एम सुजाण सहु को वदें हो लाल ॥ हो जी सीत्योतेरमी ए ढाल, उदय वदे धरजो हृदे हो लाल ॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ इम निडायें आचको, आगम विण अन्यास ॥ ढिड् हस्त जलनी परें, गलवा लागुं तास ॥ १ ॥ गहन अर्थ गया वीसरी, जिम जिम याये चंश ॥ तिम तिम लागे जहेरसो, आगम न गमे अंश ॥ १॥ अमृतसी गणि चंघने, अक्षाने अहोराति ॥ सूई रहे निव सलसले, वीसरी सूत्रनी वात ॥ ३॥ ॥ ढाल अहोतेरमी ॥

॥ बेटी टोमर मझकी ॥ ए देशी ॥ तव ग्रह नणे सो साधुकूं, केवज ज्ञाचा कांज वे ॥ घर होरी घणे छायसें, पायो तें छागम राज वे ॥ ॥ १ ॥ जाग बे ज्ञानी जागनां, जागनां वे श्रुत लागनां वे ॥ जा० ॥ देवे जो डर्गतिकों दरी, सुर चर शिव सुख खानि वे, सो दायें आया क्यों द रियें, गुनसागर श्रुत ज्ञानि वे ॥ जा० ॥ २॥ नरक निज्ञानी नींदको, मूढ देवे कौन मान वे ॥ चौद पूरवरस ठौरके, कह्या मेरा सच्चें मान वे ॥जा०॥ ॥ ३ ॥ तव तातो होयके सो बके, कहो उंघाता है कौन वे ॥ तुमकों जूठ कहे किने, बूरी ए बात जबून बे ॥ जा० ॥ ध ॥ गुरुजी हम तो गुनेहथे, स्रत एते एते कल बे ॥ हम तो मगनहिं पाठमें, दूजां न आवे दिल वे ॥ जा० ॥ ५ ॥ ग्रुरु तव चिंते चित्त में, अहो अहो एतो नवीन वे ॥ अ वगुण एहमां जपनो, महाजूठ बोले मलीन बे ॥ जा० ॥ ६ ॥ विप घा रित परें अन्यदा, मूर्कित घायल समान वे ॥ बोलाव्यो बोले नहीं, उंघ्यो सो असमान वे ॥ जा० ॥ ७ ॥ दिवसें सुपना देखिके, ज्यों ज्यों वके जो र बे ॥ जगावे जो को जजायके, तो बहुत करे बकोर वे ॥ जा० ॥ ७ ॥ जोरे ताकूं जगाय के, गुरु कहे क्यों वत्स आज बे ॥ एती वेर उंघ्या हता, तव सो तजिने लाज बे ॥ जा० ॥ ए ॥ उत्तर गुरुकूं यूं दियो, जब हुं अ र्थ चिंतु एकथ्यान वे ॥ तब तुम सबकूं कंघेकी, चांति लगी नगवान वे ॥ ॥ जाण ॥ १ण ॥ जूनो ताकूं जानिके, मुनिजनें मेख्यो उनेख वे ॥ कोउ क दर्थना निव करे, ग्रुरुयें पण त्यज्यो हेक वे ॥ जाण ॥ ११ ॥ मोह राजा ने माणसें, आवखुं तेह्नुं अंग बे ॥ सदागम तव नागो सही, सदबोधें त्यज्यो संग वे ॥ जा० ॥ १२ ॥ चारित्र धर्म पण चालियो, सर्व विर ति स्वयमेव वे ॥ पहिलेज पलाये तदा, ड्रगंधें जिम देव वे ॥ जा० ॥ ॥ १३ ॥ क्ष्मादिक नासीने गया, द्रशेपटाक्त दूर वे ॥ सम्यक् द्रशेनें सी म तेहनी, तजी वाज ते तूर वे ॥ जा० ॥ १४ ॥ मिथ्या द्रशेन मंत्रीसरें, तव तिहां पूखो वास वे ॥ मोहादिकें मिल तेहने, पीडी निर्णास वे ॥ ॥ जा० ॥ १५ ॥ मरण पमाडी मोकत्यो, निगोद एकेंडि मफार वे ॥ जव माहे नमाडिड, पठे तेहने निरधार वे ॥जा०॥१६॥ अछोतेरमीयें सांजलो, ढालें धर्मनो ढाल वे ॥धरमीजन धरजो सदा, उदय वदें उजमाल वे जा०॥१९ ॥ दोहा ॥

॥ चित्त वृत्ति अटिव इस्यें, विवेक गिरीने शृंग ॥ अप्रमत्त कूटें अति सुनग, जैनेंड्पुरें महाइंग ॥ १ ॥ निरानंद उत्साह विण, मजलत मेली सर्व ॥ चारित्र धर्म नृप आदि दे; बेठा हे हतगर्व ॥ १॥ मांहोमांहे इम क चरे, अहो हां कीजें आंहि ॥ अनव्य इनिव्य आप्या जुर्ड, मोहने अनेक सहाय ॥ ३ ॥ अस्विलित ते सघले फरे, फेडे आपणो पक्त ॥ आपणने जीरु एकज दीर्ड, तेपण नहीं सुदक्त ॥ ४ ॥ अनंत कालें आवी मिल्यो, आपणने ते जीव ॥ तेने पक्त पोषतां आपणो, उपजे व्यथा अतीव ॥ ॥ ५ ॥ आपण जव उंचो करां, तव नीचो घाले तेह ॥ उंचो आवण निव दिये, अरि मोहादिक एह ॥ ६ ॥ आपण एहने सुख इहिएं, ए न लहे उपगर ॥ मोहादिकने जइ मिले, आरित लहे अपार ॥ ७ ॥ गुणठाणे इग्या रमें, चौद पूर्व धर आदि ॥ पद आपण आरोपिएं, तजावी तास प्रमाद ॥ ७ ॥ तिहां घकी पण जीव ते, धर्म तजीने धाय ॥ मोहना दलने जई मिले, कोइक कर्म पसाय ॥ ए ॥ ग्रं किरयें किह्यें किग्रं, किहां जईएं फ रियाद ॥ अहो वेरा वाधी गया, किम जीतासे वाद ॥ १ ०॥ सर्व०॥ ३ ०॥ ॥ हाल उंगण्यासीमी ॥

॥ असवारी नृप शांति जी हो लाल, एदेशी ॥ मुखें मरकलडो देईने रे, सदबोध कहे तव स्वामि ॥ महा राजा ॥ आरित अवती एवडी हो ला ल ॥ करो वो इये कारऐं रे, ए तो कायरनुं काम ॥ म० ॥ १ ॥ हिंमत कहो किम हारियें हो लाल, ए शुं कांई नवुं अवे रे, अनादी ए चाल ॥ म० ॥ चाल्यो आवे वे सदा हो लाल ॥ लोक स्थित जगनि वडी रे, तेह

नो कमे न लोपे खाल ॥ म० ॥ हिं० ॥ २ ॥ काल परएति कमेनी रे, हे पटराणी प्रौढ ॥ म० ॥ कही न जाये ते वली हो लाल, नविंतव्यता क रे जांजणी रे, गति ने तेहनी गूढ ॥ म० ॥ हिं० ॥ ३ ॥ जे संसारी जीव कनें रे, जब करावे हे जूर ॥ मण ॥ हितकरी तुमे तेहने हो लाल, आरो पो जंचे परें रे, उल्ट छोए। कर ॥ मण ॥ हिंण ॥ ध ॥ चौद पूर्वधर जो करो रे, उपशांत मोह आरूढ ॥ म० ॥ तो पण ते जीव तिहां थकी हो जाल, मोहादिकने मिल करी रे, महा अज्ञानी मूढ ॥म०॥हिं०॥५॥ जब मां जिल्हा नमे रे, अई पुर्गल परावर्त ॥ मण् ॥ विवहार ए अनादिनो हो लाल, चाल्यो आवे सहु जीवनें रे, जमतां जव आवर्त ॥ म० ॥ हिं० ॥ ६॥ विस्मयक्यो ते वातनो रे, हृदयमां राखवो रेख ॥ म० ॥ तटें बे गं जुर्र तुमे हो लाल, मिथ्यानुं अंगज कहो अग्रो रे, जे कांई अविवेक ॥ मणा हिंगा । अरिनो एकज जीह ए रे, बेदी मूलनो पक्त ॥ मण॥ यश पडहो वजडावक्यां हो लाल, सुखी संसारी ए जीवने रे, करस्यां सह समक ॥मण।हिंण। ए॥ तो पण सिदिहोसे सही रे, नवितव्यताने नोग ॥ मण् ॥ समवायनां संयोगधी हो लाल, नव स्थिति काल परिएतें रे, ह्य न कर्मोदय जोग ॥ म० ॥ हिं० ॥ ए ॥ जे आपण कहो अठो रे, एक ए पाम्या सहाय ॥ म० ॥ ए पण न घटे आलोचवुं हो लाल, बहु जीरु प ण पामिने रे, मोहादिक मुंजाय ॥ म० ॥ हिं० ॥ १० ॥ रोधन करे रूठा थका रे, बाकी बल निव होय ॥ म० ॥ अरीए आपण जपरें हो जाल, श्रंत कीजें तक जोय ॥ म० ॥ हिं० ॥ ११ ॥ एक ए किम श्राणे जुर्ड रे, शत्रु अंत सहाय ॥ म० ॥ स्याने याउं सहु आकुला हो लाल ॥ जय पराजयनुं पारखुं रे, जाते दीहें जणाय ॥ मण् ॥ हिंण्॥ १२ ॥ कता वलानां पालिया रे, धीराना प्रासाद ॥ म०॥ सहु जाएो संसारमां हो लाल ॥ जगन्यासीमी ढालमां रे, जदय रत्न आव्हाद ।।म०॥ हिं०॥ १३॥ ॥ दोहा ॥

॥ तव ते जेटले सर्व ते, सदबोधनुं व्याख्यान ॥ करे तव कहाव्युंति हां, कमे परिणाम राजान ॥ १ ॥ अहो प्रतिक्वा आज में, पूरी पाडी ते ह ॥ पण पांकीने पूरवें, तुमसुं करी हुती जेह ॥ १ ॥ पदमस्थल पुर रा जिन्ने, सिंह विक्रम इणे नाम ॥ कमलिनी नामें ने प्रिया, तस न्दरें अ निराम ॥ ३ ॥ श्रंगज में श्रवतारिन, सिंहरय नामें सोय ॥ जेह सहायें तु मतणो, जीव ते श्रवसर जोय ॥ ४ ॥ हवे करो हर्ष वधामणां, एणे ज वें ए जीव ॥ पक्त तुमारो पोषशे, श्राशक धई श्रतीव ॥ ५ ॥ पडशे निह मोह पाशमां, पूरण पुण्य सहाय ॥ श्राप्यो ने में एहने, जेणे पातक क्य जाय ॥ ६ ॥ चलव्यो केहनो निहं चले, सदबोध सदागम लीन ॥ मुगतें जातां लिंग मोहने, दलें न होसे दीन ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ १४०९ ॥ ॥ ढाल एंशीमी ॥

॥ वागा जांगी ढोल॥ ए देशी॥ इम सुणि आणंद पूरें, हे सिल इम सुणि आणंद पूरें ॥ उठी ते महा आनंद नरें ॥ समिकत आदि सन्तर, ॥हे०॥ मिलने महोत्सव बहु करे ॥ १ ॥ जिनेंड पुरनो लोक ॥हे०॥ वारु करे रंग वधामणां, शम्यो समूलो शोक ॥ हे० ॥ नीरुनां ले नामणां ॥ १ ॥ वांधे तोरण वार ॥ हे० ॥ कमलें आठादित करुं ॥ कनक कलश धिर हार ॥हे०॥ सोधें सोधें सुंदरुं ॥ ३ ॥ शणगारी हट श्रेणि ॥हे०॥ घर घर गुडी उठले ॥ उटकायो हरणेण ॥ हे० ॥ राज मारग कुंकम जलें ॥ ४ ॥ मृग मदने घनसार ॥ हे० ॥ नेली चंदननें रसें ॥ रायांगण दरबार ॥ हे० ॥ उयल पुरुष गांटे तिसे ॥ ५ ॥ कनक रत्ननो राशि॥ हे० ॥ मन मोदें ये मांगणां, अनय दान उल्लास ॥ हे० ॥ देवरावे राजा घणा ॥ ६ ॥ वागां मंगल तूर ॥ हे० ॥ माननें माप वधारियां ॥ शोना वाधीसनूर ॥ हे० ॥ जिन मंदिर शणगारिया ॥ ९ ॥ उद्यरतन कहे एम ॥ हे० ॥ एंशीमी ए ढालमां ॥ धरमग्रुं धरजो प्रेम ॥ हे० ॥ मत पडो माया जालमां ॥ ० ॥ वालमां ॥ धरमग्रुं धरजो प्रेम ॥ हे० ॥ मत पडो माया जालमां ॥ ० ॥ वालमां ॥ धरमग्रुं धरजो प्रेम ॥ हे० ॥ मत पडो माया जालमां ॥ ० ॥

॥ हवे सिंहरच ते राज सुत, शिग्रुपणे पण सोय ॥ देखी नमी ग्रुरु देवने, हिये हरिवत होय ॥ १ ॥ जनकसाथें जिन मंदिरें, जई जोतां जिनरूप ॥ स्नात्रादिक संपेखतां, आनंद लहे अनूप ॥ १ ॥ साधु संगें सुख जपजे, श्रवणे सोहाय वयण ॥ दान देतां दिल जल्लसें, निरखी रीके नयण ॥ ३ ॥ इम पुण्योदय पोषतां, लघु वयमां तिणें लाध ॥ खल्प दिनें सचली कला, बोलतां न लहे बाध ॥ ४ ॥ विषयनी न धरे वासना, केव ल करुणाधाम ॥ साधु कन्हे श्रुत सांचलें, जावे जव जाव विराम ॥ ५ ॥ रूपें रितपित हारव्यो, यौवन पाम्यो जाम ॥ सुललित सुरपित सारिखो,

पण न गमे नारीनुं नाम ॥ ६ ॥ विरमे क्लण क्लण विश्वयी, वांबे शिव सुख वास ॥ गुण निधि नामें गुरु तिणे, एक दिन नेट्या खास ॥ ७ ॥ च ज नाणी ते गुरुकने, सांनित श्रुत सुविशेष ॥ विधिसुं ते संयम वरे, श्रा रंन त्यजी श्रशेष ॥ ७ ॥ सर्व गाया ॥ १४२३ ॥

॥ ढाल एक्यासीमी॥

॥ बेडले नार घणो हे राज, वातां केम करो हो ॥ ए देशी ॥ चारित्र धर्म राजा चितमांहे, तव पाम्यो महा तोप ॥ सहित परिकर रहे ते पासें, पुष्यनो करवा पोष ॥ १ ॥ इम ते जोर नडें अएगार, मोह नृपना नड साथें ॥ ए आंकणी ॥ अति अनुरक्त थई ते मुनिसुं, त्रिचुवननी जे त्राता ॥ सर्व विरति नामे सा क्यामा, योगिनी जै जय दाता ॥ इ० ॥ २ ॥ सद बोध योध सदा पासेथी, अध कुंण न रहे अलगो ॥ सम्यक् प्रकारें सम्य क् दरीन, वपु साथें रहे वलगो ॥ इ० ॥ व ॥ अप्रमाद महासिंधुरे जपरें, जिज जावन खंबाडी॥ प्रशम कवच पहेरी जिली जांते, विवेक निसान वजाडी ॥ इ० ॥ ४ ॥ ते गजें बेसी सिर सोहावे, संतोष टोप सनूरें ॥ अ ढार सहस सीलांग सामंते, परवरिचे दल पूरें ॥ इ० ॥ ५ ॥ धर्मे धनें दि न दिन वाधंतो, पुण्योदय इणे नामें ॥ दंम नायक ते आगल दोडे, अरि उसारण कामें ॥ इ० ॥ ६ ॥ समय समयप्रत्यें ग्रुन मनना, प्रगटे जे परि णाम ॥ पायक ते चाले खल घायक, आगल जिहां अमिराम ॥६०॥७॥ अणियें अणि आवीने अडिड, मोह राजा मुनि सामो ॥ वक्स्यत वीं ध्युं तव तेह्नुं, तल कुंतीं धिर तामो ॥ इ० ॥ ए ॥ ज्ञान दर्शन चारित्ररू पी ए, त्रिहुंसक्षें करि त्राहे ॥ हृदयमां रागने देपने रोषें, कामने कूटी पा हे ॥ इ० ॥ ए ॥ जीव दया परिणाम निवाणे, हणे हिंसा सामंत ॥ मृ षा वादने सत नाषारूप, मुजरें मारे संत ॥ ६० ॥१० ॥ श्रदत्तादान सुन टनुं मस्तक, शोच जलकें करी जेदे ॥ ब्रह्मचर्य जालाडें महा जट, मैशुनने **उत्तेदे ॥ ३० ॥११॥ मान सुजटनुं मान मुनि सो, मार्दव दंमें मोडे ॥ रिज्ज** नालडियें माया मुसी, दोषी न दीवो बोहे ॥ इ० ॥ १२ ॥ संतोष यष्टिका यें ते नट, लोननुं मस्तक मोडे ॥ ग्रूरो देखीने कोई शत्रु, साहामां सिंग न जोडे ॥ इ० ॥ १३ ॥ देह असार चिंतन धर्म साधन, साहस सत्व ने धीर ॥ इत्यादिक खायुधें जीते, परिसहने ते वीर ॥ इ० ॥ १४ ॥ तनुनी थि

रता लेई तोमर, उन्मूली उपसर्ग ॥ इम मारीने कीधो अचेतन, वेरीनो ते एो वर्ग ॥ इ० ॥ १५ ॥ इज्ञा रोधगवाने मारे, परियह नटने त्रोडे ॥ क् मा रूपीचे खद्ग धरीने, क्रोधनी सिंधि विबोडे ॥ इ० ॥ १६ ॥ उदयरतन कहे एक्यासीमी, ढाले धरमी लोक ॥ सदा करजो सेवा साधुनी, जे साधन परलोक ॥ इ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शत्रुने इम समावतां, जरतां पुष्य जंमार ॥ बहु प्राणीने बोधतां, स फल करे अवतार ॥ १ ॥ प्रबल करी निज पक्तने, खल पमाडी क्रीण ॥ अंत समे लिह ढूकडो, तनू जाणी बल हीण ॥ २ ॥ सर्वगाथा॥१४४२॥

॥ ढाल व्याशीमी ॥

॥ कुंतारे माता इम जाएे ॥ ए देशी ॥ नमो रे नमो नियंथने, एहवा जे आचारी रे ॥ घणा काल लगें आदर घणे, ताखां बहु नर नारी रे ॥ ॥ न० ॥ १ ॥ संक्षेपणा सो साधुयें, बिहुं नेदें कीधी रे ॥ इव्य अने नावें थकी, अबे जेह प्रसिद्धि रे ॥न०॥२॥ तव गीतारथ तपोधने, पुरथी ते प रवरित रे ॥ पर्वतनी कम्णे जई, संघारो तिणे करित रे ॥नण॥३॥ प्रथम शिला तल पूंजिने, माननो संयारो रे ॥ पायरीने ते कपरें, मन करि एक तारो रे ॥न०॥४॥ बेसी पर्यकासने, कर संपुट धरी सीसे रे ॥ अमाडीने जचरे, शक्रस्तव सुजगीसे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ नमी सद्घ जिनराजने, शास नपतिने सोइ रे ॥ प्रणमीने पूछे नमी, गुरुने गुणवंत जोइ रे ॥ न० ॥ ॥६॥ पचरव्या हे तो पण पहे, पापस्थान अहार रे ॥ प्रेमेंसुं पचर्व फरी, नियमें चार आहार रे ॥ न० ॥ ७ ॥ प्रतिबंध तनुनो परिहरि, अतिचार ञ्चालोइ रे ॥ ञ्चादार सवि पचखे विल, हिए हरिपत होइ रे ॥न०॥ ७॥ पादोपगमन अणसण, जेइने गह गहितो रे ॥ देव मनुष्य तिर्यचना, उप सर्ग ते सहितो रे ॥ न० ॥ ए ॥ एक मास तां इणि परे, अणसण आ राधी रे ॥ वेहेला उसासा लगें, ग्रुद संयम साधी रे ॥ न० ॥ १० ॥ स माधि कालें करि थयो, सातमें सुर लोगें रे ॥ दिव्य ते महर्द्धिक देवता, संयम फल योगें रे ॥ न० ॥ ११ ॥ जन्कष्टो तिहां आजखो, सागरोपम् सोल रे ॥ नोगवे एके आगद्धं, करतो रंगरोल रे ॥ न० ॥ १२ ॥ जदय

वदे इम ब्यासीमी, ढाल ए में बोली रे ॥ संसारमां धर्म सार हे; , जुर्र अंतर खोली रे ॥ न० -॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीर्थ तीर्थंकरनी तिहां, जगित करी तिणे जाव ॥ पुष्णोदय पोढो कीयो, मुनिने सीस नमावि ॥१॥ सुरपदनां सुख जोगवी, तिहांथी चिव ने तेह ॥ कमल पुर नामें पुरी, वारू पूर्व विदेह ॥ १ ॥ श्रीचंइ नामें नृप तिहां, कामिनी कमलातास ॥ श्रंगज तेहनो कपनो, जानु नामें ते खास ॥ ३ ॥ पूर्व परें बाल कालची, घरतो तिमहिज धमे ॥ पुष्णोदयने पेखतो, करे सदा ग्रंज कमे ॥ ४ ॥ अनुक्रमें जोगवी राज सुख, पुत्रने आपी पाट ॥ दीह्म यही तिणें मोह दल, दूर कखुं दंह वाट ॥ ५ ॥ संयम सुधुं पा लिने, श्रंते आणसण धारि ॥ नवमें श्रेवेकं सुर थयो, ते जानुं आणगार ॥ ६ ॥ त्रीस सागरोपम आजखो, पाली पूर्व विदेह ॥ पदम पुरें तें सुत थ यो, सीमंतक नृप गेह ॥ ७ ॥ राजवियां सिरसेहरो, इंइदन अनिधान ॥ राज्य तजी संयम जजे, तेमहिज ते तिणि थान ॥ ० ॥ हीण पमाडी मो ह दल, पुष्योदय करि पुष्ट ॥ श्रंते आणसण कचिर, दूर कखा अरि इष्ट ॥ ए ॥ मरण समाधें ते मरी, सर्वार्थ सिद्धि विमान ॥ श्रहमिंइ सुरपणें कपनो, महर्धिक महा रिद्धवान ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ १४६५॥

॥ ढाल ज्यासीमी॥

॥ धण समर्थ पीछ नान्हडो ॥ ए देशी ॥ सकल मंगल जय दायिनी, चारित्र धमें राजानी सेव ॥ छवन नानु कहे केवली, फले तेहना नृप सु ण तुं हेव ॥ स० ॥१॥ एहज गंधिलावती विजयमां, इंड्पुरीयी अधिक अ तूप ॥ चंड्पुरी नामें पुरी, अकलंक नामें राजा तिहां नूप ॥ स० ॥ १ ॥ सकल नूपाल मौलि श्रेणे, पूजित हे जस पदअरविंद ॥ सुनग समृद्धि सक्तें करी, अविन तल उपे जिम इंड् ॥ स० ॥ ३ ॥ जे श्रीजिनपदपंकजें, मधुकरनी परें रहे मगन्न ॥ देवी हे तेहने सुदर्शना, शीलग्रं जेहने लागी लगन्न ॥ स० ॥ ४ ॥ धवल समिकतने धारिणी, सुपनमांहि ते देखी सिंह ॥ उज्वल शिस्तो एकदा, वदन प्रवेश करंतो अबीह ॥ स० ॥ ५ ॥ ते ई इदत्त अणगारनो, तिहांथी जीव चवी ते तास ॥ छदरें आवी जपनो, पुत्र पणे पहोती मन आस ॥ स० ॥ ६ ॥ तव सा हरखी सुपन ते, जगत

पितने नाखे जाय ॥ सुपन पाठक तेडी तदा, परमारथ तस पूठे राय ॥ स०॥ ७ ॥ तनुज होसे नुम ते कहे प्रच, ए उत्तम सुपन पसाय ॥ कु ल दीवो कुल केसरी, अखं नूमं मल नोगी राय ॥ स०॥ ० ॥ तव तूवो ये नृप तेहने, पारितोषिक दान प्रनूर ॥ विदाय कह्या संतोषिने, अअम हीषी आनंद कर ॥ स०॥ ए ॥ सुखें गर्न ते निर्वहे, देवपूजा दानादि अ नेक ॥ मोहोला जे जे कपजे, पूरे नृप ते एके एक ॥ स०॥ १०॥ प्रस वे सा पूरे दिनें, पुत्र रतन्न पुंज समान ॥ आवासने उद्योततो, तरिण परें तपे तेजवान ॥ स०॥ ११ ॥ हरखें हीए हुलरावती, महोटो मुक्ताफलनो हार ॥ उद्यसते उरें दोडीने, चंड् धारा दासीयें ते वार ॥ स०॥ १२ ॥ वसुधापितने वधामणी, तनु जन्म्यानी दीधी तिणें जाय ॥ पहोचे सात पेढी लगें, दान तेहनुं तस दीधुं राय ॥ स०॥ १३ ॥ नगरमांहि ते नव नवा, . मादलना थाए धोंकार ॥ आणंद रंग वधामणां, उत्सव तिहां थाए अपार ॥ स० ॥ १४ ॥ कनकादिक बहु दान ये, वंदीवानना ठोडे वंध ॥ महापू जा जिन मंदिरें, नेहसुं रचावे निरंद ॥ स० ॥ १५ ॥ खान पानने दानसुं, गीत गान अति तान मान ॥ राजाने पुरजन सवें, मुदित कखो देई बहु मान ॥ स० ॥ १६ ॥ मानने माप वधारियां, राज कर मेख्या महाराज ॥ उदयरतन कहि ढाल ए, ज्यासीमी वोली ग्रन साज ॥ स० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिदार्थ नामें सुनग, गणक तेडी निज गेह ॥ जनम समय निज जातनो, नृप पूने धिर नेह ॥ १ ॥ केहेवी वेला ने कहो, तव तिहां बोव्यो तेह ॥ महा राजा मन देईने, सांजलो धरी सनेह ॥ १ ॥ संवत्सर सानं द ए, शरद रितु सुखकार ॥ कार्तिक मास कव्याण कर, तिथि ने बीज उ दार ॥ ३ ॥ सुरगुरुवार सोहामणो, कक्क कतीका तृष रास ॥ धृतियोग कौलव करण, ग्रुज यह निरीकृत खास ॥ ४ ॥ लगन अने लख लाज कर, यह सर्व उच्चस्थान ॥ आव्या ने होरा लहो, उई मुखी राजान ॥ ५॥ पाप यह क्यारमें, जावि ने सुणो जूप ॥ एहवी वेलाए जनमिर्च, कुमर होसे कुल रूप ॥ ६॥ ग्रुर वीरने धीर अति, तेजस्वी जसवंत ॥ धर्मी प्रता पी महाधनी, राजेंड् होसे तंत ॥ ९ ॥ तृष रासि ए जनमिर्च, फल हवे सांजल तास ॥ जोसी कहे जोई जुगतिसुं, अवनिपति सुण उद्घास ॥ ए ॥

यतः ॥ नोगी दाता ग्रुचिर्दक्तः, स्यूजगंमोमहाबजः ॥ अर्थवानल्पनापीच, स्यिरचित्तोजनित्रयः ॥ १ ॥ परोपकारी कांतश्च, बहुपुत्रः शोर्यसंयुतः ॥ ए वं ग्रुणगणोपेतो, हुषेजातो नवेन्नरः ॥ १॥ समानां च शतंजीवेत्, पंचित्रंशित कं यदि ॥ नृमृतश्चतुष्पदातस्य, मरणं रोहिणीबुधे ॥ ३॥ सर्व गाया ॥ १ ४ ए ३ ॥ ॥ ढाज चोरासीमी ॥

॥ कोई पत्र लावे दीनानाथनुं ॥ ए देशी ॥ जूर्र पुष्यतणां फल प्राणि यां, नव फंद जे फेडे ॥ पुखें ग्रह होय पाधरा, वली वैरी न विहडे ॥ जु॰ ॥ १ ॥ बारें राशिनां फल बहु, नाष्यां निल नांतें ॥ अवनिपतिने इ णि परें, गणकें गुणवंतें ॥ जूण ॥ श ॥ महाविदेह देत्रमां, ऊपनो ते मा टे ॥ कोडि पूरवनो आठखो, लहो तेहनुं सुघाटे ॥ जू० ॥ ३ ॥ विल ते जोसी नृपने वदे, वारे राशिनां बहुलां ॥ फल नाख्यां ने आगमें, समजो ए सघलां ॥ जू० ॥ ४ ॥ शीखव्यां ते सुशिष्यने, सर्व जे ग्रुन टाऐं, व्याप्या तिहांथी विश्वमां, तेह काल प्रमाएों ॥ जू० ॥ ५ ॥ यतः ॥ ज्योतिषं नि र्निमित्तं च, यज्ञान्यदपि तादृशः॥ अतीं हियार्थ तज्ञास्त्रं, सर्व सर्वज्ञपूर्व कं ॥ १ ॥ ततोत्रयोव्यनिचारं:स्यात्केवलं नरदोपतः ॥ विजागं हि न जानी ते, शास्त्रस्थाव्पश्चतोनरः ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ जन्म समय जोतां सदी, वाल क ए बलीर्ड ॥ होसे जाचा हीरा जिस्यो, अनमी अति कलीर्ड ॥ जू० ॥ ६ ॥ जाण घणुं जोसी तुमे, सदा रहो ताजा ॥ सत्य कहो संशय वि ना, रीफी कहे राजा ॥ जू० ॥ ७ ॥ सर्वे विण संदेह विना, साचूं कुण नाखे ॥ अज्ञानीनुं उच्चखुं, कोई कबूल न राखे ॥ जू० ॥ ७ ॥ ज्ञानी वि ना ए ज्ञाननो, निर्वाह किम थाय ॥ सर्वज्ञ विण संसारमां, किऐं सत्य क हेवाय ॥ जू० ॥ ए ॥ प्रेमें इम प्रशंसिने, दान जोसीने दीधुं ॥ राजाएं महा रीजनुं, लक्क्मीफल लीधुं॥ जू०॥ १०॥ दानमानें सनमानिने, वी सज्यों तेह ॥ उदय वदे कही ढाल में, चोरासीमी एह ॥ जू० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बली कुमर ते बालनुं, निरुपम दीधुं नाम ॥ सहु साथें ग्रुन मुहूर तें, सानंदें पुरस्वाम ॥ १ ॥ पांच धावे पाली जतो, वाधे दिन दिन वीर ॥ पुष्योदयना पूरची, शिग्रु ते महा सुधीर ॥ २ ॥ बालपणाची बहु चयो, सदबोधग्रुं तसु संग ॥ समकित तो साथेज हे, पूरण पुष्य प्रसंग ॥ ३ ॥ सकल कला साधी सबल, क्तमा ग्रेण न लहे क्लोन ॥ ग्रुरुता अने गंनीरता, थिरता थई थिर थोन ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ १५१० ॥

॥ ढाल पंच्याशीमी ॥

॥ आसाढो धुर उनह्यो ॥ ए देशी ॥ योवन वय ते पाम्यो यदा, वाध्यो तव तनु वानो रें॥ सुजाए सुधा जन संगनो, तेहने लागो तानो रे ॥ ॥ यो० ॥ १ ॥ स्नात्र महोत्सव नित करे, विधिसुं सुणे ग्रुरुवाणी रें ॥ दे हरे देव पूजे सदा, अंगें ऊलट आणी रें॥ यो०॥ १॥ शासननी उन्न ति करे, रथे यात्रा गीत गानो रे॥ नृत्य करावे नित नवां, दीनने दीए दा नो रे ॥ यो ।। ।। चारित्र धर्भना सैन्यसं, अति परिचयं थयो तासो रे ॥ बीहीकें निज बल लेईने, मोहें लीधो वनवासो रे ॥ यो० ॥ ४ ॥ राग देप दूरें रहे, मबकी मारी क्रोधें रे ॥ शैलराज न जुए साहमुं, शवता कूप ने शोधे रें ॥ यो० ॥ ५ ॥ सागर खारे सागरें, गयो जोइ गति माठी रे ॥ विषय पंचेनी वासना, निषट जाये ते नाठी रे॥ यो० ॥ ६ ॥ ऋषणता कोपी घणुं, जय पामी जाए जागी रे ॥ अविनयें जचालो जह्यो, लालचने बीहिक लागी रे ॥ योण ॥ ७ ॥ विनय प्रशम मृडने ऋजु, संतोप आदि सुरंगें रे ॥ गांनीर्य स्थेर्य शौर्यादिक, गुए ए वस्या तसु अंगें रे ॥ यो० ॥ ॥ ए ॥ कीरति प्रसरी दशो दिशें, मात पिताने मोहो रे ॥ अतिशय ते क पर कपनो, ऋण न खमाये विबोहो रे ॥ यो० ॥ ए ॥ घर घर गुण गीत तेहनां, कुलवधु गाये केई रें ॥ केई सुरी केई किन्नरी, हीए हर्ष धरेई रे ॥ यो० ॥ १० ॥ नाट चारण केई नणे, ग्रुण जेहना गह गाटो रे ॥ सुधी जनने सुरपण केई, बोले तस ग्रण पाठो रे ॥ यो० ॥ ११ ॥ पंचाशी मी ढालमां, फेरा लाख चोरासी रे ॥ उदय वदे ते नवि फरे, मित जेऐं जिनमतें वासी रे ॥ यो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जसु सघले यश विस्तक्षो, ते यश जुबधी जोर ॥ रूपें रंज हराव ती, राजसुता तिण ठोर ॥ १ ॥ मानमेटी ग्रण पेटी ते, साथें जई शुज साज ॥ अनेक एवी एके समे, कुमरने वरवा काज ॥ १ ॥ पूरव उपचि त पुष्पफल, कुमरनुं कोई बलवान ॥ आवी आकर्षी तेहनी, स्वयंवरा ति णि स्थान ॥ ३ ॥ सकल कलायें शोनती, सुमुखी सकल सुरम्य ॥ जतारा नृपें आपिया, रहेवा तेहने रम्य ॥ ४ ॥

॥ ढाल ढ्यासीमी ॥

॥ अवधें आवियें महाराज ॥ ए देशी ॥ व्रतविषे मन वासना, बली कुमरनी बलवंत ॥ वसी तिऐं विवाहनी, कांई चाह न धरे चिंत ॥ तव इम कहे मातने तात ॥ १ ॥ सुदर्शना तसु मावडी, अकलंक राजा आ प ॥ अनिप्राय कुमरनो उलखी, जई कहे एम जवाप ॥ त० ॥ २ ॥ खां तें ते खोला पायरी, खरे इखें पडदो खोल ॥ एकांतें अंजिल बांधिनें, बो खे ते एहवा बोल ॥ त० ॥ ३ ॥ मावीत्र घर्मनुं मूलतो, जेहना उसींगल न थवाय ॥ पुत्रनुं प्रीते अते, इम जंपे श्रीजिनराय ॥ त० ॥ ४ ॥ मावित्र जो करी लेखवें तो, कह्यं अमारुं एक ॥ मान तुं मन कोमल करी, हवीला न थईएं वेक ॥ त० ॥ ५ ॥ तुक युणें त्र्याकर्षीयकी, बहु राजसुता युणरास ॥ मात पितानी मोकली, आवीरे आपणे वास ॥ त० ॥ ६ ॥ खयंवरा ए सुंदरी, नाजुक नवले वेश ॥ इहां आवी जो पाठी फरे, तो ऊजड थाये देश ॥ त० ॥ ७ ॥ अबला निराशें ए वली, तो अमने आरित होय ॥ आंटी तजी तूं तेवती, एक वार ते उंचो जोय ॥ त० ॥ ७ ॥ कह्यं अमारुं जो करो, तो ह रिणाक्तीयें हाथ ॥ यहीने मन मेलसुं, सुख जोगवो सहु साथ ॥त०॥ ए॥ ए बापडी इहां चालिने, आवीबे धरी कमेद ॥ इहा पूरो एडुनी, नोगवी सुख बहु नेद ॥ त०॥१०॥ अमने पण सुख कपजे, जो जोइएं ताहरुं राज ॥ पढ़ी पाट छापी पुत्रने, साधजे परनव काज ॥ त० ॥ ११ ॥ मा बापनुं मन राखतां, अवग्रुण तुफने रेख ॥ इहां कपजतो नथी, दिलमां वि चारी देख ॥ त० ॥ १२ ॥ उघासीमी ए ढालमां, जदयरत्न जांषे एम ॥ ज सिंगल माय बापना, कहो न थवाएं केम ॥ न० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली कुमर तव चिंतवे, अहो ए मोटो बंध ॥ ए महारा मा बापनो, ए कज हूं हूं नंद ॥ १ ॥ जो उलंघूं आण तो, आरित लहे अत्यंत ॥ तिणें मुफ मननी कामना, हवणां न होवे तंत ॥ १ ॥ पूरुं तिणे प्रेमेंकरी, हवणां ए हुंती हुंस ॥ ढूटाये निह जे विना, सो खांउं जो सुंस ॥३॥ जोग करम विण जोगवे, योगनो न मिले योग ॥ सरोगने सरस अहारनो, जिम न घटे संयोग ॥ ४ ॥ इम मनमां आ़लोचिने, मात पितानो मोद ॥ पूरो ते पाड्यो तिणें, वधू वरी सविनोद ॥ ५ ॥ वारु विवाद उत्सव कस्रो, पुर जन वाधी प्रीत ॥ आनंद सहुने ऊपनो, रूडी देखी रीत ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यासीमी ॥

॥ नवो पर्वेवडो रे ॥ ए देशी ॥ तव अकलंक ते राजिए रे, सुंदर जोई ग्रुननारी रे ॥ जो जो पुएयथी रे ॥ कुमरने काजें करावियारे, मोहल घणा मनोहार रे ॥जो०॥१॥ पुरायी परिघल जोग, पुरायी सुखसंयोग, पामी जोग, रिसर्र नोगवे रे॥एक पासें वहे आपगारे, एक पासें आराम रे ॥जो०॥ क्रीडा गिरि सर वाषियें रे, उपे तें थल अनिराम रे ॥ जो ० ॥ २ ॥ वारु वृक्तनी आवली रे, दीसे गुहिर'गंनीर रे ॥ जो० ॥ आगल कारंज कढ खे रे, नीजरणें जरे नीर रे ॥ जो० ॥ ३'॥ सुंदरीना सोहामणा रे, बिहुं पासा प्रासाद रे ॥ जो० ॥ विचे बेठकनो बंगलो रे, विमानसुं मांमे वाद रे॥ जो०॥ ध ॥ पोपट बोर्ज पांजरे रे, हेवे हीं मोलाखाट रे ॥ जो०॥ कपर मोतीनां जूंबखां रे, चंडुएं ग्रुन थाट रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ बत्रीस बद तिहां बेसीने रे, निरखी नाटारंज रे ॥ जो० ॥ नित नवलां सुख जोगवे रे. नित नवला अचंन रे॥ जो०॥ ६॥ सुरना जहेवी साहेबी रे, जोगवे जे नरपूर रे ॥ जो ० ॥ पूर्व नवना पुण्यची रे, नित नित चढते नूर रे ॥ ॥ जो ।। ।। ।। कुवलयचं इकेवली कने रे, तात देई तेहने राज रे ॥जो ।।। महाव्रत खेई मुगतें गयो रे, साखां आतम काज रे॥ जो०॥ ए ॥ माता पण महात्रत आदरी रे, पाली पहोती सुरलोक रे॥ जो०॥ बलि राजा राज नोगवे रे, पुष्यनो करे बहु पोष रे॥ जो०॥ ए॥ अनमी आण म नाविश्रा रे, सीमाडा सामंत रे ॥ जो० ॥ चालीस लाख पूरव लगें रे. राज करे ते तंत रे ॥ जो० ॥ १० ॥ वीश लाख पूरव वोलियां रे, कुमर पणे निरधार रे ॥ सावलाख पूरव सहु मली रे, इम बोख्या चदार रे ॥ ॥ जो ० ॥ ११ ॥ दया धर्म दीपाविच रे, जैन शासन तिणे जोर रे ॥ जूना देवल जिन राजनां रें, समराव्यां वोर वोर रे ॥ जो० ॥ १२ ॥ नवा पण निज देशमां रे, पोढा बहु प्रासाद ॥ रे ॥ जो० ॥ गाम नगर सीम मूंगरें रे, कराव्या मन आब्हाद रे॥ जो०॥ १३॥ संघपति तिलकध राविने रे, रथयात्रा करी रंग रे ॥ जो० ॥ देशें देशें दीपावियो रे, श्री जिनधर्म छ

नंग रे ॥ जो० ॥ १४ ॥ नोग तिएो एवा नोगव्या रे, देवने जे इर्जन रे ॥ जो० ॥ राज करतां पए राजिये रे, दिलमां न धस्यो दंन रे ॥ जो० ॥ १५ ॥ उदय रतन इम जचरे रे, सत्यासीमी ढार्ले हयझ रे ॥जो० ॥ बू जावतां बूजे सदा रे, पए सुं बूजे बयझ रे ॥ जो० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चौदशनें दिन एकदा, उपवासें ते तेण ॥ सांफ समे जिन पूजिने, सफाय करी हरखेण ॥ १ ॥ सामायक पोसह ववी, जावन जावतां जूरि ॥ रजनी विरामें राय ते, सदबोधादि पूरि ॥ १ ॥ चित्तमांहि इम चिंतवे, इतर परें संसार ॥ केवल विषयने कारणें, में हास्रो अवतार ॥ ३ ॥ ॥ ढाल अवशासीमी ॥

॥ घणो प्यारो घणो प्यारो प्राणयी तुं प्रज्ञजी ॥ ए देशी ॥ सुर नोगें सुरे नोगें जे उनगी नहीं जी, तुब नरने तुब नरने नोगें ते किम एह हो ॥ पू राये पूराये विषयनी वासना जी, अही एतो अही एतो कहेवाये अनेह हो ॥ र ॥ जम वारो जम वारो छहो छहेनें गयो जी, संसारें संसारें नहीं कांई सार हो ॥ चांते जे चांतें जे रम्य नासे अबे जी, देहादि दे हादि स्वजन परिवार हो ॥ ज० ॥ २ ॥ पण ते तो पण ते तो आखर अ नित्य हे जी, वाघणने वाघणने मुखें जिम कोई हो ॥ पेसीने पेसीने वां वे जीववुं जी, पण केतो पण केतो जीवे सोइ हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ मूढ म नसुं मूढ मनसुं माने मोहेंकरी जी, यौवनने यौवनने रूप अन्तप हो॥ पण इंद्र पण इंद्र रोगतणे वसें जी, क्लमांहि क्लमांहि थाय ते कुरूप हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ सुरवधुनां सुरवधुनां जे मन रीजवे जी, तेहने न करे तेहने न करे चंमाली कबूल हो ॥ जराने जराने रोगना योगथी जी, ते हवुं तनु तेहवुं तनु थाएं सूल हो ॥ ज०॥ ५॥ बाह्यदृष्टें बाह्यदृष्टें जे प्यारी लागे बहू जी, कमलारो कमलारो कोडी जपाय हो ॥ इन्नंतां इन्नं तां आवी निव मिले जी, जो मले तो जो मले तो जोतांमां जाय हो ॥६॥ बते तो बते तो सुख नहीं तेहवुं जी, वित्त जाते वित्त जाते जेहवुं इःख थाय हो ॥ जो रहे तो जो रहे तो आखर पण गंमवुं जी, तेह धनने तेह धनने काजें कुण धाय हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ राज्य पदनो राज्य पदनो पण मद जे करे जी, अविवेकें अविवेकनुं विजसित तेह हो ॥ नृप केई नू

प केई नीख मागे घणा जी, जिहारे जिहारे खावे पुण्यनो बेह हो ॥जण ॥ ७ ॥ जोरालो जोरालो होय जे जेहथी जी, ते तेहने ते तेहने गंजे त तकाल हो ॥ जगें मन्न जगें मन्न गला गलनी परें जी, एक एकनो एक एकनो जाणो काल हो॥ ज०॥ ए॥ जावजीव जावजीव जो कोई पु एयथी जी, राज ढुंति राज ढुंति च्रष्ट न थाय हो ॥ उत्कृष्टो उत्कृष्टो तो आरंन करी जी, सातमी ते सातमी ते नरके जाय हो ॥ ज० ॥ १० ॥ राज काजे राज काजे केई रणमां मरे जी, रंगीला रंगीला जे राजान हो॥ राज तेहने राज तेहने कांई काजें आवे नहीं जी, तो तेहनुं तो तेहनुं की जें ग्रुं मान हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ स्रुत बंधु स्रुत बंधु वधू त्र्यादे सहू जी, प रिकर ने परि परिकर ने माहरी 'पून हो ॥ आणमानी आणमानी सदा चा ले अने जी; पण जली पण जली ए बांधी मूठ हो ॥ ज० ॥१२॥ आपगर जे आपगरजें सहु आवी मिले जी, परगरजें परगरजें न मंमें को पाय हो॥ क्रण माता कुण माता पिता नाई नारजा जी, वेकारें वेकारें ए सवि बद लाय हो ॥ज०॥१३॥ जन्म जरा जन्म जरा अने यम चोटथी जी, कांई राखी कांई राखी न सके कुटंब हो ॥ तेहने काजें तेहने काजें विविध विटं बनाजी, कुण सहे कुण सहे करे कुण दंन हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ किव उदय कवि चदय रतन कहे एटले जी, अवगासी अवगासीमी यई ढाल हो ॥ केवली ते केवली ते खबननानु नएो जी, चंड्मोलि चंड्मोली सुण नूपाल हो ॥१५॥ ॥ दोहा ॥

॥ सरस गीत श्रवणे सुणुं, रमणिक जोउं रूप ॥ नला गंध नित नो गवुं, रस ञ्चास्वाडं श्रन्थप ॥ १ ॥ फरस सुकोमल फरसियें, ए पंच विषय सुख देखि, मान करे को मढ नर, ते पण मोहविशेष॥ २॥स०॥१५००॥ ॥ ढाल नेव्यासीमी ॥

॥ रे मन पंखि श्रा म पडीस पिंजरे, संसार माया जाल रे ॥ ए देशी ॥ रे मन मूढ तूं म पडीश मोहमां, ए विषयनां सुख देखि रे ॥ एश्रांकणी ॥ नोगवतां क्षण जलां जासे, विषय ए विषरूप रे ॥ समयांतर ते विरस लागे, सीत समे जिम धूप रे ॥ रे० ॥ १ ॥ लीला विषयनी सदा लागे, श्रक्तानी ने श्रद्धप रे ॥ कानी नर ते इम गणे ए, केवल हे इःख रूप रे ॥ रे० ॥ १ ॥ सुख तो सरसव जेटलुं ने, इःख तो मूंगर मान रे ॥ थिग पडो

ते विषयसुखने, निखर जे निदान रे॥ रे०॥ ३॥ विषयने वश वेर परथी? कपजे अनेक रे॥ रे०॥ लोक पण लख गमें जंमे, जूप दंमें ठेक रे॥ रे०॥ ४॥ अण मलते कचाट याय, अरित उपजे अंग रे॥ मरणांत पण लहे आपदा, बहु पड्या विषयने संग रे॥ रे०॥ ५॥ मृग मीन मधु कर अने मयगल, परवशें पतंग रे॥ एक एक इंडि रसें आतुर, अंगनो क रे जंग रे॥ रे०॥ ६॥ वंठित कोइक लहे विरलो, पामीने पण प्राहि रे॥ रोग वियोग ने जरा योगें, जोगवी सके नाहिं रे॥ रे०॥ ७॥ पुण्यबलें जो विषय सुखनो, पूरो पामी साज रे॥ अवतार आखो अनुजने, कोई चक्री के महाराज रे॥ रे०॥ ०॥ तो मरी ते तेहने विपाकें, पामे नरक निवास रे॥ ते माटे ठे नेट निखरां, विषयना विलास रे॥ रे०॥ ए॥ इम बीजी पण अनेक वस्तु, रम्य जासे तेह रे॥ आखर ते अनित्य सघ ली, उटिक दाखे ठेह रे॥ रे०॥ १०॥ प्रेम दंमने प्रहारे मूर्कित, राजमदें उन्मत्त रे॥ विपयविषे गहिरे थके, वैजवरसें मयमत्त रे॥ रे०॥ ११॥ आज लगें में एवडी कांई, लही न कालनी लात रे॥ अवतार अहिले नी गम्यो, बाउल दीधी वाथ रे॥ रे०॥ ११॥ उदय रह्न कहे ए नेव्यासीमी, सुणो श्रोता ढाल रे॥ धमेनो दृढ राख जो, जिम जाजे जव जंजालरे ॥रे०॥ १ ॥ श्रोता ढाल रे॥ धमेनो दृढ राख जो, जिम जाजे जव जंजालरे ॥रे०॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुवलय चं इ ते केवली, जिणे तास्रो मुफ तात ॥ इवे जो नेटुं ते ह ने, तो साधुं परमार्थ ॥ १ ॥ खातम चिंता इणि परें, करतां थयो प्रनात ॥ पोसहादि व्रत पारी तव, नारी ने नरनाथ ॥ १ ॥ देव पूजा दिल री फीने, सिंहासनें ते राय ॥ खास्थान सन्ना मंमप जई, बेवो जडी सनाय ॥ ३ ॥ कुवलयचं इ पण केवली, बिल नृपनो श्रनिप्राय ॥ उल्लीने खा व्या वही, तिणि ख्रवसर तिणि वाय ॥ ४ ॥ कनकमय पंकज जपरें, मृग रमण ज्यान ॥ परखदें वींटया केवली, बेवा ज्ञान निधान ॥ ५ ॥ सुर नर तिहां खाव्या बहु, केवली कहे जपदेंश ॥ बिल राजा पण तिणे समे, प होतो तेणे प्रदेश ॥ ६ ॥ ख्रनिगम पांचे सांचवी, त्रण प्रदिक्ण देह ॥ वं दीने बेवो तिहां, सुणवा धर्म सनेह ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ १ ६०० ॥

॥ ढाल नेवुंमी॥

॥ दे वली इगलाधी चूडो वापरीठी॥ए देशी ॥ श्रोताजी ॥ धर्मनी देशना

सांजली, प्रणमी मुनिना पाय रे ॥श्रो०॥ पूछे श्रवसर पामिने, कर जोडी विल राय रे ॥ १ ॥ श्रो० ॥ केवलियें ते नृपनुं मन हरी । ॥ ए श्रांकणी ॥ प्रञ्जली ॥ जगवन में जब हारी । केवल विषयने काज रे ॥ प्र० ॥ श्ररणे श्राव्यो हवे तुमतणें, जाणी तारण तरण जिहाज रे ॥ के० ॥ १ ॥ प्र० ॥ शेष रह्यो जे थाकतो, ए माहरो श्रवतार रे ॥ प्र० ॥ सफल थाये हवे जे हथी, तेहवो कहो प्रकार रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ रा० ॥ केवली कहे तव तेहने, एहज तुं जब एक रे ॥ प्र० ॥ हाक्यो नथी मुण पूरवें, हाक्यो ने श्रनेक रे ॥ के० ॥ ४ ॥ राजाजी ॥ कहेतां कहेवाए नहीं, जय उपजावे जूर रे ॥ रा० ॥ श्रवस्त कारी श्रवि घणुं, जिम दिखानुं पूर रे ॥ के० ॥ ५ ॥ रा० ॥ बिल राजा तव बोलि , स्वामी मुणो एक वात रे ॥ रा० ॥ सांजलवा इं श्रव श्रुं, ते कहो महारो श्रवदात रे ॥ के० ॥ ६ ॥ रा० ॥ केवली कहे सुण राजिया, कोडी जीचे पण कोय रे ॥ रा० ॥ कहेतां न पामे पारने, श्रायु पण पूरुं होय रे ॥ के० ॥ ७ ॥ रा० ॥ श्रवस्त जो तुकने श्रवे, तो सांजल थई सावधान रे ॥ रा० ॥ कहुं कांइक संहेपिने, श्रवदात तुज श्र समान रे ॥के०॥०॥रा०॥ श्रोताजी ॥ उदयरतन कहे एटले, नेवुंमी निर धार रे ॥श्रो०॥ ढाल थइ पण धर्मनो, श्रागे मुणो श्रिकार रे ॥के०॥ण॥

॥ दोहा ॥

॥ काल अनंते इहांयकी, चारित्र धर्म सहाय ॥ करवा करमें काहियो, जीव ताहरो सुण राय ॥ १ ॥ अव्यवहार निगोदयी, व्यवहार निगोदें वा स ॥ दीधो तव मोहने दलें, तुरत घेखो ज् तास ॥ १ ॥ काल अनंतो रोकियो, पढ़े कर्म परिणाम ॥ कचो तिहांथी आणियो, सुण मन राखी ताम ॥ ३ ॥ पंच यावर विगलेंडिमां, पंचेंडी तिर्थंच ॥ नरक अनार्थ नर गतें, वित्तर्च कर्म प्रपंच ॥ ४ ॥ विल विल पाढो वालिने, वेरीएं वार अनंत ॥ ॥ निगोदादिकमां नाखिड, कहेतां नार्व अंत ॥ ५ ॥ अनार्थ देशें अवतरी, वली अनंती वार ॥ नर जव नाहक निगम्यो, मोहतणे अधिकार ॥ ६ ॥ कुजाति पंगु कुलहीण किहां, अंध बिधर गदपूर ॥ इत्यादिक दो षे वली, राख्यो मोह हजूर ॥ ७ ॥ पुदगल परावर्त्तन कर्खां, अनंत अनंती वार ॥ एकेंडियादिकमां घालिने, मोहें कीधो खोवार ॥ ।।।।सर्व०॥ १ १ ७

श्रीजुवनजानु केवलीनो रास.

॥ ढाल एकांणुमी ॥

॥ हो रे वणजारीडा ॥ ए देशी ॥ इणि परें कीधी रे जवनी अवली, कुलनी नमतां बहु कोडि हो ॥ हो रे सुण राजीया ॥ चोरासी लख जी वा योनिमां, पग पग पाम्यों तूं खोड हो ॥ १ ॥ हो ० ॥ श्री निजयनगरें तूं थयो एकदा, वैश्रमण नामें वणीक हो ॥ हो ।। धर्मनी उपनी तिहां धीषणा, श्लोक सुणी एक रमणीक हो ॥ २ ॥ हो ० ॥ यतः ॥ स्वजनध नज्ञवनयोवन, वनिता तलाद्यमनित्यमिदमिखनं ॥ ज्ञालापत्राणसहं, ध म्में शरणं नजत लोकाः ॥ १ ॥ कुधर्मेवी बुद्धि तव आमी फरी, त्रिदंिमर्च तापस कीध हो ॥ हो० ॥ एकेंडियादिकमां वली अवतारीने, इःख बहुलां मोहें दीध हो ॥ ३ ॥ हो० ॥ पुदगत श्चनंता परावत्यी वली, नरनव जही अंतराजें हो ॥ हो । ॥ कुंधमी बुद्धिने **उपदेशेंकरी, जिहां** तिहां पड्यो जंजालें हो ॥ ४ ॥ हो० ॥ आतम उंघादिक सुनटें मली, अल गो नाख्यो उथेडि हो ॥ हो० ॥ तिमज अनंता पुरगल परावत्यी, कुदृष्टि लागी तिहां केडि हो ॥ ५ ॥ हो । ॥ विजय वर्धनपुरें नंदनने नवें, आयु टाजिने सात हो ॥ हो० ॥ कर्म ते वेद्यां यथाप्रवृत्तकरणें, खडगें तिहां करी ख्यात हो ॥ ६ ॥ हो० ॥ एक कोडाकोडि सागरनी स्थिति, सा ते रह्या ते शेष हो ॥ हो० ॥ यंथी चेद लगें पहोतो जई, पण मोहें मेला वी अज्ञोष हो॥ । ॥ हो०॥ अश्रदानने राग देषादिकें, पाठो वाली तिएों ताल हो ॥ हो ।। निगोदादिकमां तिमहिज फेरव्यो, कह्यो न जाये ते काल हो ॥ ए ॥ हो ए ॥ ते वली मलयपुरें विश्वसेनने, नवें करी यंथी नेद हो ॥ हो ।। अपुरव करण खडगतेणे बर्झे, आगें वली धरी उमेद हो ॥ ॥ ए॥ हो ।॥ अनिवृत्तिकरण दंम उसारीने, मोहादिक वेरी महा मझ हो ॥ हो ।। सम्यग् दर्शन मंत्री नेटीर्ड, अवसर पामी अवल हो ॥ १ ० ॥ हो० ॥ कुदृष्टि रागें तव दीधो दगो, सुनगनवें वली सोय हो ॥ हो० ॥ स्नेह रागें वली समिकत हारिन, ज्ञुगतें विचारी तुं जोय हो ॥११॥हो०॥ विषयरागें वली सिंहतऐं नवें, जिनश्रीएं देष विशेष हो ॥ हो० ॥ ज्व लनित्व कोधें कुबेरें मानची, पदमें माया बलेण हो ॥ १२ हो ।॥ सोमदत्त लोनें एम अनेक नवें, ताहरें जीवें राजन्न हो ॥ हो ० ॥ मोह रा जाना सुनट तणे ठलें, हाख़ुं समिकत रतन्न हो ॥ १३ ॥ हो० ॥ देशविर

ति हारि हिंसाएं सुंदरें, मणिनइ मुषावाद हो ॥ हो ।। सोमदनें अदत्ता दानथी, दत्तें मेथुन उनमाद हो ॥ १४ ॥ हो ० ॥ धन बहुल सेवें परियह ने पूरें, रोहिणियें विकथायें हो ॥ हो० ॥ देशविरति जहीं असंख्य नवें, हारी तें मोह महीमायें हो ॥ १५ ॥ हो० ॥ अरविंदने नवें सर्वविरति हारी, क्रोधने मान पसायें हो ॥ हो० ॥ चित्रमतियें विषयसुख लालचें, पाम्यो विजय सेन मूर्वीयें हो ॥१ ६॥हो०॥ संयम ने वली चौद पूरवथकी, पुंमरीकने नवे उंघें हो ॥ हो०॥ पाडी अनंता पुरगल परावर्तन, न माड्यो नवसंगें हो ॥ १७ ॥ हो । मोहादिकें मलीने एणि परें, तुजने वार अनंत हो ॥ हो ० ॥ नवमांहे नमाड्यो फरी फरी, कहेतां न आवे तसु अंत हो ॥ १० ॥ हो० ॥ वली सिंहरथने नवें संयमवरी, अस्खिल त तेह आराधी हो ॥ हो० ॥ सुरलोकें महाग्रुक्रे सुर थयो, पुण्यदिशा ति हां वाधी हो ॥ १ए ॥ हो० ॥ नानुनवें संयम ग्रुह साधिने, अणसणे म रिने समाधि हो ॥ हो० ॥ नवमे श्रेवेयकें वली सुर थयो, तिहां पण पु एयोदय वाधी हो ॥ २० ॥ हो० ॥ वली इंइदन महाराजा नवें, संयम साधि सुविधाने हो।। एकावतारी सुर पद पामिन, सर्वार्थ सिद्धि विमाने हो ॥ ११ ॥ हो । तिहां थी चवीने इहां तुं ऊपनो, बली राजा बलवान हो ॥हो०॥ उदय वदे एकाणुंमी ढालमां, सुणजो थइ सावधान हो ॥११॥हो०

॥ दोहा ॥

॥ संबंध ए निज सांजली, हिए ससंज्ञम होय॥ मोदें मुनि पाएं नमी, नेहें वदे नृप सोय॥ १॥ जगवन ए जुंमा घणुं, मोहादिक महाइष्ट ॥ जिम ते न ढले आनवें, कहो उपाय ते पुष्ट ॥ १॥ केवली कहे करी एक मन, विधें धरी अम वेष ॥ चारित्र धर्मनी चाकरी, सदा करो सुविवेक ॥ ॥३॥ सर्वविरति जे सुंदरी, मोह कुलनी मथनारि ॥ इसमन जेहने देखिने, हेला पामें हारि ॥ ४ ॥ बाला बीजीने तजी, सदा जजो तसु संग ॥ दिल मां दश विध धर्मे सुं, राखो अविहल रंग ॥ ५ ॥ सदबोध सदागम उपिद स्यो, सत्व धरी यई सूर ॥ वढो मोहादिक वेरी सुं, इष्ट जाए जिम दूर ॥ धर्म सुनटने जीरुयें, इम करतां संयाम ॥ मोहादिकने मारीने, पामीस सं पद वाम ॥ ९ ॥ सर्वगाया ॥ १६५१ ॥

श्रीजुवनजानु केवलीनो रास.

॥ ढाल बाणुंमी ॥

॥ गोरीके नयन बडे बडे रें लाला ॥ ए देशी ॥ कथन ए केवंलीनां सु णी रे लाला, हृदयमां उपनो राग ॥ हो रे लाला ॥ अवसर ए वली दो हिलो रे लाला ॥ इम चिंते महाजाग ॥ हो० ॥ १ ॥ मोदे महाबल रा जा, मन रीजी मोहने रे, मोम देवा संयम पंथे धस्तो ॥ टेक ॥ इम चिंति ने जतावला रे लाला, जेष्ट सुत नयसार ॥ हो ० ॥ रति सुंदरी राणी तणो रे लाला, जस्यो तेडी तिखिवार ॥ हो ० ॥ मो ० ॥ २ ॥ राज जलाव्युं तेह ने रे लाला, सहु मंत्रीनी साख ॥ होण ॥ पोते महापूजा रची रे लाला, पूरिया याचक अनिलाष ॥ हो०॥ मो०॥ ३ ॥ अमारि पडहो वजडाविने रे जाजा, महामहोत्सव मंमाण ॥ हो० ॥ व्रत जेवाने संच्छो रे जाजा. ्रंगनरें महाराण ॥ हो० ॥ मो० ॥ ध ॥ सामंत पुरजन मंत्रवी रे जाला, पांचशें सेई साथ ॥ हो० ॥ अंतेजरी पणं केटली रे लाला, संगें धरी नर नाथ ॥ हो ० ॥ मो ० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत जचरे रे लाला, आवी ते के वली पास ॥ हो ० ॥ नृप ते केतिक नारिशुं रेलाला, पांचसे नरशुं उछास ॥ हो । । मो । ॥ ६ ॥ कब्प क्रिया श्रुतनी कला रे लाला, गीतार्थ गुण जेह ॥ हो ० ॥ पुष्योदयना प्रजावधी रे लाला, शिखी दिन घोडे तेह ॥ ॥ हो० ॥ मो० ॥ ७ ॥ चौद पूर्वधर ते थयो रे लाला, अतिशयवंत अपार ॥ हो । ॥ कुवलयचं इ केवली तदा रे लाला, आपी एहने गढनार ॥हो ०॥ ॥ मो० ॥ ए ॥ पोतें शैक्षेसी करी रे लालां, कर्म खपावी शेष ॥ हो०॥ परमपद पाम्या सही रे लाला, अमर थयो अलेख ॥ हो० ॥ मो० ॥ ए ॥ राजक्षि रूडी परें रे लाला, बली आचारय तेह ॥ हो । ॥ सदबोध सदा गमयोगधी रे लाला, अरिनो लेतो बेह ॥ हो०॥ मो०॥ १०॥ गाम नग र पुर ञ्चागरें रे लाला, विचरे देश विदेश ॥ हो० ॥ मोहना बंधने मोड तो रे लाला, नर नारीना अशेष ॥ हो० ॥ मो० ॥ ११ ॥ जदय वदे ढाल ए कही रे लाला, में बाएंमी अनूप ॥ हो० ॥ अवसर लहीने चेतजो रे लाला, जिम चेत्यो बलि जूप ॥ हो । । मो । । १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पाम्यो ते मुनि अन्यदा, अप्रमत्त गुणस्थान ॥ अकस्मात तव जप नुं, अति विग्रुद्ध ग्रुन ध्यान ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १६६४ ॥

॥ ढाल ज्याणुंमी ॥

॥ द्व्या सुणरे सुण महाकाल ॥ ए देशी ॥ मनना कोइ ग्रुड परिणा म ॥ तदरूप लहा अनिराम ॥ ऋपक श्रेणि ताम खडग यष्टी ॥ पामी तिहां ते उत्कृष्टी ॥१॥ अनंतानुबंधी जे चार कषाय॥ तिणे ते नोरें ह्रष्टा तिणी न्या ॥ अग्रुद्ध मिश्र विग्रुद्ध त्रिद्धं जेदे ॥ मिथ्या तस मूल उन्नेदे ॥ १॥ फरसी अपूरव करण ग्रुण नाणुं ॥ विल आगल कीधं प्रयाणुं ॥ अनिवृत्ति बादर ग्रुणनाणे ॥ पहोतो ग्रुच ध्यान प्रमाणे ॥ ३ ॥ अप्रत्याख्यान प्रत्या ख्यानावरण ॥ कषाय अष्ट पमाड्या मरण ॥ माह्या पण वामें न मुखा ॥ आते अध सुसता हुया ॥ ४ ॥ नरक तिर्यचगति आनुपूर्वी ॥ एकेंड्री जहो यादी कवीं ॥ बेंडी तेंडी चौरेंडी जाति ॥ यातप उद्योत स्थावर ख्यात ॥ ५ ॥ संद्रम साधारण नहीं फेर ॥ नामकर्मना जेद ए तेर ॥ निज्ञा नि . इा प्रचला प्रचला ॥ थिए दि आदि त्रएय प्रमिला ॥ ६ ॥ प्रकृति ए कही जेती॥ इय पमाडी तिहां तेती ॥ पने अई हण्या कषाय ॥ आने ते माखा वाय ॥ १ ॥ नपुंसकने स्त्री वेद ॥ हास्यादिक रिपु षट जेद ॥ पुरुष वेद सं ज्वलन कषाय ॥ क्रोध मान माया हिए त्यांय ॥ ए ॥ संज्वलना लोजने जेहवे ॥ मारे तव नासिने तेहवे ॥ सुझारूप करीने उपीछ ॥ दशमें गुण गएों ते खिपरी ॥ ए ॥ अंगु माएस अहावीस ॥ एह पडते पड्यो मोह ईस ॥ अखित गतें तव ते जबली ।। बारमें सोपाने बिलर्ज ॥ १०॥ क्षीणमोह गुण वाणे पहोतो ॥ मनमांहि घणुं गहगहितो ॥ उदय वदे दिल खोली ॥ ज्याणुंमी ढाल ए बोली ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मित श्रावरणादिक तिहां, पांचे जे श्रावरण ॥ ते पंच रूपें ज्ञानावर ण, पटाउत पमाड्यो मरण ॥ १ ॥ दान लाज जोगोपजोग, पांचमो वीयां तराय ॥ ए पांचे रूपें पाडिड, सामंत जे श्रंतराय ॥ १ ॥ निष्ठा प्रचला निष्ठ् बे, चकु श्रचकु श्रवधि ॥ केवल दर्शनावरण जे, दर्शनावरण पट विधि ॥ ३ ॥ दर्शनावरण नामें तिहां, सामंत ते महाग्रूर ॥ पाड्यो तव प्रगट्यो सही, श्रज्ञिनव श्रानंद पूर ॥ ४ ॥ घाति कर्म महा नायकें, चारे यते चकचूर ॥ सैन्य सकल रिपुनुं थयुं, निर्नायक गतनूर ॥ ५ ॥ श्रावर एं श्रलगे थते, निर्मल केवल ज्ञान ॥ केवल दर्शन ए बन्हे, प्रगट थयां

तिणियान ॥ ६ ॥ आंखें पमल जिम कघडे, फलकें ज्योति अत्रूप ॥ तिम मुनि निरखे ते तदा, लोकालोक सरूप ॥ १॥ सिद्धि सौधनुं तेरमुं, पगयी उं पाम्युं ताम ॥ संयोगि केवलि ग्रण स्थानकें, पहोतो सो ग्रणधाम ॥ ७॥ तव नृप चारित्र धर्मनुं, सैन्य सकल सम काल ॥ पाम्युं परमानंदने, वैरी यते विसराल ॥ ए ॥ सर्वगाया ॥ १६०५॥

॥ ढाल चोराणुंमी ॥

॥ कमल रस फूंबखडां ॥ ए देशी ॥ तिवार पढ़ी वली केवली, मोहा दिकना सुविशेष ॥ सकलजनसुखकरूं, मर्म प्रकाशी लोकने, ढोडवे देई जपदेश ॥ स॰ ॥ १ ॥ विचरतां वसुधातलें, बहु जननां मोह बंध ॥ स॰ ॥ गामो गामें बोडावतां, फेडतां जवना फंद ॥ सण ॥ श ॥ विहार करंतां आ . विद्या, खनुंक्रमें खाएं देश ॥ संण ॥ सांप्रत तुम सहु लोकने, दैवाने उप देश ॥ सण ॥ ३ ॥ बूफविया बहू लोकजे, तिएं ग्रण निपन्न ॥ सण ॥ स्रव ननानु नाम तेहनुं, धरियुं जहीं ज्ञानच्चन्न ॥ स० ॥ ४ ॥ समजो ते हूं केवली, इम सांजली अवनीस ॥ स० ॥ चंड्मोलि चित्त चमकियो, तव ऊ वी सुजगीस ॥ स० ॥ ५ ॥ पाय लागी प्रणमी कहे, साधु साधु तुमे स्वामि ॥ सं ।। नगवन पाउधाचा नले, अम तारवा हित काम ॥ सं ।। ६॥ सकल सिदांतनुं रहस्य ए, वारु तुमारुं चरित्र ॥ स० ॥ कही अमने पा वन कखा, प्रञ्ज तुमे पुष्य पवित्र ॥सं०॥७॥ तव केवली कहे तेहने, राजन निजञ्जाख्यान ॥स०॥ निजमुखें कहेवुं निव घटे, थाए निजव्याख्यान ॥स० ॥ ७ ॥ निज गुण कहेवा निज मुखें, निषेधे नीति यंथ ॥ स० ॥ कीर ति ते जे बीजो कहे, पौराणिक ए पंच ॥ ॥ स० ॥ ए ॥ पण तुमने हित कारणे, खरो कह्यो एह संबंध ॥ स० ॥ संक्षेपे में माहरुं, नाजे जे नवबं ध ॥ सं ।। १० ॥ उद्यरतन कहे आगमें, बोख्या जे वे बोल ॥ स० ॥ चोराणुंमी ढालें ते सद्दो, चित्त धरी रंग चोल ॥ स० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥ विस्तारें जो वर्णवुं, चंड्मोिल सुण राय ॥ तो कोडि प्रूरवने छाठखे, पूरुं एद न थाय ॥ १ ॥ केवल ए जे कारणे, महाराथीज निहा ल ॥ प्राहें संसारी जीवनी, सहुनी एहज चाल ॥ २ ॥ सर्वगाथा १६ए०

॥ ढाल पंचाणुंमी ॥

॥ बिंदली मन लागो॥ ए देशी॥ चोद लोक च्यारे गति, जगमांहि स

हु जीव ॥ महाराज ॥ मोह राज़ाना राज्यमां, 'च्रमण करे अवतीव ॥ मण ॥ १ ॥ जवमां इम सहुए जमे, नथी कोइ ते स्थान ॥ मण ॥ एकेंडि नी जातिमां, जाखे श्री जगवान ॥ म०॥ २॥ ज०॥ नहीं विगर्धेंड्री रू प ते, नहीं ते तिर्येच जाति ॥ म०॥ नरकावासो ते नथी, नरक सोध तां सात ॥ म० ॥ ३ ॥ न० ॥ गाम नगर पुर पेखतां, नर लोकें नहि तेह ॥ म०॥ जिहां सहु जीव न कपना, अनंती वार अवेह ॥ म०॥ ४॥ न०॥ ज्ञवनपति व्यंतर ज्योतिषी, .सौधर्म ईशान सुर लोय॥ देंवनी दे वी ते नहीं, जिहां उपना नहिं सहु कोय ॥ मण ॥ ए॥ जण ॥ दश देव लोक आगर्जे, नव यैवेयक पर्यंत् ॥ म० ॥ प्राहे नथी कोई स्थान ते, जि हां उपना नहीं सर्व जंत ॥ म० ॥ ६ ॥ न० ॥ जे सहु जीवें न नोगव्युं, ते सुख इःख नहिं संसार ॥ म० ॥ इव्यथी नहीं जिन लिंगते, जे न ल ह्यं अनंती वार ॥ म० ॥ ७ ॥ न० ॥ जाति योनि कुल ते नहीं, नहीं को ई तेह्वो वेष ॥ म० ॥ सहु संसारी जीवहे, जे वेठ्यो न वार अनेक ॥ मण ॥ ज ॥ नण ॥ सामान्यथी कह्यों जे सर्वे, ए माहरो विरतंत ॥ मण ॥ नव अनंता जे नम्या, विचें विचें वार अनंत ॥ म०॥ ए॥ न०॥ ते संख्याते त्या उखे, कहा केम कह्यो जाय ॥ मण ॥ कमें कमें मुखें कहेतां थकां, केता एक कहेवाय ॥ म० ॥ १० ॥ ज० ॥ जारी इःख में जोगव्यां, असरण पणे अनंत ॥ म० ॥ सरणे पण कुधर्मने, रेष न आव्यो अंत ॥ मण ॥ ११ ॥ नण ॥ सरण कखुं जिन धर्मनुं, सम्यक् जो श्रीकार ॥ मण ॥ सुर नरनां सुख जोगव्यां, पाम्यो तो जवपार ॥ मण ॥ ११ ॥ जण ॥ शाश्वत शिव सुख पामग्रुं, श्री जिन धर्म पसाय ॥ म० ॥ तुक्तने पण तेह् ज हसें, सरण सदा सुखदाय ॥ म०॥ १३ ॥ न०॥ सहु संसारी जीव ने, सरण नहीं को अन्य ॥ म० ॥ जिन वयणे जे रचडा, धरणितलें ते धन्य ॥ म० ॥ १४ ॥ न० ॥ पंचाणुंमी चाहीने, चद्यरत्न कहे एह ॥ म० ॥ ढाल कही ढलते स्वरें, पण हे अनुनव गेह ॥ म० ॥ १५ ॥ न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूर्ण संवेगे पूरित्र, नेत्रें धरंतो नीर ॥ चंइमौलि नृप तव कहे, मुनि ने मन धरी धीर ॥ १ ॥ प्रञ्ज तुमे प्रसन्न थई, केवल महारे काम ॥ क था विस्तारी ए कही, उपकार लही अनिराम ॥ २ ॥ सल्जी संसारथी, पहोता पेले पार ॥ तो पण परने कारणें, उद्यम करो अपार ॥ ३ ॥ ॥ ढाल बन्नुंमी ॥

॥ श्र मलती चाकरी रे ॥ ए देशी ॥ कहो नगवन करुणा करी, केता नीसरे एके काल ॥ प्रञ्ज प्रकासीएं रे ॥ अविवहार निगोदथी, प्राणी पूर्वे इम नूपाल ॥ प्र० ॥ १ ॥ विवहार रासें थकी रे, जेता मुगतें जाए जीव ॥प्रणा कहे इम केवली रे॥ सुद्धानिगोदधी नीसरी रे, खावे तेटला सदीव ॥ क० ॥ २ ॥ यतः ॥ सिक्जंनि जिनियां खुनु, इह्रय ववहार रासिजीवार्छ ॥ इति अणाइ वणस्सइ, मङ्जा ७ तिचया चेव ॥१॥ करवा नाल तणी परें रे, जाईने आवे इम तेह ॥ क० ॥ मुगति न नराए कदा रे, नावे निगोद त णो पण हेह ॥ कण ॥ ३ ॥ यतंः ॥ जइ आवि होई पुंचा, जिंणाण म गंमि उत्तरं तक्या ॥ ईकस्स निगोञ्चस्स, ञ्रणंत नागोञ्च सिद्धिगर्छ ॥ १ ॥ ॥ पूर्वढाल ॥ तव राजा कहे कहो प्रञ्ज रे, निगोदची निसरिया जीव जेह ॥क[ै]।। एटलेज चाले ते सवे रे, पामे मुगति सदा सुख गेह ॥ क० ॥ ४ ॥ बहु जीव तो माहरी परें रे, सीफे ते जाणो तहकीक ॥ कंण ॥ थोडे का र्ले पण केटला रे, केताएक तेह्यी नजीक ॥ क० ॥ ५ ॥ मरुदेवा मातानी परें रे, केता एक सीके ततखेव ॥ क० ॥ अनव्य ते सीके नहि कदा रे, न चाले मोन सामां जिम नेव ॥ क०॥ ६॥ चंड्मौलिनृप चाहिने रे, बो से त्यारे बे कर जोड़ी ॥ प्रञ्ज मया करी रे ॥ तारो नवसागर थकी रे, मुक्तने मोह तणो मद मोडि॥ प्रण॥ ॥ संयम खेवो में सही रे, तुम पासें तजीने राज ॥ नएो इम नूपित रे ॥ मुनी कहे विलंब न कीर्जियें रे, साधतां पर नवनां काज ॥ न० ॥ ७ ॥ प्रेमें निज पाटें ववी रे, नंदन चं इवदन इणि नाम ॥ नमो ते साधुने रे ॥ सुविधशुं सपंम वरे रे, साथें लई के तिक वाम ॥ न० ॥ ए ॥ पुरजन से संग केटला रे, केटलाएक से मंत्री सामंत ॥ न० ॥ पंच महाव्रत उच्चरे रे, चंड्मौलि राजा ग्रुणवंत ॥ न० ॥ १०॥ योडे दिन सीखी घणी रे, विद्या चौद पूरव विस्तार ॥ न०॥ यो ग्य लही वली केवली रे, आपे तव तेहने गर्ह नार ॥ न० ॥ ११ ॥ चा लीस लाख पूर्व लगें रे, पाल्युं संयम कांईक न्यून ॥ न० ॥ कोडि पूर्वनो आठखो रे, संघलुं जाणो ते देसोन ॥ न० ॥ १२ ॥ **उदयरतन कहे** एट

से रे, पूरी बन्नुंमी यई ढाल ॥ न०॥ साचो श्री जिन धर्म है रे, बीज़ं जाणो त्याल पंपाल ॥ न०॥ १३॥

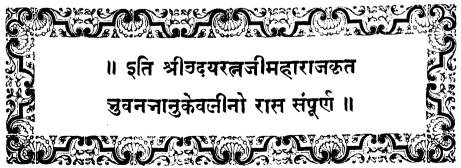
॥ दोहा ॥

॥ श्रंते सेंक्षेसकरण जे, करमांही करवाल ॥ मोह रिपु दलरोष कें, फोड़े देई फाल ॥१॥ वेदनीने वली श्राक्ति, नाम गोत निरधार ॥ नवो प्रवाही कमें नट, चूरीने ए चार ॥ १ ॥ चढी सोपाने चौदमे, श्रयोगि के विल ग्रणवाण ॥ श्र इ उ क्र लृ किहतां लगें, तिहां की धुं रहिवाण ॥ ३ ॥ सं यम धमेंने नोगिव, उन्नति करी श्रांतीव ॥ त्रिग्रण रहित थईने तदा, बिल कि केविल जीव ॥४॥ पाम्यो परमानंद पद,शाश्वत मुक्ति सुवोर ॥ श्रजर श्रमर श्रविचल थयो, जिहां निह्न यमनुं जोर ॥ ५ ॥ स्नेह न को माता समो, घृत सम निह्न रसघूट ॥ सुख न को शिवपदसमो, ग्रुं की जे वैकुंव ॥ ६ ॥ साकर समो न साद कों, मुक्ति समी न मोज ॥ संयम समो न सखाइन, चित्तमां धरजो चोज ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ १७४५॥

॥ ढाल सत्ताणुंमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ हवे कुमर इग्रुं मन चिंतवे ॥ ए देशी ॥ धन्य धन्य श्री जिनधर्मने रे, पापीने रे जे करे पुनीत ॥ वढतां मोह दल वेरिग्रुं रे,जगमांहि रे जिणे लहियें जीत ॥ ध० ॥ १ ॥ जगमांहि जे जे जीवडा, तजी कर्मने रे ते नवने तीर ॥ पहोता पहोचे पहोचग़े, ते तो जाणो रे जिन धर्म सुधीर ॥ ध० ॥ १ ॥ कनक जिम लोहने करे, सिक् रसने रे खडतां तत खेव ॥ तिम इःखीने सुखिया करे, फरसतां रे समिकत स्वयमेव ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम बिल कुमर बहु नवतणा, नवमांहे रे नमतां बहु फेर ॥ समिकत सरणुं खादरी, मोहने शिर रे वाही समग्रेर ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम निव जन नावें तमे, जिन धर्मने रे लइ खवसर जोय ॥ एकमनें खाराध जो, जिम जामण रे वली मरण न होय ॥ ध० ॥ ५ ॥ मलधारी गढ मं मणो,श्री हेमचंइ रे स्र्रिना इंद ॥ ए चित्रनी स्वना तिणें, रची ढे रे रम णिक सुख कंद ॥ ध० ॥ ६ ॥ ते चित्रनी होई चातुरी, नल नला रे होई तेहना नाव ॥ रास रच्यो में खनिनवो, ए तो नवजल रे जाणे तारण नाव ॥ ध० ॥ ७ ॥ खिकुं वेढुं कह्यं हूवे, मूल चित्रची रे जे एहमां तेह ॥ मिष्ठा इक्कड सुफ हजो, सहु संघनी रे सास्वें करी तेह ॥ ध० ॥ ० ॥

अग्रुद जे कांई इहां, में कह्यो जे होय जवाप ॥ सूधा जन ते शोधजो, मुज गुनहो रे वली करजो माफ ॥ ध० ॥ ए ॥ तपगञ्च मंमणं तिलकसो, श्रीराजविजय सूरिराज॥ तरिण जिस्यो तस पाटवी, रत्नविजय रे सूरी शिर ताज ॥ ध० ॥१०॥ ग्रुरुराज राजसमाजनो,दीवो सेव्यो सदीव ॥ हीररतन सूरी हेज छुं, पूरे आक्या रे प्रतापे अतीव ॥ ध० ॥ ११ ॥ जयरत सूरी ज यकर, संप्रती तेहने पाटें ॥ जावरतन सूरी जेटतां, इःख मेटे रे नमीयें ते मार्टे ॥ ध० ॥ १२ ॥ श्री हीररत्न सूरिंदनो, सोहे वडेरो सीस ॥ लब्धिरत पंमित तेह्नो, नमुं वाचक रे जेनी जंगमां जगीश ॥ध०॥१३॥ श्री मेघरत मुणिंदनो, अमररत अनुचर तास ॥ शिवरत्न गुरु सुपसा उसें, में गायो रे बिलक्षि गुए खास ॥ घ० ॥ १४ ॥ सतरैसें जगएयोत्तर समे, विद तेरस मंगलवार ॥ पोष मास पूर्वापाढं जे, हर्षण योगे रे थयो हर्ष अपार ॥ धण ॥ १५॥ ग्रुणनिधि चनाचेवा गाममां, नीडनंजन श्रीजिन पास ॥ तास प्र सादें पूरो थयो, रसलहरी रे नामें ए रास ॥ घ० ॥ १६ ॥ जे सांजले स्रधे मनें,वली जे जणे मनने जाव ॥ ते मुक्ति पामे मानवी, समता रसें रे सहु कर्म खपाव ॥ घ० ॥ १७ ॥ गगने यह मंदर गिरी, धरा सिंधु जिहां लगें धर्म ॥ अविचल रहो ए त्यां लगें, एह संबंध रे दायक शिव शर्म ॥ धण ॥ १०॥ ञ्राज सखी महारे ञ्रांगणे, सुरतरु फलिन सार ॥ कामगवी प्र गटी नवी, ञ्राज ञ्रनिनव रे थयो जय जय कार ॥ध०॥१ए॥ सुख श्रेणी मंगल मालिका, दीपालिका दिन जेम ॥ ज्ञवन नानु केवलीतणा, ग्रण गातां रे लीला लिहएं तेम ॥ घ०॥२०॥ इम बन्नुमी ढालमां, उदयरत ये श्राशीष ॥ सुख संपद वाधो सदा, सहु संघनी रे पहोचो सुजगीश ॥ ध० ॥११॥ इति श्रीवदयरत्नजीमहाराजकत ज्ञवननानुकेवलीनो रास संपूर्ण ॥ यंथा यंथ इलोक संख्या २४१४॥



अथ

श्रीमंचरोविजयजी उपाध्यायकृत समिकतना षट्स्थान स्वरूपनी चोपाई अर्थसिहत प्रारंज

॥ प्रथम यंथकत्तीनुं मंगलाचरण ॥

इंज्श्रेणिनतं नत्वा, वीरतत्त्वार्थदेशिनम् ॥ सम्यक्त्वस्थानषट्कस्य, नाषेयं टिप्यते मया ॥१॥

॥ मूलगाथा ॥

॥ वीतराग प्रणमी करी, समरी सरसित मात ॥ किह्युं निविहत का रणे, समिकतना अवदात ॥ १ ॥ अर्थः—श्रीवीतराग देवने प्रणमी करी प्रजनी वाणी जे श्रीसरस्वती माता तेने समरीने नव्यजीवना हितने कारणे समिकतना अवदात एटले चिरत्र कही ग्रुं॥ १ ॥

॥ दर्शन मोह विनाशयी, जे निरमल गुणगण ॥ ते समकित तस जाणियें, संखेपे खट गण ॥ १ ॥ अर्थः—दर्शनमोहनीयकर्मनो विनाश जे क्य, उपशम अने क्यायोपशमरूप तेथी जे मलरहित एवं गुणनुं स्था नक जपजे ते निश्चयथी समकित जाणियें. उक्तंच ॥ सेयसमनपसंखे, सम्मन मोहणिक्कममाणु ॥ वेयणोवसमखय, समुबेसु हेआय परिणामे ॥ ॥ इति ॥ ते समकेतना संक्रेपेंकरी जे कहेशे ते षट्स्थानक जाणवां, जे स्वसमय श्रद्धान प्रकार ते स्थानक कहियें ॥ १ ॥

हवे ते षद्भयानकनां नामनी गाया कहे हे.

॥ श्रिष्ठिति तह णिच्चो, कत्ता जुत्ता य पुस्प्पावाणं ॥ श्रिष्ठ ध्रुव निवा णं, तस्तोवार्त श्रु व हाणा ॥ ३ ॥ श्रुर्थः—एक जीव वे, बीजो ते जीव नित्य वे, त्रीजो तथा चोथो ते जीव स्वयं पुष्यनो कर्त्ता, जोका वे,श्रुने पा पनो कर्त्ता, जोका पण वे,पांचमो ते जीवने निर्वाण एटले मोक्स पण (ध्रुव के०) निश्चें (श्रुष्ठि के०) वे, वहां ते मोक्स थवानो उपाय पण निश्चय वे तेमां संदेह नथी. ए व स्थानक समकेतनां जाणवां ॥ ३ ॥

॥ समिकत थानकथी विपरीत, मिथ्यावादी खित खिवनीत ॥ तेह्ना ना व सवे जूजूवा ॥ जिहां जोइयें तिहां उंमा कूवा ॥ ४ ॥ अर्थः-ए स मकेतनां षद्स्थानकथी जे विपरीत बोल ते मिथ्यालनां ह स्थानक जा एवा ॥ उक्तं च ॥ संमतो ॥ एश्विणाणेणिच्चो, ए कुएइ कयंणंवेएईएशि ॥ ए बाणं एशिय मोक्तो वार्ड मिश्वनद्वाणाई ॥ १ ॥ ए थानकें वर्नतो मिथ्यावा दी होय. ते गाढ मिथ्याल परिणामी घणो अविनीत होय, ते मिथ्याली नां वचन ते मांहोमांहे आपआप हठें जोइयें तो कोइनां मले नही. ते सर्व उंमा कूवा सरखा हे ॥ ४ ॥

॥ पहेलो नास्तिक नाखें ग्लून्य, जीव शरीरथकी निह निन्न ॥ मद्य श्रंग थी मिदरा जेम, पंचनूतथी चेतन तेमं ॥ ५ ॥ अर्थः —हवे प्रथम स्था नवादी पहेलो नास्तिक चार्वाक ते (ग्लून्य केंण) तत्वक्षानें करी ग्लून्य कोण मुक्तिनो कहेनार (नाखे केण) बोले हो. ते नास्तिक कहे हे के जीव जे हे ते शरीर थकी निन्न एटले जूदो नथी, अने चेतनपणुं जे होय हो ते पंच नूतना संयोगथीज थाय हो. जेम मद्यनां श्रंग जे गुड, इन्हर, इकुरस, धा वडीपुष्प प्रमुख हो तथी मिदरा नीपजे हो, तेम जाणवुं ॥ ५ ॥

॥ माखणयी घृत तिलयी तेल, अगिन अरिणयी तरुयी वेल ॥ जिम प डियारथकी तरवार, अलगो तो दाखो इिणवार ॥ ६ ॥ अर्थः—जो जीव शरीरथकी जिन्न होय तो माखणयी जेम घृत, तिलयी जेम तेल, अरिणी यी जेम अग्नि, हक्क्यी जेम वेल, तथा पिडयारथकी जेम तरवार अलगी करी देखाडीयें तेम जीवने शरीरथकी जिन्न करीने आ बेलायें देखाडवो जोइयें. ते शरीरथकी जिन्न करीने कोइ देखाडतो नथी. तेमाटे जीव जे हे ते शरीरथकी जिन्न नथी ॥ ६ ॥

॥ जिम जलयी पंपोटा थाय, कफणतां तेहमांहे समाय ॥ यूनादिक जिम हित परिणाम, तिम चेतन तनुगुणविश्राम ॥ ७ ॥ अर्थः—जे म पाणीथी पंपोटा थाय हो, अने ते पंपोटा चफणीने वली पाणीमांहेज समाय हो. तथा यून प्रमुख ते जेम (हित के०) प्रथ्वी तेहनो परिणा म हे एटले प्रथ्वीमांहेथी चपजीने प्रथ्वीमांहेज लीन थाय हो, तेम चेत ना जे हे ते (तनु के०) जे शरीर तेना गुणनो विश्राम हो, एटले शरीर यकी चपजीने वली शरीरमांहेज लय पामे हो. ए चत्पित्रक् अने बीजो अनिव्यक्तिपक् हो.तेमतेंकायाकार परिणामें चेतनानी अनिव्यक्ति होय हे ७ ॥ नहिं परलोक न पुष्य न पाप,पाम्युं ते सुख विलसो आप ॥ वृकपदनी परें जय दाखवे, कपटी तप जपनी मित ववे ॥ ७॥ अर्थः-ए चार्वा कने मतें परलोक नथी, पुण्य नथी, पाप नथी, ते एम कहे हे, के जे पा म्युं सुख हे ते पोतें विल्ला. जे माटें वर्जमान सुखने मूकीने अनागत सुखनी वांहा करवी ते खोटी हे, सुखनोगमां जे हकपदनी पेरें नरका दिकनो नय देखाड़े हे, तेतो माता जेम पोताना बालकने हाक देखाड़े हे, तेम लोकने नोलवीने ते कपटी पोतें नोगथी चूका, अने बीजाने चूकावे हे, अने तप जप कहेतां राख्यानी मित एटले बुिह ववे एटले थापे हे ॥०॥

॥ एहवा पापी जाखे आल, बांधें करमतणां बहु जाल ॥ आतमसत्ता तेहने हवे, जुगति करी सजुरु दाखवे ॥ ए॥ अर्थः—चार्वाक एहवी जु वी युक्ति बोले वे तेथी ते कर्मनां घणां जाल बांधे वे, माटे सजुरु तेने युक्तियों करीने आत्मसत्ता वे एवं देखाडे वे ॥ ए॥

॥ ज्ञानादिक ग्रण अनुनविस्क,तेहनो आश्रय जीव प्रसिक् ॥ पंचनूत ग्रण तेहने कहो, इंडिय याद्य न किम सदहो ॥ १०॥ अर्थः—ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य प्रमुख ग्रण जे अनुनविस्क अनुमानप्रत्यक्तें प्रसिक्ष हे, ते ग्रणनो जे आधार ते जीवड्व्य हे, ते अनुमानप्रमाणें आवे. ते अनुमानप्रमाण जे न माने ते परना मननो संदेह केम जाणे ? अने तेवारें ते परने उपदेश पण केम दइ शके ? अने जो तेहने ज्ञानादिक ग्रणने पंच नूतनो संयोगज ग्रण कहो, तो इंडिय याद्य केम न मानो ? नूतग्रण जे काहिन्य शीतत्वादिक ते इंडिययाद्य हे चेतना इंडिययाद्य नथी. तेमाटे ते आहमानो ग्रण जाणवो ॥ १०॥

॥तनु वेदे निव ते वेदाय, तनुवृद्धे निव वधता थाय ॥ उपादान ज्ञाना दिकतणो, तेह्यी जीव अलाधो घणो ॥ ११ ॥ अर्थः—शरीर वेदे वे, अने चेतनना ग्रण वेदाता नथी. तथा ते शरीरनी वृद्धियें वधता पण थाता नथी. तेमाटें ज्ञानादिक ग्रणनुं उपादान ते आत्मा वे, तेने शरीरथकी अलाधो मानो. जेमाटें उपादाननी हानि वृद्धियें उपादेयनी हानि वृद्धियाय. जेम माटीनी हानी वृद्धियें घटनी हानि वृद्धि थाय वे. तेम इहां जा णवुं. यद्यपि प्रदेशयी हानिवृद्धि आत्माने नथी तथा पर्यायनी हानिवृद्धि ज्ञानप्रत्यें एकेंडियाद्यात्मपणें उपादानता सामान्यथी चेतन्यगुणप्रत्यें आत्मपणें उपादानता सामान्यथी चेतन्यगुणप्रत्यें आत्मपणें उपादानता सामान्यथी चेतन्यगुणप्रत्यें आत्मपणें उपादानता सामान्यथी चेतन्यगुणप्रत्यें आत्मपणें उपादानता मानवी जोइयें, नही तो लोकव्यवहार न मले॥ ११ ॥

॥ प्रज्ञादिक थिति सरिखी नहीं, युगलजाति नरने पण सही ॥ तो किम ते कायापरिणाम, जुर्र तेहमां आतमराम ॥ १२ ॥ अर्थः—प्रज्ञादिक स्थिति एक वीर्योत्पन्न युगल मनुष्यनी पण नथी. कोइक अंतर तेहमां पण हे. तो ते वेंतनी कायानो परिणाम केम कहेवाय? एक माता पितायें नी पाया हे तेमां आत्माराम जूदों हे. तेणें करीज प्रज्ञादिकनो नेद संज्ञवे हे॥ १२॥

॥ रूपीपण निव दीसे वात, जक्कणयी जिहियें अवदात ॥ तो किम दीरों जीव अरूप, तेतो केवल ज्ञान सरूप ॥ १३॥ अर्थः—हवे जे पूर्वें कहुं वे के जीव जो शरीरथी निन्न होय तो आतमा अलाधों करी देखाडों ? तेनो उत्तर कहे वे. (वात के०) वायरों, जे वे ते पुजल वे माटें रूपी वें; तोपण दीसतों नथीं. पण तेना अवदात एटलें प्रकटलक्कण कंपू, धित, श ब्दाहिक लिंगें करी लिहियें वेंथें. तिहां ज़तादिकनों कंप, अर्कतूलादिकने आकाशें धित, जंजादिकनों शब्द जेहने अनिधातें तथा संयोगें होय ते वायु इव्य वे, एम अनुमान प्रमाणें जाणियें वेंथें. तो अरूपी जीव तेतों केवलज्ञानस्वरूप वे, ज्ञान मने प्रत्यक्त वे, ते लिंगें जाणवुं. तेनो आश्रय जे आत्मा तेनुं अनुमान करियें. यद्यपि ज्ञानगुण प्रत्यक्त वे माटे आ तमा पण तदंशें प्रत्यक्त वे "गुणपच्चत्कतण्य, गुणिवी जीवो घडोच पच को " इत्यादि विशेषावश्यकवचनात् ॥ वायुपनीति सुरिने इव्यपणें ज गंधाशें ए प्रत्यक्त वे. तथापि वादिविप्रतिपत्ति अनुमान करियें. उक्तंच ॥ शतशः प्रत्यक्त के तत्वित्रतमप्यर्थमनुमिमीपन्त्यनुमानरित्रकाः॥ अथवा ज्ञानाश्रय प्रत्यक्त वे तेहने, तत्त्विनन्नतानुं अनुमान करियें वेयें ॥ १३॥

॥ बालकने स्तनपान प्रवृत्ति, पूरवज्ञव वासना निमित्ति ॥ ए जाणो पर लोक प्रमाण, कुणजाणे अणदीतुं वाण ॥ १४ ॥ अर्थः—हवे बालकने हृष्टांतें परलोकनुं प्रमाण कहे हे, बालकने जे स्तनपानप्रवृत्ति ह, ते इष्ट साधनतास्मरणहेतुक हे. ते स्मरण अनुज्ञवधी थाय ते स्मरण आ ज वें नथी, तो परज्ञवनुंज स्मरण आवें, तक्किनत वासनायें आ जवें स्मरण थाय. ए परलोकनुं प्रमाण जाणो. नहीं कां अणदीतुं स्थानक कोना जा णवामां आवे ? माटे जो पूर्वें दीतुं हे, तोज ते स्मरणमां आवे हे. एमज मरण त्रासें पण पूर्वज्ञवना मरणानुज्ञवने अनुज्ञवे नहींकां अणदीताथी त्रास केम होय ? जातमात्रें तो मुरण दीवुं नथी, अने त्रास तो पामे वे. तथी जाणियें जे परलोक वे ॥ १४ ॥

॥ एक सुखिया एक इिखया होय, पुण्य पाप विलिसत ते जोय ॥ कर म चेतनानो ए नाव, उपलादिकपरें ए न खनाव ॥ १५ ॥ अर्थः—स रखेज बाह्य कारणें एक सुखिया अने एक इिखया जे होय हे ते पुण्य अने पापनो विलास जोजो. उक्तंच ॥ जोतु च साहणाणं, फले विसेसो ए सोविणा हेक ॥ जक्कत्तणं गोयम, घडोवंहेक असे कम्मं ॥ १०॥ इहां कोइ एम कहेंद्रों के एक पाषाण तो पूंजाय हे, अने एक पाषाण रजले हे, तेम ए पण खनावें हरों तेने उत्तर कहेंद्रुं के, पाषाणादिकने पूजा अने निंदाणी सुख इःख वेदन नथी, अने जीवने ते सुख इःख वेदन हे, तो ए नोग चेतनानो करेलो नाव हे दृष्टान्वयव्यतिरेक खनावें निराकरियें तो दंगदिकने घटादिक प्रत्यें पण कारणता केम कहिये ? ॥ १५ ॥

॥ निःफल नहीं महाजन यह, कोडीकाज कुण वेचे रह ॥ कष्टसहे ते धरमारथी, मानो मुनिजन परमारथी ॥१६॥ अर्थः—महाजन जे पुखा र्यें तप जप क्रियारूप प्रयह्न करे हे ते निःफल नथी. निःफलकार्यें बुद्धिवंत प्रवर्तें नहीं जो एम कहेशों के लोकरंजनने अर्थें ते प्रवर्तें हे, तो कोडीने काजें रह्न कोण वेंचे ? इहां लोकरंजन ते कोडी हे तो तेने अर्थें महाप्र याससाध्यक्रिया तडूप रह्न वेंच हुं एवं फोकट इःख जोगव हुं तो, कोइ वांहे नहीं. अने सर्वजन जूले पण नहीं तेमाटे महाजन प्रवृत्ति जे हे ते पुख्य पाप नथी. आत्मा अर्थें हे. ए सर्व मान हुं. उक्तंच ॥ विफला वित्प्रवृत्तिनीं, नदुः खैकफला च ॥ दृष्टला जफला नापि, विप्रलं जोपि नेहशः॥ १॥ इति॥ १६॥

॥ आतमसत्ता इम सहहो, नास्तिकवार्दे मन मत दहो ॥ नित्य आतमा हवे वर्णवुं, खंमी बौद्धतणुं मत नवुं ॥ १७ ॥ इति नास्तिकवादी गतः ॥ अर्थः—एम ए प्रकारें आत्मानी सत्ता सहहो; पण नास्तिकवार्दे पोताना मनने दहन करशो नही. एटखे नास्तिकवादि चार्वाक मत निरास थयो.

हवे क्जुसूत्रनयमांहेयी बौदमत निकल्युं,माटे नवुं एवं जे बौदनुं मत तेनुं खंमन करीने नित्य आत्मा एवं समकेतनुं बीजुं स्थानक वर्णवुं बुं. ॥ १७॥ ॥ तेह् कहे क्ला संत्तिरूप,ज्ञान आतमा अतिही अनूप ॥ नित्य होय

तो वाधे नेह, बंधन कर्मतणो नहीं वेह ॥ १०॥ अर्थः-ते बौद एम

कहे वे के, जे खतिही खनुपम मनोहर क्षण संतित रूप जे ज्ञान तेहज खा तमा वे. तथाच तन्मतम् ॥ प्रवृत्तिविज्ञानोपादानमालयिव्ञानंमेवात्मा ॥ प्रवृत्तिविज्ञान जे नीलाद्याकार ते उपादेय खने तेनो खहमाकार उपादान ते खालय विज्ञानरूप नेदें उपादान उपादेय नाव वे, पण परमार्थें ज्ञान क्षणे वे. परं एक नित्य खात्मा कोइ वे नहीं. माटे जे एक नित्य खा स्मा माने वे, तेने मोक् वेगलो वे. जे कारणमाटे जेवारें नित्य खात्मा माने तेवारें खात्मा कपर स्नेह होय. ते स्नेहथकी सुखनो राग खने डः खनो देष थाय, तथी तेना साधननों राग देष थाय, एम करतां राग देष वासनाद्दारा निरंतर वधे तेवारें कर्मबंधनो खंत खावे नही. तेमाटे खा त्मा कृणिकज मानवो ॥ १०॥

॥ सर्वनाव क्लानाशी सर्ग, ं आदिश्रंत जो एक निसर्ग ॥ क्ष्णिकवास ना दिये वैराग, सुगतज्ञान नाषे वडनागं ॥ १ए ॥ अर्थः—तथा सर्व जे (नाव के०) पदार्थ ते क्लानाशी हे. तो आत्मानुं ग्रुं कहेवुं ? तिहां ए प्रमाण आपे हे के, जे अनादि अने अंत जो एक (निसर्ग के०) खनाव मानियें तो क्लानाशिपणुंज आवे, स्थित नाश खनाव मानियें तो आदि क्लों पण तेहज खनाव मानवो तेवारें दितीय क्लों नाश थयो अंत ना स खनाव न मानीयें तो क्यारें नाश न थाय. तावत्काल स्थायी खनाव मानीयें तो फरी तेटला कालपर्यंत रेहवो जोइयें एम तावत्काल स्थायीना खनावनी अनुतृत्तें कल्पांतस्थायिता होय क्लिक आल्यो. तेवारें कोनी कपर राग होय? सर्व क्लिक अनित्य वस्तु जाणियें, तेवारें गमे अल्पें नाग्यें फूटग्रं क्लेंक नावे ॥ अनित्यताकृतमिन्जीनमालोनशोंति नित्यताकृत बु दिग्रजसामि शोचतीतिवचनात् ॥ एम महानाग्यवंत (सुगत के०) बौद ते ज्ञान नाखे हे ॥ १ए ॥

॥ रागादिक वासना अपार, वासित चित्त कह्यो संसार ॥ चित्तधारा रा गादिक दीन, मोक्त कहे ज्ञानी परवीन ॥ २०॥ अर्थः—चित्तमेविद्धसं सारो, रागादिक्केशवासितः ॥ तदेव तैर्विनिर्मुक्तं, ज्ञवांतरेति कथ्यते ॥ १ ॥ धर्मकीर्त्तिनिरूपपञ्चवाचित्तसंतिः परमार्थ इति मोक्त्वक्त्रणम् ॥ २० ॥

॥ एह बौद्रनुं मत विपरीत,बंध मोक् न घटे क्ए चित्त ॥ मानो अनु

गत जो वासना, इव्यनित्य तेइज ग्रुनमना ॥ ११ ॥ अर्थः एइं बों इनुं मंत विपरीत एटले मिण्याङ्गान रूप हे. जेमाटे (क्रणिचत्त के०) क्रण्ङ्गानरूप आत्मा मानीयें तो बंधमोक्त न घटे. जे बंध कह्यों ते मोक्क्षण जे बंधक्रण नहीं. अने जो एम कहेशों के वासना एक हे, तो मन ग्रुन करी विचारों पूर्वापर ङ्गानक्षण अनुगत जे एक वासना कहों हो, तेहज स्वनाव नियत आत्म इव्य हे, अने जो कहेशों के वासना बुदिमात्र किल्पत हे, पण परमार्थे नथी, तो परमार्थ पर्यायनों एक आधार ते कोण? ङ्गानक्षणने नानाकार योगें तत्त्वनों विरोध नथी, तो इव्यने नानाक्षणयों गित्वनों क्यों विरोध? पर्याय हता अनुनवियें हैयें तेम इव्यपण हतुं अनुनवियें हैयें. निर्विकल्पबुद्धि तो विकल्पथी प्रमाण हे ॥ यत्रेवयनेयेदेशं तत्रेवास्यांप्रमाणतेतिवचनात् ॥ अने निर्विकल्पबुद्धुन्तरविकल्पबुद्धि तो इव्य पर्याय वे नासे हे, माटे वे ङ्गानांदि पर्याय सत्य हे, तो तदाधार आत्मइ, व्य पहेलां सत्य करी मानवुं ॥ ११ ॥

॥सरखा क्णनो जे आरंन, तेह वासना महोटो दंन॥ बंधमोक्कण सरखा नहीं, शकति एक निव जाये कही ॥ ११ ॥ अर्थः— सहशक्षण नो जे आरंन तेहज वासना हे, एम कहें हुं ए महोटुं कपट हे, जेमाटे बंध मो क्ना क्ण सरखा नथी. तो जे बंधाय ते मूकाय एम कहां जाय नही. तेवारें मोक्ने अर्थें कोण प्रवर्ते ? वली कहेशो के, बंधजने तो शक्तिवंत क्षण जूदा हे, अने मोक्जने नशक्तिवंत क्षण जूदा हे. बंध हे ते एक लाधिवासित मोक्जनक क्णसंपादनार्थ अविसाइज प्रवर्ते हे. मोक्जवर्त्तक अविद्याविवर्त्त संसारमूलाविद्यानाशक हे ॥हरित कंटक एव हि कंटक मिति न्यायात् ॥नो हेव दन यक्षदनाप्तमोक्कणजननार्थें केम न प्रवर्ते ? बंधमोक्कणजनक एक शक्तिनो ते न कही जाय, एमतो आत्मइव्य सिक् थाय. कुर्वपूर्णचजाति मानतां सांकर्य थाय. कारणने कार्यव्याप्यता हे. तेमाटे एकदा उनयक्षण थया जोइयें. एकेक क्षणनें निन्नशक्तिमांहे घाततां निर्हारण थाय. तेमाटें ए सर्वशकें कल्पना जूही जाणवी ॥ ११ ॥

॥ जपादान अनुपादानता,जो निव जिन्नकरे क्ए बता ॥ पूर्व अपर प र्यायें जेद, तो निव इव्य लहे त्यजी खेद ॥ १३ ॥ अर्थः— बीजुं एक कार्जे पण अनेक कारणना क्ए बे. तिहां जपादान निमित्तपण जो क्र्ण नो जेद नथी तो पूर्व अपर पर्यायने जेदें इव्य जेद न पामे. माटें मताम हनो खेद ग्रांमीने इव्य एक आदरो ॥ १३ ॥

॥ जो क्णनाशतणो तुफ धंध, तो हिंसायी कुणने बंध॥विसदश क्णनुं जेह निमित्त, हिंसक तो तुफ मन अपवित्त ॥ १४ ॥ अर्थः—वली क्ण नाशी वस्तु माने वे तिहां दोष कहे वे. जो क्लानाशनो धंध तुजने लागो वे, तो हिंसायी बंध कोने थाय, जेमाटे जीव तो क्लोंक्लों नाश पामे वे, तो हिंसायण कोनी केह्यी थाय वे ? तेवारें हिंसाथी जे पापबंध कहो वो ते पण कहो केम मले ? हिंसाविना अहिंसा पण क्यांथी होय? ते अहिंसाने विनाशें तहारे व्रतपण क्यांथी होय? लेमाटे व्रतपण अहिंसानी वाडिक प कह्यां वे. एम सर्व वातोनो लोप थायं जो एम कहेशो के, मृगने माखो तेवारें मृगनो सदशक्रणारंन टब्यो, विसदशक्रणारंन थयो, ते हें निमित्त कारण आहेडी प्रमुख ते हिंसक कहियें. एवीरीतें बोलनारा ते बौद्धने क हेवुं के, एमतो तहारुं मनपण हिंसायें अपवित्र थयुं. जेमाटे व्याधिक्णनी परें ताहारो पण अनंतरक्ण मृगविसदश क्णनो हेतु थयो ॥ तद्धहितः स हि यो यदनंतरः इति न्यायात् ॥ क्लाना अन्वयव्यतिरेक तो सरखा वे. तक्काति अन्वयव्यतिरेकनुं याहक प्रमाण नथी ॥ १४ ॥

॥ समजिवित्त क्र्ण हिंसा यदा, काययोगकारय नहिं तदा ॥ अनुमंता ने हंता एक, तुफविण क्रण जाखे सिवविक ॥ १५॥ अर्थः—जो कहेशो के, अमे असिवित्रकत कर्मवैकव्प वानी ढूंटे तेमाटे मृगमारणाध्यवसायवंत व्याध वित्तसमल हे, ते क्रणने हिंसा कहियें हैयें. तो एक काययोगें ह णे अने एक तेने प्रशंसे, ए बेहुमां फेर नधीज. तो मोक्र कहेतां योगजेदें प्रायिश्वत्तेद कह्यों हे ते न घटे. जेमाटे निमित्तजेद विना नमस्कार जेद होय तो सर्वविस्था लोप थाय ॥ १५॥

॥ खलिंमीने माणस जाणि, पंचे तेहने गुणनी हाणि ॥ नर ने खल जाणे निव दोष, किह्यो बुधने तेहची पोष ॥२६॥ अर्थः—मनःपरिणाम पणें आज्ञायोगेंज प्रमाण हे. तमें एम कहो हो जो खलिंमीने माणस जाणीने पंचे तेने घणी हाणी होय, जेमाटे नरने खलिंमी जाणवाची तेने मनुष्य हणवानो नाव थयो. जो कहेशो के नरने खलिंमी जाणे थके कोइ दोष नथी. कारण के तिहां मनुष्यने हणवानो अध्यवसाय नथीं पिं मपरिणाम ग्रुक् हे तेऐंकरी बुक्ते पारणुं करावीयें, पोषीयें, तो स्रुजे ॥ उ कंच ॥ पुरिसं च विद्रूणकुमारमं वा, स्रुलंमि केई पमइ जाय तेए ॥ पिन्नाग पिंमस इमारुहित्ता, बुक्षाण ते कप्पइ मारणाए ॥ २६ ॥

॥ संघनगित अजमांसें करो, दोष नहीं तिहां इम उच्चरो॥ ए महोटुं वे तुम अज्ञान, जोजो बीज्ञं अंग प्रधान॥ १९॥ अर्थः—तथा बोक डाने मांसें संघनिक करो वो, अने तेमां कांइ दोष नथी एम मुखें उच्चारो वो, ए महोटुं तमारुं अज्ञान वे. ते विचारी जोजो ॥ उक्तंच श्रीस्वयगडांगस्र त्रे, यतः ॥ चूब्ह्उरप्रश्रह्मारिआणं, उदिष्ठननं च पकप्पश्ता॥ तलोणतिन्न ए उवस्किमना, सविष्पजाइ पहितं मंसंतं नुंजमाणा मिसिअं एन्यूयणं, उविष्पा मुवयंरएण ॥ इच्चेवमाहंसुअणक्षधम्मा, अणायरिआ याव रसे सु गिद्धा ॥ इत्यादि ॥ एम तमारे मतेंतो माताने स्त्री करी सेवतां पण दोष न लागो जोइयें. मंमलतंत्रवादी तो अगम्यागमनें पण दोष नथी केहेता. ए सर्व ज्ञान व्यवहारलोपक मिथ्यात्व वे ॥ १९॥

॥ हिण्यें जे परयाय अशेष, इःख कपाइवुं ने संक्षेश ॥ एह त्रिविध हिं सा जिन कथी, परशासनें न घटे मूलथी ॥ १० ॥ अर्थः—जिन श्रीवी तराग देवें कहेली हिंसा त्रण प्रकारें हे, तेमां एक तो जे मृगादि पर्याय ध्वंस करियें ते, तथा बीजी ते जीवोने इःख उपजाववुं ते, त्रीजी पोता ना मनमांहे संक्षेश एटखे मारवानो नाव धारण करवो, ए त्रण प्रकारनी जे हिंसा ते जे एकांत नित्य अने एकांत अनित्य आत्माने माने हे, एवा जे परशासनी तेने मूलथी न घटे. जेमाटे मृग मरीने मृगज थयो. तिहां वि सहश ऋणनो आरंन क्यां हे? संतानेक्यनी अपेक्षायें व्यक्तिवैसहश्य कहे तां तो इव्येक्यज आवे. इत्यादि विचारवुं ॥ १०॥

॥ निश्रयंथी साधे क्ष्णजंग, तो न रहे व्यवहारें रंग ॥ नव सांधें ने त्रूटे तेर, ऐसी बौदतणी नव मेर ॥ २ए ॥ अर्थः—निश्रय जे क्जुसूत्रनयने जङ्गे क्षण साधे वते व्यवहार जे बंधमोक्ष्प्रत्यनिक्षानप्रमुख वे तेणें रंग रहे नही. एम बौदनी मर्यादामांहे 'नव सांधे ने तेर त्रूटे 'ए उखाणो साचवे वे. अने निश्रय व्यवहार उत्तय सत्य ते स्याद्दादीज साधी शके ॥ १ए॥

॥ नित्यपणायी निहं ध्रुव राग, समजावें तेह्नो निव लाग॥ नित्यपणें फलहेतु संबंध, निहं तो चाले श्रंधो श्रंध॥ ३०॥ श्रर्थः— श्रारमाने

नित्य मानीयें तेमाटे ध्रुव निश्चय राग नथी. जेमाटें रागद्देष ते मनःसं कल्परूप हे. आत्मा ज्ञानी निर्विकल्पस्वनाव समतानावमां हे आवे तेवारें राग वासनानो लाग नथी. साम्य संस्कार ते राग संस्कार विरोधी हे. आ त्माने नित्यपणुं माने तो, फल मोक्त अने हेय आत्मज्ञान चारित्रप्रमुख ते नो एक इव्यसंबंध संनवे नही. तो बंध मोक्त क्रणना संबंधविना सर्व प्र हित्त अंधपरंपरा थाय ॥ ३०॥

॥ रयणतणीपरें थाये विद्युद्ध, नित्य आतमा केवल बुद्ध ॥ रागविना न वि प्रथम प्रवृत्ति, तो किम उत्तर होय निवृत्ति ॥३१॥ अर्थः—नित्य आतमा मानियें तेवारेंज प्रथम अद्युद्ध हतो ते केवलकानें विद्युद्धि थइने द्युद्ध था य. जेम रत्न पहेलां अद्युद्ध होय. ते उपांयथी आत्मा नित्य वे तेऊपर रा ग होय तोज धनार्थाने इःखक्यंनेअर्थे पहेलां प्रवृत्ति होय, अने ते न हो य तो निवृत्ति पण पढी क्यांथी होय ? ॥ ३१ ॥

॥ ग्रांमीजें नवबीज अनंत, क्वांन अनंत लहीजें तंत ॥ पण निव चेग्नों अधिको नाव, नित्य आतमा मुक्तस्वनाव ॥ ३१॥ अर्थः—नित्य आतमा मानियें तोज आविनीव तिरोनाव रूपें सर्व पर्याय मले; ते कहे हे. नव जे संसार तेनां बीज रागद्देषादिक अनंत हे. तेने ग्रांमियें वैयें. ततः परमार्थ क्वांन पर्याय अनंत लहियें वैयें. पण आत्मानो नाव एक अंशे चेग्नों अधि को नथी. अनंतधमीत्मकस्वरूप आविनीवमात्रज नित्य सत्य मुक्तात्मक हे. ॥ उक्तं च सिद्दसेनाचार्यैः॥ नवबीजमनंतमुज्जितं, विमलक्वानमनंतमर्जितं ॥ नचहीन कलोसि नाधिकःसमतांचाप्यतिवृत्य वर्तसे ॥३१॥ ए दृष्टांतें कहेग्ने.

॥ घनविगमें जिम सूरज चंद, दोष टले मुनिहोय अमंद ॥ मुगतिदशा थिरदर्शन घटे, ते मेली कुण जावें अटे ॥ ३३ ॥ अनित्यवादी गतः ॥

अर्थः-ए दृष्टांतें कहे वे (घन के०) मेघ तेने (विगमें के०) नारों जेम सूर्य चंइ (अमंद के०) ग्रुड थाय, तेम दोष जे रागद्देषादिक ते टर्जे थके मुनि पण अमंद एटजे ग्रुड्युड्य मुक्त स्वनाव थाय. एणीपरें थिरवा दीने दर्शनें मुक्तिदशा घटे ते मजे अनित्यवादी बोड्युं मत आदरीने कोण संसारमांहे (अटे के०) नमे, अर्थात् कोश्पण बुड्यिंत नमे नहीं ॥३३॥

॥ नित्य आतमा मानो एम, योगमार्गमां पामो खेम ॥ करता जोक्ता जाखुं हवे, ते न रुचे जे जूठुं लवे ॥ ३४ ॥ अर्थः-एवीरीते आत्मा नित्य हे एम मानो, अने योगमार्गमां हेम पामो. ए नित्य आत्मा नामें बी जं स्थानक पुरूं थयुं ॥ १ ॥ दवे आत्मा कर्ता अने आत्मा नोक्तानां स्थानक नांखं हुं. जे मतवादियो जहुं लवे हे, बो ले हे, ते मुजने रुचता नथी. ॥ एक वेदांती बीजो सांख्य, कहे कर्ता नोक्ता नहिं मुख्य ॥ प्रथम कहे हुए मात्र प्रमाण, नास उपाधिनेद मंमाण ॥ ३५ ॥ अर्थः—हवे एक वे दांती अने बीजो सांख्य ए बे वादी कहे हे के, आत्मा कर्ता नोक्ता न थी. तेमांहे प्रथम वादी वेदांती कहे हे, जे हगूमात्र झानमात्र प्रमाण हे, सर्व वादी झान माने हे, जल पृथ्बी ते एक हे, अनादि अनंत हे, नेदा दि प्रतिनास चित्तोपाधि विषयक हे, ते झाननी उपाधि विश्वनेदनु मंमा ण हे, आत्माध्यासरूप सर्व प्रपंच हे ॥ ३५ ॥

॥ मार्यांदिक मिश्रित उपचार, ज्ञान खंजान यंथी संसार ॥ हक्ष्यपणें मि थ्या परपंच, सघलो जिम सुद्धणानो संच ॥ ३६॥ अर्थः—(माया के०) खड़ान 'खदं मां नजानामि' इत्यादि प्रसिद्ध सर्व प्रपंच मूलकारण खन्तिनाव ते प्रमुखें करी मिश्रित जे उपचार ते ज्ञान खड़ाननी गांतरूप संसार हे, खड़ानाध्यस्तनेविषे शरीराध्यस्तनेविषे, इंड्याध्यस्त इत्यादि उपचार यंथी जाणवी, सर्व प्रपंच हक्ष्यपणा माटे मिथ्या हे, जेम सुद्धणा नो संच स्वप्नमोदकादिक कहेवाय तेम हे ॥ ३६॥

॥ जिम कटकादिविकारें हेम, सत्य ब्रह्म जगजालें तेम ॥ जे परिणामी तेह असंत, अपरिणाम मत कहे वेदंत ॥ ३७॥ अर्थः—जेम कटक के यूर प्रमुख सुवर्णना विकार हे, ते जूहा ते कार्य पणे हे जेहना एवं हेम हे, तेम जगजालरूप विकार जूहा है, तेमध्ये अविकारी ब्रह्म सत्य हे. जे परिणामी ते असत्, जे अपरिणामी ते सत्, एम वेदांत कहे हे ॥ कालह स्यनावप्रतियोगिलमसत्यत्वं तिक्वत्वं सत्यत्वं॥ उक्तंच॥ आदावंतेचयन्ना स्ति मध्येपिहिचतत्त्रया॥ वित्येः सहशाः संतो वित्या ६व लिह्नताः ॥३॥॥

॥ जिम तातादिक अवता कहाा, श्रुतिसुषुयतें बुद्ध सहह्या ॥ तिम इा नें अवतुं ब्रह्मंम, अदिकानें नासे अदिदंम ॥ ३०॥ अर्थः—जेम तात प्रमुख अवता कह्या, अत्र 'पिता अपिता जवित, माता अमाता भवित, ब्राह्मणो अब्राह्मणो जवित, चूणदा अचूणदा जवित ' इत्यादि श्रुतें वेदां त पंमितें सहह्या. तेम आत्मकानें ब्रह्मांम अवतुं थाय. जेम अदिकानें अहिदंम नारो, तेमज आत्मकानें आत्मकानजनित प्रपंच नारो, ग्रुक्तिका ननार्य लाववथी ग्रुक्ति रजत हे ॥ पण ते कान नहीं. तेम आत्मकानना नारों पण प्रपंच जाणवो ॥ ३० ॥

॥ अधिष्ठान जे नवचमतणुं, तेहज ब्रह्म हुं साचुं गणुं ॥ तेहने नहीं करमनो खेप, होय तो न टखे करतां खेप ॥ ३ए ॥ अर्थः—प्रपंचचांति ते हतुं अनुष्ठान जे ब्रह्म तेहज हुं साचुं गणुं ढुं. जेम रजतचमाधिष्ठान छिक्त अहिचमाधिष्ठान रक्जुप्रतें ब्रह्मप्रपंचने साहश्य नथी तो च्रम केम होय ? एवी शंका न करवी जेमाटें कोइ तमंसाहश्य नीरपण होय हो. नजोनील मितिवत्. ते ब्रह्मपरमार्थसत्यनें कर्मनो खेप नथी. जो चेतनने कर्मनो खेप होय तो घणुये उद्यम करतां टखे नहीं ॥ ३ए ॥

॥ जे श्रनाद श्रज्ञान संयोग, तेहनो किह्यें न होय वियोग'॥ नाव श्रनादि श्रनंतज दिछ, चेतन परें विपरीत श्रनिष्ठ ॥ ४० ॥ श्रर्थः—जेमा टे (श्रज्ञान के०) ज्ञानावरणकर्म तेहनो श्रनादि संयोग जीवने मानो तो किह्यें क्यारें वियोग नयी तथा नाव श्रनादि होय ते श्रनंतज होय जेम चेतननाव विपरीत श्रनिष्ठ हे. श्रनादिसांत नाव प्रमाणिस इज न थी. तेमाटे कर्मसंयोग जीवने श्रनादि नथी, सदा कर्ममुक्तज ब्रह्म हे. नित्य मुक्तने श्रविद्यायें ज बंध जणाय हे. ते श्रागली गायायें दृष्टांतें दृढावे हे ॥४०॥ ॥ काच घरें जेम नूंके श्वान, पडे सिंह जलबिंब निदान ॥ जिम कोलि क जालें ग्रंथाय, श्रज्ञाने निजबंध न याय ॥ ४१ ॥ श्रर्थः—जेम काचना घरमां प्रतिबिंबने श्रपर बीजो श्वान न जाणीने श्वान नसे हे, जेम सिंह जलमांहे पोतानुं प्रतिबिंब देखी तेना निमिन्तें श्रपरसिंह जाणी कोधें करी तेमांहे पहे हे, जेम तनुवाय पोतें जाल करे तेमांहे पोतेंज ग्रंथाय हे, तेम ब्रह्मज्ञानविना नेदप्रतिनासें जूहें जूनुंज बंधन थाय है ॥ ४१ ॥

॥ इम अक्वानें बांधी मही, चेतन करता तेहनो नहीं ॥ गल चामीकरने हष्टांत, धरमप्रवृत्ति जिहां लगे चांत ॥ ४२ ॥ अर्थः—एम अक्वानें (मही के०) पृथ्वी ते बंधाणी हे, ते बंधनो कर्त्ती चेतन नथी. जो परमार्थथी बंध नथी, तो बंधवियोगने अर्थे योगी केम प्रवर्ते हे? ते आशंकायें कहे हे. (गलचामीकर के०) कंहगत हेममाला तेहने हष्टांतें चांति हे. तिहांसुधी धर्मनेविषे प्रवृत्ति ते जेम हतीज कंहसुवर्णमाला गले जाणी, कोइक घणा स्था

नकें शोधे, तेम अबहु ब्रह्मनेज बंध जाए। बंध वियोगने अर्थे तपस्वी प्रवर्ते हे.

॥ च्रांतिमिटघे चिन्मात्र त्र्यगाध, करता निहं पण साखी साध ॥ व्यव हारें करता ते होन, परमारघें निव बांध्यों कोन ॥ ४३॥ अर्थः—ते च्रां ति मटे. अगाध निस्तरंग चेतना विज्ञासमात्र हे, ते दिसायें साधु कर ता नथी. पण शाद्दी हे व्यवहारें जोक प्रत्यें ते कर्चा नासे हे परमार्थें कोइ बांध्यों नथी ॥ ४३ ॥

॥ श्रनिधानयोजन केवत्य, गुण पामे श्रुति कहे निसत्य ॥ परमारण व्य वहार श्रन्यास, नासनशिक टले सिव तास ॥ ४४ ॥ श्राचिः श्रनिमुख ध्यान ते श्रनिध्यान वेदांत श्रवणयोगें मुक्तिने ते योजन तत्त्वज्ञान (के वत्य के०) विदेह केवलनाव एं त्रण गुण पामीयें, ते जीवने श्रनुक्रमे प्र पंचनी पारमार्थिक व्यावहारिक श्रानासिकता प्रतिनासननी शिक हे, ते मटे. तिहां नेयायिकादि वासनायें प्रपंचने परमार्थिकपणुं जणातुं ते वेदांत श्रवण पही मटे तेवार पही प्रपंचने योगी व्यावहारिक करी जाणे, पण पारमार्थिक करी न जाणे वलतुं तत्त्वज्ञान उपजे तेवारें प्रपंचने व्यावहारि कपणें न जणाय. बाधितानुहत्त्वायंतिकड्डखनिहनों विदेहकेवत्यप्रपंचनं ज्ञानमात्रज टले. निःप्रपंच चिन्मात्र होइ रहे. तस्यानिध्यानाद्योजनात्त त्वनावाङ्ग्यश्चांते विश्वमायानिहित्तिरिति श्रुतिः ॥ ४४ ॥

॥ जीवन मुक्त लह्यो निज धाम, तेहने करणीनुं निहं काम ॥ जिहां श्र विद्या करणी तिहां, वीसामो ने विद्या जिहां ॥ ४५ ॥ अर्थः—तस्व काने संचित कर्में करी प्रारच्य मात्र जोगीनी प्रतीक्षा करतो, जीवन्मुक्त थयो ते पोतानुं तेज पाम्युं. तेने करणीनुं काम नथी. ज्यांसुधी अविद्या ने, त्यांसुधी किया ने, ज्यां विद्यातस्वसाक्षात्काररूप आवी, तिहां वीसा मो ने. यतः आरुरुक्षोर्मुनेयोंगं, किया कारणमुच्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव, शमः कारणमुच्यते ॥ १ ॥ ४५ ॥

॥ विधिनिषेध ज्ञानीने कही, प्रारब्धें तस किरिया कही ॥ अवर किर्देशें निह्न तास अदृष्ठ, जीवनकारण अन्य अदृष्ठ ॥ ४६ ॥ अर्थः—तस्व ज्ञानीने विधिनिषेधरूप वैदिकित्रिया कोइ नथी. जेमाटे विधिनिषेध सर्व अविद्यावत्पुरुष विषय हे, आहारविह्नारादि क्रिया शरीरसाधन हे, तेपण प्रारब्धादृष्ठ हे, एम सांप्रदायिक वेदांति कहे हे. उड्डांखल कहे हे ॥ श्लीयंते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि, नस्मसात् कु रुतेऽर्ज्जुन ॥ इत्यादिवाक्यें कर्म सर्वपद संकोचनी ख्रन्यायतायें ज्ञानीने खदृष्टमात्रनो नाश माने हे, खने तेने शरीराश्रित कारण ते श्थर शरीरनी परें खन्यादृष्ट हे ॥ ४६ ॥

॥ करे न जुंजे इम आतमा, वेदंति बोले महातमा ॥ सांख्य कहे प्रकृति सिव करे, चेतनरूप बुिं मांहे धरे ॥ ४९ ॥ अर्थः— एरीतें आत्मा न कर्ता न जोका एम वेदांति बोले हे, ए वेदांतिनो मत कह्यो. हवे सांख्यनो मत कहे हे. ते सांख्य मतवाला कहें हे के सत्व, रज अने तमोगुणनी साम्यावस्था अनादि मूलकारण प्रकृति हे, तेहज सर्व प्रपंच करे हे, स्वप रिणाम महत्तत्त्वापर नामक स्वज्ञ बुिं हें तेहमां चिन्मात्र आत्मरूप प्रतिबिंब धरे हे ॥ ४६ ॥

॥ जिम दरपण मुख लालिम तास, बिंब चलननो हो इछास ॥ विषय पुरुष उपराग निवेश, तिम बुि व्यापारावेश ॥४०॥ अर्थः—तेवारें त्रण प्रकार थाय हे ते हष्टांते देखाडे हेः—जेम दर्पण एटले आरिसाथी मुख नीलो तेम रक्त जो देखाय अने ते दर्पणनी चलनायें बिंबनी चलनानो उछास होय, तेम ते बुि चित्रतिबिंबें घटादि विषयोपराग 'अहं' ए पुरुषो पराग कियाहर व्यापारावेश होय ॥ ४०॥

॥ हुं जाणुं ए करणी करुं, ए त्रिहुं अंशे माने खरुं ॥ पण ते सरव न रमनी जाति, जाणे ग्रुद्ध विवेकह ख्याति ॥४ए॥ अर्थः—हुं एटले आत्मा, जाणुं घटादिक, करण गमनादिरूपकार्य करुं, ए त्रण अंशें जीव खरुं करी मा ने, पण ते सर्व प्रतिविंब च्रमनी जाति है. (विवेकहख्याति के॰) प्रकृतिपुरु षान्यनाव जेहने होय ते ग्रुद्ध केवलात्मस्वरूप जाणे ॥ ४ए ॥

॥ प्रकृतिधमे हित श्रहित श्राचार, चेतनना कहे ते उपचार ॥ विजय प राजय जिम जटतणा, नरपितने किह्यें श्रितिषणा ॥ ५०॥ श्रर्थः—श्र परोक्ष्यम ते श्रपरोक्ष साक्षात्कारेंज निवर्ने ते श्रद्धात्मक झान हे, (हित श्रहित के०) विधिनिषेध श्राचार क्रियारूप हे ते सर्व प्रकृति नाना ध मे हे, श्रात्मातो श्रक्तिय हे तेहने जे चेतना कहे हे ते उपचार करी जाणवो. जेम सुजटना विजय पराजय श्रितिषणा हे ते सर्व राजाना क हियें एटले सुजट जीते राजा जीत्यो, श्रने श्रुजट हास्रे राजा हास्रो, एवो व्यवहार हे एम प्रकृतिगत ग्रुनाग्रुन किरिया ते आत्मानी करीने व्यवहा

॥ प्रकृति करे निव चेतन कलीव, प्रित बिंबे ते जुंजे जीव ॥ पंचवीशमुं तत्त्व ख्रगम्य, हे कूटस्य सदा शिव रम्य ॥ ५१ ॥ अर्थः—प्रकृति ते सर्व कार्य करे हे, चेतन ख्रात्मा नधी करती जेकारण माटे ते कलीब हे, क्रियानुं ख्रसमर्थ हे, क्रस्वजाव ते कर्तृस्वजाव केम होय, बुद्धि करे हे, ते प्रतिबिंबे जीव जुंजे हे, बुद्धिनिष्ठप्रतिबिंबयाहित्वमेव चितो जोगः ख्रतएव सांख्यमें शाह्मात् जोका ख्रात्मा नधी. पचवीसमुं तत्व ख्रात्मरूप ख्रगम्य ख्रगोचर हे. (कूटस्थ के०) ख्रिनित्यधमें रहित सर्वकाल सदा (शिव के०) निरुपइव (रम्य के०) मनोहरं हे ॥ ५१ ॥

॥ आपंविलास प्रकृति दाखवी, विरमे जिम जग नहुइ नवी॥ प्रकृति विकार विलय ते मुक्ति, निर्गुण चेतन थाये युक्ति ॥ ५२॥ अर्थः—प्रकृति ते आत्म विलास मदादि प्रपंच देखाडी विरमे निवर्ने जेम जग नवी नदूइ नाटक देखाडी विरमे ॥ उक्तंच ॥ रंगस्य दर्शियत्वा निवर्नते नर्निकी यथा नृत्यात्॥ पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्नते प्रकृतिः ॥ प्रकृतिविका रनो विलय तेहज मुक्ति ते चितिरसंक्रमा इत्यादि सूत्रानुसारें निर्गुण चे तननेज थापे हे ॥ ५२॥

॥ पंथी ज़्ंखा देखी गूढ, कहे पंथ ज़ंटाणो मूढ॥ प्रकृतिक्रिया देखी जी वने, अविवेकी तिम माने मने ॥ ५३॥ अर्थः—पंथी लोकनें ज़ं्खा देखीने तेनो गूढ एटजे रहस्य ते मूढबुिक एवं कहे हे. जे पंथ ज़ंटाणो. इ हां (पंथ के०) नाग ते अचेतन हे तेनुं ज़ंटवुं ते वली किर्युं होय. ए उपचार वचनने अनुपचार करी माने तेने मूढ किर्यें तेम प्रकृतिनी किया देखीने अविवेकी पुरुष, जीवने किया पोताने कृत्या दयो मनस्थो धर्मानेदायहात् पुरुषे नासंते ॥ ५३॥

॥ मूल प्रकृति निव विकति विख्यात, प्रकृति विकति महदादिक सात ॥
गण पोडशक विकारी कह्यो, प्रकृति न विकृति न चेतन लह्यो ॥ ५४ ॥
अर्थः—जे मूलप्रकृति ते विकृतिरूप न होय, कोइनुं कार्य महदादिक
सात पदार्थ महन् अहंकार पचतन्मात्र ए प्रकृति कही अने विकृति कहि
यें उत्तरोत्तरनुंकारण पूर्व पूर्वनुं कार्य ने तेज्ञणी पांचजृत अने इगीआर इंडि

य एषोडशगण विकारी कहाो. एकार्य हे,पण कारण नथी. चेतन ने प्रकृते नहीं कारण वकार्य नहीं तो कृटस्थ चैतन्यरूप कहाो हे॥ तफ्कं सांख्यसप्ति कायाम् ॥ मूलप्रकृतिरिवकृतिमहदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त ॥ षोडश कस्तु विकारी न प्रकृतिर्निवकृतिः पुरुषः॥गंधतन्मात्र १ रसतन्मात्र १ रूपत नमात्र ३ रपश्तिनमात्र ४ शब्दतन्मात्र ५ ए पांच तन्मात्र नाम. श्रोत्र ब्रा ण जिव्हा नयन स्पर्शन ए पांच बुद्धीं इ्य. वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ ए पांच कर्में इय श्रमे इग्यारमुं मन इं इय ॥ ५४ ॥

॥ ए बिहुंने साधारण दोष, न करें तो किम बंधनमोख ॥ मनबंधाये हूटे जीव, एतो जुगतुं नहीं अतीव ॥ ५५॥ अर्थः -एम जीव अकत्ती अनोक्ता सांख्य वेदांती ए बे मतवाला कहें हे. हवे ते बेहुने दूषण दी ये हे. ए बेहुने साधारण एटले संरखो दोष हे. जो जीव करे नहीं, तो ते ने बंध पण न घटे, तथा मोक्रपण घटे नहीं. जो एम कहेशो के, क्रियावती प्रकृति हे. तेमाटे प्रकृति बंधाय. सालिक राजस तामस नावे प्रकृतिनेज सं बंध हे. तिह्कार महत्तलना ए नाव हे. जीवमां तो अध्यास मात्रें सिव लास प्रकृति निहित्तहूप मोक्त ते जीवने हे. ए तो घटे नहीं. जे कारणमाटे जे बंधाय हे. ते हूटे. परंतु अन्यने बंध अने अन्यने मोक्त ए कहेवुंज के म होय? ॥ ५५॥।

॥ परमारथे निव बंधन मोख, उपचारें जो करसो तोष ॥ मोक्त्शास्त्र तो तुम सिव तृथा, जेहमां नहीं परमारथकथा ॥ ५६ ॥ अर्थः—हवे को इ कहेशे के, बंध मोक्त तो जीवने व्यवहारें किहयें वैथें. परं परमार्थें तो अबंधमुक्तिमत् खरूप वे ॥ नमुमुक्तुर्न वे मुक्त इत्येषा परमार्थेंतेति वचनात् ॥ तेहने किहयें के, जो परमार्थें बंध मोक्त नथी तो मोक्त उपचारें होय वे. ए वातेंज तमे संतोष करशो तेवारें तो सर्व तमारे तृथा वे. मोक्शास्त्र रूप परमार्थेनी कथा जेमां नथी तेवारें ॥ पंचिवंशतितत्त्वक्तो,नरोहा त्रिंशके रतः ॥ तटी दरी शिखी चापि, मुच्यते नात्रसंशयः ॥ १ ॥ ब्रह्मविद् ब्रह्म नूयमान्नोति इति आदिशास्त्र सर्व प्रवर्त्तक न थाय ॥ ५६ ॥

॥ प्रकृति अविद्या नाज्ञें करी, पहेली आत्मद्रशा जो फिरी॥ तो कूटस्य पणुं तुम्ह गयुं, निहंतो कहो ग्रं अधिकुं षयुं॥ ५७॥ अर्थः—हवे ए बे हु मत आत्माने कूटस्थपणुं माने हे,ते दूषे हे. प्रकृतिनो सांख्यमतें अने अ विद्यानो वेदांतमतें जेवारें नाश होय, तेवारें जे पहेली आत्माने संसारी दशा हती ते जो फरी गइ तो तमारे मतें कूटस्थपणुं पण गयुं. परिणाम पणु थयुं. नहीं तो कहो के मुक्तिदशायें अधिकुं शुं थयुं. जे सर्वदा शुद्ध आ तमा हो तेने प्रकृति अविद्या नाशने अर्थें स्यो साधन प्रयास करावो हो?॥५॥॥

॥ माया नाशन अधिको नाव, ग्रुड् रूपतो प्रथम विनाव ॥ रह्नादिक मां ग्रुड् अग्रुड्, जो कहो तो श्री इहां कुबुड् ॥ ५०॥ अर्थः—जो कहेशो, के माया नाशअधिको नाव नथी. अधिकरण स्वरूपन हे. तो प्र थिवि नावरूप आत्मा ते ग्रुड्रूप यं जाय. जेमाटे ते आत्मामांहे मायि कनावनो अत्यंतानाव हे. ग्रुड्रूपक्षानेंज जो ग्रुड् थाय तो समलनाज नादिक पण निर्मलता कानेज निर्मल थवुं जोश्यें. रह्नादिकने जेम ग्रुड् अग्रुड्ड वर्षाधें कहो हो. तेम आत्माने परिणामिवशेषें जाणो. ए शी कुबुड्डि ? जे पुजलक्ष्यने परिणामें ग्रुड् कहो हो, अने आत्माने तेम नथीकहेता?॥ ए०॥

॥ रतनशोध जिम शतपुट खार, तिम ञ्चातमशोधक व्यवहार ॥ ग्रणधा रायें श्रिखल प्रमाण, जिम नाखे दासूर सुजाण ॥ ५ए ॥ अर्थः — जेम रत्नशोध करे तेने दोषनो टालणहार शतपुट खार एटले शोखार पुट हे. ते म श्चात्माना दोषनो शोधक क्रियाव्यवहार हे. चरमिक्रयासाधन माटे प्रथमादि क्रिया पण लेखे हे. प्रथमादि विना चरमखारपुट न होय ते विना रत्नश्चित न होयः ए क्रियाद्षष्टांत जाणवो. ग्रणधारा हिक् सर्व प्रमाण हे. ए हज श्रिनप्रायें योगवाशिष्ठ यंथमध्ये दासूर क्षी रामचं प्रत्यें बोल्या॥ ५ए

॥ सतुषपणुं जिम तंडल तणुं,श्यामपणुं त्रांबानुं घणुं ॥ क्रियाविना निव नारो पुत्र, जाणि पुरुषमल तेम अपवित्र ॥ ६०॥ अर्थः— सतुषपणुं फोतरासिहतपणुं जेम तंडलतणुं त्रीहीतणुं जेम! त्रांबानाजननुं घणेरुं रयामपणुं मिलनपणुं ते कुट्टन मांजनादिकें जाय. तेम क्रियाविना हे पुत्र रामचंड, अपवित्र जे अनादिकालीन पुरुषमल कर्मरूप हे,ते क्रियाविना इा नमात्रें नारो नही. वचनमात्रें आत्मसंतोषें ग्रं थाय? ॥ उक्तंच ॥ नणंतो अकरंतो य,बंधमुरकपइन्निणो॥वाया विरयमिनेणं, समासंतिय अप्पयं॥६०॥

॥ एतो ग्रुडाग्रुड स्वनाव,कहियें तो सवि फावे दाव ॥ कालनेदथी न हीं विरोध, सघट विघट जिम नूतल बोध ॥ ६१॥ अर्थः-एतो आत्मा नो स्वनाव जो संसारी दिशायें अग्रुड एम ग्रुडाग्रुड स्याहाद प्रमाणें क री माने तो सर्व दाव मुक्तिशास्त्रनो पामे. पण एकांतवार्दे तो कांइ मजी शके नहीं. विरोध परिहार हे काजनेदथी विरोध नहीं जेमाटे एकज घट काजें घटवत् स्वनाव हे, अन्यकाजें अघटस्वनाव हे. एम शुक्राशुक्षेत्रयस्व नावकाजें नेद माने तो विरोध नथी. अन्यनें जे नावानावसंबंधघटक ते जन्म हारे स्वबलस्वनाव हे ॥ ६१॥

॥ केवल ग्रु६ कही श्रुति जेह,निश्रयथी नहिं तिहां संदेह॥ ते निमित्त कारण मिव सहे, चेतन निजगुण करता कहे ॥६१॥ अर्थः—श्रुतियें कू टस्थपणुं कह्यं हे ते मेले श्रुतियें जे केवल ग्रु६आत्मा कह्यो हे ते निश्रय नथी. तेहथी तेमां संदेह नहीं. जेहनो आविर्जाव सि६मांहे हे, ते निश्रय नय निमित्त कारण न माने, ग्रु६पर्याय ग्रुपांदानें व्यतिरिक्तनावेंज ग्रु६ कहे.

॥ चेतन कमे निमित्तं जेह, जांगे तेखें जिम रज देह ॥ करम तास करता सदहे, नयव्यवहार परंपर यहे ॥ ६३ ॥ अर्थः—तेहने ज्ञानावरणादि इव्य कमे कहियें तेनो कर्ता जीव छे. एम व्यवहार नय सदहे. ते जाव कमेंघटित परंपरा संबंध माने छे. निश्चयनयने मतें पुजलनिमित्तें जीवस्व परिणामकर्ता अध्यवसाय निमित्त पुजल स्वपरिणामकर्ता एम माने ॥६३॥

॥ बीज श्रंकूर न्यायें एम धार, बे श्रनादि पण श्रावे पार ॥ मुगित सा दि ने जेम श्रनंत, तिम जव्यत्व श्रनादि स श्रंत ॥ ६४ ॥ श्रथः — एम जावकमें इव्यक्तमें श्रने इव्यकमें जावकमें कहेवाथी श्रन्योन्याश्रय दोष याय, ते टाले बेः — ए इव्यक्तमें जावकमें श्रन्योन्यापेक्ष्ती धारा बीज श्रंकू रपणे श्रनादि बे. स्थायिकत्वान्न दोषः ॥ एधारा श्रनादि बे, पण श्रुक्षध्यानें दाह थाय, तेवारें पार श्रावे जेम बीजांकूर संताननो एकने नाग्ने श्रनादि जावनो केम श्रंत होय? त्यां कहे बे. जेम सादि होय ते सांतज स्थाप्ति नथी. मोक्षपदार्थें जव्यन्विचार होय तेमाटे तेम जे श्रनादि होय ते श्रनं तज एम निश्चय न कहेवो. जव्यत्वें विघटे तेमाटे ॥ ६४ ॥

॥ मुगतिप्रागनावह ते गम, जातियोगता जिय परिणाम ॥ जूगी मा या कारण थाय, वंध्या माता किम न कहाय ॥ ६५॥ अर्थः—ते जा ति नव्यत्वनामें जीव कार्य परिणाम विशेष प्रगटे तदानिमत मुक्ति प्राग नावने गमे हे, तुन्च अनावरूप जो माने तो जातिकार्य न करे मुक्तयि कार ते नव्यत्व हे. शमदमवत्वे अधिकार ना होय तो तदकाने प्रवृत्ति तक्तन र शमादि संपत्ति एम अन्योन्याश्रय थाय इत्यादि घणी युक्ति न्यायालोकें कही है ते नव्यत्ववंत जीव तथा नव्यत्व परिणामे तत्तरकार्यनो कर्ता है. जो जूही मायाज कारण कहीयें तो, वंध्या माता ए साचुं थाय ॥ उक्तंच हेमसूरिनिः ॥ माया सतीचेद्वयतत्त्वसिद्धिरथासती चेच कुतः प्रपंचः॥ मायेव चेदथीसहा चतिकं माता च वंध्या च नवेत्परेषामिति ॥ १ ॥ ६५ ॥

॥ जग मिण्या तो ए शी वाच, आशामोदक मोदक साच ॥ जो अङ्गान कहे बहु रूप, साच नावनो रयो अंधकूप ॥ ६६ ॥ अर्थः—जो सविला साङ्गान जग केम मिण्या कहो हो, तो ए शी वाच जे एक आशाना मोदक अने एक साच मोदक ए बे अङ्गानजन्य हे. जो अङ्गान जायत्स्वप्तप्र पंचारंनक निन्न निन्न मानो, तो साच नाव घटपटादिक दृष्टवैचित्र्यवंत मानो, तो तुमने ए स्यो अंधकूप हे. अत्र श्लोकः ॥ आशामोदकनूता ये, ये चास्वादितमोदकाः ॥ रसवीर्यविपाकादि, तुद्धं तेषां प्रसज्यते ॥ ६६ ॥

॥ साधक हे सविकल्प प्रमाण,तेणे सामान्य विशेष मंगाण॥ निरिवक ल्प तो निजरुचि मात्र, अंशें श्रुति निर्वाहे यात्र॥ ६९॥ अर्थः—साध क हे सविकल्पें प्रमाण ज्ञान अवश्य उपस्थित हे तेहने विषय खंध प्रा गनावादिकजने गोरव हे तेमाटें बाह्यसंबंधरहित अनाद्यंत ब्रह्मज हे. सत्य अन्य वस्तु प्रमाण नावेज असिक हे. तेने कहियें जे तमे साधकता न अवलंबो हो ते सविकल्पज प्रमाण हे. निर्विकल्प खंय असिक ते पर साधक केम होय. ते सविकल्पनो सामान्य विशेषरूप अर्थ नियहे हे. खंय उपयोगरूपे तथा अवयहादिरूपें सामान्य विशेषरूप हो. तेवारें सर्वत्र त्रि तक्षणपणुंज सत्य हो. निर्विकल्प मानवुं तेतो निजरुचिमात्र हो, बोध खलक्षण विषय ते माने वेदांती ब्रह्मविषय ए सर्व रुचिमात्र थयुं. श्रुति जे निर्विकल्पब्रह्मप्रतिपादक हो ते (अंशें के०) नयें (यात्र के०) ब्यव हार ते निर्वाह हो॥ ६९॥

॥ ब्रह्म परापर वचने कहाो, एक ब्रह्म उपनिषदें रह्यो ॥ मायोपम पण जग श्रुति सुण्युं, जेहनी जिम रुचि तिम तिणे मुण्युं ॥ ६०॥ अर्थः-हे ब्रह्मणी वेदितव्ये परं चापरं च ए वचने वेदमां हे ब्रह्मपरात्पर दिने दें कह्यं. उपनिषदें एकज ब्रह्म लह्यं. एकमेवादितीयं ब्रह्म नेहनाना स्तिकिंचनेत्यादिव चनात् तथा मायोपमं सकतं जगत् ए वचने सर्व जगत श्रुन्यरूप पणें कहेवुं. तिहां देतवादी अदेतवादी ग्रून्यवादीयें जेनें जेम रुचे तेणें तेम पुरुं करी ने जाए्युं. वजतुं ते वादी युक्ति पण तेहवीज कल्पे ॥ ६० ॥ '

॥ स्यादवाद विण पण सिव मृषा,खारे जल निव नागे तृषा॥ माया मिटे रहे जो खंग, तो किम नहीं परमाथ रंग ॥ ६ए ॥ अर्थः—पण ते निज निज नय रुचे हे ते स्याद्वादिवना सर्व जूहा. जेविना स्वमत निर्वाह न था य. जेम खारा जलथी तृषा न नांजे तेम स्याद्वादिवना कांक्वा न टले. जो वेदांतमे मतें सर्व माया गवेषे हे, ते मटे तो तत्कार्य खंग केम रहे ? जो रहे खंगें पारमार्थिक थाय,तो व्यावंहारिक केम किह्यें ? ॥ ६ए ॥

॥ बाधित अनुवृत्तें ते रही, ज्ञानीने प्रारब्धें कही ॥ कमीविलास ययो तो साच, ज्ञानें न मट्यो जेहनो नाच ॥ १०॥ अर्थः—हवे जो एम क हेशो के ज्ञानीने पण माया बांधितानुवृत्तें रही हे. दग्धरक्कुं आकार ते प्रारब्धें करीने ॥ ज्ञानािमः सर्वकर्माणिं, नस्मसात्कुरुतेर्जुन ॥ इहां कमेप द प्रारब्धाितिरक्त कमेपर कहेंबुं. पर कहेंबुं तो कमीविलास साचो थयो. पण किएत थयो जेनुं (नाच के०) नाटक ते ज्ञानें पण न मटगुं. सिद्धां त पण एहनोज हे, केवलज्ञान उपने पण नवोपयाही कमे टलतां तथा सर्वकर्मक्त्य ते युक्तिदिशायें परनी समाधिज सत्य होय ॥ १०॥

॥ व्यवहारिक आनासिक गणे, योगी ते वे चमअंगणे ॥ योगी अयोगी शरीर अशेष, इयो व्यवहार आनास विशेष ॥ ११ ॥ अर्थः—जे यो गी व्यावहारिक प्रपंचने आनासिक गणे वे, ते चम गृहने अंगणे रमे वे. जे अन्यने अन्य करी जाणवुं तेज चमयोगीनुं शरीर, ते आनासिक जाण वुं, अने अयोगीनुं शरीर ते व्यवहारें कथनमात्र सहश परिणामज दीसे वे; तेणेंकरी जेहवुं वे तेहवुं कहे वे. ज्ञानीने रागादिक नाव वे, ते आना सिक गुंजापुंजवन्हिसमान ते सर्व निरस्त कह्यं एम जाणवुं, कर्मजनित नाव ते सत्यज वे. तो कुधातृषादि नाव पण सर्व जूवा थाय. ते तो प्रत्यकृतिरोध ॥ ११ ॥

॥ अन्य अहष्टें योगिशरीर,रहे कहे ते नहिं श्रुतिधीर ॥ जो शिष्यादि अहष्टें रहे, अरिअहष्ट तेहने किम सहे ॥ ७२ ॥ अर्थः—कोइ उन्मत्तप्राय क हे हे. ज्ञानीने सर्वअहष्ट गयां शरीर रहे हे. अन्य शिष्यादिकने जेम लो काहष्टें ईश्वरशरीर रहे हे. ते श्रुतधीर नही. एटले सिदांतमांहे धैर्यवंत न

ही. जो योगीनुं शरीर शिष्यादिकने छहछें रहे, तो (छिर के०) वैरी ते ने छहछें कां पडतो नथी, तेमाटें स्वाहछेंज निर्वाह मानवो ॥ ७२॥

॥ सकित अनंत सिंदत अङ्गान, कमें कहो तो वाघे वान ॥ कमें होय जनमनी युक्ति, दर्शन ङ्गान चरणयी मुक्ति ॥ ७३ ॥ अर्थः—एम अवि द्यामायाशब्दवाच्य अनिर्वचनीय अङ्गान वेदांतिसंमत न घटे. जो अनंतश किसिंदत अङ्गानरूप कमें कहोतो, वान वधे. ते तेहना उदयङ्क्योपशमा दिकथी अनेक कार्य थाय. कमें इ्यें मोक्स थाय. तेहज कहे कमें जन्मनी संसारनी युक्ति होय. नावें दर्शन, इर्गन चारित्र थाय तेवारें मुक्ति होय ॥७३॥

॥ प्रतिबिंबे जो नाखें नोग, किम तस रूपी श्ररूपी योग॥ श्राकाशादि कनुं प्रतिबिंब, जिम नहीं तिम चेतन श्रविजंब ॥ १४॥ श्रर्थः—चित् प्रतिबिंवे बुंदिनो नोग हे, ते साद्वात् श्रांत्माने नथी, जे एम कहे हे, ते ने रूपीश्ररूपीनो योग संनवे नहीं। श्राकाश श्ररूपीनुं जेम श्रादर्शे प्रति बिंब नथी। तेम बुदिमांहे चेतननुं श्रवलंब न होय गंनीरं जलं कहेतां श्राकाशप्रतिबिंब नथी। गंनीरपणुं ते जलधमे हे. प्रतिविंबस्वरूप देखाडी चित्प्रतिबिंब न होय, एवं कहे हे ॥ १४॥

॥ आदर्शादिकमां जे बाय, आवे ते प्रतिबिंब कहाय ॥ स्यूलखंधनुं संग त तेह, निव पामे प्रतिबिंब अ देह ॥ ७५॥ अर्थः—(आदर्शादिक के॰) आर.सा प्रमुख जे स्वच इव्य तेहमां जे बाया आवे ते प्रतिविंब किह्यें ॥ उक्तं च ॥ जे आयरियस्स संतो,देहावयवाह हवंति संकंता ॥ तेसिं तज्जुव लिक्ष, पन्नते ॥ इति प्रतिबिंब स्यूल पुजलनुं होय. उक्तं च ॥ सामाउदिया बाया, अनामुरगयाणि सिंतु कालाना ॥ सत्तेय नामुरगया, संदेहना मुणेयवा ॥ (अदेह के॰) अशरीर जे आत्मा ते बुिक्मांहे प्रतिबिंब न वि पामे ॥ ७५ ॥

॥ बुदे चेतनता संक्रमे, किम निव गगनादिक गुण रमे॥ बुदि ज्ञान उपलि विध अनिन्न, एहनो नेद करे ग्रं खिन्न ॥ १६॥ अर्थः — बुदित त्त्वें (चेतन ताके ०) चेतन्य प्रतिबिंबे, जो संक्रमें, तो गगनादिक रूपी इव्यना गुण बुदिमां है केम निव रमे ? बुदि ते चित्प्रतिबिंबाधिष्ठान हे. इंड्यि चित्र पाति संग उपलिख ते आदर्श मिलनमांथी प्रतिबिंबत मुखमिलनता स्थानीय नोग ए सांख्यक उपना जूही हे. ए त्रण एकार्य हे. अतएव गौतमसूत्र इस्युं हे॥

बुदिरूपलिधिर्ज्ञानिमित्यनर्थान्तरमिति ॥ एहनो नेद खिन्न यको तुं शुं करे हे ? समो अर्थ ज्ञान मान्य ॥ ७६॥

॥ बुिंद नित्य तो पुरुषज तेह, ज्ञानप्रवृत्ति इहा सम गेह ॥ जो श्रिति त्य तो किहां वासना, प्रकृति तो शी बुिंदसाधना॥ ७७॥ श्रियः—बुिंद्धि तत्त्व जे सांख्य माने हे ते नित्य विकल्पें दूषे हे. जो ज्ञानादिक धर्माश्रयबु दि नित्य मानीयें तो तेहज पुरुष हे, जे माटें ज्ञान, इहा, प्रवृत्ति (सम गेह के॰) समानाश्रय हे. ज्ञानप्रवृत्तिनुं व्यधिकरणपणुं कल्पवुं श्रुनुचित हे. तथा बुद्धि नित्यपुरुषोपधिरूप नंटले, तो मुक्ति पण केम होय ? जो श्रुनित्य मानो तो बुद्धिवनाशें वासना किहां रही ? श्रुने जो न रही तो पुनः प्रपंचोत्पत्ति केम होय ? जो एम कहेंशो के, बुद्धि विनाशें प्रकृतें लीन वासना रही तो बुद्धि साधनानुं श्रुं काम ? प्रकृत्याश्रितङ्गानादिगुणाविर्नावें ज कार्य थाशे ॥ ७७ ॥

॥ अहंकार पण तस परिणाम, तत्त्व चग्रवीसतणुं किहां ग्राम ॥ सक ति विगति प्रकतें सिव कहो, बीजा तत्त्व विमासी रहो ॥ ७०॥ अर्थः— बुद्धितत्त्व मिण्या तेवारें तत्परिणाम अहंकारादिक पण मिण्या. चोवीश त त्वनुं ग्राम किहां होय? चोवीश तत्त्वना धमेशिक विगतें करी प्रकृतिषीज सर्व कहो, बीजा तत्त्वबुध्यादिक हे, ते विमासीने रहो. एट के प्रकृतिविला स ते अजीवतत्त्वविलासज हुने. जीवतत्त्वतो मुख्य बीजा जनयपरिणाम रूप हो. एम नवतत्त्वप्रक्रिया तेहज शुद्ध श्व जाणवी ॥ ७० ॥

॥ विरमे रमे यथा नर्त्तकी, अवसर देखी अनुनवयकी॥ प्रकृति अचेत न किम तिम रमे, विरमे जो करता निव गमे॥ ७ए॥ अर्थः— नाटक ए। पोताना अनुनवयी कार्य नाशादिकने विषे रमे, तथा अवसर देखी दानादिक पामी विरमे, तेम प्रकृति अचेतन हो, ते केम रमे ? अने विरमे ? जो करता पुरुष तुफने न गमे॥ एवं च॥रंगस्य दशियता निवर्त्तते नर्त्तकी यथात्मानं॥ पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्त्तते प्रकृतिः॥ इत्यादि शिष्य कहे हो, ते शिष्य धंधमात्र कहेवुं. पुरुषने आत्मदर्शन प्रकृति करे, ते अ चेतनने न संज्ञवे. नवा तिहां प्रयोजन तद्कान हो॥ ७ए॥

॥ प्रकृतिदिहक्षायें जिम सगी, शांति वाहितायें मुक्तिनिसगी ॥ कर्ताविण ए कालविशेष, तिहां वलगे नय अन्य अशेष ॥ ए०॥ अर्थः— प्रकृति दिहक्तायें (सर्ग के०) सृष्टि जेम सांख्य कहे हे, तेम (निसर्गमिक्त के०) स्वनावमुक्ति शांतिवाहितायें होय, ए बे लक्कण करताना हे. ते विना जो प्रकृतिपरिणामनां लक्कण कहीयें, तो कालनां लक्कण थाय. तिहां अन्य अशेष नय वले, ते सर्वना अर्थनो अनुग्रह करवा पांच कारणसमवाय मानवो. तेवारें कर्ना मुख्यपणें आवे ॥ उक्तं च ॥ कालो सहाव णियइ, पुव कयं पुरिसकारणोवगतं ॥ समवाए समनं, एगंतं होइ मिन्ननं॥ १ ॥ ००॥

॥ प्रकृतिकमें ते माटे गणो, ज्ञानिक्रयाथी तस क्ष्य जणो ॥ अग्रुद्ध जाव करता संसार, ग्रुद्ध जाव करता जवपार ॥ ७१॥ अकर्तृ अजोकृवादिनौगतो॥ अर्थः— तेमाटे प्रकृतिने कमेनुंज नाम गणो, प्रधान कमें संस्कार वासना विद्या सहजमल ए सर्व एकार्थं अ शब्द हे दर्शन जेदें ते कमेनो क्ष्य ज्ञान ग्रुद्ध जाव हे. ते जवपारनो कर्जा हे ॥ अप्पा कर्जा विकत्ता य, सहाण य इहाण य ॥ इत्यादि शास्त्र वचनो पण हे ॥ ०१॥ अकर्जा अजोका आत्मा माने हे ते वादि गया. इहां समकेतनां चार स्थानक पूर्ण थया ॥

॥ एक कहे निव के निरवाण, इंड्यि विणस्यां सुख मंनाण ॥ इःख अना व मूर्जा अनुसरे, तिहां प्रवृत्ति पंिमत कुण करे ॥ ७१ ॥ अर्थः— हवे समिकतनुं पांचमुं मोक्स्थानक कहे केः— एकवादी कहे के के, (निरवा ण के०) मोक्स नथी. इंड्यिविलासिवना मुक्ति मुख्य के. तेना मंनाण के. ते कोण सहहे तोके अशेष विशेषगुणो होदरूप वैशेषिकानिमत मुक्ति मानो. इःखानवने अर्थेज मुमुकुप्रवृत्ति हशे. ते कपर कहे के— इःखानावने पुरु षार्थ नथी. जेमाटे मूर्जावस्थायें पण अविद्या इःखानाव के, तिहां कुप्रवृ नें पंिमत करे, ॥ उक्तच ॥ इःखानावोपि नावेद्य; पुरुषार्थतयेष्यते ॥ निह मूर्जाद्यवस्थार्थ, प्रवृत्तो हश्यते सुधीरिति ॥ १ ॥ ७२ ॥

॥ काल अनंते मुकतें जतां, होई संसार विलय आजतां ॥ व्यापकने कहो केहो गम, जिहां एक सुखसंपतिधाम ॥ ए३ ॥ अर्थः— जो मोक्सपदार्थ रात्रिदिवस जीवे करी नरातां अनंतो काल थयो तो आजतांई ए जीवोने मुक्तिमां जतां संसारनो विलय थाय.एक एक युगमां एक एक मो कें जाय तो अनंता युग गया एटले कालें संसार खाली कां न थाय ॥ सत्या अनंता एव ह्यपनृक्तास्तथापि संसारस्य प्रत्यक्तिहत्वादित्यादि करणा वलीकारें कह्यं ते तो घटे के, जो कालानंत्यथी जीवपरिणामानंत्य अधिक

होय तेमाटे ए कल्पनामात्र हे. बीजं आतमा सर्वव्यापक कहे हे, तेहने ए क सुखसंपतिनुं घर एवो किहां नाम हे? के ज्यां ए जाय. क्रियावत्त्वाना वान्नात्मनः सिद्धिक्वेत्रगमनक्त्यर्थः॥ ए३॥

॥ किम अनंत इक गमें मिले, पहिलो नहिं तो कुंण ग्रं नले ॥ पहिला नव के पहेला मुक्ति, ए तो जोतां न मिले युक्ति ॥ ए४ ॥ अर्थः — वली मोक्समां अनंता सिक् मानो तो ते एकस्थानकें अनंता केम मले ? जो पहेलो अनादिसिक् न मानो तो बीजा सिक् थाय ते कोणमांहे नले ? पहेलो सिक् नहीं तो कोण सिक्ने सके साधक नमे ? तेवारें पहेला संसार के पहेलां मुक्ति ? प्रथमपकें मुक्ति सादि थइ, एटले आदिसहित थइ ? बी जेपकें बंधव्याघाते बंधविना मुक्ति केम होय? ए युक्ति जोतां मलती नथी ॥ ए ४

॥ जिहां न गीत न नाव विंतास, निहं शृंगार कुतूहल हाँस ॥ तेह मु गितथी कहे रूपाल, वनमां जन्म्यो नली शृंगाल ॥ ७५॥ अर्थः— जि हां गीतगान नहीं, नाविवलास नहीं, शृंगाररस नहीं, (कुतूहल के०) ख्याल नहीं, ते मुक्तिमांहे ग्लं सुख हशे ? ते मुक्तीथी तो क्षी कहे हे के, रूपाल वनमांहे सीयाल जन्म्यो होय तो नलो ॥ वरं हंदावने रम्ये, शृंगालत्वं सदैवहि ॥ न तु वैशेषिकीं मुक्तिं, मे मितर्गतुमिञ्चति ॥ ७५ ॥

॥ नव अनिनिंदि एहवा बोल, बोले ते गुणरहित निटोल ॥ जेहनें नहीं
मुगितकामना, बहु संसारी तेह इरमना ॥ ए६ ॥ अर्थः— नवअनिनेंदि
लक्ष्णवंत जे कह्या हो, ते मुक्ति उद्यापवाने एवा बोल बोले हो, तेने गु
णरहित कहियें, अने निटोल, निःश्रूक कहियें, जेहने मोक्तनी कामना ए
टले वांहा नथी, ते इमेना एटले माहा मनवाला बहुल संसारी एटले अ
नव्य अथवा इनिव्य कहियें. एतो जे चरमपुजलावर्नवर्नी होय, तेनेज
मुक्तिकामना होय ॥ उक्तंच ॥ मुक्तासर्ठिव न तस्स, हो शुरुनाव मलप्प
हावेणं ॥ जह गुरुवाहिविगारन, जार्ज पञ्चा सर्ठसम्मं ॥ ए६ ॥

॥ इंड्यिसुख ते डखनुं मूल, व्याधि पिंमिगण अतिप्रतिकृत ॥ इंड्यिन्न तिरिद्धत सुख सार, उपसम अनुनविस्द उदार ॥ ए९ ॥ अर्थः—पहे लां मोक्स सुखरूप साधे हे, इंड्यिसुख जे हे ते डःखनुं मूल हे, ते व्याधि प्रतिकार हे, कुधायें पीडित होय तेवारें नोजन करवुं नलुं लागे, तृषायें होत सुकायें, तेवारें पाणी पीवुं नलुं लागे, हृदयमांहे कामाग्री दीपे ते वारें मेथुननी इक्वा जपजे,ए व्याधिना श्रोषध है. तेने सुख जाएं है ॥ मि प्या यत् सूक्ष कुधार्नः सन् साक्ची कवलयित मांस्या कवितान. तृषा ग्र व्यत्यास्ये पिबति च सुधास्वा इसिललं ॥ प्रदीप्तेकामाम्रो निजहिद वृषस्यत्यथ वधूं, प्रतीकारो व्याधेः सुखिमति विपर्यस्यति जनः ॥ १ ॥ इंड्यिवृत्तिरिहत ध्यानसमाधिजनित जपशम सुख हे. तेहज (सार के०) निरुपचरित हे. ते क्षण एक रागदेषरिहत थइ श्रात्मामांहे जोइयें ते श्रवुनव सिद्ध हे ॥ जक्तं च प्रशमरतो ॥ स्वर्गसुखानि परोक्षाप्यत्यंतपरो क्षमेव मोक्सुखं प्रशमसु खं प्रत्यक्तं न परवशं नचाप्राप्तं तथा यत् सर्वविषयकांक्षेत्रवं सुखं प्राप्यते यारोगेण तदनंतकोटि ग्रणितं सुधैव लनते वीतरागः ॥ इत्यादि ॥ ए ॥ ॥

॥ तिहां अन्यास मनोरथ प्रयो,पहिलां आगें निव परकथा॥ चंड्चंडिका शीतल धाम, जिम सहजें तिम ए सुखधाम ॥ ००॥ अर्थः ∸ते उपश मसुख मांहेलां अन्यास अने मनोरथ तेनी (प्रया के०) विस्तार होय॥ दृष्टंचामासिकं मानोरथिकं च सुखं लोकेऽिष ॥ पठी निर्विकल्पकसमाधें प रङ्क्यनी कथाज न होय ॥ उक्तंच झानसारे ॥ परब्रह्मणि मग्नस्य, श्लाघा पौजलिकी कथा ॥ कामीचामीकरोन्मादाः, स्फारा दारादराः कच ॥ १ ॥ अन्यासमाश्रित्याप्युक्तं प्रशमरतो ॥ यावत्परग्रणदोषपरिकीर्तने व्यावृत्तं म नो नवति ॥ तावहरं विद्युक्तेच व्यायं शक्तो मनः कर्त्तु ॥१॥ चंड्नी चंडिका जेम सहेजे शीतल होय तेम आत्मखनावस्कष्प उपशम जे छे ते सहे सुखनुं ताम छे ॥ ००॥

॥ तरतमता एहनी देखियें, श्रित प्रकर्ष ते शिव छेखिये ॥ दोषावरण तणी पण हाण, इम निःशेष परमपद जाण ॥ एए ॥ अर्थः—ए शम सुखनी तरतमता उत्कर्षापकर्ष देखे, जे श्रितप्रकर्ष ते (शिव के०) मोक्ट् छेखिवयें. दोषावरणतणी हाणे पण तरतम जाव हे. जे निःशेष ते परम पद जाण ॥ उक्तंच ॥ दोषावरणयोहींनिः,शेषारूपतिशायनात् ॥ क्विद्यथा खहेतुन्यो, बहिरंतमेलक्त्यः ॥ १ ॥ इति श्रष्टसाहरूयाम् ॥ इःखीनावथी प ण सिद्दने सुखज कहेवुं ॥ एए ॥

॥ इखहोवे मानस शारीर,जिहां लगें मन तनु वृत्ति समीर ॥ तेह टले इखनासे सुख, निहं उपचार विशेषें मुख्य ॥ ए० ॥ अर्थः—ज्यांलगें म न तनु वृत्ति रूप (समीर के०) वायु ते विस्तारवंत होय त्यांलगें मननुं अने शरीरतुं इःख होय, तेह टले. तेवारें निस्तरंगसमुइसमान आत्मदशा होय ते इःख नहीं. उपचारिवशेषें ते (सुरक के०) सुख हे ॥ उक्तंच ॥ प्रशमरतो ॥ देहमनोवृत्तिच्यां जवतः शारीरमानसे इःखे तदजावात दजावे सिदं सिदिसुखं ॥ ए० ॥

॥ सर्व शत्रुक्य सर्वज रोग, अपगम सर्वारय संयोग ॥ सर्वकामनापू रित सुक, अनंतग्रण तेह्यी सुखमुक ॥ ए१ ॥ अर्थः—कोइने घणा शत्रु वे तेमांथी एक शत्रुनो क्य ययो सांज्ञ तो तेने कहेवुं सुख याय ? ते वारे सर्व शत्रुनो क्य यवाथी महासुख होय तेमां ग्रुं कहेवुं ? तेम सर्व रागादि शत्रुक्यजनित अतिशय सुख मोक्न्मांहे वे. तथा शोल रोग समय जपना होय ते मांहेलो एक रोग टले तेवारें घणुं सुख जपजे, अने शोले रोग टले तेवारें पूरुंज सुख जपजे. तेम सर्व कम्ब्याधिविलयजनित सि ६ने सुख वे, जेमाटे एक अर्थयोगें जे सुख वपजे तेथी सर्व अर्थयोगें अनंतग्रण सुख वपजे. तेम सर्व अर्थ सहेजग्रण सिहजनित सुख मोक्नमां हे वे, जेम एक इन्ना पूर्ण यातां जे सुख वपजे, तो सर्व इन्ना पूर्ण यातां तो तथी अनंतग्रणंज सुख होय. एम सर्व अनिज्ञारूप वैराग्येन्ना पूर्ण यतां अनंत सुख सिहने वे. ॥ वक्तं च ॥ विशिकायांतें ॥ सर्व तु सचवाहि, सब्ह सचित्रांक्नं खयविगमजोगपनीहि ? होइतनोअणंतग्रणं॥१॥ इत्यादि ए१

हवे अनंतमोक्संख्या केम हे ? एवं पूहे हे, तेहनो उत्तर कहे हे.

॥ घटे न राशि अनंतानंत, अक्तज्वनें सिद्ध अनंत ॥ परिमित जीव नयें जबिरक्त, याये जन्म लहे कि मुक्त ॥ ए१ ॥ अर्थः—सिद्धना जीवो नी संख्याराशि अनंत वे ते घटती नथी. एवा प्रश्ननो उत्तर कहे वे के, अनंतानंतराशि (जब के०) संसारी जीवोनी वे, ते (अक्त के०) आ खो अनें सिद्धपण अनंत वे, त्रण कालना समयनी अनंत संख्या वे,तेथी जीवोनी अनंतसंख्या घणी महोटी वे, माटे एमां कशो बाध नथी. जे म तें ते परिमित जीवसंख्या कहे वे, तेना मतें तो संसार खाली थवो जो श्यें. नहींकां मोक्सांहेथी जीव इहां पाढा आववा जोश्यें ॥ उक्तं च ॥ मु कोषि वान्येतु नवं जवे वा, जबश्च श्रून्योस्तु मितात्मवाहे ॥ षड्जीवकायं तुअनंतसंख्यं, जाष्यं तथा नाथ यथा न होषः ॥ १॥ इति स्याद्दाहमंजर्यो ॥ ज्यारे ज्यारे जगवंतने पृठीयें त्यारें त्यारें एवं कहे के एक निगोदनो अनंत मो नाग मोहें गयो एहवे अनंत जीववादीयें कि सुं बाधक नथी। एर ॥ ॥ थयां अने थासे जे सिक्, अंशिनगोद अनंत प्रसिक् ॥ तो जिन शा सन शी नवहाणी, बिंड गये शी जलधें काणी ॥ एर ॥ अर्थः—पूर्वें कहेली वातनेज स्पष्ट करे हे. जे अतीतअक्षायें सिक् थया अने अनागत अक्षायें जे सिक् थाशे ते सर्व मली एक निगोदना अनंतमा नाग प्रमा ण सिक् थाशे. तो जिनशासनमांहे शी हाणी? संसारसमुड्मांहेथी एक बिंड गयाथी शी काणी हे? ए संख्या उत्कर्षापकर्ष निमिन्त नथी. अती ताक्षाथी अनागताका अनंतगुण हे तो पण सर्व मली एक निगोद जीवने अ नंतमें नागे हे. ए परमार्थ जाणवो ॥ एर ॥

॥ व्यापकने निव नवनी सिदि, बांधे बोडे कियविवृद्धि ॥ पण तनु मित आतम अमें कहुं, तिहां तो सघलुं घटतुं लहुं ॥ ए४ ॥ अर्थः— सर्व व्यापक जे आत्मा माने बे, तेने परनवें जावुं नथी. तेवारें न संसार अने न मोक्स एम घटे, पण अमे तो आत्मा (तनुमित के०) तनु एटले शरीर ते प्रमाण मानीयें बैयें. तिहां तो सघलुं ए घटतुंज लहिये बैयें. जेह्रचुं गित जात्यादिकने घटतुं आज्युं बांधे तेहने ते जदय आवे तेवारें ते क्त्रें जीव जाय. वक्रगित होय, तो आनुपूर्वीं तिहां खपावी आणे. मोक्सें तो पूर्वप्रयोगादि कारणे समयांतरें प्रदेशांतर अणफरसतो नियतस्या ने उपजे. तिहां शाश्वतानंदघन घइ रहे बे सही ॥ ए४ ॥

॥ योग निरोध करी जगवंत, हीन त्रिजागवगाह लहंत ॥ सिद्धिशला कपर जइ वसे, धर्मविना न अलोकें धसें ॥ ए५ ॥ अर्थः—केवलकानी जगवंत आवर्जीकरण करी, योगरुंधी चरमजवें जेटलुं शरीर वे तेनी त्रिजाग हीनावगाहना पामतो सिद्धिला कपरें जइने वशे. इहां कोइ पूबे के, ते थी आगल केम जातो नथी? ते कपर कहे वे, के (धर्मविना के०) धर्मा सिकायविना अलोकाकाशमांहे धसे नहीं ॥ ए५॥

॥ जिहां एक तिहां सिद्ध अनंत, पय साकरपरें जले एकंत ॥ रूपीनें जलतां सांकडुं, रूपरिहतनें निव वांकडुं ॥ ए६ ॥ अर्थः—जिहां एक सिद्ध हो, तिहां अनंता सिद्ध हो, दूध साकरनी पेठें एकठा जले हो. एकांत ए पए एकदेशिदृष्टांत रूपीने मांहोमांहे जलतां सांकडुं होय, पए रूपर हितने जलतां किद्यंयें वांकडुं नथी ॥ धर्माधर्माकाशादिवत् ॥ अत्रगाथा ॥

जन्नय एगो सिद्धो, तन्न अणंता नवस्कयविमुका ॥ अन्नुन्नमाहाबाहं, चि हित मुहीमुहेपना ॥ १ ॥ ए६ ॥

॥ काल अनार्दे सिद्ध अनाद, पूर्व अपर तिहां होय विवाद ॥ नव निर्वाण तणो कम योग, शाश्वत नाव अपर्यनुयोग ॥ ए७ ॥ अर्थः— संसारी टलीने सिद्ध थाय हे, तेवती सिद्ध जे हे, ते यद्यपि सिद्धनावें प्र थम हे, पण कालनी अनादिता हे, तेमाटे प्रवाहें अनादिसिद्ध कह्या. ति हां पहेला कोण अने पही कोण ए विचार न होय. निर्वाणनो अनुक्रम योग कहेवाय नहीं. शाश्वता नावनो पाहो उत्तर नथी. एमज पहेलां कू कडी के पहेलां इंग्नुं? रात्रि पहेलां के दिवस पहेलां? इत्यादि नाव श्रीनग वतीसूत्रमध्ये कह्या हे, जे क्ण वर्त्तमानत्वं पाम्यो ते अतीत थयो. पण तेमां पहेलो अतीत समय कह्यों, एम कहेवाय नहीं. तेम संसारी टल्यो ते सिद्ध थयो, पण तेमां पहेलो कोण प्रवाहें एम न कहेवाय. अनादिसिद्ध अनादिसिद्ध तो कहियें. व्यक्तें न कहियें. ॥ उक्तं च विंशिकायां ॥ एसो आणाइमचिय, सुद्दोयतचे आणाइ सुद्धित ॥ जुत्तोख पवाहेण, ण अन्नहांसु द्यासम्मं ॥१॥ इत्यादि ॥ एष ॥

॥ मोक्तत्त्व इम जे सद्दहे, धर्मेमन थिर तेह्न रहे ॥ मुक्ति इन्ना ते मोटो योग, अमृत क्रियानो ए संयोग ॥ ए०॥ अनिर्वाणवादी गतः ॥ अर्थ – एमजे परीक्षा करीने मोक्तत्त्व सद्दहे, तेनुं धर्मने विषे मन थिर रहे. जे मुक्तिनी इन्ना हे ते अमृतिक्रयाना रसने संयोगें महोटो योग हे चरमपुज लपरावर्तें अपुनर्वधकादिकने नारें जे कर्ममल होय ते तेहने न होय ॥ उक्तंच विशिकायां ॥ मुक्तासचिव एएन, होइ गुरुनाव मलयपनावेणं ॥ जहगुरु वाहिविग्गरेण, जाचव सास उस्सासं ॥ ए०॥ अनिर्वाणवादी निरस्त थयो ॥

॥ नास्तिक सिरखा नाषे अन्य, हे निर्वाण उपायें सून्य ॥ सरज्युं होसे लहे सुं तदा, करो उपाय फिरो नर सदा ॥ एए ॥ अर्थः – हवे अन्यवा दी नास्तिक सरखा नाखे हे के, निर्वाण हे पण तेनो उपाय सून्य हे. यह स्त्रायें होय, जैवारें सरज्युं हज़े तेवारें लहे सुं. ते कहे हे के, जे माटे (नर के प मनुष्य तमे उपाय करो, सदाइ फरो पण मोक्त तो सरज्युं हज़े तेवारें मलज़े ॥ उक्तंच ॥ प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयोर्थः सोवइयं नवित हुणां सुनोऽसुनोवा ॥ नूतानां महित कृतेषि हि प्रयत्ने, नानाव्यं नवित नाविनोऽस्ति नाशः॥एए

॥ दर्शन ज्ञान चरण शिव हेत, कहो तो स्यो पहिलो संकेत ॥ गुण विण गुण जो पहिला लह्या, तो गुणमां ग्रुं जार्ड वह्या ॥ १०० ॥ अर्थः— मोक्तना उपाय रूप दर्शन ज्ञान चारित्र जो मोक्त हेतु कहो ग्रे तो स्यो संकेत ग्रे? गुण जो गुणविना लह्या तो गुणमांहे वह्यां ग्रुं फरो ग्रे लेम गुणविना निवतव्यतायें गुण पाम्या तेम मोक्त पण पामशा जो एम कहेशो के पहेला गुण शक्तियें हता ते काल परिपाकें व्यक्तें थया, तो नव्यनी शक्ति मोक्तनावनी ग्रे. ते कालपरिपाकें व्यक्तें प्रगट थाशे. कार णनो तंत किहां रह्यो. इत्यादि घणीं ग्रुक्ति ग्रे ॥ १००॥

॥ मरुदेवा विण चारित्र सिद्ध, नरह नाण दरपण घर जिद्ध ॥ थोडे कप्टें सीधा केइ, बहुकप्टें बीजा शिव जेइ ॥ १०१ ॥ अर्थः न वजी एह ज वात कहे हेः न मरुदेव्याजी अत्यंतवनस्पित मांहेथी निकजी क्यारें धर्म न पाम्या. क्रियारूप चारित्र पाम्या विना नगवहरीन जनित योगस्थेयें ज अंतरुत सिद्ध थयां. नरतचक्रवर्त्त दीक् ग मह्याविनाज नावना बजें द पेण घरें ज्ञान पाम्या. माटे जो क्रियाकप्टेंज मोक्त पामे तो तप्जतकर्ष होय ते तो नथी. तेमाटे केटला एक नरतादिक थोडे कप्टें सिद्ध थयाः केटलाए क गजसुकुमालादिक बहुकप्टें मोक्त पाम्या ॥ १०१ ॥

॥ जेहनी जेहवी जवितव्यता, तिम तेहनें होई निःसंगता ॥ कष्टसहें ते कमे निमित्त, नियति विना निव साध्य विचित्त ॥ १०१ ॥ अर्थः— माटे जेहने जेहवी जवितव्यता हे, तेहने तेम ते प्रकारें (निसंगता के०) मोक्त लाज होय हो, जेटलुं कष्ट सहेवुं हे तेटलुं वेदनीयादि कमे निमित्त हो, नहीतो श्रीमहावीरने घणा उपसर्ग थया अने श्रीमित्तनाथ प्रमुखने कोई उपसर्ग न थयो, ते केम मले ? नियतिविना विचित्र साध्य न होय. अतएव प्रत्येकबुद्दसिद्दादिजेदस्तथाजवितव्यतेति लिलतविस्तरायां॥१०१॥

॥ ज्ञानीयें दीतुं तिम जाणि, दीता जनमां तृद्धि न हाणी॥ काया क ष्ट करो ग्रुं फोक, क्रिया देखाडी रंजो लोक ॥ १०३॥ अर्थः—जेम ज्ञा नीयें दीतुं ने तेम याय ने एम निश्चय करी न जाणे, दीता जनमांहे तृद्धि हानी याती नथी उन्ने अधिको न याय, तो ग्रुं फोकट काया कष्ट करो ने, क्रिया देखाडीने लोकनें रंजो ने, जे कष्ट करत्रो तेहने अने जे कष्ट नहीं करत्रो तेहने पण ज्ञानीयें जेटला जन दीता ने तेटलाज यात्रो. उक्तंच ॥ नि यतिद्वात्रिंशिकायां ॥ ज्ञानमव्यनिचारं चेक्किनत्वे मा श्रमं रुषाः ॥ अष तत्राप्यनेकांते जिनतां स्मतु को नवान् ॥ १०३ ॥

॥ काम नोग लंपट इम निएं, कारण मोक्स तणा अवगणे ॥ कारज वे नें कारण नहीं, तेहने ए क्ति मोटी सही ॥ १०४ ॥ अर्थः—एम जे वादी कामनोगना लंपट वे, ते पूर्वोक्त रीते निणे वे. ते वादी मोक्स तणा जे कारण वे, तेने अवगणे वे, उवेखी नाखे वे, तेहने ए क्ति म होटी वे. एटले महोटुं दूषण वे, के जे कार्यरूप मोक्स तो वे, अने तेना कारण नथी. एम तो स्वप्नवृत्तिज व्याघात होय. ए दंमची कार्य कारण ना व साचुं मानवो ॥ १०४ ॥

॥ वायसताली न्याय न एह, सरजे ती सघले संदेह ॥ जो सरज्युं जं पे निसदीस, अव्यक्तिचारीशुं सी' रीस ॥ १०५॥ अर्थः—ए (वायसता ली के०) काकतालीय न्याय कहीयें. जैम कागडो उमनार अने ताल फ ल पडनार, एम नहीं समजवुं. जेमाटे नियतान्वयव्यतिरेक हे. जो सर ज्युं याय एम कहियें तो सघलें संदेह याय. केम सरज्युं हशे, प्रवृत्ति तो इष्टसाधनतानिश्रयथी याय. जो सरज्युं रात्रदिवस कहियें हैये, तो घटा दिकनो अव्यनिचारि कारण दंमादिक हे, तेनी साथें शी रीश करशो! ते म मोक्ता कारण ज्ञानादिक पण सहहवा ॥ १०५॥

॥ सरज्युं दी तुं सघले कहे, तो दंमादिक किम सहहे ॥ कारण नेली सरजि त दी त, कि हतां विघटे निव निज इह ॥ १०६॥ अर्थः—जो सर्वत्र स रज्युं दी तुं कहे हो, तो दंमादिक घटादिकना कारण केम सहहे. सरज्युं ते तत्प्रकारक सिसृह्यायेज. तेणें तो बाह्य कारण सर्व अन्यया सिद्ध थाय. ए णें करी ॥ जं जहा तं नगवया दि हं, तं तहावि परिणम ॥ ए सूत्रव्या ख्यान थयुं. जेमाटे केवल ज्ञान ते व्यापक हो, कारण नथी. तेहज कहे हेः—कारण नेली सरजित दी तुं एम कहेतां तो निज इष्ट विघटे नही जे माटे दंमादि कारण सहितज घटादिक सरज्या हो. एम कहेतां ज्ञानादि कारण सहितज मोक्स सरज्यो ॥ १०६॥

॥ तृप्ति ह्यो जो सरजी ह्यो, जोजन करवा ग्रुं धसमसे ॥ पापें ज्यम आगल करे, धरमें ग्रुं सरज्युं जच्चरे ॥ १०७ ॥ अर्थः— अथवा अव्यनि चारी चोरपारदारिकनी साथें पण ग्रुं रीय करें हे. तेतो सरज्युं हे तेज करे हे. वली जो सरज्युंज लड्श तेवारें तो सरज्युं ह्हो तेवारें पोतानी में ले ति थरो. जोजन करवाने शामाटे धसमसे हे? ए प्रमाणे जोतां तो पा पना जेटलां कार्य हे, ते ते कार्यनां जे जे कारण हे. तेने सेववाना ज्य मने आगल करे हे. रूष्यादिक आरंज करतां तो पाहो जोतो नथी. पण धर्मनी वेलायें गलीया बलदनी पेरें थइ रहे हे, अने सरज्युं हहो ते थाहों एम मुखमांथी ह्यं ज्ञारे हे ॥ १०९॥

॥ पहेला गुणजे गुणविण थया, पाकी जविषतिनी ते दया ॥ थया जेह गुण ते किम जाय, गुणविण किम गुण कारज थाय ॥ १००॥ श्रर्थः—पहेला गुणविना गुण थयो पठी गुणनुं काम ते कपर कहे हेः— पहेला जे गुणविना गुण थया ते पाकी जविष्यतिनी दया हे. एटले ते जविष्यति परिपाक कार्य जाणवुं. हवे ते थया जे गुण ते गुं जाय ? केम रहे तेवारें श्रनन्यथासि हिनयताविष्यति पणे कारण केम होय? गुणविना गुणकार्य ते केम थाय ? ॥ स्वाच्यविह्ति तोत्तरोत्पत्तिकल सामान्याधिकरण्यो जयसंबंधेन गुणविशिष्टगुणलाविज्ञनं प्रति गुणः कारणं तदन्यगुणप्रतिकाल विशेष इति तल्यम् ॥ १००॥

॥ एक उपायथकी फल पाक, बीजो सहजें मालविपाक ॥ करमतणो इम जाणी जेद,कारणमां ग्रुं आणो खेद ॥ १०ए ॥ अर्थः—जविस्यति परिपाक तेपण आत्मिनष्ठ तथा जव्यता पर्याय ते ग्रुणविना केम थाय? ते कपर कहे बे—एक उपायथी फलनो पाक थाय बे पलाल प्रमुखमां घाली ने अकालें आंबा पचवीयें. बीजा सहेजें मालथकीज पाका होय बे, एम कमिविपाकें एक कपाय होय बे, अने एक सहेजे बे. ए कारणना जेद जा णीयें बेयें. माटे कारणमां प्रायें शो कारण खेद आणो बो? केटला एक सहेजें थया तो हवे उद्यम शो किरयें, एम ग्रुं मुंजाई बो? ॥ १०ए॥

॥ अथवा गुणविण पूरव सेव, मृडतर माटे होइ ततखेव ॥ तिम निव गुणविण सिद्धि गरिष्ठ, तेहमां बहुलां कह्या अरिष्ठ ॥ ११० ॥ अर्थः— अथवा अपुनर्वधकादिक्रिया ते पूर्व सेवा हे ते मृडतर कार्य थाय तेमाटे गुणविना पण होय (तेम के०) तेणीपरें (ततखेव के०) तत्काल गरिष्ठ सिद्ध गुणविना केम? जेम महाविद्यानी सिद्धिमां वेतालादिक जहे तेम च त्रुष्ठिमां बहुलां अरिष्ठ होय ते गुणविना केम टलें ? अतएव श मदमादिमंतने अधिकारिता ते जाए। मार्गप्रवृत्ते शमदमादि संपत्ति अन्यो न्याश्रय शास्त्रकारें टाव्या हे. अतुलशमदमादिमंतने अधिकारिता प्रवृत्ति विशिष्ट शमादि सिद्धि ए अनिप्राय ॥ ११०॥

॥ नरहादिकनें ढांमी पंथ, राजपंथ किरिया नियंथ ॥ उवटे जातां को इ उगखो, तोपण सेर न तजीयें नखो ॥ १११ ॥ अर्थः—नरतादिक कि या कखा विना नावनायेंज मुक्ति पाम्या, ते पंथनें ढांमीने पंथ एटखें रा जपंथ ते नियंथिकयाज किह्यें. जे माटें कोइक उवाटें जातां उगखो ढूंटा णो नहीं. तोपण नखो सहेर (नगरं) न त्यजीयें, ए ग्रुद्ध व्यवहार हे. अतएव नरताद्यवलंबन खेइ जे किया उद्वेदे हे, तेने शास्त्रमां महापातकी कह्या हे. रोग घणा, औषधपण घणा, एम मार्ग निन्न निन्न हे, पण राज मार्ग व्यवहारज सहियें ॥ १११ ॥

॥ तीरयित हादिकनो जेद, नियत तिहां निव किया उन्नेद ॥ जाणी क ए सहे तप होइ, करम निमित्त न किह्यें सोइ ॥ १११॥ अर्थः—ती थिसिद्ध अतीर्थिसिद्धादि जेद नियति प्रमाणे छे, पण किया उन्नेद न होय तत्कार्खें तत्सामयी जनक होय. हवे जे एम कह्यं के, कष्ट करनुं ते कर्म निमित्त छे, ते जपर कहे छे—जाणी कष्ट खमे ते तप होय पण कर्मवेदना मात्र नही. अतएव ॥ देहङ्कमहाफर्खेंहोझात्वेति शेष कह्यं. आन्युपगिक ओपक्रमिक इःखसहन गुण तेहज तप. तेहथी गुणवृद्धि अने गुणाप्रतिपात होय, कियानुं पण एहज फल ॥ अवदाम च ॥ गुणवृद्धी ततः कुर्यात् कियां स तकलनामयीम् ॥ एकं तु संयमस्थानं, जनानामवित्रप्रते ॥ अतएव मार्गाच्यवन निर्जरार्थ परितोष्टव्याः दरी जहा इति तत्वार्थे प्रोक्तं इःखस्यानादित्वात्तद्वयोऽ नादेयश्चेत्कर्मणोऽनादित्वात्तन्मोक्होपि तथा स्थात् स्वनावेसमवस्थानेन इःख तत्सहनसंकल्पश्चेत् मोक्हे जवेच सर्वत्र निःस्प्रहो मुनिसत्तम इतिवचनात्तदा मोक्हसंकल्पोऽपि नेति तुत्यमदः ॥ १११॥

॥ बहु इंधण बहु कांनें बन्ने, थोड़े कांनें थोड़ं जनें ॥ अग्नितणी जिम शक्ति अनंग, तिम जाणो शिवकारण रंग ॥ ११३ ॥ अर्थः—कोइ घणे कांनें मोक्तें जाय है, कोइ थोड़े कांनें मोक्तें जाय है. ते केम ? ते जपर कहे है—जेम घणा इंधन होय ते घणे कांनें बन्ने, अने थोड़ं इंधन होय ते थोड़े कांनें जने, पण अग्नीनी शक्ति अनंगज हे. तेम शिवकारण ते इानादिकनो संग जाणो. क्रमे बहुकाल क्रपणीयने साधन बहुकालें खपा वे.स्तोककाल क्रपणीयने साधन स्तोककालें खपावे. तथा खजाव ते उजयता तथा नियत हे. जो जोगवेज कर्म खपता होय तो केवारे कोइ मोक्हें जाय ज नहीं. चरमशरीरने पण शास्त्रादनादिक अपूर्वकरणांतने अंतःकोटाकोटि प्रति समये सात कर्मनो बंध हे. माटे क्रमें यथोचित कर्मसाधने जीव मोक्हें जाय इम सद्दिशें ॥ ११३॥

॥ दंनादिक विण घट निव होइ, तस विशेष मृडुनेदें जोइ ॥ तिम दल नेदें फलमां निदा, रत्न त्रय विण शिव निव कदा ॥ ११४॥ अर्थः—दंना दिक विना घटादिक केवारें नीपजे नही. पण (तस विशेष के०) घटादि विशेष ते उपादान कारण जे मृत्तिकाविशेष तेथी होय. तेम रत्नत्रयविना मोक्त कदापि न होय पण फल जे तीर्थंकरातिर्थंकरादि सिद्धावस्थारूप तक्षेद ते (दलनेदें के०) जीवदल नेदें होय. ॥ उक्तं च विशिकायां ॥ एय सञ्च हेउ तुल्ल, नवनं हंदि य सवजीवाणं ॥ जंति णेवय किना, णो तुल्ला दंसणा श्र्या ॥१॥ विचित्रदर्शनादिसाधनोपनायकविचित्रानंतरपरसिद्धायवस्थापर्या योपनायक तथा जव्यत्वेतरकारणाक्षेपक मुख्य कारण धारवुं ॥ ११४॥

॥ सिदि न होय कोई निजवत थकी, तोपण मत विरचों तेह थकी॥ फलसंदेहें पण रुषिकार, वपे बीज लिह अवसर सार ॥११५॥ अर्थः— कोई निजवतथकी चारित्रादिक क्रियाथकी कर्मवेगुण्यादिकें, सिद्ध न होय तोपण ए मोक्साधनथकी विरचसों मां, जेमाटे फल संदेहें पण (रुषिकार के०) करसणी जे वे ते सार अवसर वर्षाकालादि लईने बीज वपे वे, एटले वावे वे. अप्रिमकालनावि पवननेर्गुण्यादिसामग्री विघटक जाणी विरचता नथी. निह फलावइयंनावनिश्वयः प्रवृत्तों कारणं किंतु प्रकृते इष्टोपायत्वनिश्वय एव ॥ ११५॥

॥ हेतुपणानो संशय नथी, ज्ञानादिक ग्रंणमां मूलथी ॥ तेमाटे शिवत णो उपाय, सद्दजो जिम शिवसुख थाय ॥११६॥ इति अनुपायवादीग तः ॥ अर्थः—एहज कहे हेः—ज्ञानादिक ग्रंण जे मोक्स साधन हे, तेमां हेतुपणानो संशय नथी. सामान्य व्यनिचार अनुगता ग्रुरुधमीरोपस्थिति विना अन्वयव्यतिरेकें ज्ञानत्वादिकें कारणता निश्चय हे. जे मोक्सें गया हे, तथा जे मोक्सें जारो, ते ज्ञानादि त्रय साम्राज्यें, अतएव प्रकाशशोधग्रित हारें ज्ञान तप संयमने मोक्त्हेतुता अवश्यकें कही ॥ नाणं पयासयंसो, इन्ने तवोसंजमो अ ग्रित्तकरो ॥ तिएह पि समान्गे, मुक्तो जिएसासणे निएने ॥ १ ॥ ए गाथायें कारणना प्रकाशादि व्यापार अर्जवा मोक्सार्थी प्रवर्त्ते, ए मोक्नो निपय सहहजो. जेम सत्प्रवृत्तें शिवसुख थाय ॥ ११६॥ ए अनुपायवादी गयो. एम मिथ्यामितना न स्थानक थया.

॥ ढाल ॥ चाल ॥ हवे नेदगुणना नांखीजे ॥ ए देशीमां ॥ मिण्यामितनां ए षट थानक, जेह त्यजे गुणवंतो जी ॥ सुधुं समिकत तेहज पामे, इम नाखें नगवंतो जी ॥ नयप्रमाणथी तेहने सुजे, सघलो मारग साचो जी ॥ लहे श्रंश जिम मिण्या इष्टी, तेहमां को मत राचो जी ॥ ११७ ॥ श्रर्थः— ए मिण्यामितना ढ स्थानक थयां तेमां एक नास्तिकवाद, बी जो श्रनित्यावाद, त्रीजो श्रकतृवाद, चोथो श्रजोक्तृवाद, पांचमो मोहा नाववाद श्रने ढको श्रनुपायवाद, ए ढ वादने जे गुणवंत त्यजे, ते सुधुं समिकत पामे. तत्त्व परीहाजन्य श्रपाय रूप झान तेहज समिकत हे. उ कंच ॥ संमतो ॥ जं जं तत्त परिस्ता, सहहमाणस्त नावर्च नावे ॥ पुरिसस्ता निण्वोहे, दंसण सहो हवइ जुत्तो ॥ १ ॥ पटस्थानविषय तत्तत्प्रकारक झानें सम्यक्तवंत नगवंत न थाय. सम्यक्हष्टी ते श्रंशश्रंशथी केवली हे, तेने नयप्रमाणें करी सघलो मार्ग साचो सुजे, श्रने मिण्यादृष्टी ते एक श्रंशने तत्त्व करीने गहे. बीजाशुं हेष करे, माटे तेमांहे कोइ राचशो मां॥११७

॥ यही एकेक छंश जिम छंधल,कहे कुंजर ए पूरो जी ॥ तिम मिष्या वी वस्तु न जाएो, जाएो छंश छधूरो जी ॥ लोचन जेहनां बिहुं विकस्त र, ते पूरो गज देखे जी ॥ समिकतदृष्टी तिमज सकल नय, सम्मत वस्तु विशेषें जी ॥ ११० ॥ अर्थः— जेम कोश्क छंधो पुरुष ते हाथीनो को शएक छंश यहीने ए कुंजर हे, एम सद्दे. जे गजना दंत यहए करे, ते हाथीने मूलकप्रमाण कहे, जे संम यहे ते दंमप्रमाण कहे, जे कर्ण यहे ते स्वपडा प्रमाण कहे, तेम मिष्यात्वीपण वस्तुनो यावत्कर्म माने हे, ताव कमिमान पूर्ण जाणे नही, अधूरो एक अंशजेदादिक जाणे, परंतु जेहना बेहु लोचन विकस्वर हे, अनुपहत हे, तेतो गजने करचरणदंताद्यवयहें, संस्थानरूपादिकें विशिष्ट पूर्ण देखे. सकलनयसम्मत वस्तु हे, ते विशेषें जेम सम्यगुदृष्टी नयवादमां जदासीन थ१ रहे, न निंदे, न स्तवे, कारण

विना नयनाषा एम बोले ॥ उहारिणिं ऋप्पियकारिणिंच, नासं न नासि क सया सजुको ॥ १ति वचनात् ॥ ११० ॥

॥ श्रंशयही नय कुंजर कव्या, वस्तु तत्व तरु नांजे जी ॥ स्यादवाद श्रंकुशयी तेहनें, श्राणे धीर मुलाजे जी ॥ तेहिनरंकुश होये मतवाला, चालाकरे श्रनेको जी ॥ श्रंकुशयी दरबारें ठाजे, गाजे धिरय विवेको जी ॥ ११ए ॥ श्रयः— नयरूप कुंजर ठे, ते एकेक श्रंशयही उन्मन पका कठ्या ठे, ते वस्तुतत्त्वरूप (तरु के०) वृद्धनें नांजे ठे. श्रने जे धीर पु रुप ठे, ते श्रंशयाही नयरूप कुंजरने स्यादवाद श्रंकुशें मुलाजे श्राणे, वश करे. श्रने निरंकुश पड़ने निरपेट्स्थको चालतो मतवालो होइने वेदांतादि वादमांहे प्रवेश करीने, श्रनेक चाला करे, जेम हाथीपए निरकुंश होय, तो हाट घर प्रमुख नांजी नाखे, खतंत्रथको वनमांहे फरे, श्रने जो तेने श्रं कुश होय तो ते श्रंकुशयी दरबारें ठाजे, विवेक धरी पटहस्ती घड़ गाजे, तेम इहांपए जे स्यादाद श्रंकुशे शीखव्या, ते श्रीजिनशासनरूप राजदार ठे तिहां श्राप बढ़ों गाजे ठे ॥ ११ए॥

॥ नैयायिक वैशेषिक विचखा, नैगमनय अनुसारें जी ॥ वेदांती संय हनय रंगी, किएल शिष्य व्यवहारें जी ॥ क्जुस्त्राहिक नयथी सोगत, मी मांसक नय जेलें जी ॥ पूर्ण वस्तु ते जेनप्रमाणे, पट्दर्शन एक मेलें जी ॥ १२० ॥ अर्थः— नैयायिक अने वैशेषिक ए वे दर्शन नैगमनयने अ नुसारें विचखा. ते प्रयग् नित्यानित्यादि इव्य माने, प्रथिवी परमाणुरूपा नित्या कार्यरूपात्वनित्या ए प्रक्रिया नैगमनय ते नयद्वयात्मक हे.एकत्र प्रा धान्येनोपक्रमात् मिण्यात्वम् ॥ उक्तंच ॥ दोहिंवि णएहिं सह, मुख्णयतह्वि मिन्ननं ॥ जं सिव सम्मप्पहाणं, नणेण असूण निरवेर्कं ॥१॥ तेम वेदांती संयहनयनें रंगें चाल्या, जेमाटे ते ग्रुद्धात्मइव्य माने हे ॥ उक्तंच ॥ दिवय नयपित्रसुद्धा, नयएण संगह परूवणाविसत्र ॥ तथा किपलिशिष्य पञ्चीश तत्त्व प्रक्रिया मानता व्यवहार नयं चाल्या. उक्तंच ॥ जं काविलेय दिसण, एयंदं चित्रसस वेनवं ॥ व्यवहार ते इव्यार्थिक जेद हे. तथा सोगत ते चोथा क्जुस्त्रत्रादिक नयथी थया. सोत्रांत्रिक, वैनाषिक, योगाचार, माध्यमिक, ए अनुक्रमे क्जुस्त्रत्र, शब्द, समनिरूढ अने एवंनूत नयधी थया. तथा मी

मांसक उपलक्ष्णें वेयाकरणादिक नयजेलें नयसांकर्ये थया, अने पूर्ण एट ले पूरण नय जंग प्रमाणे वस्तु षट्दर्शन नये एक मेलवी जैनप्रमाणे हे. जदंमि ह दंसण, समूहमइ अस्सइ इत्यादि वचनात् ॥ १२०॥

॥ नित्यपक्तमां दूषेण दाखे, नय अनित्य पक्तपाती जी ॥ नित्यवाद मांहें जे राता, ते अनित्य नयघाती जी ॥ मांहो मांहे लडे वे कुंजर, जां जे निज कर दंतो जी ॥ स्यादवाद साधक ते देखे, पडे न तिहां नगवंतो जी ॥ १२१ ॥ अर्थः - अनित्यनयना पक्तपाती क्रणिकवादी बौदादिक वे ते नित्यपक्तमां हे दूषण दाखे वे. अंकूरादिजनकाजनक लादिविरोधें क् णिक बीजादि थापे हैं. सहशक्षणदोषें अनेदयहादि उपपादे हे तथा जे नित्यवादमां हे राता हे. ते अनित्यनयना 'घाती हे ते एकांतें नित्य आ त्मादिक माने वे ते मांहोमांहे वे हायी जहे वे, अने जहतां थकां पोता ना कर जे सूंम तथा दांत तेने जाजे है. अने जे स्यादादसाधक हे, ते ते मनी ज़डाइ देखे हे. पण नगवंत तिहां पडे नही. जदासीन रहे. जंसच॥ अन्योन्यपक्तप्रतिप्रकृजावाद्, यथा परे मत्सरिणः प्रवादे ॥ नयानशेषान विशेषमिन्नन्नपक्तपाती समयस्तया ते ॥१॥ इति दात्रिंशिकायाम् ॥१२१॥ ॥ ब्रुटा रत्न न माला किह्यें, माला तेह परोयां जी ॥ तिम एकेक दरीन निव साचा, आपिह आप विगोयां जी ॥ स्यादवाद सूत्रें ते गूंण्या, समिकत दर्शन कहियें जी ॥ समुइ खंशनी समुइ तणी. परे, प्रगट नेद इ हां लहियें जी ॥ १२२ ॥ अर्थः - बूटा रत्नने माला पर्याय न कहियें, जे वारें परोयां होय तेवारें माला पर्याय किह्यें. तेम एकेक दरीन हूटा हे, ते एकांतानिनिवेशें साचा न कहियें. आपेंज आप विगोयां हे, ते स्या हादसूत्रें गुंच्या होय, तेवारें सम्यग्दर्शन कहीयें. स्यात्कारें एकांताजिनि वेश टले. जेम मालाकारने पुष्पादिक सिद्ध है, तेहनी योजन रूप व्यापा र मात्र मालाकार अधीन हे, तेम सम्यग्रहष्टीने सिंददर्शनने विषे स्या द्दाद योजनमात्र व्यापार हे. तावताजितं जगत्. समुद्रश्रंशने समुद्रमां जेटलो नेद तेटलो इहां नयप्रमाणमां प्रगट नेद जाणवो. उक्तंच ॥ ना स मुड़ो समुड़ो वा, समुड़ांशो यथोच्यते ॥ नाप्रमाणं प्रमाणं वा, प्रमाणांशस्तथा नय ॥ १ ॥ इति ॥ गीतार्थे सत्य कहेन्तुं चित्तमां नावियें ॥ १ १ १ ॥

॥ वचन मात्र श्रुत ज्ञाने होवे, निज निज मतञ्चावेशो जी ॥ चिंता

क्वानें नय विचारची, तेह टखें संक्वेशों जी ॥ चारामाहें अजाणी जिम कोइ, सिद्ममुलिका चारे जी ॥ नावनङ्गानें तिम मुनिजनने, मारगमां श्र वतारे जी ॥ १२३ ॥ अर्थः - वचनमात्र जे श्रुतकान तेद्दथी निजनिज मतनो (आवेश के॰) इव होय जे पुरुष जे नयशास्त्र सांचलें, ते चिंता मान, बीज्जं विचाररूप तेहथी हठ टले, संक्वेशरूप विचार जन्य सकलन य समावेशकाने पक्तपात टबे, तेणें स्वानुयह होय, नावनाकान ते देश कालाद्यौचित्ये परानुयह शक्त हे, तेवी रीतें देशनादीये जेम परानुयह थाय, जन्मगीपवादसार तादृश प्रदृति होय " केयं पुरिसे कंचए ए इत्या द्यागमानुसारात् " पुरुष पश्चरूप थयो तेहने स्त्रीयें जेम ज्ञायानो चारो व्यंत रवचनें चराव्यो. जेवारें संजीवनी श्रोषधी मुखमांहे श्रावी तेवारें स्वरूप प्रगट थयुं. तेम नावनाङ्गानवंत सजुरु ते जव्यप्राणिने अपुनर्वधकादिक क्रिया मां तेरीतें प्रवत्तीवे. जेरीतें तेने संम्यगृददीनरूप संजीवनी श्रीषधी श्रावे, के जेथी तेनुं निश्रयरूप प्रगट थाय. मिण्यात्वमय पशुरूप टली जाय. उक्तंच षोडराके ॥ आद्य १६ मनाक् पुंस, स्तदारा दर्शनयहो नवति ॥ न नवत्यसौ दितीये चिंतायोगाद् यद्यपि चारिचरकचारणाविधानं ततश्रर मे सर्वत्र हि तादृशीस्तिगांनीर्यात् समरसापत्यापश्रोसत्यतमनावि ॥ उद्क श्रमृत सरखां कह्यां वे. उक्तंच ॥ उदकपयोमृतकब्पं, पुसां मऽङ्गान एव मार्य ॥ तिध्धमत्त्व चतुर्ग्रहर्विषयतृरूपहारिनियमेन ॥ ११३॥

॥ चरण करण मांहे जे श्रित राता, निव स्व समय संजाले जी ॥ ति ज पर समय विवेक करी निव, श्रातमतत्व निहाले जी ॥ सम्मित मांहे कह्यं तिण न लह्यं, चरण करणनो सारो जी ॥ तेमाटे ए ज्ञान श्रज्यासो, एइज चित्त हढ धारो जी ॥ १२४ ॥ श्रश्यः—जे साधु चरणितत्तरी करणितत्तरी मांहेज श्रत्यंत राता हे, स्वसमयव्यवहारथी स्वित्वंतार्थपरि ज्ञानिश्ययथी जडश्रुति विचारजन्य श्रात्मविवेक न संजारी, निजपर विवे क श्रण पामी, श्रद्धात्मस्वरूप न निहाले, तेणें संमुण्यजीवाजीवादिज्ञा नें क्रिया कीधी. पण चरणकरणनो सार न पाम्यो. जेमाटे श्रद्धत्मज्ञाननो सार चरणकरणादिसाधन हे, ते तत्कारणीजूत जव्यत्वश्रदिद्दारें जपकारी हे. मिथ्याज्ञानोन्मूलननुं कारण तत्वज्ञान हे, साधनमांहे पण ज्ञान श्रंतरं ग हे, क्रिया बहिरंग हे, ए सर्व संमित्रग्रंथ मध्ये कह्यं हे. तथा गाथा ॥

चरणकरणपहाणा, ससमय परसमय मुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्स सारं, णिश्चय सुई ण याणित ॥१॥ श्रीदश्वेकाितक मध्येपण "पढमं नाणं तर्र दया" ए उपदेश हे. तिहां झान ते चारित्रोपयोगें षड्जीविनकायानें संमुग्धपिक्षान एम जाणी मनःसंतोष करवो. जेमाटे तेहनी हेतु स्वरूप श्रम श्रम्यक्षान एम जाणी मनःसंतोष करवो. जेमाटे तेहनी हेतु स्वरूप श्रम श्रम्यक्षान विना न होय. निश्चयक्षाननेंज निश्चय चारित्र श्रावे. उक्तंच श्राचारांगे ॥ जंसम्मित पास हा, तं मोणंति पासहा ॥ जं मोणंति पासहा, तं सम्मित पासहा ॥ इत्या दि एम कहेतां श्रमीतार्थ साधु क्रियांदंत हे, तेने चारित्र नावे. कोइ कहे शे के, एम कां कहो हो? तेने किहयें के, जो गीतार्थ निश्चय न होय, तो नहींज श्रावे. जो गीतार्थनो निश्चय होय तो उपचारें चारित्र होयज. उक्तंच ॥ गीयश्चो य विहारो, बीउं गीयश्चिनस्सहो चिण्उं ॥ इनो तङ्श्र विहारो, नाणुन्नाहो जिणवरेहिं ॥ १ १४ ॥

॥ जिनशासन रत्नाकरमांथी, लघुकपर्दिका माने जी ॥ उद्धरित एह नाव यथारथ, आप सकति अनुमाने जी ॥ पण एहने चिंतामणि सरिखा, रतन न आवे तोलें जी ॥ श्रीनयविजय विबुध पय सेवक, वाचक जस श्म बोले जी ॥ इति श्रीसम्यक्त्व चतुष्पदी समाप्ता ॥ लोकगिरासमर्थित नय प्रस्थानषट्स्थानकव्याख्या संघमुदे यशोविजय श्रीवाचकानां कृतिः ॥

अर्थः— (जिनशासन के०) प्रकरण परिसमासें एटले जिनशासन रूप रत्नाकर ते मांहेथी ए पट्स्थानक जाव उद्धित. ए उद्धार प्रंथ यथार्थ हो. जिनशासनरत्नाकरने लेखे ए प्रंथ लघुकपर्दिका मान हो. अने रत्नाकरतो अनेक रत्नें ज्ञा हो. ए उपमा गर्व परिहारने अर्थें करी हो. पण ग्रुद्धजाव एवा विचारियें तो चिंतामणी सरखा रत्नपण एने तोले नावे. प्रंथकर्जा ग्रुरुनामांकित यश एवं पोतानुं नाम कहे हो, एटले श्रीनयविजयविद्युधना पदनो सेवक वाचक श्रीयशोविजय उपाध्याय एणीपरें बोले हो ॥१ २४॥ इतिश्रीसम्यक्त चोपई समाप्ता ॥ श्रीराजनगर एटले अहमदावाद नगरने विषे तहां प्रसिद्ध जे हेमश्रेष्ठिस्तत श्रीताराचंदनाम्ना तेनी प्रार्थना थकी लोक जाषायें करी नयप्रस्थान एटले नयमार्ग तेणे करी षट्स्थानकनी व्याख्या श्रीसंघने हर्षने काजें श्रीयशोविजयजीनी कृति जाणवी ॥

संतोष विषे सोरवा.

॥ हियंडा कर संतोष, होणहार ते होयसी ॥ देव न दीजें दोष, वेहा लाज न वंिमयें ॥१॥ दोहा ॥ नांहि सुख संतोषिवन,कोटी करो उपाय ॥ चक्रवर्त्ति हू इःखिव्हें, देव सु अधिक दिखाय ॥१॥ मानि न तामें इःख सु ख, नांहि वस्तुमें रंच ॥ पदार्थको निहं अंत कढुं, कर संतोष प्रपंच ॥ ३ ॥ जूप असंतोषी इखी, सुखि विरक्त संतोष ॥ कहों सोख्य कामें र हत, सब मनहीको तोष ॥ ४ ॥ ज़बलों निह संतोषिह्य, तबलों इःखी सोई॥ जब संतोष जयो उदय, तासम सुखि निह कोइ॥ ५ ॥ विरक्तता में सुख रहत, तस कारण संतोष ॥ जो यित व्हे आशा करे, तो तस इ खको दोष ॥ ६ ॥ जब दमडीकी चाह जइ, तब दमडीको होय॥ जब दमडीकी चाह गइ,तब सम दीपत सोय ॥ ७ ॥ प्रापतिमें कढुं हर्ष निहं, शोक हानिमें नांहि॥ सो संतोषी जानियें, छेश इःख निहं तांहि॥ ए॥ देव विषे सोरता.

॥ जाता तणां जुहार, वलतातणा वधामणा ॥ दैवतणो व्यवहार, में लिये के मिलियें नहीं ॥ १ ॥ दोहा ॥ सरवर केरे दीहड़े, कंठो कंठे नीर ॥ देव संयोगे विधि वसें, कग्यामांहि करीर ॥ १ ॥ देवह रूठो छुं करे, नाहुं उथले कूछ ॥ के वेस्या घर पाठवे, के रमडावें जूछ ॥ ३ ॥ देव न काहू तें टरत, लिख्यों करें सो सत्य ॥ विधिने देव कियो प्रगट, तांहि न त्यागत नित्य ॥ ४ ॥ देव कमें वश है जगत, दोमें छादी कीन ॥ याको करों बिचार जन, सुख पावहुगे जीन ॥ ५॥ देव नांहि इतही छिषक, देव देवमें श्रेष्ट ॥ देव देववश पुनि गिरत, जोग न पुनी छानिष्ट ॥ द॥ देव न होवे छान्यथा, कथा सुनो जगमांहि ॥ राम देव वश वन फिरे, रावण नाश करांहि ॥ ॥ प्रीति विषे दोहा.

॥ प्रीति रीति कबु औरहै, जाणे जाणणहार ॥ गुंगे गुड खाया तेणो, खाद कहे ग्रुं बार ॥ १ ॥ प्रीत मेह श्रुरु मोरडी, श्रावत दे श्रित मान ॥ पुकारि के जगमें कहत, श्रावत मेह महान ॥ १ ॥ मेह पिग्रानत मो र निह्न, मोर करी तस प्रीत ॥ पुर्व जन्मके कमेथें, होत प्रीत श्रस रीत ॥ ३ ॥ प्रीत प्रीत सब जन कहें, जुदी प्रीतकी रीति ॥ लोह चमक जड दों गें, देखत चलत सुनीति ॥ ४ ॥

य य

॥ गुर्जरनाषासहित दृष्टांतद्यातकस्य प्रारंनोऽयम्॥

॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥

॥ नला श्रीक्षचं सदा वृषधरं सौस्याकरं सुंदरं, देवेंडादिनुतं सुनींडम हितं पौरस्त्यतीर्थंकरम् ॥ श्रोतृणां प्रतिबोधकं सुखकरं दृष्टांतकानामहं, कुर्वे काव्यशतं निजापरनृणां व्याख्यानसकतते ॥ १ ॥ अर्थः—ग्रंथकत्ती मंगलाचरणने अर्थे श्रीतीर्थंकरने नमस्कार करे हे. जे निरंतर वृष जे धमे तेने धारण करनार, सुखना जंमार, तथा सुंदर मनोहर रूपवंत, वली दे वेंडादिकें जेमने नमस्कार करेलो हे, अने पुंमरीकादिक महामुनियें जेम तुं पूजन करेलुं हे, एवा जे प्रथम तीर्थंकर श्रीक्षचनदेव नगचान तेमने ग्रंथकर्त्ता कहे हे के, हुं नमस्कार करीने, सांजलनारने बोधनुं करनार, तथा जव्यजीवने मांगलिकनुं करनार एवं अने पोताने तथा अन्यजनोने व्याख्यान करवानां रूडा कारणमाटे दृष्टांतना सो काव्यनी अर्थात् दृष्टां तशतक नामा ग्रंथनी हुं रचना करुं हुं ॥ १ ॥

तिहां संसारसुखने मधाबेंडनी उपमा दईने पहेलो दष्टांत कहे हे.

॥ कश्चित्काननकुंजरस्य जयतो नष्टः कुवेरालयः, शाखासु यहणं चकार फिएनं कूपे त्वधो दृष्टवान् ॥ हृक्तो वारणकंपितोऽय मधुनो, बिंदूनितो लेढि स, लुब्धश्चामरशिद्धतोऽपि न ययो संसारसको यथा ॥ १ ॥ श्रर्थः—कोइक पुरुष, वनमां जतां कोइक हाथीने देखी तेना जयथी नालो. ते जेवारें हा थी तेनी नजीक श्राच्यो, तेवारें ते पुरुष कुवेरालय एटजे कुवेरस्य श्रालयः कुवेरालयः श्रर्थात् वडनी पासेना कृवामां लटकती एवी एक वडहक्ती जे माल, तेने यहण करतो हवो. एटजे जयथी श्राकुल थयेलो थको कृवा मां लटकती वडवाइने पकडी श्रधवचाले लटकी रह्यो. तेवार पढी ते पुरुष हेतुं जुवे हे,तो कृश्यानेविषे चार महोटा सर्प (श्रजगरने) देखतो ह वो. श्रने कपर जोयुं तो, जे वडवाइने ते पोतें पकडी रहेलो हे. ते वड वाइने एक कालो उंदर श्रने बीजो धोलो उंदर एवा बे उंदर कापे हे. व ली तेनी उपर एक वडनी मालें महोटो मधुपूडो वलगेलो हे. एवा सम यमां हाथीयें श्रावीने ते वडहक्तने कंपाव्युं. एटजे धंधोल्युं. तेथी मधुपू

डानी माखीर्र रडीने ते पुरुषने करडवा लागी. वली महूआल पण फूटी पड्यो. तेमांथी रहीरहीने मधुनो बिंदू ते पुरुषना ललाट जपर पडवा लाग्योः ते रेलो कतरतो कतरतो ते पुरुषना होत कपर आव्योः तेने तेणे जीनें करी चाट्यो. तेवारें मीठाश खावी, पढ़ी ते वारंवार पडता एवा मधुना बिंदूरीमां आसक थयेला पुरुषने विमानमां बेसी जनारा कोइ दे वतायें विद्याधरें बोलाव्योः अने कह्यं के, हे पुरुष ! तुं आ विमानमां बे श, अने महारी साथें चाल, हुं तुक्तने आ कष्टमांथी ढोडावुं. तोपण ते पुरुष मधुबिंदूना स्वादनी लालचें, जोनाणो थको, ते देवतानी साथें न जातो ह्वो. तेम जीवपण संसारमांहे मधुबिंदूसरखा अल्पसुखनी ज पर आसक थयो थको, देवविँमानप्राप्तिसमान धर्मनो अंगीकार करतो नथी. ए कथा इहां संदेपयी कदी हे. विस्तारें बीजा यंथीयी कहेवी. ॥ दोहा ॥ जंबूस्वामी प्रतिबूजवे, मंकरो हत मुक्तनार ॥ नर खुब्धो मधुबिं दूए, तिम हुं ने रहुं संसार ॥ १ ॥ मधुबिंदू संसारसुख, जाणी ढांमचा ञ्चाज ॥ साधुपणुं विमानसम, लीजें खविचेल राज ॥ १॥ इति कथा॥ हवे अनेकांतवादि एवा एक श्रीजिनधर्मविना बीजा पांचे दर्शनवाला ए

कांत वादी है,ते जपर हाथीने जोनारा पांच आंधलानो बीजो द्रष्टांत कहे है.

॥ पंचांधा गजदरीनार्थमगमन् कर्णां घ्रिग्रुंमाहिज, पुज्ञान् वीद्य गजं व दंत्यथ मिथो दृष्टो मया की दृशः ॥ शूर्पस्तं नकदृ व्ययोधव जव चुकु विवादं जडा, स्तद्दरसर्वमतानुगा मद्युता सर्वागवादी जिनः ॥ ३ ॥ अर्थः-कोइ एक पांच आंधला पुरुषो हता ते हाथी जोवाने अर्थे हाथीनी पासें आव्या,ते वारें एक आंधलायें दायीना कान जपर दाय फेरव्यो,बीजायें पग जपर हाथ फेरव्यो, त्रीजायें सूंम जपर, चोथें दंतोसल जपर, पांचमें पुष्ठ जपर एम हाथ फेरवी पाढा आवी मांहोमांहे हाथीनुं खरूप कहेवा लाग्या. तिहां जेना हाथमां हाथीनो कान आव्यो हतो तेऐं कहां के, हाथी तो सूपडा सरखो है, जेना हाथमां हाथीनो पग आव्यो हतो तेएीं कह्युं के, हाथी देरासरना स्तंन जेवो हे, जेना हायमां संम श्रावी हती, तेणें कहां जे हाथी केजना स्तंन जेवों हे, जेना हाथमां दांत खाव्यो हतो, तेऐं कह्यं के, हाय। मुसल जेवो हे, अने पांचमाना हायमां पूंहडुं आव्युं हतुं, तेऐं कह्यं के, हाथी वांसडा जेवो है. एम ते जड मूर्व मांहोमांहे विवाद करतां

एकें कहां तुं खोटो हो, तो बीजायें कहां तुं खोटो हो, अने हुं साचो हुं. एम परस्पर कहेवा लाग्या,तेम पांच मतवाला वादियो सर्व मदयुता एट छे अहंकारें युक्त थका अकबक बोख्या करे हे माटे ते अंधसमान जाणवा, अने एक सर्वागवादी अनेकांत पक्तनो धरनार ते तो जैनमत हे ॥ ३ ॥ बोहा ॥ षटमत है संसारमें, पंच ते अंधसमान ॥ इकइक वस्तूने यहे, जिनमत सबे प्रधान ॥ १ ॥ कालो सहाव नियइ, पुबक्यं पुरिसकारयं चेव ॥ समवाए सम्मन्तं, एगंतं होइ मिह्ननं ॥ १ ॥ ३ ॥

हवे जे जेवुं करे ते तेवुं पामे तेनी ऊपर दीवानो दृष्टांत कहे हे.

॥ श्लोकः ॥ संप्रष्टा विज्ञनैकदा निकटगाः रुष्णं कथं कर्ज्ञलं, नो व त्त्रयोदिषु कालिमा किल ततः प्राह्मेकधीमान्त्रपम् ॥ ध्वान्तं नक्कति दीपकस्तु नृपते तेनैव रुष्णाञ्जन-माहारी चुवि यादृशो नवति वा नीहारकस्तादृशः अर्थः एकदिवसने विषे कोई राजाए पोताना सनामां बेवेला सनासदोने पूर्व्युं, के चराक दीवो बसे हे तेनीकपर दीवानी सिंगे वाट मांथी जे कार्जुं काजल पहे हे. ते केम पहे हे? कारण के दीवा मांहे कपा सनी वाट हे तेतो धोली हे. तेमां कालापणुं नची. अने वली अप्रि हे, ते रातो, पीलो जणाय हे. अने, तेलपण रातुं पीलुं हे. एमां कालाशतो देखातुं नथी. त्यारें एमां काद्धं काजल उत्पन्न थयुं, तेनुं ग्रुं कारण ? ते सां चली, एक विद्यान सचामांहे बेवो हतो, तेऐं राजाने कह्यं के, हे राजन, दीपक जे कराय है ते अंधकारनो नाश करवा माटे कराय है. माटें ते दी वो खंधकारनुं नक्कण करे हे. तेथी कालुं काजल उत्पन्न थाय हे. जे कारण माटे लोकमांपण प्रसिद्धि हे के, जे जेवा रंगनो आहार करे,ते तेवाज रंगनो निहार पण करे, ए एनो उत्तर हे. तेम जे जन, जेवुं कर्म करे हे, तेने तेवुं फल प्राप्त थायहे. उक्तंच ॥ वर्तिस्तु धवला क्रेया, तैलं पीतं च दृश्यते ॥ दी पो रक्तस्तथा जाति, कद्धले श्यामता कथम् ॥१॥ यादृशं चुज्यते चान्नं, पच्यते जिंतरामिना ॥ दीपेन तमसं छुक्तं, नीहारोऽपि च ताहृशः॥ २ ॥ इति ॥ ४ ॥ ह्वे जे पोतानी मेले पोतानां वखाए करे, पए ग्रुए विना जगत व खाणे नहिं. तेनीकपर सूवर अने सिंहनो चतुर्थ दृष्टांत कहे वे.

॥ सत्रे क्रोडमृगाधियों च मिलितों ब्रुते हिरं ग्रूकरो, वादं त्वं वद रे मया सह हरे नो चेन्मया हारितम् ॥ श्रुला तहचनं हिरगेदितवांस्त्वं

याहि रे स्कर, लोकान्ब्रहि मया जितो मृगपितर्जानित में का बलम् ॥५॥ अर्थः-एक वनने विषे स्वर तथा सिंह ए बन्ने जेला थया. त्यारे सिं हप्रत्ये स्वर कहे हे के, हे सिंह तुं घणा दिवसे मने मत्यो, माटे हवे मारी साथे वाद कर, अने जो वाद न करे तो एम कहे के, हुं हास्रो, अने तुं जीत्यो, एटलुं कहीने पही जा. एवं वचन सांजली सिंहें विचास्तुं, जे आ नीचनी साथें वाद करवो योग्य नथी. एम चिंतवी स्वरने कह्युं के, अरे स्वर! तुं जा ने लोकोने कहे जे के में सिंहने जीत्यो अने सिंह हास्रो; परंतु हे स्वर जे विद्यान हन्ने ते मांहरी बुिना बलने रूडी रीतें जाणे हे. कह्युं हे के,—'गह्य स्क्रर नहं ते, वद सिंहो जितो मया ॥ पंमिता एव जानंति' सिंहसूकरयोबलम् ॥ रं॥ ५॥

हवे नीचनो संग करवा जपर कागडांनो पांचमो दृष्टांत कहे हे.

॥ जूपो वृक्तते स्थितस्त प्रिंपरेषी हंसकाकों तदा, विद्वाकेन कता मृपो परि शरं कोधान्नृपो मुंचित॥ लग्नः पिक्त्पतेर्गतश्च विल्लाक्क हंसोऽपत ब्रूतले, तं हृष्टाह मृपो मयोज्ज्वलतरो हृष्टोऽ ज्ञुतो वायसः ॥ १ ॥ श्रर्थः—एक दिवसें को इएक राजायें जाडनी हेठे पोतानो घोडो उनो राख्यो, श्रने पोतें पण उनो रह्यो. एवामां तेज जाडनी जपर एक राजहंस तथा एक कागडो ए बन्ने पिक्त बेठां हतां तेमां कागडायें राजानां उज्वल वस्त्र हेखीने तेनी जपर विष्ठा नांखी, तेनाधी वस्त्र खराब थयां, ते जोइ राजाने रीस चडी तेवारे कबाण लड़ने वाण फेंक्युं, ते वखतें कागडो उडी गयो श्रने ते बाण हं सने वाग्युं, तेथी ते हंस नीचे राजानी श्रागल श्रावी पड्यो. तेनी सामे जोइने राजा बोख्यो के श्रावो उज्ज्वल कागडो में कोइ दिवस जोयो नथी. ए श्रपूर्व वात हेखाय हे. त्यारे हंस कहे हे के, हुं कागडो नथी, हुं तो उज्वल हंस हुं; पण नीचना संगयी महारुं मृत्यु थयो हे. कहां हे के,—'नाहं काको महाराज, हंसोऽहं विमले जले॥ नीचसंगप्रसंगेन, मृत्युरेव न सं श्रवः ॥ १ ॥ हंस तरंतो हेखि के, तुं किम तरियो कग्ग ॥ तोरि पियारी जे करे, तले मुंडि कपर पग्ग ॥ १ ॥ इति पंचम हृष्टांत ॥ ६ ॥

हवे जे जेवुं करे ते तेवुं फल पामें ते उपर बहा चोरना दृष्टांत कहे हे.

॥ इर्नेदाढ्यगृहेऽकरोन्निश हरः खातं च पद्मारुति, तन्मध्ये क्रितौ कमौ धनतृषा ज्ञातस्तदा स्वाधिपैः ॥ श्रंतस्थैर्यहणं पदोर्बहितरं मित्रैः रुतं

हस्तयोः, खातान्ते र्निशितैः प्रपीडिततनुः संघृष्यमाणो मृतः ॥ ७ ॥ अर्थः-को न नेदाय एवा धनवंतना घरने विषे चोरो चोरी करवा श्राव्या; पण ते घरने पाटीयां जडेलां हतां, तेमां एक चोरे खातर देतां पाटीयांमांहे कमलना जेवुं त्राकार दीधुं. तेमां इव्यना लोजें जे चोरे खा त्र दीधुं हतुं, तेज चोरें पोताना बेहु पग नांख्या. ते वखते घरधणीयो जागी गया, अने तेमां रहेला मनुष्यें चोरना बन्ने पगने पकडी लीधा. त्यारे ते चोरे बाहार रहेला चोरोने कहां के, मने जाव्यो हे, माटे बाहेर काहाडो. ते सांजली बहार रहेला चोरो ते चोरंने हाथें जालीने खेंचवा लाग्या. ते मज मांहे रहेला पुरुषो तेने मांहेली कोरें ताएवा लाग्या. अने बाहेर रहे ला बाहेर ताणवा लाग्या. एम बेंहु तरफंथी ताणाताण थवाथी कमला कार खात्रना तीक्षण कांगराथी तें चोर पीडित थयो. तथा घर्षण पाम्यो बतो, तत्काल मरण पाम्यो माटे जे जन जेवुं कर्म करे, तेने तेवुं फल मखे. कह्यं वे के ॥ यादृशं कियते कर्म, तादृशं प्राप्यते फलम् ॥ यथा प्राप्तं तु चौरे ण, हस्तखातकतेन वै ॥१॥ तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सक्रम्मुणा किच्चइ पावकारी ॥ एवं पया पिच्च इहं च लोए, कमाण कम्माण न मुक्त श्रिष्ठ ॥ २ ॥ इतिषष्ठी कथा ॥ ७ ॥

हवे तत्काल बुद्धि उत्पन्न थवाथी गई वस्तु पण लब्ध थाय है ते जपर रींहनो अने मनुष्यनो आहमो दृष्टांत कहे है

॥ कस्याप्याध्वनिकस्य सत्रमिलितो नालुस्तदा तह्नुती दे गृह्णाति तदं वरं दितमतस्तस्याऽपि तन्नाणकम् ॥ तत्रागत्य जडः किमस्त्ययमिति प्राह् स्म वक्रादिदंस प्राह्णस्य मुखात् प्रदेहि सुमते तेनास्य दत्तः करे ॥ ए ॥

अर्थः—कोइ एक वटेमार्गुने वनने विषे मार्गे जतां एक रींढ मत्यो. ते आवीने तेने वलग्यो. त्यारे ते पुरुषे रींढना बेहु कान पकड्या. तेथी ते रींढनुं कांइ जोर चाल्युं नहीं. बेहु मांहोमांहे अफलावा लाग्या. आध हते आधहते ते पुरुषनुं वस्त्र फाट्युं. तेवारे तेनी कटीयें सोनानी वास णी बांधेली हती तेमां जे सुवर्ण हतुं, ते हूटी हेवल पड्युं. तेटलामां को इ जह पुरुष त्यां आव्यो. तेणें पूढ्युं के, आ ग्रुं पड्युं हे? त्यारे तेने बुद्धि कपनी, तेथी जवाब आप्यो के, में रींढना कान फालीने अफलाव्या तेथी

एना मुखमांथी सोनैया निकल्या ते पड्या हे. तेवारे ते मूर्षे ते वात सा ची मानीने कह्यं के, हे रुडीबुद्धिवाला तुं आ रींह्या कानथोडीवार मने पण अफलावा दे. त्यारें तेणे तेज वखतें ते जडने रींह्या कान पकडवा आप्या, अने पोतानुं सुवर्ण बचाव्युं. कह्यं हे के, शीघ्रमुत्यदाते बुद्धिः, साबुद्धि फलदा यथा ॥ जालुकर्णों करे दला,पांथेन रिक्तं च स्वम् ॥१॥ इति सप्तमी कथा॥ हवे सीघ्रोत्तर आपवानी बुद्धिवषे त्रण पुरुषोनो आहमो दृष्टांत कहे हे.

॥ केचिइाजोपकएवं ययुस्त्रिपुरुषा जूपेन ते तत्कलाः, ष्टष्टा जचुरथो त्व रोत्तरकराः पश्चात्सनायां प्रयक्॥ कूर्चं ते ह्यसितं कथं तव सितं सोऽवग्जरा पाएडुरं, ऽन्यं ह्यस्मादितरं प्रधावनसितं कूर्चं न मात्रंगकात् ॥ ए ॥ र्थः-कोइएक राजानीपासे चाकरी मेलववाने खर्थे त्रण पुरुषो गया तेम ने राजायें 'पूरुशुं के,तमे कांइकला जाणो हो! त्यारे ते त्रणे जणें कह्यं के, हे स्वामी! श्रमे कोइयें करेलां प्रश्नंनो तत्काल उत्तर श्रापवानी कला जा णीयें वैयें. ते सांजली राजायें तेर्रने चाकरीमां राख्या. एक दिवस सजा मांहे परीक्षा लेवाने त्रणे जणोने राजायें जूदी जूदी रीतें प्रश्न पूर्व्युं. ते मां पहेलांने पूरुघुं कें, ताहरी माढीना वाल काला हे, अने माथाना वाल धोला वे तेनुं हुं कारण ? त्यारे तेणें शीघ उत्तर आप्यो के, माढीना वा लयी मायाना वाल वीश वर्ष महोटा हे, कारण के दाढी तो वीश वर्षना माणसने थाय हे तेथी दाढीना वाल काला हे, अने माथाना वाल धोला बे. पढ़ी बीजाने राजायें पूब्युं के ताहरी दाढ़ीना केश धोला बे, अने मा थाना केश काला है तेनुं ग्रुं कारण ? त्यारें तेणें पण तरत जवाब आ प्यों के, साहेंब दाढी वधारें धोवाय है तेथी उज्वली रहे है. पही त्रीजाने पूर्वयुं के, ताहरे दाढी तथा मूरु ए बन्ने नथी तेनुं ग्रुं कारण ? त्यारे तेणें पण तत्काल उत्तर आप्यो के में मातानो पक्त अंगीकार कह्यो हे, जेमाटे बोरुं होय ते पोतानी माता सरखो अथवा पितासरखो होय तेथी हुं म हारी माता सरखो रह्यो हुं.॥ ए॥ कह्यं हे के न दृष्टं न श्रुतं येन, प्रश्ने प्र ष्टे तड्चरम् ॥ दीयते समहाप्राङ्ग, स्त्रिनिर्दन्तं नरैर्यथा ॥१॥ अष्टमो द्रष्टांतः ॥

हवे नाम्यहीनने आगल आवेलो पदार्थ पण मलतो नथी, ते जपर बाह्मण ने ब्राह्मणीनो नवमो दृष्टांत कहे हे.

॥ काष्टार्थ ह्यथनो च गन्नत इतो गौर्या तु दृष्टौ तदा, प्राहेशं च सुखी कुरु

लमबले नाग्यं तु नेंवेतयोः ॥ यद्यं कुरुयाश्च मुंचित तयोरये तदा कुंम लं, नूमावंधगितं तद्यवगतावंधाविवापस्यताम्॥ १०॥ अर्थः—काइ एक निर्धन स्वीपुरुष काष्ठ लेवाने माटे जाय हे ते समय ए बेंद्रु जणने पार्वती यें जोयां तेने जोई पार्वतीने करुणा आवी तेथी शिवने कहेवां लाग्यां के हे स्वामी नाथ! आ बेंद्रु निर्धन स्वीपुरुषने तमो सुखी करो. त्यारें शिवजीयें कहां के हे अवला! ए बेंद्रुनुं रुडुं नाग्य हेज नहीं,तों तेने आपणे शीरीतें सुखीया करी शकीयें? त्यारे पार्वतीयें कहां के जो आप तेने धनवान करो तो थाय. शंकरें ते वात स्वीकारीने ते बेंद्रुनी आगल पोताना काननुं कुंम ल हतुं ते रस्तामां नांख्युं. तेवारें ते नाग्यहीन स्वीपुरुष विचारवा लाग्यां के,आंधलां मनुष्य रस्तामां केम चालतां हंशे ? आपणें तेनो अनुनव करी जोइयें. एम विचारी बेंद्रु जण आंखो मीची चात्यां. तेथी रस्तामां पहेलुं कुंमल तेमनी नजरें न पहगुं,अने कांइक दूर जक्ष्ने चकु उघाडी जोयुं. अ र्थात् ते नाग्यरहित स्वीपुरुषने जे स्थलें कुंमल पडगुं हतुं, ते स्थलें अध मनुष्यने चालवाना अनुनवनी बुद्धि उत्पन्न थइ. कह्यं हे के, नाग्यहीना न पश्यिन्त, नयनायेऽपि मानवाः ॥ दंपतीन्यां यथा मार्गे, न हृष्टं कर्णनूषणम् ॥१॥ एम नाग्यहीन लोको नेत्र आगल पहेली चीजने पण जोता नथी. हवे पोताना स्वामीनुं चिनेक्वित काम करनार मंत्रीनो दशमो दृष्टांत कहे हे.

॥ सत्रे राष्ट्रिएण कृतं च नृजलं गत्वा गतस्तिस्थतं, दृष्ट्वा चिन्तितवान् सरो छिव नवेत्तल्लितं मंत्रिणा ॥ तेनागत्य सुकारितं यदि नृपः प्रोचे त दा मंत्रिणं, केनाऽत्रेदमतो मया स नृपते चित्तेष्सितं यत्त्वया ॥ ११ ॥

अर्थ:—कोइक राजा वनमां गयो. तिहां राजानो घोडो मूत्रखो. ते मू त्रयी खाबोचीयुं नराणुं. ते यंनाइ रह्यं, पण नूमीमांहे स्नकाणुं नहीं. त दनंतर राजा वनमां सेहेज करी ज्यारें पाठो तेज स्थलें आव्यो. तो त्यां नहीं स्नकाण्लुं एवं मूत्रनुं खाबोचीयुं नजरे जोइने चिंतन करवा लाग्यो के, जो आ प्रध्वीनेविषे सरोवर होय तो जल स्नकाय नहीं. ते राजानुं विचारेलुं कार्य तेना मंत्रियें जाणी लीधुं, अने घरे आव्या पठी केटलाए क दिवसें मंत्रियें ते ठेकाणे सरोवर बनाव्युं. वली पण केटला एक दिव स पठी राजा ते स्थानकें आव्यो. त्यां सरोवर देखीने मंत्रीने केहेवा ला ग्यो, के आ सरोवर कोणें खोदाव्युं? त्यारे मंत्रियें कह्यं के, हे राजन! ए सरोवर में खोदाव्युं. आ वात सांजलीने राजायें मंत्रीने कहां के, हे मंत्री! तें मारा मननुं १ जित जाण्युं, माटें तुं महाबुद्धिमान् बो. कहां बे के, —'अ न्येन चिंतितं कार्य, जानाति स विचक्तणः ॥ महामंत्री जवेषाङ्को, यथाजू स्स सरस्करः ॥ इति दशमदृष्टांतः ॥ ११॥

ह्वे मूर्खनी नणेली गाथा सांजलीने पश्चरने पण क्रोध चढेंगे ते जपर पंिम तना हाटमांहेला पश्चरना तोलानो अगीयारमो दृष्टांत कहे गे.

॥ स्थित्वेकः कतिह्रके जडमितः प्राहानृतार्थां कितं, ह्रस्था सम शैलकाः सुचिताः शुला जडस्योदितम् ॥ कोधानेऽकथयन्नरे जडमते खं याहि वकायतो, हस्ते कोऽपि बलं ददाति हि किष्णामो रदोत्पाटनम् ॥ ११॥ अर्थः— कोइ एक पॅमितना हाटमां बेसीने कोइ एक जडमित खोटी गाथा नणतो हतो. तेवारें ते पंमित हाटमां हतो नहीं. पण ते जड नी कहेली गाथा सांजलीने हाटमां पांचसेरी अधशेरी प्रमुख पत्ररना तोलां पहेलां हतां, तेने रीश चढी. तेवारे ते कोधथी कहेवा लाग्यां के हे जड मित? अमारा मुख आगलयी उठीने तुं दूर जा. अमे पंमितनां तोलां वेथें. माटे अमारा आगल खोटी गाथा जणवाथी अमने उलटी आवे के, उबको आवे के, एवामां जो कदाचित् ब्रह्मा अमारा हाथमां बल आपशे, तो अ में ताहरा बत्रीशे दांत पाडी नांखग्रं॥ १२॥ कह्यं के के॥गाहा जणइंग मारो, पञ्चरा थरहरंति हट्टमबंमि॥ पाडेमि दंतपिक, चठक जे को हज बलं देइ॥ १॥ इति एकादश दृष्टांत॥ १२॥

हवे मूर्खजन जो पोतानी मूर्खाइ बाहेर पडवाथी मुंजाइने अन्यदेशें जाय. तोपण तेनुं मूर्खत्व मटतुं नथी, ते जपर एक पुरुषनुं बारमो दृष्टांत कहे हे.

॥ कश्चित् स्वेष्टजना वदंति जड रे त्वं गञ्च तिष्ठाय वा, श्वत्वा नागरि कास्तयाद्धरिवजा रोषात् विदेशं गतः ॥ दृत्वाकस्ये स करं जलं पिबति तत् पूर्णोदरो मस्तकं, नार्या कंपयित प्रवीद्य हि जडोसि प्राह् कैर्जव्हणैः ॥१३॥

॥ अर्थः— कोइ एक मूर्ष मनुष्यने पोतानां मातापितादि संगा वहालां बोलावे त्यारे एम बोलावे के, हे जड! तुं बेस. अथवा हे जड! तुं उठ क जोरहे, अथवा हे मूर्ष परहो जा. एम नगरना लोको सांजलीने सर्व ते जड ने तेमज बोलाववा लाग्या. पण कोइ नाम लइ बोलावे नहीं. तेथी ते मूर्ष ने रीश चडवाथी परदेश गयो, मार्गमां कोइ एक नगरने पादर तरष्यो थयो. त्यां रेंहेट फरतो हतो ते देखी मोढे खोबो मांमी पाणी पीवा जाग्यो. उदर नराणुं त्यां सुधी जल पीधुं. परंतु मोढेथी हाथ खसेड्या नहीं, अने माथुं हलावा लाग्युं. तें जोइ त्यां पाणी नरनारी स्त्री उदें कह्युं के, तुं मूर्ख देखा य हे. तेने मूर्खे पूह्यूं, जे तमोयें मारा कया लक्ष्णें मने मूर्ख जाएयों? त्यारे स्त्री डोली के, जल पीवानो खोबो आघो नहीं खेतां माथुं धूणावे हे, तेथी जाएयों. कह्युं हे के ॥ स्वदेशे परदेशे वा, यत्र गहाति मूर्खकः ॥ तत्रापि प्रक टं नािव, यथा मस्तककंपकः ॥ १ ॥ इति बारमो हष्टांत ॥ १ ॥ हते बारमो हष्टांत ॥ १ ॥ हते बारमो हष्टांत ॥ १ ॥ हते मूर्ख शिष्य करवो नहीं. तेजपर एक गोरजीना चेलानो तेरमो हष्टांत.

॥ पूःस्यौ शिष्यग्रहः विनेयक इतो जक्तायलच्धा वटा, द्वात्रिंशत् प्रमिताश्च चिंतयति मेऽदीः पंचकत्वो गुरोः ॥ सोदीनति तदाध्वनीह वटकस्तस्येह्तितोऽ न्याः क्व हे जग्धाः पूज्य मया कथं निजमुखे निक्किप्य शेषोऽदितः ॥ १४ ॥ अर्थः- कोइएक नगरमां गोरजी अने तेनो चेलो बे रहेता हता. एक दिवसें ते शिष्य वोहोरवा गयो. त्यां कोइयें जकें बत्रीश वडां वोहो राव्यां. पढ़ी रस्तामां ते शिष्य चिंतन करवा लाग्यो, के मारा ग्रुरुनां श्रदी नागनां सोल वडां याय. माटे हुं श्रडधां नक्त्ए करी जाउं.एम मा नी अर्ध खाइ गयो, वली जरा रस्तामां आघो चाल्यो, ने विचारवा ला ग्यो, के गुरुने कांइ खबर नथी. माटे गुरुनां नागनां आत राखी आत खाइ जाउं. एम चिंतवी तेमांथी खाव खाइ गयो. वली लगारेक खाघो ज इ चार वडां राखी, चार खाधां. वली चोथी वार पण बे खाधां ने बे रा ख्यां. वली पांचमी वार पएा एक खाधुं, छने एक राख्युं. पढी उपाशरें श्राच्यो. त्यारें गुरुयें श्रन्नपात्र जोइ पूठगुं, के हे शिष्य! एकज वडुं कोणें वोहोराव्युं ? ने बीजां वडां क्यां गयां ? ते कहे. त्यारे शिष्य कहेवा लाग्यो के, मारा जागनो खडधो खडधो हिस्सो जाणीने एकत्रीश वडां खाधां हे, तेने गुरुयें पूर्व्युं के, ते वडां केम खाधां? त्यारे तेऐं मोढुं फाडी एक वर्डुं मोढामां मूक्युं. ने गुरुने कह्यं,के महाराज जुर्ड, श्राम खाधां. कह्यं हे के॥ मूर्वशिष्यो न कर्त्तव्यो, गुरुणा सुखिमञ्जता ॥ विडंबयित सोऽत्यंतं, यथा हिं वटनक्कः ॥१॥ माटे मूर्ख शिष्य न करवो इतित्रयोदश दृष्टांत ॥१४॥

हवें ड्यमन होय, ते पण जो दयायुक्त होय, तो ते सारो;परंतु नि र्दय मित्र पण सारो नहीं. ते ऊपर चौदमो दृष्टांत कहे हे.

॥ चौरो निःसगृहे गतो हिमनिश प्राह प्रियं साबला, तत्पार्श्वेम्बरखं मकं किटिति वा तद्देहि लाह्य ने कम् ॥ नो गृह्णाति शिशुं ददाति न तदा घं घं च जातं तयोस्त हुलां बरकं शिशुपरि हरः हिप्तवा गतेऽन्यालये ॥१५॥ अर्थः — कोइ एक चोर निर्धनना घरमां शियालाना दिवसमां रात्रिने विषे चोरी करवा पेतो. ते वखतें घरमां स्त्री पुरुष बेहु सूतां हतां. पत्नी टाढणी पीडाती स्त्रीयें पोताना स्वामीने कहां, के तमारी पासें लुगडांनो कटको ते, ते मने आपो, अथवा बोकराने ल्यो, बालक टाह्याडणी पीडाय हे. त्यारे तेणें बालकने पण तेड्यो नहीं, ने लुगडानो कटको पण आप्यो नहीं. पत्नी ते बेहु जणने लडाइ घइ. ते लडाइ जोइने चोरना मनमां दया आवी, तेणी तेणें पोतानुं वस्त्र बालक जपर नाख्युं. ने बीजाना घरमां चोरी करवा गयो. कहां हे के॥ दयायुक्तो दरिङ्ोऽपि, शत्रुहिं सुस्वकारकः ॥ प्रविष्टे हि यथा गेहे, चोरेण ह्यपितं पटम् ॥१॥ इति चतुर्दश हष्टांतः ॥ १५ ॥ हि चतुर्दश हष्टांतः ॥ १५ ॥ हि कार्य न थयानी पहेलां लडवा जपर स्त्रीपुरुषनो पंदरमो हष्टांत कहे हे.

॥ कोप्याह खवशां च लामि महिषीं खं साग्र नाथानय, मातुर्श्वण्यतरीं ददामि हि तदान्योऽन्यं विधत्तः कलिम्॥ श्रुत्वागत्य विशारदेन हि घटा जम्रा महिष्याद ते, क्षेत्रं मे यदि जिक्त न ललने यूयं कथं युद्धाथ ॥ १६॥

॥ अर्थः—कोइएक पुरुष पोतानी वशवर्ती स्त्रीने कहे हे,के हे स्त्रि,हुं नें श लावुं ? त्यारें स्त्री बोली के हे स्वामिनाय! जलदी लावो, वली स्त्री कहे हे. मारी नेंशना दूधनी तर हुं माहरी माताने आपीश, त्यारें स्वामी कहे हे के, ते तर हुं खाइश. एवी रीतें बेहुने क्षेश थयो. ते क्षेश सांजली ने कोइ बुिहमान पुरुषें आवी तेना घरमां पडेलां माटीना नम सर्वे जां ग्यां. त्यारे स्त्रीएं पूछ्युं के, आ वासण केम नांग्यां ? त्यारे ते बोख्यो, के मारुं खेतर तारी नेंशें खाधुं. त्यारे ते स्त्रीपुरुष क्षेश पडतो मूकी कहेवा लाग्यां के हजी नेंश क्यां आणी हे ? त्यारे बुिहमान पुरुषें कह्यं, जे नेंश आव्या विना दूधनी तरनी लडाइ शामाटे करो हो ? ते सांजलीने ते बे हु समज्या. कह्यं हे के ॥ दोहा ॥ घरें नेंश आणी नहीं, नांग्यां मोबर सात ॥ फगडो तो दंपित करे, दूध तरीनी वात ॥ १ ॥ एनो तो फगडो

सुणी, बुद्धिवंत खाव्यो दोडी ॥ जगडो तेणें नांजीयो,मोबर सघलां फोडी ॥ दवे कौतुकार्थी पासे विद्यानोनी विद्या निष्फल घाय हे,ते जपर सोलमो द्रष्टांत.

॥ नूपान्ते इविणेष्ठया कतिगमे दत्तं न किंचित्कदा, वीद्येशो नरनाटकं बहु धनं तस्याग्र सोवग्गतः ॥ गेहे तान् खजनान् न तत्र पठने यह्नस्तु कार्यो विदा, कर्तव्यं नटनाटकं च नवतां इव्यं नृपो दास्यति ॥ १७ ॥ श्र र्थः-कोइएक पंमित इव्यनी इज्ञायें राजा पासें सेवा करवा आव्यो: परंतु घणा दहाडा सेवा करी तो पण राजायें कांइ इव्य आप्युं नहीं. एवामां एक दिवसें राजायें नवायानी नवाइं जोइने तेनुं नाटक देखी प्रसन्न थइ घणुं इव्य ते नवाइ करनारने आप्युं. एवं राजानुं चरित्र जोइ पंमित नी ची दृष्टि करी विचारवा लाग्यो के, आपएँ जणवुं सर्वे निष्फल थयुं. त्यारें एकाएक पोताने घेर आवी पोतानां खजनने तथा शिष्योने कहेवा लाग्यो के, व्याकरण तर्क काव्य ढंद अलंकारांदि यंथोना जणवामां यह्न न करो, एथी कांइ राजा रीके नहीं ने नवाया वगेरे नाटकनो अन्यास करो तो तमोने राजा रीजीने इव्य आपशे अर्थात् राजा विद्वान् नथी पण कौतु कार्थी हे कह्युं हे के ॥ विद्वांसः सावधानाः शृणुत मम वचो इव्यलोनार्थि नश्चे, जंतव्यं सादरेण हितिपति चवने नूपसेवां विधातुम्॥ मीमांसान्यायतका गमविधिबह्वो दूरतो वर्जनीयाः, शिक्टेतव्यास्तु शिष्या धिगधिगधिकातथय्यी ति प्रशब्दाः ॥ १ ॥ इति पोडश द्रष्टांत ॥ १७ ॥

जालमां लख्युं मिथ्या न थाय ते ऊपर माथानी तुंबलीनो सत्तरमो दृष्टांत.

॥ केन श्रेष्ठिबहिः स्थितेन शवके दृष्ट्वार्यकावाच्यत, लात्वासद्मिन तुंबिकां प्रतिदिनं वे पश्यित रूयेकदा ॥ तं पिष्ट्वा विटका कता निजपतेर्मुकाति सोवक् ग्रुना, सेष्टा या अनवद् वरांगि लिखिते दोषो न ते मे वशे ॥१०॥ अर्थः— कोश्एक शेव बहार बेवेथके स्मशानमां पहेला शबनी तुंबली दीवी. तेमां लखेली गाथाने जोश्वांचवा लाग्यो, ते वांचीने पढ़ी ते तुंबलीने सुंमला मां नांखी, पोताने घेर लावी मूकी. ते तुंबलीने दिन दिनप्रत्ये जई जो वा लाग्यो. एकदा तेनी स्त्रीयें विचाखुं के, आ मारो खामी नित्य कोनी सामुं जुए हे ? तो त्यारें जुवे तो त्यां शबनी तुंबली नजरे पड़ी. पही ते स्त्री ने रीश चढ़ी, तेवारे तेणे ते तुंबलीने लइ खांमी पीसी वाटीने तेमां बीजी चीजो मसालादिक नांखीने, तेनी वड़ी बनावी. अने पोताना खामीने ते

वडी नुं शांक पीरस्युं. तेने ते वडी खातां तेनो खाद लाग्यो तेवारें तेनो खामी कहे ने,केश्रा वडी बहुज सारी यइ ने. माटे शानी बनावी ने ? तेने ते स्त्री कहेवा लागी के,जे श्रापने वहाली वस्तु हती,श्रमें जेनी सामुं निरंतर श्राप जोता हता तेनी श्रा वडी ने. त्यारे शेव बोख्या, के हे वरांगना, जे लख्युं हतुं ते थयुं. एमां मारो तथा तारो दोष नथी. पन्नी ते स्त्रीने सर्व वात प्रथमथी मांमीने कही. हवे ते तुंबलीमां श्रं लख्युं हतुं ते कहे ने ॥ गाथा ॥ जम्मो किलंगदेसे, पाणिग्गहणं मरुयदेसमक्कंमि ॥ मरणं समुद्दतीरे, किं जाणे किं निवस्सइ॥ इति सप्तदशहरांत ॥ १०॥

हवे कवि पूछतां वार उत्तर आपे ते जपर अहारमो हष्टांत कहे हे.

॥ प्रष्टः केन गुरुर्हि खिद्यति मनो नेत्रं कथं रोदिति, प्रोचे तं च गुरुमि नोनयनयोनों व्यंजनावयहः ॥ वेदाक्त्रप्रकरप्रयग्नवित तद्द्ये मनोनेत्रयोः, मर्त्यावेकग्रहे स्थितौ समसुखं जमाति तुल्यं तयोः ॥ १ ए ॥ अर्थः – कोइ श्रावकें गुरुने पूढ्युं के, महाराज, जेवारें मनमां दिलगीरी पेदा थाय छे, तेवारे नेत्र केम रुदन करे छे. ते सांजली गुरु बोव्या, श्रोत्र, प्राण, रसना अने स्पर्श ए चार इंड्योने पुद्गल ना स्पर्श थकी विषय जणाय, माटे ते व्यंज नावयह कहीयें, अने मन तथा नेत्रनो विषय पुद्गल स्पर्श्या विनाज जणाय ते अर्थावयह जाणवो. ते माटे मननो तथा नेत्रनो अधिको स्नेह संबंध छे तथी ज्यारें मन दीलगीर थाय, त्यारे आंख रुवे जेम एक घ रमां बेजण रहेतां होय त्यारे एकने इस्वें बीजाने इःख लागे. तथा एकने सुखे बीजाने पण सुख लागे. तेम मन तथा आंखनुं एकज घर छे. कह्यं छे के ॥ सिद्धांत शास्त्रकेष्वित्ति, नास्ति वाहि तथा परे ॥ सम्यक्त्रश्ने कते शीघं, प्रददात्युत्तरं कविः ॥ १ ॥ इति अद्यारमो दृष्टांत ॥ १ ए ॥

हवे अजाण्याने पोतानुं स्थानक देखाडवुं नही ते ऊपर जु अने मांकणनो उंगणीसमो दृष्टांत कहे हे.

॥ सुप्तो राए (निश मत्कुणो गत इतोऽन्यूकया वारितः, प्राघूणीपि तवा स्ति मातृनगिनी प्रोचे तया मानितः ॥ तेने शो दशितस्तदा नृपतिना शय्याहि चालोकिता, लब्धा षट्पदिका हि मत्कुण इतस्तेना सा मारिता ॥ २०॥ अर्थः—एक राजा रात्रे सुतो हतो. तेनी शय्यामां मंदविसार्पणी. नामे जं रहेती हती. तेटलामां एक इंडक नामे मांकड त्यां आव्यो. ते जोइ जुंये

मांकडने कहां जे तुं श्रावीस नहीं. माहरो खामी निइामां सूतो हे. त्यारें मांकड बोव्यो, के हुं तमारे घेर परोणो श्रावेल हुं. श्रने वली कहां, के तमे मारी मासी थार्ड हो, माटे श्राव्यो हुं. त्यारे जुंयें नोलवाइने तेने श्राववा दीधो. माकणें श्रावी तुरतज राजाने करड्यो. त्यारे राजाये सच्या जोव रावी तो मांकड जतो रह्यो श्रने जुं हाथमां श्रावी तेने तरत राजाना श्रमु चरें मारी नांखी तेमाटें श्रण्डलखीतों जो मीठा वचन बोले तो पण तेने पासें राखवों नहिं. पोतानी जगामां श्राववा देवो नहिं, जो तेनो विसवास करीयें, तो ते मांकडनी पेरें बीजानी जपर नांखीने पोतें नासी जाय. कह्यं हो, के॥ श्लोक ॥ श्रज्ञातकुलज्ञीलस्य, न दातव्यं प्रतिष्ठया ॥ इंड्रकस्या पि दोषेण, हता मंदविसर्णिणी ॥ १ ॥ ए डंगणीसमो दृष्टांत ॥ १० ॥

हवे बले करी जोला लोक वगाय है ते जपर वीशमो द्रष्टांत.

॥ गुर्विण्यां निजयोषिति क्तिपितिर्विप्रं तदा प्रक्वित, पुत्रं किं च सुता न विष्यति हि मे पुत्रो न हीत्यंगजा ॥ संक्षेख्य च्चदने ददौ नरपते. पुत्रो निव ष्यत्यथ, पुत्री चेद्यदि वाग्रु दीर्घलघुकान् वर्णास्तु वक्त्ये तदा ॥ ११ ॥

श्रर्थः—कोइएक राजाने पुत्र न हतो एकदा तेनी स्त्री गर्नवती हती, त्यारें ते राजायें कोइ एक ब्राह्मणने पूढ्युं, के हे महाराज, माहारी स्त्रीने पुत्र थज़े, के पुत्री थज़े ? त्यारें ब्राह्मणें ढल करीने कह्यं के, हे महाराज, हुं तमोने कागलमां लखी आपीश. तेवात राजायें कबुल करी अने खुशी थयो. पढी ब्राह्मणें चिंतव्युं जे पुत्र अथवा पुत्री बेमांथी एक तो अवस्य थाज़े. एम विचारीने कागलमां लख्युं, जे "पुत्र नही पुत्री" एवं लखीने राजाने चीठी आपी. हवे ते लखवामां ब्राह्मणें कपट कखुं. जे पुत्र आवे तो पुत्र आव्यो. निह पुत्री, एम वांचे अने जो पुत्री आवे, तो पुत्र, निह पुत्री एम वांचे. एवी युक्ति करी. कह्यं, हे के॥ ज्ञानहीना बहुमत्यां, हृश्यंते हलकारकाः॥ कत्वा हलं यथा राज्ञो, दत्तं लेख्यं हिजेन वे॥ ए वीशमो ॥११॥ अदाता पासें याचना करवी निष्फल थाय ते जपर एकवीशमो हृष्टांत.

॥ हारस्यं गजिचत्रक्रं ह्यितिरिहां दानस्य दृष्ट्वा गतस्तर्जमे स्थितवान् तदा ह करिराट् चिंत्याद्य तं षट्पदं ॥ अत्राजेिक् कथं स्थितोऽिस जड रे दान प्रदा वारणा, स्ते सर्वेषि वने वसंति च गिरौ त्वं तत्र याहि डुतम्॥ १२॥ अर्थः – दरवाजाने विषे चित्रेज्ञं हाथीनुं चित्र जोइने कोइ एक ज्रम र मदगंधने लेवामाटे आव्यो, अने ते हस्तीना गंमस्थलने विषे बेठो य को,गुंजारव करवा लाग्यो ते वखत एक कि मनमां चिंतवन करीने ते च्रम रने कहेवा लाग्यो, के हे मूर्ख च्रमरा, तुं इंहा केम बेठो ठो ? आंही तारो अधि सरशे नहीं. जेमाटे मदने आपे ते ए हाथी नथी. मद आपनारा सर्वे हा यीयो वनने विषे तथा पर्वतने विषे वसे ठे. माटे मदगंधनी इन्ना होय, तो तुं उतावलो त्यां जा कह्युं ठे, के ॥ श्लोक ॥ रे चंचरीक मदलोलकपोलवा सी, नित्तिस्थनागवदनेऽत्र कथं स्थितोऽसि ॥ ये दानदा घनघनाघनघोर शब्दा, स्ते वारणा वरतरा विपिने वसंति ॥ ११॥ इति एकवीशमो हष्टांत ॥ हवे मूर्खनी साथें पंक्तिं वाद न करवा अश्रयी बावीसमो हष्टांत कहे ठे.

॥ मूर्खको पथि गन्नतः कुर्सुंमितं तान्यां पलाश हुमं, दृष्ट्वा विक्त हि पा टलंजडमितकों मूर्ख नो पाटलः ॥ वादं तो कुरुतो जडेन सुकविर्यष्ट्यादि निस्ताडितो, यष्ट्यामुष्टिवशादिमुंचं जड रे नो पाटलः पाटलः ॥ १३ ॥

अर्थः—कोइ एक समयें मूर्व अने पंितत ए बे जए मार्गनेविषे चा त्या. तेटलामां रस्ताने मिषे एक पुष्पयुक्त खाखरानो तृक्त जोयो. त्यारे मूर्व मनुष्य कहेवा लाग्यो, के आ पाडलनुं जाड केन्नं फत्यो फूत्यो है. ते सांजली पंितत बोत्यों के, हे मूर्व ! ए पामल तृक्त नथी पण पालाशतृक्त है. तुं ग्रंजाणे ? तेवारें मूर्वायें कह्युं के तुं ग्रंजाणे. ए पामल हे. एम वा द करवा लाग्या. तेवारें मूर्वाने रीश चडी तथी लाकडी लड़ने पंिमतने मा रवा लागो. तेवारें पंिमत बोत्यों, के मारीश मां. मारना जयथी पंिमत कहे वा लाग्यों के हाहा ए पामलतृक्त है. जेम मुर्खायें कह्युं तेम कन्नुल कह्युं. माटे मूर्वानी साथे वाद न करवो. कह्युं, हे के,॥ श्लोक॥ पलाशं पुष्पतं हथ्या, मूर्खों वदित पाटलं॥ यष्टिमुष्टिप्रसादेन, जो जो पाटलपाटलः॥

जे स्त्री पोताना स्वामीपासे पोतानुं चलण करवानी इन्ना करे तेनी केवी दशा याय ते ऊपर स्त्रीपुरुषनो त्रेवीशमो दृष्टांत कहे हे.

॥ जात्वा स्त्रीं पथिको गृहात्त्रचिता हाये सनीरां नंदीं, दृष्ट्वा साह धवं ममांब्रियुगक्ते रंगोस्ति संगृह्य सः ॥ तस्याः पादयुगं हि कर्षति सरि नीरे गतः सा मृता, न्यस्ता मूढ कृतं किमाह तनुनृन्नष्टापि रंगस्थितिः ॥१४॥

श्रार्थः-कोइ एक पथिकजैन पोतानी स्त्रीने सासरेथी तेडीने पोताने गाम जतो हतो. चालतां थकां मार्गमां एक नदीने पूरें श्रावेली जोइने स्वीयें पोताना स्वामीने कहां के, हे स्वामीनाथ आ माहरा वे पगमां मेंदी लगाडी हे ते जेम धोवाय नही अने मारा पगनो रंग न जाय तेम मुने ते डी जार्ड. त्यारें ते पुरुषे स्वीना वे पग हाथमां लड़ने उंचा राख्या, अने हाथ महोडुं अने नाकने पाणीमां राख्युं एवी रीतें तेने लड़ने जलमां चाव्यो. ते जेवारें नदीने कांहे उत्त लेटलामां स्वीना मोढामां तथा नाक कानमां जल नरवाथी स्वी मरणशरण थइ. तेवारें जेवी रीते मुवेला ढोरने घसर हे, तेवी रीतें घसरडीने तेने बाहेर काढी, ते वखतें नदीने कांहे कोइ मनुष्य कनो रहेलो हतो तेणे कहां के, हे मूर्व तें आ ग्रं कखं? जे माटे आ स्वी तो मरण पामी. तेवीरीतें तुं उंधे माथे प्रहीने जलमांथी केम लाव्यो? ए कहेवो अकार्य कखो ? त्यारे ते पुरुष बोव्यो के, में जे कखं हे, ते जा णीनेज कखं हे केम के स्वीतो मरण पामी तेनो जीव गयो, परंतु तेना पगना मेंदीनो रंगतो लालज रह्यो हे. कहां हे के, ॥दोहा॥ मूढमित मारी प्रिया, गयो नदीने तीर ॥ देखी अन्य नर मांजीयो, कां कीयो जड पीर ॥ र ॥ तेह प्रतें मूढ बोलीयो, कीधो एह प्रकार ॥ जीव गयो पण रंग रह्यो, मु क मन एह विचार ॥ २ ॥ इति त्रेवीशमो हष्टांत ॥ २४ ॥

नाग्य हीनने सर्वत्र इःख थाय तेनो ऊपर चोवीसमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ यीष्मे बच्चरयो वने विवसनः प्राप्तोऽर्चिषा पीडित, श्वायां वीद्य ग तोऽपि बिव्वकतले, तत्के फलं याववत् ॥तत्नुत्वा पततीति चिंतति तदा यामि क नम्नं शिरो, डःस्यो गच्चति यत्र याति तदनु च्चायेव शीघं विपत् ॥ १५॥

अर्थः निर्हेश एक दरी श्री अने वली माथामां टाली पहेली एवो टाली यो पुरुष उसकालनें विषे वस्त्ररहित सूर्यना तापथी मस्तकमां आकुल थयेलो नूख तृक्षायें पीडा पामतो ढतो एक बीलीना फाडनी नीचें उनो रह्यो, त्यां ते बीलीनां फल पहराना जेवां माथाऊपर पड्यां ते फल पड वाथी विचार करवा लाग्यो के, हवे हुं क्यां जाउं माथुं तपवाना इःखथी ज्यारे हुं बीलीना वृद्ध तखे गयो तो त्यां पण मस्तक ऊपर बीलीफल पड्यां, माटें नाग्यरहित जन जे वेकाणे जाय तेनी पढवाडे ढायानी पेवे आपित शीव्रतायेंज आवें हे. कह्यं हे के, ॥ श्लोक ॥ खब्वाटो दिवसेश्वर स्य किरणेंः संताियतो मस्तके, वांढन देशमनातपं विधिवशात् बिव्वस्य मूलं

गतः ॥ तस्योच्चैः पतता फलेन महता नम्नं सशब्दं शिरः, प्रायो गन्नति यत्र नाग्यरहितस्तत्रापदां राशयः ॥ १ ॥ इतिचोवीशमो दृष्टांत ॥ १५ ॥ नाग्यमां न होय तो जद्योगधी पण लान धतो नधी ते क पर जंदरनो छने सर्पनो पचीसमो दृष्टांत कहे हे.

॥हिसः केन करंमकेऽपि ज्ञजगः कुत्पीडितोऽनाशको,रात्रों खादिमकांक्त्या
ग्रु विवरं कृत्वोंद्रस्तन्मुखे ॥ नाग्यादेव तदा स्वयं निपतितस्तन्मांसतृप्तोऽन
वत्, यातस्तेन पथा नृणां स्थिरतरं नोगीव नाग्यं नवेत् ॥ १६ ॥ अर्थः—
कोइएक गारुडीयें एक सर्प्प पकडीमें कंमीआने विषे नांख्यो. त्यां नृत्व अ
ने तरशें पीडा पामतो, ते साप निरास थइ वेवो हतो, तेटलामां एक उं
दरे जाण्युं जे आ करंडीयामां खावानो पदार्थ हे, पकान नस्ता देखाय हे.
एम चिंतविं ते कंरंमीयाने करडी हिइ पाडी, रात्रिने विषे ते उंदर तत्का
ल अंदर पेठो. ते समयें ते सर्पना नाग्यें करीनेज ते उंदर पोतानी मेलें
सापना मुखमां पड्यो. ते उंदरना मांसेंकरी साप तृप्त थयो. अने तेज
उंदरना करेला हीइना मार्गे करी साप बाहेर नीकली गयो. माटे सर्पनी
पेठे जे मनुष्योनुं प्रारब्ध स्थिर होय हे, तेने इःखमां नाखवा हतां पण
सुख थायहे तेथी नाग्यस्थिरता मानीने धेर्य राखवुं कह्युं हे के, श्लोक ॥
चिंता न कार्या पुरूषे, निंगडे पतितैरिप ॥ यद्वाले लिखितं धात्रा, नवेद्वां
जीव नापरम् ॥ १ ॥ इति पच्चीशमो दृष्टांत ॥ १६ ॥
हवे समजण विना स्वेज्ञित उत्तर आपवो नहिं ते ऊपर हवीसमो दृष्टांत.

॥ नला प्रक्वित कार्षिको निजगुरुं वर्षा न वा वर्षति क्षेत्रे ते निश्च विक्त सोपि न परे लात्वा सशिष्यो घटान् कूपान्सिंचित कं पराहि मनुजाः श्रुलेति वार्ती ग्ररोस्ते प्रज्ञंति तथा ब्रविषि वहिस ह्याहुवींनेयास्तदा ॥ २९ ॥ अर्थः—कोइएक करषणी पोताना गोरने नमस्कार करी पूछे हे के हे माहा राज ! वरषाद वरसज्ञों के निहं वरसे जे माटे माहारा वावेला धान्य सर्व स्काइ जायहे त्यारे गोरें कह्युं के, आजें रात्रियें ताहारा खेतरमां वरषाद वरसज्ञों पण बीजाना खेतरनुं हुं जाणुं निहं. पही ते ग्रह रात्रियें शिष्य ने साथे लइ कणबीना खेत्रमां जइ कुवामांथी पाणीना घडा नरी नरीने आ खी रात्र पर्यंत खेतरमां पाणी सींच्युं. तथी सवारमां खेतरनो धणी पोता ना खेतरने देखी खुशी थयो. ए वात बीजा मनुष्योयें सांनली तेवारें तेप

ण तें गुरु पासें आव्या अने तेमज पूर्वजी रीतें गुरुने पूठवा लाग्या तेवा रें गुरुयें पण तेमज पूर्वनी पेठें तेमने कहां. ते सांनजी शिष्यें जाएगुं जे रखेंने पूर्वजी रात्रिनी पेठें आ रात्रियें पण गुरु आपणने घडा वहेवरावे एम जाणी गुरुने कहेवा लाग्या; के हे गुरु! जे कहेगे ते वहेगे, अमा रे कांइ निह. कहां हे के, (श्लोक) कार्यार्थ नोहि बहवो,गुरूं पृष्ठित स्वा थिंगाः ॥ ज्ञानहीनेने दातव्य, मुत्तरं कोविदैर्थया ॥१॥दोहा॥ एकवार कहणे वह्या, हवे ते न वहसी ॥ गुरुप्रतें शिष्यज बोजीया,जे कहसी ते वहसी ॥ हवे जे संपत्तिवान हतां कोइने उपकार करतो नथी.तेनुं इव्य गगुं जाणवुं.

ते विषे जोजराजा अने माघ कवीनो सत्तावीसमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ जोजो विक्त कृती मृदंगक्रवस्यार्थ वदाष्टाह्नि सः, ज्ञातं नान्यजनः क रिष्यसि यदी नारोहणं विने तम्॥ कत्वेशांतगताः किमस्त्ययमतोऽर्थे वह्यति त्वावदत्त्वं गृह्या उपदेशमीश तव नो नो दीयते तद् गतम् ॥२०॥ अर्थः-एक दिवस नोजराजानी पासें नृत्य थतुं हतुं. ते वखते मृदंगनो शब्द सांनली राजा माघ पंमितने कहे हे, के मृदंग बोले हे तेनो हुं अर्थ ? ते कहो. त्यारे पंमिते कद्यं जे महाराज आठ दिवसमां हुं एनो उत्तर कहीश. पढी पंिनतें शास्त्र जोयां. पण तेमांथी ते अर्थ जाएयों नहीं. तेवारें दिजगीर थ यो, एवामां एक ब्राह्मण माघ पंमितने घेर खाव्यो. तेणे पंमितने दिलगी र थयेलो देखीने पूर्वयुं के चिंतातुर केम देखाई हो. तेने माघें कह्युं के महा राज मृदंगना शब्दनो अर्थ ग्रुं? त्यारे ते पंमितने कहे हे के जो मुफने हाथी कपर बेसारी राजा पासें लइ जार्ड, तो हुं एनो अर्थ राजाने कहुं. पढ़ी ते पंमितने हाथी जपर बेसारीने राजापासें लेइ गयो. तेने हाथीयें बेठो देखी ने राजायें पूर्व्युं, के आ ग्रं हे ? त्यारें माघ पंिमते कह्यं जे आ पुरुष तमने मृदंगना शब्दनो अर्थ कहेरो. राजायें ते कबुल कखुं. पढी पंमितें कह्यं के,हे राजन ! आ मृदंग शब्द धम धम एवे शब्दें करी तमने उपदेश आपे हो. के जे कोई राज्यसमृद्धि पामी कोईने न आपे, तो तेनी समृद्धि गई एम स मजबुं. जुर्ड हुं पण फाटल रुपानहतुं दान देवाथ। गजारूढ थयो बुं. ते वि षे श्लोकः - उपानहौ मया दत्ते, जीर्णे कर्णविवर्जिते॥ तत्पुर्ण्येन गजारूढ, स्तक्रतं यन्न दीयते ॥ १ ॥ ए सत्तावीसमो द्रष्टांत ॥ २० ॥

ह्रवे कपटी पासें कपट पण करवो ते कपर अद्वावीशमो द्रष्टांत.

॥ पर्षयन्यकविः करोत्यनिनवं, नोजस्य काव्यं तदा, श्रुत्वाहुश्च पुरातनं कविजना जुपोऽपि किं तेऽपवन् ॥ राज्ञा ते हि तिरस्कृताः प्रतिदिनं वादोऽज वचैकदा, कृत्वा वेधयुतं स्थिताः सितमुखा जक्तं च जात्वा गतः ॥ १ ए॥ अर्थः – एकदा नोजराजानी सनामां कोइएक नवो पंमित खाव्यो, ते कवि नोजरा जानां वर्णननुं नवुं काव्य करीने नित्य आशीर्वाद दीये हे. पण तेना करेला काव्योने द्वेषयी नोजराजाना सनामां बेसनारा कालिदास वगेरे बीजा पं मितो नित्य नित्य प्रत्यें खंमन करी मांखे. अने राजाने कहे के, हे महाराज! या जे काव्य करे हे, ते प्राचीन हे. ए काव्य तो अमने पण आवडे हे. त्यारें राजा कहे के ए काव्य तमें बोलो. तेवारें ते कालिदास वगेरे पंजितो एवा हता के कोइ पण श्लोक एक वखत सांजले तो तेने मुखस्य यह जाय. तेथी ते पंमितना करेला श्लोक पोते जणी आपे. त्यारें राजा ते नवीन कविनो तिरस्कार करी दूर करे. एम नित्यवाद थयां करे तेवारें ते नवीन पं मितें तिरस्कार पामवायी एक दिवस वेधयुक्त काव्य कख़ुं, ते काव्य काजिदास वगेरे पंनितोने नणतां न आव्युं, तेथी तेमने निस्तेज करी राजा पासेथी लक् इव्य लीधुं. ते काव्य लखें हे.॥ नोजत्वं राजराजः क्तितपतितिलको धार्मिकः सत्यवादी पित्रा ते या गृहीता नवनवतियुता हेमकोटघोमदीयाः॥ त्वं ता देहि लदीयेः सकलबुधजनैङ्गीयते सत्यमेतत्, नो जानंति लदीयाः सकजबुधजना देहि जद्दं तथापि ॥ १ ॥ अर्थः-हे नोजराजा ! तुं प्रथ्वी पतिनेविषे तिलकसमान, धर्मिष्ठ, सत्यवादी, अने जोज कुलने शोजावनार एवो हो. परंतु तारे बापें मारी जे नवाणुं करोड सोना महोर लीधी हे, ते तुं आप. ते वात तारा पंमित जनो सत्य जाणे हे. जो तारा पंमितजनो ए वात न जाएता होय, तो पए एक जक्क इव्य छाप. छर्थात् हां कहां जे आ मारो प्राचीन श्लोक होय, तो मने नवाणुं करोड सोना महोर आ प, ने आधुनिक होय, तो लक्ष इव्य आप. ॥१ए॥ ए अहावीशमो द्रष्टांत॥ हवे आ जनमधी रहेलुं रण बीजा जनममां पण आप्याविना बूटको धतो नथी ते जपर एक वैश्य अने बलदनो उंगणत्रीशमो द्रष्टांत कहे हे.

श्लोक ॥ नोजाणे हि विधाय पारनिवकं तैव्यालये च स्थितो, वृत्तांतं प्रतिकर्ण्य सह्यनमुद्दोर्दञ्चा प्रनातेऽखिलं॥गत्वा नोजगृहं समर्प्य सकलं नंमा

रिकानां धनं, तान्त्रोचे तहणं क्मोऽन्यनविकं दातुं न गेहे गतः ॥ ३० ॥ अर्थः-कोइएक वाणीयायें एवं विचाखं जे आ नवमां लीधेखं दीधेखं हो य ते पाडुं परनवमां खेवातुं देवातुं नथी. एवं मानी तेणे नोजराजानी पासे जइने कहां के दुं आवते जनमें तमोने जक्क रुपैया व्याजसहित आ पीश. जो कहो तो खत करी आएं. एम कही खत लखी आपीने राजा ना जंमारमांथी लक्द इव्य लइने घांचीने घेर जइ रात्रियें सूतो. तेवामां अर्दरात्रियें घांचीना बन्ने बलदो परस्पर वातो करवा लाग्या. तेमां प्रथम एक बलइ बोढ्यो के, मारे तो पूर्व जन्मना देणामांथी घांचीने मात्र एक ज त्रांवियो हवे देवो रह्यो हो. ते हुं चार फ़ेरा दइ मरीने हूटीश, अने परनवें सुखी थइश. त्यारे बीजो बोव्यो के, तुजने धन्य हे. मारे तो घांचीतुं पूर्व जन्मनुं एक लक्त इव्य दर्जी आंपवुं रह्यं हे. अने दुं पूर्वजन्मना नोजराजा पासें एक लाख रुपैया मागुं डूं माटे आं स्ततेलो वाणियो जो सवारमां जोजराजानी पासे जइनें कहे के, तमारा पट्टहस्ती साथें आ घांचीना ब लदने लडावो. अने जो बलद जीते, तो घांचीने लक्क रुपैया तमारे आप वा एम करे तो दुं नोजराजाना पट्टह्स्ती साथें ज़डीने तेने जीती घांचीना ज क् रुपैयाना क्रणयकी बुटुं. अने महारुं राजानी कपर खेणुं हे. ते आवी जा य, तो मरीने सुख पामुं. या वात ते वाणीयायें सांचली. पढी सवारना पहोरमां उठी एक त्रांबीयाना क्रणवाला बलदें जेम वात कही हती ते सर्व मलती दी वी. तेवारें विचार करे बे के, आवता जन्ममां देणुं देवुं पडे बे. ए वात नकी हे एम सत्यमानीने पोतें नोजराजानी पासें जइने रात्रिनेविषे बनेद्धं हत्तांत सर्वे कह्युं. वजी कह्युं के, महाराची पण परनवें क्रणुं देवाय नहीं. माटे त मारुं धन पाडुं लेर्र. हुं मजुरी करी पेट नरीश. एम समजावी लीधेलुं ध न पाडुं नंमारीने आपी दीधुं. अने राजायें पण पट्टहस्ती साथें बलदने लडावी घांचीना क्रणथी बोडाव्यो कह्युं हे के ॥ दोहा ॥ इह नव देणुं दो हिलुं, परनव वली विशेष ॥ दृष्टांत सांनली बलदनो, त्यजीयें ऋणो अ शेष ॥ १ ॥ गाथा ॥ दासित्तंदेहि क्रणं, अचिरामरणं वणोवि संपन्ने ॥ सब स्स दाह मग्गी, दिंति कसाया जवमणंतं ॥ २ ॥ ३० ॥

हवे कुजटा स्त्रीने उपकार किर्ये तो पण ते पोताना स्वामीनी याय नहीं ते जपर एक स्त्री पुरुषनो त्रीशमो द्रष्टांत कहे हे. ॥ प्रीत्या तेषि सहत्वयाद्य निधने धह्यामि संकेतकत्, तत्सर्वे रचि तं सुरैर्यदि तंदा ध्रिथे दत्तं स्त्रिये ॥ मुक्ता सापितमन्यपत्तनगता तिस्मन् पुरेऽसो गतः, तज्ञार्या मिलिता तदा च कुलटा स्वार्थे विनानर्थकत् ॥ ३१॥

अर्थः-कोइएक पुरुषे प्रेमें करीने पोतानी स्त्री साथें मांहोमांहे वात करतां संकेत कथा, के जो ताहारुं मरण मारी पहेलां यशे तो हुं तारी पठवाडे सत्तो थश्श. अने स्त्रीयें कह्युं के जो तमो पेहेलां मरशो, तो हुं तमारी पावल सती थइश. ए प्रमाणे निश्रय कखो. ते सर्व वृत्तांत कोइक देवतायें श्रवण कखुं. तेथी ते देवतायें ते स्त्रीने मृतकरूप करी नाखी, त्या रे ते पुरुष सत्तो थवाने काष्ठनी चयमां बेठो, अने अप्नि लगाड्यो. पण देवतायें मेघ अंधारी वरषाद करीने अग्नि उलवी नांख्यो. तेवारें ते पुरुष ब हार आवी बेवो. पढ़ी देवतायें ते पुरुषतुं ऋदि आयुष्य तेनी स्त्रीने आप्युं. त्यारें ते स्त्री त्यांथी पोताना खामीने बोडी समुइपार बीजा नगरमां गई. छने ते पुरुष पण फरतो फरतो तेज नगरमां जइ तेने मत्यो. तेवारे ते स्त्री पोताना घणीने जोइने लाजी. कारण के पुरुषने बोडी ने नागी गइ हती. तेथी त्यां स्त्रीचरित्र करी पोतानुं जुगडुं फाडी बूम पाडी ने कह्यं, जे आ पुरुषे मारी लाज लीधी. ते सांजली त्यांना राजायें ते पुरुषने पकडीने सुली कपर चडाव्यो. एम कुलटास्त्रीयें स्वारथ विना अनर्थ कर्यो. कह्यं, वे के ॥ दोह्रो ॥ उपकार करियें अधिक तर, अयोग न माने एह ॥ अरधुं दीधुं त्रावखं, तेहनी न यइ तेह ॥ १ ॥ इति त्रीशमो दृष्टांत ॥ ३१ ॥ नाग्यमां लख्युं होय तेज मखे हे. ते जपर दिर्शिनो एकत्रीशमो हृष्टांत.

॥ दारिष्ट्रश्रपलान् सदात्ति निगनी सोचिंतयन्मेऽस्तिद्दी,िमष्टान्ने ज्ञिकया स्व सुर्ग्यहगतो चातुश्र द्विन्वता ॥ नक्त्यर्थे पितता ग्रहेपिः चपला स्थाव्यां तदा सुंचित, दला स हालके करं वदित तां रात्रो गता मेऽयतः ॥ ३१ ॥

अर्थः - कोइएक दरिई। प्रति दिवस चोला खातो हतो. एकदा चोला खा तां उनग्यो चोला नावे निहं तेवारे विचारवा लाग्यो के हुं इःखी हुं पढ़ी मिष्टान्ननी इन्नाये पोतानी बेनने घेर घणे दिवसें परोणो थइने गयो. ति हां नाइने जोइने बेन हिंदित थइ, अने नावें करी घरमां चोला हता ते पोताना नाइने जमाडवा माटे तेणे राध्यां. अने जमवाना वखत नाइनी या लीमां पीरस्या. ते जोइने तेना नाइयें दिलगीर थइ कपालें हाथ दइ बेनने कहुं के रात्रिने विषेज आ चोला माहरी पहेलांज तमारे घेर आवेला ज णाय हे ॥ दोहा ॥ में लीधो हे प्रहसमो, चोले लीधी रात ॥ एह्ष्यी जा गो आवियो, बेन थोडेरा घाल ॥ १ ॥ देस तजी परदेस जमे, धरे घणी मन आस ॥ सरज्यो ते नर पामीयें, ज्युं चवले लीधी रात ॥ २ ॥ ३ १॥ हवे जे पाप करीने पण वली पश्चाताप करे तो ते सुखी थाय,नही तो डःखी थाय, तेकपर राजाने मेहेलें जनार बे यामीणनो बत्रशामो दृष्टांत कहे हे.

॥ हम्योरोहणवारितं नृपतिना नृत्यः कथं कार्यतां, वामं गन्नति मुच्य तामिह् गतौ याम्यौ तदा क्रोशितौ ॥ वक्तयेकः किमु मारितोऽपरनरो नीत्या ग्रु मां रक्ततां, गलाघेर्यदि गम्यतां त्वरगते मुक्तः सुखी सोऽनवत् ॥ ३३ ॥

अर्थः—एक राजायें वाडीमां मोहोज कराव्यो. अने पोताना चाकरोने कहां जे, आ मोहोलमां कोइने पेसवा देशो नहीं. तेवारें दरवाने पूर्वा के, कदापि कोइ नूलयी। प्रवेश करे, तो तेने केम करवुं ? तेने राजायें कहां के तेने पण मारी नांखजो. पण मूकशो नहीं.ते सांनजी पोलीयायें फरी थी अरज करी के, हे महाराज ए घणो आकरो दंम हे. तेने राजायें कहां के, ते प्रवेश करनारो जो पाहे पगे उतरे तो तेने होडी मुकजो. एकदा प्रस्तावे कोइ वे यामीण पुरुषो जूलयी कपर चडी गया. त्यारें ते बेहु जण ने राजाना मनुष्योयें पकड्या. तेमां एक पुरुष बहु बोव्यो, तेथी तेने मा खो. अने बीजो पुरुष बीकथी कहेवा लाग्यो के मारुं रक्षण करो. त्यारे राजसुनटें कहां जे तुं पाहे पगे उतरीश तो बचीश ते पुरुषें तेमज कहां. त्यारे राजसुनटें कहां जे तुं पाहे पगे उतरीश तो बचीश ते पुरुषें तेमज कहां. त्यारे राजसुनटें कहां जे तुं पाहे पगे उतरीश तो बचीश ते पुरुषें तेमज कहां. त्यारे तेने मुक्यो तेथी ते जइ पोताना कुटुंबने मत्यो, अने सुखीयो थयो. कहां हे के, श्लोक ॥ पापं कत्वा पुनः पश्चात्, यो निन्दित नरोचमः ॥ स सुखी जायते लोके, यथैको हर्म्यपश्चकः ॥ १ ॥ इति बत्रीशमो दृष्टांत ॥ विचाला विना मुखे जनने वचन आपवुं नहीं ते विषे तेत्रीशमो दृष्टांत.

॥ त्रूपात्रीरसुते सदात्रिरमतोरोदित्यत्रीरांगजा, वक्त्योरोदिषि किं त्रविष्ठ्र रहतः सत्यं धवेको हि नौ ॥ याम्यागञ्चसि विद्सत्तं निश्च सखे मार्गे मिलित्वा गतः, श्रुत्वार्योचलहेतुकां वरमतो झात्वा गता खालये ॥ ३४ ॥ श्रूपंः—एक राजानी दीकरी बीजी श्राहिरनी दीकरी ए बन्ने साहेली हती. ते सा यें मली रमत करे. एकदा श्राहिरनी बेटी रोवा लागी तेने राजानी पुत्रीयें पूरुषुं जे तुं केम रहे हे ? त्यारे ते कहेवा लागी के तुं राजाने त्यां परणी

ने जाइश तिहां तहाराधी बाहेर फराज्ञे नहीं तेवारे मारे ताहरो मेलाप धर्जे नहीं. तेथी मुजने ताहरो विरह धर्जे ते इखधी हुं रहुं हुं. त्यारें राज कन्या कहेवा लागी के, जे ताहरो खामी तेहज मारो खामी हुं करीश बी जाने परणुं नहीं. एवो बोल दीधो हवे एकदा ते आहिरकन्या कोइ नीच वि टल पुरुषनी साथें निकली जवा लागी ते वखतें राजकन्याने कहां जे हुं आती साथें चालीश ? त्यारें तेणें पण पूर्वें बोल आपवाथी हा पाडी; पढ़ी अणें जण मली रात्रियें उठी चाव्यां आगल जतां एक रेंट फेरवनार पुरुषें आंवाना दृष्टांत वाली एक गाथा कही ते सांजली राजकुमारी मनमां सम जीने पाढी वली. ते गाथा कहे हे ॥ दोहा ॥ कालुं वांकुं मुह करी, रचडा थयो अशास ॥ ते फल दीधे कवण गुण, जो फल दिये पलाश ॥ र ॥ सु रतह जाणी सेविड, रे निगुणा पलाश ॥ जब तें मुह कालो कीयो, तब में होडी आश ॥ र ॥ जइ फुला कणिधारया, चूयग अइ मासयिन धुंहिम॥ तुह न खमं फुलेंड, जइ पचंता करिम ममराइ ॥ ए तेत्रीशमो दृष्टांत ॥ नीच जन उंचनी समानता करे तो इःखी थाय तेनो चोत्रीसमो दृष्टांत.

॥ कारण्येऽनिचयाद्वहे पतित वै सिंहादिजन्तुत्रज, शांते विह्निचये हिर वैदित तं पुत्तं गृहाणाशु मे ॥ ते गृएहंति तदा हृताः स्थलचरास्तदा रितं फेरुणा, पश्चानेन कृतं तथापि न हृताः पुत्तं तदा त्रोटितम् ॥ ३५॥

श्रथः—कोइएक श्रटवीने विषे श्रिव्रनो नय उपनो ते नयथी वनमां र हेनार सिंहादिक जंतु उएक उंमा जलना धरामां पड्या. पढ़ी ज्यारें श्रिव्रनो नय निवृत्ति पाम्यो त्यारें सिंहें ते जंतुसमुदायने कह्युं के, मारुं पूढडुं पकडां, हुं सर्वने बहार काढुं. ते सांनली बधायें तेनुं पूढडुं पकडां श्रवे सिंहें फाल मारी ते सर्वने बाहेर काढ्यां ते श्राम्नाय एक शीया लीए धारी राखी तदनंतर वली पण केटलेएक दिवसे दावानलना नयथी सर्वे जंतु उतेहिज जलनां धरामां श्रावी पड्या पण ते वखत सिंह श्राव्यो नहीं त्यारे शियाले कह्युं मारे पुढड़े वलगो हुं सौने बहार काढुं पढ़ी सिंह नी पेठें शियाले बल करी सौने काढवा मांम्यां तेथी ते शियालीयानुं पूढ हुं तुटी गयुं श्रवे सर्वे जीव पाढ़ा पाणीमांहे पड्या माटे नीच पुरुष उंच नी समानता करवा जाय तो इःखी थाय कह्युं हे के श्लोक ॥ श्रात्मवीर्यं न जानाति, दृष्ट्वा दृष्ट्वा करोति यः ॥ स इःखी स्याद्ययापेरु, रुयुट्यत्पुत्ती ह्यघोऽपतत् ॥ ॥ १ ॥ ३५ ॥

हवे मोहोटानी ग्राया पण फल दायक हे तो महोटानी संगती फलदायक होय तेमां तो ग्रं ज कहेतुं! ते जपर एक नरवाडनो पांत्रीशमो दृष्टांत.

॥ ज्युत्वाधो न्यपतन्फलानि सततो दृष्ट्वा तदाचितयद्, गोपो मुर्झि हि खेगमस्य पतिता ज्ञाया वरा बुद्धिदा ॥ श्लोकस्तस्य कृतश्च पादरहितः ज्ञाया गता मो पदं, तादक् तेनहि पूरितं निजधिया मक्केति कुंमालिकं ॥ ३६ ॥

अर्थः—एक क्र्वामां जांबुर्ह्मनां फल टूटी पडतां हतां. ते कोइ गोवा लीये दीवां, तेवारें गोवालीयें चितव्युं, जे आ फल खावा लायक हे. एम विचारे हे, एटलामां तिहां गोवालना माथा जपर सरस्वतीना विमा ननी हाया पडी तेवारें ते गोवालने बुद्धि उपजी तेथी तेणे एक श्लोक नां त्रण पद जोड्यां. एटलामां विमाननी हाया चालीगइ, अने चोथुं पद तो थयुं नहीं. तेवारे तेहज गोवालिये पोतानी बुद्धियी तेहवुंज चोथुं पद रज्युं. ते पद कहे हे डबक अने कुंडालुं. हवे जे श्लोक तेणे रच्यो ते कहे हे ॥ जंबूफलानि पक्कानि, पतंति विमले जले॥ पतितान्ये वहदयं ते, मबक अने कुंमालुं ॥ १ ॥ हायैव फलदा पुंसां, महतां तु विशेषतः ॥ विमानह्वायया वाण्या, गोपो हि पटुतां गतः ॥ १ ॥ ३६ ॥

सिंद्यायी सहु चमत्कार पामे है ते जपर हत्रीशमो द्रष्टांत कहे है.

॥ कोप्यागत्य विशारदो वदित मे विद्यां नृगं पश्य नो, स्त्री मुक्ते शरहे गतो हि गगने मृलापतत् तत्समम् ॥ सा दग्धा पुनरागतो मम वशे त्वं देहि वार्तापि सः, कूटं नोवद चानयामि हि वरं लाला गतो विस्मितः ॥ ३९ ॥ अर्थः—कोइ एक पुरुष पोतानी स्त्रीने लइने कोइ राजाना दर बारमां आव्यो, अने राजाने कसुं के माहारी विद्या जुवो. तेने राजायें क सुं के नले देखाडो. त्यारें ते पोतानी स्त्रीने अंतःपुरमां मूकीने गयो अने कसुं के आकाशमां इंइनी अने दैत्यनी मांहोमांहे लडाइ थाय हे. माटे त्यां हुं जानं हुं एम कहीने गयो पही आकाश विषे जइ मरण पामीने तेना हाथ पग शरीर प्रमुख नीचे पड्यां ते जोइने ते पुरुषनी स्त्री पण पोतानो स्वामी पड्यो हतो तेनी साथें चयमां सती थइ ने बली गइ के तरतज ते पुरुष पाहो राजानी पासें आव्यो अने कहां के माहरी स्त्री आ

पो तेवारें राजायें तेने पाठल बनेली वात सर्व कही, पण तेणे न मानी अने बोख्यों के हे राजन! तुं जुतुं म बोल महारी स्त्री ताहरा घरमांज है. तेने राजायें कहां जो घरमां होय तो लइ आव. तेवारें ते घरमां जइ स्त्रीने लइ आव्यो. ते जोइ राजा तथा सनाना लोक सर्व विस्मयपाम्या. एम विद्यानो चमत्कार देखाड्यो पढी राजायें पण घणुंक इच्च आप्युं. क ह्यं हे के॥ विप्रेण दर्शितां विद्यां, विक्रमः सदसितदा ॥ निरीह्य सुनटाः सर्वं, तदा तस्मै धनं ददौ ॥ १ ॥ इति ह्यीशमो हृष्टांत ॥ ३९ ॥

कपटथीज जारस्त्री पराजव पामें तेनो साडत्रीशमो दृष्टांत कहे है.

॥ श्लोक ॥ नो पुस्नाति पतिं तमाइ कुलटा मेंऽधं करु त्वं सुर, श्रुत्वे तोहविषात तं हि हविषा पीनस्तदंधोऽनवत् ॥ पश्चानोषितुमारःने वदित स पश्यामि नो निर्नया, जुंकेऽन्यैःसह जोगमिस्त बलवन युग्मं गृहीला ह तम् ॥ ३० ॥ अर्थः-कोंइएक विटल जार स्त्री पोताना धणीनुं पोपण करे नहीं. पोतें कुलटा है, तेथी करी तेने पोताना नरतार ऊपर राग न थी. बीजा पुरुष साथे राग जाव राखे हे. एकदा ते जारस्त्रीयें एक यक्त नी पूजा करवा मांमी. अने प्रतिदिन पूजा करीने एवं कहेवा लागी के, हे यक्त ! मारा स्वामिने आंधलो कर. एम नित्य कहे एम करतां एक दि वस तेना नरतारें ते वात सांचली, तेवारें ढल करीने पोतें यक्तनी प्रति मानी पढवाडे जई डुपाइने बेसी रह्यो. अने ते जार स्त्रीयें आवीने ज्यारे यक्तनें कहां के, हे यक्त, तुं मारा स्वामीने आंधलो कर. ते वखतें पाउल बेवेलो पुरुष बोल्यो के, हे स्त्री! ताहारा धणीने तुं मिष्टान्न खवरावे तो श्रांधलो याय. ते सांचली ते स्त्रीयें पोताना स्वामीने घणो घृत खांम श्रने चूरमो प्रमुख मिष्टान्न खवराववा मांमग्रुं. तेवारे तेनो नरतार कपटची आं धंलानी माफक कहे के, हे स्त्री, हुं कांइ चीज देखी सकतो नथी. तेवारे ते स्त्री निर्नय थइ थकी ते विटल पुरुषनी साथें नोगनोगववा लागी. लगार मात्र ते स्त्रीने शंका रही नहीं. एकदा जेवारें तेनो जरतार खाइ पीइने सारी पेवे बलवान थयो, तेवारें ते जार स्त्री तथा जार पुरुष बे जणने पक डीने माखा. कावा कूट्या कह्यं, वे के श्लोक ॥ कयं हसिस नो हंस, नाहं दर्जरवाहनः ॥ कालड्रोवो हि कर्त्तव्यो, घृतांघो ब्राह्मणो यथा ॥१॥३०॥

गुरुयें शिष्यनी परीक्वा करी पोताना पर्दे स्थापवो तेनो आडत्रीशमो द्रष्टांत.

॥ शिष्यान् विक गुरुस्तदाम्रफलिमिन्नाम्यानय त्वं प्टथक्, पारीकृाय निवे दितः प्रथमकोवण् वृद्धता ते गुरो ॥ अन्यो गन्नित शब्दतश्च लघुना गत्वा वि धिं प्टन्नित, त्रैविध्यं इ विनीतकं हि गुरुणा झात्वा स्वदनं पदम् ॥ ३० ॥ अर्थः—एक गुरु पोताने पर्दे स्थापन करवा सारु शिष्योनी परीकृत कर वाने अर्थे प्रथम मोटा शिष्य प्रत्यें बोख्या के, तुं महारे माटे आंबाना फल लावी आप त्यारे ते वडो शिष्य बोख्यों के हे गुरु! तमारी अक्कल क्यां गइ देखाय वे जेमाटे तमोने वृद्धपणामां आम्न खावानुं मन थयुं वे १ प वी बीजा शिष्यने कह्युं के तुं आम्रफल लाव्य त्यारे ते शिष्य आंबा क्षेया माटे चात्यों ते जोइने तेने गुरुयें पावों तेडी लीधो पवी त्रीजा न्हाना शिष्यने केइ आववा कह्युं तेवारें तें शिष्य वंदना करीने गुरुने पूववा लाग्यों के हे स्वामी आंबा त्रण प्रकारना वे. एवं तेनुं बोलवं सांनलीने गुरुयें जा एयं जे आ शिष्य विनीत झानवंत कियावंत वे माटे आपणा पदने योग्य वे. एम चिंतवी ते शिष्यने पोतानुं पद दीधुं. कह्युं वे केश्लोक ॥ परीकृत सर्वसा धूनां,शिष्याणां च विशेषतः॥ कर्त्तव्या गणिना नित्यं, त्रयाणां हि रुता यथा १ गुणहीन स्वीयों घरने हलकुं पाडे तेनो उगणचालीसमो दृष्टांत कहे वे.

॥ लोलामात्यवशाश्चतुर्मुखसमाः श्रुत्वा नृपस्तकृहे, गत्वा पश्यति ताः पतिर्वदित नो मौनं विधेयं तदा ॥ तज्ञोज्ये नृप वर्णिता सुविटका तिस्रो गि रोचुः स्वसः, दृग्यां क्रोशित तूर्यका हि हिसतः प्रोचे न किं कां पयः॥ ४०॥

॥ अर्थः -कोइएक प्रधानने चार स्त्रीं हती ते चारे स्त्रीयो बोबडीयो हती ए वात राजायें सांजली अने विचार कहा के आपणा प्रधाननी चारे स्त्रीयो बोबडी हे ए वात खरी हे के खोटी हे माटे तेनी तपास करुं. एम निरधारीने प्रधानने घेर जोवा गयो त्यारे मंत्रियें पोतानी चारे स्त्रीं होने वा री राख्युं के तमे बोलशो मां मौनपणुं करजो ए वात प्रधाननी स्त्रीं के बूल राखी पही राजाने जमाडवा वडी हुं शाक कहां हतुं. ते ज्यारें राजा जमवा बेंगे तेवारे स्त्रीं हेने हसावीने राजायें कहां के वडी बहुज सारी थई हे एवां वखाण सांजलीने एक स्त्री बोव्याविना रही शकी नहीं. तथी ते तरत बोली के "ए विवयां तो में तिवयां " त्यांतो बीजी बोली के "एविवयां तो तें तवीयां जो मांइंआइयां तेलाइ पइआं" त्यारे त्रीजी बोली के " श्रा

हियांनींगडइत्रां " आवं सांनती राजा हस्यो त्यारें प्रधानें आंख करडी करीने चोधी स्त्रीनी सामुं जोयुं. त्यारे ते बोली के "मइमाए बोयां नहीं, चायां नहीं, मोयां ग्रुं काढीयावो "कद्यं हे के श्लोक ॥ ग्रुणहीनाः सुरूपा श्रु, जवंति गेहजंमनाः ॥ स्त्रियोपि ग्रह्वासिनां, विटका पाविका यथा ॥१॥ जइकजीव होय ते सर्वत्र जड़पणुं पामे ते ऊपर चालीसमो हष्टांत.

॥ यक्ने जिथकरीं निरीक्ष्य करिकेश्यन्नं तदा याचते, तस्मै ते न दुड़ः सक्टिष्धरं दृष्ट्वा इतं तैर्नरेः ॥ घास्यांते हि तथा वदंत्वविषकेषातोषि नो मार्थतां, क्रात्वा स्वावगुणं ललौ व्रतवरं प्रोक्ता नु तेनार्थिका ॥ ४१ ॥

अर्थः कोई एक यक्तनेविषे घणाएक ब्राह्मणो जमवा बेठा त्यां हिरके शी नामा चंनाल आव्यो तेणे अन्न माग्युं. परंतु ब्राह्मणोयें आप्युं नहीं अने उलटा रीश करवा लाग्या, क्रोधायमान थया एटलामां एक सर्प्प नि कथ्या तेने देखीने ब्राह्मणे माखो ते हरिकेशी चांनाले जोयो. तेटलामां एक गोह नीकली. तेने जोइने हरिकेशी मारवा दोड्यो त्यां ब्राह्मणो बो थ्या के, एना मुखमां विष नथी माटे मारशो नहीं तेवारें हरिकेशीयें पो तानो वांक जाएयो. जातिस्मरण क्ञान ऊपन्युं तेथी चारित्र व्रत प्रत्यें लेतो हवो अने एक गाथा कहीने तेणें उपदेश दीधो ते गाथा॥ नहेण होइ सबं, नहं पावेइ सब्र नहं ॥ हिण्ड कन्हो सप्पो, नेरंमो तन्न मुंच दीठो ॥१॥ केटलाएक प्राणीकोइ पदार्थने जोइ वैराग्य पामे ते विषे एकतालीशमो दृष्टांत.

॥ दृष्ट्वेशोप्यतिसुंदरं च वृषचं सोटाट्यते चैकदा, मार्गे सत्करकंमुराह् निजकान कस्यायमुक्तो तदा ॥ प्रोचुस्ते तव चो कमिष्टवृषचं श्रुत्वेति दी नोऽपि सन, वैराग्यं हि विधाय राज्यमिखलं त्यक्त्वा मुनीशोऽचवत् ॥४२॥

अर्थः—करकंतु राजायें अति सुंदर वृषज पोताने त्यां जोइने तेनुं संर क्रण कराब्युं. घणा दिवस वीत्यापढी एक दिवस ते बेलने मार्गमां आर इतो जोइने मनुष्यने कहेवा लाग्यो के, आ कोनो बलद हे ? आनी कोइ संजाल पण केतुं नथी त्यारे मनुष्य बोल्या के हे राजन! आपने जे अत्यंत प्रिय हतो ते बलद आ हे, माटे आप पोतें संजाल न ल्यो तो बीज्ञं कोण के ? आ वात सांजली राजानां मनमां वैराग्य उत्पन्न थयो, तेथी पोतानी राज्यादिक समृद्धि होडी दीक्ता लीधी. रुषिश्वर थयो जाण्युं के आ बलदनी अवस्था ते महारी अवस्था जाणवी आ संसारमां सुख हे ते अहियर हे.

माटे मोह न राखवो ॥ सेयंसुजायं सुविज्ञत सिंगं, जो पासई वसहं घुष्ठ मक्जे ॥ रिदिं श्ररिदिं समुपेईयाणं किलंगरायाविसमिस्क धम्मं ॥ ४२ ॥ एकला रहेवाथीज सुख हे ते विषे निमराजानो बेंहेतालीशमो दृष्टांत कहे हे.

॥ नान्यंगान्नदति ज्वरोऽपि जलना धह्यंति ताश्चन्दनं, शब्दं नो वलया बर्जे सहित स त्यक्ता समं रिक्तं ॥ प्रष्ठस्तेन कथं रवो नवित नो ताः प्रोचुरे कैककं, चिंतत्याबहुतो सुखं मम तदेकाक्यस्ति जातो मुनि : ॥ ४३ ॥ अर्थः-निमराजाना अंगने विषे दाह ज्वर उत्पन्न थयो त्यारें सर्व स्त्रीयो चंदन घसी घसी चोपडे पण साता पामे नहीं. वजी ते चंदन घसतां थ कां कंकण चूडीना खलखलाट याय ते सोहाय नहीं, तेवारें ते स्त्रीयोयें मांगलिकार्थ एक एक चूडी राखी बाकी सर्व काढी नांखी तेथी शब्द थातो बंध पड्यो. ते जो इराजायें पूरु के शब्द केम थातो नथी ? स्त्रीयोयें कहां के मांगलिककार्ये एक एक चूडी राखी तेथी शब्द थातो बंध थयो. आ वात सां नली निमराजायें विचाखुं के एकाकी रहेवे जेवुं सुख हे तेवुं जाजा मन ष्योधी सुख नथी. माटे जो आ ज्वर मटे तो माहरे दीहा यहण करी ए कड़ुं विचरवुं एम धर्मध्यान ध्यावतां ज्वर शांत थयो के तुरत ते रुषीश्वर एकाकी विचरी मोक्तने पाम्यो. कहां हे के गाया ॥ वलयाण सहं सुणति राया, पञ्चा असदं तह जाणईया ॥ रिदिं अरिदिं समुपेश्याण,विदेहराया विसमिरकधम्मं ॥ १ ॥ दोहा ॥ चंदन घसतां चूडीनो,श्रवण शब्द न सुहा य ॥ एक रखावी चिंतव्युं, बहु मिलयां इःख थाय ॥ २ ॥ राज ऋदि सब परिहरि, लीधो संयम जार ॥ पारिखुं तव इंडे कखुं, न चव्यो निम लगार ॥ बीजानी देखा देखीयें पोतानुं गमाववा कपर त्रेतालीसमो दृष्टांत.

॥ विंदिन्नःस्वनरस्तरं यदि वने देवेन तद्दारितो, ऽन्नार्थी मार्गयतीह देह्य डदजान दनं वरं गन्न नो ॥ गेहे दंतिजना विलोक्य धनिना एष्टः कुतस्तान यो, प्रोचे तत्र गतः सितायहपृतं तस्यास्तु मुक्तः सतं ॥४४॥ अर्थः—को इ एक दारीड़ी ड्वेल पुरुष वनमां लाकडांनी नारी लेवा गयो तिहां जइ एक सारुं वृक्त देखी तेने वेदवा लागो. तेने ते वृक्तनो कोइ अधिष्टायिक देव त्यां अदृष्ट रहेलो हतो तेणे कह्यं के आ जाडने कापीश नहीं. त्यारे ते दारिड़ी पुरुषे कह्यं के हुं नूख्यो हुं माटे मने खावानुं आप. देवें कह्यं के तुं माग जे जोश्यें ते हुं आपुं. तेणे अडदनांढोकलां माग्यां त्यारें देवें

ढोकलां नु वरदान आप्युं पढ़ी ते कठीआरे घेर आवीने ढोकलां खावा मांम्या तेनुं सर्व कुटंब नित्य ढोकलां खाय ते जोइने तेना पड़ोसी व्यव हारियायें, पूढ़युं के तुं प्रतिदिवस अडदनां ढोकलां क्यांथी लावी खाय हो तेवारे ते गरीब पुरुष बोख्यों के वनमां काष्ट कापतां माहरी कपर देव ता प्रसन्न थयों तेणे वरदान आप्युं हे तेथी नित्य प्रत्ये ढोकलां खाइयें हैयें ते सांजली ते पड़ोसी पण तिहां गयो कुहाड़ों लइ हाथ उंचों कीधों के तरत तेने देवतायें यंजी राख्यों ते कोइ रीते हुटी शके नहीं पढ़ी जे वारें घरनुं घृत पड़ोसीने आपवा कबुल कखुं तेवारें देवतायें ते व्यवहा रियो मूक्यों ते पुरुष पात्रों घेर आव्यो. अने घरनुं घी पण खावाथी चुकों स्त्रीये पूढ़गुं तेवारे तेना घणीये कह्यं के घरना घृतमां साकर घालीने खा. ॥ दोहा ॥ ढोकल खातां देखीने, होंस हुइ मनमांय ॥ छेइ कुहाड़ों वन गयो, सुर यंजी तसकाय ॥ १ ॥ विनिता सुरसु वीनवे, घणीतें कचपच की य ॥ ढोकल तो पाम्यां नहीं, घरना चूका घीय ॥ २॥ इति त्रेतालीसमो दृष्टांत ॥ जे सुधर्मी होय ते खोटी वस्तु आगल न करे ते विषे चुम्मालीशमो दृष्टांत ॥

॥ दृष्ट्वानीकममात्यमाह नृपतिः कस्यास्तिशीर्यं बले, इात्वेनस्य तदा मृगा दिपपदे लारोपिताः स्वामिना ॥ बद्धा रुत्रिमका सटा वलमुखेः संस्थापितस्तं ग्रुन, स्तत्रागात् नषतीति पृष्ठचरणान्यां सोपि नष्टोऽधमः ॥४५॥ अर्थः— कोइ एक राजाना देसमां तेनो इशमन राजा कटक लक्ष्ते देश नांजवा आव्यो तेने जोक्ष्ते राजायें मंत्रीने पुरुष्टुं के हे मंत्री सैन्यमां वधारे बल कोनुं होय ? त्यारे मत्रीयें कह्यं के सैन्यमां हस्तीनुं बल वधारे होय. राजा कहे एक सिंह कारिमो करग्रुं एवं विचारीने सिंहने स्थानके एक कूतराने थाप्यो पत्नी तेने कारिमो केसरा टोप बांधीने सैन्यने मुखें कह्यो अने पारुलयी राजा कटक लक्ष्यो ते जेवारे वयरी राजाना कटकनी साहामो आव्यो तिहां ते वयरिना कटकमां आगले मुखमां गजघटा दीनी ते जोइ कूतरो नसीने पारुले पगे नासवा लाग्यो पत्नी जेम सेन्य सा मुं आवे तेम तेम पार्रे पगे कूतरो चालतो जाय अने नसतो जाय रे मा दे सुधर्मी पुरुष खोटी वस्तुने आगल नकरे कह्यं हे के श्लोक ॥ आवक्ष कित्रमग्राविकटाग्रुनिक, रारोप्यते मृगपतेः पदवीं यदि स्यात् ॥ मनेनकुं नतटपाटनलंपटस्य, नादं करिष्यति कथं हरिणाधिपस्य ॥ १ ॥ ४५ ॥

बांमी गदेडीनी हरियालीना अर्थनो पीस्तालीशमो दृष्टांत कहे हे.

॥ चूपः प्राह् ददामि यो मम सुताप्रश्नोत्तरं दास्यति, राज्यार्ध तनयां च तस्य यदी नो शूलिं च दत्तावुनौ ॥ दष्ट्वैकेन कता प्रहेलिकवरा मेथी प्रदत्तं त्रिये, गला बंडखरी विवाह्य नृपजां राज्यं च लाला गतः ॥४६॥ अर्थः-को इं एक राजा सर्वेने एवं कहे के मारी दीकरी जे प्रश्न करे ते प्रश्नोनो जे उत्तर आपे तेनें मारुं अर्धु राज्य आपुं अने वली मारी दीकरी पण प रणाकुं अने वादकरतां जो उत्तर न आपे तो तेने ग्रुलीयें चडाबुं. एवी प्र तिक्वा करी अने ते प्रतिक्वाची कोइ के पुरुषने तो ग्रूजीयें पण चंडाव्या. ए वामां कोइ एक रजपूत पोतानी स्त्रीने आणु करवा जाय हे तेएो ते बे पुरु पने ग्रूजीयें चडाच्या जोइने एक हरियाजी जोडी पोतें कुंवरीनी आगज गयो जइने ते हरियाली कही अने विचारीने कुंवरीने कहेवा लाग्यो के हे कुं वरी! ताहरी हरियालीनो अर्थ तो बांमी गधेडी. पण माहरी हरियाली नो अर्थ तुं कहे तेवारें राजायें जाएयो जे महारो अर्थ तो एए। कह्यो एम समजीने राजायें तेने कन्या तथा अडधुं राज्य आप्युं ते पुरुष राजने तथा वे स्त्रीउने लइ चाल्यो. हवे राजपुत्रियें पूर्वेली हरियाली कहे वे ॥ हुतो तेवारे खाजे नहीं, न हुतो तेवारें खाजे ॥ ए हरियालीनो अर्थ क हें, तेहने राजपुत्री ढाजे ॥ र ॥ करी करम तो एक तेम बीजी, करी क रमतो हे तेम त्रीजी ॥ राणी कंकण शीतल थाज्ञो, कश्क रंक जपर काग डा वासे ॥ २ ॥ आंखमांही पांख वीआइ, ग्रुली दीधुं पाणी ॥ ताहरी हरि श्रालीनो श्ररथ बांडी गधेहडी, माहरो श्ररथ कहे राणी ॥ ३ ॥

ह्वे बुिंद्यी शशलायें सिंहने माखो एवो वेतालीशमो दृष्टांत कहे वे

॥ जीवान् हंति हिस्तदा वनचराः प्रोचुः किमर्थं हरे, प्रत्येकोप्यपरे वरं हि शशको वस्त्रे विलंब्यागतः ॥ रुष्टो विक्त सुरे वने तव रिपुर्ना दर्शये हिन्म तं, कूपे स्वं प्रतिबिंबमी ह्य पतितस्तेना सु बुद्धा हतः ॥ ४९॥

अर्थः—एक वनमां एक सिंह हतो ते घणा जीवोने मारे हे ते जोइ बधा वनचर जेला थइ सिंहने कहेवा लाग्या के हे वनचर! तुं जो नित्य जीव हिंसा करे नहीं तो अमें तुजने प्रत्येक दिवसें एक जीव आपशुं त्यारे सिं हे हा पाडी पढी बधाये वारो काढ्यो ने जेनो वारो आवे ते नित्य तेनी पाशे जाय एम करतां एकदा कोइ शशलानो वारो आव्यो. ते शशलो घ णो असूरो विलंबें गयो. त्यारे क्रोधायमान घइ सिंहे शशलाने कहां कें तुं केम वेहेलो आव्यो नहीं ? त्यारे शशलें कहां के हे वनराज! ताहरों शत्रु बीजो सिंह वनमां आव्यो हे. तेणे मने आववा दीधो नही तेषी हुं रोकायो, तेने सिंहे कहां जे मारो इशमन बताव्य. तेवारें सिंहने पोता नी सार्थे लड़ वनमां एक जल नरेल कूवो देखाडगुं के जो तारो शत्रु आ मां बेहो है, पही सिंहे कूवामां जोगुं त्यां प्रतिबिंब रूप बीजो सिंह जो वामां आव्यो, तेने जोइ सिंह कूवामां पड्यो ने मरण पाम्यो. एम बुद्धि ये करी शशलायें सिंहने मास्रो कहां है के, श्लोक ॥ बुर्दियस्य बलं तस्य, निर्वुदेश्व कुतो बलं ॥ वने सिंहो मदोन्मत्तो, शशकेन निपातितः ॥ १ ॥ हवे कविनी चतुराइनो सुडतालीशमो दृष्टांत कहे हे.

॥ व्युष्टे याति कविः करेण पितना कूच्यों यदा कर्ष्यते, केशोपि स्वकरें विलोक्य कथितो निर्नाग्य लाह्यैककं ॥ सोविक्कं हि करे ददासि तव मे ना ग्यं तदा ज्ञायते, तुष्टः सन्कलयन् ददाति कवये कृत्वेशकाव्यं गतः ॥ ४०॥

श्रर्थः-एक दिवस प्रजातनेविषे एक पंक्ति राजानी सजामां याचना माटे खाव्यो. राजाने एवी प्रतिका हती के कोइ याचक खावे तेवारे पो तानो जमणो हाथ दाढी जपर फेरवे अने जेटला केश हाथमां आवे ते टली शोनामोहोर तेहने आपे. आ पंमितनी वखत राजानें दाढीनो ए कज केश दायमां आव्यो त्यारे राजायें कवीने कहां के दे निर्जागीना शे खर तुं एक सोनैयो खे. पंिनतें कह्यं के स्यामाटे ? तेवारें राजायें कह्यं के महारा हाथमां एकज वाल आव्यो माटे एक शोनामोहोर ले जो घणा केश आवत तो घणा शोनैया आपत. ते सांनली कवियें कह्यं के तमारी दाढी मारा हाथमां आपो तो मारुं नाग्य जणाय आ प्रमाणे प्रसंगोपात श्रवसरतुं वचन सांनली तेनें पंिमत जाणीने राजा ख़ुशी थयो पढ़ी सं कब्प करवा ब्राह्मणे हाथमां जल लीधुं ते जलमां जोतां जोतां राजाना वर्णननां सो काव्य कह्यां. अने राजा पासेथी घणुं इव्य जइ गयो ते का व्यमांथी वे त्रण श्लोक उदाहरण माटे इहां लखीयें हैयें ॥ मालिनी ह त्तम् ॥ निवसतु तव गेहे निश्रला सिंधुपुत्री, प्रविशतु जुजदंमे चंमका वैरिहंत्री॥ तव वदनसरोजे जारती जातु नित्ये, न चलतु तव चित्तात् पादपद्मं मुरारेः ॥ १ ॥ अनुष्ठुपवृत्तम् ॥ त्वदीया दंष्ट्रिका राजन्, मदीये च करे जवेत् ॥ त दा नाग्यमनाग्यं वा, ज्ञायते स्फुटमेव च ॥ २ ॥ यो गंगामन्तरत्त्रेव यमुनां यो नमेदां शमेदां, का वार्ता, सिदंबुलंघनविधेर्पश्चार्णवांनीर्णवाम् ॥ सो जन्माकं चरमाश्रितौऽपिसहसा दारिइ नामा सखस्त्वदानांबुसरित्य वाहलह री मग्नश्च संना्व्यते ॥ ३ ॥ इति सडतालीशमो दृष्टांत ॥ ४० ॥

हवे असंतोषी जपर अडताजीशमो द्रष्टांत कहे वे

॥ इंगे कुत्र जटी स्थितः प्रतिगृहस्यात्त्याग्रु निक्कां दिने, प्रक्षत्यत्र ग्रुनं जना मम ग्रहादायाति नो वा तदा ॥ सोऽवज्ञुष्ठजना वदंति सकलाः किं मे ग्रहात्रागतं, तेषां तेश्व महोदरंनिरंभि इात्वेति निष्कासितः ॥ ४ए ॥ अर्थः—कोइ एक नगरने विषे एक सन्यासी महीमां रहे हे. ते प्रतिदिन घर घरषी निक्का मागी लावीने खायहे एकदां सर्वजणे मली तेने पूहणुं के महाराज कोइने त्यांची निक्का आवे हे के नथी आवती? सहुलोक तमारी खबर लीये हे के नथी खेता? त्यारें मांहाराजें कहां के लोक छुष्ठ थया हे. निक्का कोण आपे? त्यारे ते सर्वलोकमांची एकक पूहवा लाग्यो के माहाराज अमारे त्यांची निक्का नथी आवती? त्यारे सन्यासी बोव्या के हा बाबु तेरे घरकी निक्का तो आती है. तेमज बीजायें पूहणुं त्यारें तेने पण एमज कहां एम जेणे जेणे पूहणुं ते सर्वेने एमज कहां त्यारें लोकोयें जाणुं के आ निर्णणो पेटजरो देखाय हे. खातां पीतां पण कोइनुं सारूं बोलतो नथी माटे ए असंतोषी हे. तेथी एने बाहेर काहवो जोइयें एम चिंतवी ते ने गाम बाहेर काह्यो. कहां हे के ॥ श्लोक॥ इःखिताःसंति संसारे,जीवाः संतोषवर्जिताः ॥ संतोषरहितो मत्यों, इंगान्निष्कासितो जटी॥ ४ए ॥

हवे नाववंदननी कपर साम्बकुमारनो उगणपचासमो दृष्टांत.

॥ रुष्णो विक्त सुतौ ददामि जवमादौ ये जिनं वंदते, तत् श्रुत्वा सुतपा तकौ जिनतटे गत्वालयं शंबकः ॥ श्रद्यादाश्वमिमं प्रदेहि मम नो एष्ठे जिने नेमिना, इव्यात् नावफलं मतं तु हरिणा शंबस्य दत्तोऽश्वकः॥ ५०॥

अर्थः-एक दिवस श्रीकृष्ण पोताना पालक तथा सांब नामना पुत्रने कहे हे के, जे श्रीनेमिनाथने प्रथम जड़ने वांदे तेने पाट घोडो आपुं, ते सांजली पालक नामना पुत्रें रात्रि लड़ने तरत जड़ श्रीनेमिनाथ जगवान ने वांद्या अने सांबकुमारे तो पोताना घेर सुतां थकांज जाव वंदना करी. पढ़ी पालकें श्रीकृष्णने आवी कह्यं के मने अश्व आपो तेने श्रीकृष्णें कह्यं

के हुं नेमिनाथने पूठीने आपीश त्यारकेडें तेणे नेमिनाथ जगवानने जइने पूठां के महाराज प्रथम कोणे आपने वांद्या ? जगवानें कहां के इव्य वं दन पूठों को जाववंदन पूठों हो ? त्यारे श्रीरुष्णे कहां के जेमां लाज होय ते पूछुं छुं त्यारे श्रीनेमिनाथे कहां के जाववंदन उत्तम हो माटे जावथकी प्रथम मुने सांबकुमरें वंदन कहां हो. ए वात सांजली श्रीरुष्णे सांबने पटाश्व आप्यो, कहां हे के श्लोक ॥ जाव एव मनुष्याणां, कारणं सुखड़ खयोः ॥ एष्ट्रा नेमिं च रुष्णेन, रुतं यहत्स्वपुत्रयोः ॥ र॥ इति हष्टांत ॥ ५०॥ हवे लोकोना बोलवानुं प्रमाण नश्री ते कपर पचासमो हष्टांत कहे हो.

॥ अश्वस्यं जनकं सुतं विचर्तं प्रोचु विंशोऽधोव्रजा, श्वारूढं कुरु पुत्रकं कतमतो दृष्ट्वाच पुत्रं तथा ॥ आरूढीपिथ गन्नतौ जडिंघयो ताद्वर्य हिकिंमार्य तां, पद्मग्रांकायमितस्तदास्यचयतो मध्ये हि किं वास्यतां ॥५१॥ ंश्रर्थःकोइ एक पिता पुत्र बेहुजए। अश्व लड़ने जाय है, रस्तामां बाप घोडा जपर बे वो, अने पुत्र आगल चाले हे त्यारे सामा मलनार लोकोयें कह्यं के आ पोते घरडो थइने घोडे चड्यो जाय हे अने बालक चालतो जाय हे त्या रे पितायें बालकने कह्यं के तुं घोडे बेस. पठी ते बालकने घोडे बेठेलो जोइने सामा मलनार लोको कहेवा लाग्या के पुत्र घोडे बेवो वे ने घरडो बाप चालतो जाय हे ते सांचली बेहु जए घोडा उपर बेहा त्यारें लोको यें कह्युं के आ बाप दीकरों वे जए घोडा उपर चढी बेठा है ने बिचारा घोडाने मारे हे. ते सांजली घोडाची नीचें कतरी बेहु जएो पगें चालवा मांमधुं त्यारे लोकोयें कह्यं के तमे मोहोटा मूर्वा देखां ड हो. जे माटे शा ये घोडो ययो है अने पोते पाला कां चाव्यां जार्ड हो घोडो फोकट चा व्यो आवे हे ते हुं तमने इध देशे ? आ उपरथी जणाय हे के लोक ते बोक हे जेम गमे तेम बोले ए लोकोनो स्वनावज हे जगतनो बोलवानो नियम नथी कद्युं हे के श्लोक ॥ सर्वथा खहितमाचरणीयं, किं करोति हि नरो बद्धजल्पः॥ विद्यते च निह्न कश्चिष्ठपायः, सर्वलोक परितोषकरोयः ॥१॥ हवे असत्य बोलवाथी नरकें जवाय ते जपर एकावनमो दृष्टांत कहे है.

॥ तान् संपाठ्य परीक्षणं गणिवरः कत्वा त्रयाणां मृतो, वादं पर्वतना रदो च वदतो राज्ञः सनायां गतो ॥ ज्ञात्वा सत्यदृढंवसुं नरपतिं मात्राय द्वात्विक तो, मिष्टं वाक्यमतो गतः स नरके मृत्या नृपः सप्तमे ॥५१॥ अर्थः— खीर कदंबक नामना उपाध्याय एक पोतानो पुत्र पर्वत, बीजो नारद श्र ने त्रीजो वसुराजा ए त्रण शिष्योने जणावीने पोते मरण पाम्या पठी वसु राजा पोताना बापनुं राज्य पाम्यो श्रने नारद विद्याधर थयो तथा पर्वत पोताना बापनी गादीयें बेठो. एकदा पर्वत श्रने नारदने श्रज शब्दनो वाद थयो, ते बे जण पोतानो वाद मटाडवा पोतानी साथें जणनारो वसु रा जा हतो तेनी सजामां गया ने कह्युं के, श्रज शब्दनो शुं श्रथ ? त्यारे पोता ना उपाध्यायना पुत्रनी माताना श्रायह्यी वसुराजा मिश्रवचन बोव्यो के श्रज शब्दना वे श्रथ ठे, तेमां एक तो त्रण वर्षनी जुनी शाजने पण श्र ज कहे ठे श्रने बीजो श्रथ बोकडो पण थाय ठे. श्रावुं मिश्र वचन बोल वायी ते राजाने देवताउंचें सिंहासनथी उंधो पाड्यो ते मरीने सातमी न रकें गयो. कह्युं ठे के ॥ परोपरोधादित निंदितं वचो, ब्रुवन्नरो गन्नति नारकीं पुरीं ॥ श्रनिंदनुत्तोपि गुणी नरेश्वरो, वसुर्यथाऽगादित लोकविश्रुतः॥ १ ॥

पंभितनां इर्जेक्कण पण ढंकाय हे तेनो बावनमो दृष्टांत कहे हे.

॥ जातो माघग्रहे सुतो हि हरने पित्रा सुतः पाठितो, नोजश्रीसदने गतो निशिहरो गृहन् धनं जागृतः ॥ शघ्याऽधो नृपतेः स्थितश्च स तथा काव्यं नृपोऽवक्तदा, झाला गर्वेथुतं हि तेन पदतुर्येणेश्वरो बोधितः ॥ ५३॥ अर्थः— माघपंिक्तने घर चोर नक्त्त्रमां पुत्रनो जन्म थयो, पठी ते पुत्रने पितायें निदान शास्त्र एटखे चोरी कीधे महापाप छे एवा निदान शास्त्र नणाव्यां तो पण ते पुत्रनो चोर नक्त्त्रमां जन्म होवायी ते पंिक्त पुत्र नोजराजाने घेर जह धनना जंकारमां पेठो, ने धन खेवा लाग्यो, तेमां एक लीये अने एक मूके तेटलामां जंकारनो रक्त्क जाग्यो तेने जोइने राजाना ढोलीया नी चें पंिक्त पुत्र रक्त्कना जयथी संताणो, सवारनो वखत थवाथी राजा जा ग्यो अने बंदीजन बिरुदावली बोलवा लाग्या त्यारें राजायें एक काव्य क रवा मांक्युं तेनां त्रण पद कखां ते त्रण पद सांनलीने पंिक्त पुत्रें जाष्युं जे राजा अहंकारें चढ्यो छे तेथी ते चोधुं पद बोव्यो, ते पद सांनली रा जा प्रतिबोध पाम्यो. हवे जे काव्य पंिक्त पुत्रें कह्युं ते लखे छे ॥ चेतो हराः युवतयः स्वजनोऽनुकूलः, सद्दांधवाः प्रणयगर्निरश्च नृत्याः ॥ वह्गंति दंतिनवहास्तरलास्तुरंगाः, सम्मीलने नयनयोर्नहि किंचिदस्ति ॥ १ ॥

हवे स्वीवशपड्यो ग्रुं ग्रुं न करे? ते जपर त्रेपनमो दृष्टांत कहे हे.

॥ प्राक्षेशप्रमदे मिथोऽपि वद्तोवश्योस्ति मे वक्षजो, नान्यं दशयिति ह क्षेन च पति शंसा म्रिये चेत्कथं॥ जीवेऽश्वीयिपरोहणं यदि तथेशोकं च कुर्यो कृतं, तदृष्ट्वा परया पतेः समकचा मुंमापितास्तेतदा ॥५४॥ जानी स्त्री अने कालिदास पंमितनी स्त्री ए बेंद्वनें मांहो मांहे बेनपणुं हे. एक दिवस ते बेहु जणीर्ड परस्पर कहेवा लागी के मारो धणी मारे वश वे, त्यारें पंमितनी स्त्रीयें कह्यं के तारो पित केवी रीते तहारे वश वे ? ते मु जने देखाड. राणीयें कह्यं जे जेम तुं कहे तेम देखाडुं तेवारें पंितनी स्त्री बोली जे ताहरो स्वामी अश्व घाय ने तुं तेनी कपर चहे तो तुजने धणी वश करवामां कुशल मानुं, तेवारें राणी मिश करी जांगा त्रुटा खाटला छ पर पड़ी अने कहेती हवी के काल छं अवटाय हे महं हुं. एवामां राजा तेनी पासें आव्यो अने पूछ्युं के हे राणी! आम केम सूती हो ? तेवारें राणी कहे हे के वात कहेवा जेवी नथी, पण राजायें हह जीधो जे तेवात म ने कहे त्यारें राणीयें कह्युं जे तमो घोडानी पेतें वांसाजपर पलाण बांधो तेनी जपर हुं स्वार थाउं अने तमने सात चाबुक मारुं तो हुं साजी थाउं, राजायें ते सर्व कीधुं राणी स्वार थइ पुंठ ऊपर सात चाबका माखा ते सर्व चरित्र पंमितनी स्त्रीयें दीतुं, पत्नी राणीयें कह्यं के ताहरा धणीनी मुझ दाही अने मार्थु मुंनावीने सनामां मोकल तो तुजने खरी मानुं त्यारे ते स्त्रीयें पण पंमितने तेमज करी सनामां राजा पासें मोकत्यो ते राणीयें दीवो पढी राजायें पुरुषुं जे कये तीरथे मुंमन कराव्युं? त्यारे कालीदास पंमितें तेनो उत्तर खाप्यों ते श्लोक ॥ कालिदास कविश्रेष्ठ, कुत्र पर्वणि मुंमनं ॥ खनश्वा यत्र नेष्यंति,तत्र पर्वणि मुंमनम् ॥ १ ॥ किं करोति नरः प्राङ्गो, स्त्रीवाचा प्रे रितो नरः ॥ अश्वरूपी नवेडाजा, मंत्री मस्तकमुं मितः ॥ २ ॥

जेतुं वचन गयुं ते मुखा सरखो जाएवो ते जपर चोपनमो दृष्टांत.

॥ दृष्ट्वाकाकमितं हि मार्गित नृपो बाणं विज्ञेनानितं, पुंखित्वा सुबिते मुंचित यदा काकस्य लग्नं दृढं ॥ प्राप्तोऽधो बिलि छक् तदाह नृपितं नाहं मृत स्त्वं मृतो, वाक्यं ते नरनूषणं गतमतो धिग् जीवितं तस्य तु ॥ ५५ ॥

अर्थः कोइ एक राजा वृक्तिचि बेवो हतो, तेवामां एक कागडो वृक्त कपर बेसीनें बोलवा लाग्यो त्यारें राजायें पोताना चाकरने कहा के खड़ जाव काकने हुं मारुं एम कही ढानी रीते समस्यायें एक बांण धनुषमां संयोजित करी राख्यो ते वात कागडायें सांजली अने विचार कखो के ए राजा खड़ लक्ष्ने मने मारवा जाड कपर चढशे तेवामां हुं गड़ी जाइस एम विसवासें रह्यो तेवामां राजायें तेनी कपर जोरची बाण फेंक्युं, ते कागडाने सूधो लाग्यो तेथी तरफडतो थको तरत नीचें पड्यो अने मरण थवानी तेयारीमां आव्यो तिहां मरतां मरतां कहेवा लाग्यो के हे राजा हुं मरतो नची पण तुं मरे हे कारणके मनुष्यनो जूषण रूप जे वच न ते वचनची तुं चूको हो माटे जे पुरुष पोतानुं वचन गमावीने जीवतो रह्यो तेना जीवितव्यने धिक्कार हे जेनुं वाक्य गयुं तेनो जीव रह्यं तो पण मुवा सरखोज जाणवो कह्यं हे के श्लोक ॥ असारः सर्वसंसारो; वाचा सारस्तु देहिनां ॥ वाचा चंचितता यस्य, सुरुतं तेन हारितम् ॥ १ ॥ मिग्गयं खग्ग फलयं, कागदेसेण संधिंचे बाणो ॥ सुंदमूचे ण काग, मूआ ते वयण चूकाचे ॥ १ ॥ ए चोपन्नमो हष्टांत ॥ ५५॥

हवे पांमवोनी तृषानो पचावनमो दृष्टांत कहे हे.

॥ सत्रे पांडुसुताः सरोपि तृषिता दृष्टाच्धिसंख्यागताः, तत्राहार्पय मे सरः पिव मिरष्यस्युत्तरं नो जलं ॥ पीलाहुश्च प्रयक् तद्यमवदिन्नश्चेष्टितास्ते ऽजवन, दलार्थं हि युधिष्ठरः प्रतिसुरं जीवापयत्याद्य तान्॥ पद्द॥ अर्थः—वनमांहे पांचें पांमवोने तृषा लागी तिहां पाणी जोतां घणुंज वेगलुं एक सरोवर जलें पूरित दीतुं. तेवारें पांच नाइन्नमांथी एक नाइ पाणी पीवा त या बीजा नाइने सारु पाणी लेवा माटे गयो. ते तिहां सरने विषे जइ पाणी पीवा लाग्यो. तेवारें ते सरोवरनो अधिष्ठायक एक देवता बोत्यो के, जो महारा प्रश्ननो नित्त हों तु तु तु तु नु नित्त अपीत्रा. तेवारें क्लं के एकवार मने पाणी पीवा दे, पठी हुं तु कने नित्त आपीत्रा. तेवारें देवता बोत्यो जो नित्तरं तेने देवतायें मृतक करी नाख्यो हवे तेने पानुं आवतां घणो वख त लाग्यो तेवारें बीजो नाइ आव्यो. एम एकेक केंडे चार नाइने आव्या ते चारेने पूर्वनी पेरें मृतक करी नांख्या. तेवारें राजा युदिष्ठिरं जाण्युं के, जे जाय ने ते पान्न आवता नथी. माटे ए शी बला ने ? तेथी युदिष्ठिर पोतें त्यां आव्यो त्यां जूवे तो चारे नाइने मृतप्राय दीना. अने पोतें जल पी

वा बेवो तेने देवतायें प्रश्ननो अर्थ पूठ्यो अने कहां के एनो अर्थ कहे तो ताहरा चार जाइ पण जीवता थाय अने तुं पण पाणी पीये. ते सांजली राजा युधिष्ठरें कहां के बोल तहारे द्यं पुठवुं हे? तेवारें देवतायें प्रश्न कहां तेनो अर्थ धर्मराजायें कहाो. तेना श्लोक कहे हे॥ को मोदते किमाश्रयें, का वार्ता कः पथः स्मृतः ॥ एतन्मे ब्रूहि राजेंड, मृता जीवंति पांमवाः ॥ १ ॥ हवे चारे प्रश्ननो उत्तर कहे हे ॥ पंचमेऽहिन षष्ठे वा, शाकं पचित स्वग्रहे ॥ अनुणी चाप्रवासी च,स वारिचर मोदते ॥ १ ॥ अहन्यहिन जूतानि, गज्ञंत्येव यमालये ॥ शेषा हि स्थातुमिन्नंति, किमाश्रयंमतः परं ॥ ३ ॥ अहिमन्महामोहमहाकटाहे, सूर्याप्रिना रात्रिदिनेंधनेन ॥ मासा दिहर्वीपरिघट्टनेन, जूतानि कालः पंचतीति वार्ता ॥ ४ ॥ तर्कप्रनष्टश्रुतयोपि जिल्ला, नासामृषिर्यस्य वचः प्रमाणम् ॥ धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महा जनो येन गतः स पंथाः ॥ ५॥ देवतायें खुशी यइ चारे जाइने जीवता कह्या.

हवे स्त्री चरित्र जपर बप्पनमो द्रष्टांत कहे बे.

॥ विप्रस्त्री च बहिर्बिचेमि दिवसे काकात्तदा प्रेषति, साई ठात्रकमेंकदा निशि गृहात्सा निर्गता प्रष्ठगः ॥ मार्गे पश्यति नर्मदोत्तरगतां दत्वा हरस्या क्रकां, सुप्तागत्य गरहे तथा ह्यवगतं सोऽवक्चरित्रं तव ॥ ५७ ॥ कोइएक ब्राह्मणनी पासें घणाएक विद्यार्थीं जणता हता, परंतु ते विप्र नी स्त्री दिवसने विषे जेवारें बाहेर जातीहती तेवारे पोताना धणीनें नि त्य कहेती हती के, हुं बार जाउंबुं त्यारे रस्तामां कालाकाला पक्वीचे एट से कागडा नामना पद्मीयी बीहुं हुं, माटे ज्यारे हुं बाहेर जाउं त्यारे महा रीसाथे तमारा एकेक बात्रने (विद्यार्थी) ने मोकुलो; तेवात खरीमानीने ब्राह्मण तेमज करवा लाग्यो. एक दिवस एक माह्यो बात्र हतो तेणे जा एयुं के आ स्त्री, स्त्री चरित्र करे है. दिवसें ज्यारे कागडाथी नय पामे है त्या रे रात्रें केम करती हुशे ? एमविचारी कांइक मिस करी त्यां गुरुने घेरज बानो बुपी रह्यो. तेटलामां ते स्त्री रात्रें घरमांहेची एकली बाहेर नीकली ते नर्मदानदीना सामाकांठा परगइ त्यांविट्पुरुष साथे इष्टाचरण करी पा बी जलतरीने आ कांवे आवी तेनी पबवाडे विद्पुरुष पण तरतो चाल्यो त्रावे हे, तेटलामां जलमांची कोइक मगरे ते जार प्ररुपनो पग पकड्यो. त्यारे ते स्त्रीयें कह्यं के ते मगरमत्स्यनी आंखो पर पाटु मारतो तरत बो डी देशे, तेणे तेम करवाथी तरत ते मगरमत्स्यना मुख्यकी हूटो पड्यो. अने बेहु जण पाठा आवी सुइ रह्यां. आ सर्व वृतांत ते ठात्रें ठानीरीते ते स्त्रीनी पठवाडे जइने जोयुं अने जाएयुं जे एणे खरेखरुं स्त्री चरित्र क खुं. पठी वलते दिवसें वली ते स्त्रीयें कह्युं के माहरी साथें ठात्र मोकलों ते वखतें जे ठात्रें गइ रात्रियें ते स्त्रीनुं चरित्र जोयुं हतुं. ते सर्व वृत्तांत ग्रह समक् कही आप्युं त्यारें, स्त्रीयें जाण्युं जे आ विद्यार्थी खरो बुदिमान हे अने ब्राह्मणे ते स्त्रीनो त्याग कखो, ए स्त्रीचरित्रने कोइकज जाणे. कह्युं हो के श्लोक ॥ दिवा बिजेति काकेन्यों, रात्रों तरित नमेदां ॥ कुतीर्थान्य पि जानति, जलजंत्विह्ररोधनं ॥ १ ॥ ए७ ॥ इति हप्यनमो हष्टांत ॥

हवे जेवी संगत तेवागुण ते जपर सत्तावनमो दृष्टांत कृहे हे.

॥ इंट्वेकं नृपतिं वने निगदिताः कीरेण निह्नास्तदा, संकर्ष्यां गतोयके हि मुनयोऽन्येनापि नात्यर्हकं ॥ तेऽन्यागत्य वदंति तिष्ठ नृपते वाक्यांतराद्वि स्मितः सोऽवग् संगग्रणा हि तस्य पितरावेको समस्तस्तथा ॥५०॥ अर्थः-एक दिवस कोइएक राजा वनमां गयो. तेवामां एक निल्लोनी पल्ली आवी त्यां एक पोपट इतो, ते पण चोरकर्ममां कुशल इतो तेथी ते राजाने जो इ पोपट बोख्यो, के दोडो दोडो आ राजा आब्यो हे. तेने ज़ूंटो ते सांच ली घोडो दोडावी राजा पलायमान यइ गयो. त्यांथी दूर जतां एक ता पसनुं आश्रम आञ्चं. त्यां पण एक पोपट बांध्यो हतो, ते बोख्यो के आ पणे त्यां महोटो राजा अतिथि आब्यो हे, तेनो सत्कार करो. ए वात सां नली राजा खुशी थयो, ने जनो रह्यो. तेवामां ते सर्व तापसोयें आवी राजानुं आतिण्य कखुं. राजायें कद्युं के एक पोपट निजनी पछ्नीमां हतो तेणे कहां के जूंटो जूंटो ? अने आ पोपट केवां मनोहर वाक्य बोखे हे ? आवात सांचली पोपट कहे ने के हे राजन! ते संगतीना गुण ने अमारा बेहुना माता पिता एकज हे पण तेने चोरनी संगती हे. अने मारे रुषी उनी संगति हे माटे संगतिना गुए एवाज होय हे कह्युं, हे के श्लोक ॥ माताप्येका पिताप्येको, मम तस्य च पह्निणः ॥ अहं मुनिनिरानीत,ः स च नीतो गवाशनैः ॥ १ ॥ गवाशनानां स गिरः शृणोतिः, अहं च राजन् मुनिपुंगवानां ॥ प्रत्यक्तमेतत् नवतापि दृष्टं, संसर्गजा दोषगुणा नवंति ॥१॥

हवे नणवानो उद्यम करवा जपर अघावनमो दृष्टांत कहे हे.

॥ नूपो यत्र हि गईनो जवमुनिं हृष्ट्वाह तं धीसख, शत्रुस्तेस्ति तदा व धाय निश्चिगः श्रुत्वार्यकां तन्मुखात् ॥ बुद्धोतःकरणे विचारयति राड् मे दीर्घष्ठोऽनृतो,, ज्ञानी साधुरयं नहीं मम रिप्रज्ञीत्वा गतः स्वालये ॥५ए॥

अर्थः-कोई एक नगरमां गईनसेन नामा राजा राज्य करतो हतो. ते ना पितायें दीक्का लीधी है. ते साधु विनयवंत अप्रमादी हतो. पण कांइ नाखो नहीं मात्र मार्गमां चालतां गोवालीयादिकनी मुखयी त्रण गाया धारी राखी है. हवे एक दिवसें ते सांधु पोताना पुत्रने वंदाववा माटे त्यां आवी कुंनारने घेर उतस्रो है. त्यारें ते राजानो दीर्घष्टनामा प्रधान है ते प्रधानें राजानी दीकरीनें खरूपवान जाणी ने पोताना घरमां जोंयरामां सं ताडी राखी हती. ते जेवारें साधु आव्या तेवारें प्रधान मनमां बीहीनो ने जाएयुं के राजा ए साधुने वांदवा जरो. अने ते ज्ञानी हरो तो माहारी वात प्रगट करी देशे माटे कोइक युक्ति करी राजानुं मन फेरवी मुनिने म रावी नांखुं एम विचारी ते प्रधान राजाने कहेवा लाग्यो के तारा पितानुं मनधर्मथी चल्युं हे अने राज्य पाहुं लेवा इहा राखे हे. आ वात सांचली राजा कोपायमान थयो अने रात्रें ते क्षीश्वरने मारवा माटे कुंजारने त्यां गयो त्यारें ऋषीश्वर तो बेठा बेठा मार्गमां सांजलेली त्रण गाया जणे हे. ते गाथानो परमार्थ जाए। ने राजा प्रतिबोध पाम्यो ने जाए्युं जे महारो पितातो ज्ञानी वे मारा मननी वात साचे साची कहे वे. माटे ए प्रधान निश्रय खोटो हे. अने आ गाया प्रमाणे माहारी पुत्री पण एणेज संताडे ली है. तेथीज बुद्धि केलवीने मने माहारा पिता साधुनी पासे जवानो एऐ निषेध कस्त्रों हे, परंतु ए साधु कांइ महारा वैरी नथी. अने महारुं राज्य लेवाने पण इन्वता नथी. एवं चिंतवी पोताने घेर आब्यो अने बी जे दिवसें प्रधाननुं घर शोध्युं तेमांची पोतानी पुत्री निकली आवी. तेवा रे प्रधानने काढी मुक्यो, इःखी कीधो, हवे जे गाया जणतां अर्थ सखो ते गाथा त्रण नीचें लखीयें वैयें ॥ उहावसीपोहावसी, ममं चेव निरस्कित ॥ जाणिर्छ सि अनिप्पार्छ, जवं नरकई गहहा ॥ १ ॥ र्जगयातो गया चेव, जोइक्रंति न दीसई॥ यमे न दीवा तुमें नदीवा, खगोडे बूटा खणुलिखा ॥ २ ॥ सुकमाल कोमल महलया, तमे राति हिंमण सीलणया ॥ अम्म पसार्व निश्च नयं, दीह पिष्ठार्वतुम्ह नयं ॥ ३ ॥ सिस्किश्चवं मनुस्सेणं,श्रपि जारिस तारिसं ॥ कीस मूढिसिलोगेण, जीवियं परिरस्कियं ॥ ४ ॥ हवे कुबुिह्या मत्स्यनो र्जगणसातमो दृष्टांत कहे हे.

॥ तीरे चाम्रफलं सदा वनचरो मीनाय दत्ते तदा, लाला स स्वग्रहे स्त्रिये वदित सा तङ्गक्तकं ह्यानय॥ कत्वारोहणमेत्य तं जलिनधो मेर्च्यंगना ते हदं, बदं मूढ नगे मया किमु कृतं बुद्यागतो जीवति ॥ ६०॥ अर्थः-समुइने कांवे एक आम्र वृक्त है. ते वृक्त जपर एक वांदरो आवी ते आं बानां फल खाय हे. एकदा ते वांदराने एक महनी साथे मित्रता हती, ते थी तेने पण आंबाना होतरां आपे, तथा फल पण आपे एम करतां ए क दहाडे ते माठलो केरीनां ठोतरां तथा फल पोतानी स्त्री वास्ते लइ गयो. ते स्त्रीनें जइ आप्यां. ते खावाथी तेने मीवां लाग्यां त्यारें मावली यें कह्यं जे ए फल जे खातो हशे तेनुं कालज्ञं पण अत्यंत मीतुं हशे, माटे हे खामी, तेने तुं आहीं तेडी आवतो हुं तेनुं कालजुं खाउं, के जे थी महारो मनोरथ पूर्ण थाय. ते सांचली माठलो वांदरा पासें आवीने क हेवा लाग्यो, जे हे मित्र, मारे स्थानकें आव्य अने समुइनो विनोद त था उंमापणाने जो महारी स्त्रीपण ताहारा दर्शननो अनिलाष धरे हे. मित्रपण तेनेज किह्यें, के जे परस्पर एक बीजाने घेर आवे ने जाय अ ने एक बीजानें खबरावे पीवरावे, एक बीजाने आपे लीए. इत्यादि व चन सांजली वांदरे हा पामी तेवारें वांदराने पोतानी पुंठे बेसारी मा बजो समुइमां चात्यो. मार्गमां ते माबजो वांदरा प्रत्यें बोत्यो, जे हे मि त्र, तुं कहे तो हुं साचुं बोद्धं, वांदरे कह्यं. सुखेथी बोल तेवारे माठले क ह्यं जे महारी स्त्री ताहरुं कालज्जं खाज़ें. आ वात सांजली वांदरो हस्यो, श्रने बुद्धि करी बोद्यों के हे जाई, एमां सी महोटी वात हे पण तुं मूर्ख देखाय है. जे माटे तें पहेलां मने त्यांज केम न कहां हुं तो कालजुं आं बे बांधी खाव्यो हुं! माटे तुं कहेतो लइ खावुं, त्यारे महें कहां के जा ल श्राव पत्नी वांदरो त्यांची फलंग मारी समुद्द कांते श्रावी श्रांबा कप र चडी बेवो. अने जीवतो रह्यो कह्यं ते के ॥दोहा॥ मिनफुडाफुडि बोली ए, न जंपीह खलीएए।। मुफ महीला तो जीवशे, खाघे तुक्क हीएए।।१॥ रे जलचर सुलस्कणा, एको काज न कीध ॥ घट जिंतर जे कालजुं, सो में आंबे बड़ ॥ १ ॥ वानर गया महीमंमलें, जलचर जानिज घरे ॥ तुज महिला जीवे नहीं, तो तुं साथे मरे ॥ ३ ॥ जलचर जीव कुबुि आ, एको काज न सिड़ ॥ घट जींतर जे कालजुं, सो क्युं आंबें बड़ ॥ ॥ ॥ ६ ०॥ हवे धर्म करवामां शंसय न करवा आश्रयी सातमो दृष्टांत कहे हे.

॥ वक्तीशः सचिवं हि दीर्घलघुनिनों नाति हंगं गहैः, साहका धनमंदिरे मम पुरे ते रक्षणीया जनाः॥ विद्यंते यदि पंचषा वदति नो ग्रुन्यं पुरं स्या त्तदा, तत्त्वं मा कुरु तं तथास्तु नृपते तद्वज्ञणे साधवः ॥ ६१ ॥ कोइएक राजा पोताना प्रधानने कहें हे, जे माहरा नगरमां केटलाएक निर्धन वसे हे, अने केटलाएक धनवान मोटा लोको वसे हे. तेमज केट लाएक न्हाना न्हाना घर हो, अने केटलाएक महोटां महोटां घरो हो. तेथी नगर शोनतुं नथी. माटे सघला लखेसरी धनवान पैसादार अने चार चार पांच पांच मजलाना सरखा घरवालाने राखीयें. अने सामान्य निर्दन लोकोने काढी मूकीयें. तो नगर शोने. आ राजानुं कहेलुं सांच लीने सुबिदिमान एवो प्रधान बोट्यो जे, हे राजन ! एम करवायी तमा रा नगरमां मात्र पांच सात घर रहेज़े. नगर आखुं ग्रून्य थइ जाज़े. माटे एम न करो. आ वातथी राजा समज्यो अने प्रधानने कह्यं के, जेम वे तेमज रहेवा आपो. आ दृष्टांते करी पोताना गन्ननेविषे सर्व साधु कांइ ज्ञान क्रियामां सरखा न होय तो काढ घाल न करतां धर्मनेविषे मनस्थिर राखी धर्माचरण करवुं. कद्युं हे, के॥ नगरे सदृशाः सर्वे, जवंति धनिनो न हि ॥ गहेपि साधवो क्वान, क्रियाच्यां न हि सहशाः ॥६१॥ इति साठमो हष्टांत कुलटा सासुयें वे जमाइमां राखेला अंतरनो एकसवमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ इष्टानिष्ठसमागतौ स्वसदने जामातृकावेकदा, जग्ध्यर्थे निकटे स्थितौ कुटलया स्थाल्यां तदादेवेरं ॥ मुक्तं पायसकं परस्य सितिकां स्थूलीं विलो क्यास्य किं, सोवग्मे यदि वां किमस्ति तिलकं श्वश्रूः करोम्यास्यकं ॥ ६२ ॥

श्रर्थः—कोइकने घेर वे जमाइ परोणा श्राव्या. तेमां एक जण सासुने घणो वाहालो हतो, श्रने बीजो इवालो हतो. पढ़ी बेहु जण जमवा माटे पासें पासें बेठा त्यारें ते कुलटा सासुयें पोताना वाहाला जमाइने श्रालमां सेव सुंहाली दूधपाक खाजां खुरमां श्रादिक पीरक्यां. श्रने बीजा जमाइ ना थालमां धोला यवनी शुली रांधी पीरशी बेहु जमवा बेठा. तेवारें श्र ली वालो जमाइ बीजा जमाइनुं उत्तम जोजन जोइने कहेवा लाग्यो जे, हे सासु! तमें पीरसतां चुट्यां हो. किंवा महारा कमेने योगें खीर सेव प्रमुखनी चुली चइ गइ. त्यारें सासु बोली के हुं नची जूली, अने खीर सेवनी चुली पण चइ नची. में मोहुं जोइ ने टीलुं कख़ं हे ते माटे चुली यें पेट जरी कहो. ॥ दोहा ॥ एक ने पिरसी सेव सुंहाली, एक ने पिरसी चूली ॥ के मुज दाहाडा वांकडा, के पिरसण हारी जूली ॥ १ ॥ नां तु ज दीहा वंकडा, ना पिरसण हारी जूली ॥ मों देखीने टीलुं काढ्युं, मारि गलगल चूली ॥ १ ॥ ए एकसहमो दृष्टांत ॥ ६१ ॥

कोइपण नियम खेवो ते लाज करें तेनो बासतमो दृष्टांत.

॥ टाख्यां वीक्ष्य ततोश्चि सजुरुमुखा देतजृहीतं व्रतं चक्री त्वेकदिने ग तः स मृतिकाखन्यां विणक्षष्ठगः॥ इत्यं तत्र हि निर्गतं यदि विणक् दृष्टेत्यवग् दूरत, स्त्वं मायाहि अवेहि मेपि सकलं लाखालये तज्ञतः॥ ६३॥

॥ अर्थः—कोइएक नगरमां ग्रह आव्याः त्यारें घणां लोकें पच्चत्वाण लीधां तेमां एक वाणीयें एवं नियम लीधुं, जे हुं आ गामना रहेवासी कुं नारना माथानी टाल जोइ, पच्चत्वाण पारुं. पठी ते नित्य कुंनारनी टाली जोइ पच्चत्वाण पारे एम करतां एक दिवस कुंनार माटी लेवा सारुं धूलनी खाणे गयो हतो पाठल वाणीयो कुंनारने घेर आव्यो तेने घेरथी समाचार मव्या के कुंनार धूलनी खाणे गयो हे तेवारें वाणीयो पण त्यां खाणे गयो ते समय त्यां कुंनारने माटी खोदतां सोनैयानों चह मव्यो ए अवसरें वाणीयें पण कुंनारनी टाल दीठी. त्यारे वाणीयो कहेवा लाग्यो के "दीठीरे दीठी" एम बोलतो पाठो वव्यो ते सांनली कुंनारें जाण्युं. जे इव्यनी कडा ए वाणीयायें दीठी. तेथी कुंनार अनो थइने वाणीयाने साद करवा लाग्यो. के "मजा रे मजा " एम कहेतो वाणीयानी केंडे दो ख्यो. अने कहेवा लाग्यो जे, अर्थनाणुं माहं ने अर्थनाणुं ताहं ए वात जाणी वाणीयो पाठो वली अर्थनाणुं लह घेर आव्यो. माटे कोइ पण नियम लेवो ते लाजकारक ने कह्यं ने, के॥ योप सोप ध्रुवं याह्यो, नियमः पुण्यकांहिणा ॥ स्वल्पोप्यनल्पलानाय, यथा खब्वाटपश्यकः॥ १ ॥

हवे अनंतानुंबंधी क्रोध कपर त्रेसवमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ लब्ध्वा सर्षपशाकमाग्र ग्रुरुणा जग्धं तदा कोपतः, शिष्यश्चिंतित पा

तयामि दशनानास्ये ग्ररोश्रेकदा ॥ कला तेऽनशनं दिवं शवमुखाइंतांश्र सो पातयन्,मृखा कोधवशेन चापि नरकं प्राप्तो विनीतो जडः ॥ ६४ ॥ अ थः—कोश्एक नगरमां ग्रुरुने शिष्य बेहु विहार करतां आव्या. एक दिवस शिष्य नगरमां वहोरवा गयो, त्यां सरशवनी नाजी वहोरी आव्यो. ते ग्रुरुये एकलायें खाधी, पण शिष्यने दीधी नहीं. तेथी ते शिष्य कोपायमा न थइ विचारवा लाग्यो के, एणे मुजने शाक न आप्युं. माटे आ ग्रुरु ना दांत निश्चें पाडुं. पण ते ग्रुरु जीवतां तो दांत कोइरीतें पाडी शकाय नहीं, तेवारे रात दिवस एज चिंतवन करतो हतो. एक दिवस ग्रुरु आ नशन व्रत करीने परलोकें पहोंच्या. वलता ते शिष्यें पत्रस्वती ग्रुरुना शबना दांत पाड्या. ते इनिव्य कोधना आवेशयी मरीने नरकें गयो. अ विनीत जिन शासननो ज्ञापक थयो ए अनंतानुंबंधी कोध जाणवो माटे कोधपरिहरवो कह्यं हे,के॥यो नवेद् जगित गवर्जितो, दीर्घरोपसहितश्र मान वान्॥सोत्रइःखमधिकं लजेयथा, दंतपातमुनिनात्पमत्रवे॥ इति त्रेशवमोट ० हवे धनने मान मले ते जपर चोशवमो दृष्टांत कहे हे.

॥ निःस्वं सोदरकं निरीक्ष्य जिगनी जाता न मे सूपकत्, श्रुखा सद्यग जं धनं जनपदे जात्वा गतस्तृ हहे ॥ स्थाव्यां मुंचित खादिमं वदित स स्वा जूषणान्यत्य जो किं जांतो वदसीति येषु सुकृतस्तेषामहं पूर्वगः॥ ६५॥

अर्थः—कोइएक निर्धन मनुष्य आश्या धरिने पोतानी बहेनने त्यां गयो तेने जोइ ने बेन लाजी ने सहुने कहेवा लागी के, आ महारो जाइ न थी, पण आ महारा पितानें घेर चूलो फंकनार रसोयो हे आवा बहेन ना वचन सांजली ते जतावलो धन कमाववा माटे परदेशें गयो. त्यां जइ घणुंक धन कमाणो वली ते धन लइ फरीने पोतानी बहेनने घेर आब्यो. तेवारें बहेनें पण धनवान नाइ जाणीने आगता स्वागता करी, जोजन व खत थालमां सरस पकवान प्रमुख पीरक्यां त्यारें जाइने पूर्वलो दिवस सां जरी आब्यो. तेथी पोतें जे आंगली प्रमुखमां घरेणां पहेखां हतां ते सर्व थालीमांहे मूक्यां. अने बहेन सांजले तेम कहेवा लाग्यो के, हे आजूष णो, तमो आ सर्व पदारथ जमो. त्यारें बहिने कहां के जाइ एग्रं कहो हो ? कांइ गांमा तो नथी थया ? त्यारे जाइ कहे हे के हे बेन हुं गांमो थ यो नथी पण जेनें ते पीरद्युं हे तेने हुं जमवानुं कहुं हुं जोने पहेलां हुं

निर्धनपणामां ताहारे घेर आव्यो हतो त्यारें मनें तें बापानो रसोयो कह्यो हतो माटे ए धननें मान हे. मने नथी. दोहरो ॥ गरथें आदर दीजीयें, हक्कारीजें दाम ॥ पेहेले फेरे आपीठं, चुझा फूंकण नाम ॥ १ ॥

हवे जेहवुं नाम होय तेवा गुण न होय तेनो पांशवमो दृष्टांत.

॥ नाम्ना विंवणपालकोऽस्ति धनवान् तस्यांगना चिंतति, नो तिष्ठामि ग्रहेऽस्य यामिधनपालस्य स्वगेहाजता॥ दृष्ट्वाऽध्वन्यमरं मृतं चधनपं ह्यन्या लये निक्तिं, लक्कीं काष्ठकविक्रयां ग्रहगता कात्वा ग्रुचं विंवणम्॥ ६६॥

अर्थः—कोइएक नगरमां एक धनेषान वसे हे. तेनुं नाम विंवणपाल हतुं. तेथी तेनी स्त्री ज्यारे बाहार जाय त्यारे सहु तेने विंवणपालनी स्त्री कहिने बोलावे. तेथी ते स्त्रीयें जाण्युं जे महारे हवे विंवणपाल ना घरमां रहेनुं नहीं कोइ पण धनपाल के जगपाल एवा उत्तम नाम धारकने त्यां जड़ ने स्त्री थइ रहेनुं. एमधारी घरथी बाहेर निकली आगल जतां मार्ग मां कोइएक अमरपाल नामें माणस हतो, तेने मरी गयेलो दीनो. वली आगल चाली, तेवारें कोइ धनपाल नामा पुरुपने जीख मागतो दीनो. वली जरा आगल चाली त्यां लक्की नामनी स्त्रीने काष्ठ वेचती अने हाणा वीणती नजरें जोइ ते सर्व जोइने विचाखुं, जे कांइ नामनुं कारण नथी. माटे मारो वींवणपाल हे,तेज जलो हे. दोहरो ॥ अमर मरंतो में सुण्यो, जीखंतो धनपाल ॥ लही वेचंती लाकडां, जलो मारो विंवणपाल ॥ १ ॥ हवे गुणयाहक जपर कुआवासुदेवनो हाशहमो दंष्टांत.

॥ इंडः पर्षदि वाक्यमाह नृजवे कस्मो गुणयाहको, जूला श्वानमृतं सु रो निपतितो मार्गे तमालोक्य सः ॥ दंतश्रेणिग्रजां ग्रुनोपि सकलं त्यक्ताग्रु जं दोषकं, जूला जूत्प्रकटं हिर्रादेवि यदा धन्योऽस्ति नला गतः ॥ ६७ ॥

॥ अर्थः – एक दिवस पोतानी सजाने विषे शकेंड एवं वचन बोव्यो के, वर्तमान समये मनुष्य लोकने विषे एक रुस वासुदेव जेवो गुणयाहक है, तेवो बीजो कोइज नथी. आ वात सांजली एक देवता श्रीरुसने च लाववाने काजे, मरेल कूतरांनु रूप विकूर्वि नगरमां मार्गनेविषे आवी प ड्यो. तेमांथी ड्रांध चालवा मांमी. तेने जोइने रुसवासुदेवें ते कूतराना ड्रांध प्रमुख अवगुण सर्वे पडता मूकीने कह्यं के, आ मृतक श्वाननी दं तपंक्ति केवी मनोहर हे ? एम मृतक श्वानमां जे गुण हतो ते लीधो. अने

डुर्गधादिक अवगुणो सर्वे पडता मूक्या. बीजा सर्व लोकोयें कहां के, आ डुर्गध वासे छे. आवं गुणयहीपणुं श्रीकस्मनं जोइ देवता पोतानं मूल रूप धारण करी, प्रगट थइ, श्रीकस्मने पगे लागी, प्रशंसा करी वरदान आ पीने,पोताने स्थानकें गयो. माटे उत्तम पुरुषें सहु कोइनो गुण लेंबो,पण कोइनो अवगुण न लेंबो. कहां छे,के॥ श्लोक ॥ संसारे सुखिनो जीवा,न वंति गुणयाहकाः ॥ उत्तमास्ते च विक्रेया, दंतपश्यकरूष्णवत् ॥ १ ॥ अ मलत्वे रसकाया,मिश्रयोः क्तिरनीरयोः ॥ विविच्य पिबति क्तिरं,नीरं हंसोपि मुंचित ॥ १ ॥ असंख्याः परदोषकाः,गुणकाश्चापि केचन ॥ स्वयमेव स्वदोष का, विद्यंते यदि पंचपाः ॥ ३ ॥ स्वीरिमव जहाहंसाः, जे घुठंति गुरुगुण सिमदा ॥ दोसेवि वक्तयंतो, तं जाण सुजाणयं पुरिसं ॥ ४ ॥ ६७ ॥

हवे दृढ समकेतनी उपर सडसवमो दृष्टांत कहे हे.

॥ सम्यक्त्वं यदि वर्णितं च हरिणा श्रीश्रेणिकस्यामरो, नूत्वा साधुनिन स्तदा जलचरान् ग्रह्णाति त्रागत्य सः ॥ दृष्ट्वा विक्त किमाकरोषि हि मुने त्वं सद्दयाहेतवे, डुनेव्यस्त्वमसीति नो जिनमते कृत्वा स्वरूपं स्तुतः ॥ ६०॥

अर्थः -एक दिवस इंड्नी सनामांहे समकेतनी वात चाली त्यारें शकें हें श्रेणिक राजानुं समकेत वखाणुं. अने कहां के, ए राजा हढ समकें तनो धणी है. ते सांजली एक मिण्याहृष्टी देवतायें राजानी परीक्षा कर वा माटे, साधुसिरखुं रूप करी होयों, मुह्पित, दांमों, कांबली लड़ हाथ मां जोली घालीनें एक तलावमां पेतो. त्यां जड़ माहलांहिनें यहण करवा मंड्यों, तेने राजायें कहां के,हे साधु! आ विपरीत कमें केम करो हो? मु निवेषने विटंबना हुं करो हो? त्यारें कपटी साधु बोल्यों के,हेराजा! हुं साधु धर्ममां समजे नहीं. हुं आ माहलां काढी तेने वेचीने कांबली लड़्श. ते यी वर्षाकालें जीवदया पलशे. जे माटे पाणीना एक बिदूमां असंख्याता जीव नगवंते कह्या है, ते हगरशे. आ वात सांजली राजा बोल्यों के, तु इनेंच्य अनंत संसारी देखाय है. जे माटे साधुना वेषमांहे आहुं कमें करे हे? जैन शाशनमांहे ए वात कही नथी. जैन शास्त्रणी हलटुं हे, एम राजायें तेने कह्यं. पण बीजा साधु हपर देष न कल्यों तेवारें त देवता यें झानेंकरी जाण्युं. जे आहुं महारुं विपरीत आचरण देखतां पण रा जाने बीजा साधुनी हपर अनाव न थयों. तेवारें देवता पोतानुं रूप प्र

कट करी श्रेणिक राजानी स्तुति करी स्वस्थानकें गयो. कहां हे के, श्लो क ॥ क्रियादीनं कुसाधुं च, दृष्ट्वा चित्तं न चाट्यते ॥ तत्सम्यक्त्वं दृढं केंगं, धर्मे श्रेणिकनूपवत् ॥ १ ॥ इति सडसतमो दृष्टांतः ॥ ६ ७ ॥ द्वे जीवद्या चपर श्रडशतमो दृष्टांत कहेहे.

॥ जूपः पर्षदि वर्णितो हि हरिणा देहीति देवो गतो, ऽवक् श्रुत्वा नृबिं न चेत्पुरजनान् हन्मीति मंत्रोऽजवत् ॥ सोपायं च तदा जनैर्नृशिश्चके लात्वा वधस्थो हसन्, तत्स्थाने नृपतिः स्थितो यदि सुरस्तुष्टो नृपं श्लाघते ॥ ६ए॥

अर्थः-एकराजा दयावंत हतो, तेने शक्रेंड्नी सनामांहे इंडें वखाखो. ते जोइ एक देवता तेमनुं पारखुं करवा माटे ते राजाने कहेवा लाग्यो जे, हे राजा! एक पुरुषनो बिल आपो. अने जो नहीं आपो तो, सर्व नगरवासी लोकोनें हुं मारीश. त्यारें राजा कहे हे. जे बलिनी' वात कांइ मुजधी थाय नहीं, ए वात बनेज नहीं. त्यारे ते देवतायें नगरनी जपर नगर प्रमाणे एक मोटी शिला विकुर्वी, अने कहेवा लाग्यो जे, हमणां छा शिलायें करी तारुं छा सर्व नगर चकचूर करीश. पढ़ी जेवारें 'शिला पडी पडी' एम बूमो पाडवी सरु थइ,तेवारें नगरजनो एकवा थइने राजाने कहेवा लाग्यां जे हे राजन! एक पुरुष वास्ते घणानी हत्या लागज़े. तेने राजायें कहां के, एवात कांइ मुफने कहेशो नहीं,जे सरज्युं हशे ते थाशे. एवो कोण ने जे खुशी थइ मरवा वां है ? के जेनुं बली ए देवने आपीयें ? तेवारें सर्व नगरजनोयें विचार कखुं ज़े एक सोनानुं पुतद्धं कोटिरूपेयानुं बनावी,तथा कोटी सोनैयानी रकम कोइ निर्धनने आपीयें, अने ते पोतानो पुत्र खुशी थइने छापणने छापे,तो देवताने बली छापी जपकार करियें. ए वात सर्वकोइयें कबूल कीधी. पढ़ी ते पुतलुं लइने कोइ निर्धन पुरुषें खुशीयी पोतानो पुत्र छाप्यो, तेने राजानी पारों लाव्या, छने बिल देवाने स्थान कें ते बालकनें बेसाखो. राजाने देखी बालक हसतो हसतो कहेवा लाग्यो जे माहरे आज मोटो जित्सव हे. मरवुं एकदिवस सहु कोइने हे, परंतु मारा एक जीवने माटे आखुं शहेर उगरे हे. आ वात सांचली राजा पोतें ते बालकने स्थानकें बेवो. त्यारें देवता तुष्टमान थयो अने राजानी स्तु ती करी कहेवा लाग्यो के, हे दयावंत ! तुजने जेवो इंडें सनामां वखाएयो तेवो तुं यथायोग्य हो. एम कही देवता पोताने स्थानकें गयो. कह्यं हे के, ॥ दोहो ॥ सोनुं शरीर समुं देइने, उपर शोनङ्ग्रा कोडि ॥ श्राणी बाज बेसारीयो, बिज देवाने वोडि ॥ १ ॥ स्वामी सामुं देखी हस्यो, बाजक ह दय उझास ॥ देखी दयापित मनधरी, श्रावी बेवा बाजक पास ॥ १ ॥ बाजक मुकी मुक्तने जखो, जो होय बजीनुं काज ॥ देव संतोषें इम कहे, करो तुमे श्रविचल राज ॥ ३ ॥ ६७ ॥ इति श्रडशतमो दृष्टांत ॥

जीवदया उपर मेघरथराजानो उनणोतेरमो दृष्टांत कहे हे.

॥ वज्री पर्षदि वक्ति मेघरथको नूपः रूपातत्परो, नूला नूविहगौ तदापि नृपतेरुत्संगके साध्वसात् ॥ रक्ताऽक्तोऽपतदीश रक्त शरणे तं तक्षयं मा कुरु,श्ये 🕐 नायात्मपलं ददो यदि सुरो नत्वा सु नाकं ययो ॥ ७० ॥ अर्थः-एक दि वस इशानेंड्नी सनामां इंडें प्रशंसा करी के, मेघरथराजा दयावंत अने कोइथी चलायमान करी शकाय नहीं एवो हो. आ वात सांचली कोइक देवतायें पारेवानुं रूप तथा सिचाणानुं रूप विकूट्युं. तिहां ञ्रागल पारेवुं अने पठवाडे सिचाणो चात्यो. तेमांथी प्रथम पारेवुं आवीने मेघरथराजा ना उत्संगमां पड्युं, अने धूजतुं धूजतुं कहेवा लाग्युं के, हे राजन ! मारी पाढल मने मारवा माटे सिचाणो आवे हे, तेनाथी मारुं रक्तण करो. आ वात सांजली राजायें ते पारेवानें पोतानी पासे राख्युं. तेवामां सिचाणो आव्यो. ते राजाने कहेवा लाग्यो के, हे राजन ! तुं ते पारेवानें बोड, म ने अत्यंत कुथा लागी है. जो तेने न आपो तो तमारुं मांस पारेवा जे टलुं तोलीने मने आपो. त्यारें राजायें तेने पोतानुं मांस कापी कापी आपवा मांमगुं, परंतु देव मायाधी ते मांस पारेवानां बराबर थयुं नहीं. त्यारे राजा पोतेंज आखो त्राजवामां बेठो. अने सिचाणाने कहां के, म हारं नक्षण कर. ते जोइ देवता प्रसन्न थयो, अने कहां जे,हे राजा! तारं सत्य घणुं प्रशंसनीय हे. एम कही नमस्कार करीने गयो. कह्यं हे के ॥ दयावंत देव सांनली, कखां पंखी बे रूप ॥ एक राजा खोले पड्यो, एक दीये तस दूप ॥ १ ॥ मेघरथ सुरद्यं कहे, मूक पारेवुं एह ॥ हठ लाग्यो मूके नहीं, राजा दीयो तस देह ॥ २ ॥ खतुल पुण्य जपराजीयो, पाम्या पदयुग जोड ॥ दयाप्रचार्वे देवता, सेव करे बहु कोड ॥ ३ ॥ ७० ॥

हवे हिंसानिषेधोपदेशनो शित्तेरमो दृष्टांत कहे हे.

॥ श्रुलाजावचनं हि नोजनृपतिर्यक्षे कविं एइति, प्रोचुस्ते किममी नु तं

वदित जो विक्तिकामीश सः ॥ की हक्तां यदि काव्यमेव कविना प्रोक्तं प्रबु क्तादा, मुक्ता सर्वपग्रन् कतो हि नियमो यक्तस्य धर्मे रतः ॥७१॥ अर्थः-नोजराजायें यक्तनेविषे बकरां होमवा अणाव्यां. ते बकरां बूम पाडवा लाग्यां, त्यारें नोजराजायें धनपाल पंिततने पूत्र्युं, जे बकरां शामाटे बो खे हे ? पंमितें कह्यं के, हे राजन ! ए अरज करे हे के, सर्वलोक मलीने सांचलो. तेने राजायें कह्यं के,शी विनंती करे हे ? ते तमे जाएता हो तो कहो. तेवारे पंिततें एक काव्य कद्युं. जे हे महाराज ! जो यक्तमां होम्या थी पशुरु स्वर्गमां जाय हे, तो पण अमारे स्वर्गमां जवानो खप नथी. अ ने होमवाधी जीव स्वर्गे जता होय,तो अमने शामाटे स्वरीमां मोकलो हो? तमारा मातापितादिकने यक्तमां होमी स्वर्गमां केम नथी मोकजता ? का रण के सारो पदार्थ पोताना अति वाहाला निकट सगांने अपाय. माटेते ने मोकलवा योग्य हे. खमो तमारा माता पितादिक नथी. खा प्रमाणे बकरां कहे हे, तेनुं काव्य धनपाल पंिनतें कद्युं. ते लखे हे ॥ नाइं खर्गफ जोपनोगतृषितो नान्यर्थिनस्त्वं मया, संतुष्टस्तृणनक्ष्णेन सततं साधो न युक्तं तव ॥ स्वर्गे यांति यदि त्वया विनिह्ता यक्ने ध्रुवं प्राणिनो,यक्नं किंन क रोषि मातृ जनकैः पुत्रैस्तथा बांधवैः ॥१॥ ए वात सांचली राजा प्रतिबोध पाम्यो. पंमितनी वात खरी जाणीने बोकडा सर्व मुक्या. अने यक करवानो पच्च कहा, हिंसा न करवानो नियम लीधो, अने धर्मनेविषे दृढ थयो॥

जिहां संप होय त्यां जिक्कीनो वास रहे तेनो एकोनेरमो दृष्टांत.

॥ सुप्तेन्यः कमलाह यामि सदनात्त्वं याचयेनमां तदा,याचिष्ये हि वरं प्रनातसमये एष्ठं कुटुंबं चि किं॥ याचे विक्त एथम्धनं लघुवधूः स्नेहं कुटुंबं ऽपय, तहाक्यं किथतिह तेन यदि सा नोयामि ते यंत्रिता ॥ ७१ ॥ अर्थः—कोश्एक धनवान् शाहुकार रात्रें सुतो हे, तेवामां लक्कीयें आवीने शाहुकारने कह्यं के, हुं हवे तारा घरमांथी जाश्श. माटे तारे वरदान जे जोश्यें ते माग. ते हुं देती जाउं, त्यारें ते बोख्यों जे आजें तो हुं मागीश नहीं, पण सवारमां माहारा कुटंबीने पूहीने मागीश. तेवारें लक्की बोली जे जलुं. पही प्रजाते शहे सहु कुटुंबीयोने पूहवा मांमधुं, त्यारें कोश्यें ज दा जुदा धन लेवा कह्या. कोश्यें कांश्र बीजुं वरदान मागवा कह्यं. एम कर तां नानेरा होकरानी वहुनें पूह्यं त्यारे तेणें कह्यं के, हे ससराजी, आ

पणा कुटुंबमां स्नेह सुसंप रहे ते मागो ने ते वात ससराना चित्तमां पण बरोबर उतरी. पढ़ी बीजे दिवसें रात्रें जिक्की आवी अने शेवने कहां के, वर माग्य. तेवारें शेवें कहां के, महारा कुटुंबमां सुसंप रहे ते वर आप. त्यारे जिक्कीयें कहां के, हवे मारायी जवाय नहीं, कारण के तमोयें संप माग्यो, तो ज्यां संप हे, त्यां मारे रहेवुंज जोश्यें. माटे ज्यां संप त्यां ज क्यी रहे हे. कहां हे, के ॥ दोहो ॥ शेवें कुटुंब संप मागीयो, जिक्की कहें कर जोड ॥ जाकं तो जाइ शकुं नहीं,राखी मारी मरोड ॥१॥ श्लोक ॥ गुर वो यत्र पूज्यंते,यत्र वित्तं नयार्जितं ॥ अदंतक जहो यत्र,तत्र शक वसाम्यहं॥ १॥

इष्टतुं नाम खेवाथी पण विद्य थाय ते जपर बहोतेरमो द्रष्टांत.

॥ कश्चित्पृञ्जति मिंगरं वद ह्यः कस्येति यस्यास्म्यहं, कस्य त्वं तदहं तथापि च तंवेशाख्या न किं कथ्यते ॥ सोऽ वक्च कुधितोस्मि खादिममिदं ला हीश गोत्रं डुतं, प्रोक्तं तेन तदा ह्येन निहतस्तन्नामतस्तत्फलम् ॥ ७३ ॥

अर्थः—कोइएक पुरुषें सारो घोडो जोयो, त्यारे तेणें ते घोडाना चाक रने पूछ्यं के, जाइ आ घोडो कोनो छे? ठाणीयें कद्यं के, जेनो हुं चाक र छुं, तेनो आ घोडो छे. त्यारें फरी ठाणीयाने पूछ्यं के तुं केहनो चाकर छे? तेणें कद्यं के, जेनो आ घोडो छे तेनो हुं चाकर छुं. वली ते पुरुषें क द्यं के तुं अवलुं बोलतां ताहरा स्वामीनुं नाम केम नथी छेतो? त्यारें ते णें कद्यं के हजी दातण कखुं नथी, तथा जम्यो पण नथी, जूख्यो छुं मा. टे प्रजातें तेनुं नाम छेवा योग्य नथी. ते सांजली पुरुष बोख्यो, जे तुं खुढुं बोले छे. जो तुं तारा स्वामीनुं नाम लीये, तो तरत तुफने आ सुखडीयें नरेली तबक आपुं. तेवारे तेणें सुखडीनी लालचें पोताना स्वामीनुं नाम लीधुं. एटले तेज समये घोडो जडक्यो, अने सुखठपरें पाटु मारी, तेथी सुखडी दसे दिशायें परजा परजा थइ गइ, तबक पण क्यांय जइ पडी.एम केटलाएक अधर्मीनां नाम छेवाथी आप्रकारें विघ्न थायछे. माटे एवा पुरुष नं नाम खावानी अगांक न छेवुं. कह्यं छे के, श्लोक ॥ पापिष्ठनाम न या ह्यं पत्यूषेऽपि कदाचन ॥ यडकं हि तदा तस्य, हतो घोटकलत्त्वा ॥ ७३ ॥

हवे परजीवनुं मांस सोंघुं ते जपर तहोंतेरमो दृष्टांत कहे हे.

॥ नूपः प्रज्ञति मांसमौत्यमनुगान, प्रोचुश्च तेऽव्पं सुतोऽनव्पं वक्त्यज्ञयो निवारयति जो तं दरीयामि प्रजो ॥ गत्वा सर्वगृहे नृपाय हृदिजं तहेहि ना सं पलं, याद्यं लाहि धनं न तेन तदितो लात्वार्षितं नूपतेः ॥ ७४ ॥ अर्थः-एक दिवस श्रेणिकराजा पोताना उमरावो प्रमुखनें कहेवा ला ग्यो हमणा कयी वस्तु सोंघी हे, अने सारी हे ? तेवारे उमराव प्रमुखें क ह्यं के,हे महाराज मांस घणुं सोंघुं हे. ते वखत श्रेणिक राजानी पुत्र ख नयकुमार बोख्यो के माहाराज, मांस मोंधुं हे. तेने राजायें कहां कें, तुं राज बालक सोंघा महोंघामां ग्रुं समजे ? ते वखत अनयकुमारे कह्युं के, ए वातनो निश्चय दुं आपनें योडा दिवसमां करी देखाडीश. पठी राजाने अनयकुमारें कह्यं के, तमारे जूठी रीतें घरमां मंदवाड जणावी पांच दिवस संनामां आववुं नहीं. तेथी ते वात राजायें कबूल करी ने सनामां न आव्या. त्यारे गाममां खबर पड़ी के श्रेणिकराजा मांदा हे,एवी प्रसिद्धि थइ. ते वखत ख नयकुमारें युक्ति करीने सर्व उमरावो अने दरबारी मनुष्यो पासें तेमने घेररा त्रियें जइने कद्युं के हे उमरावो, वैदें कद्युं हे, के उमरावोना कालजानुं मांस राजा खाय तो राजाने करार थाज्ञे. माटे तमे सहु मजी पल पज प्रमाण पोतपोतानुं कालज्ञं काढी आपो. त्यारें कोइयें मांस आप्युं नही. अने सहुयें कहां के, अमारे पासे जेटलुं जोइयें तेटलुं धन लीयो, पण का लज्जं तो अपाय नहीं. पढ़ी सहु पासेंची धन लइ राजाने बताव्युं,ने राजा सनामां आव्यो. ते वखतें अनयकुमारें कह्यं के,हे महाराज जुर्न बधायें धन घणुं आप्युं, पण मांस कोणें न आप्युं माटे मांस केवुं मोंघुं हे. पार का जीवोनुं मांस सोंघु हे. तेपण जोरावरी जोतां तो मोंघुंज हे. े सांच ली उमराव सर्व चुपकी करी रह्या आ वात राजायें खरी जाणी कह्युं हे के,स्व मांसं इर्जनं लोके,लक्क्णापिन लन्यते॥ऋल्पमूल्येन लन्येत,पलं परशरीरजम्॥

हवे अनव्यजीव श्रीतीर्थंकरना उपदेशथी पण नेदाय नहीं ते जपर चम्मोतेरमो दृष्टांत कहे हे.

॥ मेघं विक्त च नारदस्तव रिपुर्मुजाख्यरों जो चित, श्रुत्वा कुप्यित सो एकस्त्वमित ते रे यादि मुजागतः ॥ कोऽयेयं मम वर्षति प्रबलकं जेतुं न मां शक्यते,वके दास्यमतो दृषद्यदि यथा जव्यो जिनैर्जाषितः ॥ १५॥ अर्थः— एक दिवस नारद मुनि मेघनी पासें आवी कहेवा लाग्यो के, मृत्युलोकने विषे तारो शत्रु मगसेलीयो पाषण हे. ते घणो अहंकार करे हे, अने कहे हे के, मुजने कोइ जेदी न शके. ते वात सांजलीने मेघ पण गर्वे चढी क

हेवा लाग्यो के, तेने हुं हमणाज पलाली नाखुं. एम कही मगसेलीया च पर कोपायमान थयो. पढ़ी वली ते नारंद मगसेलीया पाषाणनी पासें आवीने कहेवा लाग्यो के, हे बापड़ा तुं आंहीथी दूर जतो रहे, केमके, हा ल ताहारी जपर मेघ कोपायमान थयो छे, माटे तुजने गाली नाखशे. त्यारे मगसेलीयो कहे छे के, महारी आगल बापड़ो मेघ कोण गणत्रीमां छे. हुं महाप्रबल छुं माटे मुजने गाली नाखवाने कोण समर्थ छे ? एम कहे छे. तेवामां पुष्करावर्च मेघ तुरत वरषाद वरसाववा लाग्यो ते सात दिवस वरस्यो. परंतु ते पाषाण जरा पण नेदाणो नहीं. नेदवाने बदले छलटो धोवाइने जपरनी धूलि सर्व निकली गइ, तेथी साफ थइ गयो. तेवारे ने सहु मेघनी हांसी करवा लाग्या. एम जे अनव्यजीव छे ते तीर्थंकरने उप देशे पण समजे नहीं. एवो नाव श्रीजिनेंडें कह्यो छे. कह्यं छे के, मुजशेलो मुजमानः,पुष्करावर्चको घनः॥जंबुद्दीपप्रमाणोऽसौ,नारदः कलिक्चयोः॥७५ हवे आर्थदेशें जन्मीने जे धर्म नथी करतो तेनो पंचोतेरमो हष्टांत.

॥ केन श्रेष्ठिजडेन हाटकमयी स्थाली ग्रहे कारिता, ग्रुला रूपकपीठ के प्रतिदिनं तस्यां रजो मुच्यते ॥ तइचार्यकदेशवंशनृवपुर्धमें च लब्ध्वा जडा, मानुष्या यदि नाचरंति सुखदं मोक्स्य कामे रताः॥ १६॥ अर्थः कोइ एक जड शेठ हतो, तेणें सोनानी थाली करावी, तथा वली एक रूपानो बाजोठ घडाव्यो ते बाजोठनी कपर नित्य सोनानी थाली मूकी ने तेमां खोबो नरी धुड नांखे. ए दृष्टांते आ आर्य देशमां अवतार ल इ मनुष्य जन्म पामीने, जे मोक्सुख देवावालो एवो श्री जैनधमें आरा धन करतो नथी, ते तहवोज मूर्य जाणवो जे माटे मनुष्यजन्म ते सो नानी थाली सरखो हे. ते पामीने जेणें धर्म न कखो, तेणे सोनानी था लीमां रज नाख्यानी परें अवतार ग्रुमाच्यो, अक्षेखे कीधो, जे कामनोग ना आशक जीवो हे,ते धर्म करी शकता नथी. कह्यं हे के, दोहा ॥ सुव एं स्थाली मनुष्य नव, पाप धूली कण जोय ॥ न कखो ते नर जाणजो, मूर्ख शेठ सम होय ॥ १ ॥ १६ ॥ इति पंचोतेरमो दृष्टांत ॥ हवे सुर्ख वेंद्य कपरे होंतेरमो दृष्टांत कहे हे.

॥ मृत्वा रोगहरो गतो यदि दिवि क्वात्वा स्वपुत्रं जडं, दत्ता तेन सुधा तदा जनकते गज्ञंति रोगाः समाः॥ पीयूषेर्विशदं कृतं निजवपूराक्वी गदैः

पीडिता, राजा विक निरामयं क्रुरु निषद्रो चेत्स निष्कासितः ॥ ७७ ॥ अर्थः-कोइ एक वैद्य ग्रुनध्यानची मरण पामीने व्यंतर देवता ययो. तेनी पाउल तेहनो पुत्र मुरख हतो. तेनें पुत्रना स्नेहें करी ते देवतायें अमृतनो कुंन आप्यो. ते अमृतनुं अंजन कथायी सकल रोग नाश पामे. माटे ते पुत्र अमृतयी जगतमां सर्वत्र अत्यंत प्रसिद्ध ययो, अने घणुं इ व्य मेलव्युं. एक दिवस ते अमृतनो घडो दासीपासें मंगावीने पोतेंज पो ताना शरीरने निर्मल कखुं. एटले अमृते करी स्नान कीधुं. तदनंतर ते गामना राजानी राणीने कांइक रोग उत्पन्न थवाथी राजायें ते वैद्य प्रत्र नें पूढ्युं, के तमारी पाज़े निरोगी यवाय तेवुं उपध हे ते खापो, खने मा हारी राणीने निरोगी करो. त्यारें ते वैद्यपुत्रें अमृत ढोली नाख़ें द्वां होवा थी निरोगी करवाने ना कही. त्यारें राजाए कोपायमान थइ तेने गाम ब हार काढी मूक्यो. दोहा ॥ अमृतघडो ते नरवपु, नाखे अकारज काम ॥ आखें जन्मे तिऐं हारी छं, मूर्ववैद्यसम जाए ॥ १ ॥ खर्णस्था छे हिप ति स रजः पादशोचं विधने, पीयूषेण प्रवरकरिणं वाह्यत्येधनारं, चिंतार ह्नं विकिरति कराद्वायसोड्डायनार्थे, यो इःप्राप्यं गमयति मुधा मर्त्त्यजनम प्रमत्तः॥१॥ कथायुगलकपरें ए काव्य जाणवुं ॥ इति बहोतेरमो दृष्टांत ७७ हवें मुर्ख शिष्यनो सत्तोतेरमो दृष्टांत कहे हे.

॥ शिष्यान्विक्त विलंबिताः कुह ग्ररुः प्रोचुश्र वीक्ष्यामहे, तन्नाटघं हि नट स्य जो जिनमते नापेक्षणीयं कदा ॥ सत्यं तेऽपि तथेति सजुरुतटं प्राप्तास्त दा कालके, नट्या सोपि ऊतं न्यपेधि तमतो नाये त्वया दृश्यताम् ॥७०॥

अर्थः—एकदिवस गुरु पोताना शिष्यने कहे हे तुं एटली वार क्यां रो कायो हतो ? असुरो केम आव्यो शिष्ये कहां जे रस्तामां नाटकीया रम ता हता ते जोवा माटे जनो रह्यो हतो त्यारें गुरुयें कहां जे आपणा जैन शाशनमां वादी नवाइआना नाटक प्रमुख जोवा निषेध्या हे. त्यारें शिष्यें ते वात कबुल करी गुरु समीपे आलोच्युं. अने नाटक न जोवानुं गर्हा करी पिडवच्युं वली केटला एक दिवस गयानंतर पाहो वोहोरवा गयो. त्यां वार लागी त्यारें गुरुयें पूह्युं के केम आज पण विलंब थयों ? त्यारें शिष्य बोख्यों के हे गुरुजी ? आज नाटकिणी नो नाटक जोवा जनो रह्यों हतो. त्यारें गुरु कहे के तें मारी पाशें नाटकीया न जोवानुं पिडवज्यों हतो

ने वली केम जोवा रोकायों, त्यारे शिष्य बोल्यों के माहाराज! में तो ना टकीया जोवा पिडविज्या हता परंतु नाटकणी जोवी पिडविजी नथी. त्या रें गुरुयें कह्युं के नाटकीया न जोवा पिडविज्या तो तेमां नाटकीपण आविगर, कह्युं हे के श्लोक ॥ मुर्खा वरा निःकपटा, ये साधवो नवंति ते ॥ आलोचयंति गुर्वते, यथा नाटकपत्रयकः ॥ १ ॥ १० ॥ इतिहर्ष्टांत ॥ हवे मूर्ख पुत्रनो अष्ठोत्तरमो हर्ष्टांत कहे हे.

॥ दातव्यं पितरो न वत्स कथितः प्रत्युत्तरं नो कदा, गेहाहु विगतो तदा जडमतिर्हारे जटित्वा स्थितः ॥ तावागत्य सुतं ब्रवीति बहुशो नोह्वाट पो द्वाटित गेहे ह्यूनरतोः कृतं त इह किं सोऽवग् युवान्यां मतमः ॥ ७ ए॥ अर्थः-को इएक माता पितायें पोताना अविनीत पुत्रने शीखामण आपीजे हे पुत्र को दिवस माता पिता शामुं बोलवुं नहीं, अने पाठो उत्तरं पण दें वो नहीं. ते पुत्रें कबुल कखुं परंतु ते पुत्र जडमित हतो. तेऐं ते वचन म नमां राख्युं. पढी एक दिवस माता पिता कांइक कामनें माटे बाहेर ग या, त्यारें पत्रवाहेथी ते जडमित वालो पुत्र घरनां कमाड़ बंध करी मांहेबे सी रह्यो. ते जेवारें मातापिता पाढा घेर आव्या त्यारे पुत्रने कह्यं के हे पुत्र! कमाड ज्याड ? कमाड ज्याड ? एम घणा शाद कस्वा परंतु ते मूढमती वालो पुत्र बोव्यो पण नइ अने कमाड पण उघाडगुं नहीं. त्यारें मातापि ता ढापरेथी चड़ी नलीयां उतारी घरमां आवीने जुए तो त्यां मूर्ख पुत्र हसतो हतो. त्यारें मातापितायें कह्यं के हे मूर्च? जाणतो हतो तो पण कां घर उघाडयुं नही ? त्यारें पुत्रें कह्युं के तमेज मने शीखामण आपी वे, जे मा बाप साम्रं बोजवुं नहीं. माटे हुं बोख्यो नहीं. ए अविनीत पुत्रनी कथा जाणवी. कह्युं हे के, श्लोक ॥ जडोपि वक्रगश्चेव, यो नवेद् चुवि मानवः ॥ स श्लाघ्यते नैव लोके, यथाचूत् श्रेष्ठिनंदनः ॥ १ ॥ ७ ए ॥ हवे पुष्य कखानुं फल अवस्य याय ते जपर जेगस्याएंसीमो दृष्टांत कहे हे.

॥ श्वाग्जर्थे पिथ गन्नता सुमुनये कलाऽष्टमं पारणं, दला स्वेष्टग्रहे ग तो हि ग्रहपो मेने वृषं देह्यवक् ॥ लाहि त्वं प्रचुरं न गेहचितो लालोपला नैर्फरान, रत्नान्याग्च कतानि वीह्य गृहिणी पित्रा तु रम्यं कतम् ॥ ००॥ अर्थः—कोइएक निर्दन जमाइ पोताना ससराने घेर याचना करवा मा

छथः—काइएक ।नद्भन जमाइ पाताना ससरान घर याचना करवा मा टे पोताना गामधी निकलीने पोताना सासराने गामे जाय हे, तेने मार्गें चालता एक ञाहमनो पारणाती मुनिश्वर मत्यो, ते मुनिनें तेणें पारणुं कराव्युं. पढी ससराना घेर तरफ चालवा मांमघो, एवामां तेना ससरानी कुलदेवीयें जइ ससराने कह्यं के, तहारो जमाइ इःखीयको तहारी पासेंची इव्य मागवा आवे हे. परंतु एऐ। मार्गमां जे धर्म कर्छुं हे, ते धर्म जो तु जने आपे तो तुं ताहरा जमाइनें धन आपजे. एवामां ते जमाइ पण सा सराने घेर आव्यो. तेवारें ससरायें कह्यं के, मार्गमां तमे जे पुख्य कख्नं वे ते अमोने आपो, अने धन लीयो. पण जमाइयें ते धर्मनुं पुष्य आप्युं न ही अने एमज पाठो वत्यो. मार्गमां नदी आवी. तेमांथी रूडा रूडा ते जदार कांकरा वीए। ज़इ तेनो कोथजो जरी मस्तकें चढावीने पोताना गा म तरफ आवे हे, ते वखत मुनिना अधिष्टित देवें ते सर्व कांकराना रहा करी नाख्या. पढ़ी जेवारें घेर आब्यो तेवारें स्त्रीयें ते कोयलो उखेली जो यो, तोमांहे रत्न दीवां. तेवारें कहेवा लागी जे माहारा बापें घणुंज रूडुं कखुं देखाय हे. जेमाटे खाटलां रत्नो खापणने खापी दीधां हे. तेवारें ते जमाइयें जाएयुं जे मार्गें धर्म कख़ुं साधुने खाहार दीधो तेना पुष्योदयथी आ फल प्राप्त चयुं जणाय हे. पही ते सर्व वात पोतानी स्त्रीने कही. मा टे धर्म कह्यो होय तो ते कोइ कार्ले पण फल आप्याविना रहेज नही. कह्यं हे के ॥ धर्मथकी धन संपजे, धर्मे शिवसुख थाय ॥ कांकर रत्न जड्या कीयां, देवें धर्मपसाय ॥ १ ॥ धम्मेण कुलप्पस्रई, धम्मेण दिवरूवसंपत्ती ॥ धम्मेण धणसमिद्धि, धम्मेण सुविञ्जडा कित्ति ॥ २ ॥ ए० ॥

हवे जे न करवा योग्य होय ते नज थाय तेनो एंशीमो दृष्टांत.

॥ श्रेष्ठघंघो यदि कंटकं हि निश्चतं नम्नं तदा सेवकान, गृहीताह पित श्र चर्म बहुलं ह्येकः किमधं तदा ॥ नूम्याञ्चादनहेतवे परपदत्राणाय तंना उधुना, नूतं नैव नविष्यतीति किम्रु नो ते पादरक्षां कुरु ॥ १॥ अर्थः नको एक मूर्व शेवना पगमां तीखो कांटो नांग्यो, तेनुं इःख श्रयुं. त्यारें शेवें पोताना सेवकोने कह्युं के, वामवामधी जेटलां चामडां वेचातां मल तां होय तेटला लावो. सोंघां होय के मोंघां होय. तेनी परवा नहीं पण चामडां लइ आवो, ढील म करो. ते वात एक बुदिमान माणसें सांनली अने शेवने कह्युं के हे शेव! एटलां बद्धां चामडां लइने शुं करशो ? एनी च व्यापार हो. ते कोण करे ? तेने शेवे कह्युं के मारा पगमां कांटो नांगो

वे माटे उपकार निमित्तें सघली धरती चामडाथी मढावी काढीयें एट के कोइना पगे कांटो नांगे नहीं. माटें चामडां लीडे आ वात सांनली ते बु िहमान माणसें कह्यं के एम कोइ दिवस बन्युं नथीं, तेम बने पण नहीं, अने बनगे पण नहीं. माटे आपना आवा गांमा विचार मूकी द्यों. अने बधा जननी वात पडती मुकीने आप चामडे करी आपना पगनुं रक्षण करो एज योग्य हे. ते वात शेवनें गखे जतरी ने तेमज कह्यं. कह्यं हे के, श्लोक ॥ चरणे कंटकाइमें, श्रेष्ठिना चिंतितं तदा ॥ जंतुत्राणाय सचमें, ह्वींमा हादयाम्यहम् ॥ १ ॥ दोहा ॥ अणहुंती की नहीं, की जें होय सु जाण ॥ सेवकें साहेबनें कह्यों, तब समज्यों ते जाण ॥ १ ॥ ७१ ॥

हवे नव्यने तरत उपदेश लागे तेनो एक्याशीमो हष्टांत कहे हे.

॥ राज्यं धर्मरुचेर्दरौ न च ललौ गन्नामि पित्रा समं, जूला तापसकौ गतौ यदि वनेऽमावास्यकायामवक् ॥ जेत्तव्यं नहि पत्रकादिकमृषिं दृष्ट्वा सु धर्मेन्नको,रह्यं त्वेकदिनं च सोऽनिशमहं श्रुत्वा प्रबुद्स्तदा ॥०१॥ अर्थः-जितशत्रु नामा राजायें पोताना धर्मरुची नामना पुत्रनें राज्य आपवा मांमग्रुं, परंतु तेणें राज्य लीधुं नहीं. अने कह्यं जे हे पिता, हुं पण तमा री सार्थे खावीश, खने तापस थइस. पढ़ी ते पिता खने पुत्र बेहुजएा मु नि थया. वननेविषे रहे हे. एकदा अमावास्या आवी. त्यारें मोहोटा मु नियें कह्यं के, आज अमावास्या है. माटे वनमां जई फूल पत्र चुंटशो न ही एटले अनाकुटी करजो. ते वात धर्मरुची सांजले हे, अने वनमां च मण करे हे. त्यां वनमां जमतां जमतां धर्मरुचीयें एक साधुनें दीहा. सा धुने जोइने जला धर्मनो वांबक एवो धर्मरुची कहे बे, जे महाराज ! आ जें अमावास्यानो दिवस हे, माटे तमो पुष्प फल पत्र चुंटशो नहीं हो ? एवुं साजली साधु बोख्यों जे हे धर्मरुचि ! अमारे सदा अनाकुटी हे. अमो कोइ वारें पण पुष्पादिकने चूंटता नथी. ए उपदेश सांजली धर्मरुचि अ त्यंत प्रतिबोध पाम्यो. कह्यं है के, श्लोक ॥ गुरूपदेशतो धर्म, केचिज्ञानंति मानवाः ॥ धर्मरुचेरिवान्येच, जातिस्मरणङ्गानतः ॥ १ ॥ ७२ ॥

मनना परिणाम कपर प्रसन्नचंड् राजानो व्यासीमो हष्टांत कहेते.

॥ नत्वा प्रश्नक्षिगीमिष्यति नृपो वीरं कुहा प्रज्ञति, सोवक्तं ह्यधुनैव सप्त
मज्जवि हेतोः कुतो हृइणात् ॥ पश्चादाग्रु पुनर्दिवाद्यचरमे देवाः क यांत्युत्सवे,

लब्धं तेन सुकेवलं जिनवचः श्रुत्वैति शं श्रेणिकः ॥ ए श। अर्थः एकदा श्रेणिक राजा श्री माहावीर प्रचनें पूछे हे के हे माहाराज ? हमणां प्रस त्रचंइ राजा दीक्दा खेइ वनमां काउसग्ग ध्यानमां सुर्य सामी दृष्टी राखी ने एक पर्गे उना हे, माटे जो हमणां आउखो बांधेतो क्यां जाय ? नग वाने कहुं जे प्रथम नरकें जाय पढ़ी बीजी त्रीजी चोची पांचमी ढ़िही ख ने यावत सातमी नरकें जाय. एम क्रमे क्रमे पूजतां कह्यं त्यारें श्रेणिकरा जा फरी पूर्वे के हे माहाराज, एहवा तपस्वी ज्यारें नरकें जाय त्यारें धर्माचरण कोण करहो ? ए वात सांजली श्री वीरजगवान कहेने के ताहा रा सुमुख अने इर्मुख नामना जे दूत तेना मुखनां वचन सांनलीने, मन नुं संयाम करे हे तेथी नरकें जाय वैली पाहुं पूह्युं के हे माहाराज! हमणां आयु बांधें तो ते क्यां जाय तेने नगवानें कहां के प्रथम देवलोकें 'जाय. एम बीजे, त्रीजे, यावत पांचमा अनुत्तरिवमान पर्यत कह्यं. एवामां नगवानना समवसरणयी देवता जवा लाग्या. तेवारे श्रेणीकें पुढ्युं के देवता किहां जायने ? तेने नगवानें कह्यं के प्रसन्नचंद राजक्तवीने केवलकान उपन्य ने. तेनो उत्सव करवाने अर्थे जायहे त्यारे राजाये मनमां चिंतव्युं जे नगवं तनां वचन तो अन्यया याय नहीं फरतापण नहोय, निरधार वचन हो य पण पहेलो तो नरकमां जवा कह्यो. अने पढ़ी देवलोकमां जवा कह्यो वली हमणां केवलकान उपनुं ते संदेह टालवा नगवानने पूबगुं तेवारे न गवान कहे के प्रथम जे में कहां के नरकमां जरो ते ताहरा इमुख अने सुमुख दूतनां वचन सांजली मनोयुद करतो हतो तेणेकरी नरकनो ज नार थात पण ते मननो संयाम करते थके हथिश्रार सर्व नांखी रह्यो त्यारे विचाखुं के जे अवसरें जे आव्युं तेज दिषयार माटे हवे मारा माथानो टोप है तेज नांखुं. एम धारी माथे हाथ घाट्यो तेवारे माथोतो मुंनित केश द्धंचित हे माथे टोप तो देखाएं नही. तेवारे विचाखुं जे अरे आग्रं में तो दीक्ता लीधी ने अने आ संयाम ते वलीशो मांम्यों ने. एम चिंतवी म नःसंयामयी उसरवा मांमग्रुं. त्यारे देवलोकें जाय एवा परिणाम यया ए म करतां खनित्य नावनायें चढ्यो जे खां कोना पुत्र, कोना वाम, कोना गाम, केना कोट, कोहोनुं राज्य, एमां माहारुं कांइ नथी हुं ए सर्व वोसरा वुंडूं अने वीर नगवान पासें जश्ने एकमे लाग्युं ते आलोचुं एम नावना

यें मनना पर्याय पलटाणा के तुरत केवलकान उपनुं. ए वात सांचली श्रे णिकराजा प्रसन्न थया कहां हे के ॥ सप्तमायुर्दलं कत्वा, प्रश्नचंड्नुपो यथा ॥ संक्षित्वा मनसा सद्यः, केवलं लिधतो वरं ॥१॥ मन एव मनुष्याणां, का रणं बंधमोक्त्योः ॥ यथा आलिंगिता कांता, तथा नालिंगिता सुता ॥ सप्तमे नरके याति, जीवस्तं इलमत्स्यवत् ॥ १ ॥ इति व्यासीमो दृष्टांत ॥ ए३ ॥ हवे जे मुर्ख होये ते पोताना अवगुण न देखे तेनो ज्यासीमो दृष्टांत.

॥ लिप्त्वोवीं रिवमर्चयत्यविरतं स्वे गोमयेनाबला, विद्युक्तेन किलैकदा ह कुरुते नत्वार्चनं वा रवेः ॥ नासायं करयुग्ममेत्य दिवसे ड्रांधमायाति सा, हायं गूथमयः खगोदय इतोऽजूत्स्वागुणोऽक्रािय नो ॥ छ ॥ अर्थः – कोइ एक स्वि नित्य प्रतें गायनां ढाणें करी घर लीपीने पढी नित्य सूर्य देवने पूजे सामा हाथ जोडीने दंमवत प्रणाम करे. एम प्रति दिवस करतां एक दिवसें उतावलें पाढली रात्रें ढाणने बदले हाथमां विष्ठा आवी तेणें करी घर लीपी सूर्यने दंमवत करतां हाथ जोडतां हाथ नासिका पासें आव्या; तेमांथी ड्रांध आवी, त्यारे कहेवा लागी के हा इतिखेदे आज जे सूर्य उ दय पाम्यो छे, ते विष्ठामय उग्यो छे, एवी गाल दीधी वली कहेवा लागी के, दहाडे दहाडे सेवा करतां पण पापीनो जण्यो साहामो ड्रांध गंधवा लाग्यो एवी रीतें खोटो सूर्यने दोप आप्यो. परंतु पोतानो प्रत्यक्त दोष हतो तेनो विचार न कखो. तेम जे मूर्ख होय तेपण पारका अवग्रण देखे, पण पोतानी चूल कांइ देखे नहीं! कह्यं छे के श्लोक ॥ कर्मणां दीयते दोषो, न दोषो दीयते शिवे ॥ यथेकया पुरा दत्तः, सूर्यस्य सूर्यनक्तया॥१॥ हवे नरसा साथे निरसं थावुं नहीं तेना कपर चोखाशीमो दृष्टांत.

॥ कलोत्सर्गमलं शिलोपरि मुनिस्तस्यौ हि निर्णेजको, वत्तयागत्य वि मुंचतां पटग्रुचिं कुर्वे ततो जाषणम् ॥ दूरे तेन कतस्तदार्षिरजको लम्मौ गले नेदको, निर्मेथस्य च तस्य नो यदि तयोमी रक्ष जाने न तं ॥०५॥ अर्थः— एक निद कांवे शिला कपर कोइ एक मुनि काउसग्ग ध्यानें उनो रह्यो ह तो, तेवामां एक राजानो धोबी आब्यो, तेणे ते साधु ने कह्यं के आ शि लाषी उठ, माहारे आंही वस्त्र धोंवां हे. तो पण ते मुनि कांइ बोल्यो न हीं. त्यारें ते धोबियें रीश्यी ते मुनिने धक्को मारी नीचें नांखी दीधो ते षी ते मुनिने पण रीस चडी, अने बेहुजण मांहोमांहे बाथोबाथें आब्या. तेमां धोबियें मुनिने माखो, अने नीचो पाडी तेनी बाती कपर चडी बे वो. त्यारें ते मुनियें शासन देवतानुं स्मरण कखुं, के हे देव! छुं मारी रक्ता करः त्यारें देवें आवी कछुं के, आमां हुं कोनी रक्ता करं? जेमाटे बेहुमां साधु ते कोण, अने धोबि ते कोण हे, ते कांइ जणातुं नथी. कछुं हे के श्लोक ॥ कुत्र गतोसि चो देव, वदेदेवस्तदा मुनिं ॥ मुनिरजकयोर्जेदो, ज्ञाय ते न मयाधुना ॥ १ ॥ कोयती रजको वा कः, संतोषःपोषवां हाकः, ॥ कः पूज्यो वाह्यपूज्योस्ती, त्येवं चेदो न हत्र्यते ॥ १ ॥ ०५ ॥

हवे चार वस्तु हे ने नथी ते जपर पंचाशीमो हष्टांत कहे हे.

॥ नूपोमात्यमवोचदानय पुरात्त्वंत्विध्याति कि, मस्त्यस्त्यादिमम िस्त नास्त्यवरकं नास्त्यिस्त नास्तीतरः ॥ नास्ति श्रेष्ठिपणांगने मुनिवरो व्याधो नृपं दर्शिताः, तान्वीद्याद किमत्र चापरचवे इष्टव्यमेतत्त्वद्ध ॥ ए६ ॥

अर्थः-एक राजा प्रधानने कहे हे जे, नगरमांथी चार वस्तु लाव. त्यारें प्रधानें कहां जे ते वस्तुनां नाम मुजने कहो. ते वखतें राजायें समस्या कही. ते जैम के प्रथम एक वस्तु तो है ने हे, बीजी वस्तु है ने नथी, त्रीजी वस्तु नथी ने हो, अने चोथी वस्तु नथी ने नथी, ए चार वस्तु ल इ आव्य. तेवारें प्रधानें एक होत, बीजी वेक्या, त्रीजो साधु, अने चोयो वाघरी, ए चारेने तेडी राजा प्रत्यें चारे वस्तु देखाडी, ते वस्तु जोइने रा जायें प्रधानने पूढ्यं के, ए ग्रं आण्युं. त्यारे प्रधान कहे हे के, आपें कहे ली चारे वस्तु आणी हे. तेमां आपना चारे प्रश्ननी अनुक्रमें चारे वस्तु जाणवी. जेम के प्रथम ज्ञेवने हे ने हें, बीजी वेश्याने हे ने नथी, त्रीजा साधुने नथी ने हे, चोथा वाघरीने नथी ने नथी, एम इहनव परनवतुं कह्युं. तेवारें राजा समज्यों जे ए प्रधान बुद्धिवंत है ॥ शेव हमणां पण सुखी हे, अने दान आपे हे, माटे परनवें पण सुख पामशे. तथा वेश्या ने हमणां ने परंतु परनवें नथी. त्रीजा साधु ने हमणां नथी, ने परनवें पामज़े. अने वाघरीनें हमणां पण नथी, ने परनवें पण मलज़े नहीं. क ह्यं हे के, श्लोक ॥ सेवकस्य परीक्लाये, राङ्गा कथितमानवः ॥ समस्यया स्य चत्वारि. शीघं वस्तूनि मे पुरात् ॥ १ ॥ दोहा ॥ सेवकसुबुद्धि समजीने, **ञ्चाणी वस्तु ज चार ॥ इह नव पर नव कारणें, सुख**ड़ःख तणो विचार ॥ २ ॥

ह्रवे सांजलतां कटुक पण हितकारक थाय एवा वचननो ढाशहमो दृष्टांत.

॥ वीरांते परिवारयुक्तनृपतिं दृष्ट्वा सुरो जल्पति, वीर त्वं मर जूप जीव यदि वा जीवानय त्वं नव ॥ मा त्वं कालिक जीव रे नरपतिः श्रुत्वा सकोपस्त दा, वीरोऽहं ह्यमृतेप्यधो दिवि वृषे पापे त्वधो यात्यतः ॥ ए ७ ॥ अर्थः-श्रीमाहावीरस्वामीने वांदीने तेमनी पासें परिवार सहित वेवेला श्रेणिक राजा वगेरेने जोइने, एक समिकत दृष्टि देवता बोख्यो के हे वीर! तुं मर पढ़ी राजाने कहां के हे राजा ! तुं चिरंजीव, पढ़ी अनयकुमार नें कहां के तुं जीव नावेतो मर, वली पासें घेंतेला कालिकसूरिया कसाइ ने कहुं के तुं मरीश मा, अने जीवीश मा. आ वात सांनली श्रेणिक कोधायमान थयों, अने कहेवा लाग्यों के अरे, ए कोण मिथात्वी देवता है ? तेने नग वानें कहां के ए समकितदृष्टी देव है त्यारें राजा कहे है के तमनें मर एवं वचन केम कहे हे ? त्यारें नगवानं कहे हे जे, हेराजा! मुजने कहां जे तुं मर, तेनो अनीप्राय ए वे जे तमो मरशो तो मोक्त जाशो. वली तुजनें कहां जे चिरंजीव तेनो अनि प्राय एने जे, तुं मरीश तो नरकें जाइश, मा टे जीवतो रहे. तेटलुंज सुख. वली अनयकुमारनें कहां जे तुं मर नावेतो जीव तेनो छानिप्राय ए हे जे मरशे तो देवलोकें जाशें छाने जीवशे तो धर्माचरण करज़े. अने कालिकसुरिय नें कह्यं के तुं मरीशमां, अने जीवी शमां, तेनो अनिप्राय ए हे जे जो जीवशे तो नित्य पांचशे पांचशे पामा मारशे. अने जो मरशे तो नरकमां जाशे एम समजवुं माटे एएो जे क ह्यं हे ते सर्व खरुं कह्यं हे ए सहुनुं हित वांच्चक हे. कह्यं हे के, श्लोक ॥ श्रीमद्वीरजिनादीनां, चतुर्णी सदिस मतः ॥ देवेनानिष्टमिष्टं वा, शब्दं श्रु त्वा स कोपवान ॥ १ ॥ जूपस्तदा जिनोक्तस्तं, सत्योकं सत्यवाद्यसौ ॥ ग्रुनेज्ञकः सुवक्ताच, मदादीनां विशेषतः॥ १ ॥ इति दृष्टांत ॥ ए७ ॥

हवे स्त्री चरित्र जपर राजा नर्तहरीनो सत्याशीमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ नत्रींशस्य विशा स्त्रियेऽमरफलं नृत्यस्य दत्तं तव, वेश्यायास्तु पतेश्व ते न हि फलं झात्वापि प्रष्टा वशा ॥ तत्काख्याहि तया यथास्ति कथितं श्रुत्वा ह चेद् धिग् नवं, त्यक्त्वा राज्यपदं गतो हि विपिने नती ह्यनूत्तापसः ॥ ए ए ॥ अर्थः – नतिहरी नामा राजानें को १ एक ब्राह्मणे अमरफल आप्युं हतुं, ते फल राजायें पोतानी प्राणविद्यना पिंगला नामनी राणीनें आप्युं. ते राणी

वला अश्वपालक साथें व्यन्चित्तर करती हती, माटे ते तेने प्राणिप्रय हो वाषी ते फल तेने आएयुं. अने अश्वपालें वली बीजी पोतानी राखेली वे स्या हती, तेने आएयुं, अने ते वेश्यायें उत्तमफल मानीने वली पांचुं न तेहरी राजाने आएयुं. ते जोइने राजा विस्मय पाम्यो, अने वेश्याने धम की दहने पूढ्युं के आ फल तुं क्यांथी लावी? तेवारें वेश्यायें खरेखहं अश्वपालनुं नाम कही दीधुं पढ़ी अश्वपालनें राजायें पूढ्याथी तेणे कहुं के मने खबर नथी. पण ज्यारें तेनें मारवानी तैयारी करी त्यारे भूजतो भूजतो कहेवा लाग्यो के, तमारी राणि पिंगलायें आ फल मने खावाने आ एयुं हतुं पण ते फल में मारी राखेली नायकानें आएयुं छे. अने नायकायें तमने आएयुं. आवी वात सांजलीनें राजा विचारवा लाग्यो के संसार खार्थ नो छे, एम मानी वैराग्य थयाथी जोग यहण करी, राज्य डांमी, हमा आदरी आत्मसाधन करवा वनमां तापस थइने घणी तपस्या करवा ला ग्यो. कह्युं छे के, श्लोक ॥ यां चिंतयामि सततं मि सा विरक्ता, साप्य न्यमिन्नति जनं स जनोन्यसकः ॥ अस्मत्कते च परितुष्यित काचिदन्या, धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च ॥ १ ॥ ००॥

धर्माचरण थोडुं थइ शके तो ते पण करवुं तेनो अवधाशीमो दर्शत.

॥ मिष्टान्नं परमंदिरं जडमितर्जुक्ला गतः खालये, आगत्यालयजं वशा स्र वद किं सोऽवक्तदन्नं मुखे ॥ नादयन्याहिन खादिमादि रुचिरं छकं तु यिस्म नमया, नर्जर्जीविस सा तदा हठवशात्सोस्तं गतस्तप्टृषं ॥ ए ए ॥ अर्थः – कोइ एक मूर्य कोइ पारके घेर खाजा. लाहु, जलेबी, प्रमुख मिष्टान्न जमी आव्यो. पठी बीजे दिवसें पोताने घेर जमवानी वेला थइ, त्यारें ते नी स्त्रीयें आवीने कह्युं के हे खामी! रसोइ तैयार थइ माटे जमवा छतो. त्यारे तेणे कह्युं के मिष्टान्न होय तो जमवा छतुं. स्त्रीयें कह्यु के ए तो को इक दिवसें पारकें घेर मिष्टान्न जमवानुं मले परंतु आपणे घेर तो सामा न्य अन्नपान मले, तो पण तेणे कह्युं के मने तो मिष्टान्न मलको तोज जमीश. जे मुखें खाजा, लाडु, घेवर खाधां ते मुखें खुखुं अन्न न खाछं. प ही तेने सर्व कुटुंबनां लोकोयें कह्युं के तमो घेर जमीने जीवता रहेशो, तो वली कोइक दिवस मिष्टान्न पण पाडुं मलको. पण जीवता न रहेशो तो मिष्टान्न पण क्यांथी खाशो. एम घणोए समजाव्युं परंतु इरायही मूर्वें ते

वात स्वीकारी नहीं, छने जम्यों पण नही, हवधी उपवास करी वेवटें म रण पाम्यो. माटे धर्म जे कांइ थाय ते करवुं. पण एम छायह राखवो न ही जे छाटलुंज धर्माचरण थइ शके तो करवुं कह्यं वे के, श्लोक ॥ येना ननेन मिष्टान्नं, निक्तं मिय काबले ॥ तिस्मिस्तु वदने नोज्यं, कथमिस्र रसोज्जितं ॥ १ ॥ एवं सोपि नव्यमुक्तः, कदायहयसितो नरः ॥ छंते संवर संजातो, इःखनाजननाजकः ॥ १ ॥ इति छाठ्यासीमो हष्टांत ॥ ७ए ॥

हवे हंस काक अने बगलां सरिखा साधुनो नेव्याशीमो हष्टांत.

॥ गोचर्यां क गृहे गतेन मुनिना नांन्नं गृहीतं ततो न्येनानिं यित आ दिमोऽपरमुनिः पप्रज्ञ किं वो वृषं ॥ गेहेशा सरला त्रिधा वदति तां हंसेकद्युव क्रवत्, हंसानः प्रथमो परो हिकसमो, बाले बकानोऽप्यहम् ॥ए०॥ अर्थः-कोइ एक साधु गोचरीयें कोइकने घेर वोहोरवा गयो, त्यां ते यहस्थनी स्त्री यें वोहोराववा मांमधुं, त्यारे ते सांधुयें असुजतानी शंका आणी वहोखुं नहीं, एमज चाल्यों गयो. पत्नी बीजों साधु वोहोरवा आब्यों तेणे कांइ विचार न करतां ते अन्न लीधुं तेने वोहोरावनारी स्त्रीयें कह्यं जे पेहेलो साधु आव्यो हतो तेणे तो वोहोखुं नहीं, त्यारें ते बोध्यों जे ते साधु वग हो, एम करी तेनी निंदा कीधी. पढ़ी वली त्रीजो साधु वोहोरवा श्राव्यो. तेने पण ते स्त्रीयें अन्न वोहोरावीने पत्नी पूत्रवुं जे हे साधु, तमारो शो धर्म हे ? जे कारण माटे पहेलो साधु आव्यो तेणें तो वोहोखुं नहीं एमज चाय्यो गयो. अने बीजो आव्यो हतो, तेणे वाहोखुं, अने आगलासाधुनी निंदा करी. तेनुं कारण ग्रुं ? ते कहो. त्यारे ते त्रीजो साधु कहेतो हवों के हे बाइ? सरल स्वनावनी धिएयाणी, श्रीजनशा सनमां त्रण प्रकारना साधु हे. तेमां एकतो हंशसरिखा, बीजा काकसरि खा, त्रमे त्रीजा बगलां सरिखा, तेमां प्रथम जे आव्यो ते साधु हंससरि खो जाएवो. बीजो साधु आच्यो ते काक सरिखो जाएवो, अने हे बाइ? त्रीजो हुं आव्यो ते पोतानुं पेट नरनारो बगला सरिखो हुं. श्लोक ॥ चक्रांगकाकबकरूपथरा विचित्राः, संत्यत्र शासनबसे मुनयो बसेन ॥ श्रंत र्बहिविंशदनावयुता मलीना, ह्यंतर्बहिर्नविशदोनिसतोममाहक् ॥ १ ॥ए०॥ जे मनुष्य नवपामी धर्ममां आजस करे ते पश्चात्ताप पामेतेनो नेवुंमो द्रष्टांत. ॥ निःस्वः स्वित्सदसीश्वरस्य हि गतो राङ्गा तुतस्मै वरो, दत्तो लाहि गृहा

यदी हिस धनं गेहे गतोऽवक् स्वियं ॥ तं साप्यानय खादयामि पुरतो हुक्त्वा प्रसुप्तस्तदो, ज्ञाप्याप्रेष्यत नाट्यमेक्दत तु नो तन्नाप्तमस्ते रवी ॥ ए१ ॥ अर्थ:-कोइ एक पुरुष जन्मदरिइ। हतो ते एक दिवस राजानी सनामां मागवा गयो, तेने राजायें पूठ्युं के तुं कोण है ? तेणे कह्युं जे हुं जन्म दरिइ। बुं. त्यारें राजायें तेने वर आप्युं जे आज सांजे सूर्य अस्त पामे, त्यां सुधीमां मारा चंमारमांथी जेटलुं धन तहाराथी लइ शकाय तेटलुं ध न तुं लइ जा. एवां राजानां वचन सांजली ते मूर्ख दरीड़ी पोतानी स्त्रीनें पूरवा माटे पारो घेर आव्यो, अने स्त्रीनी आगेल राजायें कहेली वात कही. त्यारें स्त्री बोलीजे तमें ते धन तरत लावो. त्यारें दरिई। बोब्यो जे पेहेलां जमीने पढ़ी जाइश. त्यारें स्त्रीयें तरत रसोइ तैयार करीने तेने ज माड्यो. जमी लीधा पढ़ी कह्युं के मारुं पेट नराणुं हे तेथी एक निज्ञ करीने पठी जाइश, एम कही सुतो घणीवार थइ जाग्यो नही. त्यारें तेनी स्त्रीयें जगाडीने मोकव्यो. पण रस्तामां जतां कोइक नाटक यतुं हतुं ते जोवा उनो रह्यो. तेने जोतां जोतां सूर्य अस्त पाम्यो, तेथी धन पाम्यो नहीं खाखो जमवारो सोच करतो दरिइीनो दरिइीज रह्यो. तेम जे पुरुष इर्जन एवी मनुष्य जन्मनी योगवाइ पामीने धर्म खाचरतो नथी, ते मूढ ने ते जाग्यहीन पुरुषनी पेवें जवांते पश्चाताप थाय हे. कह्यं हे के ॥ नृजन्म इर्जनं प्राप्य, ये धर्म नाचरंत्यय ॥ ते नाग्यहीनवत् मूढा, शोचयंति नवांत के ॥१॥ राज्ञोक्तं मूढ लाहित्वं, श्रीगृहात्स्वं तवेज्वया ॥ नादपत्प्रमादतो सूढः, धर्मोऽप्येवं सदा विधिः ॥ १॥ राजा जिनेश्वरो ह्यत्र, नृजवः कमलागृहम् ॥ इव्यं दानादिकं क्षेयं, मार्त्तमश्रायुरेव च ॥ ३ ॥ विषयादिषु ये सक्ता, स्तथेव कोतुकादिषु ॥ ते हारयंति सर्वस्वं, मानवा मानमोहिताः ॥ ४ ॥ ए१ ॥ ह्रवे जव्यजीवें कोइपए नियम खेवो ते विषे एकाएंमो दृष्टांत.

॥ क्रोधः स्याद्यदि सप्तप्रप्रकपदं देयं गृहीतं व्रतं, गेहे नूरिदिनात्समाग तवरः शय्यां स्वपुत्रस्त्रियौ॥सुप्तौ वीद्य वधाय प्रष्ठचितःपुत्रस्तदा बोधितः, मातर्विक्ति हि सोपि हंति वचनं श्रुत्वा प्रशांतोऽनवत् ॥ ए२ ॥ अर्थः – वंकचूर्ले गुरुने मुखें एवं व्रत लीधुं के जेवारें कोइनी जपर क्रोध जपजे, तेवारे व सात पगलां पावा नरीने पत्नी साहामां माणसने प्रहार करवो। एवं नियम लक्ष्ने परदेश गयो पत्नी घणे दिवसें घेर आव्यो. ते वस्तत पो

तानी स्त्री अने पुत्र ए बेहु एक शय्यामां सुतां हतां तेने जोई कोध चड्यो तेवारे खक काढीने मारवा चाव्यो. तेटलामां पच्चकाण लीधेलुं सांन्रखं. पढी तुरत सात मगलां पाढो वव्यो तेटलामां ढोकरो मा मा एम कहेतो जाग्यो अने कहेवा लाग्यो, के हे माताजी, मुजने कोइ एक पुरुष मारवा आव्यो हे. ते सांनली वंकचूलने कोध उपशांत थइ गयो, अने कहेवा लाग्यो, जे अरें में स्त्री अने पुत्रने माखां हत तो केटलुं पाप लागत ? अने पश्चात्ताप करतुं पहत परंतु में लीधेलुं पच्चकाण आहुं आव्युं, तो कोध फल न लाग्युं, अने कोइनो घात पर्ण थयो नहीं. ते माटे जव्य जीवें कां इपण नियम अवस्य लेवो. कह्यं हे के ॥ येन यश्चापि हि स्तोकः, कालस्य नियमः कतः ॥ तस्यापि निष्कलो न स्यात्, सप्तप्ट कचोरवत् ॥१॥ए२॥ हकायनी हिंसा न हमाय तो एक त्रसकायनी हांमवी तेनो बाणुमो हप्टांत.

॥ जूपो विक्त जनान् न याति पुरुषस्तं हिन्म योप्युत्सवे, श्रेष्ठेः पद् न गताः सुता हि पितरौ हंत्याग्र तान्नो तदा ॥ मुंचालाहि धनं तमाहतुरमूं स्तवं नाथ पंचाव्धिकं, त्रिष्ट्येकं हि सुतं विम्रुंचित तथा धर्मानुयोगे सुनिः अर्थः-कोइ एक राजा नगरलोकनें कहे वे के दुं उत्सव मांहं बुं. माटे गामना लोकमांहेलो जे कोइ ते उत्सव जोवा नहीं आवशे, तेने हुं मारीश. एवं सांचली सर्व लोक उत्सव जोवाने गया, पण एक शेवना ब पुत्र गया नहीं, ते वात राजायें जाणी. तेवारें बए पुत्रने बांधी मगाव्या. वलतां तेना मात पिता आव्यां अने तेणे राजाने आजीजी करी पुत्रोने बोडाववानुं कह्यं, पण राजायें मान्युं नही. तेवारें धन त्रापवानुं त्रामंत्र ण कखुं, तोपण राजायें मान्युं नहीं. त्यारें पांच पुत्रोनें मूकवानुं कह्यं, ते पण राजायें न मान्युं. तेवारें चारने मूकवानुं कह्यं. पठी त्रणने, पठी वे ने एम विनंती करतां बेवट एक पुत्रने बोडवानुं कह्यं. त्यारें एक पुत्र रा जायें जीवतो मूक्यो. तेम सांधु पण धर्मनो उपदेश करी कहे के ठकाय जी व मारवानुं बहुज पाप हे, माटे ह काय जीवनी रक्षा करवी. तेम हतां जो ब काय जीव उगरी शके नहीं,तो बेवट एक त्रस जीव तो अवस्य उगा रवाज जोश्यें. कह्यं वे के, श्लोक ॥ संयतिः पितृसहक्तः, षट्रजीवाः पुत्रस न्निनाः ॥ श्राद्याः नृपतयो क्षेयाः, कुटुंवं मुत्सवानिधम्ः ॥ १ ॥ घ्रंति पट्टका यजीवान्, कुटुंबाश्च श्रदालवः॥ एषां साधो सदोब्वेद्यो,रहेकं रह्माव्नतः॥ १॥

ग्रुनमां सहु सहाय करे पण अग्रुनमां न करे तेनुं ज्याणुमो दृष्टांत.

॥ मुष्ट्यामंत्रति निकुमीट्र यदि कणं नो लाति किं मानवं; तं मे देहि तहाह चेन्यसचिवेशाये ग्रहेशोदितं ॥ प्रोचुस्ते ब्रियतां परान्हि कथितं व्या जेन नाशं गतो, दंमं तेस्ति तदार्षिता स्वमहिला कार्यं न मे वाक्यतः ॥ए४॥

अर्थः-को एक ज्ञोतने घेर एक जीखारी जीख मागवा आव्यो. ज्ञोतें ते ने मुठी जरी अन्न देवा मांमयुं. आमंत्र्यो पण तेणे जीधुं नहीं. तेवारें शे वें तेने कहां के हां तुं घरना माणसोने तक जवाने विचारतो होय तो कहे? नीखारी बोद्यों के जो हतें पड्यों ती हुं मनुष्य पण जइ जानं, एम कही ज्ञोवना घेर त्यागल सुतो. तेवारें गामना अधिकारी जे ज्ञोव, कोटवाल, मेता, प्रधान, व्यवहारिया तथा राजा प्रमुख सर्वेनी आगल जइने होतें कहां के. ए जीखारी घरनां माणस मागे हे, नहीं तो घर आगल मरवाने तैयार थयो है. तेने सघलायें कह्युं के मरे तो मरवा द्यो. एम ते ज्ञेहें सर्वना मनना नाव लइ लीधा. फरी क्रुऐकने आंतरें सर्वनी आगल जइ उल करीने कह्यं के, एतो मरण पाम्यो ते सांनली सर्व कोइ बोख्यो के तहारे माथे मनुष्य माखानुं खून बेतुं माटे दंम आपतां पण जगरशो नहीं. ते ज़ेव पार्बो घेर आवी पोतानी स्त्री ते जीखारीने देवा जाग्यो. तेणे कह्यं के माहरे स्त्रीनो खप नथी. महारे तो ए मा बेहेन समान हे. एम सहु ग्र नना सहायक हे. पण अग्रननो को इसहायक नथी।। ग्रुने कार्ये हि सर्वस्य, सर्वे संति सहायकाः ॥ अग्रुने न युतः कश्चित्, धनदश्रेष्ठिनी यथा ॥ १ ॥ हवे अवसरें प्रश्न पूठवों ते जपर चोराणुमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ स्वर्गीरित वनं तदा वनपितः पुष्ठं गृहीत्वा गतो, ऽन्येयुः स स्वगृहे च प्रोचुरिह तं कात्त्याह नो मोदकान्॥ स्वर्थामो हि समं त्वया वरमतस्तत्ष्रप्रज्ञ ग्राययु, स्तन्मानं किमुदर्शितं पिष करो विस्तार्य सर्वेऽपतन् ॥ ए५ ॥ अर्थः—एक वाडीमांहे स्वर्गथी धेनु आवी, नित्यप्रत्यें चरी जाय, पण वा डीना धणीनें खबर पड़े नही. एक दिवस वाडीनो रक्तक वाडीमां रह्यो हतो, तेवामां स्वर्गथी गाय आवीने चरवा मांमी. ते ज्यारे चरीने पाढी स्व गें जवा जागी, त्यारें ते रक्तक गायने पुढडे वजगी तेनी साथें स्वर्गें पों होच्यो. वजी बीजी रात्रीयें ज्यारें ते गाय पाढी आवी त्यारें तेनी साथें ते क्यारे ननरी अपत्यों अने घेर गयो. तेने सह कृटंबे प्रद्यां जे द्वांन्यां अपरे हतो ? तेणे कहुं के हुं स्वर्गें गयो हतो तेने सर्वे पूर्वां के त्यां तुं हां खातो हतो तेणें कहुं के हुं महोटा मोदक खातो हतो अने सुखी हतो. तेने कुं टंबी सर्वे कहेवा जाग्यां जे अमोने पण तिहां ज्ञां पठी बीजे दिवसें सर्वे कुटंबी आवी वाडीमां बेगां. पठी गाय आवी अने चरवा मांफी. ते ज्या रें चरी रही त्यारे ते गायने पुंठडे पहेलो पोते वलग्यो. तेना पगे बीजो वलगो, वली बीजाना पगें त्रीजो वलगो, एम सर्वे जण वलग्या अने गाय आकारों चाली, तेनी पठवाडे सहु खेंचाता चाव्या. ते जेवारें अर्६ मार्गे आव्या. तेवारें जेणे सर्वथी उपरें गायचुं पुठडुं जाव्युं हे, तेने एकजणें पूठां के तमें स्वर्गमां लाडु खाधा हो केवडा महोटा हता? ते वारें ते लाडुनो प्रमाण देखाडवा माटे पोताना हाथ पोहोला करतांज सर्वजण नीचे धर तीयें पडी मरण सरण थइ गयां. माटें वगर समयें प्रश्न पूठवुं नहीं. कहुं हे के, श्लोक ॥ विचार्य वेलां वक्तव्यः, संदेहो न यथा तथा ॥ दृष्टांतोऽत्र स्वर्गधनुः, पुञ्चलमो जित्रजः ॥ १ ॥ सर्वेऽपि लोजिनो यत्र, मंदबुिं गुरुं श्रिताः ॥ तत्र तैर्नानुगैर्जाव्यं, तां श्रुत्वा मोदकां कथां ॥ २॥ एए ॥

हवे धननो गर्व न करवा जपर पंचाणुमो दृष्टांत कहे हे.

॥ कश्चिचाढ्यनरो दरिइपुरुषं हास्यं च मार्गेऽकरोत्, दला तालपुटं नि
रीह्य निकटे धीरस्तदा विक तं ॥ किं रे इव्यमदं करोषि हि गुरोर्वाक्यं श्रुतं
नोल्या, पश्य त्वं जलयंत्रके जलघटी तद्दक्षवे स्यादनम् ॥ ए६॥ अर्थः—
कोइएक धनवान् पुरुष हतो. ते कोइ दरिइी पुरुषने मार्गमां जोइ मनमां
अहंकार आणी ताली दइ हसवा लाग्यो. ते वखत कोइक पंिनत पुरुष
तेनी पासेथी चाल्यो जतो हतो, तेणें ते धनवानने कहां के तुं मूर्ख दे
खाय हे. जे माटें इव्य नो अहंकार करे हे. पण तें सुगुरुनां वचन सांच
त्यां देखातां नथी. तेम कोइ चला माणसनी तें संगत करेली होय एम
पण देखातुं नथी. जोके चाइ अरहहनी घडी अरहह फरवाथी पाणीयें
चराय हे अने वली खाली थाय हे तेम धन पण अस्थिर हे, ते निरंतर
रहेनार नथी. माटें ताहारे अहंकार करवो नहीं. कहां हे के, श्लोक ॥
आपकतान हसित किं इविणांध मूह, लक्क्वीः स्थिरा न चवतीति किमत्र चित्र
म ॥ किं तत्र पश्यिस घटीजलयंत्रचके, रिक्ता चरित चिरताः पुनरेव रिक्ताः॥

हवे सर्व शास्त्र सांजलवानुं सार परोपकार हे ते जपर एक पंमित अने राजानो मली हन्नुमो हष्टांत कहे हे.

॥ जूला कोपि कविस्तदा तृषशतेष्वीशांतिके पंचसु, संप्राप्तो यदि एसती ति किमिदं तं प्राह सत्पुस्तकम् ॥ श्रोतव्यं नवता कृमो न सकलं श्रोतुं दयारोहणं, कत्वा यामि नृपं हि वृत्तशकले यत्कोटिशास्त्रेमितम् ॥ ए७ ॥ अर्थः-कोइ एक पंिमत पाचशें पोठ पुस्तकनी जरी साथें लइ एक राजा नीपांसें आव्यो. ते वखत ते राजा घोडाने पेगडे पग दइ स्वार थइ बाहार जवा तैयार थयो. त्यारें ते पंमित ऋावी आशीवीद दइ उनो रह्यो. तेने राजायें पूरुयुं जे ह्या पांचशें पोठीमां छं जखुं हे ? पंमितें कह्यं के,एमां पु स्तको ज्ह्यां है. ते तमने संज्ञाववा माटे जाव्यो हुं. माटे हूं राजन ! त में सांजलो. राजा बोख्यों जे एटला घ्रणां शास्त्र सांजलवानी मारी शक्ति न थी. त्यारें पंक्तितें कह्यं जे सर्व शास्त्र नहीं सांजलों तो एनो चोथो जाग सांचलो. राजायें कद्यं जे हमणां तो हुं असवार थइ बाहेर जाउं हुं, माटे ताहरे जे कहेवुं होय ते आंटलाज वखतमां कही दे. पंिमतें कह्युं के,पांचशें पोठी पुस्तकोमां जे परमार्थ ने ते वे पदमां हुं तमने कहीश, ते तमे ध्यान दृइ सांचलो. श्लोक ॥ श्लोकार्द च प्रवद्यामि, यड्कं यंथकोटिनः ॥ परोप कारः पुष्याय, पापाय परपीडनम् ॥ १ ॥ एटले परोपकार करवो ते पुष्य हे. अने परने पीडा जपजाववी ते पाप हे. ए कोटियंश्रोनो सार हे. एवं पंमितें कह्यं ते सांजली राजा खुशी थयो. इति बन्नुंमो द्रष्टांत समाप्त ॥ ए १॥ द्वे सामायिकमां समनाव राखवा जपर सताणुमो द्रष्टांत कहे हे.

॥ युद्धं पांकुसुतैर्विधाय दमदंतः सार्धमत्रव्रतं, तस्यो तिष्ठिपिने समी ह्य सुनिपं तत्रागताः पांमवाः ॥ पश्चात्कौरवकास्तमदमनिकरैर्द्धता गतास्त हपु, स्तज्ञावः सहशोऽनवनडुपरीत्येवं तु सामायिके ॥ ए० ॥ अर्थः—पां कुराजाना पुत्र पांच पांमवोनी सार्थे दमदंत राजायें युद्ध कखुं, तेमां पां मवो हाखा,नाशी ने कोटमां पेठा. केटलाएक दिवस पठी दमदंत राजायें वैराग्य पामी दीक् लीधी. एकदा दमदंतसुनि पांकुराजाना नगरना उपव नमां जइ काउस्सग्गें रह्यो. ते वनने विषे पांमवो क्रीडा करवा आव्या,तिहां सुनिने जोइने तेना ग्रुणयाम कथा. पाठलयी सो नाइ कौरवो आव्या, नेशों स्विने हेखी क्रीध करीनें सर्व जां पश्चरा,माधा. तेथी स्निनं शारीम

आखुं दटाइ गयुं, तो पण ते समतावंत मुनिनो जाव पांमवो अने कौर वो बेहुनी ऊंपर सरखो रह्यो. ए दृष्टांतें सामायिकने विषे पण सम परि णाम राखवा. कह्यं वे के, श्लोक ॥ जकेषु पांमुपुत्रेषु, धार्तराष्ट्रेषु इंतृषु ॥ समो जावो जवेद्यस्य, राजर्षिः समुदाहृतः ॥ १ ॥ ए० ॥ इति सामा यिकमां समता राखवा आश्रयी सत्ताणुमो दृष्टांत समाप्त ॥

ह्वे विद्या जणवा उपर अंडाणुमो दृष्टांत कहे हे.

॥ स्नानार्थे जलमाहरिन्नजसुतं हृष्ट्वावदत्तं प्रसः, मूढस्त्वं कथमाह शास्त्रसकलं ज्ञात्वागतः सा पुनः ॥ नाधीतं यदि हृष्टिवादमिवलं श्रुत्वा क तत्तोशलो, गत्वा पावय तं सुनिं मम समो नृस्वानवज्ज्ञो वरम्॥ एए॥

अर्थः—कोइ एक ब्राह्मण जणीने घेर आव्यो, तेवारें स्नानने अर्थं पा णी मगाव्युं. तेणें एक घडो जरेलो. आण्यो ते जोइ पंक्तिं कह्यं के मारुं स्नान एम न याय. घडा जरी जरीनें माहरे मस्तके नांखो तो स्नान थाय. त्यारे तेनी मातायें कह्यं के तुं मूढ रह्यो देखाय हे, जण्यो जणातो नथी. ते वारें पुत्र कहेवा लाग्यो के, हुं सघलां शास्त्रो जणी गणी विचारी चर्ची धारीने आव्यो हुं. तो हुं मूर्ख केम हुं? त्यारें मा बोली के, तुं ज्यांसुधी हिष्टवाद नथी जण्यो, त्यां सुधी कांइ जण्यो कहेवाय नहीं. ते सांजलीनें ते विचारवा लाग्यो जे ए यंथ कोण जणावशे ? मातायें कह्यं जे तुं, तो सली आचार्य पासे जा ते जणावशे त्यारें तेणे तेमनी पासें जइने कह्यं, जे मने दृष्टिवाद जणावो ? गुरुयें कह्यं जे तुं अमजेवो थाय तो तने जणावी यें. त्यारे ते साधु सरखो थइने जण्यो अने जणीने श्रेष्ठ पंक्ति थयो, पही समजीने फरीने दीहा लीधी. अर्थ सखो. कह्यं हे के ॥ किं ताए पिटयाए, पयकोडीए परालजूयाए॥ जं इत्तियं न नायं, परस्स पीडा न कायवा ॥ १ ॥ ॥ ए ॥ ए विद्या जणवा कपर अहाणुमो दृष्टांत समाप्त ॥

दवे सर्व दानमां महोटुं अनयदान हे ते ऊपर एक राजानी चार राणीयोनो नवाणुंमो हष्टांत कहे हे.

॥ स्त्रीणामिष्टवरं कदा नृपतिना तुष्टेन दन्तं च तं, प्रोचुस्ता हि वरं हरं न वधतां ज्येष्ठेकघस्त्रोऽप्पितः ॥ तस्य स्वे महिमा तया कत इतो घाऱ्यां च तघ त्परे, स त्रातश्चरमा तदा कलिरजूत्स्तेनेन ता वारिताः ॥ १००॥ अर्थः— एक दिवसें कोइ एक राजा पोतानी चार राणीयो कपर तष्टमान कर्यो अने बोल दीधो जे वरदान मागो ते आपुं. राणीयोयें कहां,जे ज्यारें जोइरो त्यारें मागशुं. एक दिवस कोइ चोरें चोरी करी. तेने राजानां दुकमधी शू लीयें देवा लइ जातो जोइने त्रणे राणीउयें राजानी पासेची पूर्वेद्धं वरदा न मागी लीधुं के ॥ चोरने अमे एक एक दिवस जीवाडग्रुं, राजायें ते क बुल कखुं. ते पढ़ी प्रथम महोटी राणीयें ते चोरने एक दिवस राख्यो, अ ने घणुं इव्य खरची सारीरीतें खवरावी पीवरावी वस्त्रानूषणादिक पहेरावी सुखी कस्तो. तेमज बीजी बे राणीयें पण एकेक दिवस राखी एकब।जाथी विशेष विशेष सुखी कस्रो, पण मरंगुना नयेंकरी चोरें कांइ ते सुख जा एयं नही, हवे चोथी राणीयें वरदानमां तेने जीवितदान देवराव्युं पठी चारे राणीयोने मांहोमांहे विवाद थयो. एक कहे में वधारे . उपकार की धो, अने बीजी कहे में वधारे उपगार कीधो, एम चारे जणीयो वाद कर ती राजानी पासें त्यावी अने राजायें चोरने पुढ्युं, जे तुं आ चारे स्त्रीयो मांथी कोनो उपगार मोटो माने है ? चोरें कहां के, चारेनो उपकार है, पण तेमां खरो उपगार चोथी राणीनो हे, के जेणे मुंजने जीवितदान आप्युं माटे सर्वदान मांहे मोटुं अनयदान है. कह्यं हे के ॥ न कातं मरणनयात्, सुजग्धमहिमा मया ॥ कदन्नं निह्ततं चाद्य, अनयादमृताधिकम् ॥ १ ॥ ॥ १०० ॥ इति अनयदाने नवाणुमो द्वष्टांत समाप्त ॥

हवे जे काम करबुं ते जतावल न करतां विचारीने करबुं ते जपर एक राजा अने चकोर पद्दीनो सोमो दृष्टांत कहे हे.

॥ तस्यो इस्तचकोरनृच तृषितो वृक्ताश्रयेऽहेर्मुखा, नत्रोध्वीदपत्रतरं तृ पतिना नीरेष्ठयानं तदा ॥ तहूरीकृतमच्चगेन हि पुनः क्रोधेन वै मारितो, नूपस्तनदन्तरगश्च पतितः खेदं तु दृष्ट्वाकरोत् ॥ १०१ ॥ अर्थः—कोइ एक राजा हाथमां चकोर पक्तीनें लक्ष्ने एक वृक्ती तखें उनो रह्यो. हवे ते वखतें ते राजानें तृपा लागी हे अने ते वृक्ती उपर एक अजगर हे तेना मुखमांथी गरल पडे हे, पण राजायें जाण्युं जे उपरथी पाणी पडे हे. तेमा दे पीवा सारु ते राजायें पोताना हाथमां पानना सुमामांहे ध्यो, अने तृषित थको पीवा लाग्यो. तेवारें चकोर पक्तीयें जाण्युं जे जो आ जल राजा पीजे तो तरत मरण पामजे. एम जाणी पांखनो जपाटो मारी पाणी होली नांख्यं ते पही बीजी वार पानं राजायें नेज जलें करी वारको ज्ञानित करी वारको जा स्वाने करी वारको जा स्वाने करी वारको जा स्वाने करी वारको ज्ञाने करी वारको जा स्वाने करी वारको जा स्वाने करी वारको ज्ञाने करी वारको ज्ञाने करी वारको ज्ञाने करी वारको जा स्वाने करी वारको ज्ञाने करी वारको ज्ञान स्वाने करी वारको ज्ञान स्वाने करी वारको ज्ञान स्वाने करी वारको ज्ञान स्वाने करी वारको करी वारको ज्ञान स्वाने करी वारको स्वाने करी वारको वारको वारको वारको वार

स्रो, एटले ते पण चकोर पद्दिशें ढोली नांख्यो. ते जोइ राजायें अत्यंत कोधायमान थइने ते पद्दीने मारी नांख्युं. तदनंतर थोडी वारमां उपरथी अजगर पड्यो, तेने जोइने राजाने पश्चात्ताप थयो, जे अरे? में बहु नुंहुं काम कखुं. जे निरपराधी पद्दीने मारी नांख्युं. मने तो ते पद्दीयें बचा व्यो,नहीं तो आ अजगरना मुखमांथी नीकलेलुं जे केर तेने हुं जल मानी पान करत तो तरत मरण पामत. परंतु आ पद्दी घणोज मारो उपकारी तथा दयालु थयो, पण में कांइ तेनो उपकार न जाणतां उलटा तेनां प्राण लीधा ? हा हा धिकार होजो मुक्तने जे में एवं अविचाखुं काम कखुं? आ प्रमाणे राजाने खेद थयो. कखुं हे के,श्लोक ॥ कोधप्राप्तो हि कोधस्य, फलं लग्नाति मूढधीः ॥ शोचत्येवाविवेकितं चकोरघातकेशवत् ॥ १ ॥ ए दृष्टांते कोइ पण काम उतावलें करवाथी आ पद्दीघातक राजानी पेतें पश्चात्ताप करवो पडे ॥ १०१ ॥

हवे दृष्टांतशतक यंथनो कर्ता पोतानुं नाम कहे हे.

॥ श्रीलुंकाख्यगणे गणीश्वरग्रहः श्रीकेशवाख्यः सुतः,शिष्येणाश्च कतं वरं निजिधया दृष्टांतकानां शतम् ॥ ढंदोलंकतिशब्दशास्त्ररिहतं काव्यं यदा निर्मितं, तत्सर्वं सुनितेजसिंहक्षणाधीरैर्विशोध्यं वरैः ॥ १०२॥ इति दृष्टांत शतक नामक यंथ बालावबोध अने कथार्ड सहित समाप्त ॥

